Sample

लाल–किताब कुण्डली

Ramesh Parbhakar

347/7 Red Rose Building

Shiv Mohalla Sangam Market

Ladwa, Kurukshtra- 136132

Contact - 9812560311, 9466960753

श्रीगणेशाय नमः

गणानां त्वां गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम् ।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम् ।।

नवग्रहस्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महद्द्युतिम ।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽसिदिवाकरम्।। १ ।।
दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसंभवम ।
नमामि शशिनं सोमं शंभोर्मुकुटभूषणम।। 2 ।।
धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् ।
कुमारंशक्तिहस्तंचमगंलंण्णमाम्यहम्।। ३ ।।
प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ।
सौम्यंसौम्यगुणोपेतंतंवुधंप्रणमाम्यहम् ।। ४ ।।
देवानां च ऋषीणां च गुरूं काड़वनसंनिभम्।
बुद्धिभूतंत्रिलोकेशंतंनमामिबृहस्पतिम् ।। ५ ।।
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरूम्
सर्वशास्त्रप्रवक्तारंभार्गवंप्रणमाम्यहम् ।। ६ ।।
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्तण्डसुभूतंतंनमामिशनैश्वरम् ।। ७ ।।
अर्धकायं महावीर्य चन्द्रादित्यविमदनम्।
सिंहिकागर्भसंभूतंतंराहुंप्रणमाम्यहम्।। ८ ।।
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ।। ९ ।।

फलश्रुति

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत्सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भयविष्यति ।। १ ।।
नरनारीनृपाणां च भवेद्दुः स्वप्ननाशनम
ऐश्वर्यमतुलंतेषामारोग्यंपुष्टिवर्धनम् ।। 2 ।।
ग्रहनक्षत्रजाः पीडस्तस्कराग्निसमुद्भवाः ।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ।। ३ ।।

इति श्री व्यासविरचितं आदित्यादिनवग्रहस्तोत्रं संपूर्णम् ।।

Sample DOB: 18:12:1973 ; TOB: 01:45:00 ; POB: Ballia (up) (INDIA)

ज्योतिष सारिणी

जन्म दिन-	18 December 1973 (Tuesday)	**जन्म-दिन का ग्रह-**	**मंगल**
जन्म समय-	01:45:00	**जन्म-समय का ग्रह-**	**शनि**
जन्म स्थान-	Ballia (up) , INDIA		
रेखांश-	084:10:00E	**सांपातिक काल-**	07:36:55 hrs
अक्षांश-	025:45:00N	**सूर्योदय-**	06:36:32AM
समयक्षेत्र-	-05:30:00 hrs	**सूर्यास्त-**	05:03:05PM
समय संशोधन-	00:00:00 hrs	**अयनांश-**	N.C.Lahiri (023:29:36)
जीएमटी. समय-	20:15:00 hrs	**विक्रम संवत्-**	**2030**
स्थानीय समय संस्कार-	00:06:40 hrs	**शक संवत्-**	**1895**
स्थानीय समय-	01:51:40 hrs	**संवत्सर-**	**प्रमादी**
		संवत्सर अधिपति-	**इन्द्राग्नि**

अवकहड़ा चक्र

लग्न :	कन्या
लग्नाधिपति :	बुध
राशि (चन्द्रमा) :	कन्या
राशिपति :	बुध
नक्षत्र :	हस्त
नक्षत्रपति :	चन्द्रमा
नक्षत्र चरण :	2
पाया :	स्वर्ण
ऋतु :	हेमन्त
मास :	पौष
पक्ष :	कृष्ण
तिथि :	नवमी
तिथि श्रेणी :	रिक्ता
तिथि पति :	सूर्य
करण :	गरिज
करण श्रेणी :	चर
करणपति :	वासुदेव
गण :	देव
वर्ण :	वैश्य
योनि :	महिष (स्त्री)
सूर्य सिद्धान्त योग :	सौभाग्य
रज्जु :	कंठ
वश्य :	द्विपद
तत्व :	अग्नि
तत्वाधिपति :	मंगल
विहग :	वायस
नाड़ी :	आदि
नाड़ी पद :	मध्य
वेध :	शतभिषा
आद्याक्षर :	श

घात चक्र

राशि (सूर्य) :	मिथुन
मास :	भद्रा
तिथि :	5,10,15
वार :	शनिवार
नक्षत्र :	श्रावण
प्रहर :	1
लग्न :	मीन
सूर्य सिद्धान्त योग :	सुकर्मन
करण :	कौलव

शासक ग्रह (कृ0 मू0 पद्धति के अनुसार)

वारेश :	मंगल
लग्नेश :	बुध
लग्न नक्षत्र स्वामी-	मंगल
लग्न उप स्वामी :	शुक्र
चन्द्र राशि स्वामी :	बुध
चन्द्र नक्षत्र स्वामी त्न	चन्द्रमा
चन्द्र उप स्वामी :	शुक्र
फॉरच्युना(कृ0 प0)	101:58:51
अयनाशं (कृ0 प0) :	023:23:49

पाश्चात्य ज्योतिषीय सारिणी

सूर्य राशि-	धनु
देकानेट-	3
फेस :	VI
चन्द्र राशि (पाश्चात्य) :	तुला
लग्न (पाश्चात्य) :	तुला
सूर्य का अवधिपति :	मंगल
चन्द्रमा का अवधिपति :	शुक्र
अवधि बदलाव :	(मंगल, शनि), (बुध, शुक्र) , (शुक्र, बुध) , (शनि, मंगल)

While all precautions have been taken for the accuracy of the astrological calculations, the maker of these horoscopes makes no warranties, either expressed or implied.

VBVCB CVBVCB VCBVCBCV CVBVCB

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia (up)

लाल किताब लग्न कुण्डली

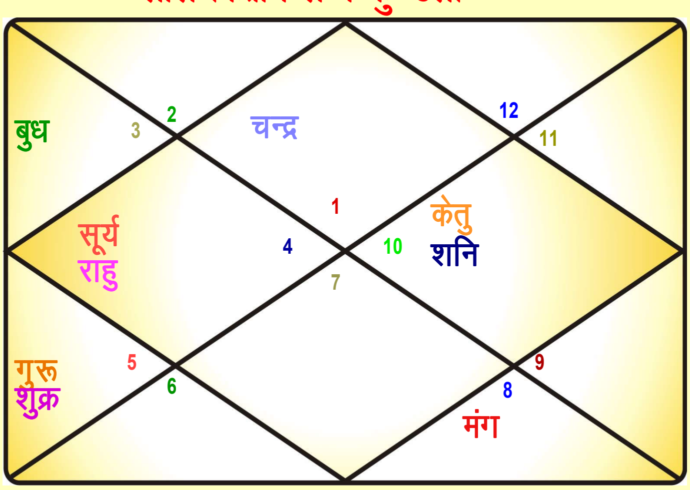

चन्द्र कुण्डली (लाल किताब)

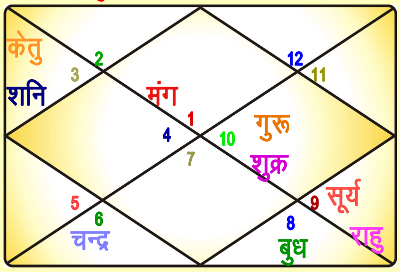

भाव चलित कुण्डली

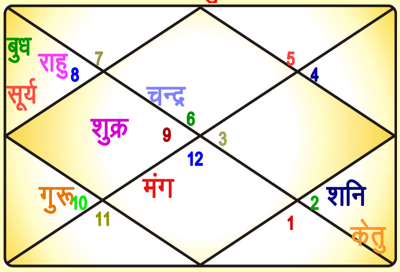

लाल किताब कुण्डली में ग्रहों की स्थिति

ग्रह	भावस्थ	भावेश	प्रभाव	पक्का घर	भा0 का ग्रह	साथी ग्रह	कायम	धर्मी	सोया	विशेष
सूर्य	चतुर्थ	5	ग्रह			चन्द्रमा				शुभ भाव में
चन्द्रमा	लग्न	4	ग्रह			सूर्य	हाँ		हाँ	शुभ भाव में
मंगल (बद)	अष्टम्	1, 8	ग्रह	हाँ						अशुभ भाव में
बुध	तृतीय	3, 6	ग्रह		हाँ				हाँ	अशुभ भाव में
गुरू	पंचम्	9, 12	ग्रह	हाँ						शुभ भाव में
शुक्र	पंचम्	2, 7	राशि				हाँ		हाँ	
शनि	दशम्	10, 11	ग्रह	हाँ	हाँ					शुभ भाव में
राहु	चतुर्थ		राशि					हाँ		शुभ भाव में
केतु	दशम्		राशि				हाँ		हाँ	शुभ भाव में

लाल किताब कुण्डली में भावों (खानों) की स्थिति

खाना न॰	खाना न॰	मालिक	पक्का घर	सोया	उच्च	नीच	किस्मत को जगाने
१	चन्द्रमा	मंगल	सूर्य		सूर्य	शनि	मंगल
२		शुक्र	गुरू		चन्द्रमा		चन्द्रमा
३	बुध	बुध	मंगल		राहु	केतु	बुध
४	सूर्य, राहु	चन्द्रमा	चन्द्रमा		गुरू	मंगल	चन्द्रमा
५	गुरू, शुक्र	सूर्य	गुरू				सूर्य
६		बुध	बुध केतु	हाँ	बुध राहु	शुक्र केतु	केतु
७		शुक्र	शुक्र बुध		शनि		शुक्र
८	मंगल	मंगल	मंगल शनि			चन्द्रमा	चन्द्रमा
९		गुरू	गुरू		केतु	राहु	शनि
१०	शनि, केतु	शनि	शनि		मंगल	गुरू	शनि
११		शनि	शनि				गुरू
१२		गुरू	गुरू		शुक्र केतु	बुध राहु	राहु

VBVCB CVBVCB VCBVCBCV CVBVCB

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia (up)

लाल किताब चन्द्र कुण्डली

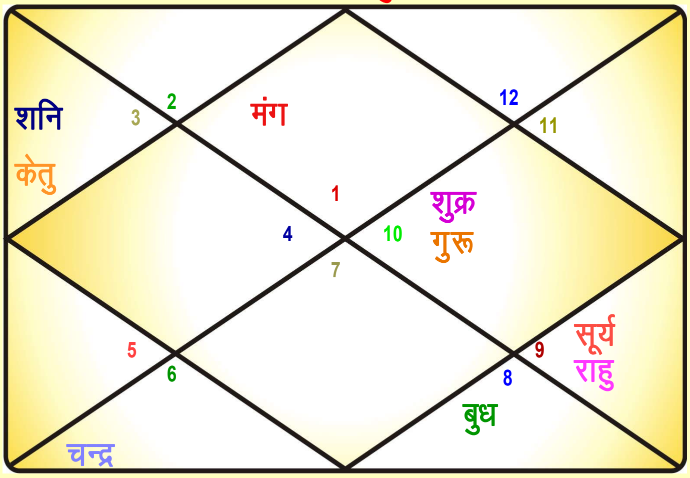

लग्न कुण्डली

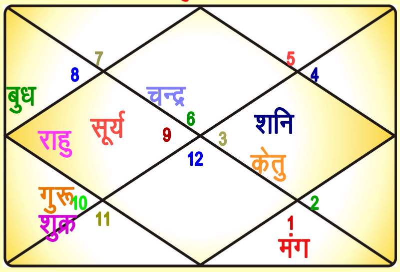

चन्द्र कुण्डली

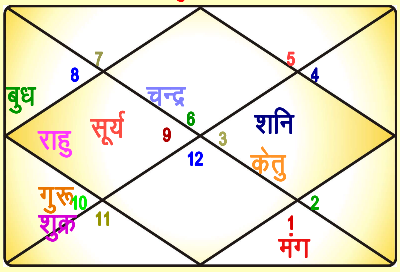

लाल किताब चन्द्र कुण्डली में ग्रहों की स्थिति

ग्रह	भावस्थ	प्रभाव	पक्का घर	भा0 का ग्रह	साथी ग्रह	कायम	धर्मी	सोया	विशेष
सूर्य	नवम्	राशि						हाँ	शुभ भाव में
चन्द्रमा	षष्टम्	राशि						हाँ	अशुभ भाव में
मंगल (बद)	लग्न	ग्रह		हाँ		हाँ		हाँ	शुभ भाव में
बुध	अष्टम्	राशि						हाँ	अशुभ भाव में
गुरू	दशम्	राशि						हाँ	अशुभ भाव में
शुक्र	दशम्	राशि				हाँ		हाँ	
शनि	तृतीय	राशि				हाँ			शुभ भाव में
राहु	नवम्	ग्रह						हाँ	अशुभ भाव में
केतु	तृतीय	ग्रह				हाँ			शुभ भाव में

लाल किताब चन्द्र कुण्डली में भावों (खानों) की स्थिति

खाना न•	खाना न•	मालिक	पक्का घर	सोया	उच्च	नीच	किस्मत को जगाने
१	मंगल	मंगल	सूर्य		सूर्य	शनि	मंगल
२		शुक्र	गुरू		चन्द्रमा		चन्द्रमा
३	शनि, केतु	बुध	मंगल		राहु	केतु	बुध
४		चन्द्रमा	चन्द्रमा	हाँ	गुरू	मंगल	चन्द्रमा
५		सूर्य	गुरू	हाँ			सूर्य
६	चन्द्रमा	बुध	बुध केतु		बुध राहु	शुक्र केतु	केतु
७		शुक्र	शुक्र बुध		शनि		शुक्र
८	बुध	मंगल	मंगल शनि			चन्द्रमा	चन्द्रमा
९	सूर्य, राहु	गुरू	गुरू		केतु	राहु	शनि
१०	गुरू, शुक्र	शनि	शनि		मंगल	गुरू	शनि
११		शनि	शनि				गुरू
१२		गुरू	गुरू		शुक्र केतु	बुध राहु	राहु

VBVCB CVBVCB VCBVCBCV CVBVCB

लाल किताब 35 वर्षीय चक्र

दशारम्भ ग्रह (नैसर्गिक) : शनि

दशारम्भ दिनांक : 18/12/1973

प्रथम चक्र

शनि दशा 6 वर्ष	
राहु	18/12/1973--17/12/1975
बुध	18/12/1975--17/12/1977
शनि	18/12/1977--17/12/1979

राहु दशा 6 वर्ष	
मंगल	18/12/1979--17/12/1981
केतु	18/12/1981--17/12/1983
राहु	18/12/1983--17/12/1985

केतु दशा 3 वर्ष	
शनि	18/12/1985--17/12/1986
राहु	18/12/1986--17/12/1987
केतु	18/12/1987--17/12/1988

गुरू दशा 6 वर्ष	
केतु	18/12/1988--17/12/1990
गुरू	18/12/1990--17/12/1992
सूर्य	18/12/1992--17/12/1994

सूर्य दशा 2 वर्ष	
सूर्य	18/12/1994--17/08/1995
चन्द्रमा	18/08/1995--17/04/1996
मंगल	18/04/1996--17/12/1996

चन्द्रमा दशा 1 वर्ष	
गुरू	18/12/1996--17/04/1997
सूर्य	18/04/1997--17/08/1997
चन्द्रमा	18/08/1997--17/12/1997

शुक्र दशा 3 वर्ष	
मंगल	18/12/1997--17/12/1998
शुक्र	18/12/1998--17/12/1999
बुध	18/12/1999--17/12/2000

मंगल दशा 6 वर्ष	
मंगल	18/12/2000--17/12/2002
शनि	18/12/2002--17/12/2004
शुक्र	18/12/2004--17/12/2006

बुध दशा 2 वर्ष	
चन्द्रमा	18/12/2006--17/08/2007
मंगल	18/08/2007--17/04/2008
गुरू	18/04/2008--17/12/2008

द्वितिय चक्र

शनि दशा 6 वर्ष	
राहु	18/12/2008--17/12/2010
बुध	18/12/2010--17/12/2012
शनि	18/12/2012--17/12/2014

राहु दशा 6 वर्ष	
मंगल	18/12/2014--17/12/2016
केतु	18/12/2016--17/12/2018
राहु	18/12/2018--17/12/2020

केतु दशा 3 वर्ष	
शनि	18/12/2020--17/12/2021
राहु	18/12/2021--17/12/2022
केतु	18/12/2022--17/12/2023

गुरू दशा 6 वर्ष	
केतु	18/12/2023--17/12/2025
गुरू	18/12/2025--17/12/2027
सूर्य	18/12/2027--17/12/2029

सूर्य दशा 2 वर्ष	
सूर्य	18/12/2029--17/08/2030
चन्द्रमा	18/08/2030--17/04/2031
मंगल	18/04/2031--17/12/2031

चन्द्रमा दशा 1 वर्ष	
गुरू	18/12/2031--17/04/2032
सूर्य	18/04/2032--17/08/2032
चन्द्रमा	18/08/2032--17/12/2032

शुक्र दशा 3 वर्ष	
मंगल	18/12/2032--17/12/2033
शुक्र	18/12/2033--17/12/2034
बुध	18/12/2034--17/12/2035

मंगल दशा 6 वर्ष	
मंगल	18/12/2035--17/12/2037
शनि	18/12/2037--17/12/2039
शुक्र	18/12/2039--17/12/2041

बुध दशा 2 वर्ष	
चन्द्रमा	18/12/2041--17/08/2042
मंगल	18/08/2042--17/04/2043
गुरू	18/04/2043--17/12/2043

तृतिय चक्र

शनि दशा 6 वर्ष	
राहु	18/12/2043--17/12/2045
बुध	18/12/2045--17/12/2047
शनि	18/12/2047--17/12/2049

राहु दशा 6 वर्ष	
मंगल	18/12/2049--17/12/2051
केतु	18/12/2051--17/12/2053
राहु	18/12/2053--17/12/2055

केतु दशा 3 वर्ष	
शनि	18/12/2055--17/12/2056
राहु	18/12/2056--17/12/2057
केतु	18/12/2057--17/12/2058

गुरू दशा 6 वर्ष	
केतु	18/12/2058--17/12/2060
गुरू	18/12/2060--17/12/2062
सूर्य	18/12/2062--17/12/2064

सूर्य दशा 2 वर्ष	
सूर्य	18/12/2064--17/08/2065
चन्द्रमा	18/08/2065--17/04/2066
मंगल	18/04/2066--17/12/2066

चन्द्रमा दशा 1 वर्ष	
गुरू	18/12/2066--17/04/2067
सूर्य	18/04/2067--17/08/2067
चन्द्रमा	18/08/2067--17/12/2067

शुक्र दशा 3 वर्ष	
मंगल	18/12/2067--17/12/2068
शुक्र	18/12/2068--17/12/2069
बुध	18/12/2069--17/12/2070

मंगल दशा 6 वर्ष	
मंगल	18/12/2070--17/12/2072
शनि	18/12/2072--17/12/2074
शुक्र	18/12/2074--17/12/2076

बुध दशा 2 वर्ष	
चन्द्रमा	18/12/2076--17/08/2077
मंगल	18/08/2077--17/04/2078
गुरू	18/04/2078--17/12/2078

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia (up)

लाल किताब 35 वर्षीय चक्र

दशारम्भ–जन्म समय का ग्रह : शनि

दशारम्भ दिनांक : 18/12/1973

प्रथम चक्र

शनि दशा 6 वर्ष		राहु दशा 6 वर्ष		केतु दशा 3 वर्ष	
राहु	18/12/1973--17/12/1975	मंगल	18/12/1979--17/12/1981	शनि	18/12/1985--17/12/1986
बुध	18/12/1975--17/12/1977	केतु	18/12/1981--17/12/1983	राहु	18/12/1986--17/12/1987
शनि	18/12/1977--17/12/1979	राहु	18/12/1983--17/12/1985	केतु	18/12/1987--17/12/1988
गुरू दशा 6 वर्ष		**सूर्य दशा 2 वर्ष**		**चन्द्रमा दशा 1 वर्ष**	
केतु	18/12/1988--17/12/1990	सूर्य	18/12/1994--17/08/1995	गुरू	18/12/1996--17/04/1997
गुरू	18/12/1990--17/12/1992	चन्द्रमा	18/08/1995--17/04/1996	सूर्य	18/04/1997--17/08/1997
सूर्य	18/12/1992--17/12/1994	मंगल	18/04/1996--17/12/1996	चन्द्रमा	18/08/1997--17/12/1997
शुक्र दशा 3 वर्ष		**मंगल दशा 6 वर्ष**		**बुध दशा 2 वर्ष**	
मंगल	18/12/1997--17/12/1998	मंगल	18/12/2000--17/12/2002	चन्द्रमा	18/12/2006--17/08/2007
शुक्र	18/12/1998--17/12/1999	शनि	18/12/2002--17/12/2004	मंगल	18/08/2007--17/04/2008
बुध	18/12/1999--17/12/2000	शुक्र	18/12/2004--17/12/2006	गुरू	18/04/2008--17/12/2008

द्वितिय चक्र

शनि दशा 6 वर्ष		राहु दशा 6 वर्ष		केतु दशा 3 वर्ष	
राहु	18/12/2008--17/12/2010	मंगल	18/12/2014--17/12/2016	शनि	18/12/2020--17/12/2021
बुध	18/12/2010--17/12/2012	केतु	18/12/2016--17/12/2018	राहु	18/12/2021--17/12/2022
शनि	18/12/2012--17/12/2014	राहु	18/12/2018--17/12/2020	केतु	18/12/2022--17/12/2023
गुरू दशा 6 वर्ष		**सूर्य दशा 2 वर्ष**		**चन्द्रमा दशा 1 वर्ष**	
केतु	18/12/2023--17/12/2025	सूर्य	18/12/2029--17/08/2030	गुरू	18/12/2031--17/04/2032
गुरू	18/12/2025--17/12/2027	चन्द्रमा	18/08/2030--17/04/2031	सूर्य	18/04/2032--17/08/2032
सूर्य	18/12/2027--17/12/2029	मंगल	18/04/2031--17/12/2031	चन्द्रमा	18/08/2032--17/12/2032
शुक्र दशा 3 वर्ष		**मंगल दशा 6 वर्ष**		**बुध दशा 2 वर्ष**	
मंगल	18/12/2032--17/12/2033	मंगल	18/12/2035--17/12/2037	चन्द्रमा	18/12/2041--17/08/2042
शुक्र	18/12/2033--17/12/2034	शनि	18/12/2037--17/12/2039	मंगल	18/08/2042--17/04/2043
बुध	18/12/2034--17/12/2035	शुक्र	18/12/2039--17/12/2041	गुरू	18/04/2043--17/12/2043

तृतिय चक्र

शनि दशा 6 वर्ष		राहु दशा 6 वर्ष		केतु दशा 3 वर्ष	
राहु	18/12/2043--17/12/2045	मंगल	18/12/2049--17/12/2051	शनि	18/12/2055--17/12/2056
बुध	18/12/2045--17/12/2047	केतु	18/12/2051--17/12/2053	राहु	18/12/2056--17/12/2057
शनि	18/12/2047--17/12/2049	राहु	18/12/2053--17/12/2055	केतु	18/12/2057--17/12/2058
गुरू दशा 6 वर्ष		**सूर्य दशा 2 वर्ष**		**चन्द्रमा दशा 1 वर्ष**	
केतु	18/12/2058--17/12/2060	सूर्य	18/12/2064--17/08/2065	गुरू	18/12/2066--17/04/2067
गुरू	18/12/2060--17/12/2062	चन्द्रमा	18/08/2065--17/04/2066	सूर्य	18/04/2067--17/08/2067
सूर्य	18/12/2062--17/12/2064	मंगल	18/04/2066--17/12/2066	चन्द्रमा	18/08/2067--17/12/2067
शुक्र दशा 3 वर्ष		**मंगल दशा 6 वर्ष**		**बुध दशा 2 वर्ष**	
मंगल	18/12/2067--17/12/2068	मंगल	18/12/2070--17/12/2072	चन्द्रमा	18/12/2076--17/08/2077
शुक्र	18/12/2068--17/12/2069	शनि	18/12/2072--17/12/2074	मंगल	18/08/2077--17/04/2078
बुध	18/12/2069--17/12/2070	शुक्र	18/12/2074--17/12/2076	गुरू	18/04/2078--17/12/2078

लाल किताब लग्न कुण्डली में ग्रहों की दृष्टि

लाल किताब की सामान्य दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	गु0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य							पूर्ण		पूर्ण
चन्द्रमा									
मंगल									
बुध									
गुरू									
शुक्र									
शनि									
राहु							पूर्ण		पूर्ण
केतु									

ग्रहों की दृष्टि

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य							0		0
चन्द्रमा									
मंगल									
बुध									
गुरू		0							
शुक्र									
शनि	0							0	
राहु			0				0		0
केतु	0							0	

लाल किताब में टक्कर की दृष्टि

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य									
चन्द्रमा			0						
मंगल				0					
बुध							0		0
गुरू									
शुक्र									
शनि					0	0			
राहु									
केतु					0	0			

लाल किताब में पाये की दृष्टि

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य									
चन्द्रमा									
मंगल	0							0	
बुध									
गुरू		0							
शुक्र		0							
शनि									
राहु									
केतु									

लाल किताब में विश्वासघात की दृष्टि

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य		0							
चन्द्रमा							0		0
मंगल					0	0			
बुध									
गुरू									
शुक्र									
शनि									
राहु		0							
केतु									

लाल किताब में सहचरी दिवार दृष्टि

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य				0	0	0			
चन्द्रमा	0						0	0	0
मंगल									
बुध									
गुरू									
शुक्र									
शनि									
राहु				0	0	0			
केतु									

लाल किताब में अचानक प्रहार दृष्टि

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य							0		0
चन्द्रमा				0					
मंगल							0		0
बुध		0							
गुरू									
शुक्र									
शनि	0		0					0	
राहु							0		0
केतु	0		0					0	

लाल किताब में परस्पर सहयोग दृष्टि

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य			0						
चन्द्रमा					0	0			
मंगल									
बुध									
गुरू									
शुक्र									
शनि									
राहु			0						
केतु									

जातक के हाथ की रेखाओं का लाल किताब से एक अनुमान

सूर्य चौथे भाव में

चन्द्रमा पहले भाव में

मंगल आठवें भाव में

बुध तीसरे भाव में

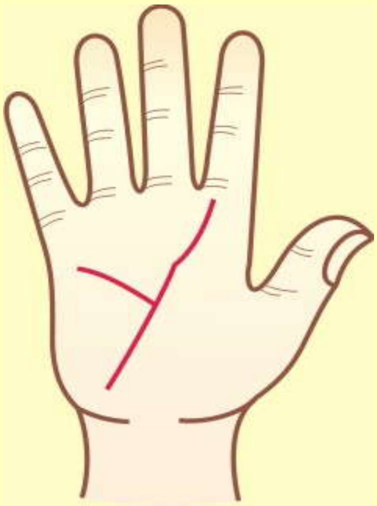

गुरू पांचवें भाव में

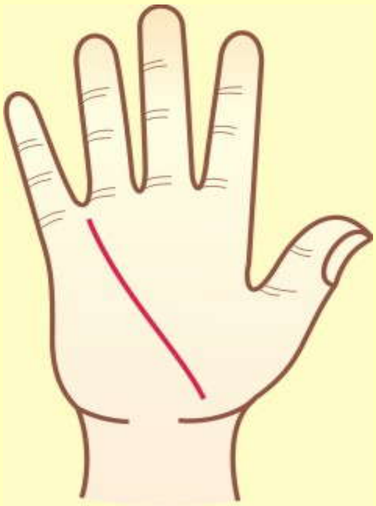

शुक्र पांचवें भाव में

शनि दसवें भाव में

राहु चौथे भाव में

केतु दसवें भाव में

लाल–किताब से सामान्य भविष्यफल

आप बहुत विनम्र स्वभाव वाले होंगे। आप अपनी बात उग्र तरीके से नहीं कह सकते हैं। साधारणतया, बात करते हुए आपके चेहरे पर मुस्कुराहट होगी। आपकी आवाज में हलकापन या धीमापन हो सकता है। आप श्रृंगार के शौकीन होंगे। इत्र आपको काफी पसंद होगा तथा बालों में क्रीम या कोई कीमती तेल का उपयोग कर सकते हैं। आप अपने शरीर पर विशेष ध्यान देंगे तथा अपने पहनावे का भी खास ख्याल रखेंगे।

आप मितभाषी होंगे। पहले आप दूसरों की बात को ध्यान से सुनेंगे और जब मौका मिलेगा तो अपनी बात कहेंगे। लेकिन आप जिस विषय पर भी बात करेंगे, उसके बारे में विस्तार से बतायेंगे।

गणित में आपकी विशेष रूचि होगी। यदि आपकी कुण्डली में बुध ठीक स्थिति में है, तो गणित में विद्वान होंगे। लेकिन गणित का प्रयोग आप अपनी पढ़ाई में करने की जगह छोटी–छोटी बातों का हिसाब–किताब रखने में कर सकते हैं। आप गंभीर स्वभाव के होंगे। आप अपने दुख या मन की बात बहुत जल्द दूसरों से नहीं कहेंगे। लेकिन कभी मुश्किल पड़ने पर अपने मन की बात दूसरों सेनहीं कहने के कारण आपको दुख अन्दर ही अन्दर झेलना पड़ सकता है, जिससे आपका शरीर प्रभावित हो सकता है, तथा आपको दिमाग तथा पेट संबंधी बीमारियों से पीड़ित होना पड़ सकता है।

किसी दूसरे व्यक्ति की बीमारी के समय उसकी सेवा करने में आपको बहुत खुशी मिल सकती है। आप उसकी छोटी–छोटी जरूरतों का ख्याल रखेंगे और अपने आराम की परवाह किये बगैर उसकीसेवा करेंगे। आप अपना जन्म–स्थान छोड़कर किसी दूसरी जगह पर रह सकते हैं, जो कि आपके भाग्योदय में काफी मददगार होगा। आप कुछ लंबी यात्रायें भी करेंगे और इनसे लाभ प्राप्त करेंगे। आप काफी मिलनसार स्वभाव के होंगे। किसी के साथ दोस्ती करने में आपको कोई दिक्कतनहीं होगी।

आप शांत स्वभाव वाले एवं श्रृंगार में रूचि रखने वाले होंगे। आपमें एक विशेष समझ एवं ज्ञान होगा। आप अपनी बुद्धि का प्रयोग आम जीवन के कामों में अधिक करेंगे।

आपके जीवन में कई तरह के परिवर्तन हो सकते हैं और आप यात्राओं की तरफ आकर्षित होंगे। आपमें किसी चीज को गहराई से जानने की अभिलाषा होगी। किसी भी चीज की छोटी से छोटी बातों का गहराई से अध्ययन करेंगे। आप किसी भी काम को अपने ढंग से करेंगे। आप तकनीक का काफी प्रयोग करेंगे। आप निरीक्षक, आयकर अधिकारी या गणित के अध्यापक के रूप में काफी सफल हो सकते हैं।

आप अपने संचित धन को सही तरीके से खर्च करेंगे। आप अपने जीवन में सुन्दरता एवं सफाई परकाफी ध्यान देंगे। आप अपने घर की सजावट का भी विशेष ख्याल रखेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। अपने खान–पान का आप काफी ख्याल रखेंगे। किसी तरह की परेशानी होने पर थोड़ा–बहुत असर आपके स्वास्थ्य पर भी पड़ सकता है। आपको किसी काम को अपने विचार से करना चाहिए। दूसरों से सलाह लेने के चक्कर में काम उलझ सकता है।

आप अपने घर पर अपने जीवनसाथी के काम–काज में हाथ बंटाने वाले होंगे। आप घर की हर

चीज को दूसरों की तुलना में ठीक ढंग से रख सकते हैं।

अपनी मर्जी से शादी करने में आपके चयन में कोई कमी रह सकती है। आपका वैवाहिक जीवन ठीक रहेगा। आप अपने जीवनसाथी के साथ ठीक ढंग से निर्वाह करने की कोशिश करेंगे।

आपकी कुण्डली के तीसरे भाव में बुध होने की वजह से आप थोड़े–बहुत पाखंडी एवं धोखेबाज हो सकते हैं तथा अंतिम अवस्था में सन्यास प्राप्त कर सकते हैं। व्यवसाय के क्षेत्र में आपको सफलता प्राप्त होगी। आपके व्यवसाय का संबंध क्रय–विक्रय से हो सकता है।

आपकी कुण्डली के तीसरे भाव में बुध होने की वजह से आप व्यापारी लोगों से मित्रता कर व्यापार के छुपे हुए भेद जानने की कोशिश कर सकते हैं। आप दूसरों से जानकारी प्राप्त कर अपने व्यापारमें प्रयोग करेंगे, जिससे आपको व्यापार में सफलता प्राप्त होगी तथा काफी धन अर्जित करेंगे।आपके व्यापार में चारों तरफ से बरकत होगी।

आपकी कुण्डली के तीसरे भाव में बुध होने की वजह से यदि आप चिकित्सक या न्यायाधीश हैं, तोआपको काफी सफलता प्राप्त होगी। इसके अलावा, लेखन, प्रकाशन, कम्प्यूटर, टेलीविजन आदि से भी आपका संबंध हो सकता है।

आपकी कुण्डली के तीसरे भाव में बुध होने की वजह से आप शुद्ध हृदय तथा उत्तम चरित्र वाले नहीं हो सकते हैं, जिसकी वजह से आपके परिजन या मित्र आपको छोड़ सकते हैं। परन्तु आप काफी चतुर होंगे। आप अपनी बुद्धि का सदुपयोग नहीं कर सकते हैं। आप कभी–कभी चालाकी भीकर सकते हैं। आप चंचल स्वभाव के होंगे। आपको उत्तम संगति प्राप्त नहीं होगी तथा आपके जीवन का कुछ हिस्सा बुरी संगति में बर्बाद हो सकता है। अपने भाइयों के साथ आपके संबंध ठीकरहेंगे। आप अपने भाइयों को जरूरत पड़ने पर अपनी क्षमतानुसार हर संभव मदद करेंगे।

आपकी कुण्डली के तीसरे भाव में बुध होने की वजह से आप अपनी वृद्धावस्था में पहले की बुरी चीजों को भुलाने के ख्याल से सन्यास प्राप्त कर सकते हैं। आप धनोपार्जन के लिए गलत तरीकों का भी सहारा ले सकते हैं। सन्यासी होने के बाद भी आपके मन में आध्यात्मिकता की गहराई नहींआ सकती है। आप साहसी एवं हिम्मती होंगे, लेकिन थोड़े–बहुत आलसी भी हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली के तीसरे भाव में बुध होने की वजह से आपकी कुण्डली में मंगल अशुभ है, आपको अपने भाई–बन्धुओं से हानि हो सकती है। इस अशुभ फल को दूर करने के लिए आपको सूर्य को जल चढ़ाना या बकरी का दान करना या रात में मूंग भिगोकर सुबह पक्षियों को खिलाना चाहिए।

ग्रहफल और उपाय–लाल किताब

(सभी भविष्यफल लाल किताब कुण्डली पर आधारित हैं)

पांचवें भाव में स्थित गुरू का फल

पाँचवां भाव बृहस्पति का अपना पक्का भाव है। लाल किताब में बृहस्पति को इज्जत–आबरू वाला व्यक्ति और ब्रह्म ज्ञानी कहा गया है। परन्तु काल–पुरुष कुण्डली के अनुसार, पाँचवें भाव में सूर्य की राशि होने के कारण ऐसा व्यक्ति बहुत ही जल्द गुस्सा हो जाता है।

यदि आपकी संतान बृहस्पतिवार के दिन पैदा होती है, तो आप जीवन में बहुत ज्यादा उन्नति करेंगे।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति और शुक्र पाँचवें भाव में एक साथ स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार,आप अपनी शिक्षा और प्रतिभा से धन कमायेंगे। आपकी संतान की कमाई पर भी इसका शुभ प्रभाव पड़ेगा। आपको विवाहित स्त्रियों से अनैतिक संबंध नहीं रखना चाहिए, अन्यथा आपके धन पर इसका बुरा प्रभाव पड़ेगा।

पांचवें भाव में स्थित गुरू के उपाय और सावधानियाँ

(1) कुत्ता पालें।
(2) गणेश जी की पूजा करें।
(3) स्कूल अध्यापक की सेवा करें।
(4) नाग और केसर जल में प्रवाहित करें।
(5) कोई भी दान और उपहार न लें।
(6) पुजारियों और साधुओं की सेवा करें।
(7) मंदिर से प्रसाद न लें।
(8) चोटी रखें।
(9) माँस–मदिरा का सेवन न करें।
(10) अपना चरित्र ठीक रखें।
(11) पूजा स्थल की नियमित सफाई करें।
(12) बृहस्पतिवार का व्रत रखें।
(13) पीपल के पेड़ की सेवा करें।
(14) विष्णु भगवान की पूजा करें।
(15) पुखराज पहनें, पुखराज के अभाव में हल्दी लगायें।
(16) अपने घर में गेंदा या सूर्यमुखी का पौधा लगायें।

चौथे भाव में स्थित सूर्य का फल

सन् 1942 के लाल किताब के चौथे भाव में स्थित सूर्य को ''बुआ का लड़का'' कह कर पुकारा गया है। आप दूसरों के लिए धन जोड़ेंगे, परन्तु इसका खुद उपयोग नहीं कर सकते हैं। आपकी संतान धनवान होगी। आप कोई नया अविष्कार कर सकते हैं।

लाल किताब के अनुसार, सूर्य के चौथे भाव में होने से आपकी माता और बहन के सुख में कमी आसकती है और आपको घर छोड़कर विदेश में रहना पड़ सकता है। आप वो कार्य कर सकते हैं, जो कि आपके पूर्वजों ने नहीं किया होगा।

आपकी कुण्डली में सूर्य और राहु चौथे भाव मे एक साथ बैठे हुए हैं। यह एक शुभ स्थिति नहीं है।

चौथे भाव में स्थित सूर्य के उपाय और सावधानियाँ

(1) पैतृक मकान में अंधो को रोटी खिलाना शुभ फल देता है।
(2) बुआ के लड़के की सेवा करें।
(3) लोहे अथवा लकड़ी की वस्तुओं का व्यापार न करें।
(4) सोने, चाँदी अथवा कपड़ों का व्यापार उत्तम होगा।
(5) माँस–मदिरा का सेवन न करें।
(6) मछली का शिकार न करें अथवा न खायें।
(7) खाकी रंग के धागे में ताँबे का सिक्का डालकर पहनें।
(8) सोना पहनें।
(9) बन्दर को गुड़ खिलायें।
(10) सरकारी कर्मचारियों से बैर न करें।
(11) बुरे धंधों से बचें।

पहले भाव में स्थित चन्द्रमा का फल

आपकी कुण्डली में चंद्रमा प्रथम भाव में स्थित है। आपकी माता जब तक जीवित हैं, तब तक आपको धन की कोई नहीं होगी। आप दीर्घायु होंगे, एवं आपको व्यवसाय नौकरी आदि में कभी परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

यदि आप अपनी मर्जी से अपने किसी रिश्तेदारी में 28 वर्ष या 28 वर्ष से पहले विवाह करते हैं, तोआपकी होने वाली संतान पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ सकता है। यदि आपको 24 वर्ष या 24 वर्ष सेपहले कोई संतान होती है, अथवा आप अपने पैसे से मकान बनवाते हैं, तो आपकी संतान पर बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ सकता है।

यदि आप 24वें वर्ष में विवाह करते हैं, तो यह चंद्रमा के शुभ प्रभाव को पूरी तरह से नष्ट कर

देता है। लाल किताब के अनुसार, इस स्थिति से बचने के लिए आपको चाँदी के गिलास में दूध पीना चाहिए। आपको ये भी ध्यान रखना चाहिए, कि उस गिलास मे कोई गर्दन या टोटी ना हो, अन्यथा आपके माता के स्वास्थ्य पर बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ सकता है।

यदि आप 100 दिन से अधिक की यात्रा पर जा रहे हैं, तो आपको किसी नदी में या समुद्र में तांबेका सिक्का फेंकना चाहिए।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा प्रथम भाव में स्थित है। आपको चंद्रमा से संबंधित वस्तुओं जैसे चाँदी के बर्तन, और दूध का व्यापार करने से बचना चाहिए। यदि आप ऐसा करते हैं, तो यह चंद्रमा की शुभता को पूरी तरह से नष्ट कर देगा और आपके ऊपर भी इसका बहुत ही बुरा प्रभाव हो सकता है। इसी तरह से आपको दूध दान करने से बचना चाहिए।

यदि आपको रात में नींद नहीं आती है या आपको चैन नहीं मिलता है, तो आपको अपने बिस्तर केचारों पावों के नीचे तांबे के नाखून दबाने चाहिए। इसके अलावा, आपको किसी बरगद के पेड़ मेंपानी देना चाहिए। यदि आप अपनी माता की सेवा करते हैं और उनका आशीर्वाद लेते हैं, तो यहआपकी उम्र के लिए बहुत ही लाभप्रद है। इससे आपके व्यापार और नौकरी पर भी शुभ प्रभाव होगा। यदि आप अपनी माता से चाँदी अथवा चावल का दान लेते हैं, तो यह आपका भाग्योदय करने में सहायक होगा। आपकी माता की मृत्यु के बाद आपका भाग्योदय होने की संभावना कम हीहै।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा प्रथम भाव में स्थित है। आप जब भी किसी यात्रा पर जायें, लौटते समयअपनी माता के चरण को स्पर्श अवश्य करें। यह आपकी माता के उम्र के लिए लाभप्रद है। यदि आप अपनी माता के स्वास्थ्य को लेकर चिन्तित हैं, तो आपको लाल रंग के पत्थर का गुटका या गुड़ को जमीन में दबाना चाहिए।

यदि आप अपने किसी रिश्तेदार के साथ साझे में व्यापार करते हैं, तो आपको बहुत सारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है।

यदि आप किसी व्यक्ति से बिना पैसे दिये कोई वस्तु लेते हैं, तो यह चंद्रमा की शुभता को कम करता है और इसका बुरा प्रभाव आपके जीवनसाथी पर पड़ सकता है। इस स्थिति से बचने के लिए आपको बूढ़ी स्त्रियों का आशीर्वाद लेना चाहिए।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा के मित्र ग्रह सातवें या आठवें भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार,आपमें मिट्टी से सोना बनाने की कला होगी।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा शुभ है। लाल किताब के अनुसार, आपको बड़ी मात्रा में पैतृक संपत्ति प्राप्त होगी। कभी–कभी दूसरे व्यक्ति भी अपना कीमती सामान आपके पास रखकर जायेंगे, जो कि बाद में आपका हो जायेगा।

आपकी कुण्डली में सातवें भाव में कोई भी ग्रह स्थित नहीं है। लाल किताब के अनुसार, आपकी कुण्डली में चंद्रमा सोया हुआ है, जिसे अपनी उम्र के 24वर्ष से पहले आपको जगाना पड़ेगा। लाल किताब के अनुसार, आपको एक गाय पालनी चाहिए या आपको अपने घर में एक नौकरानी रखनी

चाहिए अथवा 24 वर्ष से पहले विवाह कर लेना चाहिए, जिससे चंद्रमा सक्रिय हो जायेगा, अन्यथा चंद्रमा 25वें वर्ष में दुष्ट ग्रह के रूप में सक्रिय हो जायेगा। आपको मंगल की वस्तुओं जैसे शहद, सौंफ इत्यादि का दान करना चाहिए।

पहले भाव में स्थित चन्द्रमा के उपाय और सावधानियाँ

(1) अपने पास लाल रूमाल रखें।
(2) चारपाई के पायों में ताँबे की कील गाड़ें।
(3) बरगद के पेड़ की जड़ में पानी दें।
(4) यदि आप पुत्र के साथ यात्रा कर रहे हैं, तो नदी इत्यादि में ताँबे का पैसा डालें।
(5) घर में यदि कुआं है, तो उस पर छत न डलवायें।
(6) अपनी उम्र के 24 से 27 वर्ष के बीच विवाह न करें और अपने पैसे से मकान भी न बनवायें।
(7) हरे रंग और साली से बचें।
(8) अपने घर में चाँदी के ऐसे बर्तन जिसमें टोंटी लगे हों, न रखें।
(9) अपने घर में चाँदी की थाली रखें।
(10) पानी अथवा दूध पीने के लिए चाँदी के बर्तन का इस्तेमाल करें।
(11) शीशे के बर्तनों का प्रयोग न करें।
(12) अपनी माता का आशीर्वाद लें और उनके द्वारा दिये हुए चावल और चाँदी का दान अपने पासरखें।

पांचवें भाव में स्थित शुक्र का फल

लाल किताब में पाँचवें भाव में स्थित शुक्र को "संतान से भरा हुआ घर– परिवार" कहा गया है।

आपकी पत्नी जब तक जीवित रहेंगी, तब तक आपके काम–काज में बहुत बड़ी रूकावट नहीं आयेंगी। यदि आप भले स्वभाव के हैं, तो शुक्र का फल और भी शुभ हो जायेगा। आपको गंदे प्रेम संबंधों से बचना चाहिए।

लाल किताब के अनुसार, यदि आप प्रेम विवाह अथवा माता–पिता की मर्जी के बगैर विवाह करते हैं, तो आपकी संतान पर इसका बहुत ही बुरा असर हो सकता है।

लाल किताब के अनुसार, आपको अपने चरित्र पर विशेष ध्यान देना चाहिए, अन्यथा बर्बादी निश्चितहै। आपके लिए ईंट के भट्ठों का कारोबार उत्तम होगा।

आपकी कुण्डली में शुक्र के साथ पाँचवें भाव में कोई पुरुष ग्रह बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी और आप अपने परिवार पर विशेष ध्यान देंगे।

आपकी कुण्डली में शुक्र की दृष्टि में कोई ग्रह नहीं है। लाल किताब के अनुसार, इस युति का आपके जीवनसाथी पर बुरा प्रभाव पड़ेगा और यदि आप इत्र या खुशबुदार वस्तुओं का कारोबार

करते हैं, तो आप उसमें सफल नहीं हो सकते हैं।

पांचवें भाव में स्थित शुक्र के उपाय और सावधानियाँ

(1) अपना चरित्र ठीक रखें।
(2) गाय की सेवा करें।
(3) आर्थिक सम्पन्नता के लिए अपने गुप्तांग दूध या दही से धोयें।
(4) अपने माता–पिता की मर्जी के बगैर विवाह न करें।
(5) बुढ़ी औरतों की सेवा करें।
(6) हीरा पहनें।
(7) पत्नी का कहना मानें और उनसे झगड़ा न करें।
(8) अपने पहनावें पर ध्यान दें।

आठवें भाव में स्थित मंगल का फल

लाल किताब में आठवें भाव में मंगल को ''मौत का फंदा'' कहा गया है। आमतौर पर आठवें भाव मेंबैठा हुआ मंगल शुभ फल नहीं देता है। आप बहुत हिम्मत वाले होंगे। नतीजा हार हो या जीत, आप मुकाबला जरूर करेंगे।

यदि कोई विधवा स्त्री आपको श्राप देती है या बद्दुआ देती है, तो आपका भाग्य पूरी तरह नष्ट होसकता है। आपको किसी विधवा स्त्री का आशीर्वाद लेते रहना चाहिए।

यदि आपका छोटा भाई आपसे चार या आठ साल छोटा है, तो यह मंगल के अशुभ होने की निशानी है। लाल किताब के अनुसार, आपका छोटा भाई आपकी मदद नहीं कर सकता है।

यदि आपके घर के अन्दर जमीन खोदकर कोई भट्ठी (शादी–विवाह के अवसर पर) बनाई गई हो, तो यह आपके लिए अशुभ फलदायक हो सकता है। आपको तंदूर में मीठी रोटी बनाकर 43 दिनों तक कुत्तों को खिलाना चाहिए।

आठवें भाव में बैठा हुआ मंगल आपके पिता के लिए शुभ नहीं हो सकता है। आपकी आँखों में खराबी एवं जोड़ों में दर्द हो सकता है। आपके मित्र शत्रु बन सकते हैं। 28 से 36 वर्ष तक की उम्रमें आपके छोटे भाई आपके लिए कई प्रकार की परेशानियां खड़ी कर सकते हैं। आपको अपने घर में तंदूर नहीं बनाना चाहिए।

आपकी कुण्डली में दूसरा भाव खाली है या उसमें चंद्रमा या बृहस्पति स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, इस स्थिति में मंगल का फल शुभ होगा।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा पहले, तीसरे, चौथे, आठवें या नौवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब केअनुसार, इस स्थिति में अगर मंगल अशुभ भी है, तो उसका असर अशुभ नहीं

होगा।

आपकी कुण्डली में मंगल मेष या वृश्चिक राशि में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको गृहस्थी का सुख प्राप्त होगा।

आठवें भाव में स्थित मंगल के उपाय और सावधानियाँ

(1) 8 मीठी और तंदूर में सिंकी रोटियां कुत्तों को डालें।
(2) तीन धातु की अंगुठी पहनें।
(3) गले में हमेशा चाँदी की चेन पहनें।
(4) मृगछाला का प्रयोग करें।
(5) 4 किलो रेवड़ी या बताशे बहते पानी में बहायें।
(6) अपनी दादी से चाँदी लेकर अपने गले में पहनें।
(7) मंगल के दिन पति–पत्नी स्नान करें, फिर लाल वस्त्र पहन कर ताँबे का पात्र चावलों से भरकरउस पर लाल चंदन का तिलक लगाकर रखें। एक माला गायत्री मंत्र का जाप करके वह पात्रहनुमान मंदिर में देकर आयें। सात मंगल यह उपाय करने से हनुमान जी प्रसन्न हो जाते हैं। जातक किसी भी विधवा स्त्री की सेवा करे।
(8) जब मंगल का प्रभाव अधिक नीच हो रहा हो, तो मिट्टी के पात्र में शहद भरकर ढककर बाहर विराने में दबायें, यह उपाय तभी करें, जब भाव संख्या तीन/तीसरे भाव में बृहस्पति या चंद्रमा स्थित हो।
(9) मंगल का सबसे बड़ा शत्रु बुध है। जब मंगल के साथ मिल जाये तो जातक के ननिहाल को बर्बाद कर देता है। यदि मामा घर छोड़कर कहीं बाहर चले जायें, तो केवल वहीं ठीक रहते हैं। तबनाक छेदन आवश्यक है। 100 दिन तक नाक में चाँदी डालकर रखने से बुध का दोष शांत हो जाता है।
(10) विधवा स्त्रियों का आशीर्वाद लें।
(11) रसोई घर में बैठकर भोजन करें।
(12) अपने घर में एक अंधेरी कोठरी बनवायें।
(13) धार्मिक स्थान में चावल, गुड़ और चने की दाल दान करें।
(14) मिट्टी के बर्तन में गुड़ भरकर उसे श्मशान में दबायें।
(15) रोटी पकाने से पहले तवे पर पानी का छींटा मारें।
(16) महागायत्री का पाठ करें।
(17) भाई की सेवा करें।

तीसरे भाव में स्थित बुध का फल

लाल किताब मे तीसरे भाव में स्थित बुध को बहुत अधिक शुभ नहीं माना गया है, परन्तु अपने भाई–बन्धुओं और संबंधियों पर इसका प्रभाव शुभ ही होता है। अन्य कोई आपके संपर्क में आये तो आपसे लाभ नहीं उठा पायेगा। आपकी धन–संपत्ति के लिए भी बुध शुभ प्रभाव

देगा।

तीसरे भाव में स्थित बुध के समय पुश्तैनी जायदाद, आमदनी, मन की शांति आदि पर बुरा असर होगा। यहां पर बुध के अशुभ प्रभाव को दूर करने के लिए साबुत मूंग रात में भिगोकर सुबह पक्षियोंको डालना चाहिए और यह उपाय लगातार 43 दिन तक करना चाहिए। इस उपाय से व्यापार में भी प्रगति होगी।

यदि आपके घर का दरवाजा दक्षिण की तरफ है, तो लाल किताब के अनुसार, आपके जीवनसाथी, संपत्ति और आपके ससुराल पक्ष पर इसका बहुत बुरा असर हो सकता है।

आपकी कुण्डली में नौवां और ग्यारहवां भाव खाली है। लाल किताब के अनुसार, सभी स्थितियों में बुध का फल उत्तम होगा।

तीसरे भाव में स्थित बुध के उपाय और सावधानियाँ

(1) फिटकरी से दाँत साफ करें।
(2) देवी पर चाँदी का छत्र चढ़ायें।
(3) माणिक पहनें।
(4) भतीजी की सेवा करें।
(5) नाक छेदवायें।
(6) बुधवार के दिन बकरी का दान करें।
(7) यदि आपकी संतान कष्ट में है, तो कुत्ता पालें।
(8) पीले रंग की कौड़ियों को जलाकर उसकी राख नदी में बहायें।
(9) चौड़े पत्तों वाले पौधे घर में न लगायें।
(10) दक्षिणमुखी घर में ना रहें।
(11) मां दुर्गा की पूजा करें और कुआंरी कन्याओं का आशीर्वाद लें।
(12) तोता पालें।
(13) ढाक के पत्तों को धोकर विराने में पत्थर से दबायें।
(14) दमा की दवाई मुफ्त में दें।
(15) लड़की, बहन, बुआ, मौसी अथवा साली की सेवा करें और उनका आशीर्वाद लें।
(16) हिजड़ों को हरी चूड़ियां, हरे रंग के कपड़े आदि दान करें।

दसवें भाव में स्थित शनि का फल

लाल किताब में दसवें भाव में स्थित शनि को "किस्मत को जगाने वाला" कहा गया है। आप अपनाभाग्य खुद बनायेंगे। लाल किताब के अनुसार, आपके पिता कम से कम आपकी उम्र के 48 वर्ष तक आपका साथ जरूर देंगे। आपको 15वें, 21वें, 33वें, 45वें और 57वें साल में खूब इज्जत और शोहरत

मिलेगी।

दसवें भाव में शनि के होते हुए यदि आप दूसरों की भलाई करें, दिल से धर्मात्मा हों या रहमदिल हों, तो यहां बैठा हुआ शनि आपको बर्बाद कर सकता है।

लाल किताब के अनुसार, आपकी हर तरफ इज्जत होगी। यदि आप शराब ना पीयें तो शनि का फल और भी शुभ हो जायेगा। आपको अपना मकान 48 वर्ष की उम्र के बाद बनाना चाहिए, नही तो आपका धन बर्बाद हो सकता है।

यदि आपको किसी भी तरीके से शनि का अशुभ फल मिल रहा है, तो घर में पीतल के बर्तन में गंगाजल डालकर रखना चाहिए।

आपको एक जगह बैठकर काम करना चाहिए।

आपकी कुण्डली में दूसरा भाव खाली है। लाल किताब के अनुसार, इस स्थिति में शनि का फल और भी अशुभ हो जायेगा।

आपकी कुण्डली में सूर्य या चंद्रमा चौथे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको जीव हत्या नहीं करनी चाहिए, नहीं तो आपकी आर्थिक स्थिति पर इसका बुरा असर होगा।

दसवें भाव में स्थित शनि के उपाय और सावधानियाँ

(1) पीतल के बर्तन में गंगाजल डालकर घर में रखें।
(2) दूसरों का सम्मान करें।
(3) माँस–मदिरा का सेवन न करें।
(4) चाचा की सेवा करें।
(5) 43 दिन तक लगातार चने की दाल बहते हुए पानी में बहायें।
(6) धार्मिक स्थानों की यात्रा करें।
(7) दस अंधों को खाना खिलायें।
(8) 48 वर्ष से पहने मकान न बनवायें।
(9) जीव हत्या न करें।
(10) अपने पास हथियार न रखें।
(11) भाग–दौड़ वाले काम न करें।
(12) भैरों मंदिर में शराब का दान न करें।
(13) रोटी पर सरसों का तेल लगाकर कौओं और कुत्तों को खिलायें।
(14) मजदूरों का पैसा अपने पास न रखें।

चौथे भाव में स्थित राहु का फल

आपकी कुण्डली में राहु चौथे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपकी कुण्डली (टेवा) धर्मी टेवा कहलायेगी। आपके घर में बहुत ज्यादा खर्च होगा, परन्तु ये सारा खर्च केवल शुभ कार्यों पर होगा। आप अपने परिवार का काफी ख्याल रखेंगे और बड़ी मात्रा में धन अर्जित करेंगे।

चौथे भाव में राहु सामान्यतः शुभ फल देता है, परन्तु यदि आप जमीन के नीचे पानी जमा होने वाली टंकी, घर के अन्दर भट्ठी, कोयला की बोरियों का अम्बार लगाना या आप अपनी छत बदलवाते हैं, तो राहु का शुभ फल नहीं रह जाता है।

चौथे भाव में राहु से पिता और पुत्र पर शुभ असर होता है, परन्तु माता पर राहु का असर शुभ नहींरहता है।

48 वर्ष के बाद बृहस्पति का फल शुभ हो जायेगा।

आपका ननिहाल पक्ष भले ही ठीक हालत में हों, परन्तु आपकी उम्र के 24वें वर्ष के बाद स्थितियां शुभ नहीं रह सकती हैं।

आपकी 12, 24 या 48 वर्ष की आयु में या पुत्र की उत्पत्ति के बाद आपके माता–पिता की स्थिति में सुधार होगा।

आपकी कुण्डली में शुक्र शुभ स्थिति में है। लाल किताब के अनुसार, विवाह के ऊपरान्त आपके ससुराल में धन ठीक मात्रा में आने लगेगा, जिससे आपको फायदा होगा।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा पहले भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आप काफी धनवान होंगे और अपनी बहन एवं बुआ की मदद करेंगे।

चौथे भाव में स्थित राहु के उपाय और सावधानियाँ

(1) 400 ग्राम या एक किलो धनियां बहते पानी में सात बुधवार तक बहायें।
(2) हरिद्वार में गंगा स्नान करें।
(3) कैसा भी गंदा पानी आपके घर के चाहरदीवारी के अन्दर नहीं जमा होना चाहिए।
(4) सीढ़ियों के नीचे रसोई घर नहीं होना चाहिए।
(5) एक साथ पूरा घर बनवायें।
(6) घर की छत पर कोयला इत्यादि ईंधन न रखें।
(7) सरस्वती जी की पूजा अर्चना करें।
(8) गोमेद धारण करें।
(9) तम्बाकु का सेवन न करें।
(10) घर में या आंगन में धुआं न करें।
(11) झूठी गवाही न दें।

दसवें भाव में स्थित केतु का फल

लाल किताब के अनुसार, आपको अपने भाई का हर तरह से ख्याल रखना चाहिए। यदि वो कोई गलती भी करता है, तो उसे क्षमा कर देना चाहिए। इससे केतु का फल शुभ हो जायेगा और आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी।

यदि आप अपना चाल–चलन ठीक नहीं रखेंगे, तो आप बर्बाद हो सकते हैं।

यदि आपकी संतान पर केतु का अशुभ प्रभाव पड़ रहा है, तो घड़े की शक्ल के चाँदी के बर्तन में शहद भरकर रखने से औलाद पर शुभ प्रभाव होगा। यदि फिर भी केतु का अशुभ प्रभाव कम नहीं होता है, तो उस बर्तन को किसी सुनसान जगह पर मिट्टी के अन्दर दबायें। 48 वर्ष की उम्र के बाद घर में कुत्ता पालना भी केतु के अशुभ असर को दूर कर सकता है।

आपकी कुण्डली में शनि शुभ स्थिति में उपस्थित है। लाल किताब के अनुसार, आप मिट्टी को सोना बना सकते हैं और आपकी संतान भी योग्य होगी।

दसवें भाव में स्थित केतु के उपाय और सावधानियाँ

(1) मकान की नींव में शहद और दूध दबायें।
(2) चाँदी के बर्तन में शहद भरकर घर में रखें।
(3) अपना चाल–चलन ठीक रखें।
(4) 48 वर्ष की आयु के बाद अपने घर में कुत्ता पालें।
(5) गणेश जी की पूजा करें।
(6) 9 वर्ष से छोटे लड़कों को भोजन करायें।
(7) काले और सफेद तिल को नाले में प्रवाहित करें।

ग्रहफल लाल–किताब

(सभी भविष्यफल लाल किताब कुण्डली पर आधारित हैं)

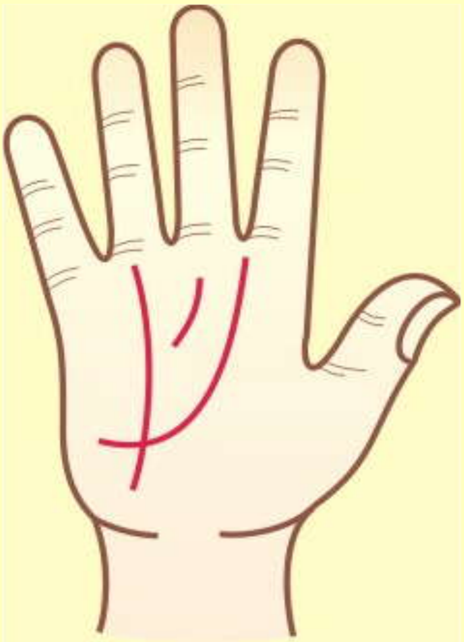

आपकी कुण्डली में सूर्य चौथे भाव में स्थित है। आप धन संग्रह करते रहेंगे और अन्य लोग इससे लाभ प्राप्त करेंगे। आपकी संतान करोड़पति होगी। आप किसी नई चीज का अविष्कार करेंगे और इस नयी खोज से आपको लाभ प्राप्त होगा। आपको नये कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। यदि आप अपने पैतृक व्यवसाय के अलाव कोई अन्य कार्य करेंगे तो आपको उसमें अधिक लाभ प्राप्त होगा। आप अपने देश को छोड़ कर विदेश में निवास कर सकते हैं। अपने पिता के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। आपको पैतृक सम्पत्ति भी प्राप्त होगी। यदि आप अपने घर पर नल लगवाते हैं या कुँआ बनवाते हैं तो आपको शुभ परिणाम प्राप्त होंगे। आपको मन की शान्ति प्राप्त होगी। आपको अपनी 25 से 50 साल की आयु में बहुत लाभ प्राप्त होगा। पानी, कपड़े और दूध का व्यवसाय आपके लिये बहुत लाभकारी होगा और आप इससे बहुत लाभ कमायेंगे। विशेषकर कपड़े का व्यवसाय आपके लिये बहुत लाभकारी होगा। आप फल देने वाले वृक्ष लगायेंगे। आपका भाग्य आप पर मेहरबान होगा। यदि आप रात में काम करेंगे तो आपको अधिक लाभ प्राप्त होगा। आपको घर संबंधित कोई समस्या नहीं आयेगी। आप समुद्री यात्राओं से लाभ प्राप्त करेंगे। आपको सरकारी विभाग से लाभ प्राप्त होंगे। आपकी पत्नी आपके लिये भाग्यशाली साबित होगी। आपको उनसे लाभप्राप्त होगा। उन्हें अपने काम में उन्नति प्राप्त होगी। यदि आप वाहन से संबंधित कोई व्यवसायकरते हैं तो आपको लाभ प्राप्त होगा।

यदि आपमें चोरी करने की आदत हुई, आपने दूसरों के बनते काम बिगाड़े, किसी स्त्री के साथ गलत व्यवहार किया या पराई औरतों के साथ अनैतिक संबंध रखे तो आपका सूर्य कमजोर हो सकता है। यदि आपका सूर्य किसी कारण से कमजोर हो जाता है तो इसका बुरा असर आपके बच्चों पर पड़ सकता है। आपकी माता और बहन को समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आप बिना किसी कारण के दुःखी रह सकते हैं। आपकी माता चिन्तित रह सकती हैं और उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रह सकता है। आपको जीवन में कई समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। यदि आपने दूसरों के बनते काम बिगाड़े तो आपको अपने कार्य में बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है और आपको रक्तचाप की समस्या हो सकती है। आपके माता–पिता के सुख में कमीआ सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1– आपको चोरी से दूर रहना चाहिये।
2– महिलाओं के झगडे से दूर रहें।

उपाय :

1– अन्धों को भोजन दें।
2– शुद्ध सोना पहनें।

आपकी कुण्डली में चन्द्रमा पहले भाव में स्थित है। आपका जन्म काफी मिन्नतों के बाद हुआ होगा या आपका जन्म एक से अधिक बहनों के जन्म के बाद हुआ होगा। आपमें सबको आकर्षित करने की क्षमता होगी। आपको सफेद कपड़े पहनना पसन्द होगा। आपका स्वभाव शांत और विनम्र होगा।आप सुंदर होंगे। आप विद्वान होंगे और आपको कई भाषाओं का ज्ञान होगा। आपको पैतृक घर प्राप्त होगा। आप सम्पन्न होंगे और आपको जीवन में धन की कभी कमी नहीं होगी। यदि आपका विवाह 28 साल की आयु में होता है तो आप सारा जीवन सुखी रहेंगे। आपको किसी व्यक्ति की सम्पत्ति या धन प्राप्त होगा और इससे आप धनी हो जायेंगे। जब तक आपकी माता जीवित हैं, आपको धन की कमी नहीं होगी। आप दीर्घायु होंगे। आपको सरकार से सम्मान प्राप्त होगा। आपके जन्म के बाद आपके पिता की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आपके पिता को व्यापार, आर्थिक लाभ और जीवन से संबंधित शुभ परिणाम प्राप्त होंगे। यदि आप 24 से 27 साल की आयु के बीच कोई यात्रा करते हैं तो यात्रा से वापस आने के बाद अपनी माता का आशीर्वाद लें। इससे आपकी माता दीर्घायु होंगी। आपको 24 साल की आयु से पहले अपना घर नहीं बनवानाचाहिये। आपकी वृद्धावस्था सुख से पूर्ण होगी।

यदि आप 24 साल से पहले अपना घर बनवाते हैं, 28 साल की आयु में विवाह करते हैं, अपनी आया से झगड़ा करते हैं या गाय को कष्ट देते हैं तो आपका चन्द्रमा कमजोर हो सकता है। यदि आपका चन्द्रमा किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आप पानी में डूब सकते हैं। आपको मानसिक शांति नहीं मिल सकती है और आप चिन्तित रह सकते हैं। आपको मानसिक रोग हो सकता है। आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रह सकता है। आपको दिल और ऑख से सम्बन्धित रोग होसकते हैं। आपको पुत्र का सुख प्राप्त नहीं हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1– अपनी माता या बूढ़ी औरतों से झगड़ा न करें।
2– आपको नैतिक मार्ग से विचलित नहीं होना चाहिये।

उपाय :

1– चांदी के गिलास में पानी या दूध पियें।
2– पीपल के वृक्ष पर जल चढ़ायें।

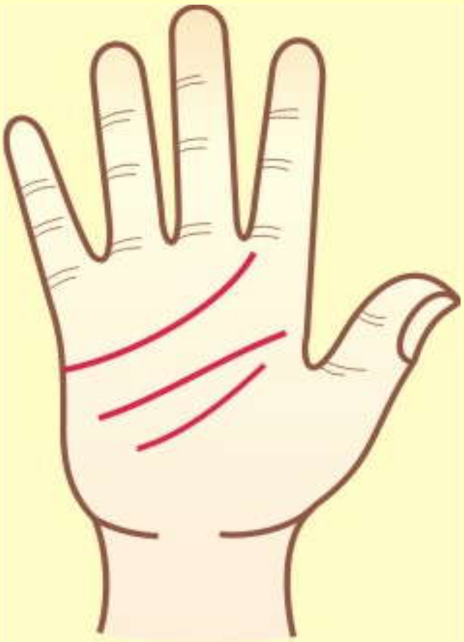

आपकी कुण्डली में मंगल आठवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार आप मांगलिक हैं। आपको अपने माता–पिता का पूरा सहयोग प्राप्त होगा। अपने जीवनसाथी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे और आपका वैवाहिक जीवन आनन्दपूर्ण होगा। आप निडर और उत्साही होंगे। परिणामों की परवाह किये बिना आप चुनौतियों का मुकाबला करेंगे। आप न्याय पाने के लिये लड़ाई करने सेनहीं हिचकिचायेंगे। आप अपने काम में गहरी रूचि लेंगे और उसे पूरे मन से करेंगे। भगवान आपका जीवन बुरी घटनाओं से बचायेगा। आप बाधाओं का मुकाबला चिन्तित हुये बिना करेंगे। आपको अपने ससुराल वालों से सम्पत्ति प्राप्त होगी। आप अपने शत्रुओं को परास्त

करेंगे।

यदि आप विधवा स्त्री के साथ झगड़ा करेंगे, हर समय अपने पास चाकू रखेंगे, लोगों के साथ झगड़ा करेंगे, आपके घर पर जमीन के नीचे कोई भठ्ठी हुई तो आपका मंगल कमजोर हो सकता है। यदि आपका मंगल किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आपके छोटे भाई को अशुभ परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। उसके कारण झगड़ा हो सकता है। आपका भाई आपकी बर्बादी का कारण बन सकता है। किसी अचानक दुर्घटना के कारण आपको कोई रक्त संबंधी विकार हो सकता है या कोई नाखून संबंधी रोग हो सकता है। किसी व्यक्ति पर बिना किसी कारण क्रोध करना आपके लिये पश्चाताप का कारण बन सकता है। आपको हानि भी हो सकती है। कोई आप पर आक्रमण कर सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1– अपने घर पर जमीन के नीचे कोई भठ्ठी न रखें।
2– तोता न पालें।

उपाय :

1– विधवा का आशीर्वाद लें।
2– तन्दूर में मीठी रोटी पकाकर कुत्ते को खिलायें।

बुध तृतीय भाव में

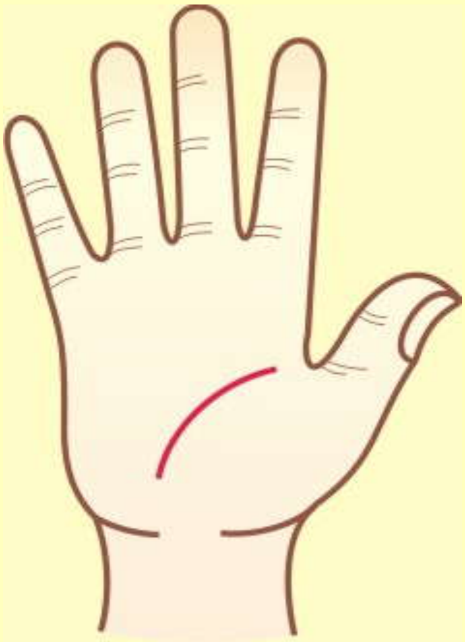

आपकी कुण्डली में बुध तीसरे भाव में स्थित है। आप सदैव यात्रा करेंगे। आपको चिकित्सा व्यवसायमें यश प्राप्त होगा। आपके मित्र और संबंधी आपकी सहायता करेंगे। आपको कुछ खराब परिणामों के साथ उत्तम परिणाम प्राप्त होंगे। आप दूसरों के लिये भाग्यशाली साबित होंगे। जो भी आपसे मिलेगा, उसे लाभ प्राप्त होगा। आपको आय के उत्तम साधन प्राप्त होते रहेंगे। यदि आप फल, खेती, कांसे के बर्तन, पशुपालन से सम्बन्धित व्यवसाय करते हैं तो आपको लाभ प्राप्त होगा। आप अपने मामा और संतानों के लिये लाभकारी होंगे। आपको दमा का उपचार करना आता होगा। आप अपने व्यापार में प्रगति करेंगे। आप निडर होंगे, लेकिन झगड़ों से दूर रहेंगे। आपको बुरे कार्योंसे घृणा होगी। किसी नये कार्य को आरम्भ करते समय आपके दिमाग में कई विचार आयेंगे और आप जिन पर विश्वास करेंगे, उनसे परामर्श करेंगे। आप अपने दिमाग से भी सोचेंगे।

यदि आप अपनी बुआ, बहन, पुत्री के धन का प्रयोग करेंगे, चौड़ी पत्ती वाला कोई वृक्ष लगायेंगे, दक्षिणमुखी घर में रहेंगे तो आपका बुध कमजोर हो सकता है। यदि आपका बुध किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आपका जीवन बहुत अच्छा नहीं हो सकता है। आपको भाइ–बहनों का सुख नहीं मिल सकता है। आपका उनसे झगड़ा हो सकता है। आपका भाग्य देर से उदय हो सकता है। आपको संतान सुख देर से प्राप्त हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1– मामा और बुआ से न लड़ें।
2– चौड़ी पत्ती वाला कोई वृक्ष न लगायें।

उपाय :

1– कन्याओं की सेवा करें या दुर्गा पूजा करें।
2– तोता पालें।

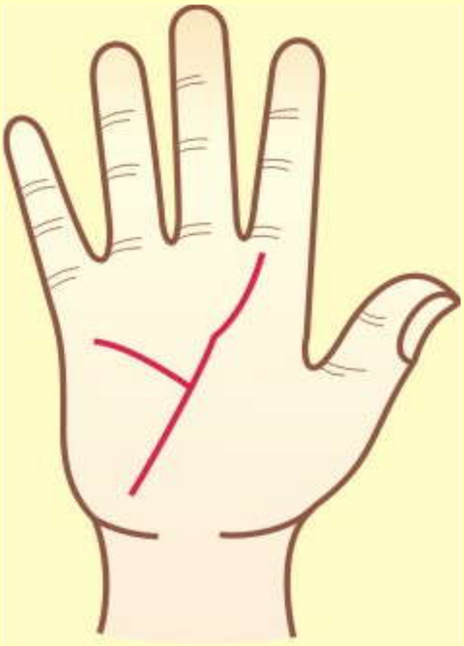

आपकी कुण्डली में बृहस्पति पॉचवें भाव में स्थित है। आपकी संतान प्रगति करेगी। अपनी आयु बढ़ने के साथ–साथ आप भी प्रगति करेंगे। आपकी 16वें साल की आयु के दौरान आपका भाग्य चमकेगा। आप संतान की तरफ से सुखी रहेंगे। आपको 60 साल की आयु तक उत्तम परिणाम प्राप्त होंगे। आपको अपनी संतान के जन्म के बाद अपने दादा या पिता से मदद प्राप्त नहीं हो सकती है। आपकी संतान, जिसका जन्म बृहस्पतिवार को होगा, के जन्म के बाद आपका भाग्य चमकेगा। आपको आध्यात्म का परम ज्ञान होगा और आप यश प्राप्त करेंगे। आप व्यापार या लेखन के द्वारा धन कमायेंगे। आप दूसरों की मदद करेंगे। आप धन संग्रह करेंगे और खुश रहेंगे। सामाजिक क्षेत्र में लोग आपको एक प्रधान की तरह मानेंगे।

यदि आप धर्म के विरूद्ध सोचेंगे, धर्म के नाम पर एकत्र किये गये दान का प्रयोग करेंगे, साधुओं सेझगड़ा करेंगे तो आपका बृहस्पति कमजोर हो सकता है। यदि आपका बृहस्पति किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आप और अधिक क्रोध कर सकते हैं। यदि आप पराई महिलाओं के साथ संबंध रखेंगे तो आपको परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप अधिकारियों के

साथ बैर भाव रखेंगे या बिना मोल दिये कोई सामान लेंगे तो आपको हानि हो सकती है। यदि आपमांसाहारी भोजन करेंगे या आलस्य करेंगे तो आपको हानि हो सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1– ईश्वर में आस्था रखें।
2– नाव से किसी तरह का कोई संबंध न रखें।

उपाय :

1–साधुओं की सेवा करें।
2–धर्मशाला या धार्मिक स्थान को साफ करें।

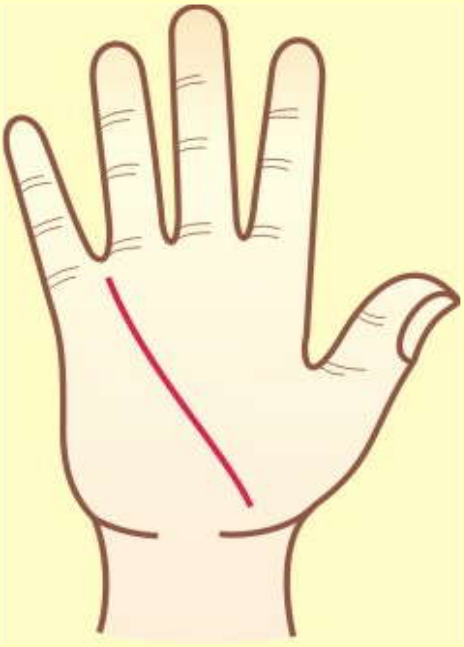

आपकी कुण्डली में शुक्र पॉचवें भाव में स्थित है। आप विद्वान होंगे। आप अपने शत्रुओं को परास्त करेंगे। आपको संतान सुख की प्राप्ति होगी। अपनी पत्नी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे और आपका वैवाहिक जीवन आनन्दपूर्ण होगा। आपकी पत्नी वफादार होंगी। आपको सफेद रंग की वस्तुओं से लाभ प्राप्त होगा। आप अपने समुदाय से प्रेम करेंगे। आपके विवाह के 5 साल बाद आपको धन और नौकरों का बहुत सुख प्राप्त होगा। आपको अपने व्यवसाय में उन्नति प्राप्त होगी। जब तक आपकी पत्नी जीवित हैं, आपको किसी प्रकार का अभाव नहीं होगा। आपका धन बढ़ेगा। आप अपने परिवार और देश से प्रेम करेंगे। आप अपने भाई के लिये अनुकूल होंगे। आप जीवन में बाधाओं का सामना नहीं करेंगे। आपका जीवन आनन्द और शांति से पूर्ण होगा।

यदि आपने अपना चरित्र खराब किया, अपने माता–पिता की इच्छा के विरूद्ध विवाह किया तो आपका शुक्र कमजोर हो सकता है। यदि आपका शुक्र किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आप कामुक हो सकते हैं और इस कारण से आपके सुख में बाधा पहॅुच सकती है। यदि आपकी संगति बुरी हुई या आप प्रेम प्रसंग में पड़े तो भाग्य आपका साथ नहीं दे सकता है। आपके कारण आपके मित्रों को परेशानी हो सकती है। आप दोहरी प्रकृति वाले व्यक्ति होंगे। आपकी पत्नी का गर्भपात हो सकता है या आपको संतान प्राप्ति में देरी हो सकती है। यदि आप प्रेम विवाह करते हैं तो आपको पुत्र की प्राप्ति नहीं हो सकती है। आपकी बहन या बुआ के धन का नाश हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1– महिलाओं के लिये दीवाने न हों।
2– अपने माता–पिता की इच्छा के विरूद्ध विवाह न करें।
3– प्रेम या अन्तर्जातीय विवाह न करें।

उपाय :

1– अपने शरीर पर दही या दूध मलकर स्नान करें।
2– गाय की सेवा करें।

शनि दशम भाव में

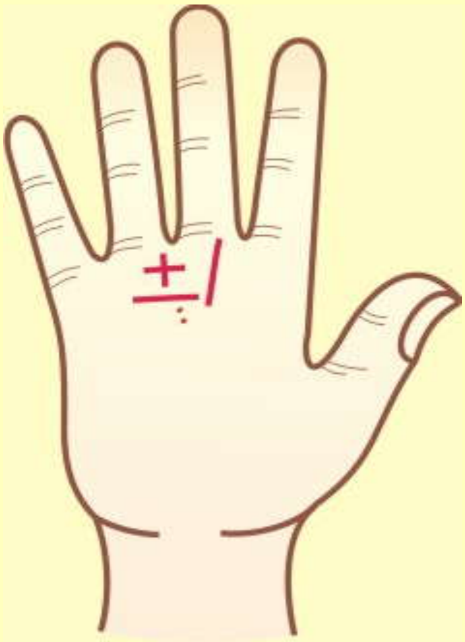

आपकी कुण्डली में शनि दसवें भाव में स्थित है। आप महत्वाकांक्षी होंगे। आपको सरकार से लाभ प्राप्त होगा। यदि आप दूसरों का आदर करेंगे तो आपको भी सम्मान मिलेगा। प्रत्येक 7 साल की अवधि के बाद आपका धन बढ़ेगा। आपकी आयु के प्रत्येक 3 साल आपके लिये लाभकरी होंगे। आप धार्मिक और सद्‌गुणी व्यक्ति होंगे, लेकिन अपनी वृद्धावस्था के दौरान आप निकम्मे हो सकते हैं। आपके ससुराल वालों का धन भी बढ़ेगा। आपको उत्तम वाहन का सुख प्राप्त होगा। यदि आपअपना व्यवसाय एक स्थान पर करते हैं तो आपको लाभ प्राप्त होगा। आप मेहनती होंगे और अपना भाग्य स्वयं लिखेंगे। आप 39 साल की आयु तक पिता का उत्तम सुख प्राप्त करेंगे। 3रा, 4था, 9वॉ, 21वॉ, 33वॉ, 40वॉ और 57वॉ साल आपके जीवन का बहुत लाभकरी होगा। आपका धन,प्रगति और सम्मान इन सालों में 10 गुना बढ़ेगा।

यदि आप 48 साल की आयु के पहले घर बनाते हैं, मांस–मदिरा का सेवन करेंगे, अपना चरित्र खराब करेंगे, यात्रा वाला व्यवसाय करेंगे तो आपका शनि कमजोर हो सकता है। यदि आपका शनि किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आपके माता–पिता, जीवनसाथी और ससुराल वालों को परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आपको हानि हो सकती है या आपकी प्रगति रूक सकती है। आपका धन और सम्मान लुप्त हो सकता है। आपके जीवन का 27वॉ साल अशुभ हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1– मांस–मदिरा का सेवन न करें।
2– भाग–दौड़ के काम न करें।

उपाय :

1– अपने पास हथियार न रखें।
2– अपने मस्तक पर केसर का तिलक लगायें।

आपकी कुण्डली में राहु चौथे भाव में स्थित है। आप सद्‌गुणी, धनी और दीर्घायु होंगे। आप तीर्थस्थानों की यात्रा करेंगे। आप सज्जन होंगे और आरामदायक जीवन व्यतीत करेंगे। आप बड़ी सम्पत्ति के मालिक होंगे। आपको अपने संबंधियों से धन और सम्पत्ति प्राप्त होगी। आप दूसरों की मदद करेंगे और लोग आपको परोपकारी व्यक्ति मानेंगे। आप दयालु होंगे और आपको वाहन का सुख प्राप्त होगा। आप अपनी बहन और पुत्री के लिये धन खर्च करेंगे। आपको अपने ससुराल से धन और लाभ प्राप्त होते रहेंगे। आपके ससुराल वालों का धन बढ़ेगा। आप 24 साल की आयु के बाद धन संग्रह करेंगे। आपके पिता और संतान को उत्तम परिणाम प्राप्त होंगे, परन्तु आपकी माता के साथ ऐसा नहीं हो सकता है। आपको भूमि, भवन, वाहन और जीवन के अन्य सुख प्राप्त होंगे। यदि आप सरकारी नौकरी में हैं तो आप अपने विभाग में एक उच्च पद प्राप्त करेंगे। आपको बन्दूकया पिस्तौल रखने का शौक होगा।

यदि आपने पूजा का स्थान बदला, लकड़ी का कोयला अपने घर की छत पर रखा, सीढ़ियों के नीचे रसोई बनायी, अपनी माता की उम्र की महिलाओं के साथ संबंध रखा तो आपका राहु कमजोर

हो सकता है। यदि आपका राहु किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आपको 34 साल की आयु के दौरान परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आपकी माता को भी परेशानी हो सकती है। आपके ससुराल और ननिहाल वालों को अशुभ परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। आप अपनी रखैल पर धन बर्बाद करने के बाद अपना जीवन बर्बाद कर सकते हैं। आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं। आप शेखचिल्ली की तरह दिन में सपने देख सकते हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1– अपनी माता की उम्र की महिलाओं के साथ अनैतिक संबंध न रखें।
2– गंगा स्नान करें।

उपाय :

1–घर पर गंगा जल से स्नान करें।
2–पानी में सूखा धनिया प्रवाहित करें।

केतु दशम भाव में

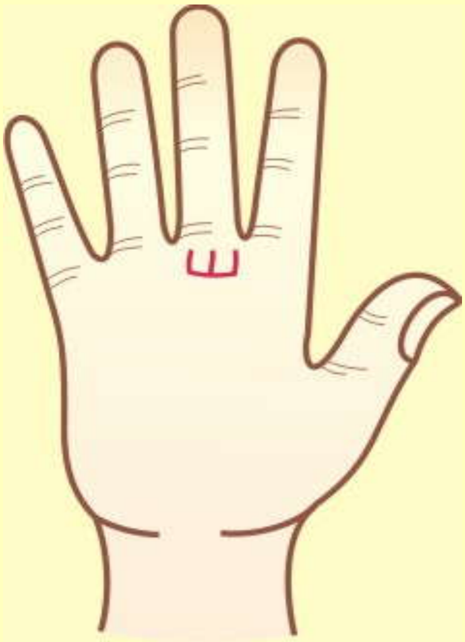

आपकी जन्मकुंडली में केतु दसवें घर में स्थित है। आप धनवान होंगे और हर तरह की सुख–सुविधाओं से परिपूर्ण होंगे। आपका जीवन खुशहाल होगा और आपको संतान सुख की प्राप्ति होगी। आपको पुत्र संतान की तुलना में कन्या संतान से अधिक सुख प्राप्त होगा। आप खेल जगत में विश्व प्रसिद्ध बन कर ख्याति प्राप्त कर सकते हैं। आपके धन में बढ़ोत्तरी होगी। आप शंकालु स्वभाव वाले हो सकते हैं। आपके जीवन में 40 वर्ष की आयु तक समय मिला–जुला फल देगा। इसके बाद का समय बहुत ही शुभ और सुखकारक सिद्ध होगा। आपकी आर्थिक स्थिति पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। कुल मिलाकर आपका जीवन सुखमय रहेगा।

यदि आपने अपने भाई से झगड़ा किया, पराई स्त्रियों से अनैतिक संबंध रखे तो आपका केतु मंदा हो सकता है। यदि किसी कारण वश केतु मंदा हो गया तो आपका चाल–चलन ठीक नहीं हो सकता है। आप या तो नपुंसक हो सकते हैं या आपकी पुत्रियां अधिक हो सकती या आपको पुरुषसंतान नहीं हो सकती है या संतान गोद लेने की नौबत आ सकती है। इसकी वजह से आपको बहुत परेशानियां झेलनी पड़ सकती हैं। आपके भाई आपको बर्बाद कर सकते हैं या आपकेधन का दुरुपयोग कर सकते हैं। पराई औरत के साथ संबंध आपके दाम्पत्य सुख में बाधा पहुंचा सकता है। यह आपके जीवन के लिए घातक सिद्ध हो सकता है। आपको 48 वर्ष की आयु के आस–पास या माता की मौत के बाद पुत्र सुख मिल सकता हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1– चाल–चलन ठीक रखें।
2– कुत्तों से नफरत न करें।

उपाय :

1– मकान की नींव में चांदी के बर्तन में शहद भर कर रखें।
2– घर में चांदी के बर्तन में शहद भर कर रखें।

जीवन के विभिन्न पहलुओं से संबंधित कारण और उपाय

(सभी भविष्यफल लाल किताब कुण्डली पर आधारित हैं)

शिक्षा से संबंधित भविष्यफल और उपाय –

यदि आप परीक्षा में लाल रंग का पेन जिसका कैप सुनहरा हो, जिसमें किसी भी रंग की स्याही भरीहो, उसका इस्तेमाल करेंगे, तो परीक्षा में अवश्य उतीर्ण होंगे।

जेहि पर कृपा करहि जनु जानी। कबि उर अजिर नचावहि बानी।
मोरि सुधारिहि सो सब भांती। जासु कृपा नहिं कृपा अघाती।

इस चौपाई का 108 बार प्रतिदिन प्रातः काल जप करें।

ऊँ माँनिसाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतोः समाः।
यत् क्रौञ्चमिथुना देकमवधीः काममोहितम्।

इस मंत्र का प्रतिदिन प्रातःकाल जागते ही बिना किसी से बोले तीन बार जप करने से उत्तम विद्या की प्राप्ति होती है।

जनक सुता जग जननी जानकी।
अजिसय प्रिय करूनानिधान की।
ताके जुग पद कमल मनावउँ।
जासु कृपा निर्मल मति पावउँ।

श्री जानकी अथवा श्री सीता राम जी के चित्रपट का पूजन करके इस मंत्र का 108 बार प्रतिदिन जाप करने से उत्तम विद्या की प्राप्ति होती है।

बुद्धिहीन तनु जानि के, सुमिरौ पवन कुमार।
बल बुद्धि विद्यादेहु मोहिं हरहु कलेस विकार।।

श्री हनुमान जी की पूजा करके उपयुक्त दोहे का एक माला (108 बार) प्रतिदिन जाप करें। इससे बुद्धि एवं स्मरण शक्ति में वृद्धि होगी।

गुरु गृह गये पढ़न रघुराई।
अल्प काल विद्या सब आई।।

इस चौपाई का प्रतिदिन एक माला (108 बार) जाप करके विद्यालय जाने से निश्चय ही परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी।

लाल किताब के अनुसार, जो बच्चे पढ़ने में कमजोर हैं, उन्हें हरे रंग की तुरमली चाँदी की अंगुठी

या नेकलेस में पहनने से लाभ हो सकता है।

बृहस्पतिवार को पीले कपड़े मे 7 हल्दी की गांठें और बेसन के लड्डू बांधकर नदी में प्रवाहित करनेसे परीक्षा में अवश्य सफलता प्राप्त होगी।

'ऊँ नमः शिवाय' का जाप करके लाल धागे में दो पाँच मुखी रूद्राक्ष के बीच में एक छेद मुखी रूद्राक्ष को शिवलिंग से स्पर्श कराके धारण करें।

'ऊँ गंग गणपतेः नमः' नामक मंत्र को ग्यारह बार परीक्षा आरम्भ होने से पूर्व जाप करें, परिणाम आपके पक्ष में होगा।

परीक्षा देने जाते समय किसी धार्मिक स्थान में आधा लीटर दूध दान करना उपयोगी साबित हो सकता है।

लाल किताब के अनुसार, यदि आपकी संतान पढ़ने में कतरा रहा हो, या स्कूल ना जाने के लिए बहाने बनाती हो, या हठ करती हो, तो तांबे का एक चौकोर टुकड़ा सफेद धागे में बांधकर उसके गले में पहनायें।

'श्री कृष्ण प्रसंग' नामक मंत्र को पूष्य नक्षत्र या किसी शुभ दिन को लाल कलम से 17 बार सफेद पन्ने पर लिखकर परीक्षा के दौरान अपने जेब में रखें।

स्वास्थ्य से संबंधित महत्वपूर्ण योग और उपाय –

आपकी कुण्डली में बुध तीसरे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आपको कोई गंभीर बीमारी होती है, तो आपको निम्न उपाय करना चाहिए– बुध से संबंधित वस्तुओं का प्रयोग ना करें।नौवें और ग्यारहवें भावों में स्थित ग्रहों के रंग के अनुसार, पत्थर जमीन में दबायें। सूर्य की वस्तुएं अपने पूर्वी दरवाजे पर ना लगायें।

आपकी कुण्डली में शुक्र पाँचवें या छठे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आपकी पत्नी बीमार रहती हैं, तो उन्हें अपने बालों में सोने का हेयर पिन लगाना चाहिए।

आपकी कुण्डली में सूर्य चौथे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको रतौंधी होने की संभावना ज्यादा होगी।

आपकी कुण्डली में सूर्य और राहु एक साथ स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपको चर्म–रोग हो सकते हैं। गाय या बकरी का दान करें।

आपकी कुण्डली में शुक्र पाँचवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, यदि आपका

स्वास्थ्य बहुत ज्यादा खराब होता है, तो 43 दिन तक लगातार शुक्रवार से शुरू करके अपने गुप्तांगको दही या दूध से धोयें।यदि आपके घर में कोई ना कोई हमेशा रोग ग्रस्त रह रहा है, बीमारीजाने का नाम नहीं ले रहा है, तो आपके घर में जितनी रोटी बनती है, उसमें चार मीठी रोटी जोड़कर महीने में एक बार अमावस्या या संक्रांति के दिन काले कौए, काली गाय या कुत्ते को खिलाना चाहिए, अथवा महीने में एक बार अन्दर से खोखले कद्‌दू को किसी धार्मिक स्थल पर दानकरना चाहिए, अथवा रात को रोगी के सिरहाने एक, दो या पाँच रूपये का सिक्का रखकर प्रातःकाल सफाई कर्मचारी को दान करें, अथवा यदि आप श्मशान से गुजर रहे हैं, तो एक या दो रूपये के सिक्के वहां जरूर फेंके।

धन, ब्यापार और रोजगार से संबंधित महत्वपूर्ण योग और उपाय –

आपकी कुण्डली में चंद्रमा पहले भाव में बैठा हुआ है, लाल किताब के अनुसार, आपको दूध और दूध से बनी हुई वस्तुओं का व्यापार बिल्कुल नहीं करना चाहिए, धन और आयु पर इसका बुरा प्रभाव हो सकता है।

आपकी कुण्डली में, शनि दसवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको बृहस्पति से संबंधित वस्तुओं के कारोबार से लाभ होगा।

आपकी कुण्डली में, शुक्र पाँचवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको सौन्दर्य प्रसाधनसे संबंधित कार्य में घाटा पहुंच सकता है।

आपकी कुण्डली में, सूर्य राहु, केतु अथवा शनि के साथ स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको अपने जीवन में धन की कमी महसूस होगी।

आपकी कुण्डली में, बुध आठवें, नौवें, ग्यारहवें या बारहवें भाव को छोड़कर अकेले किसी भी भाव मेंबैठा हुआ है और उस पर उसके शत्रु ग्रहों की दृष्टि नहीं पड़ रही है। लाल किताब के अनुसार, आप व्यापार में अधिक सफलता प्राप्त करेंगे।

आपकी कुण्डली में, बृहस्पति और शुक्र एक साथ स्थित हैं। लाल किताब में इसको दिखावे का धनकी संज्ञा दी गई है।

आपकी कुण्डली में, राहु–सूर्य, राहु–चंद्रमा, केतु–सूर्य या केतु–चंद्रमा एक साथ स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपको नौकरी और आर्थिक मामलों में कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है।

आपकी कुण्डली में, शुक्र दूसरे, पाँचवें, नौवें या बारहवें भाव में बृहस्पति के साथ बैठा हुआ है। लालकिताब के अनुसार, आपके जीवनसाथी या जीवनसाथी के रिश्तेदार आपके लिए धन हानि का कारण

बनेंगे।

आपकी कुण्डली में, सूर्य चौथे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको सोने, चाँदी के व्यापार से लाभ प्राप्त होगां

आपकी कुण्डली में, चंद्रमा पहले भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको दूध द्वारा बनीहुई वस्तुएं या दूध के व्यापार से हानि हो सकती है।

आपकी कुण्डली में शुक्र पाँचवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप सरकारी अधिकारी हैं, कांसे के बर्तनों का व्यापार करते हैं, अथवा ईंट का भट्ठा चलाते हैं, तो लाभ की स्थिति में रहेंगे।

आपकी कुण्डली में शनि दसवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप शनि से संबंधित वस्तुओं जैसे– लोहा, कोयला आदि का कार्य करते हैं, तो लाभान्वित होंगे।

मकान से संबंधित महत्वपूर्ण योग, सावधानियाँ और उपाय –

आपकी कुण्डली में चंद्रमा पहले भाव में स्थित है। यदि आप अपनी उम्र के 24वें वर्ष से पहले अपना मकान बनवाते हैं, तो लाल किताब के अनुसार, आपको धन हानि हो सकती है। माता और संतान के स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव पड़ सकता है। उपाय के तौर पर जमीन में सौंफ दबायें।

यदि आपके मकान का मुख्य दरवाजा दक्षिण की तरफ है और मकान से बाहर निकलते समय सीधेहाथ पर रसोई और सामने स्नानघर या पानी का स्थान हो तो आपको कोई ना कोई कष्ट हो सकता है। धन हानि की भी संभावना है।

यदि आपके मकान पर किसी पेड़ की छाया पड़ रही है, तो यह मंगल के शुभ प्रभाव को नष्ट कर देता है।

यदि आपके मकान की दीवार के पास कटा और सूखा पीपल का पेड़ है, तो आपके परिवार और धन संपत्ति पर इसका बुरा असर पड़ेगा। मंगल का प्रभाव अशुभ हो जायेगा।

आपकी कुण्डली में बुध तीसरे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप दक्षिणमुखी घरमें रह रहे हैं, तो यह आपके लिए हर प्रकार से नुकसानदायक होगा।

आपकी कुण्डली में शनि दसवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप अपनी उम्र के 48वें वर्ष से पहले मकान बनवाते या खरीदते हैं, तो मकान के मूल्य के बराबर धन हानि होगी, और आगे से धन में बढ़ोत्तर भी नहीं होगी।

आपकी कुण्डली में राहु चौथे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको अपने मकान

की मरम्मत बहुत सोच–समझकर करवाना चाहिए। भूल से भी मकान की छत ना बदलें, शौचालय के दरवाजा या शीट बदलवाने से भी धन हानि हो सकती है।

आपकी कुण्डली में, बृहस्पति और शुक्र एक साथ स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपके पास मकान होगा, परन्तु धन की कमी रहेगी। बृहस्पति या केतु का उपाय करें।

यदि आपका मकान बंद गली के अन्तिम सिरे पर स्थित है, और उसमें हवा सीधे आती है, तो आपके संतान पर इसका बुरा प्रभाव हो सकता है। ऐसे मकान में कभी ना रहें।

यदि आपके मकान पर किसी धार्मिक स्थल आदि की छाया पड़ रही है, तो घर में बीमारियां परेशानकरती रहेंगी।

रसोई घर में खाना बनाने का चुल्हा और बर्तन धोने का स्थान एक ही प्लेटफार्म पर नहीं होना चाहिए, अन्यथा घर में कलह होती रहेगी। उपाय के तौर पर इन दोनों स्थानों के मध्य पंचमुखी हनुमान का चित्र लगायें।

घर के अन्दर यदि लोहे की चारपाई हो, तो पूर्व–दक्षिण दिशा में बिछायें।

घर के मालिक को दक्षिण–पश्चिम के कोने में सोना चाहिए।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार दक्षिण दिशा में है, तो वास्तु शास्त्र के अनुसार, स्त्रियों के लिए हानिकारक होगा। ऐसे मकान में केवल विधुर पुरूष ही सुखपूर्वक रह सकते हैं। यदि आप मुख्य द्वार पर तांबे की कील गाड़े, तो स्थिति सुखद हो सकती है। चाँदी की चौड़ी पत्ती दरवाजा के एककोने से दूसरे कोने तक बिछा सकते हैं। घर पर मिट्टी का बंदर रखें, जिसका मुहं दक्षिण दिशा की ओर हो। बकरी का दान करें। दिन के दो बजे के बाद साबूत मूंग की दाल किसी धार्मिक स्थल पर दान करें।

यदि आपके मकान में कोई मिट्टी वाला स्थान नहीं है, तो यह परिवार की स्त्रियों के लिए हानिकारक हो सकता है और धन सम्पत्ति पर भी बुरा असर हो सकता है। निम्न उपाय करने से स्थिति सुखद हो सकती है। मिट्टी की बनी हुई औरत की मूर्ति घर में रखें। सफेद रूमाल में कपूरकी टिकिया, देशी घी और रूई बांधकर रखें। घर में छोटे–मोटे कार्य करने के लिए नौकरानी रखें।

यदि आपके मकान में धन रखने के लिए तिजोरी, आला या तहखाना बना हुआ है, तो उसे बिल्कुलखाली ना रखें। बादाम अथवा छुआरे रख सकते हैं।

यदि आपके मकान में कोई अंधेरी कोठरी है, तो उसमें रोशनी के लिए रोशनदान ना खोलें।

यदि आपको अपने घर की छत बदलनी है, तो पहले एक अस्थाई छत पुरानी छत के ऊपर बनायें।

आपकी कुण्डली में, मंगल आठवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको विवाह इत्यादिसमारोहों के लिए घर से बाहर वाले हिस्से में भट्ठी नहीं बनवानी चाहिए। यदि मजबूरीवश

ऐसा करना पड़े, तो भट्ठी से जली हुई मिट्टी निकालकर नदी में प्रवाहित करें, और भट्ठी में नईमिट्टी डालें।

लाल किताब के अनुसार, घर के मुख्य द्वार से बाहर निकलते समय सीधे हाथ की तरफ पानी का स्थान और उलटे हाथ की तरफ या पीठ की तरफ रसोई होना उत्तम होता है।

यदि आपके मकान पर पीपल इत्यादि की छाया पड़ रही है, तो यह आपके तरक्की के लिए नुकसानदायक हैं। आपको उस पीपल की जड़ में जल चढ़ाना चाहिए।

यदि आपके मकान के आस–पास कुआं है, तो उसमें भूलकर भी कुड़ा–करकट ना डालें। प्रतिदिन उसमें दूध डालने से आपकी उन्नति होगी।

घर के अन्दर किकर का पेड़ ना लगायें।

मकान या प्लाट का मुख्य द्वार उत्तर–पूर्व या पूर्व दिशा में होना चाहिए।

आपकी चंद्र राशि– वृष, कन्या या मकर है। आपके मकान का मुख्य द्वार दक्षिण दिशा में भी हो, तोआपको कोई हानि नहीं होगी।

लाल किताब के अनुसार, सफेद रंग या पेन्ट का प्रयोग मकान में सभी जगह किया जा सकता है।नीले रंग या पेन्ट का प्रयोग शयन कक्ष या कान्फ्रेंस हाल में करें।

हरे या क्रीम रंग का प्रयोग अध्ययन कक्ष में करें।

गुलाबी या संतरे रंग का प्रयोग भोजनालय में करें। पुलिस या मिलिट्री के स्थान पर लाल रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार पूर्व दिशा की ओर है, तो उसमें सफेद रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार दक्षिण दिशा में है, तो उसमें लाल, गुलाबी या संतरे रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार उत्तर दिशा में है, तो उसमें हरे या पीले रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार पश्चिम दिशा में है, तो उसमें नीले या हल्के रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार दक्षिण–पूर्व दिशा में है, तो मकान में हरे रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार दक्षिण–पश्चिम दिशा में है, तो मकान में हरे रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार उत्तर–पश्चिम दिशा में है, तो आपको अपने मकान में सफेद रंग का प्रयोग करना

चाहिए।

आपको अपने मकान का मुख्य द्वार मकान के कम चौड़ाई वाले हिस्से में रखना चाहिए। यदि आपकेमकान का मुख्य द्वार दो पल्लों का है, तो यह आपको अधिक लाभकारी होगा। यदि मुख्य द्वारअन्दर की तरफ खुलता है, तो यह अधिक लाभकारी होगा।

आपको अपने मकान के उत्तर और पूर्व दिशा में दक्षिण और पश्चिम दिशा से अधिक खुला स्थान रखना चाहिए।

आपको अपने मकान की दक्षिण और पश्चिम की दीवार ज्यादा मोटी और ज्यादा ऊँची रखनी चाहिए।

मकान की छत की ढलान उत्तर, पूर्व या उत्तर–पूर्व में होनी चाहिए।

अपने घर के प्रत्येक कमरे का उत्तर–पूर्व वाला कोना खाली रखें।

मकान में बरामदा और खुली छत उत्तर और पूर्व में होनी चाहिए।

मकान में बालकनी उत्तर और पूर्व में होना चाहिए। बेसमेन्ट उत्तर–पूर्वी भाग में होनी चाहिए।

यदि मकान में पत्थर की मूर्ति लगा रहे हैं, तो उसे दक्षिण–पश्चिम दिशा में लगायें।

मकान के दक्षिण–पश्चिम वाले हिस्से में सम संख्या में वृक्ष लगायें।

मकान में तुलसी जी का पौधा पूर्व, उत्तर या उत्तर–पूर्व में लगायें।

मकान में खिड़कियों की संख्या उत्तर और पूर्व दिशा में अधिक होनी चाहिए। दरवाजे और खिडकियोंकी संख्या सम होनी चाहिए, परन्तु संख्या का अन्त 10, 20 इत्यादि से नहीं होना चाहिए।

मकान में सीढ़ियां दक्षिण, पश्चिम या ईशान कोण को छोड़कर कहीं भी बनाई जा सकती हैं। सीढ़ियों की संख्या विषम होनी चाहिए। सीढ़ियों का घुमाव दक्षिणावर्ती होना चाहिए।

यदि आप अपने मकान में पानी का हौज बनवा रहे हैं, तो उसे उत्तर–पूर्व में बनवायें, यह काफी लाभदायक होगा।

यदि आप छत पर पानी की टंकी रखवा रहे हैं, तो उसे उत्तर–पश्चिम दिशा में रखवायें। टंकी का रंग काला अथवा नीला हो तो बढ़िया रहेगा।

मकान में पूजा का स्थान ईशान, पूर्व या उत्तर दिशा में होना चाहिए। भगवान की मूर्ति का मुख उत्तर या पूर्व की ओर रखें। पूजा घर का आकार पिरामिड जैसा रखें। पूजा घर के फर्श का रंग सफेद या हल्का पीला होना चाहिए। पूजा घर के दीवारों का रंग क्रीम, सफेद या हल्का नीला

रखें।

मकान में रसोई घर दक्षिण–पूर्व दिशा में होना चाहिए। खाना बनाते समय अपना मुख पूर्व की ओर रखें। रसोई घर की खिड़कियां पूर्व और दक्षिण दिशा में होनी चाहिए।

मकान में भोजनकक्ष पश्चिम दिशा में रखें। खाने की मेज आयताकार या वर्गाकार होनी चाहिए।

मकान में स्नानागार पूर्व, उत्तर या उत्तर–पश्चिम भाग में रखें।

मकान का शौचालय दक्षिण दिशा में होना चाहिए।

आपकी कुण्डली में, शनि दसवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप मकान बनवाते या खरीदते हैं, तो धन की हानि निश्चित होगी।

विवाह, स्त्री और गृहस्थ–सुख से संबंधित महत्वपूर्ण योग और उपाय –

आपकी कुण्डली में, चंद्रमा लग्न में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, 24वें से 27वें वर्ष के बीच में विवाह ना करें।

आपकी कुण्डली में, शुक्र पाँचवें या छठे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको अपने माता–पिता के मर्जी से विवाह करना चाहिए। प्रेम विवाह हरगिज नहीं करना चाहिए।

आपकी कुण्डली में, सूर्य शुभ भावों में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपकी स्त्री सुन्दर, सुघड़ और शिक्षित होगी।

आपकी कुण्डली में शनि के ऊपर सूर्य की दृष्टि पड़ रही है। लाल किताब के अनुसार, जीवनसाथीसे अनबन के कारण आपका दोबारा विवाह हो सकता है।

आपकी कुण्डली में शुक्र तीसरे, चौथे, पाँचवें, छठे, नौवें या बारहवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपकी उम्र लंबी होगी।

आपकी कुण्डली में सूर्य–शुक्र, बृहस्पति–शुक्र, मंगल–चंद्रमा या मंगल–शुक्र की युति दूसरे भाव में है। लाल किताब के अनुसार, किसी स्त्री के कारण आपका धन नष्ट हो सकता है।शीघ्र विवाह हेतु– मंगल–पार्वती स्त्रोत का पाठ प्रतिदिन करें।

शीघ्र विवाह हेतु– स्नान के पश्चात कांसे की कटोरी में सरसों का तेल भरकर मुहुर्त देखकर छाया पात्र निकालें।

शीघ्र विवाह हेतु– पीले वस्त्र में चने की दाल बांधकर बृहस्पतिवार के दिन किसी मंदिर में दान

करें।

यदि विवाह में अत्यधिक विलम्ब हो रहा है, तो वाल्मिकी रामायण के बाल–काण्ड के सर्ग 73 का 43 दिन तक लगातार पाठ करें।

शीघ्र विवाह हेतु दुर्गा सप्तशती के श्लोकों का पाठ 43 दिन तक लगातार करें।

शीघ्र विवाह हेतु सात सोमवार शिवलिंग पर दूध चढ़ायें।

संतान सुख से संबंधित महत्वपूर्ण योग और उपाय –

आपकी कुण्डली में, शुक्र पाँचवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप अपना चरित्रठीक रखते हैं, तो आप निःसंतान नहीं होंगे।

आपकी कुण्डली में, बृहस्पति पाँचवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको धर्म के नामपर चंदा या दान नहीं लेना चाहिए, अन्यथा आपका संतान पक्ष कमजोर हो सकता है।

आपकी कुण्डली में, शनि दसवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपके पिता की आयु लम्बी होगी।

आपकी कुण्डली में, चंद्रमा या बृहस्पति अपने शत्रु ग्रहों के साथ स्थित है। लाल किताब के अनुसार,आपकी माता, दादी या सास की उम्र कम हो सकती है।

आपकी कुण्डली में, बृहस्पति पहले से छठे भाव के बीच स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपकेपिता की आयु लम्बी होगी और उनका आपको पूर्ण सुख प्राप्त होगा।

आपकी कुण्डली में, सूर्य और चंद्रमा एक दूसरे के पक्के भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपको संतान का सुख अवश्य ही प्राप्त होगा।

आपकी कुण्डली में, सूर्य चौथे भाव में और शुक्र पाँचवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपमें पुरुषत्व की मात्रा कुछ कम हो सकती है। आपको उपाय की जरूरत होगी।

आपकी कुण्डली में, मंगल, शुक्र या बुध पक्के भावों में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपको संतान प्राप्ति में कोई भी बाधा नहीं आ सकती है और संतान भी समय पर होगी।

यदि आप बंद गली के मकान में रहते हैं तो आपको संतान संबंधी परेशानियों का सामना करना पड़सकता है और नर संतान की प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है। उपाय के तौर पर आपको

बृहस्पतिवार से लगातार 43 दिन तक प्रतिदिन केसर का तिलक लगाना चाहिए।

यदि आप संतान संबंधी समस्या से ग्रस्त हैं, तो आपको अपने घर में हरिवंश पुराण या महाभारत कापाठ करना चाहिए।

यदि आप कुत्ते के नर संतान को अपने घर में रखते हैं, तो आपको संतान अवश्य होगी।

संतान की प्राप्ति के लिए गणेश जी की पूजा करना लाभदायक होता है।

यदि आपको संतान संबंधी कोई समस्या है, तो काले कुत्ते की सेवा करना या उसे अपने घर पर रखकर खाना खिलाना आपके लिए फायदेमंद रहेगा।

यदि किसी स्त्री को संतान हो, परन्तु जीवित ना रहे, तो लाल किताब में ऐसी स्थिति से बचाव के लिए बहुत ही साधारण और सफल उपाय बताया गया है– स्त्री के गर्भवती होने पर उसके बाजु परलाल धागा बांध दें और संतान होने के पश्चात उस धागे को नवजात शिशु के बाजु पर बांध दें और स्त्री को नया लाल धागा पुनः बांधें। स्त्री के बाजु पर 18 महीने तक बंधा रहना चाहिए।

लाल किताब के अनुसार, यदि किसी स्त्री का बार–बार गर्भपात होता है, तो काला धागा उसकी कमर में बांधें और संतान के जन्म के बाद यह धागा संतान के बाजु पर बांधें।

लाल किताब के अनुसार, यदि किसी की संतान जीवित नहीं रहती है, तो संतान के जन्मदिन पर मिठाई की जगह नमकीन खाद्य पदार्थ वितरण करना चाहिए।

लाल किताब के अनुसार, प्रसव के समय स्त्री को शारीरिक कष्ट से बचाने और नवजात शिशु के स्वास्थ्य के लिए प्रसव पीड़ा के समय दो पीतल के बर्तन लेकर एक में मीठी वस्तु और दूसरे में दूध भर के स्त्री के हाथ से स्पर्श करवाकर रखना चाहिए, और शिशु के जन्म के बाद से किसी धार्मिक स्थान में दान करना चाहिए।

लाल किताब के अनुसार, यदि किसी की नर संतान जीवित न रहती हो, तो उन्हें किसी धार्मिक स्थान में शिशु को जन्म देना चाहिए।

लाल किताब के अनुसार, यदि संतान को कष्ट हो, तो गाय, कौए अथवा कुत्तों को अपने भोजन का एक हिस्सा दें।

लाल किताब के अनुसार, यदि आपके घर में एक छत को ढक कर मकान बनाया गया हो, तो संतान होने की संभावना क्षीण होगी।

लाल किताब के अनुसार, आपके घर में कुएं को ढक कर मकान बनाया गया हो, तो संतान होने की संभावना क्षीण होगी।

विदेश यात्रा और भ्रमण से संबंधित महत्वपूर्ण योग और उपाय –

आपकी कुण्डली में, बुध तीसरे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपके जीवन में व्यापारसे संबंधित यात्रायें अधिक होंगी।

लाल किताब में अन्य महत्वपूर्ण फलादेश
(सभी भविष्यफल लाल किताब कुण्डली पर आधारित हैं)

अन्धे ग्रहों की कुण्डली

लाल किताब के अनुसार, यदि किसी कुण्डली के दसवें भाव में दो आपस में शत्रु ग्रह में बैठ जायें, तो ऐसीकुण्डली को अंधे ग्रहों की कुण्डली (टेवा) कहते हैं। कुण्डली में दसवां भाव जातक का कर्म स्थान है, इस घर का जातक की कमाई से संबद्ध है, इसलिए ऐसे भाव में दो या दो से अधिक परस्पर शत्रुता वाले ग्रह बैठ जायें तो, जातक के कर्मक्षेत्र में असंतुलन की स्तिथि पैदा हो जाती है। जातक की नौकरी या व्यापार में स्थिरता नहीं आ पाती है। दसवें भाव में बैठे अंधे हो चुके ग्रहों को ठीक करने के लिए दस अंधोंको भोजन कराना चाहिए।

निष्कर्ष– आपकी कुण्डली अंधे ग्रहों की कुण्डली (टेवा) नहीं है।

आधे अन्धे ग्रहों की कुण्डली

लाल किताब के अनुसार, यदि चौथे भाव में सूर्य और सातवें भाव में शनि स्थित हों तो ऐसी कुण्डली को आधे अंधे ग्रहों की कुण्डली कहते हैं। इस ग्रह की स्थिति का जातक की मानसिक स्थिति और व्यवसायिकजीवन पर अशुभ असर होगा। जातक की मानसिक शांति में काफी कमी आ सकती है। चौथा भाव हमारे सुख का भी घर है, इस ग्रह स्थिति के कारण गृहस्थ सुख में कमी आने की संभावना होती है।

निष्कर्ष– आपकी कुण्डली आधे अंधे ग्रहों की कुण्डली (टेवा) नहीं है।

धर्मी कुण्डली

लाल किताब के अनुसार, यदि कुण्डली में राहु या केतु 4थे भाव में या चन्द्रमा के साथ अथवा शनि 11वें भाव में या बृहस्पति के साथ बैठा हुआ है, तो ऐसी कुण्डली को धर्मी कुण्डली (टेवा) कहते हैं। ऐसे जातक के जीवन में कभी भी कोई बड़ी समस्या नही आ सकती है, जो कि जीवन में उथल–पुथल मचा दे। किसी बहुत मुश्किल या कष्ट के समय उसे कहीं न कहीं से दैवीय सहायता प्राप्त हो जाएगी।

निष्कर्ष– यह कुण्डली धर्मी कुण्डली (टेवा) है।

नाबालिक कुण्डली (टेवा)

लाल किताब के अनुसार, यदि कुण्डली के पहले, चौथे, सातवें और दसवें भाव (केन्द्र स्थान) में कोई भी ग्रहनहीं बैठा हुआ है या उनमें केवल बुध बैठा हुआ है, तो ऐसी कुण्डली, नाबालिक टेवा (कुण्डली) कहलातीहै। इस स्थिति में जातक की किस्मत बारह साल तक शक के दायरे में होती है।

लाल किताब के अनुसार, नाबालिक टेवा वाले जातक पर बारह वर्षों तक प्रत्येक वर्ष एक–एक ग्रह का प्रभाव अग्रलिखित रूप में पड़ेगा। जीवन पर पड़ने वाले दुषित प्रभाव की अनुकूलता हेतु निम्नांकित भाव स्थित ग्रह का उपाय करना चाहिए।

1– उम्र के पहले साल में सातवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
2– उम्र के दूसरे साल में चौथे भाव के ग्रह का असर पड़ता

है।
3– उम्र के तीसरे साल में नौवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
4– उम्र के चौथे साल में दसवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
5– उम्र के पांचवें साल में ग्यारहवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
6– उम्र के छठें साल में तीसरे भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
7– उम्र के सातवें साल में दूसरे भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
8– उम्र के आठवें साल में पांचवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
9– उम्र के नौवें साल में छठे भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
10– उम्र के दसवें साल में बारहवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
11– उम्र के ग्यारहवें साल में पहले भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
12– उम्र के बारहवें साल में आठवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।

निष्कर्ष– यह कुण्डली (टेवा) नाबालिक टेवा नहीं है।

लाल किताब में राजयोग

लाल किताब में राजयोग का यह मतलब नहीं है, कि ऐसा जातक कोई बड़ा राजा, प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति ही हो, अपितु राजयोग से कुण्डली में यह संकेत मिलता है, कि जातक के रहन–सहन का स्तर राजाओं की तरह जरूर हो सकता है।

आपकी कुण्डली में राजयोग की कोई भी स्थिति लागू नहीं हो रही है।

लाल किताब में ऋण – लक्षण और उपाय

आपकी कुण्डली में कोई ऋण लागू नहीं हो रहा है।

लाल किताब में वर्जित और अवर्जित उपाय

(1) आपकी कुण्डली में बुध तीसरे, आठवें, नौवें या बारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको अपने घर में चौड़े पत्तों वाले पौधे जैसे मनी प्लांट इत्यादि नहीं लगाना चाहिए, अन्यथा आपके स्वास्थ्य पर इसका बुरा प्रभाव पड़ेगा।

(2) आपकी कुण्डली में मंगल आठवें भाव में बैठा हुआ है। यदि आपके घर की दहलीज पर खुदी हुई भट्ठी (जो कि शादी विवाह के अवसरों पर बनाई जाती है और बाद में ढक दी जाती है) है, तो यह आपकेपरिवार के लिए बहुत ही अशुभ है। आपको चाहिए कि उस भट्ठी की जली हुई मिट्टी को नदी या नाले में बहा दें, और ऐसी भट्ठी अपनी दहलीज पर फिर ना खोदें।

(3) यदि आपके घर के आखिरी में अंधेरी कोठरी है, जिसमें दरवाजे के अतिरिक्त रोशनी आपने के लिए कोई भी जगह नहीं है, तो उसमें रोशनी के लिए रोशनदान या खिड़की नहीं खोलनी चाहिए, अन्यथा आपकी संतान पर इसका बुरा असर पड़ सकता है।

किसी कारणवश ऐसी कोठरी की छत बदलवानी पड़े तो पुरानी छत को गिराने से पहले उस कोठरी के उपर नई छत डलवा

लें।

(4) यदि आपके घर में सोने–चांदी के गहनों या रूपये–पैसे रखने के लिए सेफ, आलमारी, तिजोरी इत्यादिहै, तो उसे कभी भी पूरी तरह खाली नहीं रखें।

(5) अपने मकान के कुछ हिस्सों में मिट्टी वाला स्थान अवश्य रखें।

(6) दक्षिणमुखी मकान में ना रहें।

(7) झूठ ना बोलें।

(8) झूठी गवाही ना दें।

(9) अपशब्द ना बोलें।

(10) किसी को गाली न दें।

(11) क्रूरता न करें।

(12) ईश्वर पर विश्वास रखें।

(13) देवी–देवताओं की उपासना श्रद्धापूर्वक करें।

(14) मांस–मछली ना खायें।

(15) शराब का सेवन ना करें।

(16) कपड़े सलीके से पहनें।

(17) कान–नाक छिदवायें।

(18) दांत साफ रखें।

(19) संयुक्त परिवार में रहें।

(20) ससुराल से मधुर संबंध बनाकर रखें।

(21) कन्याओं की पूजा करें। उन्हें हरे वस्त्र, उत्तम भोजन आदि देकर प्रसन्न रखें।

(22) बहन–बेटी को मीठी वस्तुओं का उपहार दें।

(23) जिस प्रकार माता की सेवा करते हैं, उसी प्रकार जीवनसाथी का भी उचित देखभाल करें।

(24) भाभी (बड़े भाई की जीवनसाथी) की सेवा

करें।

(25) परिवार के सदस्यों का पालन करें।

(26) मुफत में किसी से कुछ ना लें।

(27) निःसंतान की संपत्ति ना लें।

(28) बड़ों के चरण स्पर्श करके आशीर्वाद प्राप्त करें।

(29) यथा संभव दक्षिणमुखी मकान में ना रहें।

(30) घर की छत में छेद ना रखें।

(31) घर में थोड़ी बहुत कच्ची जगह अवश्य रखें।

(32) विकलांगों को भोजन दें, उनकी सहायता करें।

(33) पड़ोस में कोई असहाय विधवा हो, तो उनकी सहायता करें।

(34) मनुष्येत्तर जीवों– गाय, कुत्ता, कौवा, बन्दर आदि को भोजन दें।

(35) काने और गंजे आदमी से सावधान रहें।

(36) नाक को हमेशा साफ रखें।

लाल किताब में एक साथ बैठे ग्रहों का फल

(सभी भविष्यफल लाल किताब कुण्डली पर आधारित हैं)

आपकी कुण्डली में सूर्य और राहु एक साथ चौथे भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, यह अति अशुभ युति है। आपकी 42 वर्ष की आयु में राहु आपकी संतान को कष्ट पहुंचा सकता है। आपको धन की हानि हो सकती है। आपको सरकारी कार्यों में समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप अशुभता को दूर करने के लिए उपाय भी करते हैं, तो राहु का समय पूर्ण होने के बाद ही सूर्य अपना पूर्ण प्रभाव देगा। सूर्य का प्रभाव आपके लिए शुभ होगा। अशुभ प्रभाव मिलने पर आपके विचार कलुषित और द्वेषपूर्ण हो सकते हैं। आपके घर में चोरी हो सकती है या आपको आर्थिक नुकसान हो सकता है, जिससे आपकी स्थिति खराब हो सकती है। ऐसा होने पर आप एक कपड़े में जौ के थोड़े दाने बांधकर घर के अंधेरे हिस्से में किसी वजनदार चीज से दबाकर रख दें। यदि आप अस्वस्थ है या आपको बुखार आता हो, तो आप जौ को गोमूत्र से धोकरनदी में बहा दें। राहु से संबंधित चीजें, जैसे बादाम, नारियल को बहते पानी में प्रवाहित करें। तांबे के सिक्के को रात्रि में आग में तपाकर सुबह बहते पानी में प्रवाहित करें। सिक्का प्रवाहित करने के तुरन्त बाद आपको पुत्र और नजदीकी संबंधियों के सामने नहीं जाना चाहिए– उन पर सूर्य और राहु का अशुभ प्रभाव हो सकता है।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति और शुक्र एक साथ पाँचवें भाव में स्थित हैं। यह युति रोगों और कष्टोंसे आपकी रक्षा करेगी। दोनों ग्रहों का संयुक्त प्रभाव 32 वर्ष की आयु तक रहेगा। विपरीत लिंगी व्यक्तियों से आपको सहायता प्राप्त होगी। आप विद्यार्जन और संतान के संबंध में सुखी होंगे।आप अपने ज्ञान से धन अर्जित करेंगे। आपको पहले बृहस्पति और बाद में शुक्र का शुभ या अशुभ फल मिलेगा। इस युति के अशुभ होने पर आपका विपरीत लिंगी व्यक्तियों की तरफ अधिक झुकाव हो सकता है और आप विलासी हो सकते हैं। आपमें संतान पैदा करने की शक्ति क्षीण हो सकती है। आपको संतान के जन्म से ही दुख प्राप्त हो सकते हैं। यदि आपने विपरीत लिंगी व्यक्तियों के साथ संबंध बनाये, तो आपको बार–बार धन–हानि हो सकती है। आपके धन की चोरी भी हो सकती है। अतः आपको अपना आचरण और व्यवहार पवित्र और ठीक रखना चाहिए।

आपकी कुण्डली में, शनि और केतु एक साथ दसवें भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, यहयुति शुभ परिणाम प्रदान करती है। इसमें शनि की प्रमुख भूमिका होती है। इस युति के किसी अन्य ग्रह से जुड़ने पर तीनों का प्रभाव मंद पड़ जायेगा। आपके भाग्य का निर्णय आपकी 18 वर्ष की आयु के बाद होगा। आपमें संतानोत्पत्ति की क्षमता अधिक होगी। आपको एक रंग का जानवर ही पालना चाहिए। एक से अधिक रंगो का (चितकबरा) जानवर पालने से शनि और केतु अशुभ हो जायेंगे। घोड़ा पालने से कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ेगा।

लाल किताब में गोचर शनि (शनि साढेसाती) का फल और उपाय

द्वादशे जन्मगै राशौ द्वितीये च शनैश्चर।

सर्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुखैर्युतो भवेत।।

(गोचर में जब शनि ग्रह, जन्म चंद्र से बारहवें, पहले और दूसरे भाव में भ्रमण करता है, उस समय (लगभग साढ़े सात वर्ष तक) को शनि साढ़ेसाती के नाम से जाना जाता है।)

(सामान्यतः यह माना जाता है, कि शनि की साढ़ेसाती के दौरान जातक मानसिक कष्ट, शारीरिक कष्ट एवंआर्थिक संकट से गुजरता है। साढ़ेसाती से लोग चिन्तित हो जाते हैं एवं उनके मन में एक अनजाना साडर बना रहता है। जातक में असंतोष, निराशा, आलस्य, तनाव, रोगों से हानि, चोरी या आगजनी से हानि, घर में विवाद या किसी पारिवारिक सदस्य की मृत्यु आदि जैसे फल प्राप्त होने का डर बना रहता है। लेकिन हकीकत में साढ़ेसाती के किसी चरण का पूरा समय– साढ़े सात साल– ऐसा नहीं होता है। काफी शुभ फल जैसे विवाह, संतानोत्पत्ति, नौकरी या व्यवसाय में उन्नति, विदेश यात्रा, भूमि, भवन या वाहनका क्रय, कर्ज से मुक्ति, उंचे तबके के लोगों से संपर्क और उनसे लाभ, धार्मिक स्थलों की यात्रा या धार्मिक कार्यों का आयोजन, संतानों से सुख एवं खुशी आदि भी प्राप्त होते हैं।)

शनि साढेसाती के प्रथम चक्र का विवरण

प्रथम ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से बारहवें) का फल

गोचर राशि –सिहं

Start -07:09:1977

End -04:11:1979

Duration -2 y.1 m.27 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -15:03:1980

End -27:07:1980

Duration -0 y.4 m.12 d.

पहले ढैय्या के दौरान किसी को कर्ज ना दें, क्योंकि कर्ज के रूप में दिया हुआ धन वापस आने की संभावना नहीं है। जीवनसाथी की सहायता से व्यापार या नौकरी में तरक्की हो सकती है। आपको हमेशा सचेत एवं सावधान रहना चाहिए, छिपे शत्रु आपका काम बिगाड़ने की कोशिश कर सकते हैं।

उपाय –

1– मजदूरों की सेवा करें।
2– नंगे पैर मंदिर में जाकर भगवान से क्षमा प्रार्थना करें।
3– ग्यारह शनिवार लोहे की कटोरी में सरसों का तेल भरकर डकोत को दें।

द्वितिय ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से पहले) का फल

गोचर राशि –कन्या

Start -04:11:1979

End -15:03:1980

Duration -0 y.4 m.10 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -27:07:1980

End -06:10:1982

Duration -2 y.2 m.10 d.

दूसरे ढैय्या के दौरान आपके व्यापर में कई बार बदलाव हो सकते हैं। यदि आप सोझेदारी में कोई व्यापार करते हैं, तो साझेदार से झगड़ा हो सकता है। अपने जीवनसाथी के साथ आपका अक्सर झगड़ा हो सकताहै। यदि आप चमड़ा, मशीनरी या पत्थर आदि का कोई काम करते हैं, तो आपको लाभ प्राप्त हो सकता है।

उपाय –

1– शनि स्तोत्र का पाठ करें।
2– दस अंधे पुरुषों को खाना खिलायें।
3– काले घोड़े की नाल का छल्ला पहनें।

तृतिय ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से दूसरे) का फल

गोचर राशि –तुला

Start -06:10:1982

End -21:12:1984

Duration -2 y.2 m.15 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -01:06:1985

End -17:09:1985

Duration -0 y.3 m.17 d.

इस ढैय्या के दौरान व्यापार में हानि होने की वजह से आप आर्थिक परेशानियों से घिर सकते हैं। समाज में अक्सर अपमानित होना पड़ सकता है। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपको कई समस्याओं का सामनाकरना पड़ सकता है। अपने जीवनसाथी तथा अपने ससुराल पक्ष से मधुर संबंध बनाकर रखें।

उपाय –

1– मांस–मदिरा का सेवन ना करें।
2– साँप को दूध पिलायें।
3– लगातार 43 दिन मंदिर जाकर हनुमान चालीसा का पाठ करें।

कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे) का फल

गोचर राशि –धनु

Start -17:12:1987

End -21:03:1990

Duration -2 y.3 m.3 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -20:06:1990

End -15:12:1990

Duration -0 y.5 m.26 d.

यदि कंटक शनि के दौरान आपको किसी प्रकार की कोई परेशानी या हानि होती है, तो नीचे लिखे उपाय करना लाभदायक होगा।

उपाय –

1– एक लीटर शराब नदी में प्रवाहित

करें।

2– मांस–मदिरा का सेवन ना करें।

3– शनि स्तोत्र का पाठ करें।

4– तिली के तेल में उड़द या तिल के लड्डू बनाकर बंजर भूमि में दबायें।

अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें) का फल

गोचर राशि –मेष

Start -17:04:1998

End -07:06:2000

Duration -2 y.1 m.21 d.

यदि अष्टम शनि के दौरान आपको किसी प्रकार की कोई परेशानी या हानि होती है, तो नीचे लिखे उपाय करना लाभदायक होगा।

उपाय –

1– महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।

2– चाँदी का चौरस टुकड़ा हमेशा अपनी जेब में रखें।

3– काले कुत्ते को राटी खिलायें।

4– शनिवार को आठ किलो काले उड़द की दाल नदी में प्रवाहित करें।

शनि साढेसाती के द्वितिय चक्र का विवरण

प्रथम ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से बारहवें) का फल

गोचर राशि –सिहं

Start -01:11:2006

End -10:01:2007

Duration -0 y.2 m.9 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -16:07:2007

End -10:09:2009

Duration -2 y.1 m.25 d.

पहले ढैय्या के दौरान किसी को कर्ज ना दें, क्योंकि कर्ज के रूप में दिया हुआ धन वापस आने की संभावना नहीं है। जीवनसाथी की सहायता से व्यापार या नौकरी में तरक्की हो सकती है। आपको हमेशा सचेत एवं सावधान रहना चाहिए, छिपे शत्रु आपका काम बिगाड़ने की कोशिश कर सकते हैं।

उपाय –

1– मजदूरों की सेवा करें।

2– नंगे पैर मंदिर में जाकर भगवान से क्षमा प्रार्थना करें।

3– ग्यारह शनिवार लोहे की कटोरी में सरसों का तेल भरकर डकोत को दें।

द्वितिय ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से पहले) का फल

गोचर राशि –कन्या

Start -10:09:2009

End -15:11:2011

Duration -2 y.2 m.5 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -16:05:2012

End -04:08:2012

Duration -0 y.2 m.19 d.

दूसरे ढैय्या के दौरान आपके व्यापर में कई बार बदलाव हो सकते हैं। यदि आप सोझेदारी में कोई व्यापार करते हैं, तो साझेदार से झगड़ा हो सकता है। अपने जीवनसाथी के साथ आपका अक्सर झगड़ा हो सकताहै। यदि आप चमड़ा, मशीनरी या पत्थर आदि का कोई काम करते हैं, तो आपको लाभ प्राप्त हो सकता है।

उपाय –

1– शनि स्तोत्र का पाठ करें।
2– दस अंधे पुरुषों को खाना खिलायें।
3– काले घोड़े की नाल का छल्ला पहनें।

तृतिय ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से दूसरे) का फल

गोचर राशि –तुला

Start -15:11:2011

End -16:05:2012

Duration -0 y.6 m.0 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -04:08:2012

End -02:11:2014

Duration -2 y.2 m.28 d.

इस ढैय्या के दौरान व्यापार में हानि होने की वजह से आप आर्थिक परेशानियों से घिर सकते हैं। समाज में अक्सर अपमानित होना पड़ सकता है। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपको कई समस्याओं का सामनाकरना पड़ सकता है। अपने जीवनसाथी तथा अपने ससुराल पक्ष से मधुर संबंध बनाकर रखें।

उपाय –

1– मांस–मदिरा का सेवन ना करें।
2– साँप को दूध पिलायें।
3– लगातार 43 दिन मंदिर जाकर हनुमान चालीसा का पाठ करें।

कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे) का फल

गोचर राशि –धनु

Start -26:01:2017

End -21:06:2017

Duration -0 y.4 m.24 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -26:10:2017

End -24:01:2020

Duration -2 y.2 m.29 d.

यदि कंटक शनि के दौरान आपको किसी प्रकार की कोई परेशानी या हानि होती है, तो नीचे लिखे उपाय

करना लाभदायक होगा।

उपाय –

1– एक लीटर शराब नदी में प्रवाहित करें।
2– मांस–मदिरा का सेवन ना करें।
3– शनि स्तोत्र का पाठ करें।
4– तिली के तेल में उड़द या तिल के लड्डू बनाकर बंजर भूमि में दबायें।

अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें) का फल

गोचर राशि –मेष

Start -03:06:2027

End -20:10:2027

Duration -0 y.4 m.17 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -23:02:2028

End -08:08:2029

Duration -1 y.5 m.14 d.

यदि अष्टम शनि के दौरान आपको किसी प्रकार की कोई परेशानी या हानि होती है, तो नीचे लिखे उपाय करना लाभदायक होगा।

उपाय –

1– महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।
2– चाँदी का चौरस टुकड़ा हमेशा अपनी जेब में रखें।
3– काले कुत्ते को राटी खिलायें।
4– शनिवार को आठ किलो काले उड़द की दाल नदी में प्रवाहित करें।

शनि साढेसाती के तृतिय चक्र का विवरण

प्रथम ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से बारहवें) का फल

गोचर राशि –सिहं

Start -27:08:2036

End -22:10:2038

Duration -2 y.1 m.25 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -05:04:2039

End -13:07:2039

Duration -0 y.3 m.8 d.

पहले ढैय्या के दौरान किसी को कर्ज ना दें, क्योंकि कर्ज के रूप में दिया हुआ धन वापस आने की संभावना नहीं है। जीवनसाथी की सहायता से व्यापार या नौकरी में तरक्की हो सकती है। आपको हमेशा सचेत एवं सावधान रहना चाहिए, छिपे शत्रु आपका काम बिगाड़ने की कोशिश कर सकते हैं।

उपाय –

1– मजदूरों की सेवा करें।
2– नंगे पैर मंदिर में जाकर भगवान से क्षमा प्रार्थना

करें।
3– ग्यारह शनिवार लोहे की कटोरी में सरसों का तेल भरकर डकोत को दें।

द्वितिय ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से पहले) का फल

गोचर राशि –कन्या

Start -22:10:2038

End -05:04:2039

Duration -0 y.5 m.13 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -13:07:2039

End -28:01:2041

Duration -1 y.6 m.16 d.

दूसरे ढैय्या के दौरान आपके व्यापर में कई बार बदलाव हो सकते हैं। यदि आप सोझेदारी में कोई व्यापार करते हैं, तो साझेदार से झगड़ा हो सकता है। अपने जीवनसाथी के साथ आपका अक्सर झगड़ा हो सकताहै। यदि आप चमड़ा, मशीनरी या पत्थर आदि का कोई काम करते हैं, तो आपको लाभ प्राप्त हो सकता है।

उपाय –

1– शनि स्तोत्र का पाठ करें।
2– दस अंधे पुरुषों को खाना खिलायें।
3– काले घोड़े की नाल का छल्ला पहनें।

तृतिय ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से दूसरे) का फल

गोचर राशि –तुला

Start -28:01:2041

End -06:02:2041

Duration -0 y.0 m.9 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -26:09:2041

End -12:12:2043

Duration -2 y.2 m.16 d.

इस ढैय्या के दौरान व्यापार में हानि होने की वजह से आप आर्थिक परेशानियों से घिर सकते हैं। समाज में अक्सर अपमानित होना पड़ सकता है। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपको कई समस्याओं का सामनाकरना पड़ सकता है। अपने जीवनसाथी तथा अपने ससुराल पक्ष से मधुर संबंध बनाकर रखें।

उपाय –

1– मांस–मदिरा का सेवन ना करें।
2– साँप को दूध पिलायें।
3– लगातार 43 दिन मंदिर जाकर हनुमान चालीसा का पाठ करें।

कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे) का फल

गोचर राशि –धनु

Start -08:12:2046

End -06:03:2049

Duration -2 y.2 m.27 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -10:07:2049

End -04:12:2049

Duration -0 y.4 m.25 d.

यदि कंटक शनि के दौरान आपको किसी प्रकार की कोई परेशानी या हानि होती है, तो नीचे लिखे उपाय करना लाभदायक होगा।

उपाय –

1– एक लीटर शराब नदी में प्रवाहित करें।
2– मांस–मदिरा का सेवन ना करें।
3– शनि स्तोत्र का पाठ करें।
4– तिली के तेल में उड़द या तिल के लड्डू बनाकर बंजर भूमि में दबायें।

अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें) का फल

गोचर राशि –मेष

Start -07:04:2057

End -28:05:2059

Duration -2 y.1 m.20 d.

यदि अष्टम शनि के दौरान आपको किसी प्रकार की कोई परेशानी या हानि होती है, तो नीचे लिखे उपाय करना लाभदायक होगा।

उपाय –

1– महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।
2– चाँदी का चौरस टुकड़ा हमेशा अपनी जेब में रखें।
3– काले कुत्ते को राटी खिलायें।
4– शनिवार को आठ किलो काले उड़द की दाल नदी में प्रवाहित करें।

विंशोत्तरी दशा से भविष्यफल और उपाय (लाल किताब)

चन्द्रमा दशा (18:12:1973 से 14:06:1979)

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं, या धन–संपत्ति, रोग आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– चाँदी की अंगूठी में मोती धारण करें।
2– चाँदी का कमल दान करें।
3– महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।

शनि अन्तर्दशा (18:12:1973 से 14:04:1975)

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में शनि की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या शत्रु, माता, संबंधी, भाई–बन्धु, कर्जआदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– रोज शनि स्तोत्र का पाठ करें।
2– महामृत्युंजय मंत्र का जप एवं हवन करें।
3– सोने की गाय या भैंस का दान करें।

बुध अन्तर्दशा (14:04:1975 से 13:09:1976)

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में बुध की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आपकिसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, संतान, व्यापार, प्रतिष्ठा,धन–संपत्ति आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– दुर्गा की पूजा करें एवं छोटी कन्याओं की सेवा करें।
2– विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करें।
3– बकरी का दान करें।

केतु अन्तर्दशा (13:09:1976 से 14:04:1977)

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में केतु की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या पिता, रोग, कार्य (नौकरी या व्यवसाय) आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– केतु के बीज मंत्र का 21 दिनों में सतरह हजार जप करें।
2– सर्वसम्पत्प्रदायक मृत्युंजय मंत्र का पाठ करें।
3– गणपति के 108 नामों का जप करें।

शुक्र अन्तर्दशा (14:04:1977 से 13:12:1978)

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन–सम्पत्ति, सरकारी कार्य, मित्र,

परिवारजन आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– शुक्रवार को एक गड्ढा खोदकर दो सौ ग्राम दही रखकर सफेद कपड़ा से ढक कर राख डालें।
2– दुर्गासूक्त का पाठ करें।
3– चाँदी की दुर्गा–मूर्ति दान करें।

सूर्य अन्तर्दशा (13:12:1978 से 14:06:1979)

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन–सम्पत्ति, पिता, जन्मस्थान, आँख आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी केलिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– जल में चीनी एवं लाल फूल डालकर सूर्य को अर्घ्य दें।
2– भगवान शिव की पूजा करें।
3– आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करें।

मंगल दशा (14:06:1979 से 14:06:1986)

वर्तमान में आप मंगल की महादशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं, या धन–सम्पत्ति, रक्त, परिवार, जीवनसाथी, संतान आदि सेसंबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपकोनिम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– ताँबे का कड़ा पहनें।
2– ताँबे का कमल दान करें।
3– मंगलवार का व्रत करें।

मंगल अन्तर्दशा (14:06:1979 से 10:11:1979)

वर्तमान में आप मंगल की महादशा में मंगल की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या खून, वाहन, दुर्घटना, विषैले जीव, आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– 43 दिनों में मंगल के बीज मंत्र का दस हजार जप करें।
2– शिव चालीसा का पाठ करें।
3– हनुमान चालीसा का पाठ करें।

राहु अन्तर्दशा (10:11:1979 से 28:11:1980)

वर्तमान में आप मंगल की महादशा में राहु की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आपकिसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या वाहन दुर्घटना, धन–संपत्ति, कचहरीआदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– ब्राह्मणों को मिठाई के साथ भोजन करायें एवं दक्षिणा दें।
2– चाँदी का नाग दान

करें।

3– रसोई में बैठकर भोजन करें।

गुरू अर्न्तदशा (28:11:1980 से 04:11:1981)

वर्तमान में आप मंगल की महादशा में बृहस्पति की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदिआप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या मुकदमा, सरकारी कार्य, धन–संपत्ति, भाई आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलोंमें कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– रोज बृहस्पति स्तोत्र का पाठ करें।

2– शिवसहस्त्रनाम का पाठ एवं हवन करें।

3– पका हुआ सीताफल– जो अन्दर से खोखला हो– किसी मंदिर आदि में रखें।

शनि अर्न्तदशा (04:11:1981 से 13:12:1982)

वर्तमान में आप मंगल की महादशा में शनि की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन–संपत्ति, पारिवारिक कलह, नौकरी या व्यापार, संतान, व्यसन आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धिएवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– काली गाय दान करें।

2– महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।

3– बजरंगबाण सहित हनुमान चालीसा का पाठ करें।

बुध अर्न्तदशा (13:12:1982 से 10:12:1983)

वर्तमान में आप मंगल की महादशा में बुध की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आपकिसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या सम्मान, मुकदमा, आग, वाहन दुर्घटना, धन–संपत्ति, नौकरी आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– रोज शिवलिंग पर जल चढायें।

2– चाँदी की घोड़ी दान करें।

3– विष्णुसहस्त्रनाम का पाठ करें।

केतु अर्न्तदशा (10:12:1983 से 08:05:1984)

वर्तमान में आप मंगल की महादशा में केतु की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आपकिसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, संतान, खून, धन–संपत्ति, मान–सम्मान आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– केतु स्तोत्र का पाठ करें।

2– महामृत्युंजय मंत्र का जप एवं हवन करें।

शुक्र अर्न्तदशा (08:05:1984 से 08:07:1985)

वर्तमान में आप मंगल की महादशा में शुक्र की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन–संपत्ति, व्यसन, मान–सम्मान आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए

आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– सफेद गाय या चाँदी की गाय दान करें।
2– दुर्गासप्तशती का पाठ करें।
3– शुक्रवार को सफेद गायों को चारा डालें।

सूर्य अन्तर्दशा (08:07:1985 से 13:11:1985)

वर्तमान में आप मंगल की महादशा में सूर्य की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आपकिसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या नौकरी, व्यापार, धन–हानि, जीवनसाथी, संतान, विषैले जीव, आँख आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– सूर्य के बीज मंत्र का सात हजार जप करें।
2– आदित्यहृदयस्तोत्र का पाठ करें।
3– तांबे के सात चौरस टुकड़ों पर केसर का तिलक लगाकर गुलाबी रंग के कपड़े में बांध लें और सूर्योदयके बाद पूर्व की ओर मुंह करके जंगल में दबायें।

चन्द्रमा अन्तर्दशा (13:11:1985 से 14:06:1986)

वर्तमान में आप मंगल की महादशा में चंद्रमा की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या नौकरी, व्यापार, धन–सम्पत्ति, जीवनसाथी, संतान, पालतू पशु आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– सफेद गाय का दान करें।
2– शंख या सीप में 21 चावल के दाने भरकर अमावस्या के दिन नदी में प्रवाहित करें।
3– दुर्गा एवं लक्ष्मी की पूजा करें।

राहु दशा (14:06:1986 से 13:06:2004)

वर्तमान में आप राहु की महादशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं, या धन–संपत्ति, लड़ाई–झगड़ा, विदेश निवास आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– सप्त धान्य (उड़द, मूंग, गेंहू, चना, जौ, चावल, कंगनी) का दान करें।
2– स्वर्ण पात्र या सोने का सांप दान करें।
3– राहु के बीज मंत्र का जप करें।

राहु अन्तर्दशा (14:06:1986 से 24:02:1989)

वर्तमान में आप राहु की महादशा में राहु की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या नौकरी, व्यापार, धन–सम्पत्ति, मान–सम्मान, कर्ज, परिवारजन, जीवनसाथी आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– दो नारियल एवं सिक्के के दस टुकड़े नदी में प्रवाहित करें।
2– चाँदी का नाग–नागिन दान

करें।

3– नृसिंह कवच का पाठ करें।

गुरू अर्न्तदशा (24:02:1989 से 20:07:1991)

वर्तमान में आप राहु की महादशा में बृहस्पति की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन–सम्पत्ति, जीवनसाथी, संतान, हृदय, वाहन दुर्घटना आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– बृहस्पतिवार से शुरू कर लगातार 43 दिनों तक अपनी नाभि के चारों ओर केसर का तिलक लगायें।

2– शिवसहस्त्रनाम स्तोत्र का पाठ करें।

3– जल से शिव का रूद्राभिषेक करें।

शनि अर्न्तदशा (20:07:1991 से 26:05:1994)

वर्तमान में आप राहु की महादशा में शनि की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन–सम्पत्ति, हृदय, गृहस्थ जीवन आदिसे संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– दुर्गासूक्त का पाठ करें।

2– काली गाय या भैंस का दान करें।

3– शनिस्तोत्र का पाठ करें।

बुध अर्न्तदशा (26:05:1994 से 13:12:1996)

वर्तमान में आप राहु की महादशा में बुध की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या व्यापार, जीवनसाथी, सांस आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– गोपालसहस्त्रनाम स्तोत्र का पाठ करें।

2– विष्णुसहस्त्रनाम स्तोत्र का पाठ करें।

3– लगातार 43 दिन छोटी कन्याओं को मिठाई खिलायें।

केतु अर्न्तदशा (13:12:1996 से 31:12:1997)

वर्तमान में आप राहु की महादशा में केतु की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, संतान, माता, पिता, परिवारजन आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– सर्पाकार चाँदी की अंगुठी पहनें।

2– गणपतिसहस्त्रनाम स्तोत्र का पाठ करें।

3– गणेश चतुर्थी को गणेश जी की पूजा करें।

शुक्र अर्न्तदशा (31:12:1997 से 31:12:2000)

वर्तमान में आप राहु की महादशा में शुक्र की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, पिता, नौकरी,

मान–सम्मान आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– शुक्र के बीज मंत्र का 21 दिनों में सोलह हजार जप करें।
2– श्रीसूक्त का पाठ करें।
3– शुक्रवार को नीम के तने में चाँदी का नौ वर्गाकार टुकड़े दबायें।

सूर्य अन्तर्दशा (31:12:2000 से 25:11:2001)

वर्तमान में आप राहु की महादशा में सूर्य की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या आग, वाहन दुर्घटना, जमीन–जायदाद, धन–संपत्ति, व्यापार आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– 11 रविवार को गेहूं, गुड़ एवं तांबे का टुकड़ा दान करें।
2– महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।
3– दो नारियल एवं सौ ग्राम जौ 5 शनिवार को नदी में प्रवाहित करें।

चन्द्रमा अन्तर्दशा (25:11:2001 से 26:05:2003)

वर्तमान में आप राहु की महादशा में चंद्रमा की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या परिवारजन, धन–संपत्ति, व्यापार यानौकरी आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमीके लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– सोमवार को दूध में सफेद फूल डालकर शिवलिंग पर चढ़ायें।
2– चाँदी की गाय दान करें।
3– दुर्गासप्तशती का पाठ करें।

मंगल अन्तर्दशा (26:05:2003 से 13:06:2004)

वर्तमान में आप राहु की महादशा में मंगल की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आपकिसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या परिवारजन, जीवनसाथी, संतान, नौकरी, व्यापार, दुर्घटना आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– ऋणमोचनस्तोत्र का पाठ करें।
2– सुन्दरकांड का पाठ करें।
3– मंगलवार को तंदूर वाली आठ मीठी रोटी कुत्तों को डालें।

गुरू दशा (13:06:2004 से 13:06:2020)

वर्तमान में आप बृहस्पति की महादशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं, या भूमि, वाहन आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त होरहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– बृहस्पति के बीज मंत्र का जप करें।
2– सोना या पुखराज का दान करें।
3– बृहस्पतिवार को बृहस्पति के नक्षत्र में सोने की अंगुठी में पुखराज धारण करें।

गुरू अर्न्तदशा (13:06:2004 से 01:08:2006)

वर्तमान में आप बृहस्पति की महादशा में बृहस्पति की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या परिवारजन, जीवनसाथी, संतान, धन–सम्पत्ति आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– जल से शिव का रूद्राभिषेक करें।
2– शिवसहस्त्रनाम का पाठ करें।
3– पूर्णिमा व्रत रखें एवं सत्यनारायण की कथा करें।

शनि अर्न्तदशा (01:08:2006 से 12:02:2009)

वर्तमान में आप बृहस्पति की महादशा में शनि की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, व्यवसाय, भाई–बन्धु, धन–सम्पत्ति आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– सात शनिवार को सात सौ ग्राम काले चने की दाल काली भैंस को खिलायें।
2– विष्णुसहस्त्रनाम का पाठ करें।
3– काली गाय या भैंस का दान करें।

बुध अर्न्तदशा (12:02:2009 से 20:05:2011)

वर्तमान में आप बृहस्पति की महादशा में बुध की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, धन–सम्पत्ति, साझेदार,व्यवसाय, आँख आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– नाक छेदन करायें।
2– विष्णुसहस्त्रनाम का पाठ करें।
3– काली बकरी का दान करें।

केतु अर्न्तदशा (20:05:2011 से 25:04:2012)

वर्तमान में आप बृहस्पति की महादशा में केतु की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, धन–सम्पत्ति, पिता, परिवारजन आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– रोज केतु के बारह नामों का जप करें।
2– महामृत्युंजय मंत्र का पाठ करें।
3– 11 बृहस्पतिवार को पीपल के पेड़ की प्रदक्षिणा करें।

शुक्र अर्न्तदशा (25:04:2012 से 25:12:2014)

वर्तमान में आप बृहस्पति की महादशा में शुक्र की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या पैतृक सम्पत्ति, नौकरी, जीवनसाथी,भाई–बन्धु, परिवारजन आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धिएवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– शुक्र के बीज मंत्र का जप करें।
2– सफेद गाय या भैंस का दान करें।
3– दुर्गासूक्त का पाठ करें।

सूर्य अन्तर्दशा (25:12:2014 से 13:10:2015)

वर्तमान में आप बृहस्पति की महादशा में सूर्य की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या आँख, भाई–बन्धु आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– सूर्य के बीज मंत्र का सात हजार जप करें।
2– आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ करें।
3– जल में लाल फूल डालकर लगातार 43 दिन सूर्य को चढ़ायें।

चन्द्रमा अन्तर्दशा (13:10:2015 से 12:02:2017)

वर्तमान में आप बृहस्पति की महादशा में चंद्रमा की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदिआप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या माता, पिता, नौकरी, मान–सम्मान आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– चंद्रमा के बीज मंत्र का ग्यारह हजार जप करें।
2– दुर्गासूक्त का पाठ करें।
3– सोना या चाँदी का चंद्रमा दान करें।

मंगल अन्तर्दशा (12:02:2017 से 19:01:2018)

वर्तमान में आप बृहस्पति की महादशा में मंगल की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदिआप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन–सम्पत्ति, घर, जीवनसाथी, खून आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– मंगल का व्रत रखें एवं मंगल के बीज मंत्र का 21 दिनों में दस हजार जप करें।
2– हनुमान जी के 108 नामों का जप करें।
3– रात में अपने सिरहाने तांबे के बर्तन पानी भरकर रखें और सुबह वट वृक्ष में डालें।

राहु अन्तर्दशा (19:01:2018 से 13:06:2020)

वर्तमान में आप बृहस्पति की महादशा में राहु की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या पारिवारिक कलह, पैतृक सम्पत्ति, भाई–बन्धु, व्यापार, धन–सम्पत्ति आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– राहु के नक्षत्र वाले दिन से लगातार 43 दिन जौ की आटे की गोलियां मछलियों को डालें।
2– महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।
3– चाँदी का 51 ग्राम का हाथी दान करें।

शनि दशा (13:06:2020 से 14:06:2039)

वर्तमान में आप शनि की महादशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं, या धन–संपत्ति, वाहन दुर्घटना, भौतिक सुख आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– शनि का व्रत रखें एवं शनि स्तोत्र का पाठ करें।
2– नीलम, लोहा, तिल एवं सरसों का तेल दान करें।
3– शनि के बीज मंत्र का जप करें।

शनि अन्तर्दशा (13:06:2020 से 17:06:2023)

वर्तमान में आप शनि की महादशा में शनि की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आपकिसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या मान–सम्मान, नौकरी, परिवारजन, जीवनसाथी, कर्ज, धन–सम्पत्ति आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– 21 शनिवार को सात बादाम एवं सात सौ ग्राम काली उड़द की दाल किसी धर्मस्थल में या मांगने वालेको दान दें।
2– महामृत्युंजय मंत्र का जप एवं हवन करें।
3– रोज शनि स्तोत्र का पाठ करें।

बुध अन्तर्दशा (17:06:2023 से 24:02:2026)

वर्तमान में आप शनि की महादशा में बुध की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, संतान, नौकरी या व्यवसायआदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– बुध के बीज मंत्र का 17 दिनों में नौ हजार जप करें।
2– विष्णुसहस्त्रनाम का पाठ करें।
3– बकरी या अन्न का दान करें।

केतु अन्तर्दशा (24:02:2026 से 05:04:2027)

वर्तमान में आप शनि की महादशा में केतु की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आपकिसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, संतान, व्यापार, दुर्घटनाआदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– आठ सौ ग्राम सफेद तिल एवं आठ सौ ग्राम काला तिल गंगा में प्रवाहित करें।
2– महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।
3– काले कुत्ते की सेवा करें।

शुक्र अन्तर्दशा (05:04:2027 से 05:06:2030)

वर्तमान में आप शनि की महादशा में शुक्र की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आपकिसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, आँख, नौकरी, मान–सम्मान, भाई–बन्धु आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– शुक्र के बीज मंत्र का सोलह हजार जप करें।
2– दुर्गासूक्त का पाठ करें।
3– सफेद गाय या भैंस का दान करें।

सूर्य अन्तर्दशा (05:06:2030 से 17:05:2031)

वर्तमान में आप शनि की महादशा में सूर्य की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आपकिसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या नौकरी, मान–सम्मान, भाई–बन्धु, धन–सम्पत्ति, व्यापार आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– सूर्य के बीज मंत्र का सात हजार जप करें।
2– रविवार का व्रत रखें एवं सूर्य को अर्घ्य दें।
3– अरूणसहस्त्रनाम का पाठ करें।

चन्द्रमा अन्तर्दशा (17:05:2031 से 16:12:2032)

वर्तमान में आप शनि की महादशा में चंद्रमा की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या माता, पिता, धन हानि, संतान आदिसे संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– तिल से हवन करें तथा गुड़, घी, दही–चावल, सफेद गाय आदि का दान करें।
2– शिव की उपासना करें एवं शिवलिंग पर बेलपत्र चढ़ायें।
3– दुर्गा की पूजा करें।

मंगल अन्तर्दशा (16:12:2032 से 25:01:2034)

वर्तमान में आप शनि की महादशा में मंगल की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन हानि, कर्ज, नौकरी, जीवनसाथी, भाई–बन्धु आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– ऋण के लिए ऋणमोचन स्तोत्र का पाठ करें। सामान्य कष्टों बजरंग बाण सहित हनुमान चालीसा का पाठ करें।
2– शांति हवन तथा बैल का दान करें।
3– भुजंग स्तोत्र का पाठ करें।

राहु अन्तर्दशा (25:01:2034 से 01:12:2036)

वर्तमान में आप शनि की महादशा में राहु की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या परिवार, मित्र, धन–सम्पत्ति आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– अनुष्ठान सहित राहु के बीज मंत्र का अठ्ठारह हजार जप करें।
2– महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।
3– बकरी का दान करें।

गुरू अर्न्तदशा (01:12:2036 से 14:06:2039)

वर्तमान में आप शनि की महादशा में बृहस्पति की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या संबंधी, नौकरी, व्यापार, जीवनसाथी,संतान, दुर्घटना आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– सोने का दान करें।
2– शिवसहस्त्रनाम का पाठ करें।
3– भगवान सत्यनारायण की कथा करें।

बुध दशा (14:06:2039 से 13:06:2056)

वर्तमान में आप बुध की महादशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं, या मित्र, परिवार, धन–संपत्ति, मान–सम्मान, खेती, संतान, विद्या आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी केलिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– बुधवार का व्रत रखें एवं बुध के बीज मंत्र का जप करें।
2– साने का पात्र दान करें।
3– बुधवार या बुध के नक्षत्र में पन्ना धारण करें।

बुध अर्न्तदशा (14:06:2039 से 10:11:2041)

वर्तमान में आप बुध की महादशा में बुध की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन–संपत्ति, नौकरी, व्यापार, परिवारजन,भाई–बन्धु आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– बुध स्तोत्र का पाठ करें।
2– बकरी की सेवा करें।
3– विष्णुसहस्त्रनाम का पाठ करें।

केतु अर्न्तदशा (10:11:2041 से 07:11:2042)

वर्तमान में आप बुध की महादशा में केतु की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, संतान, धन–संपत्ति आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– केतु के नक्षत्र में लहसुनिया मध्यमा अंगुली में धारण करें।
2– गणपतिस्त्रोत्र का पाठ करें।
3– काले कुत्ते की सेवा करें।

शुक्र अर्न्तदशा (07:11:2042 से 07:09:2045)

वर्तमान में आप बुध की महादशा में शुक्र की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, मान–सम्मान, भाई–बन्धु आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– चाँदी की गाय दान करें।
2– लक्ष्मीनारायण हृदय का पाठ करें।
3– दुर्गा की पूजा करें।

सूर्य अर्न्तदशा (07:09:2045 से 14:07:2046)

वर्तमान में आप बुध की महादशा में सूर्य की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या दुर्घटना, व्यापार, मुकदमा आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– रविवार या सूर्य के नक्षत्र में अनामिका अंगुली में माणिक धारण करें।
2– तांबे की गाय दान करें।
3– लगातार 43 दिन ठीक 12 बजे लाल फूल एवं जल सूर्य को चढ़ायें।

चन्द्रमा अर्न्तदशा (14:07:2046 से 13:12:2047)

वर्तमान में आप बुध की महादशा में चंद्रमा की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आपकिसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या मित्र, भाई–बन्धु, सहकर्मी, व्यापार, नौकरी, जीवनसाथी आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– अनुष्ठान सहित चंद्रमा के बीज मंत्र का जप करें।
2– दुर्गासूक्त का पाठ करें।
3– सफेद वस्त्र दान करें।

मंगल अर्न्तदशा (13:12:2047 से 10:12:2048)

वर्तमान में आप बुध की महादशा में चंद्रमा की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आपकिसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या पैतृक संपत्ति, परिवार, मुकदमा, व्यापार, संतान आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों मेंकमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– मंगल स्तोत्र का पाठ करें।
2– महामृत्युंजय मंत्र का जप एवं हवन करें।
3– तांबे का बैल दान करें।

राहु अर्न्तदशा (10:12:2048 से 29:06:2051)

वर्तमान में आप बुध की महादशा में राहु की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन–संपत्ति, भाई–बन्धु, व्यापार आदि सेसंबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपकोनिम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– छोटी कन्याओं को हरे वस्त्र दान करें।
2– दो नारियल एवं दस टुकड़े सिक्के बुधवार को जल में प्रवाहित करें।
3– सिक्के का हाथी बनाकर गंगाजन में डाल कर घर पर रखें।

गुरू अर्न्तदशा (29:06:2051 से 04:10:2053)

वर्तमान में आप बुध की महादशा में बृहस्पति की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या दुर्घटना, जीवनसाथी, संतान, गृहस्थ जीवन, धन–संपत्ति, पिता, आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– शिवसहस्त्रनाम का पाठ करें।
2– धार्मिक पुस्तकों का दान करें।
3– गाय का दान करें।

शनि अर्न्तदशा (04:10:2053 से 13:06:2056)

वर्तमान में आप बुध की महादशा में शनि की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या व्यवसाय, धन हानि, जीवनसाथी, संतान,भाई–बन्धु आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– शनिवार या शनि के नक्षत्र में उड़द की दाल के पकौड़े बनाकर काले कुत्तों को खिलायें।
2– महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।
3– काली गाय या भैंस का दान करें।

केतु दशा (13:06:2056 से 14:06:2063)

वर्तमान में आप केतु की महादशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं, या मित्र, परिवार, धन–संपत्ति, वाहन, आग, जल, विद्या, जीवनसाथी, संतान आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– सप्त धान्य (उड़द, मूंग, गेंहू, चना, जौ, चावल, कंगनी) का दान करें।
2– चाँदी का पात्र दान करें।
3– गणेश चतुर्थी का व्रत रखें।

केतु अर्न्तदशा (13:06:2056 से 10:11:2056)

वर्तमान में आप केतु की महादशा में केतु की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या स्थान परिवर्तन, आमदनी, कर्ज, मान–सम्मान, जीवनसाथी, संतान, भाई आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।
2– संकट चतुर्थी का 18 व्रत रखें।
3– काले कुत्ते की सेवा करें।

शुक्र अर्न्तदशा (10:11:2056 से 10:01:2058)

वर्तमान में आप केतु की महादशा में शुक्र की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या नौकरी, व्यापार, आमदनी, धन–संपत्ति, जीवनसाथी, संतान आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– छोटी कन्याओं को गोल–गप्पे खिलायें।
2– दुर्गासप्तशती का पाठ करें।
3– सफेद गाय या चाँदी की गाय दान करें।

सूर्य अन्तर्दशा (10:01:2058 से 17:05:2058)

वर्तमान में आप केतु की महादशा में सूर्य की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या नौकरी, व्यापार, माता, पिता आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– सात रविवार लाल गाय को हरा चारा डालें।
2– तांबे या चाँदी की गाय दान करें।
3– सूर्य स्तोत्र का पाठ करें।

चन्द्रमा अन्तर्दशा (17:05:2058 से 16:12:2058)

वर्तमान में आप केतु की महादशा में चंद्रमा की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या पैतृक संपत्ति, परिवारजन, संबंधी, जीवनसाथी, माता, भाई आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभफलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– सफेद गाय का दान करें।
2– दुर्गासूक्त का पाठ करें।
3– चंद्रस्तोत्र का पाठ करें।

मंगल अन्तर्दशा (16:12:2058 से 14:05:2059)

वर्तमान में आप केतु की महादशा में मंगल की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आपकिसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या नौकरी, परिवारजन, कर्ज, गृहस्थ जीवन, जीवनसाथी, संतान आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– चाँदी के बर्तन में शहद भरकर मकान की नींव में दबायें।
2– लाल बैल या तांबे का बैल दान करें।
3– महामृत्युंजय का पाठ करें।

राहु अन्तर्दशा (14:05:2059 से 01:06:2060)

वर्तमान में आप केतु की महादशा में राहु की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या नौकरी या व्यापार, धन–संपत्ति आदि सेसंबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपकोनिम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– अनुष्ठान के साथ राहु के बीज मंत्र का जप करें।
2– दुर्गासूक्त का पाठ करें।
3– बुधवार को ग्यारह किलो कच्चा कोयला नदी में प्रवाहित करें।

गुरू अन्तर्दशा (01:06:2060 से 08:05:2061)

वर्तमान में आप केतु की महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि

आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, संतान, धन–संपत्ति, व्यवसाय मान–सम्मान आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– 11 पूर्णिमा को व्रत रखें। व्रत के दौरान पीला वस्त्र पहनें।
2– अनुष्ठान के साथ शिवसहस्त्रनाम का जप करें।
3– शिवसंकल्प का जप करें।

शनि अर्न्तदशा (08:05:2061 से 17:06:2062)

वर्तमान में आप केतु की महादशा में शनि की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आपकिसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या कर्ज, व्यापार, नौकरी, संतान आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– महामृत्युंजय मंत्र का जप एवं हवन करें।
2– काली गाय या भैंस का दान करें।
3– शनिस्तोत्र का पाठ करें।

बुध अर्न्तदशा (17:06:2062 से 14:06:2063)

वर्तमान में आप केतु की महादशा में बुध की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, संतान, व्यापार, नौकरी, संबंधी, धन–सम्पत्ति आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– महासुदर्शन मंत्र का जप करें।
2– अनुष्ठान के साथ विष्णुसहस्त्रनाम का पाठ करें।
3– बकरी दान करें।

शुक्र दशा (14:06:2063 से 14:06:2083)

वर्तमान में आप शुक्र की महादशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं, या जीवनसाथी, संतान, धन–संपत्ति, मित्र आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– चाँदी के चौरस टुकड़े पर शुक्र यंत्र बनाकर अपने पास रखें।
2– दुर्गा पाठ करें।
3– सफेद वस्तुओं का दान करें।

शुक्र अर्न्तदशा (14:06:2063 से 13:10:2066)

वर्तमान में आप शुक्र की महादशा में शुक्र की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आपकिसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, धन–संपत्ति, भाई–बन्धु,नौकरी आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलोंमें कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– सफेद गाय का दान

करें।

2– अनुष्ठान के साथ ललितासहस्त्रनाम का पाठ करें।

3– दुर्गासूक्त का पाठ करें।

सूर्य अन्तर्दशा (13:10:2066 से 13:10:2067)

वर्तमान में आप शुक्र की महादशा में सूर्य की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, संतान, पिता, नौकरी, व्यापार, धन–संपत्ति आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– संक्राति के दिन उड़द, मूंगी, गेहूं, चना, जौ, चावल, कंगनी, पुराने कपड़े एवं पैसे दान करें।

2– रविवार या सूर्य के नक्षत्र में माणिक धारण करें।

3– शिव का दूध से रूद्राभिषेक करें।

चन्द्रमा अन्तर्दशा (13:10:2067 से 14:06:2069)

वर्तमान में आप शुक्र की महादशा में चंद्रमा की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या कर्ज, भाई, जीवनसाथी, संतान, माता आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी केलिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– चंद्रमा के बीज मंत्र का ग्यारह हजार जप करें।

2– शिवलिंग पर बेलपत्र चढ़ायें एवं एक माला ऊँ नमः शिवाय मंत्र का जप करें।

3– 11 सोमवार को व्रत रखें एवं दूध–मिश्री दान करें।

मंगल अन्तर्दशा (14:06:2069 से 14:08:2070)

वर्तमान में आप शुक्र की महादशा में मंगल की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या खेत, मकान, नौकरी, वाहन दुर्घटना, धन–सम्पत्ति, पिता आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– मंगलवार को हनुमान चालीसा का पाठ करें एवं हनुमान जी को सिंदूर अर्पित करें।

2– लक्ष्मी कवच का पाठ करें।

3– सुन्दरकांड का 32 पाठ करें।

राहु अन्तर्दशा (14:08:2070 से 14:08:2073)

वर्तमान में आप शुक्र की महादशा में राहु की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या माता, पिता, परिवारजन, मान–सम्मान, कर्ज आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– जौ एवं सरसों को मिट्टी के बर्तन में भरकर बहते पानी में प्रवाहित करें।

2– दुर्गासूक्त का पाठ करें।

3– चाँदी का हाथी दान करें।

गुरू अन्तर्दशा (14:08:2073 से 13:04:2076)

वर्तमान में आप शुक्र की महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि

आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या चोरी, धन–संपत्ति, व्यापार, संतान, स्थान परिवर्तन, नौकरी आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभफलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– 11 बृहस्पतिवार को पीला धागा पीपल के पेड़ में लपेटें।
2– महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।
3– बृहस्पति स्तोत्र का पाठ करें।

शनि अर्न्तदशा (13:04:2076 से 14:06:2079)

वर्तमान में आप शुक्र की महादशा में शनि की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आपकिसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या माता, पिता, जीवनसाथी, संतान, नौकरी, व्यापार, मान–सम्मान आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– शनि स्तोत्र का पाठ करें।
2– महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।
3– काली गाय का दान करें।

बुध अर्न्तदशा (14:06:2079 से 14:04:2082)

वर्तमान में आप शुक्र की महादशा में बुध की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन–संपत्ति, मान–सम्मान, संबंधी, व्यापार, जीवनसाथी आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– बकरी का दान करें।
2– रोज विष्णुसहस्त्रनाम का पाठ करें।
3– शालिग्राम की पूजा करें एवं तुलसी के तीन या छः पत्ते खायें।

केतु अर्न्तदशा (14:04:2082 से 14:06:2083)

वर्तमान में आप शुक्र की महादशा में केतु की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या चोरी, स्थान परिवर्तन, जीवनसाथी, संतान, यात्रा, आमदनी, पिता आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– काले कुत्ते की सेवा करें।
2– मृत्युंजय जप करें।
3– दुर्गासप्तशती का पाठ करें।

सूर्य दशा (14:06:2083 से 14:06:2089)

वर्तमान में आप सूर्य की महादशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं, या भाई–बंधु, स्त्री, पुत्र, पिता आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– सुबह में ताँबे के बर्तन में सूर्य को अर्घ्य

दें।

2– अशुभ फल प्राप्ति के समय सोने का कमल दान करें।

3– सूर्य के बीज मंत्र का सात हजार जप करें।

सूर्य अन्तर्दशा (14:06:2083 से 01:10:2083)

वर्तमान में आप सूर्य की महादशा में सूर्य की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– महामृत्युंजय मंत्र का पाठ करें।

2– लगातार 43 दिन जल में लाल फूल डालकर सूर्य को अर्घ्य दें।

3– सूर्य के बीज मंत्र का सात हजार जप करें।

चन्द्रमा अन्तर्दशा (01:10:2083 से 01:04:2084)

वर्तमान में आप सूर्य की महादशा में चंद्रमा की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, धन–सम्पत्ति, कर्ज, शत्रु आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– चंद्रमा के बीज मंत्र का ग्यारह जप करें।

2– सफेद गाय का दान करें।

3– दुर्गासप्तशती का पाठ करें या करायें।

मंगल अन्तर्दशा (01:04:2084 से 07:08:2084)

वर्तमान में आप सूर्य की महादशा में मंगल की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आपकिसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन–सम्पत्ति, जमीन–जायदाद आदिसे संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– 21 मंगलवार को व्रत रखें एवं मंगल के बीज मंत्र का दस हजार जप करें।

2– किसी ब्राह्मण को सफेद गाय या चाँदी की गाय दान करें।

3– चामुण्डा देवी की पूजा करें।

राहु अन्तर्दशा (07:08:2084 से 02:07:2085)

वर्तमान में आप सूर्य की महादशा में राहु की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या मकान, नौकरी, आग आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– 21 दिनों में राहु के बीज मंत्र का अठारह हजार जप करें।

2– दुर्गासप्तशती का पाठ करें।

3– सात काली गाय या भैंस का दान करें।

गुरू अन्तर्दशा (02:07:2085 से 20:04:2086)

वर्तमान में आप सूर्य की महादशा में बृहस्पति की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, संतान, धन–सम्पत्ति

आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– भगवान विष्णु के 108 नामों का जप करें।
2– कपिला गाय का दान करें।
3– चार या पांच रत्ती का पुखराज धारण करें।

शनि अन्तर्दशा (20:04:2086 से 02:04:2087)

वर्तमान में आप सूर्य की महादशा में शनि की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आपकिसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या स्वास्थ्य, संबंधियों, धन–सम्पत्ति, प्रतिष्ठा आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– शनि स्तोत्र का पाठ करें।
2– पंचधातु की अंगुठी तथा काली जुराब दान करें।
3– महामृत्युंजय मंत्र का जप एवं हवन करें।

बुध अन्तर्दशा (02:04:2087 से 06:02:2088)

वर्तमान में आप सूर्य की महादशा में बुध की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या नौकरी, धन–सम्पत्ति, जीवनसाथी, संतानआदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी केलिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– 21 दिनों में बुध के बीज मंत्र का नौ हजार जप करें।
2– विष्णुसहस्त्रनाम का पाठ करें।
3– अन्न एवं चाँदी की सूर्य प्रतिमा का दान करें।

केतु अन्तर्दशा (06:02:2088 से 13:06:2088)

वर्तमान में आप सूर्य की महादशा में केतु की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या दाँत, पिता, मित्र, परिवारजन आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– काले कुत्ते की सेवा करें।
2– गणपतिसहस्त्रनाम का पाठ करें।
3– दुगा सूक्त का पाठ करें।

शुक्र अन्तर्दशा (13:06:2088 से 14:06:2089)

वर्तमान में आप सूर्य की महादशा में शुक्र की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, संतान, घर–परिवार आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

1– शिवस्तोत्र का पाठ करें।
2– महामृत्युंजय मंत्र का जप एवं हवन

करें।

3– सफेद गाय का दान करें।

क्या है कालसर्प योग ?

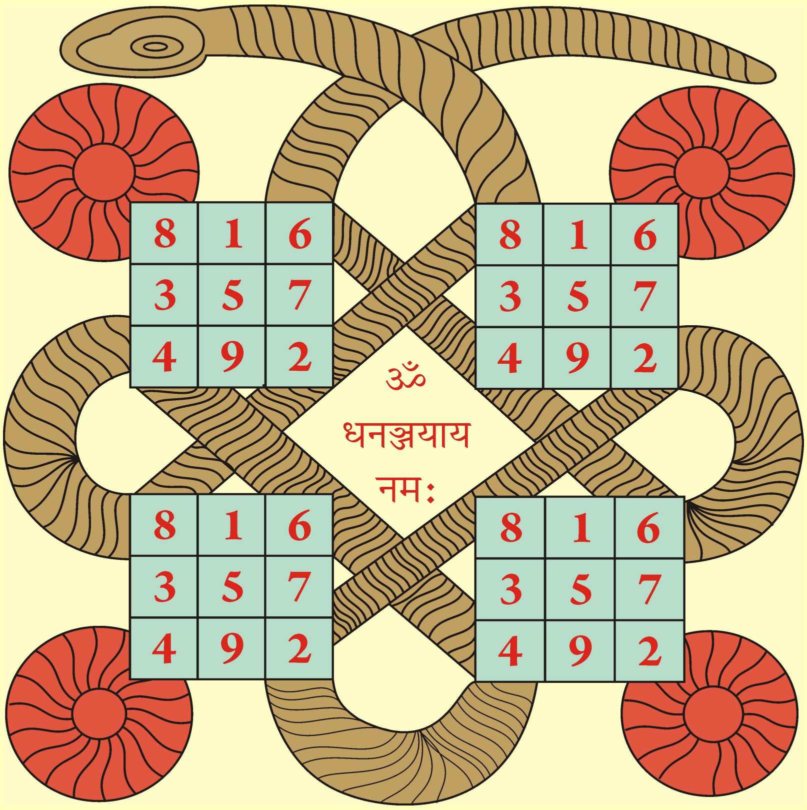

जब कुण्डली में सारे ग्रह राहु और केतु के अंशो के बीच में आ जाते हैं, तो कुण्डली को कालसर्प योग से ग्रसित माना जाता है। यदि एक भी ग्रह राहु और केतु के अंशो के बाहर रह जाता है, तो पूर्ण कालसर्प योग नहीं माना जाएगा। हालांकि, सारे ग्रह केतू और राहु के अंशों के बीच में आ जायें, तो भी आंशिक कालसर्प योग माना जाएगा।

कालसर्प योग का सामान्य प्रभाव–

1– किसी भी शुभ और महत्वपूर्ण कार्य को करते समय परेशानियों का सामना करना।
2– मानसिक तनाव।
3– आत्मविश्वास में कमी।
4– स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां।
5– गरीबी और धन की कमी।
6– व्यापार में घाटा और नौकरी में परेशानी।
7– उत्तेजना और बेकार की चिंताएं।
8– मित्रों और शुभचिन्तकों से मनमुटाव।
9– मित्रों और शुभचिन्तकों की तरफ से विश्वासघात।
10– मित्रों, शुभचिन्तकों और रिश्तेदारों की ओर से किसी भी तरह का सहयोग नहीं प्राप्त होना।

आपकी कुण्डली में कालसर्प योग मौजूद नहीं है।

लाल किताब में मांगलिक दोष और उसका उपाय

मांगलिक दोष का कारण

लाल किताब के अनुसार, आपकी कुण्डली में मंगल पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस स्थिति के अनुसार आपकी कुण्डली में मांगलिक दोष लागू हो रहा है।

मांगलिक दोष का प्रभाव –

आठवें भाव में स्थित मंगल का दाम्पत्य जीवन पर असर –

आपकी कुण्डली में मंगल आठवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आप बहुत ज्यादा आदर्शवादी और आलसी हो सकते हैं। आपकी आदर्शवादिता आपके दाम्पत्य जीवन में कलह का कारण होगी।

मांगलिक दोष के उपाय –

1. हनुमान चालीसा का पाठ करें।

2. हनुमान जी को प्रसाद चढ़ायें।

3. हनुमान जी को सिंदूर का चोला चढ़ायें।

4. गायत्री का पाठ करें।

5. दुर्गा का पाठ करें।

6. रामचरित मानस के सुन्दर काण्ड का पाठ करें।

7. लाल रूमाल पास में रखें।

8. चाँदी का छल्ला (बिना जोड़ का) पहनें।

9. तांबे या सोने की अंगूठी में मूंगा जड़वाकर पहनें।

10. चाँदी के कड़े में तांबा जड़वा कर पहनें।

11. चाँदी की चूड़ी पर लाल रंग करवा कर जीवनसाथी को

पहनायें।

12. बन्दर पालें, या बन्दरों को भोजन दें।

13. तन्दूर पर मीठी रोटी लगवा कर कुत्तों को दें।

14. मंदिर में मीठा भोजन बांटें।

15. चीनी बहते पानी में प्रवाहित करें।

16. शहद या सिन्दूर बहते पानी में प्रवाहित करें।

17. मिट्टी की दीवार बनवाकर बार–बार गिरायें।

18. घर में नौकर रखें।

मांगलिक दोष के विशेष उपाय –

चाँदी के कड़े में तांबा जड़वा कर पहनें।

चाँदी की चूड़ी पर लाल रंग करवा कर जीवनसाथी को पहनायें।

अंकशास्त्र से रत्न, मंत्र, यंत्र, रूद्राक्ष और उपाय

आपका जन्म दिनांक 18:12:1973 है।

आपका मूलांक 9 है।

आपके मूलांक का अधिपति ग्रह मंगल है।

इष्ट देवता

हनुमान जी आपके ईष्ट देव हैं। वह स्वार्थरहित सेवा के प्रतीक हैं। वह अभिमान रहित हैं, और भगवान विष्णु के अवतार भगवान श्री राम के विनम्र सेवक हैं। उनका मानना है, कि उनकी सारी शक्तियां उनकी अपनी नहीं हैं, वह उनके प्रभु श्री राम के कारण हैं। आपको इस बात को उचित और स्पष्ट रूप से समझना चाहिए और अपनी शक्तियों के लिए किसी प्रकार का कोई अभिमान नहीं करना चाहिए। आपको अपने आराध्य हनुमान जी से पूर्ण समपर्ण के गुण सीखना चाहिए, और दैनिक जीवन में उसका प्रयोग करना चाहिए।

ध्यान और उपासना

आपको हनुमान जी या मूंगा का ध्यान करना चाहिए। यह ध्यान आपको सुबह सूर्योदय के आधा घंटा पूर्व या पश्चात करना चाहिए। आप ताम्र पत्र पर अंकित मंगल यंत्र का प्रयोग कर सकते हैं।

जप मंत्र

किसी भी ग्रह के लिए मंत्र का जप चंद्रमा के बढ़ते हुए चक्र के दौरान पूरा करना चाहिए और उसे बतायी संख्या में दोहराना चाहिए। आपको इस मंत्र का प्रतिदिन 108 बार जाप करना चाहिए।

ॐ नमो हनुमते हुं ॐ

मंगल ग्रह के लिए व्रत

बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गये हैं।

मंगल के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए मंगलवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले मंगलवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 और अधिकतम 45 मंगलवार रखनी चाहिए। अगर संभव हो तो आप पूरी जीन्दगी भी इस व्रत को रख सकते हैं। व्रत के दिन केवल गुड़ का हलवा खाना बेहतर होगा। आप अपनी शक्ति के अनुसार गरीबों के बीच भी हलवा वितरित कर सकते हैं। व्रत तोड़ने से पहले आपको लाल कपड़ा पहनना चाहिए और मंगल के बीज मंत्र या तांत्रिकमंत्र का अपने उपलब्ध समयानुसार 1, 5 या 7 माला का जप करना चाहिए। सांड़ को गुड़ खिलाना चाहिए। इस व्रत को रखने से आप ऋणमुक्त होंगे, संतान की प्राप्ति होगी एवं अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। अंतिम मंगलवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं लाल कपड़ा, तांबा, गुड़ एवं नारियल गरीबों के बीच दान करें।

अपने माता–पिता एवं बड़े–बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी–सम्पन्न होंगे, क्योंकि माता–पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता–पिता की सेवा करेंगे, उनकी उचित देखभाल करेंगे, तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान और सुख प्राप्त

होगा।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार, आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। सत्कर्म से आपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न–धन प्राप्त होंगे, तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवनमें कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

मंगल ग्रह पीड़ा शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग

ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियां हैं, जैसे दान करना, मंत्र जप करना, रत्न धारण करना आदि। जड़ी धारणकरना भी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी है।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

मंगल के लिए अनन्त मूल या नागफनी (गो जिव्हा संगमुसी नाग जिव्हा) की जड़ को लाल रंग के कपड़े मेंसिलकर मंगलवार या मृगशिरा, चित्रा या घनिष्ठा नक्षत्र में सूर्योदय के समय गले, जेब, भुजा या कमर में सुविधानुसार धारण करें।

मंगल ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है।

हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– सोंठ, चमेली का तेल, कुमकुम।
जड़ी– सौंफ की जड़, नाग जिव्हा, अनन्त मूल।

मंगल ग्रह के लिए स्नान और दान

लाल फूल, लाल चंदन, घी, गेहूँ, मसूर, या ताम्बे के बर्तन में सुपारी भरकर दान करने से मंगल प्रसन्न होते हैं। मंगल की प्रसन्नता के लिए स्नान करते समय जल में बेलपत्र या लाल चंदन डालकर स्नान करना चाहिए।

अंक शास्त्र से रत्न धारण करने का सुझाव

मूंगा की भौतिक संरचना

मूंगा एक चमकदार रत्न है, जो लाल, गुलाबी एवं लाल–संतरी रंगों में पाया जाता है। कार्नेलियन एवं ब्लडस्टोन मूंगा के ऊपरत्न हैं।

मूंगा धारण करने के फायदे

मूंगा धारण करने से बाधायें दूर होती हैं। इससे दुर्घटनाओं, कलह एवं झगड़ों का निवारण होता है। इससे धन–सम्पत्ति, जायदाद आदि में वृद्धि होती है तथा धारक कर्ज से मुक्त होता है। इससे समृद्धि आती है एवंमांगलिक दोष का निवारण होता है। धारक का वैवाहिक जीवन खुशहाल होता है। मूंगा धारण करने से मंगल के कुप्रभाव से होने वाले रोग दूर होते हैं। यह फोड़े–फूंसी ठीक करने के अलावा खून भी साफ करता है। महिलाओं को गर्भधारण एवं प्रसव के दौरान मदद मिलती है। यह धारक में उत्साह, अनुराग, प्रेमआदि की वृद्धि करता है। इससे सफलता एवं खुशहाली प्राप्त होती है।

रोगों पर मूंगा का प्रभाव

मूंगा धारण करने या मूंगा की भस्म का सेवन करने से निम्नलिखित रोग दूर होते हैं– रक्त–विकार, खांसी,मंदाग्नि, शारीरिक दुर्बलता, प्लीहा, मिर्गी, हृदय रोग, वायु कफ इत्यादि।

मूंगा धारण करने के नियम

बढ़िया चमक, साफ रंग वाला एवं धब्बारहित मूंगा ही धारण करना चाहिए, इससे भाग्य में बढ़ोत्तरी होगी। मूंगा सोने से बनी अंगूठी या लॉकेट में पहनना चाहिए। मूंगा इस तरह धारण करना चाहिए कि यह निरंतरत्वचा के संपर्क में रहे। इसलिए अंगूठी में धारण करना ज्यादा लाभदायक होगा। मूंगा का वजन 3–11 कैरेट (कम से कम 6 रत्ती) होना चाहिए। मंगलवार के दिन जब मेष या वृश्चिक राशि पर चंद्रमा यामंगल हो और उस दिन मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा या धनिष्ठा नक्षत्र भी हो, तो प्रातः काल से 11 बजे के बीच सोने की अंगुठी में मूंगा जड़वायें। रवि–मंगल के योग में सोने की अंगूठी में तथा चंद्र–मंगल के योग में चांदी की अंगूठी में मूंगा जड़वाना उत्तम होता है।

मंगलवार के दिन स्नान कर साफ वस्त्र धारण करें। इसके पश्चात पूर्वाभिमुख होकर भगवान गणेश की मूर्तिके सामने पूजा पर बैठें। सबसे पहले घी का दीपक एवं अगरबत्तियां जलायें एवं देवता के आगे फूल, फल एवं मिठाईया चढ़ायें। फिर रत्न जड़ित अंगूठी या लॉकेट को पंचामृत (दूध, दही, घी, चीनी एवं शहद) से धोयें। इसके पश्चात् अंगूठी या लॉकेट को गंगाजल या शुद्ध जल से धोकर देवता के चरणों में अर्पित करें।

अब सबसे पहले मंगल देवता के बीज मंत्र का 19 बार जाप करें। फिर ध्यान मंत्र एवं ऋगवेद मंत्र का एक–एक बार जाप करें। तदुपरान्त अंगारक अष्टोत्तर शतनामावली (मंगल ग्रह के 108 नाम) का जाप करें।इसके उपरांत मंगल देवता का ध्यान करते हुए दण्डवत प्रणाम करें एवं आस्थापूर्वक अंगूठी को बायें हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें या लॉकेट को गले में धारण करें।

मूंगा दान की विधि

मूंगा यंत्र

8	3	10
9	7	5
4	11	6

ताम्र पत्र पर मंगल यंत्र खुदवाकर उसके मध्य में मूंगा जड़वाकर उसकी प्राण–प्रतिष्ठा करें। फिर मंगल मंत्रसे मूंगा को अभिमंत्रित करें। फिर सात दिनों तक यंत्र की विधिवत् पूजा करें एवं आठवें दिन पीले रंग की गाय, सोना, गेहूं, मसूर, गुड़, घी, लाल वस्त्र, केसर एवं दक्षिणा सहित यंत्र ब्राह्मण को दान कर दें। इसप्रकार दान करने से मंगल से संबंधित अरिष्ट दूर होते हैं, आयु की वृद्धि होती है एवं मनोकामना पूर्ण होती है।

मूंगा के प्रभाव की अवधि

अंगुठी में जड़वाने के दिन से शुरू कर 3 वर्ष 3 दिन तक मूंगा प्रभावशाली रहता है एवं उसके बाद मूंगा का प्रभाव नष्ट हो जाता है। अतः उपरोक्त अवधि के बाद मूंगा बदल देना चाहिए।

भाग्यांक पर आधारित रूद्राक्ष का सुझाव

आपका जन्म दिनांक 18:12:1973 है।

आपका भाग्यांक 5 है।

आपका भाग्यांक 5 है, इसलिए पाँच मुख वाला रूद्राक्ष आपके लिए उपयुक्त है।

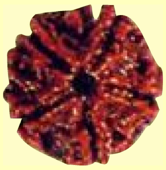

इस रूद्राक्ष के इष्टदेव सदाशिव हैं। यह पांचों तत्वों को दर्शाता है तथा स्वास्थ्य, सफलता, शांति और खुशहाल जीवन प्रदान करता है।

पांचमुखी रूद्राक्ष को लाल धागे में पिरोकर शिव के पंचाक्षर मंत्र ॐ नमः शिवाय का यथाशक्ति जप कर गले में धारण करें।

रूद्राक्ष धारण करने का उपयुक्त समय

सामान्यतया सोमवार को रूद्राक्ष धारण करना शुभ माना गया है, लेकिन शिवरात्रि को धारण करना उत्तम होता है। इसके अतिरिक्त, रूद्राक्ष धारण करने के लिए निम्नलिखित शुभ समय हैं–

शुभ महीना/माह

आश्विन एवं कार्तिक माह– उत्तम
मार्गशीर्ष एवं फाल्गुन माह– मध्यम
आषाढ़ एवं श्रावण माह– अधम
भाद्रपद, पौष एवं अधिक मास (मलमास)– अशुभ।

शुभ दिन (वार)

जिस दिन ग्रह एवं नक्षत्र धारक के नाम–राशि के अनुकूल हों, उस दिन रूद्राक्ष धारण करना चाहिए। रविवार, सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार एवं शुक्रवार को रूद्राक्ष धारण करना उत्तम होता है, जबकि मंगलवार एवं शनिवार को अशुभ माना जाता है।

शुभ पक्ष

भौतिक सुख के लिए शुक्ल पक्ष में रूद्राक्ष धारण करना चाहिए, जबकि आध्यात्मिक सुख के लिए कृष्ण पक्ष में रूद्राक्ष धारण करना चाहिए।

शुभ तिथि

द्वितीया, पंचमी, दशमी, त्रयोदशी एवं पूर्णामसी को रूद्राक्ष धारण करना उत्तम होता है।

शुभ लग्न

रूद्राक्ष धारण करने के लिए मेष, कर्क, तुला, वृश्चिक, मकर एवं कुम्भ लग्न शुभ होता है।

शुभ नक्षत्र

स्वाति, विशाखा, राहिणी, ज्येष्ठा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, हस्त, अश्विनी, धनिष्ठा, शतभिषा एवं श्रवण नक्षत्र में रूद्राक्ष धारण करने से उत्तम फल की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त, किसी भी ग्रहण, तुला, मकर संक्रांति, अयन, शिव चौदस, बसंत पंचमी, एवं अमावस्या को भी रूद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

रूद्राक्ष धारण करने की शास्त्रोक्त विधि

प्रातः काल शौच क्रिया से निवृत्त होकर मुख शद्धि करें। अशुद्ध मुंह से जप करने से उचित फल प्राप्त नहींहो सकता है।

मुखशुद्धि विहीनस्य न मंत्रः फलदायकः।
दंतजिव्हा विशुद्धिं च ततः कुर्यात् प्रयत्नतः ।।

इसके बाद स्नान के लिए यथा संभव शुद्ध जल लें। स्नान के बाद अपने चित्त को शांत कर पूजा पर बैठें। पूजा प्रारम्भ करने से पहले भूमि शुद्धि अवश्य करें। भूमि शुद्धि मंत्र–

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वाः।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ।।

पूजा पर बैठने के लिए कुश के आसन का प्रयोग करें एवं पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें। पूजा में शुद्धजल से भरा पात्र रखें। पात्र पर नारियल रखकर प्राण–प्रतिष्ठा करें। फिर अपने कुलदेवता सहित सारे देवी–देवताओं का आह्वान कर रूद्राक्ष की पूजा करें।

सबसे पहले गोबर, गोमूत्र, दूध, दही, घी आदि पंचगव्य से रूद्राक्ष को स्नान करायें, फिर गंगाजल या शुद्ध जल से पुनः स्नान करायें। अब कांसे की थाली में पीपल के नौ पत्ते लेकर आठ पत्तों से अष्टदल कमल काआकार बनायें और एक पत्ता बीच में रखें। बीच वाले पत्ते पर रूद्राक्ष रखें। फिर ऊँ नमः शिवाय मंत्र का तीन बार जाप करें। अब स्वयं पर एवं पूजा के उपयोग की सभी वस्तुओं पर जल छिड़कते हुए निम्न मंत्र का तीन बार जप करें–

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वाः ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ।।
ॐ गुरुभ्यो नमः।ॐ गणेशाय नमः।ॐ कुलदेवताभ्यो नमः।ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः।ॐ मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः।

अब अपने दायें हाथ में आचमनी से गंगाजल लेकर प्रत्येक निम्न मंत्र का जाप करते हुए पीयें–

ॐ केशवाय नमः।ॐ नारायणाय नमः।ॐ माधवाय नमः।

अब निम्न मंत्र का जप करते हुए हाथ धोकर जल जमीन पर छोड़ दें–

ॐ गोविन्दाय नमः।

अब दायें हाथ में गंगाजल लेकर प्राणायाम के विनियोग का निम्न मंत्र पढ़कर जल जमीन पर छोड़ दें–

ॐ प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः परमात्मा देवता देवी गायत्री छंदः प्राणायामे विनियोगः।

फिर निम्न मंत्र से तीन प्राणायाम करें –

ॐ भू: ॐ भुव: ॐ स्व: ॐ मह: ॐ जन: ॐ तप: ॐ सत्यम।
ॐ भूर्भुव: स्व: तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि।
धियो यो न: प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योति: रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुव: स्वरोम्।

अब रूद्राक्ष पर कुश या आचमनी से जल छिड़कते हुए निम्न मंत्र का जाप करें–

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय नमो नम: ।
भवेभवेनाति भवेभावस्वमान भवोद्भवाय नम: ।।

फिर फूल में चंदन एवं सुगंधित तेल लगाकर उससे रूद्राक्ष को स्पर्श करते हुए निम्न मंत्र का जाप करें–

ॐ वामदेवाय नम:, ॐ ज्येष्ठाय नम:, ॐ श्रेष्ठाय नम:, ॐ रुद्राय नम:, ॐ कलविकरणाय नम:, ॐ बलविकरणाय नम:, ॐ बलाय नम:, ॐ बलप्रमथनाय नम:, ॐ सर्वभूतदमनाय नम:, ॐ मनोन्मनाय नम:।

फिर रूद्राक्ष को धूप दिखाते हुए निम्न मंत्र का जप करें –

ॐ अघोरेभ्यो अघघोरेभ्यो: घोर घोरतरेभ्य:।
सर्वेभ्य: सर्व शर्वेभ्यो नमस्तेस्तु रूद्ररूपेभ्य: ।।

फिर रूद्र गायत्री मंत्र जपते हुए फूल से चंदन एवं सुगंधित तेल का लेप करें –

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्र: प्रचोद्यात्।

चंदन का लेप करने पश्चात रूद्राक्ष के दाने पर ध्यान लगाकर ईशान मंत्र का जाप करें –

ॐ ईशान: सर्वविद्यानामीश्वर: सर्वभूतानां।
ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपति: ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदा शिवोम् ।।

पंचमुखी रूद्राक्ष धारण करने के विशेष नियम

विनियोग –

दायें हाथ में आचमनी में गंगाजल लेकर निम्न विनियोग मंत्र का जाप करें एवं जल को जमीन पर छोड़ दें।

ॐ अस्य श्री मंत्रस्य ब्रह्मात्रृषि:, गायत्री छन्द:, सदाशिव कालाग्नि रुद्रो देवता, ॐ बीजं, स्वाहा शक्ति:, रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोग:।

ऋष्यादिन्यास –

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए दायें हाथ से अपने शरीर के अंगों क्रमशः शिरसि, मुख, हृदय, गुह्य एवंपैरों को स्पर्श करें।

ब्रह्मऋषिः नमः शिरसि, गायत्री छन्दसे नमः मुखे, सदाशिव कालाग्निरुद्रो देवतायै नमो हृदि, ॐ बीजाय नमो गुह्ये, स्वाहा शक्तिः नमः पादयो, विनियोगाय नमः सर्वांगे।

करन्यास –

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए अपनी हथेली के क्रमश अंगूठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका अंगुली एवं करतल–करपृष्ठ का स्पर्श करें।

ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्रां तर्जनीभ्यां नमः, ॐ आं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ क्ष्म्यौं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ स्वाहा कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ ह्रां आं क्ष्म्यौं स्वाहा करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्ययास –

निम्नलिखित मंत्र को पढ़ते हुए क्रमशः हृदय, सिर दोनों भुजाओं एवं आंखों को स्पर्श करें एवं अंतिम मंत्र सेदायें हाथ को सिर के उपर से पीछे की तरफ घुमाते हुए सामने लायें एवं तर्जनी व मध्यमा से बायें हाथ पर ताली बजायें।

ॐ ॐ हृदयाय नमः, ॐ ह्रां शिरसे स्वाहा, ॐ आं शिखायै वषट्, ॐ क्ष्म्यौं कवचाय हुम्। ॐ स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ह्रां आं क्ष्म्यौं स्वाहा अस्त्राय फट्।

ध्यान मंत्र –

सबसे पहले रूद्राक्ष के इष्ट देव कालाग्नि रुद्र का ध्यान करें।

हावभावविलसार्द्धनारिकं भीषणार्धमथवा महेश्वरम्।
दाशसोत्पलकपालशूलिनं चिन्तये जपविधौ विभूतये।।

नीचे दिए गए किसी एक मंत्र के ग्यारह माला का जाप करें। माला जप करने के बाद किसी तांबे के बर्तन में रूद्राक्ष रखें। प्राणायाम करने के बाद जल से भरा पात्र बायें हाथ में लेकर दायां हाथ पात्र के नीचे छुआकर हटा लें। फिर रूद्राक्ष पर जल छींटें एवं रूद्राक्ष धारण करें।

१–ॐ ह्रां आं क्ष्म्यौं स्वाहा (मूल मंत्र)
२–ॐ श्रीं नमः
३–ॐ ह्राम्
४–ॐ हूं नमः
५–ॐ ह्रीं नमः (पंचाक्षरी मंत्र)
६–ॐ नमः शिवाय
७–ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिंपुष्टिवर्धनम्, उर्वारुकमिवबंधनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।

रूद्राक्ष धारण करने के साधारण नियम

किसी भी सोमवार या शुभ दिन को सबसे पहले रूद्राक्ष को गंगाजल से स्नान करायें। फिर रूद्राक्ष पर चंदन का लेप लगायें। तत्पश्चात, रूद्राक्ष पर धूप, दीप आदि दिखाकर सफेद फूल अर्पित करें। उसके बाद

शिवलिंग से रूद्राक्ष को स्पर्श कराते हुए कम से कम ग्यारह बार ऊँ नमः शिवाय मंत्र का जाप करें। भगवान शिव का ध्यान करते हुए रूद्राक्ष धारण करें या पूजा स्थल पर रख सकते हैं।

रूद्राक्ष धारण करने के पश्चात निम्न नियमों का पालन करना चाहिए –

मद्यं मांसं च लासुनं पलांडुं शिग्रुं एव च ।
श्लेषं अंतकं विड्वाराहं भक्षयं वर्जये नरः ।।

रूद्राक्ष धारण करने के पश्चात् मांस, मदिरा, कोई नशीला पदार्थ, लहसुन, प्याज या अन्य कोई तामसिक पदार्थ का सेवन नहीं करना चाहिए। हमेशा सात्विक आहार लें।

रूद्राक्ष को दिखावे की चीज ना बनायें।

रात में रूद्राक्ष उतार कर पूजा के स्थान पर रख दें एवं सबुह सारे क्रिया–कर्म से निवृत्त होकर ऊँ नमः शिवाय का पांच बार जप कर धारण करें। जब भी माला उतारें तो उतार कर पूजा स्थल पर ही रखें।

अभिमान ना करें।

परोपकार करें।

रूद्राक्ष का अपमान या दुरूपयोग ना करें।

क्रोध ना करें।

अपना आचरण एवं विचार पवित्र रखें।

किसी को अपशब्द ना कहें।

ब्रह्मचर्य का पालन करें।

रूद्राक्ष का गंगाजल से अभिषेक करें।

नहाते समय साबुन आदि ना लगायें।

रूद्राक्ष धारण करते समय या पूजा करते समय स्थान शुद्धि अवश्य करें।

रूद्राक्ष की पवित्रता बनाये रखें।

हमेशा नित्यकर्म से निवृत होकर एवं पवित्र होकर ही रूद्राक्ष धारण करें।

किसी व्यक्ति या धर्म आदि की निन्दा ना

करें।

गंदगी से दूर रहें।

रूद्राक्ष के प्रति निष्ठा रखें।

रूद्राक्ष माला को कभी भी खूंटी पर ना लटकायें।

रूद्राक्ष माला रजस्वला स्त्री से दूर रखें।

शवयात्रा में माला पहनकर ना जायें।

विशेष नोट–

असली रूद्राक्ष गर्म होता है। इसलिए यदि आप वृद्ध या शारीरिक रूप से कमजोर व्यक्ति हैं, तो रूद्राक्ष कीजगह आपको भद्राक्ष पहनना चाहिए।

भद्राक्ष भी रूद्राक्ष जैसा ही होता है, लेकिन यह मृदुल रंग और कम ताप देने वाला होता है। ये गौरी शंकरका आशीर्वाद प्रदान करते हैं। यह उत्तम स्वास्थ्य के लिए एवं परिवार व दोस्तों के साथ आरामदायक जीवन बिताने में लाभदायक है।

भद्राक्ष के लिए मंत्र

ओऽम् गौरी शंकराय नमः।

भद्राक्ष के लिए शुभ मंत्र

सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वथा साधिके
श्रणये त्रयम्बके गौरी नारायणी नमस्तुते ।

Sample

फोटोग्राफ

उपनाम –	
जन्म तारीख –	18:12:1973
जन्म समय –	01:45:00AM
देश –	INDIA
रा%य –	
जन्म स्थान –	Ballia (up)
रेखांश –	084:10:00E
अक्षांश –	025:45:00N
ग्री.मा.स. –	+05 H 30 M
यु.स./डी.एस.टी.-	00:00:00 hrs

दादा का नाम –
दादी का नाम –
पिता का नाम –
माता का नाम –
गोत्र –
भाई/बहन का नाम –
भाई/बहन का नाम –
भाई/बहन का नाम –

वैवाहिक स्थिति –
संतान की स्थिति –
ऊँचाई –
शारीरिक संरचना –
रंग –
विशेष स्थितियॉ –
खून का वर्ग –
निवास स्थिति –

<u>धार्मिक एवं सामाजिक स्थिति</u>

धर्म –
जाति/ पंथ –
उप जाति/ पंथ –
मातृ भाषा –
अन्य भाषा –
परिवार का प्रारूप –
पारिवारिक मूल्य –

<u>शिक्षा/व्यवसाय</u>

शिक्षा –
व्यवसाय –
वार्षिक आमदनी –

<u>वर्त्तमान पता</u>

पता –

देश –

शहर –
पिन कोड –

फोन नम्बर –
मोबाईल नम्बर
फैक्स नम्बर –

<u>स्थाई पता</u>

पता –

देश –

शहर –
पिन कोड –

इ-मेल –
वेबसाइट –

<u>जीवन शैली</u>

आहार –
धूम्रपान –
मद्यपान –
व्यक्तिगत मूल्य –

Sample

लाल–किताब वर्षफल

(18:12:2020 - 17:12:2021)

Ramesh Parbhakar

347/7 Red Rose Building

Shiv Mohalla Sangam Market

Ladwa, Kurukshtra- 136132

Contact - 9812560311, 9466960753

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia (up)

लाल किताब वर्षफल

वर्षफल कुण्डली –48

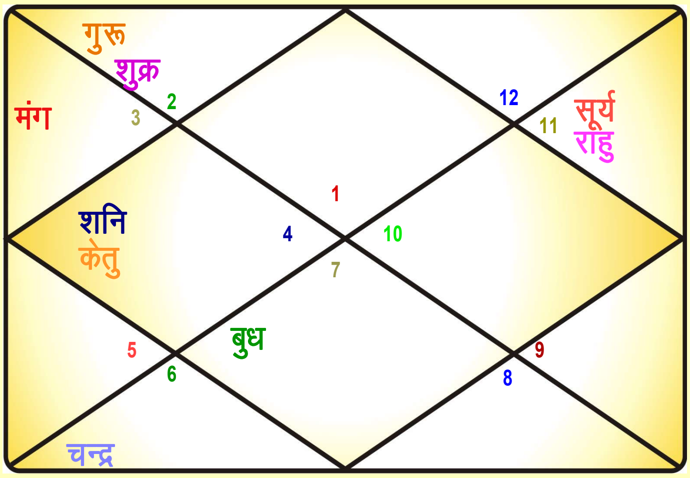

18:12:2020 -- 17:12:2021

लग्न कुण्डली

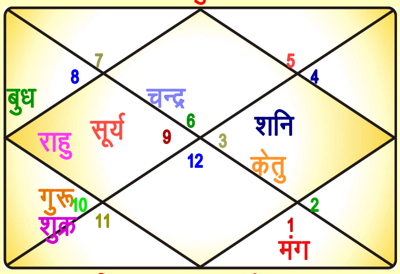

लाल किताब चन्द्र कुण्डली

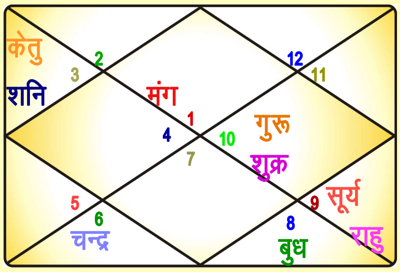

धोखे का ग्रह : गुरू   राशि नम्बर का ग्रह : शनि

लाल किताब से वर्षफल में ग्रहों की स्थिति

ग्रह	भावस्थ	प्रभाव	पक्का घर	भाग्योदय का ग्रह	साथी ग्रह	कायम ग्रह	धर्मी	सोया	विशेष
सूर्य (बद)	एकादश	राशि						हाँ	शुभ भाव में
चन्द्रमा	षष्टम्	ग्रह			केतु			हाँ	अशुभ भाव में
मंगल (बद)	तृतीय	ग्रह	हाँ			हाँ			शुभ भाव में
बुध (बद)	सप्तम्	ग्रह	हाँ			हाँ			शुभ भाव में
गुरू (बद)	द्वितीय	ग्रह	हाँ						शुभ भाव में
शुक्र	द्वितीय	ग्रह				हाँ			शुभ भाव में
शनि (बद)	चतुर्थ	राशि						हाँ	अशुभ भाव में
राहु (बद)	एकादश	राशि						हाँ	अशुभ भाव में
केतु (बद)	चतुर्थ	ग्रह				हाँ	हाँ	हाँ	

लाल किताब से वर्षफल में भावों (खानों) की स्थिति

खाना न॰	खाना न॰	मालिक	पक्का घर	सोया	उच्च	नीच	किस्मत को जगाने
१		मंगल	सूर्य	हाँ	सूर्य	शनि	मंगल
२	गुरू, शुक्र	शुक्र	गुरू		चन्द्रमा		चन्द्रमा
३	मंगल	बुध	मंगल		राहु	केतु	बुध
४	शनि, केतु	चन्द्रमा	चन्द्रमा		गुरू	मंगल	चन्द्रमा
५		सूर्य	गुरू	हाँ			सूर्य
६	चन्द्रमा	बुध	बुध केतु		बुध राहु	शुक्र केतु	केतु
७	बुध	शुक्र	शुक्र बुध		शनि		शुक्र
८		मंगल	मंगल शनि	हाँ		चन्द्रमा	चन्द्रमा
९		गुरू	गुरू		केतु	राहु	शनि
१०		शनि	शनि		मंगल	गुरू	शनि
११	सूर्य, राहु	शनि	शनि				गुरू
१२		गुरू	गुरू		शुक्र केतु	बुध राहु	राहु

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia (up)

लाल किताब वर्षफल

वर्ष पूर्ण– 48

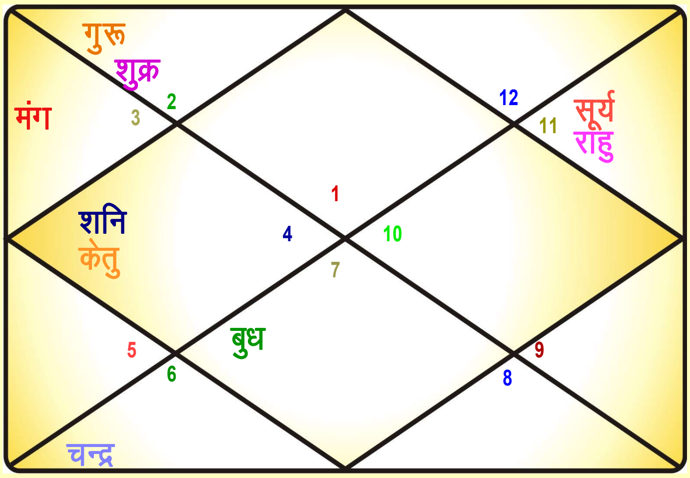

(18:12:2020 - 17:12:2021)

1- (18:12:2020--17:01:2021)

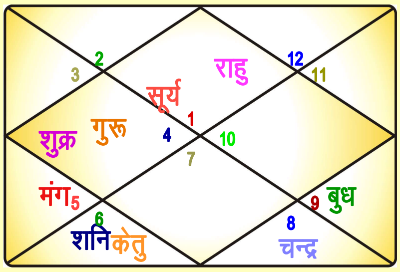

2- (18:01:2021--17:02:2021)

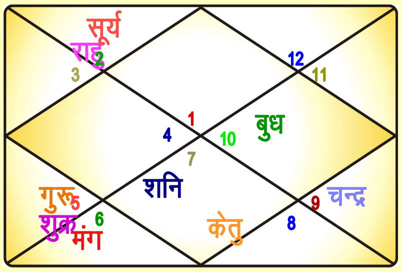

3- (18:02:2021--17:03:2021)

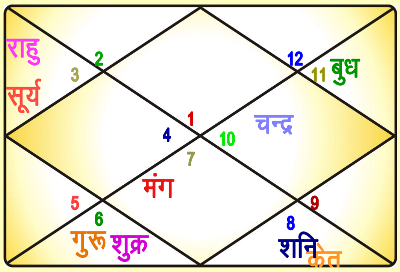

4- (18:03:2021--17:04:2021)

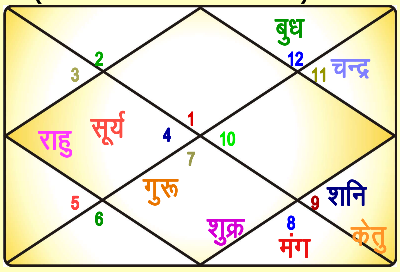

5- (18:04:2021--17:05:2021)

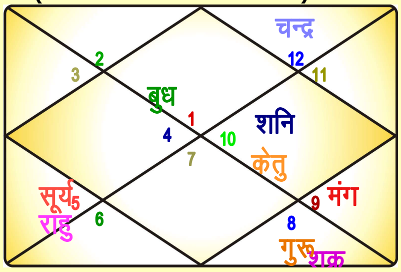

6- (18:05:2021--17:06:2021)

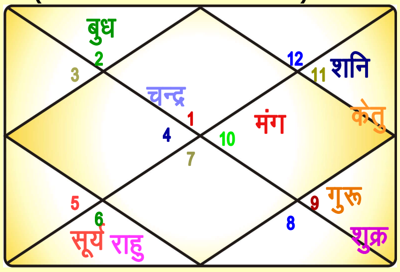

7- (18:06:2021--17:07:2021)

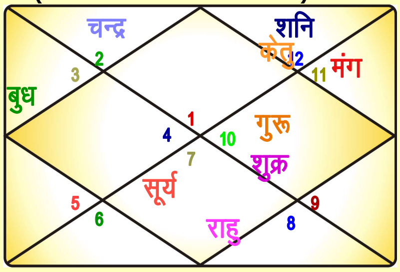

8- (18:07:2021--17:08:2021)

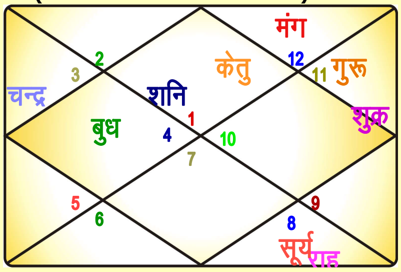

9- (18:08:2021--17:09:2021)

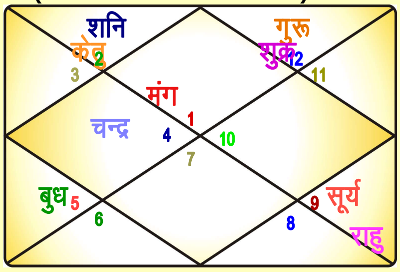

10- (18:09:2021--17:10:2021

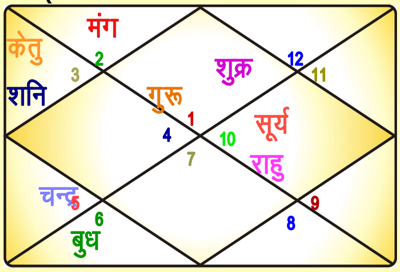

11- (18:10:2021--17:11:2021

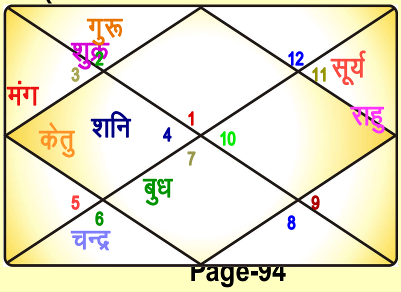

12- (18:11:2021--17:12:2021

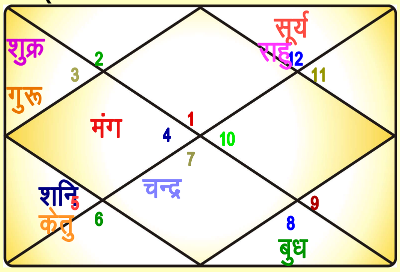

वर्षफल (48) में ग्रहों की दृष्टि

18:12:2020 -- 17:12:2021

लाल किताब की सामान्य दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	गु0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य									
चन्द्रमा									
मंगल	अर्द्ध							अर्द्ध	
बुध									
गुरू		चतुर्थ							
शुक्र		चतुर्थ							
शनि									
राहु									
केतु									

ग्रहों की दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	गु0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य									
चन्द्रमा									
मंगल									
बुध									
गुरू		0							
शुक्र									
शनि		0							
राहु			0	0					
केतु									

लाल किताब में टक्कर की दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	गु0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य		0							
चन्द्रमा									
मंगल									
बुध					0	0			
गुरू									
शुक्र									
शनि	0							0	
राहु		0							
केतु	0							0	

लाल किताब में पाये की दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	गु0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य				0					
चन्द्रमा					0	0			
मंगल	0							0	
बुध			0						
गुरू									
शुक्र									
शनि									
राहु				0					
केतु									

लाल किताब में विश्वासघात की दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	गु0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य									
चन्द्रमा			0						
मंगल									
बुध							0		0
गुरू	0							0	
शुक्र	0							0	
शनि									
राहु									
केतु									

लाल किताब में सहचरी दिवार दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	गु0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य									
चन्द्रमा				0					
मंगल					0	0			
बुध							0		0
गुरू									
शुक्र									
शनि			0						
राहु									
केतु			0						

लाल किताब में अचानक प्रहार दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	गु0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य									
चन्द्रमा							0		0
मंगल									
बुध									
गुरू							0		0
शुक्र							0		0
शनि		0			0	0			
राहु									
केतु		0			0	0			

लाल किताब में परस्पर सहयोग दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	गु0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य			0						
चन्द्रमा									
मंगल				0					
बुध	0							0	
गुरू		0							
शुक्र		0							
शनि									
राहु			0						
केतु									

लाल किताब से वर्षफल

वर्ष पूर्ण – 48

(18:12:2020 - 17:12:2021)

आपकी वर्षफल कुण्डली में सूर्य ग्रह अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में सूर्य ग्रह के अशुभता के कारण -

आपकी वर्षफल कुण्डली में, सूर्य ग्यारहवें भाव में स्थित है और छठे भाव में कोई ग्रह स्थित है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में सूर्य से जुड़े अन्य तथ्य -

आपकी कुण्डली में सूर्य शुभ भाव में बैठा है।
आपकी कुण्डली में सूर्य अपने मित्र के पक्के घर में बैठा है।
आपकी कुण्डली में सूर्य पर उसके मित्र ग्रह मंगल की अर्द्ध दृटि पड़ रही है।
आपकी कुण्डली में सूर्य अपने शत्रु राहु के साथ बैठा है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में सूर्य शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर ग्यारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको सावधान और सचेत रहने की जरूरत है, अन्यथा दुर्घटना हो सकती है। आपके साले का स्वास्थ्य चिन्तनीय हो सकता है। आपके रिश्तेदार आपके धन का अपव्यय कर सकते हैं। आपका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं हो सकता है। अपने पिता से आपके संबंध पूरी तरह से खराब हो सकते हैं। पदोन्नति में बाधायें आ सकती हैं। सरकारी कार्यों में आपको घाटा उठाना पड़ सकता है।

वर्षफल में सूर्य का उपाय

सूर्य के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) ४३ दिन तक रेत पर बिस्तर बिछा कर सोयें।
(२) मांस-मछली का सेवन न करें।
(३) रात को अपने सिरहाने मूली रखकर सोयें।
(४) झुठ न बोलें।

चन्द्रमा षष्ठ भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में चन्द्रमा ग्रह शुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में चन्द्रमा से जुड़े अन्य तथ्य -

आपकी कुण्डली में चन्द्रमा अशुभ भाव में बैठा है।
आपकी कुण्डली में चन्द्रमा अपने शत्रु के पक्के घर में बैठा है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में चंद्रमा शुभ स्थिति में छठे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपको विदेशी संबंधों से लाभ प्राप्त होगा। आपके शत्रुओं की पराजय होगी और आपके भाई-बन्धु और मित्र आपकी सहायता करेंगे।

वर्षफल में चन्द्रमा का उपाय

चन्द्रमा के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्नउपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) अपने पिता को अपने हाथों से दूध पिलायें।
(२) अपने भेद दूसरों को न बतायें।
(३) खरगोश पालें।
(४) रात में दूध का सेवन न करें।
(५) मुफ्त में पानी का दान न करें।

मंगल तृतीय भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में मंगल ग्रह अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में मंगल ग्रह के अशुभता के कारण -

आपकी वर्षफल कुण्डली में, मंगल तीसरे भाव में स्थित है और बृहस्पति, सूर्य या चंद्रमा सातवें, नौवें या ग्यारहवें भाव में स्थित है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में मंगल से जुड़े अन्य तथ्य -

आपकी कुण्डली में मंगल पक्के घर का है।
आपकी कुण्डली में मंगल कायम है।
आपकी कुण्डली में मंगल शुभ भाव में बैठा है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में मंगल शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर तीसरे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, पैतृक संपत्ति के बंटवारे में आपको कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। माता-पिता तथा भाई-बन्धुओं से आपका मन-मुटाव हो सकता है। आपके भाई या चाचा का स्वास्थ्य भीआपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। गलत प्रेम-संबंधों के उजागर होने से भी आपको बदनामी का सामना करना पड़ सकता है। आपके स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव पड़ सकता है। यदि आप पैसों का लेन-देन बिना लिखा-पढ़ी का करते हैं तो यह ठीक नहीं है। आपको खून से संबंधित बीमारियां हो सकती हैं।

वर्षफल में मंगल का उपाय

मंगल के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) अपनी अंगुली में हाथी दांत का छल्ला पहनें।
(२) अपने क्रोध पर काबु रखें।

(३) अपने भाईयों की सहायता करें।
(४) खाने-पीने पर विशेष ध्यान दें नहीं तो पेट से संबंधित बिमारी हो सकती है।
(५) हाथी दांत से बनी वस्तुऐं अपने घर में न रखें।

बुध सप्तम भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में बुध ग्रह अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में बुध ग्रह के अशुभता के कारण -

आपकी वर्षफल कुण्डली में, बुध सातवें भाव में स्थित है और दूसरे भाव में कोई अन्य ग्रह स्थित है।
आपकी वर्षफल कुण्डली में, बुध सातवें भाव में स्थित है और केतु पहले या आठवें भाव में स्थित है या पहला भाव खाली है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में बुध से जुड़े अन्य तथ्य -

आपकी कुण्डली में बुध पक्के घर का है।
आपकी कुण्डली में बुध कायम है।
आपकी कुण्डली में बुध शुभ भाव में बैठा है।
आपकी कुण्डली में बुध अपने मित्र के पक्के घर में बैठा है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में बुध शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर सातवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपको अपने क्रोध पर काबू रखने की आवश्यकता होगी, अन्यथा आपका अनुचित व्यवहार आपकी मान-प्रतिष्ठा के लिए घातक सिद्ध हो सकता है। यदि आप अपना व्यापार साझेदारी में कर हैं, तो इस वर्ष आपको घाटा उठाना पड़ सकता है। आपके भाई अथवा आपके जीवनसाथी के स्वास्थ्य पर भी बुरा असर पड़ सकता है।

वर्षफल में बुध का उपाय

बुध के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) किसी भी कार्य को करने से पहले मीठा खायें।
(२) हीरे की अंगुठी पहनना लाभदायक होगा।
(३) घर में हरी घास रोपें।

आपकी वर्षफल कुण्डली में गुरू ग्रह अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में गुरू ग्रह के अशुभता के कारण -

आपकी वर्षफल कुण्डली में, बृहस्पति दूसरे भाव में स्थित है और आठवें भाव में कोई भी ग्रह स्थित नहीं है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में गुरू से जुड़े अन्य तथ्य -

आपकी कुण्डली में गुरू पक्के घर का है।
आपकी कुण्डली में गुरू शुभ भाव में बैठा है।
आपकी कुण्डली में गुरू अपने शत्रु बुध के साथ बैठा है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में बृहस्पति शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर दूसरे भाव में बैठा हुआ है। लालकिताब के अनुसार, आपके पिता को सोने, चांदी के व्यापार में घाटा हो सकता है। उनको कम पूंजी वाले व्यापार में हाथ आजमाना चाहिए। इस वर्ष पैतृक सम्पत्ति के बंटवारे में आपको घाटा हो सकता है। आपको इस वर्ष अपने गुस्से पर काबू रखने की आवश्यकता है।

वर्षफल में गुरू का उपाय

गुरू के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) घर के सामने के गड्ढ़ों को मिट्टी से भरवायें।
(२) सोने चांदी से संबंधित व्यापार न करें।
(३) हल्दी या केसर का तिलक लगायें।
(४) अपने घर का एक हिस्सा अधुरा ही बिना बनवाये छोड़ें।
(५) अपना चाल-चलन ठीक रखें।
(६) नई ब्याही हुई लड़की को पतीशे की मिठाई दें।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शुक्र ग्रह शुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शुक्र से जुड़े अन्य तथ्य -

आपकी कुण्डली में शुक्र अपने घर का है।
आपकी कुण्डली में शुक्र कायम है।
आपकी कुण्डली में शुक्र शुभ भाव में बैठा है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शुक्र शुभ स्थिति में दूसरे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आप अपनी कड़ी मेहनत से सफलता प्राप्त करेंगे। यदि आप विवाहित हैं, तो अपने जीवनसाथी का आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। धार्मिक प्रवृति भी प्रबल होगी। प्रेम संबंधों में धोखे की वजह से इस वर्ष आप ऐसे किसी भी संबंध से दूर ही रहेंगे। यदि आप अविवाहित हैं, तो विवाह का योग भी बनसकता है।

वर्षफल में शुक्र का उपाय

शुक्र के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न

उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) आलू और दही का दान करें।
(२) जानवरों से घृणा न करें।
(३) कपिला गाय की सेवा करें।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शनि ग्रह अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शनि ग्रह के अशुभता के कारण -

आपकी वर्षफल कुण्डली में, शनि चौथे भाव में स्थित है और ग्यारहवें भाव में कोई अन्य ग्रह स्थित है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शनि से जुड़े अन्य तथ्य -

आपकी कुण्डली में शनि अशुभ भाव में बैठा है।
आपकी कुण्डली में शनि अपने शत्रु के पक्के घर में बैठा है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शनि शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त होकर चौथे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको इस वर्ष मछली का सेवन बिल्कुल नहीं करना चाहिए और शराब इत्यादि मादक पदार्थों से दूर रहना चाहिए। आपको हृदय संबंधित परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है।पिता से आपके संबंधों में कड़वाहट आ सकती है। आपकी माता का स्वास्थ्य भी आपके लिए चिन्ता का विषय बन सकता है। यदि आप राजनैतिक क्षेत्र में सक्रिय हैं, तो आपके प्रयास विफल हो सकते हैं।

वर्षफल में शनि का उपाय

शनि के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न

उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) कुऐं में दूध गिरायें।
(२) अपने भोजन में से एक हिस्सा मछलियों, कौओं या भैंस को खिलायें।
(३) इस वर्ष काले कपड़े न पहनें।
(४) हरे रंग से बचें।
(५) ४ पैक शराब जल में प्रवाहित करें।

राहु एकादश भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में राहु ग्रह अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में राहु ग्रह के अशुभता के कारण -

आपकी वर्षफल कुण्डली में, राहु ग्यारहवें भाव में स्थित है और छठे भाव में कोई अन्य ग्रह स्थित है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में राहु से जुड़े अन्य तथ्य -

आपकी कुण्डली में राहु अशुभ भाव में बैठा है।
आपकी कुण्डली में राहु अपने शत्रु सूर्य के साथ बैठा है।
आपकी कुण्डली में राहु पर उसके शत्रु ग्रह मंगल की अर्द्ध दृटि पड़ रही है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में राहु शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर ग्यारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपके पिता से आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है और उनका स्वास्थ्य भी आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। इस वर्ष आपको किसी भी प्रकार के विवाद से बचना चाहिए, अन्यथा आप चोटग्रस्त हो सकते हैं। इस वर्ष लाल या नीला कपड़ा पहनना खतरनाक हो सकता है।

वर्षफल में राहु का उपाय

राहु के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) नीलम या नीले रंग का कोई भी रत्न इस वर्ष नहीं पहनना है और न ही अपने पास रखना है।
(२) घर में बिजली के खराब उपकरण न रखें।
(३) सिर पर चोटी रखें या सफेद टोपी से सिर ढ़क कर रखें।

आपकी वर्षफल कुण्डली में केतु ग्रह अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में केतु ग्रह के अशुभता के कारण -

आपकी वर्षफल कुण्डली में, केतु चौथे भाव में स्थित है और ग्यारहवें भाव में कोई अन्य ग्रह स्थित है।
आपकी वर्षफल कुण्डली में, केतु चौथे भाव में स्थित है और चंद्रमा या मंगल तीसरे या चौथे भाव में स्थित है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में केतु से जुड़े अन्य तथ्य -

आपकी कुण्डली में केतु कायम है।
आपकी कुण्डली में केतु अपने शत्रु के पक्के घर में बैठा है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में केतु शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर चौथे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपकी माता का स्वास्थ्य आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। आपको अपने खान-पान पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है, अन्यथा आपको मधुमेह संबंधी रोग होने की भी संभावना बन सकती है। इस वर्ष अपने कुल-पुरोहित से अपना संबंध मधुर बनाकर रखना चाहिए। कुत्ते के काटने की भी संभावना हो सकती है, आपको सावधान और सचेत रहने की आवश्यकता है।

वर्षफल में केतु का उपाय

केतु के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) किसी धार्मिक स्थान में हल्दी, केसर या चने की दाल दान करें।
(२) कुत्तों को न मारें।
(३) कुल-पुरोहित की सेवा करें।

वर्षफल में लागू महत्वपूर्ण योग :

आपके वर्षफल कुण्डली में शनि से आठवें भाव में सूर्य बैठा हुआ है। जिससे सूर्य का फल पूरी तरह से नष्ट हो जा रहा है। आपको अपने घर का चूल्हा दूध से बुझाना चाहिए।

आपके वर्षफल कुण्डली में राहु ग्यारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष धन हानि होने की संभावना अधिक होगी। उपाय के तौर पर ४३ दिन तक लगातार अपने नाभि के चारो-तरफ केसर का तिलक लगायें।

लाल किताब से वर्षफल

(सभी भविष्यफल लाल किताब कुण्डली पर आधारित हैं)

वर्ष पूर्ण – 48

(18:12:2020 - 17:12:2021)

आपकी वर्षफल कुण्डली में सूर्य ग्रह अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में सूर्य ग्रह के अशुभता के कारण –

आपकी वर्षफल कुण्डली में, सूर्य ग्यारहवें भाव में स्थित है और छठे भाव में कोई ग्रह स्थित है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में सूर्य शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर ग्यारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको सावधान और सचेत रहने की जरूरत है, अन्यथा दुर्घटना हो सकती है। आपके साले का स्वास्थ्य चिन्तनीय हो सकता है। आपके रिश्तेदार आपके धन का अपव्यय कर सकते हैं। आपका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं हो सकता है। अपने पिता से आपके संबंध पूरी तरह से खराब हो सकते हैं। पदोन्नति में बाधायें आ सकती हैं। सरकारी कार्यों में आपको घाटा उठाना पड़ सकता है।

वर्षफल में सूर्य का उपाय

सूर्य के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) ४३ दिन तक रेत पर बिस्तर बिछा कर सोयें।
(२) मांस-मछली का सेवन न करें।
(३) रात को अपने सिरहाने मूली रखकर सोयें।
(४) झुठ न बोलें।

आपकी वर्षफल कुण्डली में चन्द्रमा ग्रह शुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में चंद्रमा शुभ स्थिति में छठे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपको विदेशी संबंधों से लाभ प्राप्त होगा। आपके शत्रुओं की पराजय होगी और आपके भाई-बन्धु और मित्र आपकी सहायता करेंगे।

वर्षफल में चन्द्रमा का उपाय

चन्द्रमा के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्नउपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) अपने पिता को अपने हाथों से दूध पिलायें।
(२) अपने भेद दूसरों को न बतायें।
(३) खरगोश पालें।
(४) रात में दूध का सेवन न करें।
(५) मुफ्त में पानी का दान न करें।

आपकी वर्षफल कुण्डली में मंगल ग्रह अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में मंगल ग्रह के अशुभता के कारण -

आपकी वर्षफल कुण्डली में, मंगल तीसरे भाव में स्थित है और बृहस्पति, सूर्य या चंद्रमा सातवें, नौवें

या ग्यारहवें भाव में स्थित है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में मंगल शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर तीसरे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, पैतृक संपत्ति के बंटवारे में आपको कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। माता-पिता तथा भाई-बन्धुओं से आपका मन-मुटाव हो सकता है। आपके भाई या चाचा का स्वास्थ्य भीआपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। गलत प्रेम-संबंधों के उजागर होने से भी आपको बदनामी का सामना करना पड़ सकता है। आपके स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव पड़ सकता है। यदि आप पैसों का लेन-देन बिना लिखा-पढ़ी का करते हैं तो यह ठीक नहीं है। आपको खून से संबंधित बीमारियां हो सकती हैं।

वर्षफल में मंगल का उपाय

मंगल के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) अपनी अंगुली में हाथी दांत का छल्ला पहनें।
(२) अपने क्रोध पर काबु रखें।
(३) अपने भाईयों की सहायता करें।
(४) खाने-पीने पर विशेष ध्यान दें नहीं तो पेट से संबंधित बिमारी हो सकती है।
(५) हाथी दांत से बनी वस्तुऐं अपने घर में न रखें।

आपकी वर्षफल कुण्डली में बुध ग्रह अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में बुध ग्रह के अशुभता के कारण -

आपकी वर्षफल कुण्डली में, बुध सातवें भाव में स्थित है और दूसरे भाव में कोई अन्य ग्रह स्थित है। आपकी वर्षफल कुण्डली में, बुध सातवें भाव में स्थित है और केतु पहले या आठवें भाव में स्थित है या पहला भाव खाली है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में बुध शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर सातवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपको अपने क्रोध पर काबू रखने की आवश्यकता होगी, अन्यथा आपका अनुचित व्यवहार आपकी मान-प्रतिष्ठा के लिए घातक सिद्ध हो सकता है। यदि आप अपना व्यापार साझेदारी में कर हैं, तो इस वर्ष आपको घाटा उठाना पड़ सकता है। आपके भाई अथवा आपके जीवनसाथी के स्वास्थ्य पर भी बुरा असर पड़ सकता है।

वर्षफल में बुध का उपाय

बुध के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) किसी भी कार्य को करने से पहले मीठा खायें।
(२) हीरे की अंगुठी पहनना लाभदायक होगा।
(३) घर में हरी घास रोपें।

आपकी वर्षफल कुण्डली में गुरू ग्रह अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में गुरू ग्रह के अशुभता के कारण -

आपकी वर्षफल कुण्डली में, बृहस्पति दूसरे भाव में स्थित है और आठवें भाव में कोई भी ग्रह स्थित नहीं है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में बृहस्पति शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर दूसरे भाव में बैठा हुआ है। लालकिताब के अनुसार, आपके पिता को सोने, चांदी के व्यापार में घाटा हो सकता है। उनको कम पूंजी वाले व्यापार में हाथ आजमाना चाहिए। इस वर्ष पैतृक सम्पत्ति के बंटवारे में आपको घाटा हो सकता है। आपको इस वर्ष अपने गुस्से पर काबू रखने की आवश्यकता है।

वर्षफल में गुरू का उपाय

गुरू के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) घर के सामने के गड्ढ़ों को मिट्टी से भरवायें।
(२) सोने चांदी से संबंधित व्यापार न करें।
(३) हल्दी या केसर का तिलक लगायें।
(४) अपने घर का एक हिस्सा अधुरा ही बिना बनवाये छोड़ें।
(५) अपना चाल-चलन ठीक रखें।
(६) नई ब्याही हुई लड़की को पतीशे की मिठाई दें।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शुक्र ग्रह शुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शुक्र शुभ स्थिति में दूसरे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आप अपनी कड़ी मेहनत से सफलता प्राप्त करेंगे। यदि आप विवाहित हैं, तो अपने जीवनसाथी का आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। धार्मिक प्रवृति भी प्रबल होगी। प्रेम संबंधों में धोखे की वजह से इस वर्ष आप ऐसे किसी भी संबंध से दूर ही रहेंगे। यदि आप अविवाहित हैं, तो विवाह का योग भी बनसकता है।

वर्षफल में शुक्र का उपाय

शुक्र के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) आलू और दही का दान करें।
(२) जानवरों से घृणा न करें।
(३) कपिला गाय की सेवा करें।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शनि ग्रह अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शनि ग्रह के अशुभता के कारण -

आपकी वर्षफल कुण्डली में, शनि चौथे भाव में स्थित है और ग्यारहवें भाव में कोई अन्य ग्रह स्थित है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शनि शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त होकर चौथे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको इस वर्ष मछली का सेवन बिल्कुल नहीं करना चाहिए और शराब इत्यादि मादक पदार्थों से दूर रहना चाहिए। आपको हृदय संबंधित परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है।पिता से आपके संबंधों में कड़वाहट आ सकती है। आपकी माता का स्वास्थ्य भी आपके लिए चिन्ता का विषय बन सकता है। यदि आप राजनैतिक क्षेत्र में सक्रिय हैं, तो आपके प्रयास विफल हो सकते हैं।

वर्षफल में शनि का उपाय

शनि के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) कुऐं में दूध गिरायें।
(२) अपने भोजन में से एक हिस्सा मछलियों, कौओं या भैंस को खिलायें।
(३) इस वर्ष काले कपड़े न पहनें।
(४) हरे रंग से बचें।
(५) ४ पैक शराब जल में प्रवाहित करें।

आपकी वर्षफल कुण्डली में राहु ग्रह अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में राहु ग्रह के अशुभता के कारण -

आपकी वर्षफल कुण्डली में, राहु ग्यारहवें भाव में स्थित है और छठे भाव में कोई अन्य ग्रह स्थित है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में राहु शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर ग्यारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपके पिता से आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है और उनका स्वास्थ्य भी आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। इस वर्ष आपको किसी भी प्रकार के विवाद से बचना चाहिए, अन्यथा आप चोटग्रस्त हो सकते हैं। इस वर्ष लाल या नीला कपड़ा पहनना खतरनाक हो सकता है।

वर्षफल में राहु का उपाय

राहु के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) नीलम या नीले रंग का कोई भी रत्न इस वर्ष नहीं पहनना है और न ही अपने पास रखना है।
(२) घर में बिजली के खराब उपकरण न रखें।
(३) सिर पर चोटी रखें या सफेद टोपी से सिर ढ़क कर रखें।

आपकी वर्षफल कुण्डली में केतु ग्रह अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में केतु ग्रह के अशुभता के कारण -

आपकी वर्षफल कुण्डली में, केतु चौथे भाव में स्थित है और ग्यारहवें भाव में कोई अन्य ग्रह स्थित है।
आपकी वर्षफल कुण्डली में, केतु चौथे भाव में स्थित है और चंद्रमा या मंगल तीसरे या चौथे भाव में

स्थित है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में केतु शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर चौथे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपकी माता का स्वास्थ्य आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। आपको अपने खान-पान पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है, अन्यथा आपको मधुमेह संबंधी रोग होने की भी संभावना बन सकती है। इस वर्ष अपने कुल-पुरोहित से अपना संबंध मधुर बनाकर रखना चाहिए। कुत्ते के काटने की भी संभावना हो सकती है, आपको सावधान और सचेत रहने की आवश्यकता है।

वर्षफल में केतु का उपाय

केतु के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) किसी धार्मिक स्थान में हल्दी, केसर या चने की दाल दान करें।
(२) कुत्तों को न मारें।
(३) कुल-पुरोहित की सेवा करें।

वर्षफल में लागू महत्वपूर्ण योग :

आपके वर्षफल कुण्डली में शनि से आठवें भाव में सूर्य बैठा हुआ है। जिससे सूर्य का फल पूरी तरह सेनष्ट हो जा रहा है। आपको अपने घर का चूल्हा दूध से बुझाना चाहिए।

आपके वर्षफल कुण्डली में राहु ग्यारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष धन हानि होने की संभावना अधिक होगी। उपाय के तौर पर ४३ दिन तक लगातार अपने नाभि के चारो-तरफ केसर का तिलक लगायें।

लाल किताब से वर्षफल

(सभी भविष्यफल लाल किताब कुण्डली पर आधारित हैं)

वर्ष पूर्ण – 48

(18:12:2020 - 17:12:2021)

ग्यारहवें भाव में स्थित सूर्य का फल

आपके वर्षफल कुण्डली सूर्य की शुभता की मात्रा अशुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में सूर्य की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में सूर्य शुभ भाव में बैठा है।
आपकी कुण्डली में सूर्य अपने मित्र के पक्के घर में बैठा है।
आपकी कुण्डली में सूर्य पर उसके मित्र ग्रह मंगल की अर्द्ध दृटि पड़ रही है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में सूर्य शुभ स्थिति में ग्यारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, धार्मिक कार्यों में आप बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेंगे। अपने सम्पर्क में आये हुए लोगों को सलाह देगें, संगीत और नृत्य में आपकी रूचि होगी। राजनीतिक रूप से आप सक्रिय होंगे एंव धन कमाने के नएस्रोतों की प्राप्ति होगी। अधिकारियों से आपके संबंध मधुर होंगे। संतान पक्ष से भी आपको शुभ समाचार प्राप्त होंगे।

वर्षफल में सूर्य का उपाय

सूर्य के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) ४३ दिन तक रेत पर बिस्तर बिछा कर सोयें।
(२) मांस-मछली का सेवन न करें।
(३) रात को अपने सिरहाने मूली रखकर सोयें।
(४) झुठ न बोलें।

छठवें भाव में स्थित चन्द्रमा का फल

आपके वर्षफल कुण्डली चन्द्रमा की अशुभता की मात्रा शुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में चन्द्रमा की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में चन्द्रमा अशुभ भाव में बैठा है।
आपकी कुण्डली में चन्द्रमा अपने शत्रु के पक्के घर में बैठा

है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में चंद्रमा शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर छठे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपके अधीनस्थ कर्मचारी आपके लिए परेशानियां खड़ी कर सकते हैं। आपकी माताका स्वास्थ्य भी आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। यात्राओं में आपको सावधान और सचेतरहने की जरूरत होगी, अन्यथा आपको परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

वर्षफल में चन्द्रमा का उपाय

चन्द्रमा के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिएऔर सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) अपने पिता को अपने हाथों से दूध पिलायें।
(२) अपने भेद दूसरों को न बतायें।
(३) खरगोश पालें।
(४) रात में दूध का सेवन न करें।
(५) मुफ्त में पानी का दान न करें।

तीसरे भाव में स्थित मंगल का फल

आपके वर्षफल कुण्डली मंगल की शुभता की मात्रा अशुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में मंगल की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में मंगल पक्के घर का है।
आपकी कुण्डली में मंगल कायम है।
आपकी कुण्डली में मंगल शुभ भाव में बैठा है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में मंगल शुभ स्थिति में तीसरे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार,आपके मान-प्रतिष्ठा में निश्चय ही वृद्धि होगी। आपको व्यापार में आशा से अधिक लाभ होगा। आप अपने शत्रुओं को भी माफ करेंगे। धार्मिक और जनकल्याण के कार्यों में आप इस वर्ष बढ़-चढ़ करहिस्सा लेंगे। इस वर्ष आपको व्यायाम इत्यादि में भी रूचि रहेगी। आप मार्शल आर्ट सिखने की कोशिश कर सकते हैं। यदि आप अपना व्यवहार नम्र रखें तो आपको फायदा होगा।

वर्षफल में मंगल का उपाय

मंगल के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) अपनी अंगुली में हाथी दांत का छल्ला

पहनें।
(२) अपने क्रोध पर काबु रखें।
(३) अपने भाईयों की सहायता करें।
(४) खाने-पीने पर विशेष ध्यान दें नहीं तो पेट से संबंधित बिमारी हो सकती है।
(५) हाथी दांत से बनी वस्तुऐं अपने घर में न रखें।

सातवें भाव में स्थित बुध का फल

आपके वर्षफल कुण्डली बुध की शुभता की मात्रा अशुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में बुध की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में बुध पक्के घर का है।
आपकी कुण्डली में बुध कायम है।
आपकी कुण्डली में बुध शुभ भाव में बैठा है।
आपकी कुण्डली में बुध अपने मित्र के पक्के घर में बैठा है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में बुध शुभ स्थिति में सातवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार,इस वर्ष आप अपने जीवनसाथी अथवा अन्य स्त्रियों से संबंधित किसी कार्य से बड़ी मात्रा में धन प्राप्त करेंगे। इस वर्ष लकड़ी आदि के व्यापार से भी आपको बड़ी कमाई हो सकती है। इस वर्ष आपविदेश यात्रा या किसी विदेशी संबंध से भी धन प्राप्त कर सकते हैं। अपने परिवार में भी मान-सम्मान प्राप्त होगा। सामान्यत: स्त्रियों से आपको इस वर्ष विशेष सहायता और सहयोग की प्राप्ति होगी।

वर्षफल में बुध का उपाय

बुध के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) किसी भी कार्य को करने से पहले मीठा खायें।
(२) हीरे की अंगुठी पहनना लाभदायक होगा।
(३) घर में हरी घास रोपें।

दूसरे भाव में स्थित गुरू का फल

आपके वर्षफल कुण्डली गुरू की अशुभता की मात्रा शुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में गुरू की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में गुरू अपने शत्रु बुध के साथ बैठा है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में बृहस्पति शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर दूसरे भाव में बैठा हुआ है। लालकिताब के अनुसार, आपके पिता को सोने, चांदी के व्यापार में घाटा हो सकता है। उनको कम पूंजी वाले व्यापार में हाथ आजमाना चाहिए। इस वर्ष पैतृक सम्पत्ति के बंटवारे में आपको घाटा हो सकता है। आपको इस वर्ष अपने गुस्से पर काबू रखने की आवश्यकता है।

वर्षफल में गुरू का उपाय

गुरू के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) घर के सामने के गड्ढ़ों को मिट्टी से भरवायें।
(२) सोने चांदी से संबंधित व्यापार न करें।
(३) हल्दी या केसर का तिलक लगायें।
(४) अपने घर का एक हिस्सा अधुरा ही बिना बनवाये छोड़ें।
(५) अपना चाल-चलन ठीक रखें।
(६) नई ब्याही हुई लड़की को पतीशे की मिठाई दें।

दूसरे भाव में स्थित शुक्र का फल

आपके वर्षफल कुण्डली शुक्र की शुभता की मात्रा अशुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में शुक्र की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में शुक्र अपने घर का है।
आपकी कुण्डली में शुक्र कायम है।
आपकी कुण्डली में शुक्र शुभ भाव में बैठा है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शुक्र शुभ स्थिति में दूसरे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आप अपनी कड़ी मेहनत से सफलता प्राप्त करेंगे। यदि आप विवाहित हैं, तो अपने जीवनसाथी का आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। धार्मिक प्रवृति भी प्रबल होगी। प्रेम संबंधों में धोखे की वजह से इस वर्ष आप ऐसे किसी भी संबंध से दूर ही रहेंगे। यदि आप अविवाहित हैं, तो विवाह का योग भी बनसकता है।

वर्षफल में शुक्र का उपाय

शुक्र के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) आलू और दही का दान करें।
(२) जानवरों से घृणा न करें।
(३) कपिला गाय की सेवा करें।

चौथे भाव में स्थित शनि का फल

आपके वर्षफल कुण्डली शनि की अशुभता की मात्रा शुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में शनि की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में शनि अशुभ भाव में बैठा है।
आपकी कुण्डली में शनि अपने शत्रु के पक्के घर में बैठा है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शनि शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त होकर चौथे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको इस वर्ष मछली का सेवन बिल्कुल नहीं करना चाहिए और शराब इत्यादि मादक पदार्थों से दूर रहना चाहिए। आपको हृदय संबंधित परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है।पिता से आपके संबंधों में कड़वाहट आ सकती है। आपकी माता का स्वास्थ्य भी आपके लिए चिन्ता का विषय बन सकता है। यदि आप राजनैतिक क्षेत्र में सक्रिय हैं, तो आपके प्रयास विफल हो सकते हैं।

वर्षफल में शनि का उपाय

शनि के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।
(१) कुऐं में दूध गिरायें।
(२) अपने भोजन में से एक हिस्सा मछलियों, कौओं या भैंस को खिलायें।
(३) इस वर्ष काले कपड़े न पहनें।
(४) हरे रंग से बचें।
(५) ४ पैक शराब जल में प्रवाहित करें।

ग्यारहवें भाव में स्थित राहु का फल

आपके वर्षफल कुण्डली राहु की अशुभता की मात्रा शुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में राहु की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में राहु अशुभ भाव में बैठा है।
आपकी कुण्डली में राहु अपने शत्रु सूर्य के साथ बैठा है।
आपकी कुण्डली में राहु पर उसके शत्रु ग्रह मंगल की अर्द्ध दृटि पड़ रही

है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में राहु शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर ग्यारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपके पिता से आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है और उनका स्वास्थ्य भी आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। इस वर्ष आपको किसी भी प्रकार के विवाद से बचना चाहिए, अन्यथा आप चोटग्रस्त हो सकते हैं। इस वर्ष लाल या नीला कपड़ा पहनना खतरनाक हो सकता है।

वर्षफल में राहु का उपाय

राहु के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) नीलम या नीले रंग का कोई भी रत्न इस वर्ष नहीं पहनना है और न ही अपने पास रखना है।
(२) घर में बिजली के खराब उपकरण न रखें।
(३) सिर पर चोटी रखें या सफेद टोपी से सिर ढ़क कर रखें।

चौथे भाव में स्थित केतु का फल

आपके वर्षफल कुण्डली केतु की शुभता की मात्रा अशुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में केतु की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में केतु कायम है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में केतु शुभ स्थिति में होकर चौथे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपके उत्साह और सामर्थ्य में वृद्धि होगी। आप अपनी जायदाद को लेकर कुछ चिन्तित रह सकते हैं। पिता और गुरूजनों की सेवा करना आपके लिए लाभदायक होगा। अपने पारिवारिकसदस्यों से आपका संबंध मधुर बना रहेगा।

वर्षफल में केतु का उपाय

केतु के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) किसी धार्मिक स्थान में हल्दी, केसर या चने की दाल दान करें।
(२) कुत्तों को न मारें।
(३) कुल-पुरोहित की सेवा करें।

वर्षफल में लागू महत्वपूर्ण योग :

आपके वर्षफल कुण्डली में शनि से आठवें भाव में सूर्य बैठा हुआ है। जिससे सूर्य का फल पूरी तरह सेनष्ट हो जा रहा है। आपको अपने घर का चूल्हा दूध से बुझाना चाहिए।

आपके वर्षफल कुण्डली में राहु ग्यारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष धन हानि होने की संभावना अधिक होगी। उपाय के तौर पर ४३ दिन तक लगातार अपने नाभि के चारो-तरफ केसर का तिलक लगायें।

लाल किताब वर्षफल

वर्ष पूर्ण– 1

(18:12:1973 - 17:12:1974)

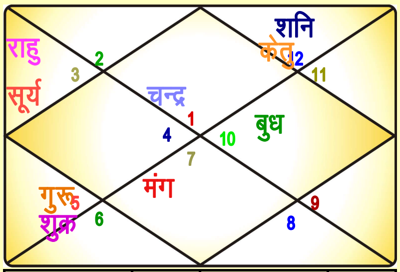

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	3	शुक्र-बद	5
चन्द्रमा	1	शनि-बद	12
मंगल	7	राहु-बद	3
बुध-बद	10	केतु-बद	12
गुरू-बद	5		

वर्ष पूर्ण– 2

(18:12:1974 - 17:12:1975)

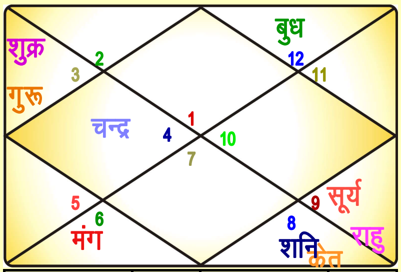

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	9	शुक्र	3
चन्द्रमा	4	शनि-बद	8
मंगल-बद	6	राहु-बद	9
बुध-बद	12	केतु-बद	8
गुरू	3		

वर्ष पूर्ण– 3

(18:12:1975 - 17:12:1976)

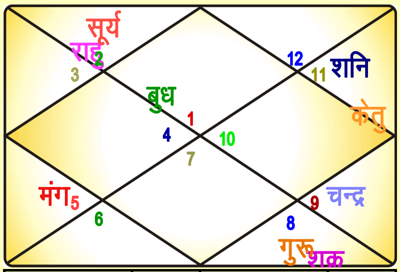

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	2	शुक्र	8
चन्द्रमा	9	शनि	11
मंगल	5	राहु-बद	2
बुध-बद	1	केतु	11
गुरू-बद	8		

वर्ष पूर्ण– 4

(18:12:1976 - 17:12:1977)

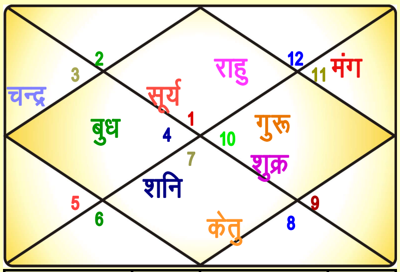

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	1	शुक्र	10
चन्द्रमा-बद	3	शनि	7
मंगल	11	राहु	1
बुध-बद	4	केतु	7
गुरू-बद	10		

वर्ष पूर्ण– 5

(18:12:1977 - 17:12:1978)

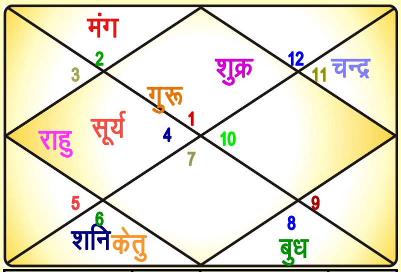

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	4	शुक्र-बद	1
चन्द्रमा-बद	11	शनि-बद	6
मंगल	2	राहु-बद	4
बुध	8	केतु-बद	6
गुरू-बद	1		

वर्ष पूर्ण– 6

(18:12:1978 - 17:12:1979)

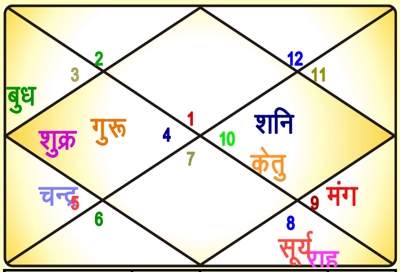

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	8	शुक्र	4
चन्द्रमा-बद	5	शनि-बद	10
मंगल-बद	9	राहु-बद	8
बुध-बद	3	केतु-बद	10
गुरू-बद	4		

वर्ष पूर्ण– 7

(18:12:1979 - 17:12:1980)

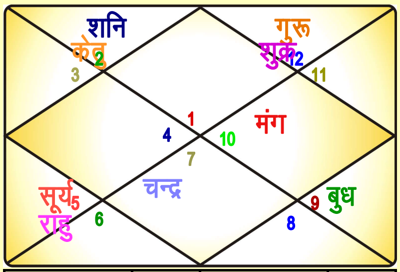

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	5	शुक्र-बद	12
चन्द्रमा-बद	7	शनि-बद	2
मंगल-बद	10	राहु-बद	5
बुध-बद	9	केतु-बद	2
गुरू-बद	12		

वर्ष पूर्ण– 8

(18:12:1980 - 17:12:1981)

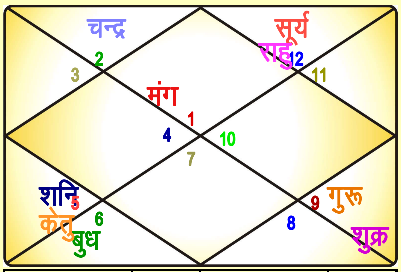

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	12	शुक्र	9
चन्द्रमा-बद	2	शनि-बद	5
मंगल	1	राहु	12
बुध-बद	6	केतु-बद	5
गुरू	9		

वर्ष पूर्ण– 9

(18:12:1981 - 17:12:1982)

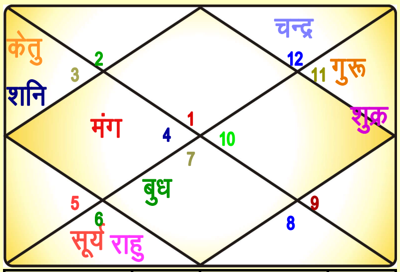

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	6	शुक्र-बद	11
चन्द्रमा-बद	12	शनि	3
मंगल-बद	4	राहु	6
बुध-बद	7	केतु-बद	3
गुरू-बद	11		

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia (up)

लाल किताब वर्षफल

वर्ष पूर्ण– 10
(18:12:1982 - 17:12:1983)

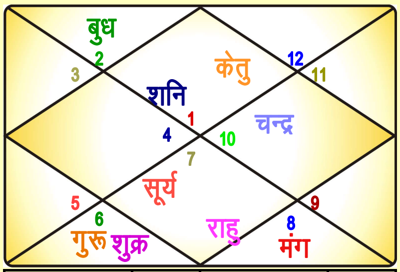

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	7	शुक्र-बद	6
चन्द्रमा-बद	10	शनि-बद	1
मंगल-बद	8	राहु-बद	7
बुध	2	केतु-बद	1
गुरू-बद	6		

वर्ष पूर्ण– 11
(18:12:1983 - 17:12:1984)

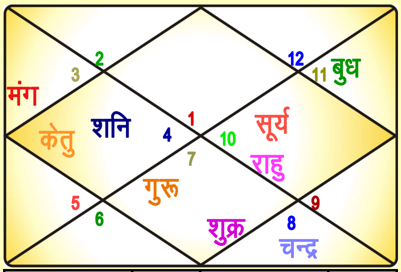

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	10	शुक्र-बद	7
चन्द्रमा-बद	8	शनि-बद	4
मंगल-बद	3	राहु	10
बुध	11	केतु-बद	4
गुरू-बद	7		

वर्ष पूर्ण– 12
(18:12:1984 - 17:12:1985)

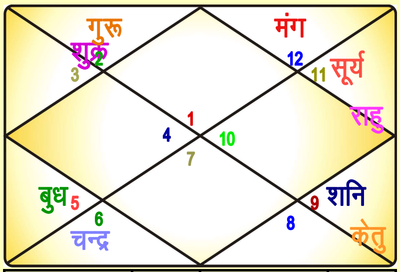

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	11	शुक्र-बद	2
चन्द्रमा	6	शनि	9
मंगल	12	राहु-बद	11
बुध-बद	5	केतु	9
गुरू-बद	2		

वर्ष पूर्ण– 13
(18:12:1985 - 17:12:1986)

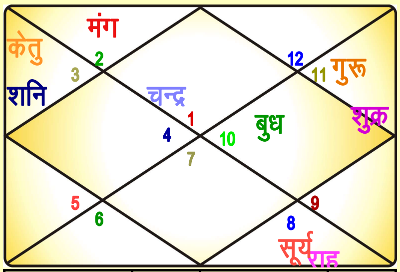

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	8	शुक्र	11
चन्द्रमा-बद	1	शनि-बद	3
मंगल	2	राहु-बद	8
बुध	10	केतु-बद	3
गुरू-बद	11		

वर्ष पूर्ण– 14
(18:12:1986 - 17:12:1987)

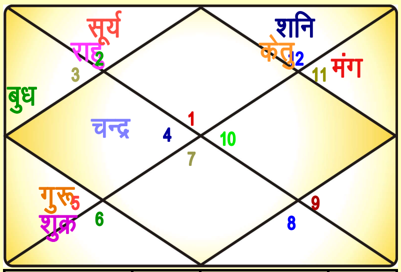

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	2	शुक्र-बद	5
चन्द्रमा-बद	4	शनि	12
मंगल	11	राहु	2
बुध	3	केतु-बद	12
गुरू-बद	5		

वर्ष पूर्ण– 15
(18:12:1987 - 17:12:1988)

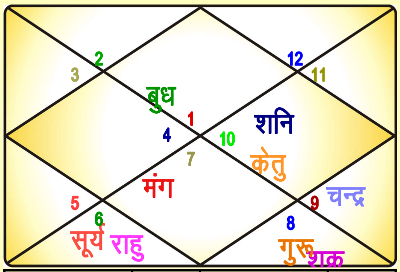

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	6	शुक्र-बद	8
चन्द्रमा	9	शनि	10
मंगल-बद	7	राहु-बद	6
बुध-बद	1	केतु	10
गुरू-बद	8		

वर्ष पूर्ण– 16
(18:12:1988 - 17:12:1989)

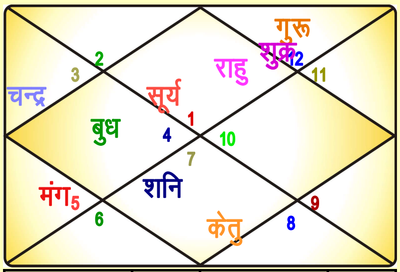

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	1	शुक्र-बद	12
चन्द्रमा	3	शनि	7
मंगल-बद	5	राहु	1
बुध	4	केतु	7
गुरू-बद	12		

वर्ष पूर्ण– 17
(18:12:1989 - 17:12:1990)

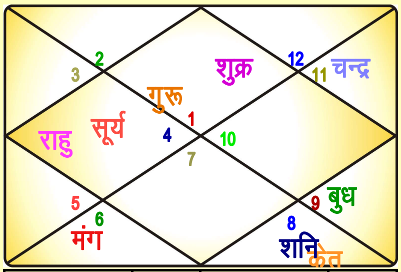

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	4	शुक्र-बद	1
चन्द्रमा-बद	11	शनि-बद	8
मंगल-बद	6	राहु-बद	4
बुध-बद	9	केतु	8
गुरू-बद	1		

वर्ष पूर्ण– 18
(18:12:1990 - 17:12:1991)

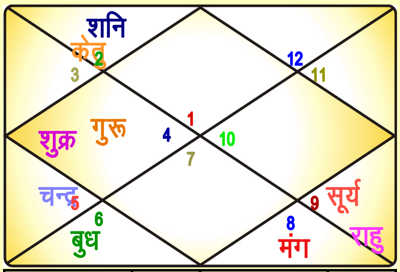

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	9	शुक्र-बद	4
चन्द्रमा-बद	5	शनि-बद	2
मंगल-बद	8	राहु-बद	9
बुध-बद	6	केतु-बद	2
गुरू-बद	4		

लाल किताब वर्षफल

वर्ष पूर्ण– 19
(18:12:1991 - 17:12:1992)

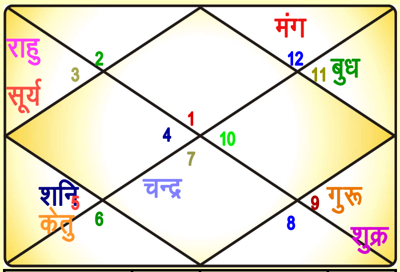

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	3	शुक्र-बद	9
चन्द्रमा	7	शनि-बद	5
मंगल-बद	12	राहु	3
बुध	11	केतु-बद	5
गुरू-बद	9		

वर्ष पूर्ण– 20
(18:12:1992 - 17:12:1993)

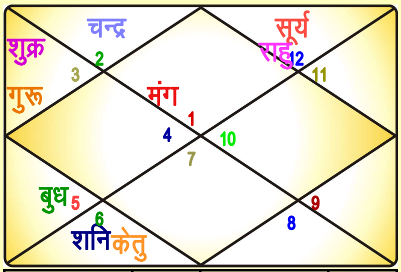

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	12	शुक्र	3
चन्द्रमा	2	शनि-बद	6
मंगल	1	राहु	12
बुध-बद	5	केतु-बद	6
गुरू	3		

वर्ष पूर्ण– 21
(18:12:1993 - 17:12:1994)

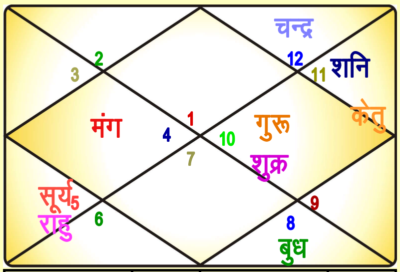

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	5	शुक्र-बद	10
चन्द्रमा	12	शनि	11
मंगल-बद	4	राहु-बद	5
बुध	8	केतु	11
गुरू-बद	10		

वर्ष पूर्ण– 22
(18:12:1994 - 17:12:1995)

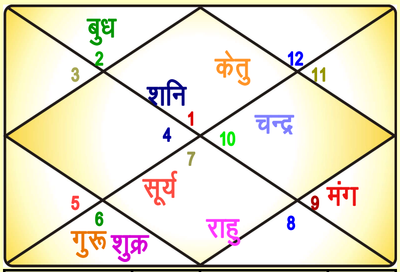

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	7	शुक्र-बद	6
चन्द्रमा-बद	10	शनि-बद	1
मंगल	9	राहु-बद	7
बुध-बद	2	केतु	1
गुरू-बद	6		

वर्ष पूर्ण– 23
(18:12:1995 - 17:12:1996)

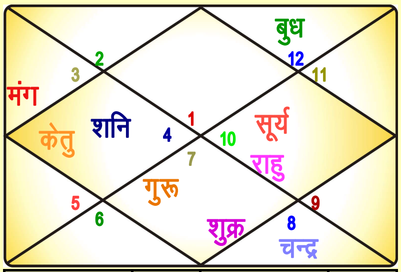

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	10	शुक्र-बद	7
चन्द्रमा-बद	8	शनि-बद	4
मंगल-बद	3	राहु	10
बुध-बद	12	केतु-बद	4
गुरू-बद	7		

वर्ष पूर्ण– 24
(18:12:1996 - 17:12:1997)

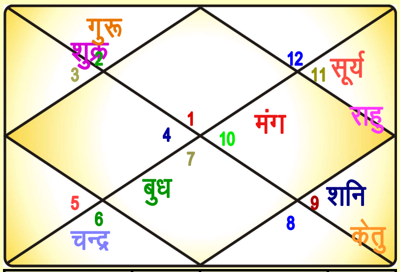

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	11	शुक्र-बद	2
चन्द्रमा	6	शनि	9
मंगल-बद	10	राहु-बद	11
बुध-बद	7	केतु	9
गुरू-बद	2		

वर्ष पूर्ण– 25
(18:12:1997 - 17:12:1998)

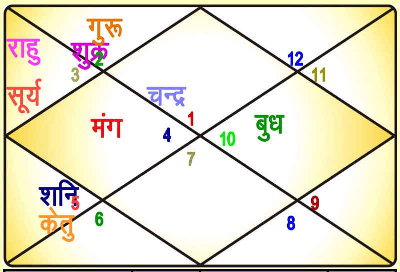

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	3	शुक्र	2
चन्द्रमा	1	शनि	5
मंगल	4	राहु-बद	3
बुध-बद	10	केतु-बद	5
गुरू-बद	2		

वर्ष पूर्ण– 26
(18:12:1998 - 17:12:1999)

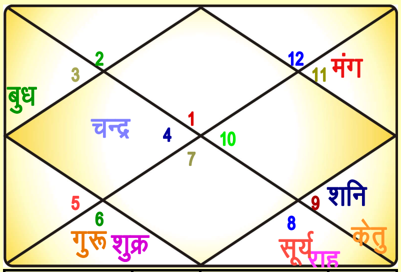

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	8	शुक्र-बद	6
चन्द्रमा-बद	4	शनि-बद	9
मंगल-बद	11	राहु-बद	8
बुध	3	केतु-बद	9
गुरू	6		

वर्ष पूर्ण– 27
(18:12:1999 - 17:12:2000)

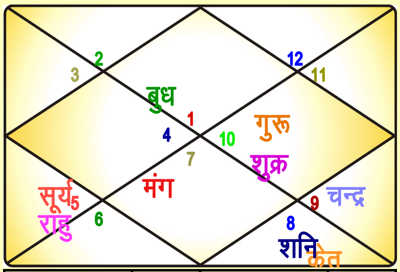

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	5	शुक्र-बद	10
चन्द्रमा	9	शनि-बद	8
मंगल-बद	7	राहु	5
बुध-बद	1	केतु-बद	8
गुरू-बद	10		

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia (up)

लाल किताब वर्षफल

वर्ष पूर्ण– 28

(18:12:2000 - 17:12:2001)

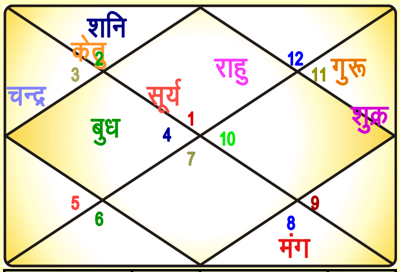

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	1	शुक्र	11
चन्द्रमा	3	शनि-बद	2
मंगल-बद	8	राहु-बद	1
बुध-बद	4	केतु-बद	2
गुरू	11		

वर्ष पूर्ण– 29

(18:12:2001 - 17:12:2002)

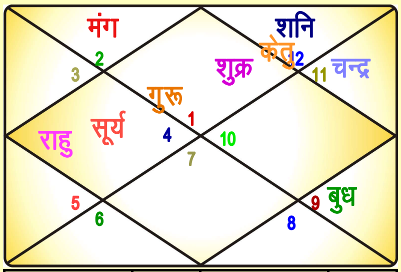

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	4	शुक्र	1
चन्द्रमा	11	शनि	12
मंगल-बद	2	राहु-बद	4
बुध-बद	9	केतु-बद	12
गुरू	1		

वर्ष पूर्ण– 30

(18:12:2002 - 17:12:2003)

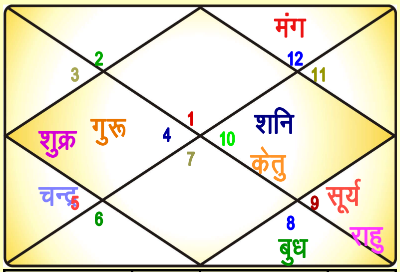

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	9	शुक्र	4
चन्द्रमा-बद	5	शनि-बद	10
मंगल-बद	12	राहु-बद	9
बुध	8	केतु-बद	10
गुरू-बद	4		

वर्ष पूर्ण– 31

(18:12:2003 - 17:12:2004)

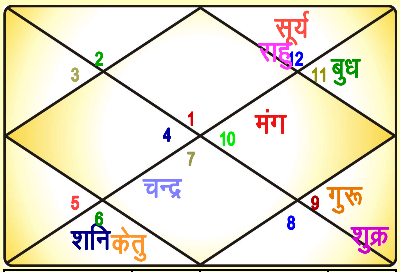

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	12	शुक्र-बद	9
चन्द्रमा	7	शनि	6
मंगल	10	राहु-बद	12
बुध-बद	11	केतु	6
गुरू-बद	9		

वर्ष पूर्ण– 32

(18:12:2004 - 17:12:2005)

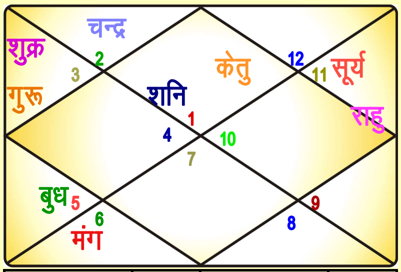

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	11	शुक्र	3
चन्द्रमा	2	शनि-बद	1
मंगल-बद	6	राहु-बद	11
बुध	5	केतु	1
गुरू	3		

वर्ष पूर्ण– 33

(18:12:2005 - 17:12:2006)

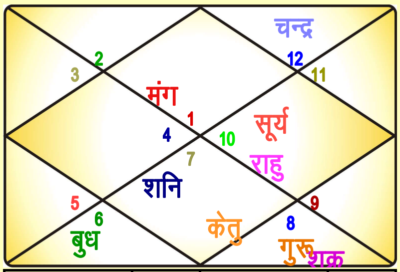

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	10	शुक्र-बद	8
चन्द्रमा-बद	12	शनि	7
मंगल-बद	1	राहु	10
बुध-बद	6	केतु	7
गुरू-बद	8		

वर्ष पूर्ण– 34

(18:12:2006 - 17:12:2007)

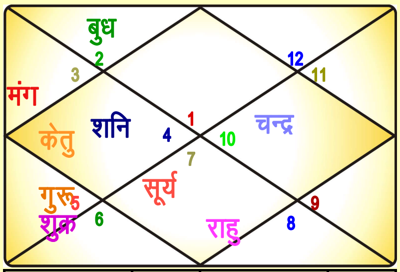

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	7	शुक्र-बद	5
चन्द्रमा-बद	10	शनि	4
मंगल-बद	3	राहु-बद	7
बुध	2	केतु-बद	4
गुरू	5		

वर्ष पूर्ण– 35

(18:12:2007 - 17:12:2008)

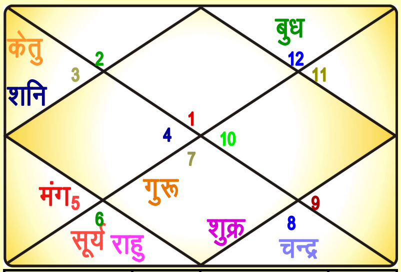

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	6	शुक्र-बद	7
चन्द्रमा-बद	8	शनि	3
मंगल-बद	5	राहु	6
बुध-बद	12	केतु-बद	3
गुरू-बद	7		

वर्ष पूर्ण– 36

(18:12:2008 - 17:12:2009)

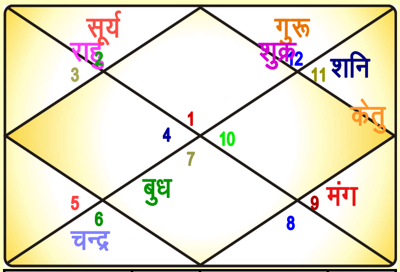

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	2	शुक्र-बद	12
चन्द्रमा	6	शनि-बद	11
मंगल	9	राहु-बद	2
बुध-बद	7	केतु-बद	11
गुरू-बद	12		

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia (up)

लाल किताब वर्षफल

वर्ष पूर्ण– 37
(18:12:2009 - 17:12:2010)

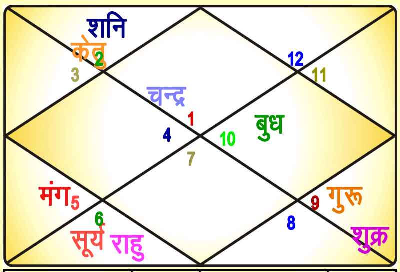

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	6	शुक्र	9
चन्द्रमा-बद	1	शनि-बद	2
मंगल	5	राहू-बद	6
बुध-बद	10	केतु-बद	2
गुरू	9		

वर्ष पूर्ण– 38
(18:12:2010 - 17:12:2011)

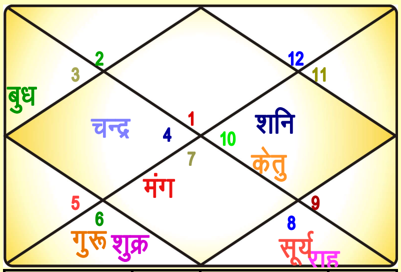

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	8	शुक्र-बद	6
चन्द्रमा	4	शनि-बद	10
मंगल	7	राहू-बद	8
बुध-बद	3	केतु	10
गुरू	6		

वर्ष पूर्ण– 39
(18:12:2011 - 17:12:2012)

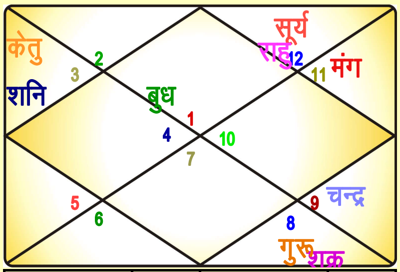

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	12	शुक्र-बद	8
चन्द्रमा	9	शनि	3
मंगल	11	राहू	12
बुध-बद	1	केतु	3
गुरू-बद	8		

वर्ष पूर्ण– 40
(18:12:2012 - 17:12:2013)

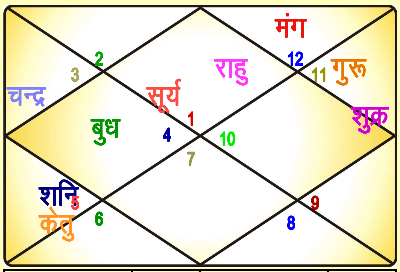

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	1	शुक्र	11
चन्द्रमा	3	शनि-बद	5
मंगल-बद	12	राहू	1
बुध-बद	4	केतु-बद	5
गुरू	11		

वर्ष पूर्ण– 41
(18:12:2013 - 17:12:2014)

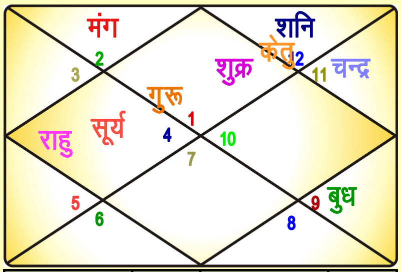

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	4	शुक्र	1
चन्द्रमा	11	शनि	12
मंगल-बद	2	राहू-बद	4
बुध-बद	9	केतु-बद	12
गुरू	1		

वर्ष पूर्ण– 42
(18:12:2014 - 17:12:2015)

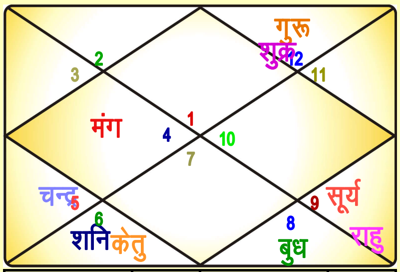

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	9	शुक्र-बद	12
चन्द्रमा-बद	5	शनि	6
मंगल	4	राहू-बद	9
बुध	8	केतु	6
गुरू	12		

वर्ष पूर्ण– 43
(18:12:2015 - 17:12:2016)

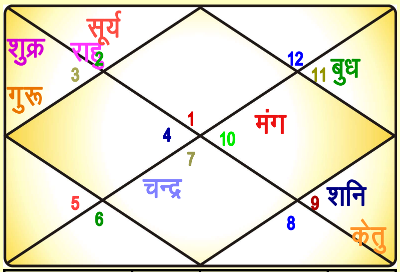

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	2	शुक्र-बद	3
चन्द्रमा-बद	7	शनि	9
मंगल-बद	10	राहू-बद	2
बुध	11	केतु	9
गुरू-बद	3		

वर्ष पूर्ण– 44
(18:12:2016 - 17:12:2017)

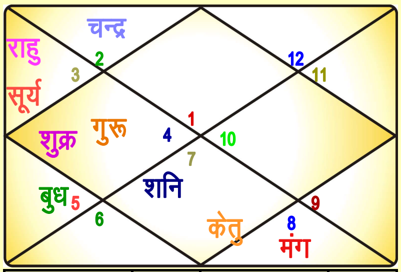

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	3	शुक्र	4
चन्द्रमा	2	शनि-बद	7
मंगल-बद	8	राहू	3
बुध	5	केतु-बद	7
गुरू-बद	4		

वर्ष पूर्ण– 45
(18:12:2017 - 17:12:2018)

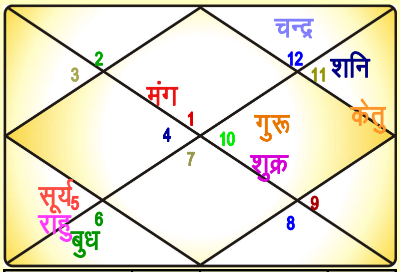

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	5	शुक्र-बद	10
चन्द्रमा	12	शनि-बद	11
मंगल	1	राहू-बद	5
बुध-बद	6	केतु-बद	11
गुरू-बद	10		

लाल किताब वर्षफल

वर्ष पूर्ण– 46
(18:12:2018 - 17:12:2019)

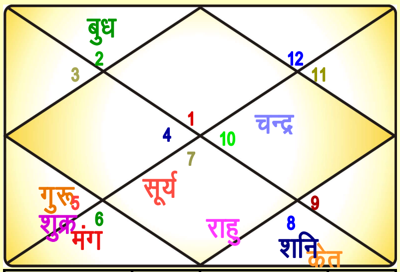

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	7	शुक्र-बद	5
चन्द्रमा-बद	10	शनि-बद	8
मंगल	6	राहु-बद	7
बुध	2	केतु	8
गुरू	5		

वर्ष पूर्ण– 47
(18:12:2019 - 17:12:2020)

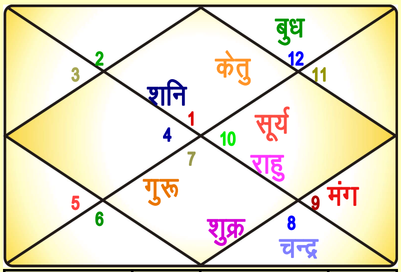

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	10	शुक्र	7
चन्द्रमा	8	शनि-बद	1
मंगल	9	राहु	10
बुध-बद	12	केतु-बद	1
गुरू	7		

वर्ष पूर्ण– 48
(18:12:2020 - 17:12:2021)

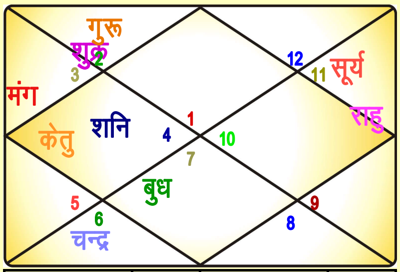

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	11	शुक्र	2
चन्द्रमा	6	शनि-बद	4
मंगल-बद	3	राहु-बद	11
बुध-बद	7	केतु-बद	4
गुरू-बद	2		

वर्ष पूर्ण– 49
(18:12:2021 - 17:12:2022)

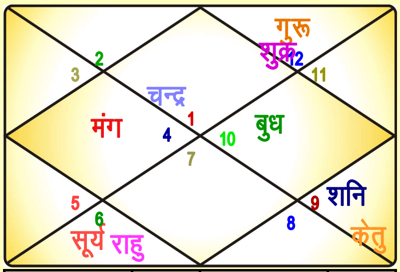

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	6	शुक्र-बद	12
चन्द्रमा-बद	1	शनि-बद	9
मंगल	4	राहु-बद	6
बुध	10	केतु-बद	9
गुरू	12		

वर्ष पूर्ण– 50
(18:12:2022 - 17:12:2023)

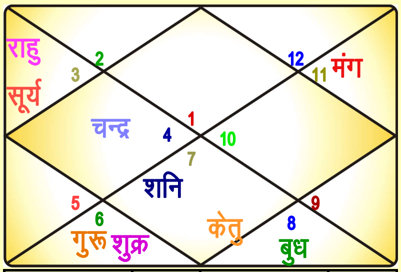

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	3	शुक्र-बद	6
चन्द्रमा-बद	4	शनि-बद	7
मंगल-बद	11	राहु	3
बुध-बद	8	केतु	7
गुरू	6		

वर्ष पूर्ण– 51
(18:12:2023 - 17:12:2024)

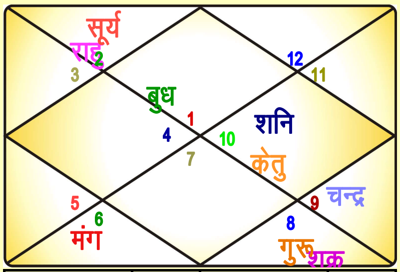

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	2	शुक्र	8
चन्द्रमा	9	शनि	10
मंगल-बद	6	राहु-बद	2
बुध-बद	1	केतु	10
गुरू-बद	8		

वर्ष पूर्ण– 52
(18:12:2024 - 17:12:2025)

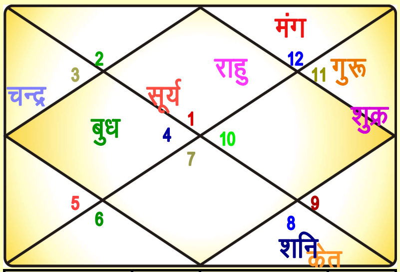

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	1	शुक्र	11
चन्द्रमा	3	शनि-बद	8
मंगल-बद	12	राहु-बद	1
बुध-बद	4	केतु-बद	8
गुरू	11		

वर्ष पूर्ण– 53
(18:12:2025 - 17:12:2026)

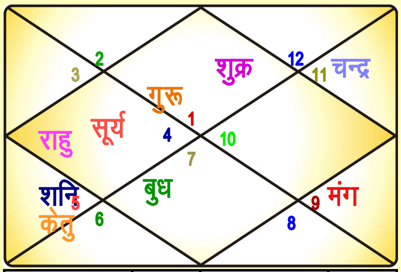

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	4	शुक्र	1
चन्द्रमा	11	शनि-बद	5
मंगल-बद	9	राहु-बद	4
बुध	7	केतु-बद	5
गुरू	1		

वर्ष पूर्ण– 54
(18:12:2026 - 17:12:2027)

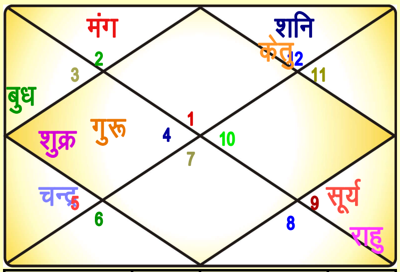

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	9	शुक्र	4
चन्द्रमा-बद	5	शनि	12
मंगल-बद	2	राहु-बद	9
बुध-बद	3	केतु-बद	12
गुरू-बद	4		

लाल किताब वर्षफल

वर्ष पूर्ण– 55
(18:12:2027 - 17:12:2028)

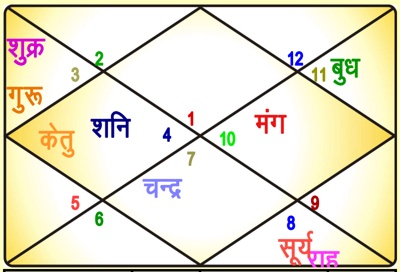

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	8	शुक्र-बद	3
चन्द्रमा	7	शनि-बद	4
मंगल-बद	10	राहु-बद	8
बुध	11	केतु-बद	4
गुरू-बद	3		

वर्ष पूर्ण– 56
(18:12:2028 - 17:12:2029)

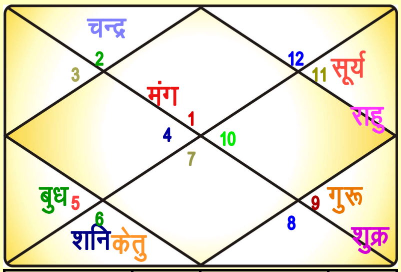

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	11	शुक्र	9
चन्द्रमा-बद	2	शनि-बद	6
मंगल	1	राहु-बद	11
बुध	5	केतु-बद	6
गुरू	9		

वर्ष पूर्ण– 57
(18:12:2029 - 17:12:2030)

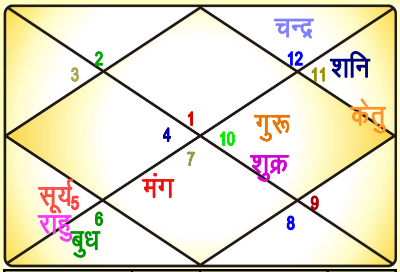

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	5	शुक्र-बद	10
चन्द्रमा-बद	12	शनि-बद	11
मंगल	7	राहु-बद	5
बुध	6	केतु-बद	11
गुरू-बद	10		

वर्ष पूर्ण– 58
(18:12:2030 - 17:12:2031)

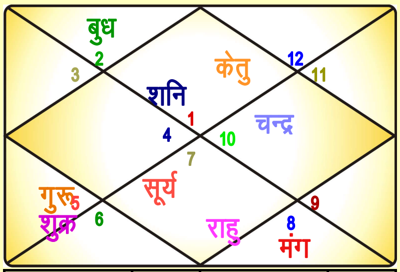

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	7	शुक्र-बद	5
चन्द्रमा-बद	10	शनि-बद	1
मंगल-बद	8	राहु-बद	7
बुध	2	केतु-बद	1
गुरू	5		

वर्ष पूर्ण– 59
(18:12:2031 - 17:12:2032)

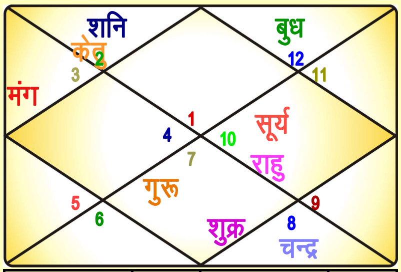

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	10	शुक्र-बद	7
चन्द्रमा-बद	8	शनि	2
मंगल-बद	3	राहु	10
बुध-बद	12	केतु-बद	2
गुरू-बद	7		

वर्ष पूर्ण– 60
(18:12:2032 - 17:12:2033)

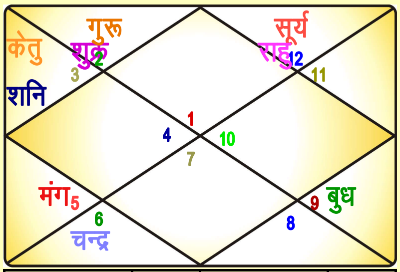

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	12	शुक्र-बद	2
चन्द्रमा	6	शनि	3
मंगल-बद	5	राहु	12
बुध-बद	9	केतु	3
गुरू-बद	2		

वर्ष पूर्ण– 61
(18:12:2033 - 17:12:2034)

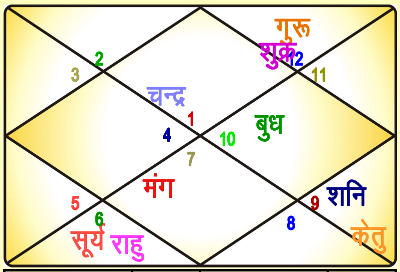

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	6	शुक्र-बद	12
चन्द्रमा-बद	1	शनि	9
मंगल	7	राहु-बद	6
बुध	10	केतु	9
गुरू-बद	12		

वर्ष पूर्ण– 62
(18:12:2034 - 17:12:2035)

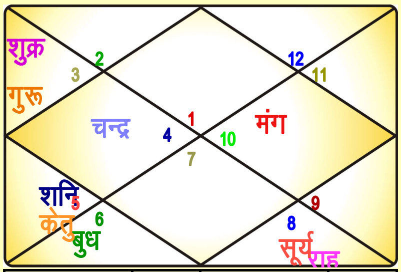

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	8	शुक्र-बद	3
चन्द्रमा	4	शनि	5
मंगल-बद	10	राहु-बद	8
बुध	6	केतु-बद	5
गुरू-बद	3		

वर्ष पूर्ण– 63
(18:12:2035 - 17:12:2036)

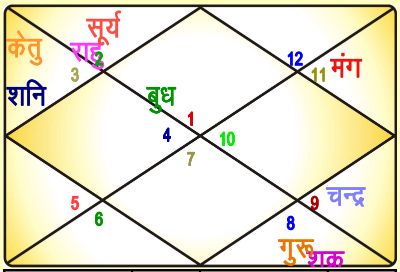

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	2	शुक्र-बद	8
चन्द्रमा	9	शनि	3
मंगल	11	राहु-बद	2
बुध-बद	1	केतु	3
गुरू-बद	8		

लाल किताब वर्षफल

वर्ष पूर्ण– 64
(18:12:2036 - 17:12:2037)

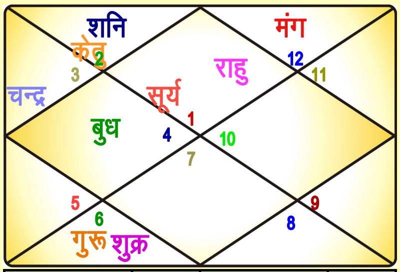

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	1	शुक्र-बद	6
चन्द्रमा	3	शनि	2
मंगल-बद	12	राहु	1
बुध	4	केतु	2
गुरू-बद	6		

वर्ष पूर्ण– 65
(18:12:2037 - 17:12:2038)

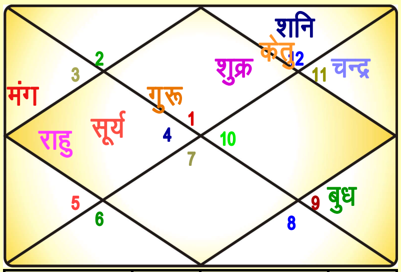

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	4	शुक्र	1
चन्द्रमा	11	शनि	12
मंगल-बद	3	राहु-बद	4
बुध-बद	9	केतु-बद	12
गुरू	1		

वर्ष पूर्ण– 66
(18:12:2038 - 17:12:2039)

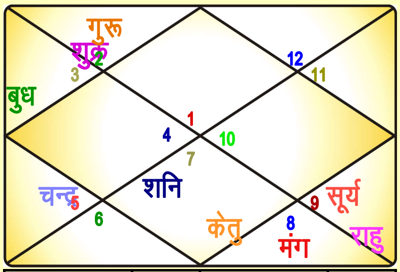

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	9	शुक्र-बद	2
चन्द्रमा	5	शनि-बद	7
मंगल-बद	8	राहु-बद	9
बुध	3	केतु-बद	7
गुरू-बद	2		

वर्ष पूर्ण– 67
(18:12:2039 - 17:12:2040)

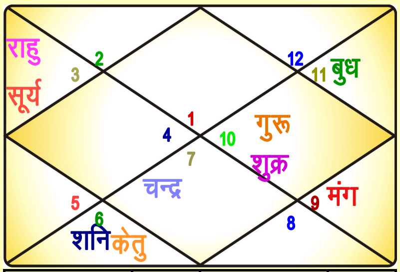

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	3	शुक्र	10
चन्द्रमा	7	शनि	6
मंगल	9	राहु-बद	3
बुध-बद	11	केतु	6
गुरू	10		

वर्ष पूर्ण– 68
(18:12:2040 - 17:12:2041)

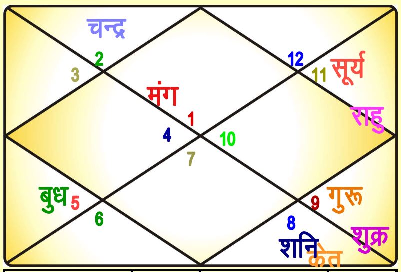

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	11	शुक्र	9
चन्द्रमा-बद	2	शनि-बद	8
मंगल-बद	1	राहु	11
बुध	5	केतु	8
गुरू	9		

वर्ष पूर्ण– 69
(18:12:2041 - 17:12:2042)

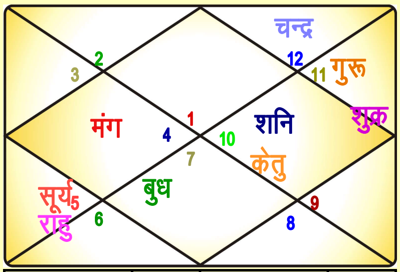

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	5	शुक्र	11
चन्द्रमा-बद	12	शनि-बद	10
मंगल-बद	4	राहु-बद	5
बुध-बद	7	केतु-बद	10
गुरू	11		

वर्ष पूर्ण– 70
(18:12:2042 - 17:12:2043)

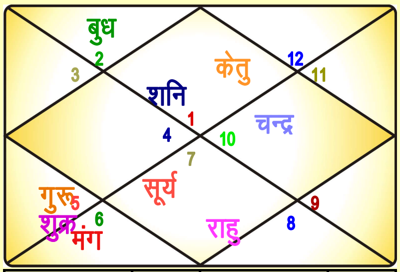

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	7	शुक्र-बद	5
चन्द्रमा-बद	10	शनि-बद	1
मंगल-बद	6	राहु-बद	7
बुध	2	केतु	1
गुरू	5		

वर्ष पूर्ण– 71
(18:12:2043 - 17:12:2044)

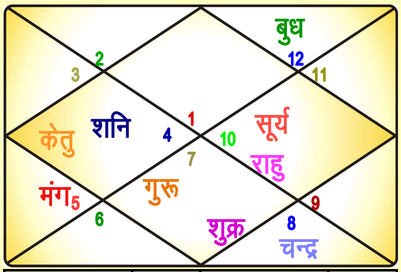

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	10	शुक्र-बद	7
चन्द्रमा-बद	8	शनि-बद	4
मंगल-बद	5	राहु-बद	10
बुध-बद	12	केतु	4
गुरू-बद	7		

वर्ष पूर्ण– 72
(18:12:2044 - 17:12:2045)

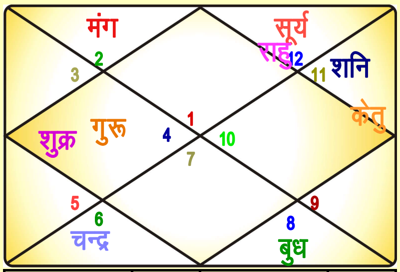

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	12	शुक्र-बद	4
चन्द्रमा	6	शनि-बद	11
मंगल	2	राहु	12
बुध	8	केतु-बद	11
गुरू-बद	4		

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia (up)

लाल किताब वर्षफल

वर्ष पूर्ण– 73
(18:12:2045 - 17:12:2046)

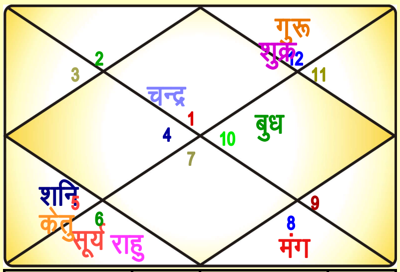

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	6	शुक्र-बद	12
चन्द्रमा-बद	1	शनि-बद	5
मंगल	8	राहु-बद	6
बुध-बद	10	केतु-बद	5
गुरू	12		

वर्ष पूर्ण– 74
(18:12:2046 - 17:12:2047)

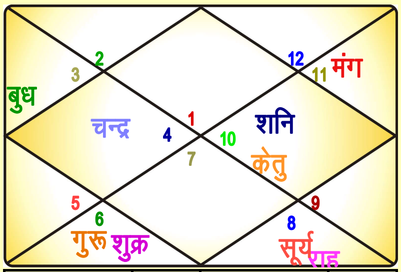

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	8	शुक्र-बद	6
चन्द्रमा-बद	4	शनि-बद	10
मंगल-बद	11	राहु-बद	8
बुध-बद	3	केतु	10
गुरू	6		

वर्ष पूर्ण– 75
(18:12:2047 - 17:12:2048)

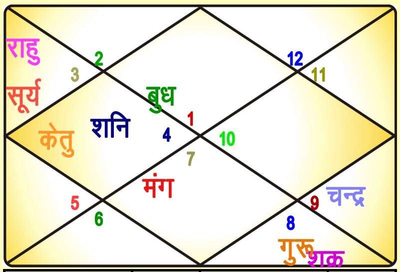

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	3	शुक्र-बद	8
चन्द्रमा-बद	9	शनि	4
मंगल-बद	7	राहु	3
बुध-बद	1	केतु	4
गुरू-बद	8		

वर्ष पूर्ण– 76
(18:12:2048 - 17:12:2049)

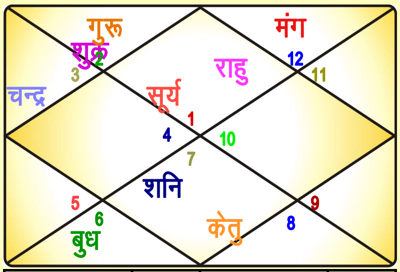

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	1	शुक्र	2
चन्द्रमा	3	शनि-बद	7
मंगल-बद	12	राहु	1
बुध-बद	6	केतु-बद	7
गुरू-बद	2		

वर्ष पूर्ण– 77
(18:12:2049 - 17:12:2050)

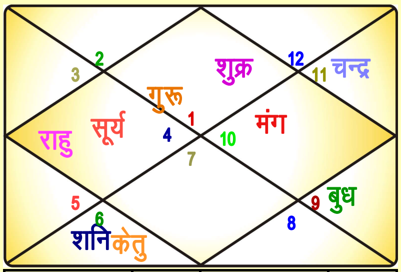

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	4	शुक्र	1
चन्द्रमा-बद	11	शनि-बद	6
मंगल	10	राहु-बद	4
बुध-बद	9	केतु-बद	6
गुरू	1		

वर्ष पूर्ण– 78
(18:12:2050 - 17:12:2051)

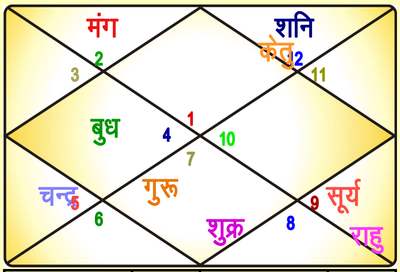

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	9	शुक्र-बद	7
चन्द्रमा-बद	5	शनि-बद	12
मंगल-बद	2	राहु-बद	9
बुध	4	केतु-बद	12
गुरू-बद	7		

वर्ष पूर्ण– 79
(18:12:2051 - 17:12:2052)

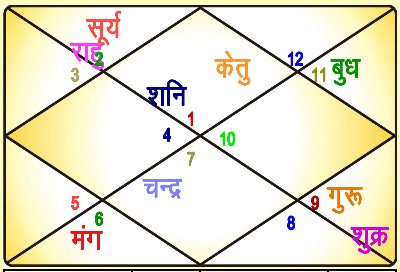

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	2	शुक्र-बद	9
चन्द्रमा-बद	7	शनि-बद	1
मंगल-बद	6	राहु-बद	2
बुध-बद	11	केतु	1
गुरू	9		

वर्ष पूर्ण– 80
(18:12:2052 - 17:12:2053)

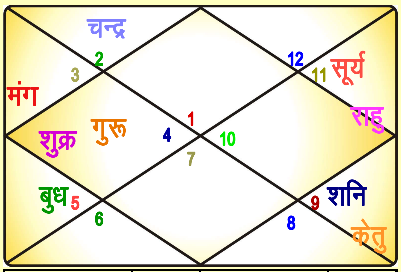

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	11	शुक्र-बद	4
चन्द्रमा-बद	2	शनि-बद	9
मंगल-बद	3	राहु	11
बुध	5	केतु-बद	9
गुरू-बद	4		

वर्ष पूर्ण– 81
(18:12:2053 - 17:12:2054)

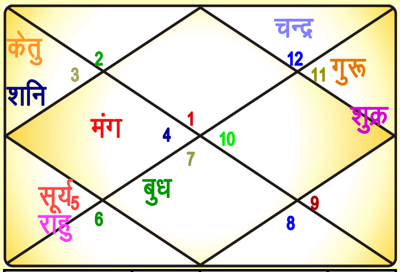

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	5	शुक्र	11
चन्द्रमा-बद	12	शनि-बद	3
मंगल-बद	4	राहु-बद	5
बुध-बद	7	केतु-बद	3
गुरू	11		

सर्वाष्टक वर्ग से निष्कर्ष

सर्वाष्टक वर्ग

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	2	1	6	4	3	4	3	5	4	2	3	2	39
♃ बृहस्पति	3	5	3	6	4	4	7	5	3	5	6	5	56
♂ मगंल	4	2	4	3	1	4	3	5	3	3	5	2	39
☉ सूर्य	3	2	6	7	3	4	3	4	5	4	4	3	48
♀ शुक्र	5	4	1	4	5	7	6	5	3	5	3	4	52
☿ बुध	7	3	4	5	4	4	5	5	5	4	5	3	54
☽ चन्द्रमा	3	4	5	5	4	5	4	6	2	3	5	3	49
योग	27	21	29	34	24	32	31	35	25	26	31	22	337
AC लग्न	5	3	6	3	4	6	2	6	1	3	7	3	49
☊ राहु	4	5	6	2	4	2	3	3	5	4	2	4	44

तत्व चक

स0 व0 बिन्दु	पूर्णाकं	प्राप्ति	शुभ दिशा
अग्नि त्रिकोन	84.25	76	पूर्व
पृथ्वी त्रिकोन	84.25	79	दक्षिण
वायु त्रिकोन	84.25	91	पश्चिम
जल त्रिकोन	84.25	91	उत्तर

)विशेष - सबसे ज्यादा बिन्दु सबसे शुभ दिशा को इंगित करता है (पू, द, प और उ)।अगर दोनों भागों के बिन्दुओं की संख्या बराबर या आसपास हैं, तो शुभ दिशा (उ पू, दपू, उ प और दप) होगी।)

भुवन चक

स0 व0 बिन्दु	पूर्णाकं	प्राप्ति	निष्कर्ष
केन्द्र भाव–राशि	112.33	108	मेहनत और लगन
पनफरा भाव–राशि	112.33	118	आर्थिक स्थिति
अपक्लिम् भाव–राशि	112.33	111	वित्त हानि

दिशा चक

भाग	स0 व0 बिन्दु	पूर्णाकं	प्राप्ति	निष्कर्ष
बन्धुक	भाग्य त्रिकोन	84.25	79	बन्धु –बान्धवो से सहायता
सेवक	कर्म त्रिकोन	84.25	91	नौकरी से अर्जन
पोषक	लाभ त्रिकोन	84.25	91	लाभ और धन
घातक	व्यय त्रिकोन	84.25	76	दुर्भाग्य और हानि

लाल किताब वर्षफल

वर्ष पूर्ण– 82

(18:12:2054 - 17:12:2055)

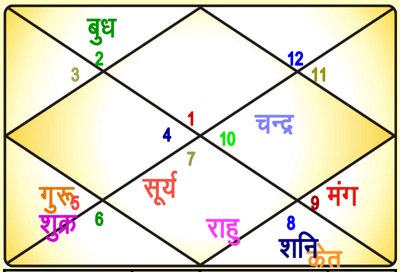

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	7	शुक्र-बद	5
चन्द्रमा-बद	10	शनि-बद	8
मंगल	9	राहु-बद	7
बुध-बद	2	केतु	8
गुरू	5		

वर्ष पूर्ण– 83

(18:12:2055 - 17:12:2056)

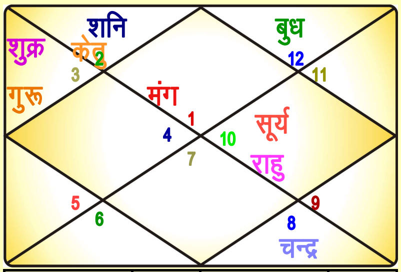

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	10	शुक्र-बद	3
चन्द्रमा-बद	8	शनि	2
मंगल-बद	1	राहु	10
बुध	12	केतु-बद	2
गुरू-बद	3		

वर्ष पूर्ण– 84

(18:12:2056 - 17:12:2057)

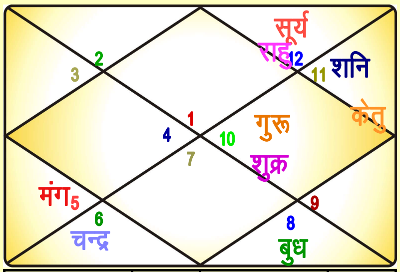

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	12	शुक्र-बद	10
चन्द्रमा	6	शनि-बद	11
मंगल-बद	5	राहु	12
बुध	8	केतु-बद	11
गुरू-बद	10		

वर्ष पूर्ण– 85

(18:12:2057 - 17:12:2058)

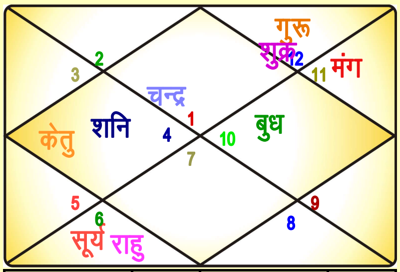

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	6	शुक्र-बद	12
चन्द्रमा-बद	1	शनि-बद	4
मंगल-बद	11	राहु-बद	6
बुध	10	केतु-बद	4
गुरू	12		

वर्ष पूर्ण– 86

(18:12:2058 - 17:12:2059)

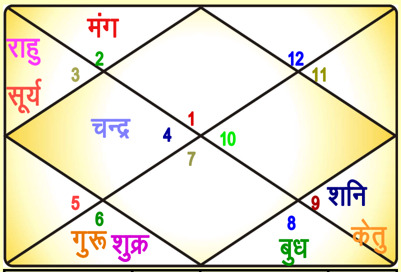

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	3	शुक्र-बद	6
चन्द्रमा	4	शनि-बद	9
मंगल-बद	2	राहु	3
बुध-बद	8	केतु-बद	9
गुरू	6		

वर्ष पूर्ण– 87

(18:12:2059 - 17:12:2060)

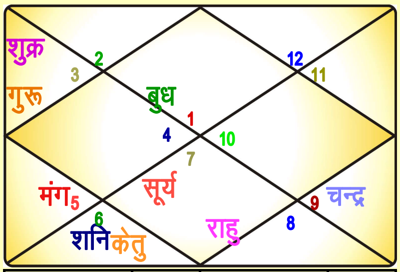

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	7	शुक्र	3
चन्द्रमा-बद	9	शनि-बद	6
मंगल	5	राहु	7
बुध	1	केतु-बद	6
गुरू	3		

वर्ष पूर्ण– 88

(18:12:2060 - 17:12:2061)

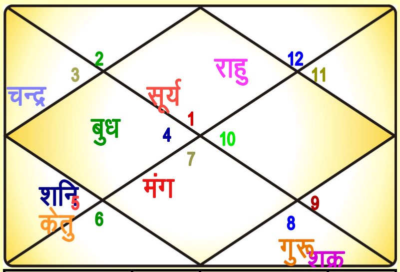

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	1	शुक्र-बद	8
चन्द्रमा	3	शनि-बद	5
मंगल	7	राहु-बद	1
बुध	4	केतु-बद	5
गुरू-बद	8		

वर्ष पूर्ण– 89

(18:12:2061 - 17:12:2062)

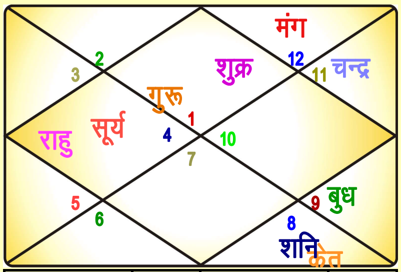

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	4	शुक्र-बद	1
चन्द्रमा	11	शनि	8
मंगल-बद	12	राहु-बद	4
बुध-बद	9	केतु	8
गुरू-बद	1		

वर्ष पूर्ण– 90

(18:12:2062 - 17:12:2063)

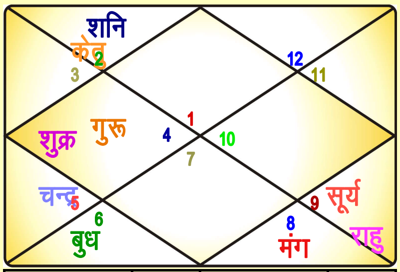

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	9	शुक्र-बद	4
चन्द्रमा-बद	5	शनि-बद	2
मंगल-बद	8	राहु-बद	9
बुध-बद	6	केतु-बद	2
गुरू-बद	4		

लाल किताब वर्षफल

वर्ष पूर्ण– 91
(18:12:2063 - 17:12:2064)

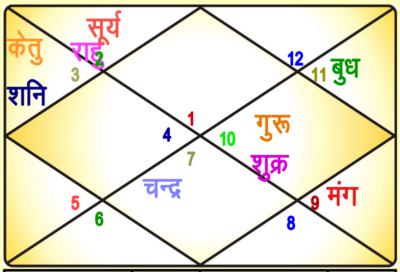

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	2	शुक्र	10
चन्द्रमा-बद	7	शनि-बद	3
मंगल	9	राहु-बद	2
बुध	11	केतु-बद	3
गुरू	10		

वर्ष पूर्ण– 92
(18:12:2064 - 17:12:2065)

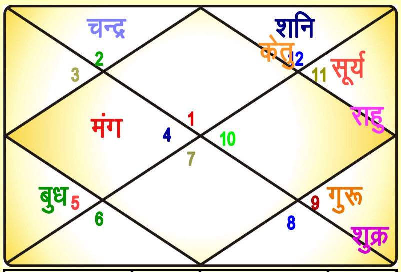

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	11	शुक्र-बद	9
चन्द्रमा-बद	2	शनि	12
मंगल-बद	4	राहु	11
बुध-बद	5	केतु-बद	12
गुरू-बद	9		

वर्ष पूर्ण– 93
(18:12:2065 - 17:12:2066)

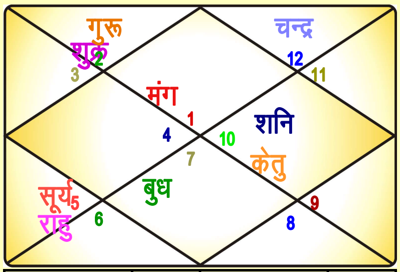

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	5	शुक्र	2
चन्द्रमा-बद	12	शनि-बद	10
मंगल	1	राहु-बद	5
बुध-बद	7	केतु-बद	10
गुरू-बद	2		

वर्ष पूर्ण– 94
(18:12:2066 - 17:12:2067)

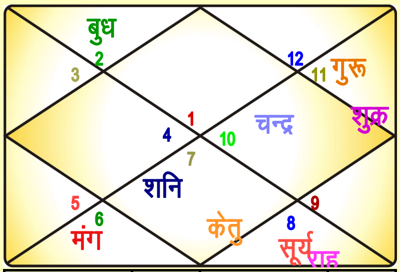

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	8	शुक्र-बद	11
चन्द्रमा	10	शनि-बद	7
मंगल	6	राहु	8
बुध-बद	2	केतु-बद	7
गुरू-बद	11		

वर्ष पूर्ण– 95
(18:12:2067 - 17:12:2068)

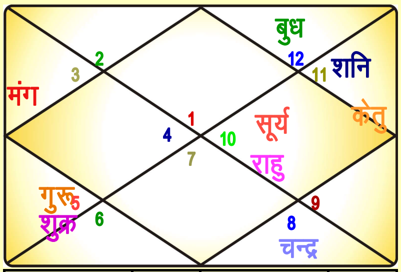

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	10	शुक्र-बद	5
चन्द्रमा-बद	8	शनि	11
मंगल-बद	3	राहु-बद	10
बुध	12	केतु-बद	11
गुरू-बद	5		

वर्ष पूर्ण– 96
(18:12:2068 - 17:12:2069)

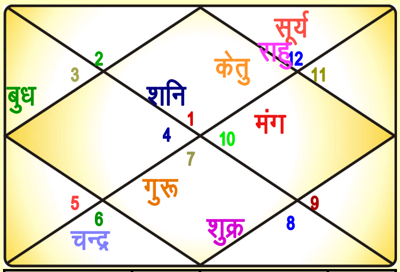

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	12	शुक्र	7
चन्द्रमा-बद	6	शनि-बद	1
मंगल	10	राहु-बद	12
बुध-बद	3	केतु	1
गुरू	7		

वर्ष पूर्ण– 97
(18:12:2069 - 17:12:2070)

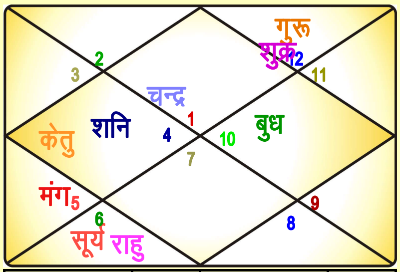

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	6	शुक्र-बद	12
चन्द्रमा-बद	1	शनि	4
मंगल-बद	5	राहु-बद	6
बुध-बद	10	केतु	4
गुरू	12		

वर्ष पूर्ण– 98
(18:12:2070 - 17:12:2071)

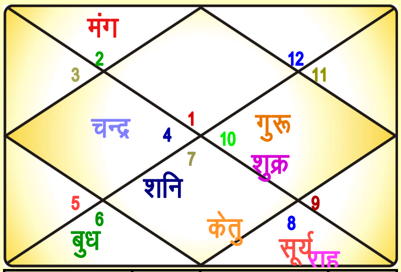

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	8	शुक्र	10
चन्द्रमा-बद	4	शनि-बद	7
मंगल	2	राहु	8
बुध	6	केतु-बद	7
गुरू	10		

वर्ष पूर्ण– 99
(18:12:2071 - 17:12:2072)

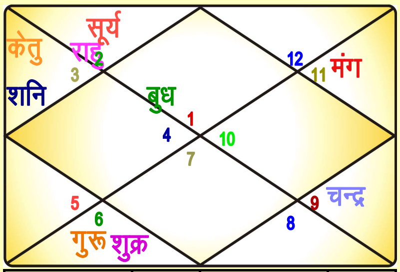

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	2	शुक्र-बद	6
चन्द्रमा	9	शनि	3
मंगल-बद	11	राहु-बद	2
बुध-बद	1	केतु	3
गुरू-बद	6		

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia (up)

लाल किताब वर्षफल

वर्ष पूर्ण– 100
(18:12:2072 - 17:12:2073)

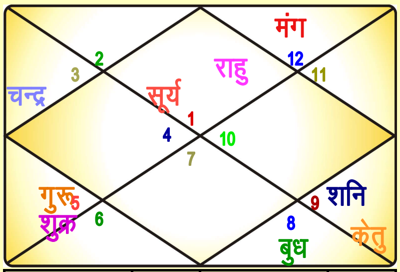

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	1	शुक्र-बद	5
चन्द्रमा	3	शनि	9
मंगल-बद	12	राहु-बद	1
बुध-बद	8	केतु-बद	9
गुरू-बद	5		

वर्ष पूर्ण– 101
(18:12:2073 - 17:12:2074)

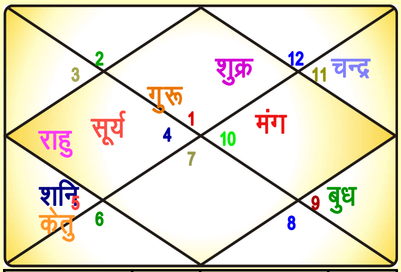

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	4	शुक्र	1
चन्द्रमा	11	शनि	5
मंगल-बद	10	राहु-बद	4
बुध-बद	9	केतु-बद	5
गुरू	1		

वर्ष पूर्ण– 102
(18:12:2074 - 17:12:2075)

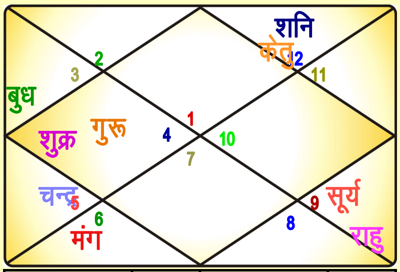

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	9	शुक्र	4
चन्द्रमा-बद	5	शनि	12
मंगल	6	राहु-बद	9
बुध-बद	3	केतु-बद	12
गुरू-बद	4		

वर्ष पूर्ण– 103
(18:12:2075 - 17:12:2076)

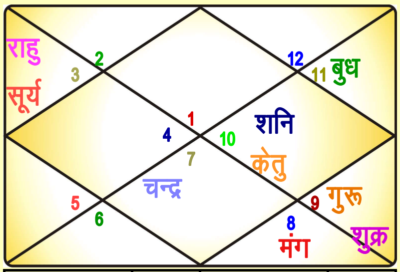

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	3	शुक्र-बद	9
चन्द्रमा	7	शनि	10
मंगल-बद	8	राहु-बद	3
बुध	11	केतु	10
गुरू-बद	9		

वर्ष पूर्ण– 104
(18:12:2076 - 17:12:2077)

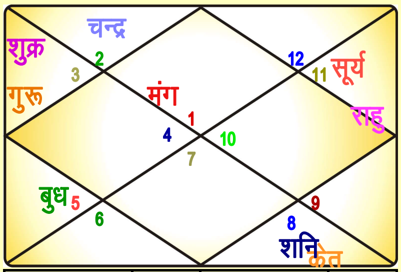

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	11	शुक्र	3
चन्द्रमा	2	शनि-बद	8
मंगल-बद	1	राहु	11
बुध	5	केतु-बद	8
गुरू	3		

वर्ष पूर्ण– 105
(18:12:2077 - 17:12:2078)

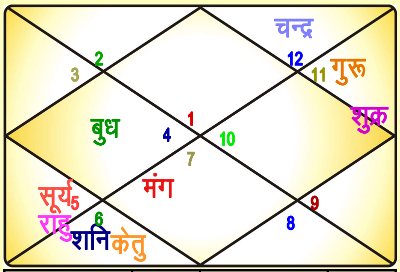

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	5	शुक्र-बद	11
चन्द्रमा-बद	12	शनि	6
मंगल	7	राहु-बद	5
बुध-बद	4	केतु	6
गुरू-बद	11		

वर्ष पूर्ण– 106
(18:12:2078 - 17:12:2079)

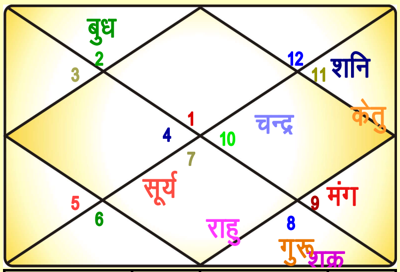

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	7	शुक्र	8
चन्द्रमा-बद	10	शनि	11
मंगल	9	राहु-बद	7
बुध-बद	2	केतु	11
गुरू-बद	8		

वर्ष पूर्ण– 107
(18:12:2079 - 17:12:2080)

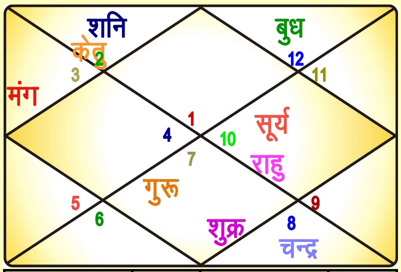

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	10	शुक्र-बद	7
चन्द्रमा-बद	8	शनि	2
मंगल-बद	3	राहु	10
बुध-बद	12	केतु-बद	2
गुरू-बद	7		

वर्ष पूर्ण– 108
(18:12:2080 - 17:12:2081)

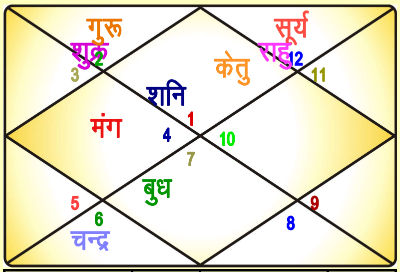

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	12	शुक्र	2
चन्द्रमा-बद	6	शनि-बद	1
मंगल-बद	4	राहु-बद	12
बुध-बद	7	केतु	1
गुरू-बद	2		

लाल किताब वर्षफल

वर्ष पूर्ण– 109
(18:12:2081 - 17:12:2082)

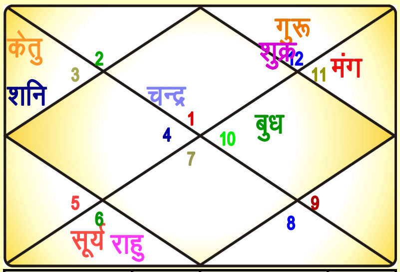

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	6	शुक्र-बद	12
चन्द्रमा-बद	1	शनि-बद	3
मंगल-बद	11	राहु-बद	6
बुध	10	केतु-बद	3
गुरू	12		

वर्ष पूर्ण– 110
(18:12:2082 - 17:12:2083)

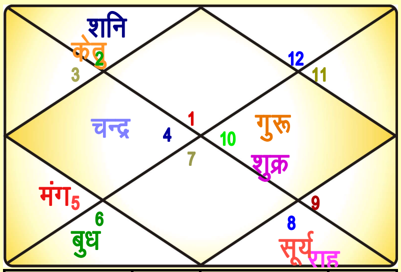

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	8	शुक्र-बद	10
चन्द्रमा-बद	4	शनि-बद	2
मंगल	5	राहु-बद	8
बुध	6	केतु	2
गुरू-बद	10		

वर्ष पूर्ण– 111
(18:12:2083 - 17:12:2084)

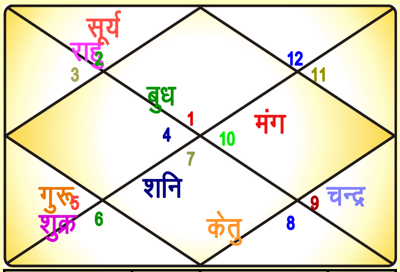

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	2	शुक्र-बद	5
चन्द्रमा	9	शनि-बद	7
मंगल-बद	10	राहु-बद	2
बुध	1	केतु-बद	7
गुरू	5		

वर्ष पूर्ण– 112
(18:12:2084 - 17:12:2085)

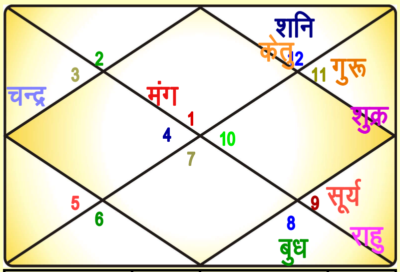

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	9	शुक्र	11
चन्द्रमा	3	शनि	12
मंगल-बद	1	राहु	9
बुध-बद	8	केतु-बद	12
गुरू	11		

वर्ष पूर्ण– 113
(18:12:2085 - 17:12:2086)

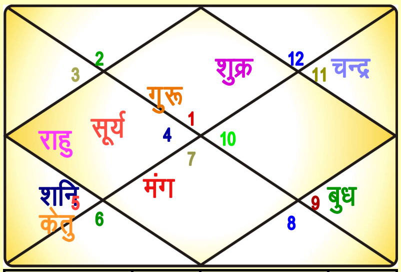

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	4	शुक्र	1
चन्द्रमा	11	शनि-बद	5
मंगल	7	राहु-बद	4
बुध-बद	9	केतु-बद	5
गुरू	1		

वर्ष पूर्ण– 114
(18:12:2086 - 17:12:2087)

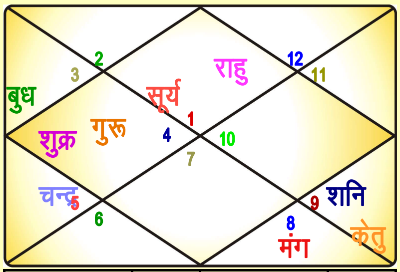

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	1	शुक्र	4
चन्द्रमा	5	शनि-बद	9
मंगल-बद	8	राहु-बद	1
बुध-बद	3	केतु-बद	9
गुरू-बद	4		

वर्ष पूर्ण– 115
(18:12:2087 - 17:12:2088)

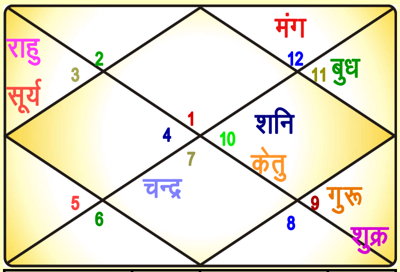

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	3	शुक्र-बद	9
चन्द्रमा	7	शनि	10
मंगल-बद	12	राहु-बद	3
बुध	11	केतु	10
गुरू-बद	9		

वर्ष पूर्ण– 116
(18:12:2088 - 17:12:2089)

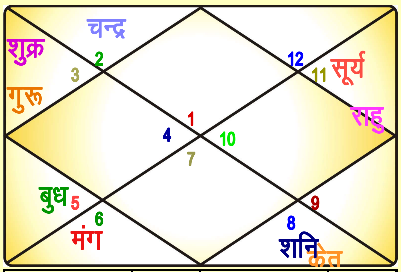

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	11	शुक्र	3
चन्द्रमा	2	शनि-बद	8
मंगल	6	राहु-बद	11
बुध	5	केतु-बद	8
गुरू	3		

वर्ष पूर्ण– 117
(18:12:2089 - 17:12:2090)

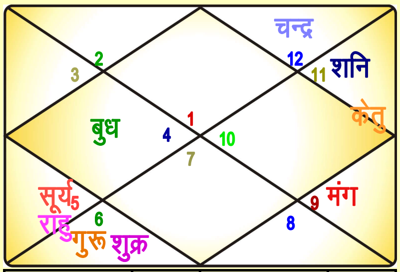

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	5	शुक्र-बद	6
चन्द्रमा	12	शनि-बद	11
मंगल-बद	9	राहु-बद	5
बुध-बद	4	केतु-बद	11
गुरू	6		

लाल किताब वर्षफल

वर्ष पूर्ण– 118
(18:12:2090 - 17:12:2091)

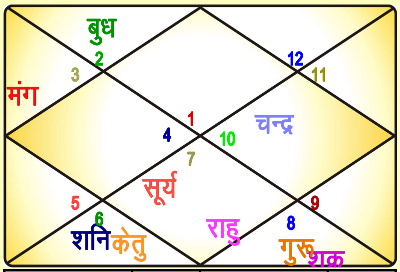

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	7	शुक्र-बद	8
चन्द्रमा-बद	10	शनि	6
मंगल-बद	3	राहु-बद	7
बुध-बद	2	केतु	6
गुरू-बद	8		

वर्ष पूर्ण– 119
(18:12:2091 - 17:12:2092)

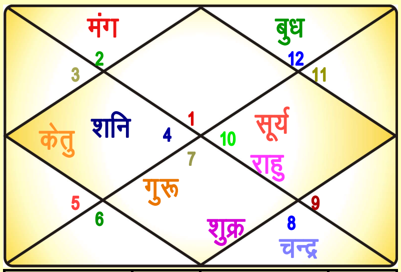

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	10	शुक्र-बद	7
चन्द्रमा-बद	8	शनि-बद	4
मंगल	2	राहु	10
बुध-बद	12	केतु	4
गुरू-बद	7		

वर्ष पूर्ण– 120
(18:12:2092 - 17:12:2093)

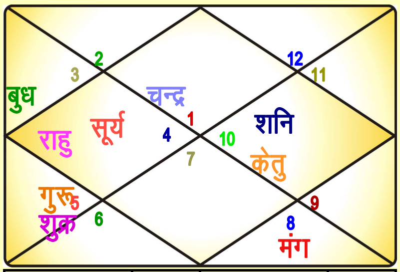

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	4	शुक्र-बद	5
चन्द्रमा-बद	1	शनि-बद	10
मंगल-बद	8	राहु	4
बुध-बद	3	केतु-बद	10
गुरू	5		

Sample

वैदिक ज्योतिष कुण्डली

Ramesh Parbhakar

347/7 Red Rose Building

Shiv Mohalla Sangam Market

Ladwa, Kurukshtra- 136132

Contact - 9812560311, 9466960753

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia (up)

ग्रह स्थिति

ग्रह		राशि		राशि	डिग्री	नक्षत्र – चरन	न0 पति	सप्तकारक	विशेष	विशेष
AC	लग्न		कन्या	बुध	28:15:29	चित्रा.2	मंगल	...	...	...
	सूर्य		धनु	गुरू	02:15:49	मूला.1	केतु	दारा	मित्र के भाव में	ग्रसित
	चन्द्रमा		कन्या	बुध	16:00:57	हस्ता.2	चन्द्रमा	भ्रात्रि	शत्रु के भाव में	--
	मंगल		मेष	मंगल	04:42:18	अश्विनी.2	केतु	ज्ञाति	मूलत्रिकोन	--
	बुध		वृश्चिक	मंगल	19:51:24	ज्येष्ठा.1	बुध	आत्म	शत्रु के भाव में	--
	गुरू		मकर	शनि	17:56:39	श्रवण.3	चन्द्रमा	अमात्य	तटस्थ भाव में	शुभ ग्रह के साथ
	शुक्र		मकर	शनि	13:00:16	श्रवण.1	चन्द्रमा	मात्रि	मित्र के भाव में	शुभ ग्रह के साथ
	शनि व		मिथुन	बुध	08:12:33	अरिद्रा.1	राहु	अपत्या	तटस्थ भाव में	ग्रसित
	राहु व		धनु	गुरू	05:10:35	मूला.2	केतु	...	मित्र के भाव में	दुष्ट ग्रह के साथ
	केतु व		मिथुन	बुध	05:10:35	मृगशिर.4	मंगल	...	तटस्थ भाव में	दुष्ट ग्रह के साथ
	हर्षल		तुला	शुक्र	03:20:59	चित्रा.4	मंगल	...	--	--
	नेपच्यून		वृश्चिक	मंगल	14:20:41	अनुराधा.4	शनि	...	--	शुभ ग्रह के साथ
	प्लूटो		कन्या	बुध	13:11:14	हस्ता.1	चन्द्रमा	...	--	दुष्ट ग्रह के साथ

नवांश कुण्डली

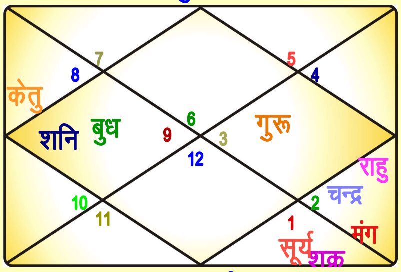

लग्न कुण्डली

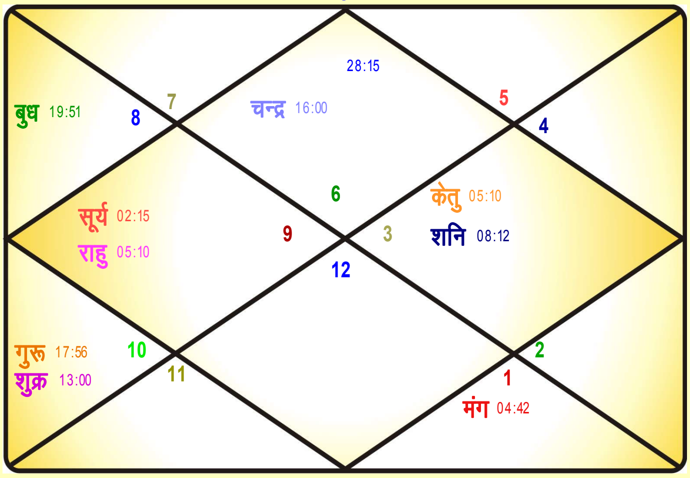

चन्द्र कुण्डली

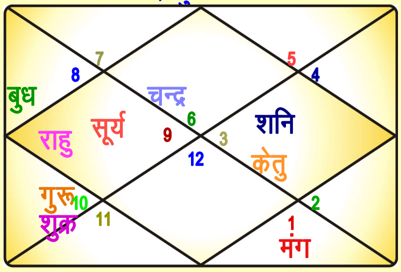

ग्रह से ग्रह और ग्रह से लग्न के बीच की दूरी

	लग्न	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्षल	नेपच्यून	प्लूटो
लग्न	---	64	348	186	52	110	105	250	67	247	5	46	345
सूर्य	296	---	284	122	348	46	41	186	3	183	301	342	281
चन्द्रमा	12	76	---	199	64	122	117	262	79	259	17	58	357
मंगल	174	238	161	---	225	283	278	64	240	60	179	220	158
बुध	308	12	296	135	---	58	53	198	15	195	313	354	293
गुरू	250	314	238	77	302	---	355	140	317	137	255	296	235
शुक्र	255	319	243	82	307	5	---	145	322	142	260	301	240
शनि	110	174	98	296	162	220	215	---	177	357	115	156	95
राहु	293	357	281	120	345	43	38	183	---	180	298	339	278
केतु	113	177	101	300	165	223	218	3	180	---	118	159	98
हर्षल	355	59	343	181	47	105	100	245	62	242	---	41	340
नेपच्यून	314	18	302	140	6	64	59	204	21	201	319	---	299
प्लूटो	15	79	3	202	67	125	120	265	82	262	20	61	---

0,1,359 कन्जक्शॅन	59,60,61,299,300,301 सेक्सटाइल	89,90,91,269,270,271 स्कवायर	
119,120,121,239,240,241 ट्राइन	149,150,151,209,210,211 क्वीनकक्सं	179,180,181 अपोजीसन	

VBVCB CVBVCB VCBVCBCV CVBVCB

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia (up)

भाव स्फूट और कुण्डली

भाव सख्या	भाव मध्य		भाव विस्तार (आरम्भ—अन्त)			
I	कन्या	028:15:29	कन्या	13:22:19	तुला	13:22:19
II	तुला	028:29:08	तुला	13:22:19	वृश्चिक	13:35:58
III	वृश्चिक	028:42:47	वृश्चिक	13:35:58	धनु	13:49:37
IV	धनु	028:56:27	धनु	13:49:37	मकर	13:49:37
V	मकर	028:42:47	मकर	13:49:37	कुम्भ	13:35:58
VI	कुम्भ	028:29:08	कुम्भ	13:35:58	मीन	13:22:19
VII	मीन	028:15:29	मीन	13:22:19	मेष	13:22:19
VIII	मेष	028:29:08	मेष	13:22:19	वृष	13:35:58
IX	वृष	028:42:47	वृष	13:35:58	मिथुन	13:49:37
X	मिथुन	028:56:27	मिथुन	13:49:37	कर्क	13:49:37
XI	कर्क	028:42:47	कर्क	13:49:37	सिहं	13:35:58
XII	सिहं	028:29:08	सिहं	13:35:58	कन्या	13:22:19

लग्न कुण्डली

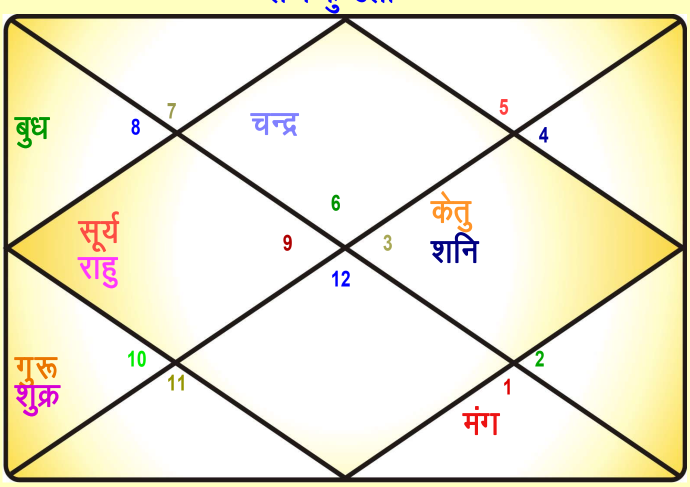

भाव कुण्डली

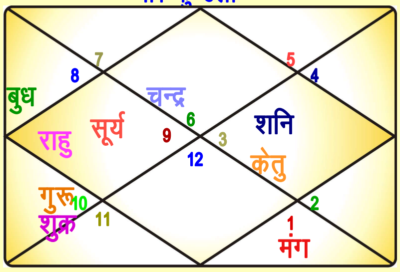

भाव चलित कुण्डली

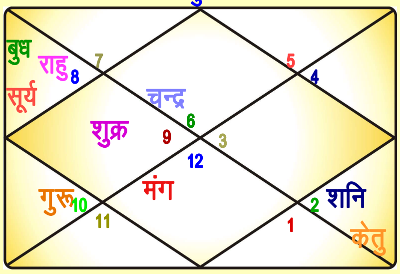

ग्रह से भाव (भाव मध्य) के बीच की दूरी

	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्षल	नेपच्यून	प्लूटो
लग्न	64	348	186	52	110	105	250	67	247	5	46	345
दूसरा भाव	34	318	156	21	79	75	220	37	217	335	16	315
तीसरा भाव	4	287	126	351	49	44	189	6	186	305	346	284
नादिर	333	257	96	321	19	14	159	336	156	274	315	254
पॉचवा भाव	304	227	66	291	349	344	129	306	126	245	286	224
छठवा भाव	274	198	36	261	319	315	100	277	97	215	256	195
सातॅवा भाव	244	168	6	232	290	285	70	247	67	185	226	165
आठवा भाव	214	138	336	201	259	255	40	217	37	155	196	135
नवा भाव	184	107	306	171	229	224	9	186	6	125	166	104
एम सी	153	77	276	141	199	194	339	156	336	94	135	74
ग्यारहवा भाव	124	47	246	111	169	164	309	126	306	65	106	44
बारहवा भाव	94	18	216	81	139	135	280	97	277	35	76	15

0,1,359	0,१,३५९ कन्जक्शॅन	59,60,61,299,300,301	सेक्सटाइल	89,90,91,269,270,271	स्कवायर
119,120,121,239,240,241	ट्राइन	149,150,151,209,210,211	क्वीनकक्सं	179,180,181	अपोजीसन

VBVCB CVBVCB VCBVCBCV CVBVCB

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia (up)

ग्रह मैत्रि चक्र

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
☉ सूर्य	....	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
☽ चन्द्रमा	मित्र	....	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
♂ मंगल	मित्र	मित्र	....	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
☿ बुध	मित्र	शत्रु	सम	....	सम	मित्र	सम	सम	सम
♃ गुरू	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	....	शत्रु	सम	मित्र	सम
♀ शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	....	मित्र	मित्र	मित्र
♄ शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	....	मित्र	मित्र
☊ राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	मित्र	....	सम
☋ केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	मित्र	सम	....

तत्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
☉ सूर्य	....	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
☽ चन्द्रमा	मित्र	....	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र
♂ मंगल	शत्रु	शत्रु	....	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
☿ बुध	मित्र	मित्र	शत्रु	....	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
♃ गुरू	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	....	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
♀ शुक्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	....	शत्रु	मित्र	शत्रु
♄ शनि	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	....	शत्रु	शत्रु
☊ राहु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	....	शत्रु
☋ केतु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	....

पचंधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
☉ सूर्य	....	अधिमित्र	सम	मित्र	अधिमित्र	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु
☽ चन्द्रमा	अधिमित्र	....	शत्रु	अधिमित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम
♂ मंगल	सम	सम	....	अधिशत्रु	अधिमित्र	मित्र	मित्र	अधिशत्रु	अधिमित्र
☿ बुध	अधिमित्र	सम	शत्रु	....	मित्र	अधिमित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
♃ गुरू	अधिमित्र	सम	अधिमित्र	सम	....	अधिशत्रु	शत्रु	अधिमित्र	शत्रु
♀ शुक्र	सम	अधिशत्रु	मित्र	अधिमित्र	शत्रु	....	सम	अधिमित्र	सम
♄ शनि	अधिशत्रु	सम	सम	सम	शत्रु	सम	....	सम	सम
☊ राहु	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	मित्र	अधिमित्र	अधिमित्र	सम	....	शत्रु
☋ केतु	अधिशत्रु	सम	अधिमित्र	शत्रु	शत्रु	सम	सम	शत्रु	....

षोडश वर्ग

लग्न(जन्म) कुण्डली

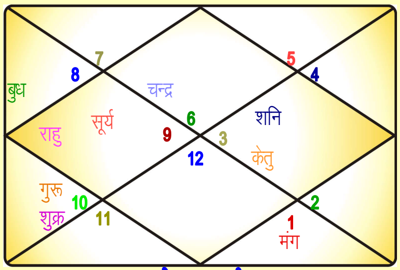

होरा कुण्डली

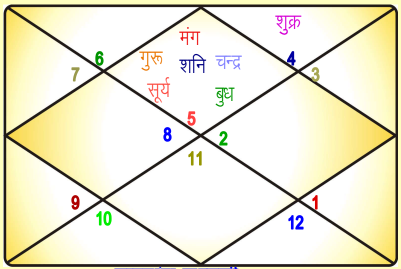

द्रेष्काण कुण्डली

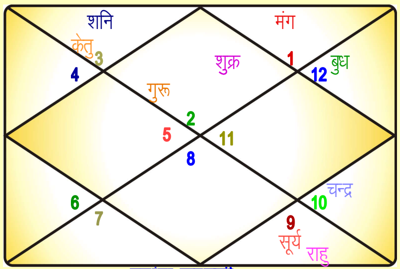

चतुर्थांश कुण्डली

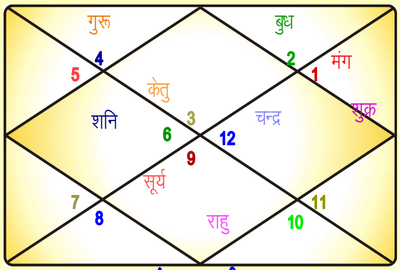

सप्तमांश कुण्डली

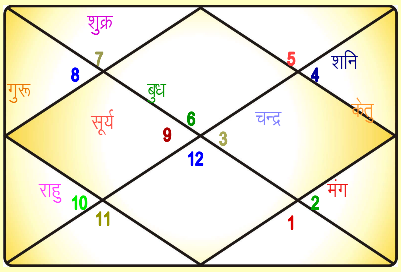

नवांश कुण्डली

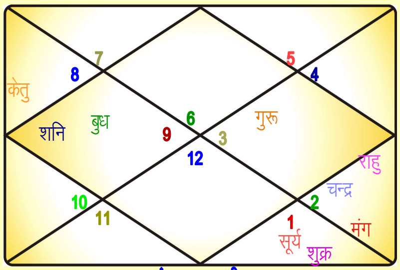

दशमांश कुण्डली

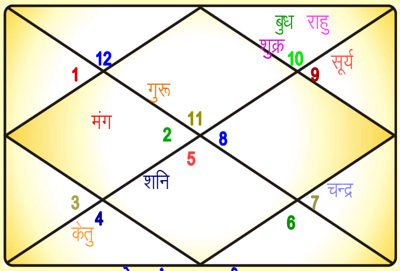

D1	मुख्य कुण्डली, सभी मुद्दों के लिए
D2	धन दौलत के लिए
D3	सहोदरों का जीवन और स्वास्थ्य
D4	भाग्य और हियाशी मकान
D7	संतान और उनकी संतान
D9	जीवनसाथी और उनका स्वास्थ्य
D10	कारोबार और किसी भी कार्य में सफलता
D12	माता-पिता का जीवन और स्वास्थ्य
D16	वाहन से संबंधित बातें
D20	अध्यात्मिक रूझान
D24	शिक्षा, ज्ञान और समझ
D27	ताकत और दुर्बलता
D30	दरिद्रता, कठिनाईयां और दुर्गति
D40	शुभ-अशुभ घटनाएं
D45	सभी मुद्दों के लिए
D60	सभी मुद्दों के लिए

द्वादशांश कुण्डली

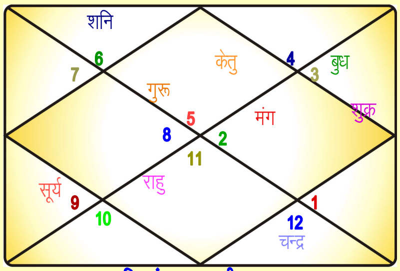

षोडशांश कुण्डली

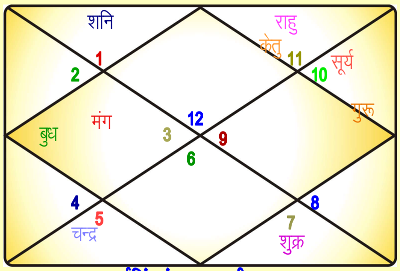

विंशांश कुण्डली

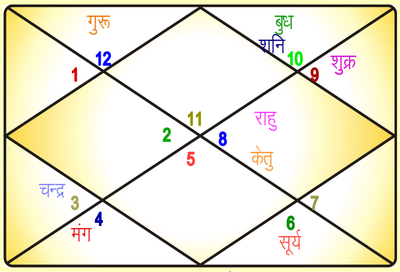

चतुर्विंशांश कुण्डली

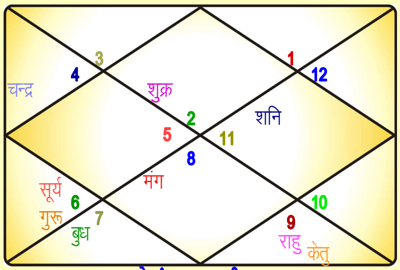

सप्तविंशांश कुण्डली

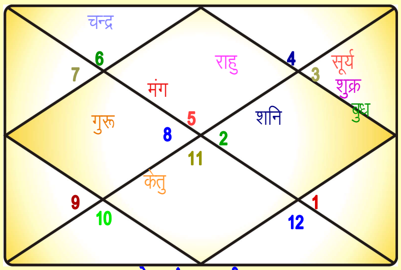

त्रिंशांश कुण्डली

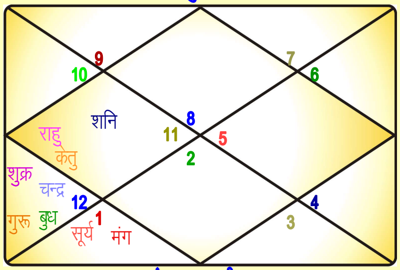

खवेदांश कुण्डली

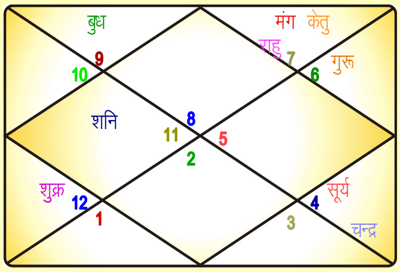

अक्षवेदांश कुण्डली

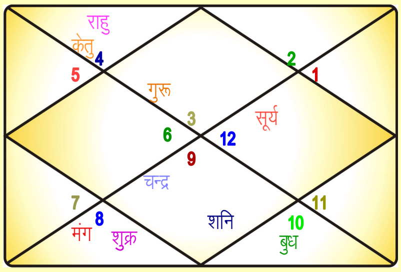

षष्ठांश कुण्डली

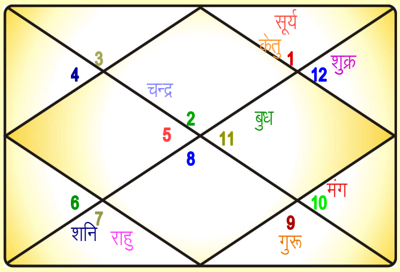

VBVCB CVBVCB VCBVCBCV CVBVCB

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia (up)

षड्बल

बल का नाम	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
उच्च बल	17.42	15.66	37.77	38.38	04.31	35.33	16.07
सप्त वर्ग बल	135.00	93.75	157.50	131.25	110.63	110.63	65.63
युग्म अयुग्म बल	30.00	30.00	15.00	15.00	15.00	15.00	30.00
केन्द्रादी बल	60.00	60.00	30.00	15.00	30.00	30.00	60.00
द्रेक्कन बल	15.00	00.00	15.00	15.00	00.00	00.00	00.00
स्थान बल	**257.42**	**199.41**	**255.27**	**214.63**	**159.94**	**190.96**	**171.69**
वांछित स्थान बल	165	133	96	165	165	133	96
वांछित अंश	156.01	149.93	265.90	130.08	96.93	143.58	178.85
दिग बल	**08.89**	**25.69**	**31.92**	**42.80**	**23.44**	**55.31**	**36.68**
वांछित दिग बल	35	50	30	35	35	50	30
वांछित अंश	25.41	51.38	106.40	122.29	66.97	110.62	122.28
नतोन्नत बल	09.58	50.42	50.42	09.58	00.00	09.58	50.42
पक्ष बल	34.58	25.42	34.58	25.42	25.42	25.42	34.58
त्रिभाग बल	00.00	00.00	00.00	00.00	60.00	60.00	00.00
वर्ष बल	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	15.00
मास बल	00.00	00.00	00.00	30.00	00.00	00.00	00.00
दिन बल	00.00	00.00	45.00	00.00	00.00	00.00	00.00
होरा बल	60.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00
अयन बल	00.30	34.23	43.09	57.64	07.83	06.24	00.12
युद्ध बल	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00
काल बल	**104.47**	**110.06**	**173.09**	**122.64**	**93.25**	**101.24**	**100.12**
वांछित काल बल	112	100	67	112	112	100	67
वांछित अंश	93.28	110.06	258.35	109.50	83.26	101.24	149.44
चेष्टा बल	**00.30**	**25.42**	**07.50**	**30.00**	**45.00**	**45.00**	**60.00**
वांछित चेष्टा बल	50	30	40	50	50	30	40
वांछित अंश	00.60	84.72	18.75	60.00	90.00	150.00	150.00
नैसर्गिक बल	**60.00**	**51.43**	**17.14**	**25.71**	**34.29**	**42.86**	**08.57**
द्रिक बल	**-31.39**	**-02.62**	**-10.34**	**-23.64**	**-17.60**	**-19.69**	**00.23**
कुल षड्बल	**399.69**	**409.39**	**474.58**	**412.14**	**338.31**	**415.68**	**377.30**
षड्बल (रूप में)	**6.66**	**6.82**	**7.91**	**6.87**	**5.64**	**6.93**	**6.29**
न्यूनतम वांछनिय	390	360	300	420	390	330	300
वांछनिय अंश	102.48	113.72	158.19	98.13	86.75	125.96	125.77
तुलनात्मक स्थिति	**5**	**4**	**1**	**3**	**7**	**2**	**6**
इष्ट फल	**04.96**	**19.95**	**16.83**	**33.93**	**13.93**	**39.88**	**31.05**
कष्ट फल	**55.04**	**40.05**	**43.17**	**26.07**	**46.07**	**20.12**	**28.95**
दिप्ति बल	**100.00**	**25.42**	**40.81**	**26.59**	**15.23**	**52.01**	**58.02**

भावबल

भाव सँख्या	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII
भाव राशि	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
भावाधिपति बल	412.14	415.68	474.58	338.31	377.30	377.30	338.31	474.58	415.68	412.14	409.39	399.69
भाव दिग्बल	60.00	50.00	20.00	00.00	50.00	10.00	30.00	40.00	50.00	30.00	10.00	40.00
भाव दृष्टि बल	-09.32	26.29	-27.68	-21.62	-14.73	-13.15	-22.75	24.81	-23.33	-07.66	-09.70	-01.82
भाव बल का योग	**462.82**	**491.97**	**466.91**	**316.69**	**412.57**	**374.15**	**345.57**	**539.39**	**442.35**	**434.49**	**409.69**	**437.87**
भाव बल (रूप में)	**7.71**	**8.20**	**7.78**	**5.28**	**6.88**	**6.24**	**5.76**	**8.99**	**7.37**	**7.24**	**6.83**	**7.30**
तुलनात्मक स्थिति	**4**	**2**	**3**	**12**	**8**	**10**	**11**	**1**	**5**	**7**	**9**	**6**

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia (up)

भिन्न अष्टक वर्ग कुण्डली

शनि

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	4
♃ वृह0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	4
♂ मगंल	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	1	6
☉ सूर्य	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
♀ ुक्र	0	0	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	3
☿ वुध	1	0	1	1	1	1	1	0	0	0	0	0	6
☽ द्रमा	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	3
AC लग्न	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	6
योग	2	1	6	4	3	4	3	5	4	2	3	2	39

गुरू

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	4
♃ वृह0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	1	8
♂ मगंल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
☉ सूर्य	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	1	1	9
♀ ुक्र	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	1	0	6
☿ वुध	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	8
☽ द्रमा	0	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	1	5
AC लग्न	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	9
योग	3	5	3	6	4	4	7	5	3	5	6	5	56

मंगल

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	1	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	1	7
♃ वृह0	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	0	4
♂ मगंल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
☉ सूर्य	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	5
♀ ुक्र	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	4
☿ वुध	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	4
☽ द्रमा	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	3
AC लग्न	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	5
योग	4	2	4	3	1	4	3	5	3	3	5	2	39

सूर्य

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
♃ वृह0	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	0	4
♂ मगंल	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
☉ सूर्य	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	8
♀ ुक्र	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	3
☿ वुध	1	0	0	1	1	1	1	0	0	1	0	1	7
☽ द्रमा	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
AC लग्न	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	6
योग	3	2	6	7	3	4	3	4	5	4	4	3	48

शुक्र

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	1	7
♃ वृह0	0	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	0	5
♂ मगंल	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	1	6
☉ सूर्य	0	0	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	3
♀ ुक्र	1	1	0	0	1	1	1	1	0	1	1	1	9
☿ वुध	1	0	0	1	0	1	0	0	0	1	0	1	5
☽ द्रमा	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	0	9
AC लग्न	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	8
योग	5	4	1	4	5	7	6	5	3	5	3	4	52

बुध

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
♃ वृह0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	4
♂ मगंल	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
☉ सूर्य	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	5
♀ ुक्र	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	8
☿ वुध	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	1	8
☽ द्रमा	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	6
AC लग्न	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	7
योग	7	3	4	5	4	4	5	5	5	4	5	3	54

चन्द्रमा

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	4
♃ वृह0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	1	0	0	7
♂ मगंल	0	1	1	0	1	1	0	0	1	1	1	0	7
☉ सूर्य	0	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	6
♀ ुक्र	1	1	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1	7
☿ वुध	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	1	8
☽ द्रमा	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	1	6
AC लग्न	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
योग	3	4	5	5	4	5	4	6	2	3	5	3	49

लग्न

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
♃ वृह0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	9
♂ मगंल	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	5
☉ सूर्य	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	6
♀ ुक्र	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	1	1	7
☿ वुध	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7
☽ द्रमा	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	0	5
AC लग्न	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
योग	5	3	6	3	4	6	2	6	1	3	7	3	49

राहु

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	0	1	6
♃ वृह0	1	0	1	0	1	0	0	0	0	1	0	1	5
♂ मगंल	0	1	1	0	1	0	1	0	0	0	0	1	5
☉ सूर्य	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	0	7
♀ ुक्र	0	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0	4
☿ वुध	0	1	1	0	0	0	1	0	1	0	1	0	5
☽ द्रमा	1	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	7
AC लग्न	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	0	0	5
योग	4	5	6	2	4	2	3	3	5	4	2	4	44

Pag

कक्ष बल

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	7	1	4	2	5	5	4	4	3	4	4	5	48
♃ वृह0	3	4	5	3	4	3	5	8	4	3	2	1	45
♂ मगंल	5	5	4	4	3	4	4	4	4	7	8	2	54
☉ सूर्य	2	4	4	5	3	6	8	3	3	3	4	4	49
♀ ुक्र	4	5	4	2	4	5	3	6	3	3	4	4	47
☿ वुध	7	1	3	5	6	8	3	4	2	5	3	6	53
☽ द्रमा	2	2	4	8	2	2	3	6	2	2	6	2	41
AC लग्न	2	2	7	8	1	5	3	6	5	2	7	1	49
योग	32	24	35	37	28	38	33	41	26	29	38	25	386

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia (up)

ग्रह स्थिति – कृष्णमूर्ति पद्धति

ग्रह	राशि	डिग्री	नक्षत्र – चरन	न0 पति	राशि प0	उप	उपउप	उउउ स0	विशेष
लग्न	कन्या	28:21:17	चित्रा(2)	मंगल	बुध	शनि	बुध	चन्द्रमा	...
सूर्य	धनु	02:21:37	मूला(1)	केतु	गुरू	शुक्र	शनि	शुक्र	मित्र राशि
चन्द्रमा	कन्या	16:06:45	हस्ता(2)	चन्द्रमा	बुध	शनि	बुध	सूर्य	स्व नक्षत्र
मंगल	मेष	04:48:06	अश्विनी(2)	केतु	मंगल	मंगल	मंगल	बुध	स्व राशि
बुध	वृश्चिक	19:57:12	ज्येष्ठा(1)	बुध	मंगल	शुक्र	चन्द्रमा	केतु	स्व नक्षत्र
गुरू	मकर	18:02:27	श्रवण(3)	चन्द्रमा	शनि	बुध	बुध	शनि	नीच राशि
शुक्र	मकर	13:06:04	श्रवण(1)	चन्द्रमा	शनि	राहु	केतु	मंगल	मित्र राशि
शनि व	मिथुन	08:18:21	अरिद्रा(1)	राहु	बुध	राहु	सूर्य	राहु	मित्र राशि
राहु व	धनु	05:16:23	मूला(2)	केतु	गुरू	मंगल	बुध	शनि	सम राशि
केतु व	मिथुन	05:16:23	मृगशिर(4)	मंगल	बुध	सूर्य	शनि	चन्द्रमा	सम राशि
हर्षल	तुला	03:26:47	चित्रा(4)	मंगल	शुक्र	शुक्र	मंगल	सूर्य	सम राशि
नेफ्च्यून	वृश्चिक	14:26:28	अनुराधा(4)	शनि	मंगल	राहु	शुक्र	बुध	सम राशि
प्लूटो	कन्या	13:17:02	हस्ता(1)	चन्द्रमा	बुध	राहु	शुक्र	मंगल	सम राशि
फरच्यूना	कर्क	12:06:25	पुष्य(3)	राहु	चन्द्रमा	चन्द्रमा	सूर्य	सूर्य	....

कस्प कुण्डली

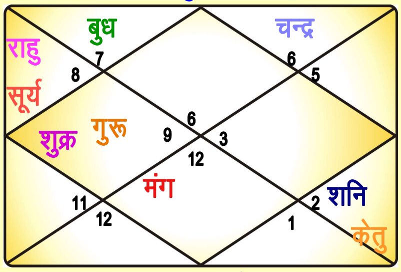

लग्न कुण्डली

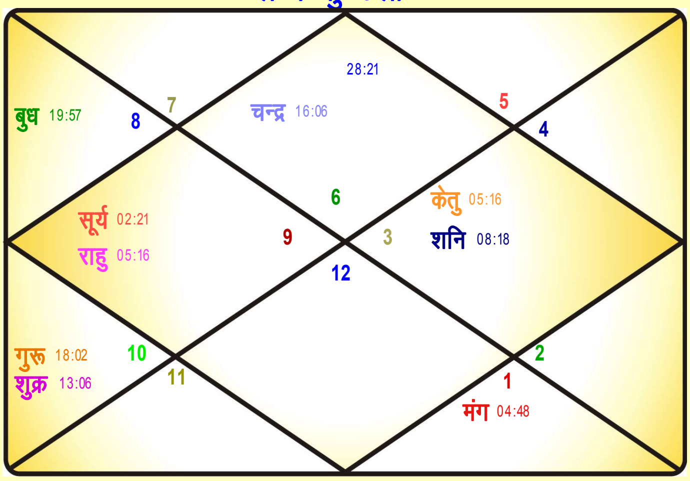

नवांश कुण्डली

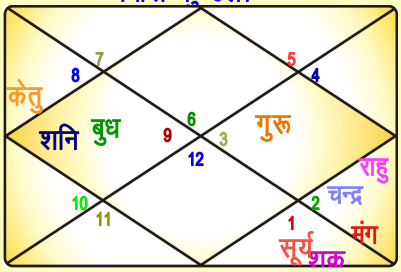

भाव स्थिति – कृष्णमूर्ति पद्धति

भाव		राशि	डिग्री	नक्षत्र – चरन	न0 पति	राशि प0	उप	उपउप	उउउ स0
I		कन्या	28:21:17	चित्रा(2)	मंगल	बुध	शनि	बुध	चन्द्रमा
II		तुला	27:17:04	विशाखा(3)	गुरू	शुक्र	शुक्र	मंगल	शनि
III		वृश्चिक	27:39:22	ज्येष्ठा(4)	बुध	मंगल	गुरू	राहु	राहु
IV		धनु	29:02:15	उत्तराषाढ(1)	सूर्य	गुरू	मंगल	शुक्र	राहु
V		कुम्भ	00:44:06	धनिष्ठा(3)	मंगल	शनि	बुध	सूर्य	गुरू
VI		मीन	01:05:02	पूर्वाभाद्र(4)	गुरू	गुरू	मंगल	केतु	गुरू
VII		मीन	28:21:17	रेवती(4)	बुध	गुरू	शनि	बुध	चन्द्रमा
VIII		मेष	27:17:04	कृतिका(1)	सूर्य	मंगल	सूर्य	शुक्र	गुरू
IX		वृष	27:39:22	मृगशिर(2)	मंगल	शुक्र	गुरू	राहु	राहु
X		मिथुन	29:02:15	पुनर्वसु(3)	गुरू	बुध	सूर्य	गुरू	बुध
XI		सिहं	00:44:06	मघा(1)	केतु	सूर्य	केतु	बुध	राहु
XII		कन्या	01:05:02	उत्तरफाल्गुनी(2)	सूर्य	बुध	राहु	चन्द्रमा	शुक्र

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia (up)

सुदर्शन चक्र

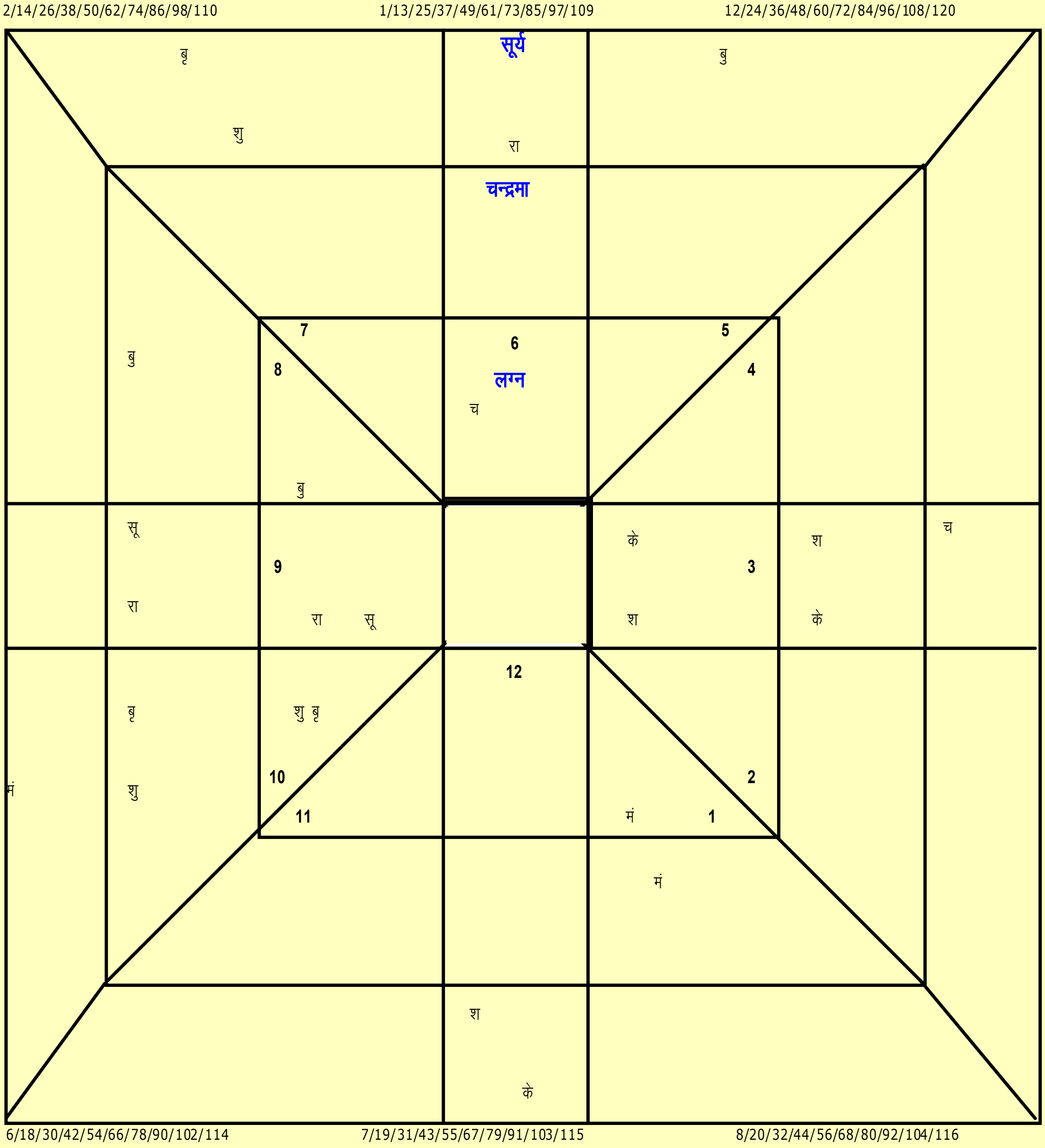

सुदर्शन चक्र शुभ और अशुभ ग्रहों के प्रभाव को दर्शाता है यह (i) लग्न (ii) चन्द्रमा और (iii)सूर्य की स्थिति से इन प्रभावों को देखता है। यह जातक की उम्र को भी दर्शाता है कि कब ये प्रभाव जातक पर पड़गें।

यदि केवल शुभ ग्रहों (वृहस्पति, शुक्र वुध, चन्द्रमा) का प्रभाव है तो पूरा साल खुशीयो से भरा होगा और मांगलिक कार्य होगें।
यदि केवल अशुभ ग्रहों (मंगल, शनि, राहु, केतू, सुर्य) का प्रभाव है तो यह साल अमंगलकारी होगा।

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia (up)

ग्रह दृष्टि (पराशरी)

ग्रह	मुख्य दृष्टि	विशेष दृष्टि
सूर्य	शनि, केतु	------
चन्द्रमा	------	------
मंगल	------	बुध
बुध	------	------
गुरू	------	लग्न, चन्द्रमा
शुक्र	------	------
शनि	सूर्य, राहु	------
राहु	शनि, केतु	------
केतु	सूर्य, राहु	------

ग्रह दृष्टि (जैमिनी)

राशि (ग्रह)	सम्मुख दृष्टि	पृष्ठ दृष्टि
मेष (मं0)	वृश्चिक (बु0)	सिहं, कुम्भ
वृष	तुला	कर्क, मकर (गु0, शु0)
मिथुन (श0, के0)	कन्या (च0)	धनु (सू0, रा0), मीन
कर्क	कुम्भ	वृष, वृश्चिक (बु0)
सिहं	मकर (गु0, शु0)	मेष (मं0), तुला
कन्या (च0)	मिथुन (श0, के0)	धनु (सू0, रा0), मीन
तुला	वृष	सिहं, कुम्भ
वृश्चिक (बु0)	मेष (मं0)	कर्क, मकर (गु0, शु0)
धनु (सू0, रा0)	मीन	मिथुन (श0, के0), कन्या (च0)
मकर (गु0, शु0)	सिहं	वृष, वृश्चिक (बु0)
कुम्भ	कर्क	मेष (मं0), तुला
मीन	धनु (सू0, रा0)	मिथुन (श0, के0), कन्या (च0)

नोट-सम्मुख दृष्टि का प्रभाव पृष्ठ दृष्टि से ज़्यादा होता है।

ग्रह दृष्टि (ताजिक)

ग्रह	लग्न	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
लग्न	---									
सूर्य	4/10 (-)	---								
चन्द्रमा	1/1 (-)	4/10 (-)	---							
मंगल	6/8 (-)	5/9 (+)	6/8 (-)	---						
बुध	3/11 (-)	2/12 (-)	3/11 (+)	6/8 (-)	---					
गुरू	5/9 (-)	2/12 (-)	5/9 (+)	4/10 (-)	3/11 (+)	---				
शुक्र	5/9 (-)	2/12 (+)	5/9 (+)	4/10 (-)	3/11 (+)	1/1 (+)	---			
शनि	4/10 (-)	7/7 (+)	4/10 (+)	3/11 (+)	6/8 (-)	6/8 (-)	6/8 (+)	---		
राहु	4/10 (-)	1/1 (+)	4/10 (-)	5/9 (+)	2/12 (-)	2/12 (-)	2/12 (-)	7/7 (+)	---	
केतु	4/10 (-)	7/7 (+)	4/10 (-)	3/11 (+)	6/8 (-)	6/8 (-)	6/8 (-)	1/1 (+)	7/7 (+)	---

लिजेन्ड-

१/१ कन्जक्शन , २ /१२ सेमी सेक्सटाइल , ३/११ सेक्सटाइल , ४/१० स्क्वायर , ५/९ ट्राइन , ६/८ क्वीन्कशं , ७/७ अपोजीशन (.) से अभिप्राय यह है कि इसमें ग्रहीय दृष्टि सीमा का समावेश है , ( ) से अभिप्राय यह है कि इसमें ग्रहीय दृष्टि सीमा का समावेश नहीं है।

नोट- ग्रह दृष्टि के लिए ताजिक सिद्धान्त के अनुसार औसत ग्रहीय दृष्टि सीमा को लिया गया है। राहु और केतु के लिए दृष्टि सीमा ६ लिया गया है, परन्तु लग्न के लिए किसी दृष्टि सीमा को नहीं लिया गया है।

VBVCB CVBVCB VCBVCBCV CVBVCB

ग्रह अवस्था

ग्रह	स्वप्नादि 3	बलादि 5	लज्जितादि 9	दिप्तादि 9	दिप्तादि 10
सूर्य	स्वप्न	बाल	क्षुदित	प्रमुदित	मुदित
चन्द्रमा	सुप्त	युवा	क्षुदित	दुखित	
मंगल	जाग्रत	बाल	गर्वित	स्वस्थ	स्वस्थ
बुध	सुप्त	कुमार	क्षुदित	दुखित	दीन
गुरू	जाग्रत	युवा	गर्वित	दीन	दीन
शुक्र	स्वप्न	युवा	मुदित	शांत	
शनि	स्वप्न	कुमार	क्षुदित	दीन	वक्र
राहु	स्वप्न	मृत	क्षुदित	प्रमुदित	मुदित
केतु	स्वप्न	मृत	लज्जित	दीन	संत

सन्नडि

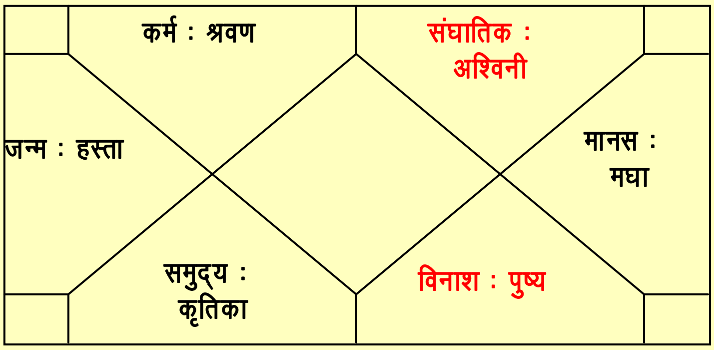

स्थुन		कंटक स्थुन-	मूल	जाति-	मघा	देश-	पूर्वाफाल्गुनी
कुज स्थुन-	मघा	रक्त स्थुन-	पूर्वाषाढ	प्रतिष्ठा-	उत्तराफाल्गुनी	त्रि-नाड़ि	

नव-तारा चक्र

जन्म	संपत	विपत	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	निधन	मित्र	अति मित्र
हस्त	चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ	उत्तराषाढ़
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उत्तराभाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका
रोहिणी	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उत्तराफाल्गुनी

आर्कचतुष्टय और नवशुभ अर्क

जन्म : हस्ता	कर्म : अभिजीत	आधान : कृतिका	नैधव : पुनर्वसु

आर्कचतुष्टय की गणना चन्द्रमा के नक्षत्र से की जाती है (२८ नक्षत्र के आधार पर)।

		दग्ध : मूला	क्षय : धनिष्ठा
	शूल : उत्तरभाद्र	सन्निपात : मृगशिर	ध्वज : अश्लेषा
उल्का : उत्तरफाल्गुनी	भुकम्प : हस्ता	वज्रक : चित्रा	निर्घात : स्वाति

नवशुभ अर्क की गणना चन्द्रमा के नक्षत्र से की जाती है (२७ नक्षत्र के आधार पर)।

विंशोत्तरी दशा

जन्म के समय विंशोत्तरी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : ०२३:२६:३६) : चन्द्रमा : ५ व0 ५ मा0 २६ दि0

क0 स0		ग्रह दशा	अवधि	से ---------- तक
1	☽	चन्द्रमा महादशा	5 y.5 m.26 d.	18:12:1973 --- 14:06:1979
2	♂	मंगल महादशा	7 y.0 m.0 d.	14:06:1979 --- 14:06:1986
3	☊	राहु महादशा	18 y.0 m.0 d.	14:06:1986 --- 13:06:2004
4	♃	गुरू महादशा	16 y.0 m.0 d.	13:06:2004 --- 13:06:2020
5	♄	शनि महादशा	19 y.0 m.0 d.	13:06:2020 --- 14:06:2039
6	☿	बुध महादशा	17 y.0 m.0 d.	14:06:2039 --- 13:06:2056
7	☋	केतु महादशा	7 y.0 m.0 d.	13:06:2056 --- 14:06:2063
8	♀	शुक्र महादशा	20 y.0 m.0 d.	14:06:2063 --- 14:06:2083
9	☉	सूर्य महादशा	6 y.0 m.0 d.	14:06:2083 --- 14:06:2089

विंशोत्तरी अन्तर्दशा

चन्द्रमा दशा

अन्तर्दशा	से ---- तक
चन्द्रमा	
मंगल	
राहु	
गुरू	
शनि	18:12:1973 - 14:04:1975
बुध	14:04:1975 - 13:09:1976
केतु	13:09:1976 - 14:04:1977
शुक्र	14:04:1977 - 13:12:1978
सूर्य	13:12:1978 - 14:06:1979

मंगल दशा

अन्तर्दशा	से ---- तक
मंगल	14:06:1979 - 10:11:1979
राहु	10:11:1979 - 28:11:1980
गुरू	28:11:1980 - 04:11:1981
शनि	04:11:1981 - 13:12:1982
बुध	13:12:1982 - 10:12:1983
केतु	10:12:1983 - 08:05:1984
शुक्र	08:05:1984 - 08:07:1985
सूर्य	08:07:1985 - 13:11:1985
चन्द्रमा	13:11:1985 - 14:06:1986

राहु दशा

अन्तर्दशा	से ---- तक
राहु	14:06:1986 - 24:02:1989
गुरू	24:02:1989 - 20:07:1991
शनि	20:07:1991 - 27:05:1994
बुध	27:05:1994 - 13:12:1996
केतु	13:12:1996 - 01:01:1998
शुक्र	01:01:1998 - 01:01:2001
सूर्य	01:01:2001 - 25:11:2001
चन्द्रमा	25:11:2001 - 27:05:2003
मंगल	27:05:2003 - 13:06:2004

गुरू दशा

अन्तर्दशा	से ---- तक
गुरू	13:06:2004 - 01:08:2006
शनि	01:08:2006 - 12:02:2009
बुध	12:02:2009 - 20:05:2011
केतु	20:05:2011 - 25:04:2012
शुक्र	25:04:2012 - 25:12:2014
सूर्य	25:12:2014 - 13:10:2015
चन्द्रमा	13:10:2015 - 12:02:2017
मंगल	12:02:2017 - 19:01:2018
राहु	19:01:2018 - 13:06:2020

शनि दशा

अन्तर्दशा	से ---- तक
शनि	13:06:2020 - 17:06:2023
बुध	17:06:2023 - 24:02:2026
केतु	24:02:2026 - 05:04:2027
शुक्र	05:04:2027 - 05:06:2030
सूर्य	05:06:2030 - 17:05:2031
चन्द्रमा	17:05:2031 - 16:12:2032
मंगल	16:12:2032 - 25:01:2034
राहु	25:01:2034 - 01:12:2036
गुरू	01:12:2036 - 14:06:2039

बुध दशा

अन्तर्दशा	से ---- तक
बुध	14:06:2039 - 10:11:2041
केतु	10:11:2041 - 07:11:2042
शुक्र	07:11:2042 - 07:09:2045
सूर्य	07:09:2045 - 14:07:2046
चन्द्रमा	14:07:2046 - 13:12:2047
मंगल	13:12:2047 - 10:12:2048
राहु	10:12:2048 - 29:06:2051
गुरू	29:06:2051 - 04:10:2053
शनि	04:10:2053 - 13:06:2056

केतु दशा

अन्तर्दशा	से ---- तक
केतु	13:06:2056 - 10:11:2056
शुक्र	10:11:2056 - 10:01:2058
सूर्य	10:01:2058 - 17:05:2058
चन्द्रमा	17:05:2058 - 16:12:2058
मंगल	16:12:2058 - 14:05:2059
राहु	14:05:2059 - 01:06:2060
गुरू	01:06:2060 - 08:05:2061
शनि	08:05:2061 - 17:06:2062
बुध	17:06:2062 - 14:06:2063

शुक्र दशा

अन्तर्दशा	से ---- तक
शुक्र	14:06:2063 - 13:10:2066
सूर्य	13:10:2066 - 13:10:2067
चन्द्रमा	13:10:2067 - 14:06:2069
मंगल	14:06:2069 - 14:08:2070
राहु	14:08:2070 - 14:08:2073
गुरू	14:08:2073 - 13:04:2076
शनि	13:04:2076 - 14:06:2079
बुध	14:06:2079 - 14:04:2082
केतु	14:04:2082 - 14:06:2083

सूर्य दशा

अन्तर्दशा	से ---- तक
सूर्य	14:06:2083 - 01:10:2083
चन्द्रमा	01:10:2083 - 01:04:2084
मंगल	01:04:2084 - 07:08:2084
राहु	07:08:2084 - 02:07:2085
गुरू	02:07:2085 - 20:04:2086
शनि	20:04:2086 - 02:04:2087
बुध	02:04:2087 - 06:02:2088
केतु	06:02:2088 - 13:06:2088
शुक्र	13:06:2088 - 14:06:2089

विंशोत्तरी दशा

शनि महादशा (13:06:2020 से 14:06:2039)

शनि अन्तर्दशा		बुध अन्तर्दशा		केतु अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	**से –**	**प्रत्यन्तर्दशा**	**से –**	**प्रत्यन्तर्दशा**	**से –**
शनि	13:06:2020	बुध	17:06:2023	केतु	24:02:2026
बुध	05:12:2020	केतु	03:11:2023	शुक्र	20:03:2026
केतु	09:05:2021	शुक्र	30:12:2023	सूर्य	26:05:2026
शुक्र	12:07:2021	सूर्य	11:06:2024	चन्द्रमा	16:06:2026
सूर्य	11:01:2022	चन्द्रमा	31:07:2024	मंगल	19:07:2026
चन्द्रमा	07:03:2022	मंगल	21:10:2024	राहु	12:08:2026
मंगल	07:06:2022	राहु	17:12:2024	गुरू	12:10:2026
राहु	10:08:2022	गुरू	14:05:2025	शनि	04:12:2026
गुरू	21:01:2023	शनि	22:09:2025	बुध	07:02:2027

शुक्र अन्तर्दशा		सूर्य अन्तर्दशा		चन्द्रमा अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	**से –**	**प्रत्यन्तर्दशा**	**से –**	**प्रत्यन्तर्दशा**	**से –**
शुक्र	05:04:2027	सूर्य	05:06:2030	चन्द्रमा	17:05:2031
सूर्य	14:10:2027	चन्द्रमा	22:06:2030	मंगल	05:07:2031
चन्द्रमा	11:12:2027	मंगल	21:07:2030	राहु	07:08:2031
मंगल	17:03:2028	राहु	10:08:2030	गुरू	02:11:2031
राहु	23:05:2028	गुरू	01:10:2030	शनि	18:01:2032
गुरू	13:11:2028	शनि	16:11:2030	बुध	19:04:2032
शनि	16:04:2029	बुध	10:01:2031	केतु	10:07:2032
बुध	16:10:2029	केतु	28:02:2031	शुक्र	13:08:2032
केतु	29:03:2030	शुक्र	21:03:2031	सूर्य	17:11:2032

मंगल अन्तर्दशा		राहु अन्तर्दशा		गुरू अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	**से –**	**प्रत्यन्तर्दशा**	**से –**	**प्रत्यन्तर्दशा**	**से –**
मंगल	16:12:2032	राहु	25:01:2034	गुरू	01:12:2036
राहु	09:01:2033	गुरू	30:06:2034	शनि	03:04:2037
गुरू	11:03:2033	शनि	16:11:2034	बुध	28:08:2037
शनि	04:05:2033	बुध	29:04:2035	केतु	06:01:2038
बुध	07:07:2033	केतु	24:09:2035	शुक्र	01:03:2038
केतु	02:09:2033	शुक्र	23:11:2035	सूर्य	02:08:2038
शुक्र	25:09:2033	सूर्य	15:05:2036	चन्द्रमा	17:09:2038
सूर्य	02:12:2033	चन्द्रमा	06:07:2036	मंगल	03:12:2038
चन्द्रमा	22:12:2033	मंगल	01:10:2036	राहु	26:01:2039

विंशोत्तरी दशा

शनि अन्तर्दशा (13:06:2020 से 17:06:2023)

शनि प्रत्यन्तर्दशा		बुध प्रत्यन्तर्दशा		केतु प्रत्यन्तर्दशा	
सूक्ष्म दशा	से –	सूक्ष्म दशा	से –	सूक्ष्म दशा	से –
शनि	13:06:2020	बुध	05:12:2020	केतु	09:05:2021
बुध	11:07:2020	केतु	27:12:2020	शुक्र	13:05:2021
केतु	05:08:2020	शुक्र	05:01:2021	सूर्य	24:05:2021
शुक्र	15:08:2020	सूर्य	31:01:2021	चन्द्रमा	27:05:2021
सूर्य	13:09:2020	चन्द्रमा	07:02:2021	मंगल	01:06:2021
चन्द्रमा	21:09:2020	मंगल	20:02:2021	राहु	05:06:2021
मंगल	06:10:2020	राहु	01:03:2021	गुरू	14:06:2021
राहु	16:10:2020	गुरू	25:03:2021	शनि	23:06:2021
गुरू	11:11:2020	शनि	15:04:2021	बुध	03:07:2021

शुक्र प्रत्यन्तर्दशा		सूर्य प्रत्यन्तर्दशा		चन्द्रमा प्रत्यन्तर्दशा	
सूक्ष्म दशा	से –	सूक्ष्म दशा	से –	सूक्ष्म दशा	से –
शुक्र	12:07:2021	सूर्य	11:01:2022	चन्द्रमा	07:03:2022
सूर्य	12:08:2021	चन्द्रमा	14:01:2022	मंगल	15:03:2022
चन्द्रमा	21:08:2021	मंगल	19:01:2022	राहु	20:03:2022
मंगल	05:09:2021	राहु	22:01:2022	गुरू	03:04:2022
राहु	16:09:2021	गुरू	30:01:2022	शनि	15:04:2022
गुरू	13:10:2021	शनि	06:02:2022	बुध	30:04:2022
शनि	07:11:2021	बुध	15:02:2022	केतु	12:05:2022
बुध	06:12:2021	केतु	23:02:2022	शुक्र	18:05:2022
केतु	01:01:2022	शुक्र	26:02:2022	सूर्य	02:06:2022

मंगल प्रत्यन्तर्दशा		राहु प्रत्यन्तर्दशा		गुरू प्रत्यन्तर्दशा	
सूक्ष्म दशा	से –	सूक्ष्म दशा	से –	सूक्ष्म दशा	से –
मंगल	07:06:2022	राहु	10:08:2022	गुरू	21:01:2023
राहु	10:06:2022	गुरू	03:09:2022	शनि	10:02:2023
गुरू	20:06:2022	शनि	25:09:2022	बुध	05:03:2023
शनि	29:06:2022	बुध	21:10:2022	केतु	26:03:2023
बुध	09:07:2022	केतु	14:11:2022	शुक्र	03:04:2023
केतु	18:07:2022	शुक्र	23:11:2022	सूर्य	28:04:2023
शुक्र	21:07:2022	सूर्य	21:12:2022	चन्द्रमा	05:05:2023
सूर्य	01:08:2022	चन्द्रमा	29:12:2022	मंगल	17:05:2023
चन्द्रमा	04:08:2022	मंगल	12:01:2023	राहु	26:05:2023

विंशोत्तरी दशा

बुध प्रत्यन्तर्दशा (05:12:2020 से 09:05:2021)

बुध सुक्ष्म दशा		केतु सुक्ष्म दशा		शुक्र सुक्ष्म दशा	
प्राण दशा	**से –**	**प्राण दशा**	**से –**	**प्राण दशा**	**से –**
बुध	05:12:2020 : 00:22:19AM	केतु	27:12:2020 : 02:42:40AM	शुक्र	05:01:2021 : 04:44:39AM
केतु	08:12:2020 : 03:30:12AM	शुक्र	27:12:2020 : 03:26:58PM	सूर्य	09:01:2021 : 00:26:53PM
शुक्र	09:12:2020 : 10:26:23AM	सूर्य	29:12:2020 : 03:50:43AM	चन्द्रमा	10:01:2021 : 07:33:33PM
सूर्य	13:12:2020 : 02:49:47AM	चन्द्रमा	29:12:2020 : 02:45:51PM	मंगल	12:01:2021 : 11:24:40PM
चन्द्रमा	14:12:2020 : 05:20:48AM	मंगल	30:12:2020 : 08:57:43AM	राहु	14:01:2021 : 11:42:27AM
मंगल	16:12:2020 : 01:32:29AM	राहु	30:12:2020 : 09:42:02PM	गुरू	18:01:2021 : 09:02:28AM
राहु	17:12:2020 : 08:28:40AM	गुरू	01:01:2021 : 06:22:25AM	शनि	21:01:2021 : 08:00:16PM
गुरू	20:12:2020 : 04:01:44PM	शनि	02:01:2021 : 11:24:38AM	बुध	25:01:2021 : 10:31:23PM
शनि	23:12:2020 : 02:44:26PM	बुध	03:01:2021 : 09:53:32PM	केतु	29:01:2021 : 02:40:17PM

सूर्य सुक्ष्म दशा		चन्द्रमा सुक्ष्म दशा		मंगल सुक्ष्म दशा	
प्राण दशा	**से –**	**प्राण दशा**	**से –**	**प्राण दशा**	**से –**
सूर्य	31:01:2021 : 02:58:04AM	चन्द्रमा	07:02:2021 : 09:38:05PM	मंगल	20:02:2021 : 08:44:48PM
चन्द्रमा	31:01:2021 : 00:18:04PM	मंगल	08:02:2021 : 11:33:39PM	राहु	21:02:2021 : 09:27:01AM
मंगल	01:02:2021 : 03:51:24AM	राहु	09:02:2021 : 05:42:32PM	गुरू	22:02:2021 : 06:07:02PM
राहु	01:02:2021 : 02:44:44PM	गुरू	11:02:2021 : 04:22:33PM	शनि	23:02:2021 : 11:09:15PM
गुरू	02:02:2021 : 06:44:44PM	शनि	13:02:2021 : 09:51:27AM	बुध	25:02:2021 : 09:38:09AM
शनि	03:02:2021 : 07:38:05PM	बुध	15:02:2021 : 11:07:00AM	केतु	26:02:2021 : 04:29:16PM
बुध	05:02:2021 : 01:11:25AM	केतु	17:02:2021 : 07:11:27AM	शुक्र	27:02:2021 : 05:11:29AM
केतु	06:02:2021 : 03:38:05AM	शुक्र	18:02:2021 : 01:20:21AM	सूर्य	28:02:2021 : 05:29:16PM
शुक्र	06:02:2021 : 02:31:25PM	सूर्य	20:02:2021 : 05:11:28AM	चन्द्रमा	01:03:2021 : 04:22:36AM

राहु सुक्ष्म दशा		गुरू सुक्ष्म दशा		शनि सुक्ष्म दशा	
प्राण दशा	**से –**	**प्राण दशा**	**से –**	**प्राण दशा**	**से –**
राहु	01:03:2021 : 10:31:30PM	गुरू	25:03:2021 : 06:31:34AM	शनि	15:04:2021 : 00:18:18AM
गुरू	05:03:2021 : 10:31:30AM	शनि	28:03:2021 : 00:53:48AM	बुध	18:04:2021 : 09:53:52PM
शनि	08:03:2021 : 01:11:31PM	बुध	31:03:2021 : 07:42:42AM	केतु	22:04:2021 : 09:38:20AM
बुध	12:03:2021 : 05:51:32AM	केतु	03:04:2021 : 06:13:49AM	शुक्र	23:04:2021 : 08:07:13PM
केतु	15:03:2021 : 01:11:32PM	शुक्र	04:04:2021 : 11:16:03AM	सूर्य	27:04:2021 : 10:38:21PM
शुक्र	16:03:2021 : 09:51:33PM	सूर्य	07:04:2021 : 10:13:50PM	चन्द्रमा	29:04:2021 : 04:11:41AM
सूर्य	20:03:2021 : 07:11:33PM	चन्द्रमा	08:04:2021 : 11:07:10PM	मंगल	01:05:2021 : 05:27:15AM
चन्द्रमा	21:03:2021 : 11:11:34PM	मंगल	10:04:2021 : 04:36:04PM	राहु	02:05:2021 : 03:56:08PM
मंगल	23:03:2021 : 09:51:34PM	राहु	11:04:2021 : 09:38:18PM	गुरू	06:05:2021 : 08:36:09AM

विंशोत्तरी दशा

चन्द्रमा महादशा (18:12:1973 से 14:06:1979)

प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –

		शनि अन्तर्दशा		बुध अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
				बुध	14:04:1975
		बुध	18:12:1973	केतु	26:06:1975
		केतु	05:03:1974	शुक्र	26:07:1975
		शुक्र	08:04:1974	सूर्य	21:10:1975
		सूर्य	13:07:1974	चन्द्रमा	15:11:1975
		चन्द्रमा	11:08:1974	मंगल	28:12:1975
		मंगल	28:09:1974	राहु	28:01:1976
		राहु	01:11:1974	गुरू	14:04:1976
		गुरू	27:01:1975	शनि	23:06:1976

केतु अन्तर्दशा		शुक्र अन्तर्दशा		सूर्य अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
केतु	13:09:1976	शुक्र	14:04:1977	सूर्य	13:12:1978
शुक्र	25:09:1976	सूर्य	24:07:1977	चन्द्रमा	22:12:1978
सूर्य	31:10:1976	चन्द्रमा	24:08:1977	मंगल	07:01:1979
चन्द्रमा	10:11:1976	मंगल	13:10:1977	राहु	17:01:1979
मंगल	28:11:1976	राहु	18:11:1977	गुरू	14:02:1979
राहु	11:12:1976	गुरू	17:02:1978	शनि	10:03:1979
गुरू	12:01:1977	शनि	09:05:1978	बुध	08:04:1979
शनि	09:02:1977	बुध	14:08:1978	केतु	04:05:1979
बुध	15:03:1977	केतु	08:11:1978	शुक्र	14:05:1979

विंशोत्तरी दशा

मंगल महादशा (14:06:1979 से 14:06:1986)

मंगल अन्तर्दशा		राहु अन्तर्दशा		गुरू अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
मंगल	14:06:1979	राहु	10:11:1979	गुरू	28:11:1980
राहु	22:06:1979	गुरू	06:01:1980	शनि	12:01:1981
गुरू	15:07:1979	शनि	27:02:1980	बुध	07:03:1981
शनि	04:08:1979	बुध	27:04:1980	केतु	25:04:1981
बुध	27:08:1979	केतु	21:06:1980	शुक्र	15:05:1981
केतु	17:09:1979	शुक्र	13:07:1980	सूर्य	10:07:1981
शुक्र	26:09:1979	सूर्य	15:09:1980	चन्द्रमा	27:07:1981
सूर्य	21:10:1979	चन्द्रमा	05:10:1980	मंगल	25:08:1981
चन्द्रमा	28:10:1979	मंगल	06:11:1980	राहु	14:09:1981

शनि अन्तर्दशा		बुध अन्तर्दशा		केतु अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
शनि	04:11:1981	बुध	13:12:1982	केतु	10:12:1983
बुध	07:01:1982	केतु	03:02:1983	शुक्र	19:12:1983
केतु	05:03:1982	शुक्र	24:02:1983	सूर्य	13:01:1984
शुक्र	29:03:1982	सूर्य	25:04:1983	चन्द्रमा	20:01:1984
सूर्य	04:06:1982	चन्द्रमा	13:05:1983	मंगल	02:02:1984
चन्द्रमा	24:06:1982	मंगल	12:06:1983	राहु	10:02:1984
मंगल	28:07:1982	राहु	03:07:1983	गुरू	04:03:1984
राहु	21:08:1982	गुरू	27:08:1983	शनि	24:03:1984
गुरू	20:10:1982	शनि	14:10:1983	बुध	16:04:1984

शुक्र अन्तर्दशा		सूर्य अन्तर्दशा		चन्द्रमा अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
शुक्र	08:05:1984	सूर्य	08:07:1985	चन्द्रमा	13:11:1985
सूर्य	18:07:1984	चन्द्रमा	14:07:1985	मंगल	01:12:1985
चन्द्रमा	08:08:1984	मंगल	25:07:1985	राहु	13:12:1985
मंगल	13:09:1984	राहु	02:08:1985	गुरू	14:01:1986
राहु	08:10:1984	गुरू	21:08:1985	शनि	11:02:1986
गुरू	11:12:1984	शनि	07:09:1985	बुध	17:03:1986
शनि	06:02:1985	बुध	27:09:1985	केतु	16:04:1986
बुध	14:04:1985	केतु	15:10:1985	शुक्र	29:04:1986
केतु	13:06:1985	शुक्र	23:10:1985	सूर्य	03:06:1986

विंशोत्तरी दशा

राहु महादशा (14:06:1986 से 13:06:2004)

राहु अन्तर्दशा		गुरू अन्तर्दशा		शनि अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
राहु	14:06:1986	गुरू	24:02:1989	शनि	20:07:1991
गुरू	09:11:1986	शनि	21:06:1989	बुध	01:01:1992
शनि	20:03:1987	बुध	07:11:1989	केतु	28:05:1992
बुध	23:08:1987	केतु	11:03:1990	शुक्र	28:07:1992
केतु	10:01:1988	शुक्र	01:05:1990	सूर्य	17:01:1993
शुक्र	07:03:1988	सूर्य	24:09:1990	चन्द्रमा	10:03:1993
सूर्य	19:08:1988	चन्द्रमा	07:11:1990	मंगल	05:06:1993
चन्द्रमा	07:10:1988	मंगल	19:01:1991	राहु	05:08:1993
मंगल	29:12:1988	राहु	11:03:1991	गुरू	08:01:1994

बुध अन्तर्दशा		केतु अन्तर्दशा		शुक्र अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
बुध	27:05:1994	केतु	13:12:1996	शुक्र	01:01:1998
केतु	05:10:1994	शुक्र	05:01:1997	सूर्य	02:07:1998
शुक्र	29:11:1994	सूर्य	10:03:1997	चन्द्रमा	26:08:1998
सूर्य	03:05:1995	चन्द्रमा	29:03:1997	मंगल	25:11:1998
चन्द्रमा	18:06:1995	मंगल	30:04:1997	राहु	28:01:1999
मंगल	04:09:1995	राहु	22:05:1997	गुरू	11:07:1999
राहु	28:10:1995	गुरू	18:07:1997	शनि	04:12:1999
गुरू	16:03:1996	शनि	08:09:1997	बुध	26:05:2000
शनि	18:07:1996	बुध	07:11:1997	केतु	28:10:2000

सूर्य अन्तर्दशा		चन्द्रमा अन्तर्दशा		मंगल अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
सूर्य	01:01:2001	चन्द्रमा	25:11:2001	मंगल	27:05:2003
चन्द्रमा	17:01:2001	मंगल	10:01:2002	राहु	18:06:2003
मंगल	13:02:2001	राहु	11:02:2002	गुरू	14:08:2003
राहु	04:03:2001	गुरू	04:05:2002	शनि	04:10:2003
गुरू	23:04:2001	शनि	16:07:2002	बुध	04:12:2003
शनि	06:06:2001	बुध	10:10:2002	केतु	28:01:2004
बुध	28:07:2001	केतु	27:12:2002	शुक्र	19:02:2004
केतु	12:09:2001	शुक्र	28:01:2003	सूर्य	23:04:2004
शुक्र	01:10:2001	सूर्य	29:04:2003	चन्द्रमा	12:05:2004

विंशोत्तरी दशा

गुरू महादशा (13:06:2004 से 13:06:2020)

गुरू अन्तर्दशा		शनि अन्तर्दशा		बुध अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
गुरू	13:06:2004	शनि	01:08:2006	बुध	12:02:2009
शनि	25:09:2004	बुध	26:12:2006	केतु	09:06:2009
बुध	27:01:2005	केतु	06:05:2007	शुक्र	28:07:2009
केतु	17:05:2005	शुक्र	29:06:2007	सूर्य	12:12:2009
शुक्र	02:07:2005	सूर्य	30:11:2007	चन्द्रमा	23:01:2010
सूर्य	08:11:2005	चन्द्रमा	15:01:2008	मंगल	02:04:2010
चन्द्रमा	17:12:2005	मंगल	01:04:2008	राहु	20:05:2010
मंगल	20:02:2006	राहु	26:05:2008	गुरू	21:09:2010
राहु	07:04:2006	गुरू	12:10:2008	शनि	09:01:2011

केतु अन्तर्दशा		शुक्र अन्तर्दशा		सूर्य अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
केतु	20:05:2011	शुक्र	25:04:2012	सूर्य	25:12:2014
शुक्र	09:06:2011	सूर्य	05:10:2012	चन्द्रमा	09:01:2015
सूर्य	05:08:2011	चन्द्रमा	23:11:2012	मंगल	02:02:2015
चन्द्रमा	22:08:2011	मंगल	12:02:2013	राहु	19:02:2015
मंगल	20:09:2011	राहु	10:04:2013	गुरू	04:04:2015
राहु	09:10:2011	गुरू	03:09:2013	शनि	13:05:2015
गुरू	29:11:2011	शनि	11:01:2014	बुध	28:06:2015
शनि	14:01:2012	बुध	14:06:2014	केतु	09:08:2015
बुध	08:03:2012	केतु	30:10:2014	शुक्र	26:08:2015

चन्द्रमा अन्तर्दशा		मंगल अन्तर्दशा		राहु अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
चन्द्रमा	13:10:2015	मंगल	12:02:2017	राहु	19:01:2018
मंगल	23:11:2015	राहु	04:03:2017	गुरू	30:05:2018
राहु	21:12:2015	गुरू	24:04:2017	शनि	24:09:2018
गुरू	04:03:2016	शनि	08:06:2017	बुध	10:02:2019
शनि	08:05:2016	बुध	01:08:2017	केतु	14:06:2019
बुध	24:07:2016	केतु	19:09:2017	शुक्र	04:08:2019
केतु	01:10:2016	शुक्र	09:10:2017	सूर्य	28:12:2019
शुक्र	29:10:2016	सूर्य	04:12:2017	चन्द्रमा	10:02:2020
सूर्य	19:01:2017	चन्द्रमा	21:12:2017	मंगल	23:04:2020

विंशोत्तरी दशा

शनि महादशा (13:06:2020 से 14:06:2039)

शनि अन्तर्दशा		बुध अन्तर्दशा		केतु अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
शनि	13:06:2020	बुध	17:06:2023	केतु	24:02:2026
बुध	05:12:2020	केतु	03:11:2023	शुक्र	20:03:2026
केतु	09:05:2021	शुक्र	30:12:2023	सूर्य	26:05:2026
शुक्र	12:07:2021	सूर्य	11:06:2024	चन्द्रमा	16:06:2026
सूर्य	11:01:2022	चन्द्रमा	31:07:2024	मंगल	19:07:2026
चन्द्रमा	07:03:2022	मंगल	21:10:2024	राहु	12:08:2026
मंगल	07:06:2022	राहु	17:12:2024	गुरू	12:10:2026
राहु	10:08:2022	गुरू	14:05:2025	शनि	04:12:2026
गुरू	21:01:2023	शनि	22:09:2025	बुध	07:02:2027

शुक्र अन्तर्दशा		सूर्य अन्तर्दशा		चन्द्रमा अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
शुक्र	05:04:2027	सूर्य	05:06:2030	चन्द्रमा	17:05:2031
सूर्य	14:10:2027	चन्द्रमा	22:06:2030	मंगल	05:07:2031
चन्द्रमा	11:12:2027	मंगल	21:07:2030	राहु	07:08:2031
मंगल	17:03:2028	राहु	10:08:2030	गुरू	02:11:2031
राहु	23:05:2028	गुरू	01:10:2030	शनि	18:01:2032
गुरू	13:11:2028	शनि	16:11:2030	बुध	19:04:2032
शनि	16:04:2029	बुध	10:01:2031	केतु	10:07:2032
बुध	16:10:2029	केतु	28:02:2031	शुक्र	13:08:2032
केतु	29:03:2030	शुक्र	21:03:2031	सूर्य	17:11:2032

मंगल अन्तर्दशा		राहु अन्तर्दशा		गुरू अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
मंगल	16:12:2032	राहु	25:01:2034	गुरू	01:12:2036
राहु	09:01:2033	गुरू	30:06:2034	शनि	03:04:2037
गुरू	11:03:2033	शनि	16:11:2034	बुध	28:08:2037
शनि	04:05:2033	बुध	29:04:2035	केतु	06:01:2038
बुध	07:07:2033	केतु	24:09:2035	शुक्र	01:03:2038
केतु	02:09:2033	शुक्र	23:11:2035	सूर्य	02:08:2038
शुक्र	25:09:2033	सूर्य	15:05:2036	चन्द्रमा	17:09:2038
सूर्य	02:12:2033	चन्द्रमा	06:07:2036	मंगल	03:12:2038
चन्द्रमा	22:12:2033	मंगल	01:10:2036	राहु	26:01:2039

विंशोत्तरी दशा

बुध महादशा (14:06:2039 से 13:06:2056)

बुध अन्तर्दशा		केतु अन्तर्दशा		शुक्र अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
बुध	14:06:2039	केतु	10:11:2041	शुक्र	07:11:2042
केतु	16:10:2039	शुक्र	01:12:2041	सूर्य	28:04:2043
शुक्र	07:12:2039	सूर्य	30:01:2042	चन्द्रमा	19:06:2043
सूर्य	01:05:2040	चन्द्रमा	17:02:2042	मंगल	13:09:2043
चन्द्रमा	14:06:2040	मंगल	20:03:2042	राहु	12:11:2043
मंगल	27:08:2040	राहु	10:04:2042	गुरू	16:04:2044
राहु	17:10:2040	गुरू	03:06:2042	शनि	01:09:2044
गुरू	26:02:2041	शनि	21:07:2042	बुध	12:02:2045
शनि	24:06:2041	बुध	16:09:2042	केतु	09:07:2045

सूर्य अन्तर्दशा		चन्द्रमा अन्तर्दशा		मंगल अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
सूर्य	07:09:2045	चन्द्रमा	14:07:2046	मंगल	13:12:2047
चन्द्रमा	22:09:2045	मंगल	26:08:2046	राहु	03:01:2048
मंगल	18:10:2045	राहु	25:09:2046	गुरू	27:02:2048
राहु	05:11:2045	गुरू	12:12:2046	शनि	15:04:2048
गुरू	22:12:2045	शनि	19:02:2047	बुध	12:06:2048
शनि	01:02:2046	बुध	12:05:2047	केतु	02:08:2048
बुध	22:03:2046	केतु	24:07:2047	शुक्र	23:08:2048
केतु	05:05:2046	शुक्र	23:08:2047	सूर्य	23:10:2048
शुक्र	23:05:2046	सूर्य	17:11:2047	चन्द्रमा	10:11:2048

राहु अन्तर्दशा		गुरू अन्तर्दशा		शनि अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
राहु	10:12:2048	गुरू	29:06:2051	शनि	04:10:2053
गुरू	29:04:2049	शनि	17:10:2051	बुध	09:03:2054
शनि	31:08:2049	बुध	25:02:2052	केतु	26:07:2054
बुध	25:01:2050	केतु	22:06:2052	शुक्र	21:09:2054
केतु	06:06:2050	शुक्र	09:08:2052	सूर्य	04:03:2055
शुक्र	30:07:2050	सूर्य	26:12:2052	चन्द्रमा	22:04:2055
सूर्य	02:01:2051	चन्द्रमा	05:02:2053	मंगल	13:07:2055
चन्द्रमा	17:02:2051	मंगल	15:04:2053	राहु	08:09:2055
मंगल	06:05:2051	राहु	02:06:2053	गुरू	03:02:2056

विंशोत्तरी दशा

केतु महादशा (13:06:2056 से 14:06:2063)

केतु अन्तर्दशा		शुक्र अन्तर्दशा		सूर्य अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
केतु	13:06:2056	शुक्र	10:11:2056	सूर्य	10:01:2058
शुक्र	22:06:2056	सूर्य	20:01:2057	चन्द्रमा	16:01:2058
सूर्य	17:07:2056	चन्द्रमा	10:02:2057	मंगल	27:01:2058
चन्द्रमा	24:07:2056	मंगल	18:03:2057	राहु	03:02:2058
मंगल	06:08:2056	राहु	11:04:2057	गुरू	22:02:2058
राहु	14:08:2056	गुरू	14:06:2057	शनि	11:03:2058
गुरू	06:09:2056	शनि	10:08:2057	बुध	01:04:2058
शनि	26:09:2056	बुध	16:10:2057	केतु	19:04:2058
बुध	20:10:2056	केतु	16:12:2057	शुक्र	26:04:2058

चन्द्रमा अन्तर्दशा		मंगल अन्तर्दशा		राहु अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
चन्द्रमा	17:05:2058	मंगल	16:12:2058	राहु	14:05:2059
मंगल	04:06:2058	राहु	25:12:2058	गुरू	11:07:2059
राहु	17:06:2058	गुरू	16:01:2059	शनि	31:08:2059
गुरू	18:07:2058	शनि	05:02:2059	बुध	31:10:2059
शनि	16:08:2058	बुध	01:03:2059	केतु	24:12:2059
बुध	19:09:2058	केतु	22:03:2059	शुक्र	15:01:2060
केतु	19:10:2058	शुक्र	31:03:2059	सूर्य	19:03:2060
शुक्र	31:10:2058	सूर्य	24:04:2059	चन्द्रमा	08:04:2060
सूर्य	06:12:2058	चन्द्रमा	02:05:2059	मंगल	10:05:2060

गुरू अन्तर्दशा		शनि अन्तर्दशा		बुध अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
गुरू	01:06:2060	शनि	08:05:2061	बुध	17:06:2062
शनि	17:07:2060	बुध	11:07:2061	केतु	07:08:2062
बुध	09:09:2060	केतु	07:09:2061	शुक्र	28:08:2062
केतु	27:10:2060	शुक्र	30:09:2061	सूर्य	28:10:2062
शुक्र	16:11:2060	सूर्य	07:12:2061	चन्द्रमा	15:11:2062
सूर्य	12:01:2061	चन्द्रमा	27:12:2061	मंगल	15:12:2062
चन्द्रमा	29:01:2061	मंगल	30:01:2062	राहु	05:01:2063
मंगल	26:02:2061	राहु	22:02:2062	गुरू	28:02:2063
राहु	18:03:2061	गुरू	24:04:2062	शनि	17:04:2063

विंशोत्तरी दशा

शुक्र महादशा (14:06:2063 से 14:06:2083)

शुक्र अन्तर्दशा		सूर्य अन्तर्दशा		चन्द्रमा अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
शुक्र	14:06:2063	सूर्य	13:10:2066	चन्द्रमा	13:10:2067
सूर्य	03:01:2064	चन्द्रमा	01:11:2066	मंगल	03:12:2067
चन्द्रमा	04:03:2064	मंगल	01:12:2066	राहु	08:01:2068
मंगल	13:06:2064	राहु	22:12:2066	गुरू	08:04:2068
राहु	23:08:2064	गुरू	15:02:2067	शनि	28:06:2068
गुरू	22:02:2065	शनि	05:04:2067	बुध	03:10:2068
शनि	03:08:2065	बुध	02:06:2067	केतु	28:12:2068
बुध	12:02:2066	केतु	23:07:2067	शुक्र	02:02:2069
केतु	03:08:2066	शुक्र	14:08:2067	सूर्य	14:05:2069

मंगल अन्तर्दशा		राहु अन्तर्दशा		गुरू अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
मंगल	14:06:2069	राहु	14:08:2070	गुरू	14:08:2073
राहु	09:07:2069	गुरू	25:01:2071	शनि	21:12:2073
गुरू	10:09:2069	शनि	20:06:2071	बुध	24:05:2074
शनि	06:11:2069	बुध	10:12:2071	केतु	09:10:2074
बुध	13:01:2070	केतु	14:05:2072	शुक्र	05:12:2074
केतु	14:03:2070	शुक्र	17:07:2072	सूर्य	16:05:2075
शुक्र	08:04:2070	सूर्य	16:01:2073	चन्द्रमा	04:07:2075
सूर्य	18:06:2070	चन्द्रमा	11:03:2073	मंगल	23:09:2075
चन्द्रमा	09:07:2070	मंगल	11:06:2073	राहु	19:11:2075

शनि अन्तर्दशा		बुध अन्तर्दशा		केतु अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
शनि	13:04:2076	बुध	14:06:2079	केतु	14:04:2082
बुध	14:10:2076	केतु	07:11:2079	शुक्र	09:05:2082
केतु	27:03:2077	शुक्र	07:01:2080	सूर्य	19:07:2082
शुक्र	02:06:2077	सूर्य	27:06:2080	चन्द्रमा	09:08:2082
सूर्य	12:12:2077	चन्द्रमा	18:08:2080	मंगल	14:09:2082
चन्द्रमा	08:02:2078	मंगल	13:11:2080	राहु	08:10:2082
मंगल	15:05:2078	राहु	12:01:2081	गुरू	11:12:2082
राहु	21:07:2078	गुरू	16:06:2081	शनि	06:02:2083
गुरू	11:01:2079	शनि	01:11:2081	बुध	14:04:2083

विंशोत्तरी दशा

सूर्य महादशा (14:06:2083 से 14:06:2089)

सूर्य अन्तर्दशा		चन्द्रमा अन्तर्दशा		मंगल अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
सूर्य	14:06:2083	चन्द्रमा	01:10:2083	मंगल	01:04:2084
चन्द्रमा	19:06:2083	मंगल	16:10:2083	राहु	08:04:2084
मंगल	28:06:2083	राहु	27:10:2083	गुरू	28:04:2084
राहु	05:07:2083	गुरू	24:11:2083	शनि	15:05:2084
गुरू	21:07:2083	शनि	18:12:2083	बुध	04:06:2084
शनि	05:08:2083	बुध	16:01:2084	केतु	22:06:2084
बुध	22:08:2083	केतु	11:02:2084	शुक्र	30:06:2084
केतु	07:09:2083	शुक्र	21:02:2084	सूर्य	21:07:2084
शुक्र	13:09:2083	सूर्य	23:03:2084	चन्द्रमा	27:07:2084

राहु अन्तर्दशा		गुरू अन्तर्दशा		शनि अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
राहु	07:08:2084	गुरू	02:07:2085	शनि	20:04:2086
गुरू	26:09:2084	शनि	10:08:2085	बुध	14:06:2086
शनि	08:11:2084	बुध	25:09:2085	केतु	02:08:2086
बुध	31:12:2084	केतु	06:11:2085	शुक्र	22:08:2086
केतु	15:02:2085	शुक्र	23:11:2085	सूर्य	19:10:2086
शुक्र	06:03:2085	सूर्य	10:01:2086	चन्द्रमा	05:11:2086
सूर्य	30:04:2085	चन्द्रमा	25:01:2086	मंगल	04:12:2086
चन्द्रमा	16:05:2085	मंगल	18:02:2086	राहु	25:12:2086
मंगल	13:06:2085	राहु	07:03:2086	गुरू	15:02:2087

बुध अन्तर्दशा		केतु अन्तर्दशा		शुक्र अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
बुध	02:04:2087	केतु	06:02:2088	शुक्र	13:06:2088
केतु	16:05:2087	शुक्र	14:02:2088	सूर्य	13:08:2088
शुक्र	03:06:2087	सूर्य	06:03:2088	चन्द्रमा	01:09:2088
सूर्य	25:07:2087	चन्द्रमा	12:03:2088	मंगल	01:10:2088
चन्द्रमा	09:08:2087	मंगल	23:03:2088	राहु	22:10:2088
मंगल	04:09:2087	राहु	30:03:2088	गुरू	16:12:2088
राहु	22:09:2087	गुरू	19:04:2088	शनि	03:02:2089
गुरू	08:11:2087	शनि	06:05:2088	बुध	02:04:2089
शनि	19:12:2087	बुध	26:05:2088	केतु	23:05:2089

गोचर की तारीख- 14:01:2021 गोचर का समय- 12:13:14 गोचर का स्थान- Ballia (up) (INDIA)

ग्रह स्थिति

Sample						Transit					
ग्रह	राशि	डिग्री	नक्षत्र			ग्रह	राशि	डिग्री	नक्षत्र		
लग्न	कन्या	28:15:29	चित्रा (२)	–	–	लग्न	मेष	14:12:37	भरणी (१)	–	–
सूर्य	धनु	02:15:49	मूल (१)	मि0ग्र0	ग्र0	सूर्य	मकर	00:10:07	उत्तराषाढ़ (२)		शु0ग्र0
चन्द्रमा	कन्या	16:00:57	हस्त (२)	श0ग्र0	–	चन्द्रमा	मकर	13:50:52	श्रवण (२)		शु0ग्र0
मंगल	मेष	04:42:18	अश्विनी (२)	मूत्रि	–	मंगल	मेष	09:19:25	अश्विनी (३)		–
बुध	वृश्चिक	19:51:24	ज्येष्ठा (१)	श0ग्र0	–	बुध	मकर	15:13:23	श्रवण (२)		शु0ग्र0
गुरू	मकर	17:56:39	श्रवण (३)	त0ग्र0	शु0ग्र0	गुरू	मकर	11:42:57	श्रवण (१)		शु0ग्र0
शुक्र	मकर	13:00:16	श्रवण (१)	मि0ग्र0	शु0ग्र0	शुक्र	धनु	12:54:25	मूल (४)		–
शनि व0	मिथुन	08:12:33	आर्द्रा (१)	त0ग्र0	ग्र0	शनि	मकर	09:01:22	उत्तराषाढ़ (४)		ज्व0
राहु व0	धनु	05:10:35	मूल (२)	मि0ग्र0	दु0ग्रह	राहु व0	वृष	24:00:31	मृगशिर (१)	व0	–
केतु व0	मिथुन	05:10:35	मृगशिर (४)	त0ग्र0	दु0ग्रह	केतु व0	वृश्चिक	24:00:31	ज्येष्ठा (३)	व0	–
हर्षल	तुला	03:20:59	चित्रा (४)	–	–	हर्षल व0	मेष	12:34:30	अश्विनी (४)	व0	दु0ग्रह
नेपच्यून	वृश्चिक	14:20:41	अनुराधा (४)	–	शु0ग्र0	नेपच्यून	कुम्भ	24:36:59	पूर्वाभाद्रपद (२)		–
प्लूटो	कन्या	13:11:14	हस्त (१)	–	दु0ग्रह	प्लूटो	मकर	00:28:50	उत्तराषाढ़ (२)		ज्व0

Sample

लग्न कुण्डली

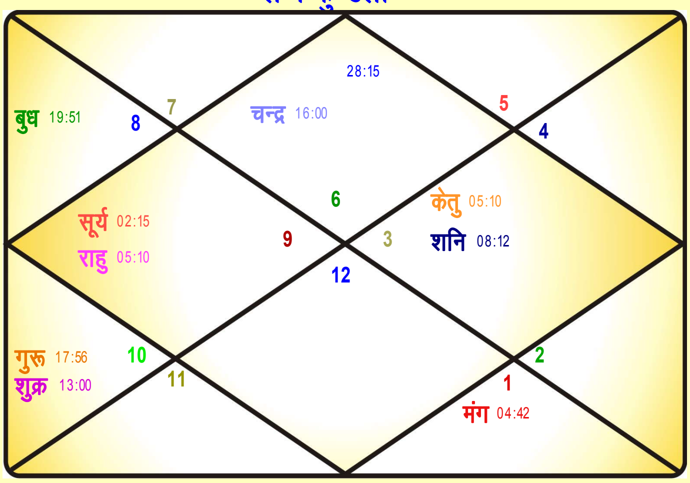

नवांश कुण्डली

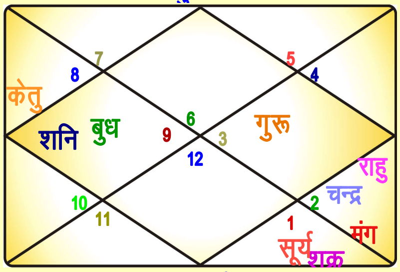

चन्द्र कुण्डली

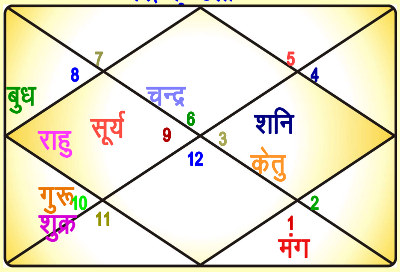

नवांश कुण्डली

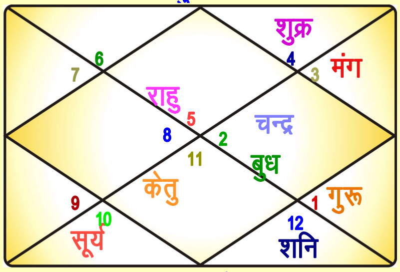

चन्द्र कुण्डली

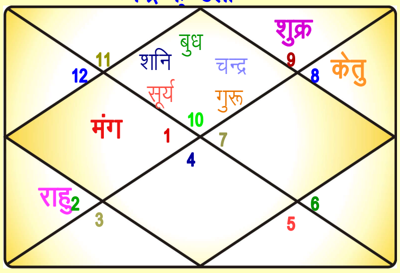

Transit

लग्न कण्डली

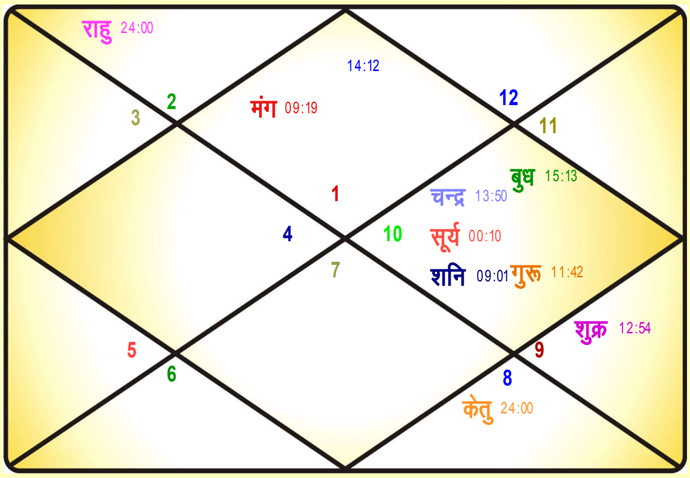

VBVCB CVBVCB VCBVCBCV CVBVCB

गोचर शनि

(शनि साढ़ेसाती)

द्वादशे जन्मगै राशौ द्वितीये च शनैश्चर।
सार्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुखैर्युतो भवेत।।

गोचर में जब शनि ग्रह, जन्म चन्द्र से बारहवें, पहले और दूसरे भाव में भ्रमण करता है, उस समय (लगभग साढ़े सात वर्ष तक) को शनि साढ़ेसाती के नाम से जाना जाता है।

शनि साढ़ेसाती का पहला चक्र

साढ़ेसाती चक्र	राशि में गोचर	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व-म-दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैया	सिंह	07:09:1977	04:11:1979	2 y.1 m.27 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से बारहवें)	सिंह	15:03:1980	27:07:1980	0 y.4 m.12 d.	
द्वितिय ढ़ैया	कन्या	04:11:1979	15:03:1980	0 y.4 m.10 d.	स्वर्ण
(जन्म चन्द्र से पहले)	कन्या	27:07:1980	06:10:1982	2 y.2 m.10 d.	
तृतिय ढ़ैया	तुला	06:10:1982	21:12:1984	2 y.2 m.15 d.	रूपया
(जन्म चन्द्र से दूसरे)	तुला	01:06:1985	17:09:1985	0 y.3 m.17 d.	
कंटक शनि	धनु	17:12:1987	21:03:1990	2 y.3 m.3 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से चौथे)	धनु	20:06:1990	15:12:1990	0 y.5 m.26 d.	
अष्टम शनि	मेष	17:04:1998	07:06:2000	2 y.1 m.21 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से आठवें)					

शनि साढ़ेसाती का दूसरा चक्र

साढ़ेसाती चक्र	राशि में गोचर	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व-म-दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैया	सिंह	01:11:2006	10:01:2007	0 y.2 m.9 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से बारहवें)	सिंह	16:07:2007	10:09:2009	2 y.1 m.25 d.	
द्वितिय ढ़ैया	कन्या	10:09:2009	15:11:2011	2 y.2 m.5 d.	स्वर्ण
(जन्म चन्द्र से पहले)	कन्या	16:05:2012	04:08:2012	0 y.2 m.19 d.	
तृतिय ढ़ैया	तुला	15:11:2011	16:05:2012	0 y.6 m.0 d.	रूपया
(जन्म चन्द्र से दूसरे)	तुला	04:08:2012	02:11:2014	2 y.2 m.28 d.	
कंटक शनि	धनु	26:01:2017	21:06:2017	0 y.4 m.24 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से चौथे)	धनु	26:10:2017	24:01:2020	2 y.2 m.29 d.	
अष्टम शनि	मेष	03:06:2027	20:10:2027	0 y.4 m.17 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से आठवें)	मेष	23:02:2028	08:08:2029	1 y.5 m.14 d.	

शनि साढ़ेसाती का तीसरा चक्र

साढ़ेसाती चक्र	राशि में गोचर	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व-म-दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैया	सिंह	27:08:2036	22:10:2038	2 y.1 m.25 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से बारहवें)	सिंह	05:04:2039	13:07:2039	0 y.3 m.8 d.	
द्वितिय ढ़ैया	कन्या	22:10:2038	05:04:2039	0 y.5 m.13 d.	स्वर्ण
(जन्म चन्द्र से पहले)	कन्या	13:07:2039	28:01:2041	1 y.6 m.16 d.	
तृतिय ढ़ैया	तुला	28:01:2041	06:02:2041	0 y.0 m.9 d.	रूपया
(जन्म चन्द्र से दूसरे)	तुला	26:09:2041	12:12:2043	2 y.2 m.16 d.	
कंटक शनि	धनु	08:12:2046	06:03:2049	2 y.2 m.27 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से चौथे)	धनु	10:07:2049	04:12:2049	0 y.4 m.25 d.	
अष्टम शनि	मेष	07:04:2057	28:05:2059	2 y.1 m.20 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से आठवें)					

जातक से संबंधित सामान्य भविष्यफल

सामान्य विशेषताएं :

आपकी लग्न राशि कन्या है। इस राशि को भौतिक, सामान्य या लचीली राशि के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। अन्य कई नैसर्गिक गुणात्मक विशेषताएं भी इसमें विद्यमान हैं। यह नीरस और मानवीय प्रकृति की राशि है।

इस लग्न में जन्म लेने के कारण, आप मेधावी, अध्ययनशील और विनोदपूर्ण प्रकृति के होंगे। आपके कार्य करने के तरीके बहुत नियमबद्ध और सुव्यवस्थित होंगे, आप बहुत ज्ञानी व्यक्ति होंगे– निपुणता प्राप्त करने के उद्देश्य से आप सदैव ज्ञान की खोज में लगे रहेंगे। आपका झुकाव निरन्तर अनौपचारिक अध्ययन अथवा अनुसंधान की ओर बना रहेगा, तंत्र–मंत्र और इससे संबंधित विषयों में भी आपकी रूचि हो सकती है। आपमें धैर्य व दृढ़ता का भण्डार हो सकता है।

आपको कला और साहित्य में भी काफी रूचि हो सकती है। सामान्यतः अपने सभी मामलों में आप आदतनआलोचक और सख्त होंगे, तो भी आप कोमल वाणी, व्यावहारिक, परोपकारी और विवेकपूर्ण प्रकृति के होंगे। आप सादा जीवन और उच्च विचार में विश्वास रखेंगे और बहुत विवेकपूर्ण ढंग से अपने मौद्रिक मामलों का प्रबन्ध करेंगे। आप विचित्र वस्तुओं के उत्साही संग्रहकर्ता हो सकते हैं– संभवतः जिसने आपके जीवन के किसी समय के दौरान आपकी कल्पना को आकर्षित किया हो, लेकिन किसी भी संग्रहित वस्तु सेअलग ना होने की आपकी एक विचित्र आदत हो सकती है।

शारीरिक संरचना :

आप गौर वर्ण के हो सकते हैं। आप मध्यम कद और गोल चेहरे व सुगठित छरहरी शारीरिक संरचना वालेहो सकते हैं। आपकी आँखें सुन्दर होंगी। आपकी आवाज कुछ–कुछ तेज हो सकती है। साथ ही आपकुछ हद तक अस्थिर मस्तिष्क वाले हो सकते हैं और बढ़ती उम्र के साथ उदास प्रवृत्ति अपना सकते हैं।

मानसिक स्थिति :

आपकी कुण्डली में चंद्रमा कन्या राशि में स्थित है– जो कि बुध द्वारा संचालित है। यह एक साधारण, नकारात्मक और भौतिक राशि है। आप शांत, मनमौजी और कुछ–कुछ ढुलमुल प्रकृति के होंगे, किन्तु आप बहुत ज्यादा महात्वाकांक्षी नहीं हो सकते हैं, आपमें डींग हाकने वाली आदतें बिल्कुल नहीं होंगी और आप मिथ्याभिमान से सदैव घृणा करेंगे। यद्यपि आपकी बौद्धिक क्षमता काफी ऊँची होगी और आप बौद्धिक कार्योमें संलग्न रहेंगे, तो भी आप उत्तरदायित्वपूर्ण एवं किसी के अधीन तक भी रहकर काम करना पसन्द कर सकते हैं। ऐसा आप अपने जीवन में शांति की कीमत व महत्ता को बढाने के लिए करेंगे और अनावश्यक तनावों से सदैव दूर रहना चाहेंगे।

आपको अपने घर से काफी लगाव होगा और आपके प्रिय पारिवारिक जन आपके जीवन को बहुत आनन्दमय व खुशहाल बनाएंगे। कृषि, कृषि संबंधी उत्पाद, दवाएं, औषधि, भोज्य–पदार्थ, बेकरी, मिष्ठान–भंडार, घरेलू उपभोग की वस्तुएं और अन्य घरेलू उपकरण आपको अपेक्षाकृत अधिक आकर्षित करेंगे। आपका अपने सहकर्मियों, वरिष्ठों व अधीनस्थों के साथ समान रूप से सौहार्दपूर्ण संबंध होगा और यदि आपका कोई घरेलू नौकर है, तो उसका व्यवहार भी आपके प्रति बहुत अच्छा होगा एवं आपको बहुत सम्मान देगा। फुर्तीला व चौकन्ना रहना आपका सहज स्वभाव होगा, साथ ही आप कुछ हद तक

रहस्यात्मक भी हो सकते हैं– जो कि आपको असाधारण रूप से सहनशील बनाएगा। पारिवारिक भाग्य का अत्यधिक पतन, या जटिल घरेलू विवाद, अथवा अन्य प्रकार का थोपा हुआ अवरोध या प्रारम्भिक जीवन के अभाव आपको कुछ हद तक अन्तर्मुखी या एकान्तप्रिय बना सकते हैं।

आप विश्लेषण–विज्ञान का औपचारिक अध्ययन कर सकते हैं, किन्तु कला–कौशल में भी आपकी उतनी ही रूचि होगी– आपको ना केवल सैद्धान्तिक विषय–सामग्री के अध्ययन की तीव्र इच्छा होगी, बल्कि आप प्रयोगात्मक पक्ष या व्यावहारिक दृष्टिकोण में भी रूचि रखेंगे– जिसको आप अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण समझेंगे। आप अपने खुद के कुछ मौलिक निष्कर्ष निकाल सकते हैं अथवा कुछ तथ्यों की खोज कर सकतेहैं या कुछ उपकरणों का अविष्कार कर सकते हैं– जो कि सांसारिक गतिविधियों में उपयोगी साबित होगी। जैसे–जैसे समय व्यतीत होगा, आपकी परिपक्वता व योगदान की क्षमता में वृद्धि होगी, आपमें जोशपूर्ण व हंसमुख प्रकृति का विकास होगा, बातचीत करने में कुशल और रमणीय संकेत करने में माहिर होंगे। संभवतः कुछ अन्तर्देशीय दूरस्थ स्थानों या विदेशों की भी यात्रा कर सकते हैं– शैक्षणिक या सांस्कृतिक उद्देश्य से।

सकारात्मक गुण :

आपमें विश्लेषण करने की अनोखी क्षमता विद्यमान होगी। आप बुद्धिमान और धारणशील स्मृति वाले होंगे। आप लड़ाई–झगड़ों से दूर रहने का प्रयास करेंगे और शांति व एकता आपको पसन्द होगी। आप बहुत नियमबद्ध ढंग से कार्य करेंगे। आपको कई क्षेत्रों का ज्ञान होगा। आप विवेकशील होंगे और व्यर्थ में धन खर्च नहीं करेंगे। आपको कला और संगीत में रूचि होगी।

नकारात्मक गुण :

आप भ्रमित और अस्थिर दिमाग वाले हो सकते हैं। आपमें आत्म–विश्वास की कमी हो सकती है। आप यथार्थवादी नहीं हो सकते हैं और अज्ञात सपनों के पीछे भाग सकते हैं।

विशिष्ट गुण :

1– आप बुद्धिजीवी और अत्यंत ग्रहणशील व्यक्ति होंगे।
2– आप कर्तव्यनिष्ठ और अपने कार्यों में बहुत व्यवस्थित होंगे। आप प्रत्येक क्षण के बारे में विचार करेंगे।
3– आप विनम्र, धार्मिक और मधुर वाणी वाले व्यक्ति होंगे।

ब्यवसाय :

आप एक सफल परामर्शदाता, वकील, चिकित्सक, शिक्षक, प्राध्यापक, सांख्यिकीविद, कम्प्यूटर प्रोग्रामर, गणितज्ञ, लेखाकार, गायक, लेखक, प्रबन्धक हो सकते हैं। आप परिवहन, यात्रा, टेलिफोन, आभूषण के व्यवसाय से लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

शुभ और अशुभ ग्रह :

1– दूसरे व नौवें भाव का स्वामी शुक्र, शुभ है।
2– लग्नेश बुध, सर्वाधिक शुभ

है।

3– सातवें भाव का स्वामी बृहस्पति, मारकेश है।

4– चंद्रमा अशुभ है।

5– तीसरे व आठवें भाव का स्वामी मंगल, सर्वाधिक अशुभ है।

6– सूर्य और शनि तटस्थ हैं।

कन्या लग्न से संबंधित महत्वपूर्ण व्यक्ति :

क्रिकेटर– अजहरूद्दीन, सचिन तेंदुलकर, वेंकटेश प्रसाद, उद्योगपति– लाला चैतराम, वैल्स की राजकुमारी–प्रिंसेज़ डायना, यू. एस. ए. के पूर्व राष्ट्रपति– जॉन एफ. केनेडी, बिल क्लींटन, भारत के पूर्व राष्ट्रपति– डॉ. राधाकृष्णन, पूर्व प्रधानमंत्री– राजीव गांधी, पी. वी. नरसिंह राव, टेनिस खिलाड़ी– लिएन्डर पेस।

कुण्डली में लागू होने वाले ग्रह योग (ग्रहयुति)

कुण्डली में लागू होने वाले महत्वपूर्ण योग –

आपकी जन्मकुण्डली में, चतुर्थेश नीच का है या एक शत्रु की राशि में स्थित है अथवा एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ संबद्ध है या एक बुरे षष्ठीआंश में स्थित है। यह योग काफी प्रतिकूल है, इसे बन्धुभिसत्याक्त योग कहा जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुंछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो इस योगके होने के कारण आपके संबंधियों और मित्रों द्वारा जीवन में कभी आपका परित्याग किया जा सकता है– भले ही आपकी कोई छोटी गलती हो या वास्तव में कोई गलती ना हो।

आपकी जन्मकुण्डली में, पंचमेश बलशाली नहीं है– उच्चस्थ या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में नहीं होने केकारण। इसके अतिरिक्त, यह एक केन्द्र या त्रिकोण भाव में स्थित है। इस विशिष्ट योग को एक–पुत्र योग कहा जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव मौजूद नहीं हैं, तो आपको केवल एक संतान की प्राप्ति हो सकती है– जिसके पुत्र होने की संभावना अत्यधिक है।

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वितीयेश की चतुर्थेश के साथ युति है या उसपर इसकी दृष्टि है, जबकि इन दोनोंग्रहों में से कोई भी ग्रह अस्त या ग्रसित नहीं है। यह एक अनुकूल योग है, इसे मातृ मूलत धन योग कहा जाता है। इस योग के होने के कारण, आपको अपनी माता से आर्थिक लाभ प्राप्त होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति और शुक्र की पांचवें भाव में युति है। पांचवें भाव में कोई नैसर्गिक अशुभ ग्रह ना तो स्थित है और ना ही दृष्टि डाल रहा है। यह एक अनुकूल योग है, इसे अपत्य सुख योग कहा जाता है। इस योग के होने के कारण, आप योग्य संतानों की प्राप्ति के संदर्भ में विशेष रूप से भाग्यशाली होंगे– जो आपके परिवार के लिए सदैव गर्व व आनन्द का स्रोत बनेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, विवाह का नैसर्गिक कारक (शुक्र) वक्री या अस्त या ग्रसित नहीं है। इसके अतिरिक्त, इसकी सर्वोत्तम नैसर्गिक शुभ ग्रह (बृहस्पति) के साथ युति है या इसकी उस पर दृष्टि है। यह एक अनुकूल योग है, इसे सत कलत्र योग कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग के होने के कारण,आप जीवनसाथी प्राप्त करने के मामले में वास्तव में बहुत भाग्यशाली होंगे– जो एक कुलीन परिवार से होंगी और सदगुणों व विशेषताओं की प्रतिमूर्ति होंगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वितीयेश की एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ युति है तथा यह एक केन्द्र या त्रिकोण भाव में स्थित है। यह समग्र योग बहुत अनुकूल है, इसे युक्ति समन्वित वाग्मि योग कहा जाता है।आप वाक्पटुता की प्रतिभा से सम्पन्न होंगे तथा अपनी अकाट्य तर्कशक्ति और भाषण दक्षता के कारण सुविख्यात होंगे। अत्यधिक संभावना है कि आप सभाओं में अपनी चमक बिखेर सकते हैं और ख्याति अर्जितकर सकते हैं।

कुण्डली में लागू होने वाले धन योग –

आपकी जन्मकुण्डली में, आठवें भाव का स्वामी मजबूत स्थिति में है, आप आर्थिक रूप से सम्पन्न होंगे। इसके अतिरिक्त, आपको एक लाभप्रद पद प्राप्त होने की बहुत अधिक संभावना है एवं नौकरी में उत्तम स्थान प्राप्त करेंगे– आपके कार्य का कोई संबंध बीमा, प्रॉविडेन्ट फंड, कर संग्रह आदि से हो सकता है। याफिर, आपको अपने जीवनसाथी या व्यावसायिक साझेदार से आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है। या फिर, आप अपना स्वयं का उपक्रम प्रारम्भ करने के लिए कुछ प्रमुख वित्तीय संस्थानों से ऋण के रूप में बड़ी मात्रा में धन प्राप्त कर सकते

हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, एक अत्यंत शुभ योग मौजूद है। अपने स्वयं के प्रयत्नों को निर्देशित करके तथा अपनी इच्छाशक्ति के वास्तविक शक्ति के आधार पर आप अपने समकालीनों से बहुत आगे निकल जाएंगे। आपकी सभी महात्वाकांक्षाएं फलीभूत होंगी और आपकी अभिलाषित इच्छाएं पूर्ण होंगी। आपके आस–पास के लोग आपको एक अनुकरणीय व्यक्ति तथा एक प्रेरणादायक स्रोत के रूप में मानेंगे। आप अपने जीवनसाथी, संतानों, संबंधियों और मित्रों के साथ समृद्धिपूर्ण और खुशहाल जीवन व्यतीत करेंगे।

जैसाकि आपकी जन्मकुण्डली में, लग्नेश की बृहस्पति के साथ युति है– जो कि एक अनुकूल स्थिति में है।एक शुभ योग का निर्माण हो रहा है। आप धन संबंधी मामलों में भाग्यशाली होंगे, अत्युत्तम आय होगी तथा निश्चित रूप से बहुत धनवान होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, चतुर्थेश द्वितीयेश के साथ संबद्ध है (या इस पर उसकी दृष्टि है)– जबकि इन दोनों ग्रहों में से कोई भी ग्रह किसी प्रकार से पीड़ित नहीं है। आप अपनी माता के संबंध में भाग्यशाली होंगे तथा उनसे आपको धन–सम्पदा की प्राप्ति होगी। आपको अपने संबंधियों तथा कृषि से भी लाभ मिलेगा।

जैसाकि आपके ग्यारहवें भाव में एक जल तत्व की राशि स्थित है। आपको अपने पैतृक/जन्म स्थान से उत्तर दिशा में स्थित स्थानों पर/से उत्तम लाभ प्राप्त हो सकता है।

कुण्डली में लागू होने वाले वित्तहानि योग –

जैसाकि आपकी जन्मकुण्डली में, एक घोर अशुभ ग्रह आपके आठवें भाव में स्थित है– जो कि किसी शुभ ग्रह से प्रभावित नहीं है। यद्यपि आप काफी सम्पन्न होंगे, तो भी आपको बहुत सावधान और सतर्क रहना चाहिए एवं अनावश्यक रूप से अत्यधिक जोखिम नहीं उठाना चाहिए। आपको गम्भीर प्रकार की अशुभ घटना का सामना करना पड़ सकता है। इस बात की भी संभावना है, कि आप किसी अन्य व्यक्ति/व्यक्तियों को गंभीर चोट पहुंचा सकते हैं– जिसके लिए आपकी पेशी हो सकती है या दंडित तक किया जा सकता है।

कुण्डली में लागू होने वाले नभष योग –

आपकी कुण्डली में दामिनी योग नामक एक नभश योग मौजूद है। यह एक प्रशंसनीय ग्रह स्थिति है। आपबहुत समृद्ध होंगे, पूर्णतः सभ्य प्रकृति, धैर्यवान और बहुत विद्वान होंगे। आप उदार प्रवृति वाले होंगे तथासदैव दूसरों के प्रति करूणा का भाव रखेंगे। आप जानवरों के प्रति दयालु होंगे एवं उनकी किसी प्रकारसे सेवा भी करेंगे। आप पारम्परिक धार्मिक रीतियों का निर्वाहन करेंगे, सुखमय व शांतिपूर्ण वैवाहिक जीवन का आनन्द लेंगे तथा आपकी संतानें योग्य और कर्तव्यनिष्ठ होंगी। आपका नाम व यश दूर–दूर तकफैलेगा।

कुण्डली में लागू होने वाले अरिष्ट योग –

आपकी जन्मकुण्डली में, सूर्य और राहु आपके चौथे भाव में स्थित हैं– जबकि इनमें से कोई भी उच्चस्थ याअपने भाव में स्थित नहीं है। यह एक प्रतिकूल योग है– इसे अरिष्ट योग कहते हैं। आपके पिता को आपके जन्म के आस–पास किसी समय कष्ट सहन करना पड़ा होगा तथा उनका स्वास्थ्य व सुख आपके पारिवारिक सदस्यों की गंभीर चिन्ता का कारण बना होगा। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल

संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आपके पिता की सोच उनके जीवनकाल में किसी समय कुछ–कुछभ्रमित हो सकती है।

कुण्डली में लागू होने वाले रवि योग –

जैसाकि एक ग्रह (चंद्रमा के अलावा) सूर्य से दूसरे भाव में उपस्थित है तथा ऐसा ही एक ग्रह सूर्य से बारहवें भाव में भी स्थित है। इससे उभयचारी योग नामक ग्रह स्थिति उत्पन्न होती है। इसके अतिरिक्त, जैसाकि ये दोनों ही ग्रह नैसर्गिक शुभ ग्रह हैं, अतः यह योग बहुत शुभ होगा, क्योंकि सूर्य आपकी कुण्डलीमें शुभ–करतरी योग में है। इस समग्र योग को उभयचारी शुभ करतरी योग कहा जाता है। जैसाकि यह योग अनेक अनुकूल परिणामों और शुभ घटनाओं का सूचक है, आपका जन्म एक धनी परिवारमें हुआ है, और आप निश्चित रूप से अपने जीवन में काफी कम आयु में ही एक विशिष्ट स्थान तकपहुंचेंगे। आप सरकारी स्रोतों से लाभ प्राप्त करेंगे, जीवन की सभी प्रकार की सुख–सुविधाओं का आनन्दलेंगे तथा आपका नाम व यश दूर–दूर तक फैलेगा।

ग्रहों के गोचर से भविष्यफल

गोचर कुण्डली में सूर्य आपकी जन्मकुण्डली के चन्द्र राशि से पांचवें भाव में भ्रमण कर रहा है। यह सूर्य का सबसे अशुभ गोचर है, आपको बहुत ही सतर्क एवं सावधान रहने की जरूरत है। आपके कार्य स्थल परस्थितियां पूर्णतया आपके विपरीत होंगी और आपको मानसिक कष्ट पहुँचा सकती हैं। अगर गोचर कुण्डली में दूसरे अन्य ग्रह भी शुभ स्थिति में नहीं हैं तो आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है और आप अपने किये हुए वादों को न निभा पाने की वजह से अपमानित महसूस कर सकते हैं। यह गोचर आपकी संतानों के लिए भी शुभ नहीं है, उनमें से किसी एक का स्वास्थ्य आपके लिए चिन्ता का कारण बन सकता है।

माघ महीने के दौरान सूर्य इस गोचर कुण्डली में होगा (14–15 जनवरी से 13–14 फरवरी तक)।

चन्द्रमा गोचर कुण्डली में अपनी राशि से पांचवें भाव में भ्रमण कर रहा है। यह गोचर अधिक लाभदायक नहीं है और एक–दो दिन के लिए समय आपके लिए प्रतिकूल हो सकता है। आपको पूंजी निवेश में घाटा हो सकता है या अपनी संतानों के व्यवहार या क्रिया–कलापों से परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। अगर आप किसी प्रेम–प्रसंग में पड़े हैं तो आपकी प्रेमिका मनमौजी हो सकती हैं और आपके भावनाओं को चोट पहुँचा सकती हैं। अगर आप किसी पिकनिक या कम दूरी की यात्रा पर जा रहे हैं, तो यह आपकेलिए सुखद अनुभव नहीं हो सकता है।

मंगल गोचर कुण्डली में आपकी जन्मकुण्डली के चन्द्र राशि से आठवें भाव में भ्रमण कर रहा है। यह गोचरबहुत शुभ नहीं है। आपको व्यस्त मार्गों से गुजरते समय अथवा आग या किसी चलते हुए मशीन के पास काम करते समय सचेत और सावधान रहने की जरूरत है। आपकी शारीरिक स्थिति भी ठीक नहीं होसकती है और आप बुखार अथवा खून से होने वाली बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। आपको अपनी आर्थिक स्थिति में भी भारी उतार–चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है। अगर आपकी कुण्डली में कोई अशुभ ग्रह इसी गोचर से भ्रमण कर रहा है, तो आपकी विश्वसनीयता और मान–सम्मान को ठेस पहुँच सकती है।

गोचर कुण्डली में बुध आपकी जन्मकुण्डली के चन्द्र राशि से पांचवें भाव में भ्रमण कर रहा है। यह एक शुभगोचर नहीं है। आपको अति उत्साह से कार्य नहीं करना चाहिए। कहीं निवेश करते समय या उधार देते समय आपको कई बार सोच–विचार करना चाहिए, अन्यथा हानि सुनिश्चित है। आपकी संतान आपके लिए चिन्ता के कारण होंगे और जीवनसाथी के व्यवहार से आप नाखुश हो सकते हैं। आप अपने–आप कोकाफी परेशान महसूस कर सकते हैं, जिससे मनोरंजन के लिए कहीं बाहर जाने पर भी आप आनन्द से परे रह सकते हैं।

गोचर कुण्डली में बृहस्पति आपकी जन्मकुण्डली के चन्द्र राशि से पांचवें भाव में भ्रमण कर रहा है। यह बहुत ही शुभ गोचर है। बृहस्पति का गोचर आपको कई तरह से फायदा पहुँचायेगा। आप कई मामलों में भाग्यशाली साबित होंगे। आपकी कुछ हार्दिक अभिलाषायें पूरी होंगी। आप प्रभावशाली व्यक्तियों का सहयोग पायेंगे। आपको नई नौकरी प्राप्त हो सकती है अथवा आपकी पदोन्नति हो सकती है। अगर आपका कोई प्रेम–प्रसंग है तो आप दोनों एक दूसरे के करीब आयेंगे। अगर आप विवाहित हैं तो आपको संतान की प्राप्ति हो सकती है। यदि आपकी कोई औलाद है तो वो अपने कार्यों से आपको खुशियां प्रदान करेगी।

गोचर कुण्डली में शुक्र आपकी जन्मकुण्डली के चन्द्र राशि से चौथे भाव में भ्रमण कर रहा है। यह गोचर अत्यन्त शुभ है और आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। आपको एक से अधिक स्रोतों से धन की प्राप्ति

होगी और आपका घरेलू जीवन सुखमय और शांतिमय होगा। आपके परिवार में कोई शुभ आयोजन या मिलन हो सकता है, जिसकी वजह से आपका घर खुशियों से भरा होगा। आपका दिमाग, यादाश्त, सोच, बौद्धिक क्षमता तथा निर्णय क्षमता काबिले तारीफ होगी।

गोचर कुण्डली में शनि आपकी जन्मकुण्डली के चन्द्र राशि से पांचवें भाव में भ्रमण कर रहा है। यह एक अशुभ गोचर है। आपको जीवन के कई क्षेत्रों को प्रभावित करने वाली कुछ समस्याओं और असुविधाओं से सामना करना पड़ सकता है। आपके जीवनसाथी मिजाजी और प्रत्याशित व्यवहार करने वाली हो सकती हैं,जबकि आपकी संतानों का स्वास्थ्य आपके लिए चिन्ता का कारण हो सकता है। अगर आप किसी शैक्षणिक या बौद्धिक कार्य में लगे हैं तो आपकी उन्नति बाधित हो सकती है या तात्कालिक विराम भी लगसकता है। पेशे से आपकी आय तथा अन्य स्रोतों से लाभ कम हो सकता है। संभावित हानि से बचने के लिए आपको यह सलाह दी जाती है कि निवेश से दूर रहें।

गोचर कुण्डली में राहु आपकी जन्मकुण्डली के चन्द्र राशि से नौवें भाव में भ्रमण कर रहा है। यह राहु का सबसे अशुभ गोचर है और आपको बहुत ही सावधान और सचेत रहना चाहिए। किसी अप्रत्याशित परिस्थितिवश, दूरस्थ बैठे किसी व्यक्ति से आपकी अपेक्षायें खत्म हो सकती हैं। इसके अलावा, आपको कुछनिराशा हो सकती है और अनिश्चिततायें आपकी संभावनाओं को धुंधली कर सकती है। यदि अन्य ग्रह भी शुभ गोचर कुण्डली में नहीं हैं, तो आपको हानि उठानी पड़ सकती है और सबसे बुरी संभावना है कि आप अनर्थ घटना, राजनैतिक या सामाजिक अशांति या सरकारी नीतियों में अचानक बदलाव के शिकार होसकते हैं।

गोचर कुण्डली में केतु आपकी जन्मकुण्डली के चन्द्र राशि से तीसरे भाव में भ्रमण कर रहा है। यह एक शुभ गोचर है। आपका जीवन सुखमय और खुशियों से परिपूर्ण होगा। आप काफी साहसी, सक्रिय और उत्साही होंगे। आप कोई नया कार्य शुरू करेंगे और उसे समय पर सफलतापूर्वक समाप्त भी करेंगे। अपने पेशे से संबंधित आपको निकट स्थानों की छोटी–छोटी यात्रायें करनी पड़ सकती हैं और आप बहुत सारे नये लोगों से मिलेंगे, जिनसे भविष्य में आपको लाभ प्राप्त होगा। अगर आप ठेकेदार या कोई ऐजेन्ट या आपूर्तिकर्ता हैं तो आपको बहुत सारे नये मौके प्राप्त होंगे।

लाल किताब में गोचर शनि (शनि साढेसाती) का फल और उपाय

द्वादशे जन्मगै राशौ द्वितीये च शनैश्चर।
सर्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुखैर्युतो भवेत।।

(गोचर में जब शनि ग्रह, जन्म चंद्र से बारहवें, पहले और दूसरे भाव में भ्रमण करता है, उस समय (लगभग साढ़े सात वर्ष तक) को शनि साढ़ेसाती के नाम से जाना जाता है।)

(सामान्यतः यह माना जाता है, कि शनि की साढ़ेसाती के दौरान जातक मानसिक कष्ट, शारीरिक कष्ट एवंआर्थिक संकट से गुजरता है। साढ़ेसाती से लोग चिन्तित हो जाते हैं एवं उनके मन में एक अनजाना साडर बना रहता है। जातक में असंतोष, निराशा, आलस्य, तनाव, रोगों से हानि, चोरी या आगजनी से हानि, घर में विवाद या किसी पारिवारिक सदस्य की मृत्यु आदि जैसे फल प्राप्त होने का डर बना रहता है। लेकिन हकीकत में साढ़ेसाती के किसी चरण का पूरा समय– साढ़े सात साल– ऐसा नहीं होता है। काफी शुभ फल जैसे विवाह, संतानोत्पत्ति, नौकरी या व्यवसाय में उन्नति, विदेश यात्रा, भूमि, भवन या वाहनका क्रय, कर्ज से मुक्ति, उंचे तबके के लोगों से संपर्क और उनसे लाभ, धार्मिक स्थलों की यात्रा या धार्मिक कार्यों का आयोजन, संतानों से सुख एवं खुशी आदि भी प्राप्त होते हैं।)

शनि साढेसाती के प्रथम चक्र का विवरण

प्रथम ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से बारहवें) का फल

गोचर राशि –सिहं

Start -07:09:1977

End -04:11:1979

Duration -2 y.1 m.27 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -15:03:1980

End -27:07:1980

Duration -0 y.4 m.12 d.

आपके लिए यह चरण घातक हो सकता है। इस चरण के आरम्भ से ही आपको मानसिक तनाव रह सकता है। तनाव का कारण आपका संतान पक्ष हो सकता है। आपकी संतान आपके हर काम का विरोध करेगी। आपके लिए नित्य नई समस्यायें पैदा करेंगी। आप अपनी संतान की बीमारी पर भी काफी पैसा खर्च कर सकते हैं। आप अपने कार्यों से अपनी संतान के कार्यों में बाधायें उत्पन्न कर सकते हैं। आपकी संतान आपके विचारों से सहमत नहीं हो सकती है। अपनी संतान के कारण आपको कष्ट हो सकता है। आपको अपनी संतान पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

इस समय आपके शत्रु काफी सक्रिय होंगे एवं आपको हानि पहुंचाने की प्रयास करेंगे एवं अपने प्रयासों में वेसफल भी होंगे। आप कई अप्रत्याशित खर्चे कर सकते हैं, जिसकी आपको उम्मीद भी नहीं होगी। आप कई लम्बी यात्राएं कर सकते हैं, जिनसे कोई लाभ होने की संभावना नहीं है। नित्य नई आने वाली परेशानियों के कारण धर्म एवं ईश्वर पर से आपका विश्वास उठ सकता है। इस समय आप ना किसी को उधार दें और ना उधार लें, इससे कई समस्याओं से बच सकते हैं। आप उदर कष्ट एवं त्वचा संबंधित ऐसे

रोगों से पीड़ित हो सकते हैं, जो लम्बे समय तक चल सकते हैं। भाग्य आपका साथ नहीं दे सकता है।

आपको मानसिक रूप से मजबूत बनना चाहिए। भावना में बहकर कोई ऐसा काम ना करें, जिससे आपको अपमानित होना पड़े। आपके मामा–मौसी को भी कई समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपके कार्यों में काफी बाधायें आ सकती हैं। आप आर्थिक रूप से इतने परेशान हो सकते हैं, कि धनोपार्जन के लिए किसी दूसरे शहर में जा सकते हैं, लेकिन वहां भी आपको सफलता प्राप्त नहीं हो सकती है। आप भोग–विलास एवं परिधान पर काफी खर्च कर सकते हैं। यदि आपकी आयु 30 से 46 के मध्य है, तो आपको पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। मानसिक रूप से परेशान रहने के कारण आपका मस्तिष्क सही दिशा में कार्य नहीं कर सकता है। खुद को सफल करने के लिए आप फालतू के कार्यों पर अत्यधिक खर्चे कर सकते हैं, जिसका आपको बाद में पछतावा हो सकता है।

इस चरण के मध्य में आपको कुछ आराम मिल सकता है। आप अपनी मनोशक्ति के बल पर कुछ सफलताएं प्राप्त कर सकते हैं। कुछ समय के लिए आपकी आर्थिक स्थिति भी सुधर सकती है और आपके कुछ बिगड़े काम बन सकते हैं। लेकिन यह समय थोड़ी देर के लिए ही आएगा। इसके बाद आपके शत्रु पहले की तुलना में अधिक सक्रिय होंगे और आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे, लेकिन वे सफल नहीं हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपके अधिकारी आपसे नाराज रह सकते हैं और आपको कष्ट पहुंचने का प्रयास कर सकते हैं। अपको सतर्क रहना चाहिए और अतिविश्वास में नहीं आना चाहिए। अतिविश्वास के कारण आप चोरी के शिकार हो सकते हैं, विशेषकर यात्रा के दौरान। इस समय आपको अपने ही कामों से अधिक हानि हो सकती है। अपने भाइयों से बंटवारा भी हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है, तो अशुभ फलों में कुछ कमी हो सकती है। चरण के अन्त समय में लाभ के मौके प्राप्त होंगे, उनका पूरा फायदा उठायें।

द्वितिय ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से पहले) का फल

गोचर राशि –कन्या

Start -04:11:1979

End -15:03:1980

Duration -0 y.4 m.10 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -27:07:1980

End -06:10:1982

Duration -2 y.2 m.10 d.

यह चरण आपके लिए घातक हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है,तभी आपको कुछ शुभ फल प्राप्त हो सकता है। इस चरण की शुरूआत से ही आपको अशुभ संकेत मिलने लगेंगे। आप मानसिक रोग, उन्माद, चर्मरोग, वात आदि से पीड़ित रह सकते हैं। यदि बचपन में ही यह चरण आता है, तो आपको बालारिष्ठ हो सकता है। आपकी चिन्ता खत्म भी नहीं होगी, कि दूसरी नई चिन्ता आपके सामने होगी। आप मानसिक रूप से व्यथित हो सकते हैं एवं भले–बूरे की पहचान खो सकतेहैं। काम–वासना आप पर हावी रहेगा। इसके लिए आप किसी भी हद तक जा सकते हैं और समाजमें अपमानित हो सकते हैं। आप काफी स्वार्थी हो सकते हैं और हर काम में पहले अपना स्वार्थ देखेंगे।

यदि इस समय आपकी आयु 34 से 47 वर्ष के मध्य है, तो आपको अधिक कष्ट प्राप्त हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आप नित्य नई समस्याओं का सामना कर सकते हैं। आपके सहयोगी आपके

खिलाफ हो सकते हैं और आपकी शिकायत वरिष्ठ अधिकारियों से कर सकते हैं। इससे आपके वरिष्ठ अधिकारी भी आपसे नाराज हो सकते हैं और आप पर कोई कार्यवाई कर सकते हैं। परेशानी में आप कोई गलत काम कर सकते हैं और आपको स्थानान्तरित या निष्कासित किया जा सकता है। आपको हर काम सोच–विचार कर ही करना चाहिए, अन्यथा समस्या से घिर सकते हैं। आपके कई कार्य बनते–बनते बिगड़सकते हैं। आपको अपनी वाणी पर संयम एवं क्रोध पर नियंत्रण रखना चाहिए।

आपको पूजा–पाठ की तरफ अपना मन लगाना चाहिए। यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आग या चोरी के माध्यम से आपको हानि होने की संभावना है। आपका पैसा व्यापार में फँस सकता है। पैसा मांगने पर लोगटाल–मटोल कर सकते हैं। धीरे–धीरे व्यापार में हानि बढ़ती जाएगी और आपका मन व्यापार से हट सकता है। आपके कुछ सहयोगी भी शत्रुता निभाने की ताक में हो सकते हैं, इसलिए आप सावधान रहें। ईश्वर की आराधना करें। इस समय आपके व्यवसाय पर कोई सरकारी छापा पड़ सकता है और आप पर आर्थिक दण्ड लग सकता है। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं, तो आपके साझेदार आपको धोखा दे सकते हैं। मानसिक परेशानियों के कारण आप अपने व्यवसाय पर ठीक से ध्यान नहीं दे पायेंगे, जिसका फायदा आपके कर्मचारी चोरी आदि कर के उठा सकते हैं।

आपके पिता कुछ अस्वस्थ हो सकते हैं, और उनकी शल्य क्रिया होने की भी कुछ संभावना है। आपको संचार के माध्यम से कुछ अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है, जिससे आप अधिक परेशान हो सकते हैं। अपने किसी मित्र से लिया कोई पुराना कर्ज आप चुकाने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण आप इसमे सफल नहीं हो सकते हैं। इतना होने के बावजूद आपमें आत्मबल की कमी नहीं होगी। आपके शत्रु आपके लिए बाधायें उत्पन्न कर सकते हैं, लेकिन आप उनकी परवाह ना करते हुए काम में लगे रहें, आपको निश्चित रूप से सफलता प्राप्त होगी।

यदि आप पत्रकारिता, लेखन, समीक्षा या संपादन से संबंधित कार्य करते हैं, तो काफी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आपको दूसरे व्यक्तियों की सोच की चिंता नहीं हो सकती है। यदि आप चिकित्सा या केमिस्ट के क्षेत्र में हैं, तो इस समय आपको हानि हो सकती है। आपकी दी हुई दवा किसी को विपरित प्रतिक्रिया/रियेक्शन कर सकती है। विशेष सावधानी बरतें। यदि आप समाज सेवा या परोपकार में लिप्त हैं, तो आपको काफी उत्तम फल प्राप्त हो सकता है। आपको इस चरण के दौरान मानसिक स्थिरता बनाये रखनी चाहिए।

तृतिय ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से दूसरे) का फल

गोचर राशि –तुला

Start -06:10:1982

End -21:12:1984

Duration -2 y.2 m.15 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -01:06:1985

End -17:09:1985

Duration -0 y.3 m.17 d.

आपको इस चरण में मिश्रित फल प्राप्त होगा। फल का स्वभाव आपकी कुण्डली में चल रही महादशा पर अधिक निर्भर करेगा। शुरू में आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं, लेकिन बाद में शुभ फल प्राप्त होने लगेंगे। आप कोई भी काम काफी सोच–विचार के बाद ही करें। अपनी वाणी पर नियंत्रण रखें एवं कोई भीकाम जल्दबाजी में ना करें, हानि हो सकती है। आप पर काम का बोझ बढ़ सकता है, लेकिन यह

भविष्य के लिए फायदेमंद होगा। इस समय आपको धन लाभ हो सकता है। यदि आप पर कोई कर्ज है, तो आप उसे चुकाने में सक्षम होंगे। आप भूमि, भवन या वाहन खरीद सकते हैं। अपनी माता से कोई उपहार प्राप्त हो सकता है। अपने विरोधियों से सावधान रहें।

यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो अपनी मेहनत एवं दिमाग से तरक्की करेंगे। आपको अपने व्यवसाय में चोरी होने की काफी संभावना है। अपने कर्मचारियों से सावधान रहें। अधिक कार्यभार होने के कारण आप अपने परिवार पर पर्याप्त समय नहीं दे सकते हैं, जिसकी वजह से आपके परिवार वाले आपसे नाराज हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो मनचाहे स्थान पर अपना स्थानान्तरण करवा सकते हैं। आपके अधिकारी आपसे खुश रह सकते हैं, लेकिन आपके सहयोगी उन्हें भड़का सकते हैं। किसी भी कागज पर बिना पढ़े हस्ताक्षर ना करें। यदि आप आर्थिक लेन–देन के क्षेत्र में हैं, तो आपको काफी सावधान रहना चाहिए, आप पर रिश्वत का आरोप लग सकता है। नेताओं से दूर रहें, उन्हें किसी भी तरह से नाराज ना करें।

आप परोपकार एवं धार्मिक कार्यों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेंगे, जिससे आपको समाज में सम्मान मिलेगा। आपको धार्मिक साहित्य के अध्ययन में रूचि हो सकती है। आप धार्मिक स्थल की यात्रा भी कर सकते हैं।यदि आप अभी विद्यार्थी हैं, तो खूब मेहनत करें, अन्यथा परीक्षा में असफल हो सकते हैं। चरण के मध्य काल में आपकी माता अस्वस्थ रह सकती हैं, जिसकी वजह से आप काम पर ध्यान नहीं दे पाएंगे। इससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। कुछ समय बाद आपकी माता स्वस्थ हो जाएंगी और आप अपने काम पर पुनः ध्यान देने लगेंगे। अधिक कार्य होने के कारण आप घर पर समय नहीं दे पाएंगे, जिसकी वजह सेआपके जीवनसाथी नाराज हो सकते हैं। अतः परिवार पर भी पर्याप्त समय दें। इस समय आपकी आर्थिकउन्नति होगी। अपने मित्रों एवं रिश्तेदारों से मधुर संबंध बनाकर रखें। वाणी पर संयम बहुत जरूरी है। आपके शत्रु आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे, लेकिन वे सफल नहीं हो पाएंगे। आप उनकी परवाह ना करते हुए अपना काम करते रहें।

इस समय आप पैरों में दर्द से पीड़ित रह सकते हैं। अधिक मेहनत एवं भाग–दौड़ के कारण आपका शरीरकमजोर हो सकता है। वैसे तो आपको पैसे की कमी नहीं होगी, लेकिन आप हमेशा अधिक धन कमाने के बारे में सोचते रह सकते हैं। आप सुख की प्राप्ति के लिए इधर–उधर भटक सकते हैं और अपनेघर पर ध्यान नहीं दे सकते हैं। आप लोगों पर वर्चस्व पाने की कोशिश में लगे रहेंगे। धन कमाने के लिए आप किसी दूरस्थ स्थान या विदेश भी जा सकते हैं। आपको उंचाई से गिरने, वाहन से चोट, आग, बिजली या किसी जानवर से चोट का खतरा हो सकता है। आपको काफी सावधानी से काम करना चाहिएऔर ईश्वार का ध्यान करते हुए आगे बढ़ते रहना चाहिए।

कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे) का फल

गोचर राशि –धनु

Start -17:12:1987

End -21:03:1990

Duration -2 y.3 m.3 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -20:06:1990

End -15:12:1990

Duration -0 y.5 m.26 d.

इस चरण का फल आपके लिए काफी अशुभ हो सकता है। आपको एक साथ कई रोग हो सकते हैं। इन

रोगों के कारण आप काफी निराश हो सकते हैं। आपके पिता को भी कष्ट हो सकता है, जिससे आप परेशान हो सकते हैं। यदि किसी क्रूर/अशुभ ग्रह की दशा भी चल रही है, तो आप किसी नजदीकी का वियोग भी सह सकते हैं। संचार के माध्यम से कोई अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपके सहकर्मी आपके साथ शत्रुतापूर्ण व्यवहार कर सकते हैं। आप पर नित्य नए आरोप लग सकते हैं, जिसकी वजह से आप मानसिक रूप से काफी परेशान हो सकते हैं और अस्पताल में भी भर्ती होसकते हैं। आपकी नौकरी भी छूट सकती है।

आपका कोई पुराना शत्रु अचानक आपके सामने आ सकता है, जिसकी वजह से आप परेशन रह सकते हैं।इस समय कोई भी आपकी मदद को नहीं आएगा। आप कई प्रकार से हानि उठा सकते हैं और आर्थिकहानि हो सकती है। यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो आपका व्यवसाय बंद होने के कगार पर हो सकता है। यदि किसी शुभ ग्रह के प्रभाव से आपका व्यवसाय बच जाता है, तो भी हानि तो होनी ही है। शत्रु आपके व्यवसाय की बदनामी फैला सकते हैं। आपके किसी कर्मचारी को लालच देकर आपकी गुप्त सूचनाएं एकत्र कर सकते हैं और छापा पड़वाने में मुख्य भूमिका निभा सकते हैं। आपको सत्तापक्ष से भी हानि हो सकती है। आपका कोई भुगतान रूक सकता है। आप जो भी काम करें, सोच–समझ कर ही करें। अनुकूल समय का इंतजार करें एवं बुरे समय को ईश्वर का ध्यान करते हुए निकाल दें।

वाहन चलाते समय काफी सावधानी बरतें, दुर्घटना की संभावना हो सकती है। सिर में गंभीर चोट लगने कीअधिक संभावना है। आपके मामा या मौसी की ओर से आप पर कोई गंभीर आरोप लग सकता है, जिसकी वजह से आपकी माता को कष्ट हो सकता है। उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आपके जीवनसाथी का व्यवहार भी आपके प्रति परिवर्तित हो सकता है, जिसकी वजह से आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। आप गलत कार्यों की तरफ आकृष्ट हो सकते हैं। सत्तापक्ष से भी दण्ड मिल सकता है। इस चरण में आपके धनोपार्जन के सारे प्रयास विफल हो सकते हैं, और जो कुछ भी आप कमायेंगे वो सब भोग–विलास में गवां सकते हैं।

यदि आपकी आयु 34 से 47 वर्ष के मध्य है और राहु भी अशुभ है, तो आपको कारावास भी हो सकता है। यदि मंगल अशुभ है, तो किसी दुर्घटना में अपना कोई अंग भी गंवा सकते हैं। इस दौरान आप अपने भाइयों से अलग हो सकते हैं और जो कुछ धन बंटवारे से मिलेगा वो फालतू के कार्यों में खर्च कर सकते हैं। आप उचित निर्णय लेने में अक्षम हो सकते हैं। लोगों के प्रति आपका व्यवहार भी बदल सकता है, जिसकी वजह से आपके अपने लो भी आपसे बात करना पसंद नहीं कर सकते हैं। आपमें धर्म के प्रति आस्था कम हो सकती है। आपको धार्मिक कार्यों में मन लगाना चाहिए।

अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें) का फल

गोचर राशि –मेष

Start -17:04:1998

End -07:06:2000

Duration -2 y.1 m.21 d.

इस चरण का फल आपके लिए अधिक अशुभ नहीं हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में शनि किसी शुभभाव में बैठा है, तो आपको शुभ फल अधिक प्राप्त हो सकता है। आपको काफी शारीरिक कष्ट हो सकते हैं, जो कि मृत्युतुल्य हो सकते हैं। आपके भाई–बहनों को भी कष्ट हो सकता है। आप भी रोग ग्रस्त हो सकते हैं। अर्श, भगंदर आदि होने की अधिक संभावना है। आप निम्न तबके की महिलाओं के सम्पर्क में आ सकते हैं, जिससे आप समाज में अपमानित हो सकते हैं। आपको अपना चरित्र एवं व्यवहार साफ रखना चाहिए। आपका अवैध संबंध बहुत जल्द लोगों के सामने आ सकता है और आपके परिवार में क्लेश हो सकता

है।

यदि आप विद्यार्थी हैं, तो आपको अपने समाज पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि इस चरण के दौरान आपके भटकने की काफी संभावना है। अध्ययन के क्षेत्र में आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। आपको अपने खर्चे पर नियंत्रण रखना चाहिए और जितना पैसा घर से मिलता है, उतने में ही काम चलायें। अधिक सपनेना देंखें। आप नित्य कई गलतियां कर सकते हैं बाद में आपको पछतावा भी होगा, लेकिन ग्रहों के प्रभाव से पुनः वहीं गलतियां दोहराते रहेंगे। आप अपने कार्यों से ही अपने लोगों में हंसी के पात्र बन सकतेहैं। आप अपने कार्यों को कार्यान्वित करने के लिए फरेब का सहारा भी ले सकते हैं। लोग आपकी बातों पर विश्वास नहीं कर सकते हैं। आपके अपने लोग भी आपका साथ छोड़ सकते हैं। आपके व्यवहार में आए परिवर्तन से आपके दोस्त भी दुश्मन बन सकते हैं। आपके पुराने शत्रु आपके कामों में बाधा पहुंचा सकते हैं। आपका कोई शत्रु आपसे मित्रता कर आपसे गलत कार्य करवा सकता है, सचेत रहें।

यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आपके कपटपूर्ण वयवहार के कारण कई लोग आपके साथ व्यापार बंद करसकते हैं। आपका मन अपने कारोबार में नहीं लग सकता है। आप आलसी हो सकते हैं, जिसकी वजहसे आप व्यवसाय में पिछड़ सकते हैं तथा आपके कर्मचारी इसका लाभ उठा सकते हैं। व्यापार में आर्थिक संकट आ सकता है और आप कर्जदारों से मुंह छिपा सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो शारीरिक अक्षमता के कारण आपका मन अपने काम में नहीं लग सकता है। आप समय पर अपना काम पूरा नहीं कर पाएंगे, जिससे आपके वरिष्ठ अधिकारी आपसे नाराज हो सकते हैं और आपका स्थानान्तरण भी हो सकता है। आपको कोई दण्ड भी मिल सकता है। इस समय आप सिर्फ अपना स्वार्थ देख सकते हैं। आप सिर्फ धनोपार्जन के बारे में सोच सकते हैं। आप रिश्वत आदि भी लेना शुरू कर सकते हैं, लेकिनयह सबके सामने आ जाएगा। आपके सहयोगी ही आपको रंगे हाथ पकड़वा सकते हैं।

यदि आपकी आयु 34 से 46 वर्ष के मध्य है, तो आपको अधिक कष्ट हो सकता है। इस चरण के दौरान आप अधिकांश समय अस्वस्थ ही रहेंगे, लेकिन आप जब स्वस्थ होंगे, तो आप पर काम–वासना हावी रहेगा। आप अप्राकृतिक संबंध भी बना सकते हैं, जिससे आपको गुप्त यौन रोग होने का खातरा हो सकता है।

शनि साढेसाती के द्वितिय चक्र का विवरण

प्रथम ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से बारहवें) का फल

गोचर राशि –सिहं

Start -01:11:2006

End -10:01:2007

Duration -0 y.2 m.9 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -16:07:2007

End -10:09:2009

Duration -2 y.1 m.25 d.

आपके लिए यह चरण घातक हो सकता है। इस चरण के आरम्भ से ही आपको मानसिक तनाव रह सकता है। तनाव का कारण आपका संतान पक्ष हो सकता है। आपकी संतान आपके हर काम का विरोध करेगी। आपके लिए नित्य नई समस्यायें पैदा करेंगी। आप अपनी संतान की बीमारी पर भी काफी पैसा खर्च कर सकते हैं। आप अपने कार्यों से अपनी संतान के कार्यों में बाधायें उत्पन्न कर सकते हैं। आपकी

संतान आपके विचारों से सहमत नहीं हो सकती है। अपनी संतान के कारण आपको कष्ट हो सकता है। आपको अपनी संतान पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

इस समय आपके शत्रु काफी सक्रिय होंगे एवं आपको हानि पहुंचाने की प्रयास करेंगे एवं अपने प्रयासों में वेसफल भी होंगे। आप कई अप्रत्याशित खर्चे कर सकते हैं, जिसकी आपको उम्मीद भी नहीं होगी। आप कई लम्बी यात्राएं कर सकते हैं, जिनसे कोई लाभ होने की संभावना नहीं है। नित्य नई आने वाली परेशानियों के कारण धर्म एवं ईश्वर पर से आपका विश्वास उठ सकता है। इस समय आप ना किसी को उधार दें और ना उधार लें, इससे कई समस्याओं से बच सकते हैं। आप उदर कष्ट एवं त्वचा संबंधित ऐसे रोगों से पीड़ित हो सकते हैं, जो लम्बे समय तक चल सकते हैं। भाग्य आपका साथ नहीं दे सकता है।

आपको मानसिक रूप से मजबूत बनना चाहिए। भावना में बहकर कोई ऐसा काम ना करें, जिससे आपको अपमानित होना पड़े। आपके मामा–मौसी को भी कई समस्यओं का सामना करना पड़ सकता है। आपके कार्यों में काफी बाधायें आ सकती हैं। आप आर्थिक रूप से इतने परेशान हो सकते हैं, कि धनोपार्जन के लिए किसी दूसरे शहर में जा सकते हैं, लेकिन वहां भी आपको सफलता प्राप्त नहीं हो सकती है। आप भोग–विलास एवं परिधान पर काफी खर्च कर सकते हैं। यदि आपकी आयु 30 से 46 के मध्य है, तो आपको पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। मानसिक रूप से परेशान रहने के कारण आपका मस्तिष्क सही दिशा में कार्य नहीं कर सकता है। खुद को सफल करने के लिए आप फालतू के कार्यों पर अत्यधिक खर्चे कर सकते हैं, जिसका आपको बाद में पछतावा हो सकता है।

इस चरण के मध्य में आपको कुछ आराम मिल सकता है। आप अपनी मनोशक्ति के बल पर कुछ सफलताएं प्राप्त कर सकते हैं। कुछ समय के लिए आपकी आर्थिक स्थिति भी सुधर सकती है और आपके कुछ बिगड़े काम बन सकते हैं। लेकिन यह समय थोड़ी देर के लिए ही आएगा। इसके बाद आपके शत्रु पहले की तुलना में अधिक सक्रिय होंगे और आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे, लेकिन वे सफल नहीं हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपके अधिकारी आपसे नाराज रह सकते हैं और आपको कष्ट पहुंचने का प्रयास कर सकते हैं। अपको सतर्क रहना चाहिए और अतिविश्वास में नहीं आना चाहिए। अतिविश्वास के कारण आप चोरी के शिकार हो सकते हैं, विशेषकर यात्रा के दौरान। इस समय आपको अपने ही कामों से अधिक हानि हो सकती है। अपने भाइयों से बंटवारा भी हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है, तो अशुभ फलों में कुछ कमी हो सकती है। चरण के अन्त समय में लाभ के मौके प्राप्त होंगे, उनका पूरा फायदा उठायें।

द्वितिय ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से पहले) का फल

गोचर राशि –कन्या

Start -10:09:2009

End -15:11:2011

Duration -2 y.2 m.5 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -16:05:2012

End -04:08:2012

Duration -0 y.2 m.19 d.

यह चरण आपके लिए घातक हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है,तभी आपको कुछ शुभ फल प्राप्त हो सकता है। इस चरण की शुरूआत से ही आपको अशुभ संकेत मिलने लगेंगे। आप मानसिक रोग, उन्माद, चर्मरोग, वात आदि से पीड़ित रह सकते हैं। यदि बचपन में ही

यह चरण आता है, तो आपको बालारिष्ठ हो सकता है। आपकी चिन्ता खत्म भी नहीं होगी, कि दूसरी नई चिन्ता आपके सामने होगी। आप मानसिक रूप से व्यथित हो सकते हैं एवं भले–बूरे की पहचान खो सकतेहैं। काम–वासना आप पर हावी रहेगा। इसके लिए आप किसी भी हद तक जा सकते हैं और समाजमें अपमानित हो सकते हैं। आप काफी स्वार्थी हो सकते हैं और हर काम में पहले अपना स्वार्थ देखेंगे।

यदि इस समय आपकी आयु 34 से 47 वर्ष के मध्य है, तो आपको अधिक कष्ट प्राप्त हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आप नित्य नई समस्याओं का सामना कर सकते हैं। आपके सहयोगी आपके खिलाफ हो सकते हैं और आपकी शिकायत वरिष्ठ अधिकारियों से कर सकते हैं। इससे आपके वरिष्ठ अधिकारी भी आपसे नाराज हो सकते हैं और आप पर कोई कार्यवाई कर सकते हैं। परेशानी में आप कोई गलत काम कर सकते हैं और आपको स्थानान्तरित या निष्कासित किया जा सकता है। आपको हर काम सोच–विचार कर ही करना चाहिए, अन्यथा समस्या से घिर सकते हैं। आपके कई कार्य बनते–बनते बिगड़सकते हैं। आपको अपनी वाणी पर संयम एवं क्रोध पर नियंत्रण रखना चाहिए।

आपको पूजा–पाठ की तरफ अपना मन लगाना चाहिए। यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आग या चोरी के माध्यम से आपको हानि होने की संभावना है। आपका पैसा व्यापार में फँस सकता है। पैसा मांगने पर लोगटाल–मटोल कर सकते हैं। धीरे–धीरे व्यापार में हानि बढ़ती जाएगी और आपका मन व्यापार से हट सकता है। आपके कुछ सहयोगी भी शत्रुता निभाने की ताक में हो सकते हैं, इसलिए आप सावधान रहें। ईश्वर की आराधना करें। इस समय आपके व्यवसाय पर कोई सरकारी छापा पड़ सकता है और आप पर आर्थिक दण्ड लग सकता है। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं, तो आपके साझेदार आपको धोखा दे सकते हैं। मानसिक परेशानियों के कारण आप अपने व्यवसाय पर ठीक से ध्यान नहीं दे पायेंगे, जिसका फायदा आपके कर्मचारी चोरी आदि कर के उठा सकते हैं।

आपके पिता कुछ अस्वस्थ हो सकते हैं, और उनकी शल्य क्रिया होने की भी कुछ संभावना है। आपको संचार के माध्यम से कुछ अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है, जिससे आप अधिक परेशान हो सकते हैं। अपने किसी मित्र से लिया कोई पुराना कर्ज आप चुकाने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण आप इसमे सफल नहीं हो सकते हैं। इतना होने के बावजूद आपमें आत्मबल की कमी नहीं होगी। आपके शत्रु आपके लिए बाधायें उत्पन्न कर सकते हैं, लेकिन आप उनकी परवाह ना करते हुए काम में लगे रहें, आपको निश्चित रूप से सफलता प्राप्त होगी।

यदि आप पत्रकारिता, लेखन, समीक्षा या संपादन से संबंधित कार्य करते हैं, तो काफी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आपको दूसरे व्यक्तियों की सोच की चिंता नहीं हो सकती है। यदि आप चिकित्सा या केमिस्ट के क्षेत्र में हैं, तो इस समय आपको हानि हो सकती है। आपकी दी हुई दवा किसी को विपरित प्रतिक्रिया/रियेक्शन कर सकती है। विशेष सावधानी बरतें। यदि आप समाज सेवा या परोपकार में लिप्त हैं, तो आपको काफी उत्तम फल प्राप्त हो सकता है। आपको इस चरण के दौरान मानसिक स्थिरता बनाये रखनी चाहिए।

तृतिय ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से दूसरे) का फल

गोचर राशि –तुला

Start -15:11:2011

End -16:05:2012

Duration -0 y.6 m.0 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -04:08:2012

End -02:11:2014

Duration -2 y.2 m.28 d.

आपको इस चरण में मिश्रित फल प्राप्त होगा। फल का स्वभाव आपकी कुण्डली में चल रही महादशा पर अधिक निर्भर करेगा। शुरू में आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं, लेकिन बाद में शुभ फल प्राप्त होने लगेंगे। आप कोई भी काम काफी सोच–विचार के बाद ही करें। अपनी वाणी पर नियंत्रण रखें एवं कोई भीकाम जल्दबाजी में ना करें, हानि हो सकती है। आप पर काम का बोझ बढ़ सकता है, लेकिन यह भविष्यके लिए फायदेमंद होगा। इस समय आपको धन लाभ हो सकता है। यदि आप पर कोई कर्ज है, तोआप उसे चुकाने में सक्षम होंगे। आप भूमि, भवन या वाहन खरीद सकते हैं। अपनी माता से कोई उपहारप्राप्त हो सकता है। अपने विरोधियों से सावधान रहें।

यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो अपनी मेहनत एवं दिमाग से तरक्की करेंगे। आपको अपने व्यवसाय में चोरी होने की काफी संभावना है। अपने कर्मचारियों से सावधान रहें। अधिक कार्यभार होने के कारण आप अपने परिवार पर पर्याप्त समय नहीं दे सकते हैं, जिसकी वजह से आपके परिवार वाले आपसे नाराज हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो मनचाहे स्थान पर अपना स्थानान्तरण करवा सकते हैं। आपके अधिकारी आपसे खुश रह सकते हैं, लेकिन आपके सहयोगी उन्हें भड़का सकते हैं। किसी भी कागज पर बिना पढ़े हस्ताक्षर ना करें। यदि आप आर्थिक लेन–देन के क्षेत्र में हैं, तो आपको काफी सावधान रहना चाहिए, आप पर रिश्वत का आरोप लग सकता है। नेताओं से दूर रहें, उन्हें किसी भी तरह से नाराज ना करें।

आप परोपकार एवं धार्मिक कार्यों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेंगे, जिससे आपको समाज में सम्मान मिलेगा। आपको धार्मिक साहित्य के अध्ययन में रूचि हो सकती है। आप धार्मिक स्थल की यात्रा भी कर सकते हैं।यदि आप अभी विद्यार्थी हैं, तो खूब मेहनत करें, अन्यथा परीक्षा में असफल हो सकते हैं। चरण के मध्य काल में आपकी माता अस्वस्थ रह सकती हैं, जिसकी वजह से आप काम पर ध्यान नहीं दे पाएंगे। इससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। कुछ समय बाद आपकी माता स्वस्थ हो जाएंगी और आप अपने काम पर पुनः ध्यान देने लगेंगे। अधिक कार्य होने के कारण आप घर पर समय नहीं दे पाएंगे, जिसकी वजह सेआपके जीवनसाथी नाराज हो सकते हैं। अतः परिवार पर भी पर्याप्त समय दें। इस समय आपकी आर्थिकउन्नति होगी। अपने मित्रों एवं रिश्तेदारों से मधुर संबंध बनाकर रखें। वाणी पर संयम बहुत जरूरी है। आपके शत्रु आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे, लेकिन वे सफल नहीं हो पाएंगे। आप उनकी परवाह ना करते हुए अपना काम करते रहें।

इस समय आप पैरों में दर्द से पीड़ित रह सकते हैं। अधिक मेहनत एवं भाग–दौड़ के कारण आपका शरीरकमजोर हो सकता है। वैसे तो आपको पैसे की कमी नहीं होगी, लेकिन आप हमेशा अधिक धन कमाने के बारे में सोचते रह सकते हैं। आप सुख की प्राप्ति के लिए इधर–उधर भटक सकते हैं और अपनेघर पर ध्यान नहीं दे सकते हैं। आप लोगों पर वर्चस्व पाने की कोशिश में लगे रहेंगे। धन कमाने के लिए आप किसी दूरस्थ स्थान या विदेश भी जा सकते हैं। आपको उंचाई से गिरने, वाहन से चोट, आग, बिजली या किसी जानवर से चोट का खतरा हो सकता है। आपको काफी सावधानी से काम करना चाहिएऔर ईश्वर का ध्यान करते हुए आगे बढ़ते रहना चाहिए।

कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे) का फल

गोचर राशि –धनु

Start -26:01:2017

End -21:06:2017

Duration -0 y.4 m.24 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -26:10:2017

End -24:01:2020

Duration -2 y.2 m.29 d.

इस चरण का फल आपके लिए काफी अशुभ हो सकता है। आपको एक साथ कई रोग हो सकते हैं। इन रोगों के कारण आप काफी निराश हो सकते हैं। आपके पिता को भी कष्ट हो सकता है, जिससे आप परेशान हो सकते हैं। यदि किसी क्रूर/अशुभ ग्रह की दशा भी चल रही है, तो आप किसी नजदीकी का वियोग भी सह सकते हैं। संचार के माध्यम से कोई अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपके सहकर्मी आपके साथ शत्रुतापूर्ण व्यवहार कर सकते हैं। आप पर नित्य नए आरोप लग सकते हैं, जिसकी वजह से आप मानसिक रूप से काफी परेशान हो सकते हैं और अस्पताल में भी भर्ती होसकते हैं। आपकी नौकरी भी छूट सकती है।

आपका कोई पुराना शत्रु अचानक आपके सामने आ सकता है, जिसकी वजह से आप परेशन रह सकते हैं।इस समय कोई भी आपकी मदद को नहीं आएगा। आप कई प्रकार से हानि उठा सकते हैं और आर्थिकहानि हो सकती है। यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो आपका व्यवसाय बंद होने के कगार पर हो सकता है। यदि किसी शुभ ग्रह के प्रभाव से आपका व्यवसाय बच जाता है, तो भी हानि तो होनी ही है। शत्रु आपके व्यवसाय की बदनामी फैला सकते हैं। आपके किसी कर्मचारी को लालच देकर आपकी गुप्त सूचनाएं एकत्र कर सकते हैं और छापा पड़वाने में मुख्य भूमिका निभा सकते हैं। आपको सत्तापक्ष से भी हानि हो सकती है। आपका कोई भुगतान रूक सकता है। आप जो भी काम करें, सोच–समझ कर ही करें। अनुकूल समय का इंतजार करें एवं बुरे समय को ईश्वर का ध्यान करते हुए निकाल दें।

वाहन चलाते समय काफी सावधानी बरतें, दुर्घटना की संभावना हो सकती है। सिर में गंभीर चोट लगने कीअधिक संभावना है। आपके मामा या मौसी की ओर से आप पर कोई गंभीर आरोप लग सकता है, जिसकी वजह से आपकी माता को कष्ट हो सकता है। उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आपके जीवनसाथी का व्यवहार भी आपके प्रति परिवर्तित हो सकता है, जिसकी वजह से आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। आप गलत कार्यों की तरफ आकृष्ट हो सकते हैं। सत्तापक्ष से भी दण्ड मिल सकता है। इस चरण में आपके धनोपार्जन के सारे प्रयास विफल हो सकते हैं, और जो कुछ भी आप कमायेंगे वो सब भोग–विलास में गवां सकते हैं।

यदि आपकी आयु 34 से 47 वर्ष के मध्य है और राहु भी अशुभ है, तो आपको कारावास भी हो सकता है। यदि मंगल अशुभ है, तो किसी दुर्घटना में अपना कोई अंग भी गंवा सकते हैं। इस दौरान आप अपने भाइयों से अलग हो सकते हैं और जो कुछ धन बंटवारे से मिलेगा वो फालतू के कार्यों में खर्च कर सकते हैं। आप उचित निर्णय लेने में अक्षम हो सकते हैं। लोगों के प्रति आपका व्यवहार भी बदल सकता है, जिसकी वजह से आपके अपने लो भी आपसे बात करना पसंद नहीं कर सकते हैं। आपमें धर्म के प्रति आस्था कम हो सकती है। आपको धार्मिक कार्यों में मन लगाना चाहिए।

अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें) का फल

गोचर राशि –मेष

Start -03:06:2027

End -20:10:2027

Duration -0 y.4 m.17 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -23:02:2028

End -08:08:2029

Duration -1 y.5 m.14 d.

इस चरण का फल आपके लिए अधिक अशुभ नहीं हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में शनि किसी शुभभाव में बैठा है, तो आपको शुभ फल अधिक प्राप्त हो सकता है। आपको काफी शारीरिक कष्ट हो सकते हैं, जो कि मृत्युतुल्य हो सकते हैं। आपके भाई–बहनों को भी कष्ट हो सकता है। आप भी रोग ग्रस्त हो सकते हैं। अर्श, भगंदर आदि होने की अधिक संभावना है। आप निम्न तबके की महिलाओं के सम्पर्क में आ सकते हैं, जिससे आप समाज में अपमानित हो सकते हैं। आपको अपना चरित्र एवं व्यवहार साफ रखना चाहिए। आपका अवैध संबंध बहुत जल्द लोगों के सामने आ सकता है और आपके परिवार में क्लेश हो सकता है।

यदि आप विद्यार्थी हैं, तो आपको अपने समाज पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि इस चरण के दौरान आपके भटकने की काफी संभावना है। अध्ययन के क्षेत्र में आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। आपको अपने खर्चे पर नियंत्रण रखना चाहिए और जितना पैसा घर से मिलता है, उतने में ही काम चलायें। अधिक सपनेना देंखें। आप नित्य कई गलतियां कर सकते हैं बाद में आपको पछतावा भी होगा, लेकिन ग्रहों के प्रभाव से पुनः वहीं गलतियां दोहराते रहेंगे। आप अपने कार्यों से ही अपने लोगों में हंसी के पात्र बन सकतेहैं। आप अपने कार्यों को कार्यान्वित करने के लिए फरेब का सहारा भी ले सकते हैं। लोग आपकी बातों पर विश्वास नहीं कर सकते हैं। आपके अपने लोग भी आपका साथ छोड़ सकते हैं। आपके व्यवहार में आए परिवर्तन से आपके दोस्त भी दुश्मन बन सकते हैं। आपके पुराने शत्रु आपके कामों में बाधा पहुंचा सकते हैं। आपका कोई शत्रु आपसे मित्रता कर आपसे गलत कार्य करवा सकता है, सचेत रहें।

यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आपके कपटपूर्ण वयवहार के कारण कई लोग आपके साथ व्यापार बंद करसकते हैं। आपका मन अपने कारोबार में नहीं लग सकता है। आप आलसी हो सकते हैं, जिसकी वजहसे आप व्यवसाय में पिछड़ सकते हैं तथा आपके कर्मचारी इसका लाभ उठा सकते हैं। व्यापार में आर्थिक संकट आ सकता है और आप कर्जदारों से मुंह छिपा सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो शारीरिक अक्षमता के कारण आपका मन अपने काम में नहीं लग सकता है। आप समय पर अपना काम पूरा नहीं कर पाएंगे, जिससे आपके वरिष्ठ अधिकारी आपसे नाराज हो सकते हैं और आपका स्थानान्तरण भी हो सकता है। आपको कोई दण्ड भी मिल सकता है। इस समय आप सिर्फ अपना स्वार्थ देख सकते हैं। आप सिर्फ धनोपार्जन के बारे में सोच सकते हैं। आप रिश्वत आदि भी लेना शुरू कर सकते हैं, लेकिनयह सबके सामने आ जाएगा। आपके सहयोगी ही आपको रंगे हाथ पकड़वा सकते हैं।

यदि आपकी आयु 34 से 46 वर्ष के मध्य है, तो आपको अधिक कष्ट हो सकता है। इस चरण के दौरान आप अधिकांश समय अस्वस्थ ही रहेंगे, लेकिन आप जब स्वस्थ होंगे, तो आप पर काम–वासना हावी रहेगा। आप अप्राकृतिक संबंध भी बना सकते हैं, जिससे आपको गुप्त यौन रोग होने का खतरा हो सकता है।

शनि साढेसाती के तृतिय चक्र का विवरण

प्रथम ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से बारहवें) का फल

गोचर राशि –सिहं

Start -27:08:2036

End -22:10:2038

Duration -2 y.1 m.25 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -05:04:2039

End -13:07:2039

Duration -0 y.3 m.8 d.

आपके लिए यह चरण घातक हो सकता है। इस चरण के आरम्भ से ही आपको मानसिक तनाव रह सकता है। तनाव का कारण आपका संतान पक्ष हो सकता है। आपकी संतान आपके हर काम का विरोध करेगी। आपके लिए नित्य नई समस्यायें पैदा करेंगी। आप अपनी संतान की बीमारी पर भी काफी पैसा खर्च कर सकते हैं। आप अपने कार्यों से अपनी संतान के कार्यों में बाधायें उत्पन्न कर सकते हैं। आपकी संतान आपके विचारों से सहमत नहीं हो सकती है। अपनी संतान के कारण आपको कष्ट हो सकता है। आपको अपनी संतान पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

इस समय आपके शत्रु काफी सक्रिय होंगे एवं आपको हानि पहुंचाने की प्रयास करेंगे एवं अपने प्रयासों में वेसफल भी होंगे। आप कई अप्रत्याशित खर्चे कर सकते हैं, जिसकी आपको उम्मीद भी नहीं होगी। आप कई लम्बी यात्राएं कर सकते हैं, जिनसे कोई लाभ होने की संभावना नहीं है। नित्य नई आने वाली परेशानियों के कारण धर्म एवं ईश्वर पर से आपका विश्वास उठ सकता है। इस समय आप ना किसी को उधार दें और ना उधार लें, इससे कई समस्याओं से बच सकते हैं। आप उदर कष्ट एवं त्वचा संबंधित ऐसे रोगों से पीड़ित हो सकते हैं, जो लम्बे समय तक चल सकते हैं। भाग्य आपका साथ नहीं दे सकता है।

आपको मानसिक रूप से मजबूत बनना चाहिए। भावना में बहकर कोई ऐसा काम ना करें, जिससे आपको अपमानित होना पड़े। आपके मामा—मौसी को भी कई समस्यओं का सामना करना पड़ सकता है। आपके कार्यों में काफी बाधायें आ सकती हैं। आप आर्थिक रूप से इतने परेशान हो सकते हैं, कि धनोपार्जन के लिए किसी दूसरे शहर में जा सकते हैं, लेकिन वहां भी आपको सफलता प्राप्त नहीं हो सकती है। आप भोग—विलास एवं परिधान पर काफी खर्च कर सकते हैं। यदि आपकी आयु 30 से 46 के मध्य है, तो आपको पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। मानसिक रूप से परेशान रहने के कारण आपका मस्तिष्क सही दिशा में कार्य नहीं कर सकता है। खुद को सफल करने के लिए आप फालतू के कार्यों पर अत्यधिक खर्चे कर सकते हैं, जिसका आपको बाद में पछतावा हो सकता है।

इस चरण के मध्य में आपको कुछ आराम मिल सकता है। आप अपनी मनोशक्ति के बल पर कुछ सफलताएं प्राप्त कर सकते हैं। कुछ समय के लिए आपकी आर्थिक स्थिति भी सुधर सकती है और आपके कुछ बिगड़े काम बन सकते हैं। लेकिन यह समय थोड़ी देर के लिए ही आएगा। इसके बाद आपके शत्रु पहले की तुलना में अधिक सक्रिय होंगे और आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे, लेकिन वे सफल नहीं हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपके अधिकारी आपसे नाराज रह सकते हैं और आपको कष्ट पहुंचने का प्रयास कर सकते हैं। अपको सतर्क रहना चाहिए और अतिविश्वास में नहीं आना चाहिए। अतिविश्वास के कारण आप चोरी के शिकार हो सकते हैं, विशेषकर यात्रा के दौरान। इस समय आपको अपने ही कामों से अधिक हानि हो सकती है। अपने भाइयों से बंटवारा भी हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है, तो अशुभ फलों में कुछ कमी हो सकती है। चरण के अन्त समय में लाभ के मौके प्राप्त होंगे, उनका पूरा फायदा उठायें।

द्वितिय ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से पहले) का फल

गोचर राशि –कन्या

Start -22:10:2038

End -05:04:2039

Duration -0 y.5 m.13 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -13:07:2039

End -28:01:2041

Duration -1 y.6 m.16 d.

यह चरण आपके लिए घातक हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है,तभी आपको कुछ शुभ फल प्राप्त हो सकता है। इस चरण की शुरूआत से ही आपको अशुभ संकेत मिलने लगेंगे। आप मानसिक रोग, उन्माद, चर्मरोग, वात आदि से पीड़ित रह सकते हैं। यदि बचपन में ही यह चरण आता है, तो आपको बालारिष्ठ हो सकता है। आपकी चिन्ता खत्म भी नहीं होगी, कि दूसरी नई चिन्ता आपके सामने होगी। आप मानसिक रूप से व्यथित हो सकते हैं एवं भले–बूरे की पहचान खो सकतेहैं। काम–वासना आप पर हावी रहेगा। इसके लिए आप किसी भी हद तक जा सकते हैं और समाजमें अपमानित हो सकते हैं। आप काफी स्वार्थी हो सकते हैं और हर काम में पहले अपना स्वार्थ देखेंगे।

यदि इस समय आपकी आयु 34 से 47 वर्ष के मध्य है, तो आपको अधिक कष्ट प्राप्त हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आप नित्य नई समस्याओं का सामना कर सकते हैं। आपके सहयोगी आपके खिलाफ हो सकते हैं और आपकी शिकायत वरिष्ठ अधिकारियों से कर सकते हैं। इससे आपके वरिष्ठ अधिकारी भी आपसे नाराज हो सकते हैं और आप पर कोई कार्यवाई कर सकते हैं। परेशानी में आप कोई गलत काम कर सकते हैं और आपको स्थानान्तरित या निष्कासित किया जा सकता है। आपको हर काम सोच–विचार कर ही करना चाहिए, अन्यथा समस्या से घिर सकते हैं। आपके कई कार्य बनते–बनते बिगड़सकते हैं। आपको अपनी वाणी पर संयम एवं क्रोध पर नियंत्रण रखना चाहिए।

आपको पूजा–पाठ की तरफ अपना मन लगाना चाहिए। यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आग या चोरी के माध्यम से आपको हानि होने की संभावना है। आपका पैसा व्यापार में फँस सकता है। पैसा मांगने पर लोगटाल–मटोल कर सकते हैं। धीरे–धीरे व्यापार में हानि बढ़ती जाएगी और आपका मन व्यापार से हट सकता है। आपके कुछ सहयोगी भी शत्रुता निभाने की ताक में हो सकते हैं, इसलिए आप सावधान रहें। ईश्वर की आराधना करें। इस समय आपके व्यवसाय पर कोई सरकारी छापा पड़ सकता है और आप पर आर्थिक दण्ड लग सकता है। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं, तो आपके साझेदार आपको धोखा दे सकते हैं। मानसिक परेशानियों के कारण आप अपने व्यवसाय पर ठीक से ध्यान नहीं दे पायेंगे, जिसका फायदा आपके कर्मचारी चोरी आदि कर के उठा सकते हैं।

आपके पिता कुछ अस्वस्थ हो सकते हैं, और उनकी शल्य क्रिया होने की भी कुछ संभावना है। आपको संचार के माध्यम से कुछ अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है, जिससे आप अधिक परेशान हो सकते हैं। अपने किसी मित्र से लिया कोई पुराना कर्ज आप चुकाने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण आप इसमे सफल नहीं हो सकते हैं। इतना होने के बावजूद आपमें आत्मबल की कमी नहीं होगी। आपके शत्रु आपके लिए बाधायें उत्पन्न कर सकते हैं, लेकिन आप उनकी परवाह ना करते हुए काम में लगे रहें, आपको निश्चित रूप से सफलता प्राप्त होगी।

यदि आप पत्रकारिता, लेखन, समीक्षा या संपादन से संबंधित कार्य करते हैं, तो काफी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आपको दूसरे व्यक्तियों की सोच की चिंता नहीं हो सकती है। यदि आप चिकित्सा या केमिस्ट के क्षेत्र में हैं, तो इस समय आपको हानि हो सकती है। आपकी दी हुई दवा किसी को विपरित

प्रतिक्रिया/रियेक्शन कर सकती है। विशेष सावधानी बरतें। यदि आप समाज सेवा या परोपकार में लिप्त हैं, तो आपको काफी उत्तम फल प्राप्त हो सकता है। आपको इस चरण के दौरान मानसिक स्थिरता बनाये रखनी चाहिए।

तृतिय ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से दूसरे) का फल

गोचर राशि –तुला

Start -28:01:2041

End -06:02:2041

Duration -0 y.0 m.9 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा |

Start -26:09:2041

End -12:12:2043

Duration -2 y.2 m.16 d.

आपको इस चरण में मिश्रित फल प्राप्त होगा। फल का स्वभाव आपकी कुण्डली में चल रही महादशा पर अधिक निर्भर करेगा। शुरू में आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं, लेकिन बाद में शुभ फल प्राप्त होने लगेंगे। आप कोई भी काम काफी सोच–विचार के बाद ही करें। अपनी वाणी पर नियंत्रण रखें एवं कोई भीकाम जल्दबाजी में ना करें, हानि हो सकती है। आप पर काम का बोझ बढ़ सकता है, लेकिन यह भविष्यके लिए फायदेमंद होगा। इस समय आपको धन लाभ हो सकता है। यदि आप पर कोई कर्ज है, तोआप उसे चुकाने में सक्षम होंगे। आप भूमि, भवन या वाहन खरीद सकते हैं। अपनी माता से कोई उपहारप्राप्त हो सकता है। अपने विरोधियों से सावधान रहें।

यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो अपनी मेहनत एवं दिमाग से तरक्की करेंगे। आपको अपने व्यवसाय में चोरी होने की काफी संभावना है। अपने कर्मचारियों से सावधान रहें। अधिक कार्यभार होने के कारण आप अपने परिवार पर पर्याप्त समय नहीं दे सकते हैं, जिसकी वजह से आपके परिवार वाले आपसे नाराज हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो मनचाहे स्थान पर अपना स्थानान्तरण करवा सकते हैं। आपके अधिकारी आपसे खुश रह सकते हैं, लेकिन आपके सहयोगी उन्हें भड़का सकते हैं। किसी भी कागज पर बिना पढ़े हस्ताक्षर ना करें। यदि आप आर्थिक लेन–देन के क्षेत्र में हैं, तो आपको काफी सावधान रहना चाहिए, आप पर रिश्वत का आरोप लग सकता है। नेताओं से दूर रहें, उन्हें किसी भी तरह से नाराज ना करें।

आप परोपकार एवं धार्मिक कार्यों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेंगे, जिससे आपको समाज में सम्मान मिलेगा। आपको धार्मिक साहित्य के अध्ययन में रूचि हो सकती है। आप धार्मिक स्थल की यात्रा भी कर सकते हैं।यदि आप अभी विद्यार्थी हैं, तो खूब मेहनत करें, अन्यथा परीक्षा में असफल हो सकते हैं। चरण के मध्य काल में आपकी माता अस्वस्थ रह सकती हैं, जिसकी वजह से आप काम पर ध्यान नहीं दे पाएंगे। इससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। कुछ समय बाद आपकी माता स्वस्थ हो जाएंगी और आप अपने काम पर पुनः ध्यान देने लगेंगे। अधिक कार्य होने के कारण आप घर पर समय नहीं दे पाएंगे, जिसकी वजह सेआपके जीवनसाथी नाराज हो सकते हैं। अतः परिवार पर भी पर्याप्त समय दें। इस समय आपकी आर्थिकउन्नति होगी। अपने मित्रों एवं रिश्तेदारों से मधुर संबंध बनाकर रखें। वाणी पर संयम बहुत जरूरी है। आपके शत्रु आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे, लेकिन वे सफल नहीं हो पाएंगे। आप उनकी परवाह ना करते हुए अपना काम करते रहें।

इस समय आप पैरों में दर्द से पीड़ित रह सकते हैं। अधिक मेहनत एवं भाग–दौड़ के कारण आपका

शरीर कमजोर हो सकता है। वैसे तो आपको पैसे की कमी नहीं होगी, लेकिन आप हमेशा अधिक धन कमाने के बारे में सोचते रह सकते हैं। आप सुख की प्राप्ति के लिए इधर–उधर भटक सकते हैं और अपनेघर पर ध्यान नहीं दे सकते हैं। आप लोगों पर वर्चस्व पाने की कोशिश में लगे रहेंगे। धन कमाने के लिए आप किसी दूरस्थ स्थान या विदेश भी जा सकते हैं। आपको उंचाई से गिरने, वाहन से चोट, आग, बिजली या किसी जानवर से चोट का खतरा हो सकता है। आपको काफी सावधानी से काम करना चाहिएऔर ईश्वर का ध्यान करते हुए आगे बढ़ते रहना चाहिए।

कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे) का फल

गोचर राशि –धनु

Start -08:12:2046

End -06:03:2049

Duration -2 y.2 m.27 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -10:07:2049

End -04:12:2049

Duration -0 y.4 m.25 d.

इस चरण का फल आपके लिए काफी अशुभ हो सकता है। आपको एक साथ कई रोग हो सकते हैं। इन रोगों के कारण आप काफी निराश हो सकते हैं। आपके पिता को भी कष्ट हो सकता है, जिससे आप परेशान हो सकते हैं। यदि किसी क्रूर/अशुभ ग्रह की दशा भी चल रही है, तो आप किसी नजदीकी का वियोग भी सह सकते हैं। संचार के माध्यम से कोई अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपके सहकर्मी आपके साथ शत्रुतापूर्ण व्यवहार कर सकते हैं। आप पर नित्य नए आरोप लग सकते हैं, जिसकी वजह से आप मानसिक रूप से काफी परेशान हो सकते हैं और अस्पताल में भी भर्ती होसकते हैं। आपकी नौकरी भी छूट सकती है।

आपका कोई पुराना शत्रु अचानक आपके सामने आ सकता है, जिसकी वजह से आप परेशन रह सकते हैं।इस समय कोई भी आपकी मदद को नहीं आएगा। आप कई प्रकार से हानि उठा सकते हैं और आर्थिकहानि हो सकती है। यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो आपका व्यवसाय बंद होने के कगार पर हो सकता है। यदि किसी शुभ ग्रह के प्रभाव से आपका व्यवसाय बच जाता है, तो भी हानि तो होनी ही है। शत्रु आपके व्यवसाय की बदनामी फैला सकते हैं। आपके किसी कर्मचारी को लालच देकर आपकी गुप्त सूचनाएं एकत्र कर सकते हैं और छापा पड़वाने में मुख्य भूमिका निभा सकते हैं। आपको सत्तापक्ष से भी हानि हो सकती है। आपका कोई भुगतान रूक सकता है। आप जो भी काम करें, सोच–समझ कर ही करें। अनुकूल समय का इंतजार करें एवं बुरे समय को ईश्वर का ध्यान करते हुए निकाल दें।

वाहन चलाते समय काफी सावधानी बरतें, दुर्घटना की संभावना हो सकती है। सिर में गंभीर चोट लगने कीअधिक संभावना है। आपके मामा या मौसी की ओर से आप पर कोई गंभीर आरोप लग सकता है, जिसकी वजह से आपकी माता को कष्ट हो सकता है। उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आपके जीवनसाथी का व्यवहार भी आपके प्रति परिवर्तित हो सकता है, जिसकी वजह से आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। आप गलत कार्यों की तरफ आकृष्ट हो सकते हैं। सत्तापक्ष से भी दण्ड मिल सकता है। इस चरण में आपके धनोपार्जन के सारे प्रयास विफल हो सकते हैं, और जो कुछ भी आप कमायेंगे वो सब भोग–विलास में गवां सकते हैं।

यदि आपकी आयु 34 से 47 वर्ष के मध्य है और राहु भी अशुभ है, तो आपको कारावास भी हो सकता है।

यदि मंगल अशुभ है, तो किसी दुर्घटना में अपना कोई अंग भी गंवा सकते हैं। इस दौरान आप अपने भाइयों से अलग हो सकते हैं और जो कुछ धन बंटवारे से मिलेगा वो फालतू के कार्यों में खर्च कर सकते हैं। आप उचित निर्णय लेने में अक्षम हो सकते हैं। लोगों के प्रति आपका व्यवहार भी बदल सकता है, जिसकी वजह से आपके अपने लो भी आपसे बात करना पसंद नहीं कर सकते हैं। आपमें धर्म के प्रति आस्था कम हो सकती है। आपको धार्मिक कार्यों में मन लगाना चाहिए।

अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें) का फल

गोचर राशि –मेष

Start -07:04:2057

End -28:05:2059

Duration -2 y.1 m.20 d.

इस चरण का फल आपके लिए अधिक अशुभ नहीं हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में शनि किसी शुभभाव में बैठा है, तो आपको शुभ फल अधिक प्राप्त हो सकता है। आपको काफी शारीरिक कष्ट हो सकते हैं, जो कि मृत्युतुल्य हो सकते हैं। आपके भाई–बहनों को भी कष्ट हो सकता है। आप भी रोग ग्रस्त हो सकते हैं। अर्श, भगंदर आदि होने की अधिक संभावना है। आप निम्न तबके की महिलाओं के सम्पर्क में आ सकते हैं, जिससे आप समाज में अपमानित हो सकते हैं। आपको अपना चरित्र एवं व्यवहार साफ रखना चाहिए। आपका अवैध संबंध बहुत जल्द लोगों के सामने आ सकता है और आपके परिवार में क्लेश हो सकता है।

यदि आप विद्यार्थी हैं, तो आपको अपने समाज पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि इस चरण के दौरान आपके भटकने की काफी संभावना है। अध्ययन के क्षेत्र में आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। आपको अपने खर्चे पर नियंत्रण रखना चाहिए और जितना पैसा घर से मिलता है, उतने में ही काम चलायें। अधिक सपनेना देंखें। आप नित्य कई गलतियां कर सकते हैं बाद में आपको पछतावा भी होगा, लेकिन ग्रहों के प्रभाव से पुनः वहीं गलतियां दोहराते रहेंगे। आप अपने कार्यों से ही अपने लोगों में हंसी के पात्र बन सकतेहैं। आप अपने कार्यों को कार्यान्वित करने के लिए फरेब का सहारा भी ले सकते हैं। लोग आपकी बातों पर विश्वास नहीं कर सकते हैं। आपके अपने लोग भी आपका साथ छोड़ सकते हैं। आपके व्यवहार में आए परिवर्तन से आपके दोस्त भी दुश्मन बन सकते हैं। आपके पुराने शत्रु आपके कामों में बाधा पहुंचा सकते हैं। आपका कोई शत्रु आपसे मित्रता कर आपसे गलत कार्य करवा सकता है, सचेत रहें।

यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आपके कपटपूर्ण वयवहार के कारण कई लोग आपके साथ व्यापार बंद करसकते हैं। आपका मन अपने कारोबार में नहीं लग सकता है। आप आलसी हो सकते हैं, जिसकी वजहसे आप व्यवसाय में पिछड़ सकते हैं तथा आपके कर्मचारी इसका लाभ उठा सकते हैं। व्यापार में आर्थिक संकट आ सकता है और आप कर्जदारों से मुंह छिपा सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो शारीरिक अक्षमता के कारण आपका मन अपने काम में नहीं लग सकता है। आप समय पर अपना काम पूरा नहीं कर पाएंगे, जिससे आपके वरिष्ठ अधिकारी आपसे नाराज हो सकते हैं और आपका स्थानान्तरण भी हो सकता है। आपको कोई दण्ड भी मिल सकता है। इस समय आप सिर्फ अपना स्वार्थ देख सकते हैं। आप सिर्फ धनोपार्जन के बारे में सोच सकते हैं। आप रिश्वत आदि भी लेना शुरू कर सकते हैं, लेकिनयह सबके सामने आ जाएगा। आपके सहयोगी ही आपको रंगे हाथ पकड़वा सकते हैं।

यदि आपकी आयु 34 से 46 वर्ष के मध्य है, तो आपको अधिक कष्ट हो सकता है। इस चरण के दौरान आप अधिकांश समय अस्वस्थ ही रहेंगे, लेकिन आप जब स्वस्थ होंगे, तो आप पर काम–वासना हावी रहेगा। आप अप्राकृतिक संबंध भी बना सकते हैं, जिससे आपको गुप्त यौन रोग होने का खतरा हो सकता है।

शनि साढेसाती एवं ढ़ैय्या के उपाय

शनि की साढ़ेसाती या ढैया के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिए नीचे लिखे उपायों को करें–

मंत्र–

1– महामृंत्युंजय मंत्र का सवा लाख जाप (रोज 10 माल, 125 दिन) करें। –

ऊँ त्रयम्बकम् यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं।
उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

2– शनि के निम्नदत्त मंत्र का 21 दिन में 23 हजार जाप करें–

ऊँ शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभिस्रवन्तु नः। ऊँ शं शनैश्चराय नमः।।

3– पौराणिक शनि मंत्र–

ऊँ नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

स्तोत्र –

नीचे लिखे शनि स्तोत्र का 11 बार पाठ करें या दशरथ कृत शनि स्तोत्र का पाठ करें।

कोणस्थः पिंगलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः।
सौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्पलादेन संस्तुतः।।
तानि शनि–नामामि जपेदश्वत्थसन्निधौ।
शनैश्चरकृता पीड़ा न कदाचिद् भविष्यति।।

साढ़ेसाती पीड़ानाशक स्तोत्र– पिप्पलाद के अनुसार–

नमस्ते कोणसंस्थय पिंड्गलाय नमोस्तुते।
नमस्ते बभ्रु रूपाय कृष्णाय च नमोस्तु ते।।
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च।
नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो।।
नमस्ते यमदसंज्ञाय शनैश्वर नमोस्तु ते।
प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च।।

रत्न–

शनिवार के दिन काले घोड़े की नाल या नाव के तली की कील का छल्ला बनाकर मध्यमा उंगली में धारण करना चाहिए।

व्रत–

शनि वार का व्रत रखना चाहिए एवं शनि देव की पूजा करनी चाहिए। शनिवार व्रतकथा पढ़ने से भी लाभ प्राप्त होता है। व्रत के दौरान दिन में फलाहार करें, एवं सायंकाल हनुमान जी या भौरव जी का दर्शन करना चाहिए। रात्रि में काले उड़द की खिचड़ी (काला नमक मिला सकतेहैं) या उड़द की दाल का मीठा हलवा ग्रहण कर सकते हैं।

दान –

शनिदेव को प्रसन्न करने के लिए उड़द, तेल, नीलम, तिल, भैंस, लोहा एवं काला कपड़ा दान करना चाहिए।

औषधि –

हर शनिवार को सुरमा, काले तिल, सौंफ और नागरमोथा मिले हुए जल से स्नान करना चाहिए।

कन्या राशि वालों के लिए शनि की साढ़ेसाती एवं ढैया के सामान्य उपाय–

1– शनि यंत्र को पूजास्थल में रखकर नित्य उसके सामने चालीसा का पाठ करें।

2– प्रत्येक बुधवार को विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करें।

3– बुधवार को हिजड़ों को कुछ पैसा देकर उनका आशीष लें।

4– शनिवार को अंधेरा होने पर पीपल के पास जाकर आटे में हरी मसूर का आटा मिलाकर दीपक बनायें। सरसों के तेल में एक कील रखें तथा 11 साबूत हरी मसूर के दाने मिलाकर रूई की ऐसी दो समानान्तर बत्ती बनायें जो जलने पर एक ही लौ दे, पीपल को अर्पित करें तथा मीठा जल भी अर्पित करें।

5– अधिक कष्ट होने पर श्री दुर्गा सप्तशती में से कोई मंत्र चुनकर नियमित जाप करें।

6– शयनकक्ष के पलंग के चारों पायों में लोहे की चार कील ठुकवायें।

7– किसी भी शुक्लपक्ष में नौ वर्ष से कम आयु की 8 कन्याओं को भोजन करवाकर हरे एवं

लाल वस्त्र उपहार में दें। ऐसा लगातार पांच मास करें।

8– प्रत्येक शनिवार को छायादान करें।

शनि की साढ़ेसाती एवं ढ़ैय्या के विशेष उपाय –

यदि आपकी कुण्डली में शनि शुभ है, तो भैरोंजी एवं शनिदेव की पूजा–अर्चना कर शनि को और बल देकर लाभ प्राप्त किया जा सकता है। यदि शनि अशुभ या दूषित है, तो शनि के उपाय कर अशुभ फल को खत्म एवं लाभ प्राप्त किया जा सकता है। यदि आपकी कुण्डली में साढ़ेसाती चल रही है या आप शनिकृत कष्ट भोग रहें हैं, तो नीचे लिखे उपायों को करने से आप लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

1– शनि का छाया दान करें एवं नीलम या इसका उपरत्न धारण करें।

2– शनिवार को काली गाय की सेवा करें। तिलक–बिन्दी कर उसके सींग पर कलावा बांध कर बूंदी के आठ लड्डू खिलायें एवं चरण स्पर्श करें।

3– काले कुत्ते को नियमित रूप से मीठी रोटी खिलायें।

4–यदि आपकी कुण्डली में शनि लग्न में बैठा है, तो जमीन में सुरमा गाड़ें।

5– शनिवार का व्रत रखें तथा पीपल की सेवा करें एवं मीठा जल अर्पित करें।

6– मद्यपान ना करें।

7– शनिवार को अंधेरा होने पर पीपल के वृक्ष पर हनुमान जी का स्मरण कर तिल के तेल केदीपक में सिंदूर डालकर लाल पुष्प अर्पित करें।

8– भोजन में काली मिर्च एवं काला नमक का प्रयोग अवश्य करें।

9– शनिवार को काले घोड़े के पैर की मिट्टी काले कपड़े में बांधकर ताबीज के रूप में धारणकरें।

10– शनिवार को आप एक माप की आठ बोतलें लें, और हर बोतल में एक ही माप का सरसोंतेल भरें। प्रत्येक में आठ साबुत उड़द के दाने एवं एक कील डालें। फिर आठों बोतलों को अपने उपर से आठ बार उसार कर बहते जल में प्रवाहित करें। यह क्रिया लगातार आठ शनिवार करें।

11– नियमित रूप से शनि चालीसा एवं उनके 108 नामों का उच्चारण

करें।

12– प्रातः उठते ही बासी मुख से शनिदेव के दस नामों का उच्चारण तथा द्वाद्वशज्योतिर्लिंग के नामों का उच्चारण करें।

13– प्रत्येक शनिवार को काले कुत्ते को रोटी पर सरसों का तेल चुपड़ कर गुड़ रख कर खिलायें एवं बंन्दरों को चने खिलायें।

14– शुक्रवार को लोहे के बर्तन में आठ किलो चने भिगों दें। शनिवार को काले कपड़े में सारे चने रखें। साथ में 800 ग्राम काली उड़द और इतने ही काले तिल के साथ इतने ही जौ एवं एक लोहे की पत्ती रखें। इसकी पोटली बनाकर ऐसे स्थान पर डालें जहां मछलियां हों। यह क्रिया लगातार आठ माह करें। शुरू में आठ माह करें, इसके बाद वर्ष में सिर्फ एक बार पर्याप्तहोगा।

15– अंधेरा होने के बाद आटा मिश्रित उड़द का दीपक बनाकर उसमें दो बत्ती जो जलने पर एक ही लौ दे, सरसों के तेल में जलायें। एक दीपक पीपल एवं एक दीपक वट वृक्ष पर अर्पित करें। साथ ही गुग्गुल की धूप एवं चंदन की अगरबत्ती भी अर्पित करें। यह उपाय पहले शनिवार से शुरू करें।

16– प्रथम शनिवार को आठ मीटर काले कपड़े में 800 ग्राम की मात्रा में काली उड़द, चावल, गुड़, काली सरसों, काले तिल, जौ, आठ बड़ी कीलें तथा एक–एक सुरमा एवं इत्र की शीशी को कपड़े में बांधकर पोटली का रूप दे दें। अलग से 10 छिलके वाले बादाम लेकर किसी भी हनुमान मंदिर में जायें और पोटली एवं बादाम मंदिर में हीं कहीं रख दें। फिर स्टील की कटोरी में सिंदूर को चमेली के तेल से गीला कर प्रसाद एवं पीले फूलों के साथ प्रभु को अर्पितकरें। बैठकर हनुमान चालीसा का पाठ करें, और सात बार परिक्रमा करें। तत्पश्चात पोटली मंदिर में ही छोड़ दें। दस बादाम में से आधे बादाम भी मंदिर में ही छोड़ दें और बाकीके बादाम लाकर किसी नये लाल कपड़े में बांधकर अपने धन रखने के स्थान पर रख दें।कष्टमुक्ति के साथ लाभ प्राप्त होगा।

17– आठ शनिवार लगातार किसी ब्राह्मण को उड़द की दाल की खिचड़ी खिलायें। दान में काले कपड़े में उड़द की दाल की ही खिचड़ी बांधकर आठ सिक्के के रूप में दक्षिणा दें।

18– पहले शनिवार को अपने से 19गुना अधिक काला धागा लेकर उसे एक माला का रूप दें,जो गले में पहनी जा सके। किसी भी शनि मंत्र से अभिमंत्रित कर धूप दिखायें। फिर उस माला को गले में धारण करें। तुरंत लाभ मिलेगा।

19– शनिवार को घर में पूजास्थल में बैठकर यह क्रिया करें। इस क्रिया में आठ उड़द मिश्रितदीपक बनाकर उसमें सरसों का तेल भरें। दीपक में दो बत्तियां बनाकर उन्हें एक साथ जलायें, ताकि जलने पर एक ही लौ दे। दीपक में थोड़ा सा सिन्दूर के साथ काले घोड़े की नाल का छल्ला एवं एक कील डालें। काले हकीक की माला से किसी भी शनि मंत्र का 11

माला जाप करें और प्रणाम कर उठ जायें। अगले दिन छल्ला निकालकर दायें हाथ की मध्यमा में धारण करें और दीपक किसी पीपल पर अर्पित कर दें।

20– प्रत्येक शनिवार को आप चोकर सहित तीन मोटी रोटियां अपने ही हाथ से बनायें। एक रोटी के एक ओर सरसों एवं दूसरी ओर शुद्ध घी लगायें। अन्य दो रोटियों में से एक पर घी और एक पर सरसों का तेल चुपड़कर उस पर गुड़ रखें। दोनों ओर चुपड़ी रोटी काली गाय को, सरसों के तेल वाली रोटी कुत्ते को एवं घी चुपड़ी रोटी किसी गरीब मजदूर को दे दें।

21– शमी वृक्ष या बिछुआ की जड़ को शनिपुष्य या शनिवार के श्रवण नक्षत्र में लाकर काले कपड़े में बांध कर अपनी दायीं भुजा पर बांधें। तुरन्त लाभ होगा।

22– किसी भी पहले शनिवार को आप आठ मीटर काला कपड़ा, एक जटा नारियल, काले तिल, काली उड़द, गुड़, जौ, काली सरसों, काला नमक प्रत्येक सामग्री 800 ग्राम, हवन सामग्री, आठ बड़ी टोपीदार कील, इतने ही सिक्के तथा बोतल में 800 ग्राम सरसों एवं चमेली का तेल, दो शीशी काजल तथा दो शीशी काले सुरमे लेकर कपड़े की पोटली बना दें। अपने सिर से सात बार उसार कर किसी डाकौत को दान कर दें। यह उपाय लगातार आठ माह करें। फिर वर्ष में दो बार कर सकते हैं।

23– मांस–मदिरा से दूर रहें।

24– किसी के सामने अपनी समस्याओं या कष्टों के बारे में बात ना करें।

25– घर के मुख्य द्वार की देहरी पर चाँदी का पत्तर दबायें।

26– काले वस्त्र धारण करें।

27– घर के किसी अंधेरे भाग में किसी लोहे के पात्र में सरसों का तेल भरकर उसमें ताँबे के सिक्के डालकर रखें।

28– शनिदेव की कोई भी वस्तु बिना पैसे दिये किसी से भी ना लें।

29– काले घोड़े की नाल लाकर घर के मुख्य द्वार के नीचे दबायें।

30– शनिवार को काले घोड़े की पूंछ के आठ बाल लेकर उन्हें किसी लकड़ी की डिब्बी में रखकर 43 दिन तक अपने शयनकक्ष में रखें। अंतिम दिन बाल को जलाकर उसकी राख को सरसों के तेल में मिलाकर बहते जल में प्रवाहित कर दें।

31– शुक्रवार को 800 ग्राम काले तिल पानी में भिगों दें। अगले दिन उन्हें पीस कर गुड़ के साथ मिलाकर लड्डू बनायें और काले घोड़े को खिलायें। यह उपाय आठ शनिवार

करें।

32– साढ़ेसाती के दौरान अपनी पैतृक संपत्ति ना बेचें। अधिक कष्ट में पड़ सकते हैं।

33– रात्रि के समय सिर्फ शनि का दान करें, किसी को शनि की वस्तु ना दें।

34– नियमित रूप से महामृत्युंजय मंत्र का जाप करें, कष्टों में कमी आयेगी।

35– शनिवार को श्री भैरों मंदिर में शराब अर्पित करें, कष्टों में कमी आयेगी।

36– किसी शनिवार को वीराने स्थान में आठ शीशी सुरमें दबायें।

37– शिवलिंग पर दूध से अभिषेक करें।

38– प्रत्येक शनिवार को किसी सिद्ध हनुमान मंदिर में नारियल अर्पित करें।

39– अपने शयनकक्ष के पलंग के चारों पायों में लोहे की कील ठुकवायें।

40– अपने घर के दक्षिण एवं पश्चिम में कोई पत्थर की शिला रखें।

लाल किताब में गोचर शनि (शनि साढेसाती) का फल और उपाय

द्वादशे जन्मगै राशौ द्वितीये च शनैश्चर।
सर्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुखैर्युतो भवेत।।

(गोचर में जब शनि ग्रह, जन्म चंद्र से बारहवें, पहले और दूसरे भाव में भ्रमण करता है, उस समय (लगभग साढ़े सात वर्ष तक) को शनि साढ़ेसाती के नाम से जाना जाता है।)

(सामान्यतः यह माना जाता है, कि शनि की साढ़ेसाती के दौरान जातक मानसिक कष्ट, शारीरिक कष्ट एवंआर्थिक संकट से गुजरता है। साढ़ेसाती से लोग चिन्तित हो जाते हैं एवं उनके मन में एक अनजाना साडर बना रहता है। जातक में असंतोष, निराशा, आलस्य, तनाव, रोगों से हानि, चोरी या आगजनी से हानि, घर में विवाद या किसी पारिवारिक सदस्य की मृत्यु आदि जैसे फल प्राप्त होने का डर बना रहता है। लेकिन हकीकत में साढ़ेसाती के किसी चरण का पूरा समय– साढ़े सात साल– ऐसा नहीं होता है। काफी शुभ फल जैसे विवाह, संतानोत्पत्ति, नौकरी या व्यवसाय में उन्नति, विदेश यात्रा, भूमि, भवन या वाहनका क्रय, कर्ज से मुक्ति, उंचे तबके के लोगों से संपर्क और उनसे लाभ, धार्मिक स्थलों की यात्रा या धार्मिक कार्यों का आयोजन, संतानों से सुख एवं खुशी आदि भी प्राप्त होते हैं।)

शनि साढेसाती के प्रथम चक्र का विवरण

प्रथम ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से बारहवें) का फल

गोचर राशि –सिहं

Start -07:09:1977

End -04:11:1979

Duration -2 y.1 m.27 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -15:03:1980

End -27:07:1980

Duration -0 y.4 m.12 d.

आपके लिए यह चरण घातक हो सकता है। इस चरण के आरम्भ से ही आपको मानसिक तनाव रह सकता है। तनाव का कारण आपका संतान पक्ष हो सकता है। आपकी संतान आपके हर काम का विरोध करेगी। आपके लिए नित्य नई समस्यायें पैदा करेंगी। आप अपनी संतान की बीमारी पर भी काफी पैसा खर्च कर सकते हैं। आप अपने कार्यों से अपनी संतान के कार्यों में बाधायें उत्पन्न कर सकते हैं। आपकी संतान आपके विचारों से सहमत नहीं हो सकती है। अपनी संतान के कारण आपको कष्ट हो सकता है। आपको अपनी संतान पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

इस समय आपके शत्रु काफी सक्रिय होंगे एवं आपको हानि पहुंचाने की प्रयास करेंगे एवं अपने प्रयासों में वेसफल भी होंगे। आप कई अप्रत्याशित खर्चे कर सकते हैं, जिसकी आपको उम्मीद भी नहीं होगी। आप कई लम्बी यात्राएं कर सकते हैं, जिनसे कोई लाभ होने की संभावना नहीं है। नित्य नई आने वाली परेशानियों के कारण धर्म एवं ईश्वर पर से आपका विश्वास उठ सकता है। इस समय आप ना किसी को उधार दें और ना उधार लें, इससे कई समस्याओं से बच सकते हैं। आप उदर कष्ट एवं त्वचा संबंधित ऐसे

रोगों से पीड़ित हो सकते हैं, जो लम्बे समय तक चल सकते हैं। भाग्य आपका साथ नहीं दे सकता है।

आपको मानसिक रूप से मजबूत बनना चाहिए। भावना में बहकर कोई ऐसा काम ना करें, जिससे आपको अपमानित होना पड़े। आपके मामा–मौसी को भी कई समस्यओं का सामना करना पड़ सकता है। आपके कार्यों में काफी बाधायें आ सकती हैं। आप आर्थिक रूप से इतने परेशान हो सकते हैं, कि धनोपार्जन के लिए किसी दूसरे शहर में जा सकते हैं, लेकिन वहां भी आपको सफलता प्राप्त नहीं हो सकती है। आप भोग–विलास एवं परिधान पर काफी खर्च कर सकते हैं। यदि आपकी आयु 30 से 46 के मध्य है, तो आपको पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। मानसिक रूप से परेशान रहने के कारण आपका मस्तिष्क सही दिशा में कार्य नहीं कर सकता है। खुद को सफल करने के लिए आप फालतू के कार्यों पर अत्यधिक खर्चे कर सकते हैं, जिसका आपको बाद में पछतावा हो सकता है।

इस चरण के मध्य में आपको कुछ आराम मिल सकता है। आप अपनी मनोशक्ति के बल पर कुछ सफलताएं प्राप्त कर सकते हैं। कुछ समय के लिए आपकी आर्थिक स्थिति भी सुधर सकती है और आपके कुछ बिगड़े काम बन सकते हैं। लेकिन यह समय थोड़ी देर के लिए ही आएगा। इसके बाद आपके शत्रु पहले की तुलना में अधिक सक्रिय होंगे और आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे, लेकिन वे सफल नहीं हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपके अधिकारी आपसे नाराज रह सकते हैं और आपको कष्ट पहुंचने का प्रयास कर सकते हैं। अपको सतर्क रहना चाहिए और अतिविश्वास में नहीं आना चाहिए। अतिविश्वास के कारण आप चोरी के शिकार हो सकते हैं, विशेषकर यात्रा के दौरान। इस समय आपको अपने ही कामों से अधिक हानि हो सकती है। अपने भाइयों से बंटवारा भी हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है, तो अशुभ फलों में कुछ कमी हो सकती है। चरण के अन्त समय में लाभ के मौके प्राप्त होंगे, उनका पूरा फायदा उठायें।

द्वितिय ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से पहले) का फल

गोचर राशि –कन्या

Start -04:11:1979

End -15:03:1980

Duration -0 y.4 m.10 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -27:07:1980

End -06:10:1982

Duration -2 y.2 m.10 d.

यह चरण आपके लिए घातक हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है,तभी आपको कुछ शुभ फल प्राप्त हो सकता है। इस चरण की शुरूआत से ही आपको अशुभ संकेत मिलने लगेंगे। आप मानसिक रोग, उन्माद, चर्मरोग, वात आदि से पीड़ित रह सकते हैं। यदि बचपन में ही यह चरण आता है, तो आपको बालारिष्ठ हो सकता है। आपकी चिन्ता खत्म भी नहीं होगी, कि दूसरी नई चिन्ता आपके सामने होगी। आप मानसिक रूप से व्यथित हो सकते हैं एवं भले–बूरे की पहचान खो सकतेहैं। काम–वासना आप पर हावी रहेगा। इसके लिए आप किसी भी हद तक जा सकते हैं और समाजमें अपमानित हो सकते हैं। आप काफी स्वार्थी हो सकते हैं और हर काम में पहले अपना स्वार्थ देखेंगे।

यदि इस समय आपकी आयु 34 से 47 वर्ष के मध्य है, तो आपको अधिक कष्ट प्राप्त हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आप नित्य नई समस्याओं का सामना कर सकते हैं। आपके सहयोगी आपके

खिलाफ हो सकते हैं और आपकी शिकायत वरिष्ठ अधिकारियों से कर सकते हैं। इससे आपके वरिष्ठ अधिकारी भी आपसे नाराज हो सकते हैं और आप पर कोई कार्यवाई कर सकते हैं। परेशानी में आप कोई गलत काम कर सकते हैं और आपको स्थानान्तरित या निष्कासित किया जा सकता है। आपको हर काम सोच–विचार कर ही करना चाहिए, अन्यथा समस्या से घिर सकते हैं। आपके कई कार्य बनते–बनते बिगड़सकते हैं। आपको अपनी वाणी पर संयम एवं क्रोध पर नियंत्रण रखना चाहिए।

आपको पूजा–पाठ की तरफ अपना मन लगाना चाहिए। यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आग या चोरी के माध्यम से आपको हानि होने की संभावना है। आपका पैसा व्यापार में फँस सकता है। पैसा मांगने पर लोगटाल–मटोल कर सकते हैं। धीरे–धीरे व्यापार में हानि बढ़ती जाएगी और आपका मन व्यापार से हट सकता है। आपके कुछ सहयोगी भी शत्रुता निभाने की ताक में हो सकते हैं, इसलिए आप सावधान रहें। ईश्वर की आराधना करें। इस समय आपके व्यवसाय पर कोई सरकारी छापा पड़ सकता है और आप पर आर्थिक दण्ड लग सकता है। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं, तो आपके साझेदार आपको धोखा दे सकते हैं। मानसिक परेशानियों के कारण आप अपने व्यवसाय पर ठीक से ध्यान नहीं दे पायेंगे, जिसका फायदा आपके कर्मचारी चोरी आदि कर के उठा सकते हैं।

आपके पिता कुछ अस्वस्थ हो सकते हैं, और उनकी शल्य क्रिया होने की भी कुछ संभावना है। आपको संचार के माध्यम से कुछ अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है, जिससे आप अधिक परेशान हो सकते हैं। अपने किसी मित्र से लिया कोई पुराना कर्ज आप चुकाने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण आप इसमे सफल नहीं हो सकते हैं। इतना होने के बावजूद आपमें आत्मबल की कमी नहीं होगी। आपके शत्रु आपके लिए बाधायें उत्पन्न कर सकते हैं, लेकिन आप उनकी परवाह ना करते हुए काम में लगे रहें, आपको निश्चित रूप से सफलता प्राप्त होगी।

यदि आप पत्रकारिता, लेखन, समीक्षा या संपादन से संबंधित कार्य करते हैं, तो काफी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आपको दूसरे व्यक्तियों की सोच की चिंता नहीं हो सकती है। यदि आप चिकित्सा या केमिस्ट के क्षेत्र में हैं, तो इस समय आपको हानि हो सकती है। आपकी दी हुई दवा किसी को विपरित प्रतिक्रिया/रियेक्शन कर सकती है। विशेष सावधानी बरतें। यदि आप समाज सेवा या परोपकार में लिप्त हैं, तो आपको काफी उत्तम फल प्राप्त हो सकता है। आपको इस चरण के दौरान मानसिक स्थिरता बनाये रखनी चाहिए।

तृतिय ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से दूसरे) का फल

गोचर राशि –तुला

Start -06:10:1982

End -21:12:1984

Duration -2 y.2 m.15 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -01:06:1985

End -17:09:1985

Duration -0 y.3 m.17 d.

आपको इस चरण में मिश्रित फल प्राप्त होगा। फल का स्वभाव आपकी कुण्डली में चल रही महादशा पर अधिक निर्भर करेगा। शुरू में आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं, लेकिन बाद में शुभ फल प्राप्त होने लगेंगे। आप कोई भी काम काफी सोच–विचार के बाद ही करें। अपनी वाणी पर नियंत्रण रखें एवं कोई भीकाम जल्दबाजी में ना करें, हानि हो सकती है। आप पर काम का बोझ बढ़ सकता है, लेकिन यह

भविष्य के लिए फायदेमंद होगा। इस समय आपको धन लाभ हो सकता है। यदि आप पर कोई कर्ज है, तो आप उसे चुकाने में सक्षम होंगे। आप भूमि, भवन या वाहन खरीद सकते हैं। अपनी माता से कोई उपहार प्राप्त हो सकता है। अपने विरोधियों से सावधान रहें।

यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो अपनी मेहनत एवं दिमाग से तरक्की करेंगे। आपको अपने व्यवसाय में चोरी होने की काफी संभावना है। अपने कर्मचारियों से सावधान रहें। अधिक कार्यभार होने के कारण आप अपने परिवार पर पर्याप्त समय नहीं दे सकते हैं, जिसकी वजह से आपके परिवार वाले आपसे नाराज हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो मनचाहे स्थान पर अपना स्थानान्तरण करवा सकते हैं। आपके अधिकारी आपसे खुश रह सकते हैं, लेकिन आपके सहयोगी उन्हें भड़का सकते हैं। किसी भी कागज पर बिना पढ़े हस्ताक्षर ना करें। यदि आप आर्थिक लेन–देन के क्षेत्र में हैं, तो आपको काफी सावधान रहना चाहिए, आप पर रिश्वत का आरोप लग सकता है। नेताओं से दूर रहें, उन्हें किसी भी तरह से नाराज ना करें।

आप परोपकार एवं धार्मिक कार्यों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेंगे, जिससे आपको समाज में सम्मान मिलेगा। आपको धार्मिक साहित्य के अध्ययन में रूचि हो सकती है। आप धार्मिक स्थल की यात्रा भी कर सकते हैं।यदि आप अभी विद्यार्थी हैं, तो खूब मेहनत करें, अन्यथा परीक्षा में असफल हो सकते हैं। चरण के मध्य काल में आपकी माता अस्वस्थ रह सकती हैं, जिसकी वजह से आप काम पर ध्यान नहीं दे पाएंगे। इससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। कुछ समय बाद आपकी माता स्वस्थ हो जाएंगी और आप अपने काम पर पुनः ध्यान देने लगेंगे। अधिक कार्य होने के कारण आप घर पर समय नहीं दे पाएंगे, जिसकी वजह सेआपके जीवनसाथी नाराज हो सकते हैं। अतः परिवार पर भी पर्याप्त समय दें। इस समय आपकी आर्थिकउन्नति होगी। अपने मित्रों एवं रिश्तेदारों से मधुर संबंध बनाकर रखें। वाणी पर संयम बहुत जरूरी है। आपके शत्रु आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे, लेकिन वे सफल नहीं हो पाएंगे। आप उनकी परवाह ना करते हुए अपना काम करते रहें।

इस समय आप पैरों में दर्द से पीड़ित रह सकते हैं। अधिक मेहनत एवं भाग–दौड़ के कारण आपका शरीरकमजोर हो सकता है। वैसे तो आपको पैसे की कमी नहीं होगी, लेकिन आप हमेशा अधिक धन कमाने के बारे में सोचते रह सकते हैं। आप सुख की प्राप्ति के लिए इधर–उधर भटक सकते हैं और अपनेघर पर ध्यान नहीं दे सकते हैं। आप लोगों पर वर्चस्व पाने की कोशिश में लगे रहेंगे। धन कमाने के लिए आप किसी दूरस्थ स्थान या विदेश भी जा सकते हैं। आपको उंचाई से गिरने, वाहन से चोट, आग, बिजली या किसी जानवर से चोट का खतरा हो सकता है। आपको काफी सावधानी से काम करना चाहिएऔर ईश्वार का ध्यान करते हुए आगे बढ़ते रहना चाहिए।

कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे) का फल

गोचर राशि –धनु

Start -17:12:1987

End -21:03:1990

Duration -2 y.3 m.3 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -20:06:1990

End -15:12:1990

Duration -0 y.5 m.26 d.

इस चरण का फल आपके लिए काफी अशुभ हो सकता है। आपको एक साथ कई रोग हो सकते हैं। इन

रोगों के कारण आप काफी निराश हो सकते हैं। आपके पिता को भी कष्ट हो सकता है, जिससे आप परेशान हो सकते हैं। यदि किसी क्रूर/अशुभ ग्रह की दशा भी चल रही है, तो आप किसी नजदीकी का वियोग भी सह सकते हैं। संचार के माध्यम से कोई अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपके सहकर्मी आपके साथ शत्रुतापूर्ण व्यवहार कर सकते हैं। आप पर नित्य नए आरोप लग सकते हैं, जिसकी वजह से आप मानसिक रूप से काफी परेशान हो सकते हैं और अस्पताल में भी भर्ती होसकते हैं। आपकी नौकरी भी छूट सकती है।

आपका कोई पुराना शत्रु अचानक आपके सामने आ सकता है, जिसकी वजह से आप परेशन रह सकते हैं।इस समय कोई भी आपकी मदद को नहीं आएगा। आप कई प्रकार से हानि उठा सकते हैं और आर्थिकहानि हो सकती है। यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो आपका व्यवसाय बंद होने के कगार पर हो सकता है। यदि किसी शुभ ग्रह के प्रभाव से आपका व्यवसाय बच जाता है, तो भी हानि तो होनी ही है। शत्रु आपके व्यवसाय की बदनामी फैला सकते हैं। आपके किसी कर्मचारी को लालच देकर आपकी गुप्त सूचनाएं एकत्र कर सकते हैं और छापा पड़वाने में मुख्य भूमिका निभा सकते हैं। आपको सत्तापक्ष से भी हानि हो सकती है। आपका कोई भुगतान रूक सकता है। आप जो भी काम करें, सोच–समझ कर ही करें। अनुकूल समय का इंतजार करें एवं बुरे समय को ईश्वर का ध्यान करते हुए निकाल दें।

वाहन चलाते समय काफी सावधानी बरतें, दुर्घटना की संभावना हो सकती है। सिर में गंभीर चोट लगने कीअधिक संभावना है। आपके मामा या मौसी की ओर से आप पर कोई गंभीर आरोप लग सकता है, जिसकी वजह से आपकी माता को कष्ट हो सकता है। उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आपके जीवनसाथी का व्यवहार भी आपके प्रति परिवर्तित हो सकता है, जिसकी वजह से आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। आप गलत कार्यों की तरफ आकृष्ट हो सकते हैं। सत्तापक्ष से भी दण्ड मिल सकता है। इस चरण में आपके धनोपार्जन के सारे प्रयास विफल हो सकते हैं, और जो कुछ भी आप कमायेंगे वो सब भोग–विलास में गवां सकते हैं।

यदि आपकी आयु 34 से 47 वर्ष के मध्य है और राहु भी अशुभ है, तो आपको कारावास भी हो सकता है। यदि मंगल अशुभ है, तो किसी दुर्घटना में अपना कोई अंग भी गंवा सकते हैं। इस दौरान आप अपने भाइयों से अलग हो सकते हैं और जो कुछ धन बंटवारे से मिलेगा वो फालतू के कार्यों में खर्च कर सकते हैं। आप उचित निर्णय लेने में अक्षम हो सकते हैं। लोगों के प्रति आपका व्यवहार भी बदल सकता है, जिसकी वजह से आपके अपने लो भी आपसे बात करना पसंद नहीं कर सकते हैं। आपमें धर्म के प्रति आस्था कम हो सकती है। आपको धार्मिक कार्यों में मन लगाना चाहिए।

अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें) का फल

गोचर राशि –मेष

Start -17:04:1998

End -07:06:2000

Duration -2 y.1 m.21 d.

इस चरण का फल आपके लिए अधिक अशुभ नहीं हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में शनि किसी शुभभाव में बैठा है, तो आपको शुभ फल अधिक प्राप्त हो सकता है। आपको काफी शारीरिक कष्ट हो सकते हैं, जो कि मृत्युतुल्य हो सकते हैं। आपके भाई–बहनों को भी कष्ट हो सकता है। आप भी रोग ग्रस्त हो सकते हैं। अर्श, भगंदर आदि होने की अधिक संभावना है। आप निम्न तबके की महिलाओं के सम्पर्क में आ सकते हैं, जिससे आप समाज में अपमानित हो सकते हैं। आपको अपना चरित्र एवं व्यवहार साफ रखना चाहिए। आपका अवैध संबंध बहुत जल्द लोगों के सामने आ सकता है और आपके परिवार में क्लेश हो सकता

है।

यदि आप विद्यार्थी हैं, तो आपको अपने समाज पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि इस चरण के दौरान आपके भटकने की काफी संभावना है। अध्ययन के क्षेत्र में आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। आपको अपने खर्चे पर नियंत्रण रखना चाहिए और जितना पैसा घर से मिलता है, उतने में ही काम चलायें। अधिक सपनेना देंखें। आप नित्य कई गलतियां कर सकते हैं बाद में आपको पछतावा भी होगा, लेकिन ग्रहों के प्रभाव से पुनः वहीं गलतियां दोहराते रहेंगे। आप अपने कार्यों से ही अपने लोगों में हंसी के पात्र बन सकतेहैं। आप अपने कार्यों को कार्यान्वित करने के लिए फरेब का सहारा भी ले सकते हैं। लोग आपकी बातों पर विश्वास नहीं कर सकते हैं। आपके अपने लोग भी आपका साथ छोड़ सकते हैं। आपके व्यवहार में आए परिवर्तन से आपके दोस्त भी दुश्मन बन सकते हैं। आपके पुराने शत्रु आपके कामों में बाधा पहुंचा सकते हैं। आपका कोई शत्रु आपसे मित्रता कर आपसे गलत कार्य करवा सकता है, सचेत रहें।

यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आपके कपटपूर्ण वयवहार के कारण कई लोग आपके साथ व्यापार बंद करसकते हैं। आपका मन अपने कारोबार में नहीं लग सकता है। आप आलसी हो सकते हैं, जिसकी वजहसे आप व्यवसाय में पिछड़ सकते हैं तथा आपके कर्मचारी इसका लाभ उठा सकते हैं। व्यापार में आर्थिक संकट आ सकता है और आप कर्जदारों से मुंह छिपा सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो शारीरिक अक्षमता के कारण आपका मन अपने काम में नहीं लग सकता है। आप समय पर अपना काम पूरा नहीं कर पाएंगे, जिससे आपके वरिष्ठ अधिकारी आपसे नाराज हो सकते हैं और आपका स्थानान्तरण भी हो सकता है। आपको कोई दण्ड भी मिल सकता है। इस समय आप सिर्फ अपना स्वार्थ देख सकते हैं। आप सिर्फ धनोपार्जन के बारे में सोच सकते हैं। आप रिश्वत आदि भी लेना शुरू कर सकते हैं, लेकिनयह सबके सामने आ जाएगा। आपके सहयोगी ही आपको रंगे हाथ पकड़वा सकते हैं।

यदि आपकी आयु 34 से 46 वर्ष के मध्य है, तो आपको अधिक कष्ट हो सकता है। इस चरण के दौरान आप अधिकांश समय अस्वस्थ ही रहेंगे, लेकिन आप जब स्वस्थ होंगे, तो आप पर काम–वासना हावी रहेगा। आप अप्राकृतिक संबंध भी बना सकते हैं, जिससे आपको गुप्त यौन रोग होने का खातरा हो सकता है।

शनि साढेसाती एवं ढ़ैय्या के उपाय

शनि की साढ़ेसाती या ढैया के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिए नीचे लिखे उपायों को करें–

मंत्र–

1– महामृंत्युंजय मंत्र का सवा लाख जाप (रोज 10 माल, 125 दिन) करें। –

ऊँ त्रयम्बकम् यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं।
उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

2– शनि के निम्नदत्त मंत्र का 21 दिन में 23 हजार जाप करें–

ऊँ शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभिस्रवन्तु नः। ऊँ शं शनैश्चराय

नमः।।

3– पौराणिक शनि मंत्र–

ऊँ नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

स्तोत्र –

नीचे लिखे शनि स्तोत्र का 11 बार पाठ करें या दशरथ कृत शनि स्तोत्र का पाठ करें।

कोणस्थः पिंगलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः।
सौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्पलादेन संस्तुतः।।
तानि शनि–नामामि जपेदश्वत्थसन्निधौ।
शनैश्चरकृता पीड़ा न कदाचिद् भविष्यति।।

साढ़ेसाती पीड़ानाशक स्तोत्र– पिप्पलाद के अनुसार–

नमस्ते कोणसंस्थय पिंड्गलाय नमोस्तुते।
नमस्ते बभ्रु रूपाय कृष्णाय च नमोस्तु ते।।
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च।
नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो।।
नमस्ते यमदसंज्ञाय शनैश्वर नमोस्तु ते।
प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च।।

रत्न–

शनिवार के दिन काले घोड़े की नाल या नाव के तली की कील का छल्ला बनाकर मध्यमा उंगली में धारण करना चाहिए।

व्रत–

शनि वार का व्रत रखना चाहिए एवं शनि देव की पूजा करनी चाहिए। शनिवार व्रतकथा पढ़ने से भी लाभ प्राप्त होता है। व्रत के दौरान दिन में फलाहार करें, एवं सायंकाल हनुमान जी या भौरव जी का दर्शन करना चाहिए। रात्रि में काले उड़द की खिचड़ी (काला नमक मिला सकतेहैं) या उड़द की दाल का मीठा हलवा ग्रहण कर सकते हैं।

दान –

शनिदेव को प्रसन्न करने के लिए उड़द, तेल, नीलम, तिल, भैंस, लोहा एवं काला कपड़ा दान

करना चाहिए।

औषधि –

हर शनिवार को सुरमा, काले तिल, सौंफ और नागरमोथा मिले हुए जल से स्नान करना चाहिए।

कन्या राशि वालों के लिए शनि की साढ़ेसाती एवं ढैया के सामान्य उपाय–

1– शनि यंत्र को पूजास्थल में रखकर नित्य उसके सामने चालीसा का पाठ करें।

2– प्रत्येक बुधवार को विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करें।

3– बुधवार को हिजड़ों को कुछ पैसा देकर उनका आशीष लें।

4– शनिवार को अंधेरा होने पर पीपल के पास जाकर आटे में हरी मसूर का आटा मिलाकर दीपक बनायें। सरसों के तेल में एक कील रखें तथा 11 साबूत हरी मसूर के दाने मिलाकर रूई की ऐसी दो समानान्तर बत्ती बनायें जो जलने पर एक ही लौ दे, पीपल को अर्पित करें तथा मीठा जल भी अर्पित करें।

5– अधिक कष्ट होने पर श्री दुर्गा सप्तशती में से कोई मंत्र चुनकर नियमित जाप करें।

6– शयनकक्ष के पलंग के चारों पायों में लोहे की चार कील ठुकवायें।

7– किसी भी शुक्लपक्ष में नौ वर्ष से कम आयु की 8 कन्याओं को भोजन करवाकर हरे एवं लाल वस्त्र उपहार में दें। ऐसा लगातार पांच मास करें।

8– प्रत्येक शनिवार को छायादान करें।

शनि की साढ़ेसाती एवं ढ़ैय्या के विशेष उपाय –

यदि आपकी कुण्डली में शनि शुभ है, तो भैरोंजी एवं शनिदेव की पूजा–अर्चना कर शनि को और बल देकर लाभ प्राप्त किया जा सकता है। यदि शनि अशुभ या दूषित है, तो शनि के उपाय कर अशुभ फल को खत्म एवं लाभ प्राप्त किया जा सकता है। यदि आपकी कुण्डली में साढ़ेसाती चल रही है या आप शनिकृत कष्ट भोग रहें हैं, तो नीचे लिखे उपायों को करने से आप लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

1– शनि का छाया दान करें एवं नीलम या इसका उपरत्न धारण करें।

2– शनिवार को काली गाय की सेवा करें। तिलक–बिन्दी कर उसके सींग पर कलावा बांध

कर बूंदी के आठ लड्डू खिलायें एवं चरण स्पर्श करें।

3– काले कुत्ते को नियमित रूप से मीठी रोटी खिलायें।

4–यदि आपकी कुण्डली में शनि लग्न में बैठा है, तो जमीन में सुरमा गाड़ें।

5– शनिवार का व्रत रखें तथा पीपल की सेवा करें एवं मीठा जल अर्पित करें।

6– मद्यपान ना करें।

7– शनिवार को अंधेरा होने पर पीपल के वृक्ष पर हनुमान जी का स्मरण कर तिल के तेल केदीपक में सिंदूर डालकर लाल पुष्प अर्पित करें।

8– भोजन में काली मिर्च एवं काला नमक का प्रयोग अवश्य करें।

9– शनिवार को काले घोड़े के पैर की मिट्‌टी काले कपड़े में बांधकर ताबीज के रूप में धारणकरें।

10– शनिवार को आप एक माप की आठ बोतलें लें, और हर बोतल में एक ही माप का सरसोंतेल भरें। प्रत्येक में आठ साबुत उड़द के दाने एवं एक कील डालें। फिर आठों बोतलों को अपने उपर से आठ बार उसार कर बहते जल में प्रवाहित करें। यह क्रिया लगातार आठ शनिवार करें।

11– नियमित रूप से शनि चालीसा एवं उनके 108 नामों का उच्चारण करें।

12– प्रातः उठते ही बासी मुख से शनिदेव के दस नामों का उच्चारण तथा द्वाद्वशज्योतिर्लिंग के नामों का उच्चारण करें।

13– प्रत्येक शनिवार को काले कुत्ते को रोटी पर सरसों का तेल चुपड़ कर गुड़ रख कर खिलायें एवं बंन्दरों को चने खिलायें।

14– शुक्रवार को लोहे के बर्तन में आठ किलो चने भिगों दें। शनिवार को काले कपड़े में सारे चने रखें। साथ में 800 ग्राम काली उड़द और इतने ही काले तिल के साथ इतने ही जौ एवं एक लोहे की पत्ती रखें। इसकी पोटली बनाकर ऐसे स्थान पर डालें जहां मछलियां हों। यह क्रिया लगातार आठ माह करें। शुरू में आठ माह करें, इसके बाद वर्ष में सिर्फ एक बार पर्याप्तहोगा।

15– अंधेरा होने के बाद आटा मिश्रित उड़द का दीपक बनाकर उसमें दो बत्ती जो जलने पर एक ही लौ दे, सरसों के तेल में जलायें। एक दीपक पीपल एवं एक दीपक वट वृक्ष पर अर्पित करें। साथ ही गुग्गुल की धूप एवं चंदन की अगरबत्ती भी अर्पित करें। यह उपाय पहले

शनिवार से शुरू करें।

16– प्रथम शनिवार को आठ मीटर काले कपड़े में 800 ग्राम की मात्रा में काली उड़द, चावल, गुड़, काली सरसों, काले तिल, जौ, आठ बड़ी कीलें तथा एक–एक सुरमा एवं इत्र की शीशी को कपड़े में बांधकर पोटली का रूप दे दें। अलग से 10 छिलके वाले बादाम लेकर किसी भी हनुमान मंदिर में जायें और पोटली एवं बादाम मंदिर में हीं कहीं रख दें। फिर स्टील की कटोरी में सिंदूर को चमेली के तेल से गीला कर प्रसाद एवं पीले फूलों के साथ प्रभु को अर्पितकरें। बैठकर हनुमान चालीसा का पाठ करें, और सात बार परिक्रमा करें। तत्पश्चात पोटली मंदिर में ही छोड़ दें। दस बादाम में से आधे बादाम भी मंदिर में ही छोड़ दें और बाकीके बादाम लाकर किसी नये लाल कपड़े में बांधकर अपने धन रखने के स्थान पर रख दें।कष्टमुक्ति के साथ लाभ प्राप्त होगा।

17– आठ शनिवार लगातार किसी ब्राह्मण को उड़द की दाल की खिचड़ी खिलायें। दान में काले कपड़े में उड़द की दाल की ही खिचड़ी बांधकर आठ सिक्के के रूप में दक्षिणा दें।

18– पहले शनिवार को अपने से 19गुना अधिक काला धागा लेकर उसे एक माला का रूप दें,जो गले में पहनी जा सके। किसी भी शनि मंत्र से अभिमंत्रित कर धूप दिखायें। फिर उस माला को गले में धारण करें। तुरंत लाभ मिलेगा।

19– शनिवार को घर में पूजास्थल में बैठकर यह क्रिया करें। इस क्रिया में आठ उड़द मिश्रितदीपक बनाकर उसमें सरसों का तेल भरें। दीपक में दो बत्तियां बनाकर उन्हें एक साथ जलायें, ताकि जलने पर एक ही लौ दे। दीपक में थोड़ा सा सिन्दूर के साथ काले घोड़े की नाल का छल्ला एवं एक कील डालें। काले हकीक की माला से किसी भी शनि मंत्र का 11 माला जाप करें और प्रणाम कर उठ जायें। अगले दिन छल्ला निकालकर दायें हाथ की मध्यमा में धारण करें और दीपक किसी पीपल पर अर्पित कर दें।

20– प्रत्येक शनिवार को आप चोकर सहित तीन मोटी रोटियां अपने ही हाथ से बनायें। एक रोटी के एक ओर सरसों एवं दूसरी ओर शुद्ध घी लगायें। अन्य दो रोटियों में से एक पर घी और एक पर सरसों का तेल चुपड़कर उस पर गुड़ रखें। दोनों ओर चुपड़ी रोटी काली गाय को, सरसों के तेल वाली रोटी कुत्ते को एवं घी चुपड़ी रोटी किसी गरीब मजदूर को दे दें।

21– शमी वृक्ष या बिछुआ की जड़ को शनिपुष्य या शनिवार के श्रवण नक्षत्र में लाकर काले कपड़े में बांध कर अपनी दायीं भुजा पर बांधें। तुरन्त लाभ होगा।

22– किसी भी पहले शनिवार को आप आठ मीटर काला कपड़ा, एक जटा नारियल, काले तिल, काली उड़द, गुड़, जौ, काली सरसों, काला नमक प्रत्येक सामग्री 800 ग्राम, हवन सामग्री, आठ बड़ी टोपीदार कील, इतने ही सिक्के तथा बोतल में 800 ग्राम सरसों एवं चमेली का तेल, दो शीशी काजल तथा दो शीशी काले सुरमे लेकर कपड़े की पोटली बना दें। अपने सिर से सात बार उसार कर किसी डाकौत को दान कर दें। यह उपाय लगातार आठ माह करें। फिर वर्ष में दो बार कर सकते

हैं।

23– मांस–मदिरा से दूर रहें।

24– किसी के सामने अपनी समस्याओं या कष्टों के बारे में बात ना करें।

25– घर के मुख्य द्वार की देहरी पर चाँदी का पत्तर दबायें।

26– काले वस्त्र धारण करें।

27– घर के किसी अंधेरे भाग में किसी लोहे के पात्र में सरसों का तेल भरकर उसमें ताँबे के सिक्के डालकर रखें।

28– शनिदेव की कोई भी वस्तु बिना पैसे दिये किसी से भी ना लें।

29– काले घोड़े की नाल लाकर घर के मुख्य द्वार के नीचे दबायें।

30– शनिवार को काले घोड़े की पूंछ के आठ बाल लेकर उन्हें किसी लकड़ी की डिब्बी में रखकर 43 दिन तक अपने शयनकक्ष में रखें। अंतिम दिन बाल को जलाकर उसकी राख को सरसों के तेल में मिलाकर बहते जल में प्रवाहित कर दें।

31– शुक्रवार को 800 ग्राम काले तिल पानी में भिगों दें। अगले दिन उन्हें पीस कर गुड़ के साथ मिलाकर लड्डू बनायें और काले घोड़े को खिलायें। यह उपाय आठ शनिवार करें।

32– साढ़ेसाती के दौरान अपनी पैतृक संपत्ति ना बेचें। अधिक कष्ट में पड़ सकते हैं।

33– रात्रि के समय सिर्फ शनि का दान करें, किसी को शनि की वस्तु ना दें।

34– नियमित रूप से महामृत्युंजय मंत्र का जाप करें, कष्टों में कमी आयेगी।

35– शनिवार को श्री भैरों मंदिर में शराब अर्पित करें, कष्टों में कमी आयेगी।

36– किसी शनिवार को वीराने स्थान में आठ शीशी सुरमें दबायें।

37– शिवलिंग पर दूध से अभिषेक करें।

38– प्रत्येक शनिवार को किसी सिद्ध हनुमान मंदिर में नारियल अर्पित करें।

39– अपने शयनकक्ष के पलंग के चारों पायों में लोहे की कील

ठुकवायें।

40– अपने घर के दक्षिण एवं पश्चिम में कोई पत्थर की शिला रखें।

लाल किताब में गोचर शनि (शनि साढेसाती) का फल और उपाय

द्वादशे जन्मगै राशौ द्वितीये च शनैश्चर।
सर्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुखैर्युतो भवेत।।

(गोचर में जब शनि ग्रह, जन्म चंद्र से बारहवें, पहले और दूसरे भाव में भ्रमण करता है, उस समय (लगभग साढ़े सात वर्ष तक) को शनि साढ़ेसाती के नाम से जाना जाता है।)

(सामान्यतः यह माना जाता है, कि शनि की साढ़ेसाती के दौरान जातक मानसिक कष्ट, शारीरिक कष्ट एवंआर्थिक संकट से गुजरता है। साढ़ेसाती से लोग चिन्तित हो जाते हैं एवं उनके मन में एक अनजाना साडर बना रहता है। जातक में असंतोष, निराशा, आलस्य, तनाव, रोगों से हानि, चोरी या आगजनी से हानि, घर में विवाद या किसी पारिवारिक सदस्य की मृत्यु आदि जैसे फल प्राप्त होने का डर बना रहता है। लेकिन हकीकत में साढ़ेसाती के किसी चरण का पूरा समय– साढ़े सात साल– ऐसा नहीं होता है। काफी शुभ फल जैसे विवाह, संतानोत्पत्ति, नौकरी या व्यवसाय में उन्नति, विदेश यात्रा, भूमि, भवन या वाहनका क्रय, कर्ज से मुक्ति, उंचे तबके के लोगों से संपर्क और उनसे लाभ, धार्मिक स्थलों की यात्रा या धार्मिक कार्यों का आयोजन, संतानों से सुख एवं खुशी आदि भी प्राप्त होते हैं।)

शनि साढेसाती के द्वितिय चक्र का विवरण

प्रथम ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से बारहवें) का फल

गोचर राशि –सिहं

Start -01:11:2006

End -10:01:2007

Duration -0 y.2 m.9 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -16:07:2007

End -10:09:2009

Duration -2 y.1 m.25 d.

आपके लिए यह चरण घातक हो सकता है। इस चरण के आरम्भ से ही आपको मानसिक तनाव रह सकता है। तनाव का कारण आपका संतान पक्ष हो सकता है। आपकी संतान आपके हर काम का विरोध करेगी। आपके लिए नित्य नई समस्यायें पैदा करेंगी। आप अपनी संतान की बीमारी पर भी काफी पैसा खर्च कर सकते हैं। आप अपने कार्यों से अपनी संतान के कार्यों में बाधायें उत्पन्न कर सकते हैं। आपकी संतान आपके विचारों से सहमत नहीं हो सकती है। अपनी संतान के कारण आपको कष्ट हो सकता है। आपको अपनी संतान पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

इस समय आपके शत्रु काफी सक्रिय होंगे एवं आपको हानि पहुंचाने की प्रयास करेंगे एवं अपने प्रयासों में वेसफल भी होंगे। आप कई अप्रत्याशित खर्चे कर सकते हैं, जिसकी आपको उम्मीद भी नहीं होगी। आप कई लम्बी यात्राएं कर सकते हैं, जिनसे कोई लाभ होने की संभावना नहीं है। नित्य नई आने वाली परेशानियों के कारण धर्म एवं ईश्वर पर से आपका विश्वास उठ सकता है। इस समय आप ना किसी को उधार दें और ना उधार लें, इससे कई समस्याओं से बच सकते हैं। आप उदर कष्ट एवं त्वचा संबंधित ऐसे

रोगों से पीड़ित हो सकते हैं, जो लम्बे समय तक चल सकते हैं। भाग्य आपका साथ नहीं दे सकता है।

आपको मानसिक रूप से मजबूत बनना चाहिए। भावना में बहकर कोई ऐसा काम ना करें, जिससे आपको अपमानित होना पड़े। आपके मामा–मौसी को भी कई समस्यओं का सामना करना पड़ सकता है। आपके कार्यों में काफी बाधायें आ सकती हैं। आप आर्थिक रूप से इतने परेशान हो सकते हैं, कि धनोपार्जन के लिए किसी दूसरे शहर में जा सकते हैं, लेकिन वहां भी आपको सफलता प्राप्त नहीं हो सकती है। आप भोग–विलास एवं परिधान पर काफी खर्च कर सकते हैं। यदि आपकी आयु 30 से 46 के मध्य है, तो आपको पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। मानसिक रूप से परेशान रहने के कारण आपका मस्तिष्क सही दिशा में कार्य नहीं कर सकता है। खुद को सफल करने के लिए आप फालतू के कार्यों पर अत्यधिक खर्च कर सकते हैं, जिसका आपको बाद में पछतावा हो सकता है।

इस चरण के मध्य में आपको कुछ आराम मिल सकता है। आप अपनी मनोशक्ति के बल पर कुछ सफलताएं प्राप्त कर सकते हैं। कुछ समय के लिए आपकी आर्थिक स्थिति भी सुधर सकती है और आपके कुछ बिगड़े काम बन सकते हैं। लेकिन यह समय थोड़ी देर के लिए ही आएगा। इसके बाद आपके शत्रु पहले की तुलना में अधिक सक्रिय होंगे और आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे, लेकिन वे सफल नहीं हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपके अधिकारी आपसे नाराज रह सकते हैं और आपको कष्ट पहुंचने का प्रयास कर सकते हैं। अपको सतर्क रहना चाहिए और अतिविश्वास में नहीं आना चाहिए। अतिविश्वास के कारण आप चोरी के शिकार हो सकते हैं, विशेषकर यात्रा के दौरान। इस समय आपको अपने ही कामों से अधिक हानि हो सकती है। अपने भाइयों से बंटवारा भी हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है, तो अशुभ फलों में कुछ कमी हो सकती है। चरण के अन्त समय में लाभ के मौके प्राप्त होंगे, उनका पूरा फायदा उठायें।

द्वितिय ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से पहले) का फल

गोचर राशि –कन्या

Start -10:09:2009

End -15:11:2011

Duration -2 y.2 m.5 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -16:05:2012

End -04:08:2012

Duration -0 y.2 m.19 d.

यह चरण आपके लिए घातक हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है,तभी आपको कुछ शुभ फल प्राप्त हो सकता है। इस चरण की शुरूआत से ही आपको अशुभ संकेत मिलने लगेंगे। आप मानसिक रोग, उन्माद, चर्मरोग, वात आदि से पीड़ित रह सकते हैं। यदि बचपन में ही यह चरण आता है, तो आपको बालारिष्ठ हो सकता है। आपकी चिन्ता खत्म भी नहीं होगी, कि दूसरी नई चिन्ता आपके सामने होगी। आप मानसिक रूप से व्यथित हो सकते हैं एवं भले–बूरे की पहचान खो सकतेहैं। काम–वासना आप पर हावी रहेगा। इसके लिए आप किसी भी हद तक जा सकते हैं और समाजमें अपमानित हो सकते हैं। आप काफी स्वार्थी हो सकते हैं और हर काम में पहले अपना स्वार्थ देखेंगे।

यदि इस समय आपकी आयु 34 से 47 वर्ष के मध्य है, तो आपको अधिक कष्ट प्राप्त हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आप नित्य नई समस्याओं का सामना कर सकते हैं। आपके सहयोगी आपके

खिलाफ हो सकते हैं और आपकी शिकायत वरिष्ठ अधिकारियों से कर सकते हैं। इससे आपके वरिष्ठ अधिकारी भी आपसे नाराज हो सकते हैं और आप पर कोई कार्यवाई कर सकते हैं। परेशानी में आप कोई गलत काम कर सकते हैं और आपको स्थानान्तरित या निष्कासित किया जा सकता है। आपको हर काम सोच–विचार कर ही करना चाहिए, अन्यथा समस्या से घिर सकते हैं। आपके कई कार्य बनते–बनते बिगड़सकते हैं। आपको अपनी वाणी पर संयम एवं क्रोध पर नियंत्रण रखना चाहिए।

आपको पूजा–पाठ की तरफ अपना मन लगाना चाहिए। यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आग या चोरी के माध्यम से आपको हानि होने की संभावना है। आपका पैसा व्यापार में फँस सकता है। पैसा मांगने पर लोगटाल–मटोल कर सकते हैं। धीरे–धीरे व्यापार में हानि बढ़ती जाएगी और आपका मन व्यापार से हट सकता है। आपके कुछ सहयोगी भी शत्रुता निभाने की ताक में हो सकते हैं, इसलिए आप सावधान रहें। ईश्वर की आराधना करें। इस समय आपके व्यवसाय पर कोई सरकारी छापा पड़ सकता है और आप पर आर्थिक दण्ड लग सकता है। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं, तो आपके साझेदार आपको धोखा दे सकते हैं। मानसिक परेशानियों के कारण आप अपने व्यवसाय पर ठीक से ध्यान नहीं दे पायेंगे, जिसका फायदा आपके कर्मचारी चोरी आदि कर के उठा सकते हैं।

आपके पिता कुछ अस्वस्थ हो सकते हैं, और उनकी शल्य क्रिया होने की भी कुछ संभावना है। आपको संचार के माध्यम से कुछ अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है, जिससे आप अधिक परेशान हो सकते हैं। अपने किसी मित्र से लिया कोई पुराना कर्ज आप चुकाने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण आप इसमे सफल नहीं हो सकते हैं। इतना होने के बावजूद आपमें आत्मबल की कमी नहीं होगी। आपके शत्रु आपके लिए बाधायें उत्पन्न कर सकते हैं, लेकिन आप उनकी परवाह ना करते हुए काम में लगे रहें, आपको निश्चित रूप से सफलता प्राप्त होगी।

यदि आप पत्रकारिता, लेखन, समीक्षा या संपादन से संबंधित कार्य करते हैं, तो काफी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आपको दूसरे व्यक्तियों की सोच की चिंता नहीं हो सकती है। यदि आप चिकित्सा या केमिस्ट के क्षेत्र में हैं, तो इस समय आपको हानि हो सकती है। आपकी दी हुई दवा किसी को विपरित प्रतिक्रिया/रियेक्शन कर सकती है। विशेष सावधानी बरतें। यदि आप समाज सेवा या परोपकार में लिप्त हैं, तो आपको काफी उत्तम फल प्राप्त हो सकता है। आपको इस चरण के दौरान मानसिक स्थिरता बनाये रखनी चाहिए।

तृतिय ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से दूसरे) का फल

गोचर राशि –तुला

Start -15:11:2011

End -16:05:2012

Duration -0 y.6 m.0 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -04:08:2012

End -02:11:2014

Duration -2 y.2 m.28 d.

आपको इस चरण में मिश्रित फल प्राप्त होगा। फल का स्वभाव आपकी कुण्डली में चल रही महादशा पर अधिक निर्भर करेगा। शुरू में आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं, लेकिन बाद में शुभ फल प्राप्त होने लगेंगे। आप कोई भी काम काफी सोच–विचार के बाद ही करें। अपनी वाणी पर नियंत्रण रखें एवं कोई भीकाम जल्दबाजी में ना करें, हानि हो सकती है। आप पर काम का बोझ बढ़ सकता है, लेकिन यह

भविष्य के लिए फायदेमंद होगा। इस समय आपको धन लाभ हो सकता है। यदि आप पर कोई कर्ज है, तो आप उसे चुकाने में सक्षम होंगे। आप भूमि, भवन या वाहन खरीद सकते हैं। अपनी माता से कोई उपहार प्राप्त हो सकता है। अपने विरोधियों से सावधान रहें।

यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो अपनी मेहनत एवं दिमाग से तरक्की करेंगे। आपको अपने व्यवसाय में चोरी होने की काफी संभावना है। अपने कर्मचारियों से सावधान रहें। अधिक कार्यभार होने के कारण आप अपने परिवार पर पर्याप्त समय नहीं दे सकते हैं, जिसकी वजह से आपके परिवार वाले आपसे नाराज हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो मनचाहे स्थान पर अपना स्थानान्तरण करवा सकते हैं। आपके अधिकारी आपसे खुश रह सकते हैं, लेकिन आपके सहयोगी उन्हें भड़का सकते हैं। किसी भी कागज पर बिना पढ़े हस्ताक्षर ना करें। यदि आप आर्थिक लेन–देन के क्षेत्र में हैं, तो आपको काफी सावधान रहना चाहिए, आप पर रिश्वत का आरोप लग सकता है। नेताओं से दूर रहें, उन्हें किसी भी तरह से नाराज ना करें।

आप परोपकार एवं धार्मिक कार्यों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेंगे, जिससे आपको समाज में सम्मान मिलेगा। आपको धार्मिक साहित्य के अध्ययन में रूचि हो सकती है। आप धार्मिक स्थल की यात्रा भी कर सकते हैं।यदि आप अभी विद्यार्थी हैं, तो खूब मेहनत करें, अन्यथा परीक्षा में असफल हो सकते हैं। चरण के मध्य काल में आपकी माता अस्वस्थ रह सकती हैं, जिसकी वजह से आप काम पर ध्यान नहीं दे पाएंगे। इससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। कुछ समय बाद आपकी माता स्वस्थ हो जाएंगी और आप अपने काम पर पुनः ध्यान देने लगेंगे। अधिक कार्य होने के कारण आप घर पर समय नहीं दे पाएंगे, जिसकी वजह सेआपके जीवनसाथी नाराज हो सकते हैं। अतः परिवार पर भी पर्याप्त समय दें। इस समय आपकी आर्थिकउन्नति होगी। अपने मित्रों एवं रिश्तेदारों से मधुर संबंध बनाकर रखें। वाणी पर संयम बहुत जरूरी है। आपके शत्रु आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे, लेकिन वे सफल नहीं हो पाएंगे। आप उनकी परवाह ना करते हुए अपना काम करते रहें।

इस समय आप पैरों में दर्द से पीड़ित रह सकते हैं। अधिक मेहनत एवं भाग–दौड़ के कारण आपका शरीरकमजोर हो सकता है। वैसे तो आपको पैसे की कमी नहीं होगी, लेकिन आप हमेशा अधिक धन कमाने के बारे में सोचते रह सकते हैं। आप सुख की प्राप्ति के लिए इधर–उधर भटक सकते हैं और अपनेघर पर ध्यान नहीं दे सकते हैं। आप लोगों पर वर्चस्व पाने की कोशिश में लगे रहेंगे। धन कमाने के लिए आप किसी दूरस्थ स्थान या विदेश भी जा सकते हैं। आपको उंचाई से गिरने, वाहन से चोट, आग, बिजली या किसी जानवर से चोट का खतरा हो सकता है। आपको काफी सावधानी से काम करना चाहिएऔर ईश्वार का ध्यान करते हुए आगे बढ़ते रहना चाहिए।

कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे) का फल

गोचर राशि –धनु

Start -26:01:2017

End -21:06:2017

Duration -0 y.4 m.24 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -26:10:2017

End -24:01:2020

Duration -2 y.2 m.29 d.

इस चरण का फल आपके लिए काफी अशुभ हो सकता है। आपको एक साथ कई रोग हो सकते हैं। इन

रोगों के कारण आप काफी निराश हो सकते हैं। आपके पिता को भी कष्ट हो सकता है, जिससे आप परेशान हो सकते हैं। यदि किसी क्रूर/अशुभ ग्रह की दशा भी चल रही है, तो आप किसी नजदीकी का वियोग भी सह सकते हैं। संचार के माध्यम से कोई अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपके सहकर्मी आपके साथ शत्रुतापूर्ण व्यवहार कर सकते हैं। आप पर नित्य नए आरोप लग सकते हैं, जिसकी वजह से आप मानसिक रूप से काफी परेशान हो सकते हैं और अस्पताल में भी भर्ती होसकते हैं। आपकी नौकरी भी छूट सकती है।

आपका कोई पुराना शत्रु अचानक आपके सामने आ सकता है, जिसकी वजह से आप परेशन रह सकते हैं।इस समय कोई भी आपकी मदद को नहीं आएगा। आप कई प्रकार से हानि उठा सकते हैं और आर्थिकहानि हो सकती है। यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो आपका व्यवसाय बंद होने के कगार पर हो सकता है। यदि किसी शुभ ग्रह के प्रभाव से आपका व्यवसाय बच जाता है, तो भी हानि तो होनी ही है। शत्रु आपके व्यवसाय की बदनामी फैला सकते हैं। आपके किसी कर्मचारी को लालच देकर आपकी गुप्त सूचनाएं एकत्र कर सकते हैं और छापा पड़वाने में मुख्य भूमिका निभा सकते हैं। आपको सत्तापक्ष से भी हानि हो सकती है। आपका कोई भुगतान रूक सकता है। आप जो भी काम करें, सोच–समझ कर ही करें। अनुकूल समय का इंतजार करें एवं बुरे समय को ईश्वर का ध्यान करते हुए निकाल दें।

वाहन चलाते समय काफी सावधानी बरतें, दुर्घटना की संभावना हो सकती है। सिर में गंभीर चोट लगने कीअधिक संभावना है। आपके मामा या मौसी की ओर से आप पर कोई गंभीर आरोप लग सकता है, जिसकी वजह से आपकी माता को कष्ट हो सकता है। उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आपके जीवनसाथी का व्यवहार भी आपके प्रति परिवर्तित हो सकता है, जिसकी वजह से आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। आप गलत कार्यों की तरफ आकृष्ट हो सकते हैं। सत्तापक्ष से भी दण्ड मिल सकता है। इस चरण में आपके धनोपार्जन के सारे प्रयास विफल हो सकते हैं, और जो कुछ भी आप कमायेंगे वो सब भोग–विलास में गवां सकते हैं।

यदि आपकी आयु 34 से 47 वर्ष के मध्य है और राहु भी अशुभ है, तो आपको कारावास भी हो सकता है। यदि मंगल अशुभ है, तो किसी दुर्घटना में अपना कोई अंग भी गंवा सकते हैं। इस दौरान आप अपने भाइयों से अलग हो सकते हैं और जो कुछ धन बंटवारे से मिलेगा वो फालतू के कार्यों में खर्च कर सकते हैं। आप उचित निर्णय लेने में अक्षम हो सकते हैं। लोगों के प्रति आपका व्यवहार भी बदल सकता है, जिसकी वजह से आपके अपने लो भी आपसे बात करना पसंद नहीं कर सकते हैं। आपमें धर्म के प्रति आस्था कम हो सकती है। आपको धार्मिक कार्यों में मन लगाना चाहिए।

अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें) का फल

गोचर राशि –मेष

Start -03:06:2027

End -20:10:2027

Duration -0 y.4 m.17 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -23:02:2028

End -08:08:2029

Duration -1 y.5 m.14 d.

इस चरण का फल आपके लिए अधिक अशुभ नहीं हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में शनि किसी शुभभाव में बैठा है, तो आपको शुभ फल अधिक प्राप्त हो सकता है। आपको काफी शारीरिक कष्ट हो

सकते हैं, जो कि मृत्युतुल्य हो सकते हैं। आपके भाई–बहनों को भी कष्ट हो सकता है। आप भी रोग ग्रस्त हो सकते हैं। अर्श, भगंदर आदि होने की अधिक संभावना है। आप निम्न तबके की महिलाओं के सम्पर्क में आ सकते हैं, जिससे आप समाज में अपमानित हो सकते हैं। आपको अपना चरित्र एवं व्यवहार साफ रखना चाहिए। आपका अवैध संबंध बहुत जल्द लोगों के सामने आ सकता है और आपके परिवार में क्लेश हो सकता है।

यदि आप विद्यार्थी हैं, तो आपको अपने समाज पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि इस चरण के दौरान आपके भटकने की काफी संभावना है। अध्ययन के क्षेत्र में आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। आपको अपने खर्चे पर नियंत्रण रखना चाहिए और जितना पैसा घर से मिलता है, उतने में ही काम चलायें। अधिक सपनेना देंखें। आप नित्य कई गलतियां कर सकते हैं बाद में आपको पछतावा भी होगा, लेकिन ग्रहों के प्रभाव से पुनः वहीं गलतियां दोहराते रहेंगे। आप अपने कार्यों से ही अपने लोगों में हंसी के पात्र बन सकतेहैं। आप अपने कार्यों को कार्यान्वित करने के लिए फरेब का सहारा भी ले सकते हैं। लोग आपकी बातों पर विश्वास नहीं कर सकते हैं। आपके अपने लोग भी आपका साथ छोड़ सकते हैं। आपके व्यवहार में आए परिवर्तन से आपके दोस्त भी दुश्मन बन सकते हैं। आपके पुराने शत्रु आपके कामों में बाधा पहुंचा सकते हैं। आपका कोई शत्रु आपसे मित्रता कर आपसे गलत कार्य करवा सकता है, सचेत रहें।

यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आपके कपटपूर्ण वयवहार के कारण कई लोग आपके साथ व्यापार बंद करसकते हैं। आपका मन अपने कारोबार में नहीं लग सकता है। आप आलसी हो सकते हैं, जिसकी वजहसे आप व्यवसाय में पिछड़ सकते हैं तथा आपके कर्मचारी इसका लाभ उठा सकते हैं। व्यापार में आर्थिक संकट आ सकता है और आप कर्जदारों से मुंह छिपा सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो शारीरिक अक्षमता के कारण आपका मन अपने काम में नहीं लग सकता है। आप समय पर अपना काम पूरा नहीं कर पाएंगे, जिससे आपके वरिष्ठ अधिकारी आपसे नाराज हो सकते हैं और आपका स्थानान्तरण भी हो सकता है। आपको कोई दण्ड भी मिल सकता है। इस समय आप सिर्फ अपना स्वार्थ देख सकते हैं। आप सिर्फ धनोपार्जन के बारे में सोच सकते हैं। आप रिश्वत आदि भी लेना शुरू कर सकते हैं, लेकिनयह सबके सामने आ जाएगा। आपके सहयोगी ही आपको रंगे हाथ पकड़वा सकते हैं।

यदि आपकी आयु 34 से 46 वर्ष के मध्य है, तो आपको अधिक कष्ट हो सकता है। इस चरण के दौरान आप अधिकांश समय अस्वस्थ ही रहेंगे, लेकिन आप जब स्वस्थ होंगे, तो आप पर काम–वासना हावी रहेगा। आप अप्राकृतिक संबंध भी बना सकते हैं, जिससे आपको गुप्त यौन रोग होने का खातरा हो सकता है।

शनि साढेसाती एवं ढ़ैय्या के उपाय

शनि की साढ़ेसाती या ढैया के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिए नीचे लिखे उपायों को करें–

मंत्र–

1– महामृंत्युंजय मंत्र का सवा लाख जाप (रोज 10 माल, 125 दिन) करें। –

ऊँ त्रयम्बकम् यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं।
उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय

मामृतात्।।

2– शनि के निम्नदत्त मंत्र का 21 दिन में 23 हजार जाप करें–

ऊँ शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभिस्रवन्तु नः। ऊँ शं शनैश्चराय नमः।।

3– पौराणिक शनि मंत्र–

ऊँ नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

स्तोत्र –

नीचे लिखे शनि स्तोत्र का 11 बार पाठ करें या दशरथ कृत शनि स्तोत्र का पाठ करें।

कोणस्थः पिंगलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः।
सौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्पलादेन संस्तुतः।।
तानि शनि–नामामि जपेदश्वत्थसन्निधौ।
शनैश्चरकृता पीड़ा न कदाचिद् भविष्यति।।

साढ़ेसाती पीड़ानाशक स्तोत्र– पिप्पलाद के अनुसार–

नमस्ते कोणसंस्थय पिंड्गलाय नमोस्तुते।
नमस्ते बभ्रु रूपाय कृष्णाय च नमोस्तु ते।।
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च।
नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो।।
नमस्ते यमदसंज्ञाय शनैश्वर नमोस्तु ते।
प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च।।

रत्न–

शनिवार के दिन काले घोड़े की नाल या नाव के तली की कील का छल्ला बनाकर मध्यमा उंगली में धारण करना चाहिए।

व्रत–

शनि वार का व्रत रखना चाहिए एवं शनि देव की पूजा करनी चाहिए। शनिवार व्रतकथा पढ़ने से भी लाभ प्राप्त होता है। व्रत के दौरान दिन में फलाहार करें, एवं सायंकाल हनुमान जी या भौरव जी का दर्शन करना चाहिए। रात्रि में काले उड़द की खिचड़ी (काला नमक मिला

सकते हैं) या उड़द की दाल का मीठा हलवा ग्रहण कर सकते हैं।

दान –

शनिदेव को प्रसन्न करने के लिए उड़द, तेल, नीलम, तिल, भैंस, लोहा एवं काला कपड़ा दान करना चाहिए।

औषधि –

हर शनिवार को सुरमा, काले तिल, सौंफ और नागरमोथा मिले हुए जल से स्नान करना चाहिए।

कन्या राशि वालों के लिए शनि की साढ़ेसाती एवं ढैया के सामान्य उपाय–

1– शनि यंत्र को पूजास्थल में रखकर नित्य उसके सामने चालीसा का पाठ करें।

2– प्रत्येक बुधवार को विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करें।

3– बुधवार को हिजड़ों को कुछ पैसा देकर उनका आशीष लें।

4– शनिवार को अंधेरा होने पर पीपल के पास जाकर आटे में हरी मसूर का आटा मिलाकर दीपक बनायें। सरसों के तेल में एक कील रखें तथा 11 साबूत हरी मसूर के दाने मिलाकर रूई की ऐसी दो समानान्तर बत्ती बनायें जो जलने पर एक ही लौ दे, पीपल को अर्पित करें तथा मीठा जल भी अर्पित करें।

5– अधिक कष्ट होने पर श्री दुर्गा सप्तशती में से कोई मंत्र चुनकर नियमित जाप करें।

6– शयनकक्ष के पलंग के चारों पायों में लोहे की चार कील ठुकवायें।

7– किसी भी शुक्लपक्ष में नौ वर्ष से कम आयु की 8 कन्याओं को भोजन करवाकर हरे एवं लाल वस्त्र उपहार में दें। ऐसा लगातार पांच मास करें।

8– प्रत्येक शनिवार को छायादान करें।

शनि की साढ़ेसाती एवं ढ़ैय्या के विशेष उपाय –

यदि आपकी कुण्डली में शनि शुभ है, तो भैरोंजी एवं शनिदेव की पूजा–अर्चना कर शनि को और बल देकर लाभ प्राप्त किया जा सकता है। यदि शनि अशुभ या दूषित है, तो शनि के उपाय कर अशुभ फल को खत्म एवं लाभ प्राप्त किया जा सकता है। यदि आपकी कुण्डली में साढ़ेसाती चल रही है या आप शनिकृत कष्ट भोग रहें हैं, तो नीचे लिखे उपायों को करने से

आप लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

1– शनि का छाया दान करें एवं नीलम या इसका उपरत्न धारण करें।

2– शनिवार को काली गाय की सेवा करें। तिलक–बिन्दी कर उसके सींग पर कलावा बांध कर बूंदी के आठ लड्डू खिलायें एवं चरण स्पर्श करें।

3– काले कुत्ते को नियमित रूप से मीठी रोटी खिलायें।

4–यदि आपकी कुण्डली में शनि लग्न में बैठा है, तो जमीन में सुरमा गाड़ें।

5– शनिवार का व्रत रखें तथा पीपल की सेवा करें एवं मीठा जल अर्पित करें।

6– मद्यपान ना करें।

7– शनिवार को अंधेरा होने पर पीपल के वृक्ष पर हनुमान जी का स्मरण कर तिल के तेल केदीपक में सिंदूर डालकर लाल पुष्प अर्पित करें।

8– भोजन में काली मिर्च एवं काला नमक का प्रयोग अवश्य करें।

9– शनिवार को काले घोड़े के पैर की मिट्टी काले कपड़े में बांधकर ताबीज के रूप में धारणकरें।

10– शनिवार को आप एक माप की आठ बोतलें लें, और हर बोतल में एक ही माप का सरसोंतेल भरें। प्रत्येक में आठ साबुत उड़द के दाने एवं एक कील डालें। फिर आठों बोतलों को अपने उपर से आठ बार उसार कर बहते जल में प्रवाहित करें। यह क्रिया लगातार आठ शनिवार करें।

11– नियमित रूप से शनि चालीसा एवं उनके 108 नामों का उच्चारण करें।

12– प्रातः उठते ही बासी मुख से शनिदेव के दस नामों का उच्चारण तथा द्वाद्वशज्योतिर्लिंग के नामों का उच्चारण करें।

13– प्रत्येक शनिवार को काले कुत्ते को रोटी पर सरसों का तेल चुपड़ कर गुड़ रख कर खिलायें एवं बंन्दरों को चने खिलायें।

14– शुक्रवार को लोहे के बर्तन में आठ किलो चने भिगों दें। शनिवार को काले कपड़े में सारे चने रखें। साथ में 800 ग्राम काली उड़द और इतने ही काले तिल के साथ इतने ही जौ एवं एक लोहे की पत्ती रखें। इसकी पोटली बनाकर ऐसे स्थान पर डालें जहां मछलियां हों। यह क्रिया लगातार आठ माह करें। शुरू में आठ माह करें, इसके बाद वर्ष में सिर्फ एक बार

पर्याप्त होगा।

15– अंधेरा होने के बाद आटा मिश्रित उड़द का दीपक बनाकर उसमें दो बत्ती जो जलने पर एक ही लौ दे, सरसों के तेल में जलायें। एक दीपक पीपल एवं एक दीपक वट वृक्ष पर अर्पित करें। साथ ही गुग्गुल की धूप एवं चंदन की अगरबत्ती भी अर्पित करें। यह उपाय पहले शनिवार से शुरू करें।

16– प्रथम शनिवार को आठ मीटर काले कपड़े में 800 ग्राम की मात्रा में काली उड़द, चावल, गुड़, काली सरसों, काले तिल, जौ, आठ बड़ी कीलें तथा एक–एक सुरमा एवं इत्र की शीशी को कपड़े में बांधकर पोटली का रूप दे दें। अलग से 10 छिलके वाले बादाम लेकर किसी भी हनुमान मंदिर में जायें और पोटली एवं बादाम मंदिर में हीं कहीं रख दें। फिर स्टील की कटोरी में सिंदूर को चमेली के तेल से गीला कर प्रसाद एवं पीले फूलों के साथ प्रभु को अर्पितकरें। बैठकर हनुमान चालीसा का पाठ करें, और सात बार परिक्रमा करें। तत्पश्चात पोटली मंदिर में ही छोड़ दें। दस बादाम में से आधे बादाम भी मंदिर में ही छोड़ दें और बाकीके बादाम लाकर किसी नये लाल कपड़े में बांधकर अपने धन रखने के स्थान पर रख दें।कष्टमुक्ति के साथ लाभ प्राप्त होगा।

17– आठ शनिवार लगातार किसी ब्राह्मण को उड़द की दाल की खिचड़ी खिलायें। दान में काले कपड़े में उड़द की दाल की ही खिचड़ी बांधकर आठ सिक्के के रूप में दक्षिणा दें।

18– पहले शनिवार को अपने से 19गुना अधिक काला धागा लेकर उसे एक माला का रूप दें,जो गले में पहनी जा सके। किसी भी शनि मंत्र से अभिमंत्रित कर धूप दिखायें। फिर उस माला को गले में धारण करें। तुरंत लाभ मिलेगा।

19– शनिवार को घर में पूजास्थल में बैठकर यह क्रिया करें। इस क्रिया में आठ उड़द मिश्रितदीपक बनाकर उसमें सरसों का तेल भरें। दीपक में दो बत्तियां बनाकर उन्हें एक साथ जलायें, ताकि जलने पर एक ही लौ दे। दीपक में थोड़ा सा सिन्दूर के साथ काले घोड़े की नाल का छल्ला एवं एक कील डालें। काले हकीक की माला से किसी भी शनि मंत्र का 11 माला जाप करें और प्रणाम कर उठ जायें। अगले दिन छल्ला निकालकर दायें हाथ की मध्यमा में धारण करें और दीपक किसी पीपल पर अर्पित कर दें।

20– प्रत्येक शनिवार को आप चोकर सहित तीन मोटी रोटियां अपने ही हाथ से बनायें। एक रोटी के एक ओर सरसों एवं दूसरी ओर शुद्ध घी लगायें। अन्य दो रोटियों में से एक पर घी और एक पर सरसों का तेल चुपड़कर उस पर गुड़ रखें। दोनों ओर चुपड़ी रोटी काली गाय को, सरसों के तेल वाली रोटी कुत्ते को एवं घी चुपड़ी रोटी किसी गरीब मजदूर को दे दें।

21– शमी वृक्ष या बिछुआ की जड़ को शनिपुष्य या शनिवार के श्रवण नक्षत्र में लाकर काले कपड़े में बांध कर अपनी दायीं भुजा पर बांधें। तुरन्त लाभ होगा।

22– किसी भी पहले शनिवार को आप आठ मीटर काला कपड़ा, एक जटा नारियल, काले

तिल, काली उड़द, गुड़, जौ, काली सरसों, काला नमक प्रत्येक सामग्री 800 ग्राम, हवन सामग्री, आठ बड़ी टोपीदार कील, इतने ही सिक्के तथा बोतल में 800 ग्राम सरसों एवं चमेली का तेल, दो शीशी काजल तथा दो शीशी काले सुरमे लेकर कपड़े की पोटली बना दें। अपने सिर से सात बार उसार कर किसी डाकौत को दान कर दें। यह उपाय लगातार आठ माह करें। फिर वर्ष में दो बार कर सकते हैं।

23– मांस–मदिरा से दूर रहें।

24– किसी के सामने अपनी समस्याओं या कष्टों के बारे में बात ना करें।

25– घर के मुख्य द्वार की देहरी पर चाँदी का पत्तर दबायें।

26– काले वस्त्र धारण करें।

27– घर के किसी अंधेरे भाग में किसी लोहे के पात्र में सरसों का तेल भरकर उसमें ताँबे के सिक्के डालकर रखें।

28– शनिदेव की कोई भी वस्तु बिना पैसे दिये किसी से भी ना लें।

29– काले घोड़े की नाल लाकर घर के मुख्य द्वार के नीचे दबायें।

30– शनिवार को काले घोड़े की पूंछ के आठ बाल लेकर उन्हें किसी लकड़ी की डिब्बी में रखकर 43 दिन तक अपने शयनकक्ष में रखें। अंतिम दिन बाल को जलाकर उसकी राख को सरसों के तेल में मिलाकर बहते जल में प्रवाहित कर दें।

31– शुक्रवार को 800 ग्राम काले तिल पानी में भिगों दें। अगले दिन उन्हें पीस कर गुड़ के साथ मिलाकर लड्डू बनायें और काले घोड़े को खिलायें। यह उपाय आठ शनिवार करें।

32– साढ़ेसाती के दौरान अपनी पैतृक संपत्ति ना बेचें। अधिक कष्ट में पड़ सकते हैं।

33– रात्रि के समय सिर्फ शनि का दान करें, किसी को शनि की वस्तु ना दें।

34– नियमित रूप से महामृत्युंजय मंत्र का जाप करें, कष्टों में कमी आयेगी।

35– शनिवार को श्री भैरों मंदिर में शराब अर्पित करें, कष्टों में कमी आयेगी।

36– किसी शनिवार को वीराने स्थान में आठ शीशी सुरमें दबायें।

37– शिवलिंग पर दूध से अभिषेक

करें।

38– प्रत्येक शनिवार को किसी सिद्ध हनुमान मंदिर में नारियल अर्पित करें।

39– अपने शयनकक्ष के पलंग के चारों पायों में लोहे की कील ठुकवायें।

40– अपने घर के दक्षिण एवं पश्चिम में कोई पत्थर की शिला रखें।

लाल किताब में गोचर शनि (शनि साढेसाती) का फल और उपाय

द्वादशे जन्मगै राशौ द्वितीये च शनैश्चर।
सर्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुखैर्युतो भवेत।।

(गोचर में जब शनि ग्रह, जन्म चंद्र से बारहवें, पहले और दूसरे भाव में भ्रमण करता है, उस समय (लगभग साढ़े सात वर्ष तक) को शनि साढ़ेसाती के नाम से जाना जाता है।)

(सामान्यतः यह माना जाता है, कि शनि की साढ़ेसाती के दौरान जातक मानसिक कष्ट, शारीरिक कष्ट एवंआर्थिक संकट से गुजरता है। साढ़ेसाती से लोग चिन्तित हो जाते हैं एवं उनके मन में एक अनजाना साडर बना रहता है। जातक में असंतोष, निराशा, आलस्य, तनाव, रोगों से हानि, चोरी या आगजनी से हानि, घर में विवाद या किसी पारिवारिक सदस्य की मृत्यु आदि जैसे फल प्राप्त होने का डर बना रहता है। लेकिन हकीकत में साढ़ेसाती के किसी चरण का पूरा समय– साढ़े सात साल– ऐसा नहीं होता है। काफी शुभ फल जैसे विवाह, संतानोत्पत्ति, नौकरी या व्यवसाय में उन्नति, विदेश यात्रा, भूमि, भवन या वाहनका क्रय, कर्ज से मुक्ति, उंचे तबके के लोगों से संपर्क और उनसे लाभ, धार्मिक स्थलों की यात्रा या धार्मिक कार्यों का आयोजन, संतानों से सुख एवं खुशी आदि भी प्राप्त होते हैं।)

शनि साढेसाती के तृतिय चक्र का विवरण

प्रथम ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से बारहवें) का फल

गोचर राशि –सिहं

Start -27:08:2036

End -22:10:2038

Duration -2 y.1 m.25 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -05:04:2039

End -13:07:2039

Duration -0 y.3 m.8 d.

आपके लिए यह चरण घातक हो सकता है। इस चरण के आरम्भ से ही आपको मानसिक तनाव रह सकता है। तनाव का कारण आपका संतान पक्ष हो सकता है। आपकी संतान आपके हर काम का विरोध करेगी। आपके लिए नित्य नई समस्यायें पैदा करेंगी। आप अपनी संतान की बीमारी पर भी काफी पैसा खर्च कर सकते हैं। आप अपने कार्यों से अपनी संतान के कार्यों में बाधायें उत्पन्न कर सकते हैं। आपकी संतान आपके विचारों से सहमत नहीं हो सकती है। अपनी संतान के कारण आपको कष्ट हो सकता है। आपको अपनी संतान पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

इस समय आपके शत्रु काफी सक्रिय होंगे एवं आपको हानि पहुंचाने की प्रयास करेंगे एवं अपने प्रयासों में वेसफल भी होंगे। आप कई अप्रत्याशित खर्चे कर सकते हैं, जिसकी आपको उम्मीद भी नहीं होगी। आप कई लम्बी यात्राएं कर सकते हैं, जिनसे कोई लाभ होने की संभावना नहीं है। नित्य नई आने वाली परेशानियों के कारण धर्म एवं ईश्वर पर से आपका विश्वास उठ सकता है। इस समय आप ना किसी को उधार दें और ना उधार लें, इससे कई समस्याओं से बच सकते हैं। आप उदर कष्ट एवं त्वचा संबंधित ऐसे

रोगों से पीड़ित हो सकते हैं, जो लम्बे समय तक चल सकते हैं। भाग्य आपका साथ नहीं दे सकता है।

आपको मानसिक रूप से मजबूत बनना चाहिए। भावना में बहकर कोई ऐसा काम ना करें, जिससे आपको अपमानित होना पड़े। आपके मामा–मौसी को भी कई समस्यओं का सामना करना पड़ सकता है। आपके कार्यों में काफी बाधायें आ सकती हैं। आप आर्थिक रूप से इतने परेशान हो सकते हैं, कि धनोपार्जन के लिए किसी दूसरे शहर में जा सकते हैं, लेकिन वहां भी आपको सफलता प्राप्त नहीं हो सकती है। आप भोग–विलास एवं परिधान पर काफी खर्च कर सकते हैं। यदि आपकी आयु 30 से 46 के मध्य है, तो आपको पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। मानसिक रूप से परेशान रहने के कारण आपका मस्तिष्क सही दिशा में कार्य नहीं कर सकता है। खुद को सफल करने के लिए आप फालतू के कार्यों पर अत्यधिक खर्च कर सकते हैं, जिसका आपको बाद में पछतावा हो सकता है।

इस चरण के मध्य में आपको कुछ आराम मिल सकता है। आप अपनी मनोशक्ति के बल पर कुछ सफलताएं प्राप्त कर सकते हैं। कुछ समय के लिए आपकी आर्थिक स्थिति भी सुधर सकती है और आपके कुछ बिगड़े काम बन सकते हैं। लेकिन यह समय थोड़ी देर के लिए ही आएगा। इसके बाद आपके शत्रु पहले की तुलना में अधिक सक्रिय होंगे और आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे, लेकिन वे सफल नहीं हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपके अधिकारी आपसे नाराज रह सकते हैं और आपको कष्ट पहुंचने का प्रयास कर सकते हैं। अपको सतर्क रहना चाहिए और अतिविश्वास में नहीं आना चाहिए। अतिविश्वास के कारण आप चोरी के शिकार हो सकते हैं, विशेषकर यात्रा के दौरान। इस समय आपको अपने ही कामों से अधिक हानि हो सकती है। अपने भाइयों से बंटवारा भी हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है, तो अशुभ फलों में कुछ कमी हो सकती है। चरण के अन्त समय में लाभ के मौके प्राप्त होंगे, उनका पूरा फायदा उठायें।

द्वितिय ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से पहले) का फल

गोचर राशि –कन्या

Start -22:10:2038

End -05:04:2039

Duration -0 y.5 m.13 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -13:07:2039

End -28:01:2041

Duration -1 y.6 m.16 d.

यह चरण आपके लिए घातक हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है,तभी आपको कुछ शुभ फल प्राप्त हो सकता है। इस चरण की शुरूआत से ही आपको अशुभ संकेत मिलने लगेंगे। आप मानसिक रोग, उन्माद, चर्मरोग, वात आदि से पीड़ित रह सकते हैं। यदि बचपन में ही यह चरण आता है, तो आपको बालारिष्ठ हो सकता है। आपकी चिन्ता खत्म भी नहीं होगी, कि दूसरी नई चिन्ता आपके सामने होगी। आप मानसिक रूप से व्यथित हो सकते हैं एवं भले–बूरे की पहचान खो सकतेहैं। काम–वासना आप पर हावी रहेगा। इसके लिए आप किसी भी हद तक जा सकते हैं और समाजमें अपमानित हो सकते हैं। आप काफी स्वार्थी हो सकते हैं और हर काम में पहले अपना स्वार्थ देखेंगे।

यदि इस समय आपकी आयु 34 से 47 वर्ष के मध्य है, तो आपको अधिक कष्ट प्राप्त हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आप नित्य नई समस्याओं का सामना कर सकते हैं। आपके सहयोगी आपके

खिलाफ हो सकते हैं और आपकी शिकायत वरिष्ठ अधिकारियों से कर सकते हैं। इससे आपके वरिष्ठ अधिकारी भी आपसे नाराज हो सकते हैं और आप पर कोई कार्यवाई कर सकते हैं। परेशानी में आप कोई गलत काम कर सकते हैं और आपको स्थानान्तरित या निष्कासित किया जा सकता है। आपको हर काम सोच–विचार कर ही करना चाहिए, अन्यथा समस्या से घिर सकते हैं। आपके कई कार्य बनते–बनते बिगड़सकते हैं। आपको अपनी वाणी पर संयम एवं क्रोध पर नियंत्रण रखना चाहिए।

आपको पूजा–पाठ की तरफ अपना मन लगाना चाहिए। यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आग या चोरी के माध्यम से आपको हानि होने की संभावना है। आपका पैसा व्यापार में फँस सकता है। पैसा मांगने पर लोगटाल–मटोल कर सकते हैं। धीरे–धीरे व्यापार में हानि बढ़ती जाएगी और आपका मन व्यापार से हट सकता है। आपके कुछ सहयोगी भी शत्रुता निभाने की ताक में हो सकते हैं, इसलिए आप सावधान रहें। ईश्वर की आराधना करें। इस समय आपके व्यवसाय पर कोई सरकारी छापा पड़ सकता है और आप पर आर्थिक दण्ड लग सकता है। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं, तो आपके साझेदार आपको धोखा दे सकते हैं। मानसिक परेशानियों के कारण आप अपने व्यवसाय पर ठीक से ध्यान नहीं दे पायेंगे, जिसका फायदा आपके कर्मचारी चोरी आदि कर के उठा सकते हैं।

आपके पिता कुछ अस्वस्थ हो सकते हैं, और उनकी शल्य क्रिया होने की भी कुछ संभावना है। आपको संचार के माध्यम से कुछ अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है, जिससे आप अधिक परेशान हो सकते हैं। अपने किसी मित्र से लिया कोई पुराना कर्ज आप चुकाने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण आप इसमे सफल नहीं हो सकते हैं। इतना होने के बावजूद आपमें आत्मबल की कमी नहीं होगी। आपके शत्रु आपके लिए बाधायें उत्पन्न कर सकते हैं, लेकिन आप उनकी परवाह ना करते हुए काम में लगे रहें, आपको निश्चित रूप से सफलता प्राप्त होगी।

यदि आप पत्रकारिता, लेखन, समीक्षा या संपादन से संबंधित कार्य करते हैं, तो काफी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आपको दूसरे व्यक्तियों की सोच की चिंता नहीं हो सकती है। यदि आप चिकित्सा या केमिस्ट के क्षेत्र में हैं, तो इस समय आपको हानि हो सकती है। आपकी दी हुई दवा किसी को विपरित प्रतिक्रिया/रियेक्शन कर सकती है। विशेष सावधानी बरतें। यदि आप समाज सेवा या परोपकार में लिप्त हैं, तो आपको काफी उत्तम फल प्राप्त हो सकता है। आपको इस चरण के दौरान मानसिक स्थिरता बनाये रखनी चाहिए।

तृतिय ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से दूसरे) का फल

गोचर राशि –तुला

Start -28:01:2041

End -06:02:2041

Duration -0 y.0 m.9 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -26:09:2041

End -12:12:2043

Duration -2 y.2 m.16 d.

आपको इस चरण में मिश्रित फल प्राप्त होगा। फल का स्वभाव आपकी कुण्डली में चल रही महादशा पर अधिक निर्भर करेगा। शुरू में आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं, लेकिन बाद में शुभ फल प्राप्त होने लगेंगे। आप कोई भी काम काफी सोच–विचार के बाद ही करें। अपनी वाणी पर नियंत्रण रखें एवं कोई भीकाम जल्दबाजी में ना करें, हानि हो सकती है। आप पर काम का बोझ बढ़ सकता है, लेकिन यह

भविष्य के लिए फायदेमंद होगा। इस समय आपको धन लाभ हो सकता है। यदि आप पर कोई कर्ज है, तो आप उसे चुकाने में सक्षम होंगे। आप भूमि, भवन या वाहन खरीद सकते हैं। अपनी माता से कोई उपहार प्राप्त हो सकता है। अपने विरोधियों से सावधान रहें।

यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो अपनी मेहनत एवं दिमाग से तरक्की करेंगे। आपको अपने व्यवसाय में चोरी होने की काफी संभावना है। अपने कर्मचारियों से सावधान रहें। अधिक कार्यभार होने के कारण आप अपने परिवार पर पर्याप्त समय नहीं दे सकते हैं, जिसकी वजह से आपके परिवार वाले आपसे नाराज हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो मनचाहे स्थान पर अपना स्थानान्तरण करवा सकते हैं। आपके अधिकारी आपसे खुश रह सकते हैं, लेकिन आपके सहयोगी उन्हें भड़का सकते हैं। किसी भी कागज पर बिना पढ़े हस्ताक्षर ना करें। यदि आप आर्थिक लेन–देन के क्षेत्र में हैं, तो आपको काफी सावधान रहना चाहिए, आप पर रिश्वत का आरोप लग सकता है। नेताओं से दूर रहें, उन्हें किसी भी तरह से नाराज ना करें।

आप परोपकार एवं धार्मिक कार्यों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेंगे, जिससे आपको समाज में सम्मान मिलेगा। आपको धार्मिक साहित्य के अध्ययन में रूचि हो सकती है। आप धार्मिक स्थल की यात्रा भी कर सकते हैं।यदि आप अभी विद्यार्थी हैं, तो खूब मेहनत करें, अन्यथा परीक्षा में असफल हो सकते हैं। चरण के मध्य काल में आपकी माता अस्वस्थ रह सकती हैं, जिसकी वजह से आप काम पर ध्यान नहीं दे पाएंगे। इससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। कुछ समय बाद आपकी माता स्वस्थ हो जाएंगी और आप अपने काम पर पुनः ध्यान देने लगेंगे। अधिक कार्य होने के कारण आप घर पर समय नहीं दे पाएंगे, जिसकी वजह सेआपके जीवनसाथी नाराज हो सकते हैं। अतः परिवार पर भी पर्याप्त समय दें। इस समय आपकी आर्थिकउन्नति होगी। अपने मित्रों एवं रिश्तेदारों से मधुर संबंध बनाकर रखें। वाणी पर संयम बहुत जरूरी है। आपके शत्रु आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे, लेकिन वे सफल नहीं हो पाएंगे। आप उनकी परवाह ना करते हुए अपना काम करते रहें।

इस समय आप पैरों में दर्द से पीड़ित रह सकते हैं। अधिक मेहनत एवं भाग–दौड़ के कारण आपका शरीरकमजोर हो सकता है। वैसे तो आपको पैसे की कमी नहीं होगी, लेकिन आप हमेशा अधिक धन कमाने के बारे में सोचते रह सकते हैं। आप सुख की प्राप्ति के लिए इधर–उधर भटक सकते हैं और अपनेघर पर ध्यान नहीं दे सकते हैं। आप लोगों पर वर्चस्व पाने की कोशिश में लगे रहेंगे। धन कमाने के लिए आप किसी दूरस्थ स्थान या विदेश भी जा सकते हैं। आपको उंचाई से गिरने, वाहन से चोट, आग, बिजली या किसी जानवर से चोट का खतरा हो सकता है। आपको काफी सावधानी से काम करना चाहिएऔर ईश्वार का ध्यान करते हुए आगे बढ़ते रहना चाहिए।

कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे) का फल

गोचर राशि –धनु

Start -08:12:2046

End -06:03:2049

Duration -2 y.2 m.27 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -10:07:2049

End -04:12:2049

Duration -0 y.4 m.25 d.

इस चरण का फल आपके लिए काफी अशुभ हो सकता है। आपको एक साथ कई रोग हो सकते हैं। इन

रोगों के कारण आप काफी निराश हो सकते हैं। आपके पिता को भी कष्ट हो सकता है, जिससे आप परेशान हो सकते हैं। यदि किसी क्रूर/अशुभ ग्रह की दशा भी चल रही है, तो आप किसी नजदीकी का वियोग भी सह सकते हैं। संचार के माध्यम से कोई अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपके सहकर्मी आपके साथ शत्रुतापूर्ण व्यवहार कर सकते हैं। आप पर नित्य नए आरोप लग सकते हैं, जिसकी वजह से आप मानसिक रूप से काफी परेशान हो सकते हैं और अस्पताल में भी भर्ती होसकते हैं। आपकी नौकरी भी छूट सकती है।

आपका कोई पुराना शत्रु अचानक आपके सामने आ सकता है, जिसकी वजह से आप परेशन रह सकते हैं।इस समय कोई भी आपकी मदद को नहीं आएगा। आप कई प्रकार से हानि उठा सकते हैं और आर्थिकहानि हो सकती है। यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो आपका व्यवसाय बंद होने के कगार पर हो सकता है। यदि किसी शुभ ग्रह के प्रभाव से आपका व्यवसाय बच जाता है, तो भी हानि तो होनी ही है। शत्रु आपके व्यवसाय की बदनामी फैला सकते हैं। आपके किसी कर्मचारी को लालच देकर आपकी गुप्त सूचनाएं एकत्र कर सकते हैं और छापा पड़वाने में मुख्य भूमिका निभा सकते हैं। आपको सत्तापक्ष से भी हानि हो सकती है। आपका कोई भुगतान रूक सकता है। आप जो भी काम करें, सोच–समझ कर ही करें। अनुकूल समय का इंतजार करें एवं बुरे समय को ईश्वर का ध्यान करते हुए निकाल दें।

वाहन चलाते समय काफी सावधानी बरतें, दुर्घटना की संभावना हो सकती है। सिर में गंभीर चोट लगने कीअधिक संभावना है। आपके मामा या मौसी की ओर से आप पर कोई गंभीर आरोप लग सकता है, जिसकी वजह से आपकी माता को कष्ट हो सकता है। उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आपके जीवनसाथी का व्यवहार भी आपके प्रति परिवर्तित हो सकता है, जिसकी वजह से आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। आप गलत कार्यों की तरफ आकृष्ट हो सकते हैं। सत्तापक्ष से भी दण्ड मिल सकता है। इस चरण में आपके धनोपार्जन के सारे प्रयास विफल हो सकते हैं, और जो कुछ भी आप कमायेंगे वो सब भोग–विलास में गवां सकते हैं।

यदि आपकी आयु 34 से 47 वर्ष के मध्य है और राहु भी अशुभ है, तो आपको कारावास भी हो सकता है। यदि मंगल अशुभ है, तो किसी दुर्घटना में अपना कोई अंग भी गंवा सकते हैं। इस दौरान आप अपने भाइयों से अलग हो सकते हैं और जो कुछ धन बंटवारे से मिलेगा वो फालतू के कार्यों में खर्च कर सकते हैं। आप उचित निर्णय लेने में अक्षम हो सकते हैं। लोगों के प्रति आपका व्यवहार भी बदल सकता है, जिसकी वजह से आपके अपने लो भी आपसे बात करना पसंद नहीं कर सकते हैं। आपमें धर्म के प्रति आस्था कम हो सकती है। आपको धार्मिक कार्यों में मन लगाना चाहिए।

अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें) का फल

गोचर राशि –मेष

Start -07:04:2057

End -28:05:2059

Duration -2 y.1 m.20 d.

इस चरण का फल आपके लिए अधिक अशुभ नहीं हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में शनि किसी शुभभाव में बैठा है, तो आपको शुभ फल अधिक प्राप्त हो सकता है। आपको काफी शारीरिक कष्ट हो सकते हैं, जो कि मृत्युतुल्य हो सकते हैं। आपके भाई–बहनों को भी कष्ट हो सकता है। आप भी रोग ग्रस्त हो सकते हैं। अर्श, भगंदर आदि होने की अधिक संभावना है। आप निम्न तबके की महिलाओं के सम्पर्क में आ सकते हैं, जिससे आप समाज में अपमानित हो सकते हैं। आपको अपना चरित्र एवं व्यवहार साफ रखना चाहिए। आपका अवैध संबंध बहुत जल्द लोगों के सामने आ सकता है और आपके परिवार में क्लेश हो सकता

है।

यदि आप विद्यार्थी हैं, तो आपको अपने समाज पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि इस चरण के दौरान आपके भटकने की काफी संभावना है। अध्ययन के क्षेत्र में आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। आपको अपने खर्चे पर नियंत्रण रखना चाहिए और जितना पैसा घर से मिलता है, उतने में ही काम चलायें। अधिक सपनेना देंखें। आप नित्य कई गलतियां कर सकते हैं बाद में आपको पछतावा भी होगा, लेकिन ग्रहों के प्रभाव से पुनः वहीं गलतियां दोहराते रहेंगे। आप अपने कार्यों से ही अपने लोगों में हंसी के पात्र बन सकतेहैं। आप अपने कार्यों को कार्यान्वित करने के लिए फरेब का सहारा भी ले सकते हैं। लोग आपकी बातों पर विश्वास नहीं कर सकते हैं। आपके अपने लोग भी आपका साथ छोड़ सकते हैं। आपके व्यवहार में आए परिवर्तन से आपके दोस्त भी दुश्मन बन सकते हैं। आपके पुराने शत्रु आपके कामों में बाधा पहुंचा सकते हैं। आपका कोई शत्रु आपसे मित्रता कर आपसे गलत कार्य करवा सकता है, सचेत रहें।

यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आपके कपटपूर्ण वयवहार के कारण कई लोग आपके साथ व्यापार बंद करसकते हैं। आपका मन अपने कारोबार में नहीं लग सकता है। आप आलसी हो सकते हैं, जिसकी वजहसे आप व्यवसाय में पिछड़ सकते हैं तथा आपके कर्मचारी इसका लाभ उठा सकते हैं। व्यापार में आर्थिक संकट आ सकता है और आप कर्जदारों से मुंह छिपा सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो शारीरिक अक्षमता के कारण आपका मन अपने काम में नहीं लग सकता है। आप समय पर अपना काम पूरा नहीं कर पाएंगे, जिससे आपके वरिष्ठ अधिकारी आपसे नाराज हो सकते हैं और आपका स्थानान्तरण भी हो सकता है। आपको कोई दण्ड भी मिल सकता है। इस समय आप सिर्फ अपना स्वार्थ देख सकते हैं। आप सिर्फ धनोपार्जन के बारे में सोच सकते हैं। आप रिश्वत आदि भी लेना शुरू कर सकते हैं, लेकिनयह सबके सामने आ जाएगा। आपके सहयोगी ही आपको रंगे हाथ पकड़वा सकते हैं।

यदि आपकी आयु 34 से 46 वर्ष के मध्य है, तो आपको अधिक कष्ट हो सकता है। इस चरण के दौरान आप अधिकांश समय अस्वस्थ ही रहेंगे, लेकिन आप जब स्वस्थ होंगे, तो आप पर काम–वासना हावी रहेगा। आप अप्राकृतिक संबंध भी बना सकते हैं, जिससे आपको गुप्त यौन रोग होने का खतरा हो सकता है।

शनि साढेसाती एवं ढ़ैय्या के उपाय

शनि की साढ़ेसाती या ढैया के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिए नीचे लिखे उपायों को करें–

मंत्र–

1– महामृंत्युंजय मंत्र का सवा लाख जाप (रोज 10 माल, 125 दिन) करें। –

ऊँ त्रयम्बकम् यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं।
उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

2– शनि के निम्नदत्त मंत्र का 21 दिन में 23 हजार जाप करें–

ऊँ शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभिस्रवन्तु नः। ऊँ शं शनैश्चराय

नमः।।

3– पौराणिक शनि मंत्र–

ऊँ नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

स्तोत्र –

नीचे लिखे शनि स्तोत्र का 11 बार पाठ करें या दशरथ कृत शनि स्तोत्र का पाठ करें।

कोणस्थः पिंगलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः।
सौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्पलादेन संस्तुतः।।
तानि शनि–नामामि जपेदश्वत्थसन्निधौ।
शनैश्चरकृता पीड़ा न कदाचिद् भविष्यति।।

साढ़ेसाती पीड़ानाशक स्तोत्र– पिप्पलाद के अनुसार–

नमस्ते कोणसंस्थय पिंड्गलाय नमोस्तुते।
नमस्ते बभ्रु रूपाय कृष्णाय च नमोस्तु ते।।
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च।
नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो।।
नमस्ते यमदसंज्ञाय शनैश्वर नमोस्तु ते।
प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च।।

रत्न–

शनिवार के दिन काले घोड़े की नाल या नाव के तली की कील का छल्ला बनाकर मध्यमा उंगली में धारण करना चाहिए।

व्रत–

शनि वार का व्रत रखना चाहिए एवं शनि देव की पूजा करनी चाहिए। शनिवार व्रतकथा पढ़ने से भी लाभ प्राप्त होता है। व्रत के दौरान दिन में फलाहार करें, एवं सायंकाल हनुमान जी या भौरव जी का दर्शन करना चाहिए। रात्रि में काले उड़द की खिचड़ी (काला नमक मिला सकतेहैं) या उड़द की दाल का मीठा हलवा ग्रहण कर सकते हैं।

दान –

शनिदेव को प्रसन्न करने के लिए उड़द, तेल, नीलम, तिल, भैंस, लोहा एवं काला कपड़ा दान

करना चाहिए।

औषधि –

हर शनिवार को सुरमा, काले तिल, सौंफ और नागरमोथा मिले हुए जल से स्नान करना चाहिए।

कन्या राशि वालों के लिए शनि की साढ़ेसाती एवं ढैया के सामान्य उपाय–

1– शनि यंत्र को पूजास्थल में रखकर नित्य उसके सामने चालीसा का पाठ करें।

2– प्रत्येक बुधवार को विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करें।

3– बुधवार को हिजड़ों को कुछ पैसा देकर उनका आशीष लें।

4– शनिवार को अंधेरा होने पर पीपल के पास जाकर आटे में हरी मसूर का आटा मिलाकर दीपक बनायें। सरसों के तेल में एक कील रखें तथा 11 साबूत हरी मसूर के दाने मिलाकर रूई की ऐसी दो समानान्तर बत्ती बनायें जो जलने पर एक ही लौ दे, पीपल को अर्पित करें तथा मीठा जल भी अर्पित करें।

5– अधिक कष्ट होने पर श्री दुर्गा सप्तशती में से कोई मंत्र चुनकर नियमित जाप करें।

6– शयनकक्ष के पलंग के चारों पायों में लोहे की चार कील ठुकवायें।

7– किसी भी शुक्लपक्ष में नौ वर्ष से कम आयु की 8 कन्याओं को भोजन करवाकर हरे एवं लाल वस्त्र उपहार में दें। ऐसा लगातार पांच मास करें।

8– प्रत्येक शनिवार को छायादान करें।

शनि की साढ़ेसाती एवं ढ़ैय्या के विशेष उपाय –

यदि आपकी कुण्डली में शनि शुभ है, तो भैरोंजी एवं शनिदेव की पूजा–अर्चना कर शनि को और बल देकर लाभ प्राप्त किया जा सकता है। यदि शनि अशुभ या दूषित है, तो शनि के उपाय कर अशुभ फल को खत्म एवं लाभ प्राप्त किया जा सकता है। यदि आपकी कुण्डली में साढ़ेसाती चल रही है या आप शनिकृत कष्ट भोग रहें हैं, तो नीचे लिखे उपायों को करने से आप लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

1– शनि का छाया दान करें एवं नीलम या इसका उपरत्न धारण करें।

2– शनिवार को काली गाय की सेवा करें। तिलक–बिन्दी कर उसके सींग पर कलावा बांध

कर बूंदी के आठ लड्डू खिलायें एवं चरण स्पर्श करें।

3– काले कुत्ते को नियमित रूप से मीठी रोटी खिलायें।

4–यदि आपकी कुण्डली में शनि लग्न में बैठा है, तो जमीन में सुरमा गाड़ें।

5– शनिवार का व्रत रखें तथा पीपल की सेवा करें एवं मीठा जल अर्पित करें।

6– मद्यपान ना करें।

7– शनिवार को अंधेरा होने पर पीपल के वृक्ष पर हनुमान जी का स्मरण कर तिल के तेल केदीपक में सिंदूर डालकर लाल पुष्प अर्पित करें।

8– भोजन में काली मिर्च एवं काला नमक का प्रयोग अवश्य करें।

9– शनिवार को काले घोड़े के पैर की मिट्टी काले कपड़े में बांधकर ताबीज के रूप में धारणकरें।

10– शनिवार को आप एक माप की आठ बोतलें लें, और हर बोतल में एक ही माप का सरसोंतेल भरें। प्रत्येक में आठ साबुत उड़द के दाने एवं एक कील डालें। फिर आठों बोतलों को अपने उपर से आठ बार उसार कर बहते जल में प्रवाहित करें। यह क्रिया लगातार आठ शनिवार करें।

11– नियमित रूप से शनि चालीसा एवं उनके 108 नामों का उच्चारण करें।

12– प्रातः उठते ही बासी मुख से शनिदेव के दस नामों का उच्चारण तथा द्वाद्वशज्योतिर्लिंग के नामों का उच्चारण करें।

13– प्रत्येक शनिवार को काले कुत्ते को रोटी पर सरसों का तेल चुपड़ कर गुड़ रख कर खिलायें एवं बंन्दरों को चने खिलायें।

14– शुक्रवार को लोहे के बर्तन में आठ किलो चने भिगों दें। शनिवार को काले कपड़े में सारे चने रखें। साथ में 800 ग्राम काली उड़द और इतने ही काले तिल के साथ इतने ही जौ एवं एक लोहे की पत्ती रखें। इसकी पोटली बनाकर ऐसे स्थान पर डालें जहां मछलियां हों। यह क्रिया लगातार आठ माह करें। शुरू में आठ माह करें, इसके बाद वर्ष में सिर्फ एक बार पर्याप्तहोगा।

15– अंधेरा होने के बाद आटा मिश्रित उड़द का दीपक बनाकर उसमें दो बत्ती जो जलने पर एक ही लौ दे, सरसों के तेल में जलायें। एक दीपक पीपल एवं एक दीपक वट वृक्ष पर अर्पित करें। साथ ही गुग्गुल की धूप एवं चंदन की अगरबत्ती भी अर्पित करें। यह उपाय पहले

शनिवार से शुरू करें।

16– प्रथम शनिवार को आठ मीटर काले कपड़े में 800 ग्राम की मात्रा में काली उड़द, चावल, गुड़, काली सरसों, काले तिल, जौ, आठ बड़ी कीलें तथा एक–एक सुरमा एवं इत्र की शीशी को कपड़े में बांधकर पोटली का रूप दे दें। अलग से 10 छिलके वाले बादाम लेकर किसी भी हनुमान मंदिर में जायें और पोटली एवं बादाम मंदिर में हीं कहीं रख दें। फिर स्टील की कटोरी में सिंदूर को चमेली के तेल से गीला कर प्रसाद एवं पीले फूलों के साथ प्रभु को अर्पितकरें। बैठकर हनुमान चालीसा का पाठ करें, और सात बार परिक्रमा करें। तत्पश्चात पोटली मंदिर में ही छोड़ दें। दस बादाम में से आधे बादाम भी मंदिर में ही छोड़ दें और बाकीके बादाम लाकर किसी नये लाल कपड़े में बांधकर अपने धन रखने के स्थान पर रख दें।कष्टमुक्ति के साथ लाभ प्राप्त होगा।

17– आठ शनिवार लगातार किसी ब्राह्मण को उड़द की दाल की खिचड़ी खिलायें। दान में काले कपड़े में उड़द की दाल की ही खिचड़ी बांधकर आठ सिक्के के रूप में दक्षिणा दें।

18– पहले शनिवार को अपने से 19गुना अधिक काला धागा लेकर उसे एक माला का रूप दें,जो गले में पहनी जा सके। किसी भी शनि मंत्र से अभिमंत्रित कर धूप दिखायें। फिर उस माला को गले में धारण करें। तुरंत लाभ मिलेगा।

19– शनिवार को घर में पूजास्थल में बैठकर यह क्रिया करें। इस क्रिया में आठ उड़द मिश्रितदीपक बनाकर उसमें सरसों का तेल भरें। दीपक में दो बत्तियां बनाकर उन्हें एक साथ जलायें, ताकि जलने पर एक ही लौ दे। दीपक में थोड़ा सा सिन्दूर के साथ काले घोड़े की नाल का छल्ला एवं एक कील डालें। काले हकीक की माला से किसी भी शनि मंत्र का 11 माला जाप करें और प्रणाम कर उठ जायें। अगले दिन छल्ला निकालकर दायें हाथ की मध्यमा में धारण करें और दीपक किसी पीपल पर अर्पित कर दें।

20– प्रत्येक शनिवार को आप चोकर सहित तीन मोटी रोटियां अपने ही हाथ से बनायें। एक रोटी के एक ओर सरसों एवं दूसरी ओर शुद्ध घी लगायें। अन्य दो रोटियों में से एक पर घी और एक पर सरसों का तेल चुपड़कर उस पर गुड़ रखें। दोनों ओर चुपड़ी रोटी काली गाय को, सरसों के तेल वाली रोटी कुत्ते को एवं घी चुपड़ी रोटी किसी गरीब मजदूर को दे दें।

21– शमी वृक्ष या बिछुआ की जड़ को शनिपुष्य या शनिवार के श्रवण नक्षत्र में लाकर काले कपड़े में बांध कर अपनी दायीं भुजा पर बांधें। तुरन्त लाभ होगा।

22– किसी भी पहले शनिवार को आप आठ मीटर काला कपड़ा, एक जटा नारियल, काले तिल, काली उड़द, गुड़, जौ, काली सरसों, काला नमक प्रत्येक सामग्री 800 ग्राम, हवन सामग्री, आठ बड़ी टोपीदार कील, इतने ही सिक्के तथा बोतल में 800 ग्राम सरसों एवं चमेली का तेल, दो शीशी काजल तथा दो शीशी काले सुरमे लेकर कपड़े की पोटली बना दें। अपने सिर से सात बार उसार कर किसी डाकौत को दान कर दें। यह उपाय लगातार आठ माह करें। फिर वर्ष में दो बार कर सकते

हैं।

23– मांस–मदिरा से दूर रहें।

24– किसी के सामने अपनी समस्याओं या कष्टों के बारे में बात ना करें।

25– घर के मुख्य द्वार की देहरी पर चाँदी का पत्तर दबायें।

26– काले वस्त्र धारण करें।

27– घर के किसी अंधेरे भाग में किसी लोहे के पात्र में सरसों का तेल भरकर उसमें ताँबे के सिक्के डालकर रखें।

28– शनिदेव की कोई भी वस्तु बिना पैसे दिये किसी से भी ना लें।

29– काले घोड़े की नाल लाकर घर के मुख्य द्वार के नीचे दबायें।

30– शनिवार को काले घोड़े की पूंछ के आठ बाल लेकर उन्हें किसी लकड़ी की डिब्बी में रखकर 43 दिन तक अपने शयनकक्ष में रखें। अंतिम दिन बाल को जलाकर उसकी राख को सरसों के तेल में मिलाकर बहते जल में प्रवाहित कर दें।

31– शुक्रवार को 800 ग्राम काले तिल पानी में भिगों दें। अगले दिन उन्हें पीस कर गुड़ के साथ मिलाकर लड्डू बनायें और काले घोड़े को खिलायें। यह उपाय आठ शनिवार करें।

32– साढ़ेसाती के दौरान अपनी पैतृक संपत्ति ना बेचें। अधिक कष्ट में पड़ सकते हैं।

33– रात्रि के समय सिर्फ शनि का दान करें, किसी को शनि की वस्तु ना दें।

34– नियमित रूप से महामृत्युंजय मंत्र का जाप करें, कष्टों में कमी आयेगी।

35– शनिवार को श्री भैरों मंदिर में शराब अर्पित करें, कष्टों में कमी आयेगी।

36– किसी शनिवार को वीराने स्थान में आठ शीशी सुरमें दबायें।

37– शिवलिंग पर दूध से अभिषेक करें।

38– प्रत्येक शनिवार को किसी सिद्ध हनुमान मंदिर में नारियल अर्पित करें।

39– अपने शयनकक्ष के पलंग के चारों पायों में लोहे की कील

ठुकवायें।

40– अपने घर के दक्षिण एवं पश्चिम में कोई पत्थर की शिला रखें।

विंशोत्तरी दशाफल

चन्द्रमा दशा (18:12:1973 से 14:06:1979)

वर्तमान समय में आपकी चंद्रमा की महादशा चल रही है और चंद्रमा आपकी कुण्डली में लग्न में स्थित है।आपकी कुण्डली में कृष्ण पक्ष का चंद्रमा लग्न में है, आपको भारी मानसिक पीड़ा हो सकती है, संबंधियों से झगड़ा हो सकता है, आपको जल संबंधी रोग हो सकते हैं, विशेषकर आपके फेफड़े में पानी जमा हो सकता है।

वर्तमान समय में आपकी चंद्रमा की महादशा चल रही है और चंद्रमा आपकी कुण्डली में कन्या राशि में स्थित है। चंद्रमा की अपनी दशा के दौरान, आप यदि नौकरी में हैं, तो नगद धन के नियोजन का काम करेंगे। दूसरे कारकों के आधार पर आपका जीवनसाथी से अलगाव या उनको मृत्यु तुल्य कष्ट हो सकता है। आप धार्मिक कार्यों में रूचि लेंगे।

शनि अर्न्तदशा (18:12:1973 से 14:04:1975)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए बहुत उत्तम नहीं हो सकती है। आपको अकथित परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आप संबंधियों के कारण दुख और खतरों का सामना कर सकते हैं। आप, आपका जीवनसाथी, संतानें, माता–पिता एक साथ कई रोगों से ग्रसित हो सकते हैं। आपका चिकित्सकीय खर्चा बढ़ सकता है।आप उपचार के विभिन्न तरीके अपना सकते हैं और धन बर्बाद कर सकते हैं। हालांकि, अन्तर्दशा के अन्त में आपको कोई ऐसा व्यक्ति मिल सकता है जो कुछ उपचार के तरीके बतायेगा और आप उनका प्रयोग आखिरी उपाय के रूप में करके परिणाम प्राप्त करेंगे।

बिना उपायों के प्रयोग के अगली बुध की अन्तर्दशा में सुधार होना तय है– जो कि सबसे उत्तम दशा होगी। परिस्थितियों के कारण आपको खुशियां प्राप्त होने में कठिनाई आ सकती है। आपको अपनी माता केस्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए– जैसाकि यह अन्तर्दशा माता के लिए संकटकरी हो सकती है। आपकोअपने परिवार के बड़ों या पारिवारिक देवता का शाप लग सकता है। आपका शरीर कमजोर हो सकता है और आपको अपने स्वास्थ्य में सुधार करने में बहुत परेशानी हो सकती है। डॉक्टर रोग का पता लगाने में असफल हो सकते हैं। अन्ततः आपको पता चल सकता है कि कोई अदृश्य ताकत आपके शरीर के अन्दर है। आपको सरकारी अधिकारी के क्रोध का सामना करना पड़ सकता है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (18:12:1973 से 05:03:1974)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशा में जीवन के अति कटु अनुभवों का अहसास इस दशा में धीरे–धीरे बदल जायेगा। आपमें एक ऐसा अहसास विकसित होगा, कि आपके आस–पास की हर चीज वास्तविक रूप से आपके अनुकूल हो रही है। हालाँकि आपको पूर्णिमा और कृष्ण पक्ष के दौरान बहुत सावधान रहना चाहिए। आपको इन दिनों में लम्बी यात्रायें नहीं करना चाहिए– जैसाकि कुछ दुर्घटनायें हो सकती हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (05:03:1974 से 08:04:1974)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान अनिश्चितता की स्थिति बनी रहेगी। एक के बाद एक समस्यायें पैदा हो सकती हैं। परिवार के सदस्यों का स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है। परिवार में वैवाहिकसंबंध टूट सकते हैं। सम्पत्ति के बंटवारे में विवाद हो सकता है, आप तीर्थयात्रा पर जायेंगे और बाहरी लोगों से आपका झगड़ा हो सकता है। जीवनसाथी और संतान आपके लिए समस्यायें पैदा कर सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (08:04:1974 से 13:07:1974)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके प्रेमपूर्ण जीवन में उतार–चढ़ाव आ सकते हैं। आप और आपके जीवनसाथी के बीच परस्पर प्रेम एक समय पर शिखर पर होगा और थोड़े ही समय में वह धरातल पर आ सकता है। आप दोनों को अतिरिक्त वैवाहिक संबंध बनाने के अवसर मिलेंगे, जिससे आप दोनों के बीच प्रायः कटुता आसकती है। इस दशा के दौरान संतानों को कष्ट हो सकता है। रक्त संबंधी रोग हो सकते हैं। आपकी माता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (13:07:1974 से 11:08:1974)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक बहुत खराब दशा हो सकती है। आपके पिता का स्वास्थ्य गंभीर हो सकता है। आपके अपने पिता के इलाज में भारी धन व्यय करना पड़ सकता है। साथ ही आपकी माता कोलकवा हो सकता है। आपको अपने रोजगार या व्यापार से दूर होने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (11:08:1974 से 28:09:1974)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक सामान्य दशा होगी। बहुत अधिक गतिविधियां नहीं होंगी। हालाँकि, आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है। आपकी आय भी कुछ हद तक बेहतर होगी। आप समय–समय पर मौज मस्ती करेंगे और तीर्थयात्रा पर जायेंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (28:09:1974 से 01:11:1974)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको अपने शरीर के सुरक्षा की अधिक देखभाल करनी चाहिए। प्रायः आपको छोटी दुर्घटनाओं का सामना करना पड़ सकता है। ये दुर्घटनायें सिर्फ वाहन से ही नहीं, बल्कि स्नानागार में फिसलने, सब्जी आदि काटते समय चाकू से कटने से भी हो सकती है। आपका अपने जीवनसाथी से प्रायः विवाद हो सकता है। आप मंगल से संबंधित वस्तुओं से उत्तम लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

राहु प्रत्यंतर्दशा (01:11:1974 से 27:01:1975)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपने पिछली दशा में कामों की शुरूआत कर दी थी, लेकिन आपका उद्देश्य पूरानहीं हो सकता है और आपने जो कुछ निवेश किया था, उसका आपको नुकसान हो सकता है। अतः आपके लिए यह बेहतर होगा, कि आप अपनी पूंजी तैयार रखें, जिसकी किसी भी समय आवयकता पड़ सकती है। आपके जीवनसाथी से आपके प्रायः झगड़े हो सकते हैं। आप समय पर भोजन नहीं कर पायेंगे।यदि मंगल बली है, तो आप मंगल से संबंधित वस्तुओं से उत्तम लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (27:01:1975 से 14:04:1975)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपने पिछली कुछ दशाओं में जो खोया है, वह इस दशा में वापस मिल जायेगा। आपकी प्रगति धीरे–धीरे शुरू हो जायेगी। इस प्रत्यंतर्दशा के मध्य में आपको सारभूत आय होगी। आपके अपनी संतान और जीवनसाथी से आत्मीय संबंध होंगे।

बुध अन्तर्दशा (14:04:1975 से 13:09:1976)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः धन प्राप्त करने के लिए यह सबसे उत्तम दशा है। आपको निरन्तर धन प्राप्त होगा। हालांकि, मात्रा आपके परिवार की पृष्ठभूमि और आपको प्राप्त पद के स्तर के अनुसार होगी। आपको सुन्दर परिधान, आभूषण तथानये मवेशी प्राप्त होंगे। आप अपने सभी उपक्रमों में सफलता और विभिन्न तरीकों से लाभ की आशा करसकते हैं। आपके नाम और यश में वृद्धि होगी तथा आपको समाज में उचित स्थान प्राप्त होगा। नये

प्राप्त ज्ञान और शिक्षा से आप संपन्नता प्राप्त करेंगे। यदि आपकी कुण्डली में बुध कमजोर भी है, तो भी इस अन्तर्दशा के दौरान आपको बहुत परेशानी नहीं होगी।

बुध प्रत्यंतर्दशा (14:04:1975 से 26:06:1975)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आप अपनी अधिकतर चिन्ताओं से मुक्त रहेंगे। धन का सहज आगमन होगा। आप भूमि, सम्पत्ति और आभूषण खरीदेंगे। आपको जीवनसाथी और संतान को सुख प्राप्त होगा। व्यापार में सम्पन्नता आएगी। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको पदोन्नति मिलेगी। यदि अब तक कोई सम्पत्ति विवाद अनसुलझा है, तो इस दशा के दौरान उसका निर्णय आपके पक्ष में हो जायेगा।

केतु प्रत्यंतर्दशा (26:06:1975 से 26:07:1975)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आर्थिक मामलों के लिए यह दशा उत्तम होगी। लेकिन आपको अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। आप बुखार, पीलिया और चर्म रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। आपकी संतानें शैक्षिणिक और व्यावसायिक दोनों क्षेत्रों में अपनी दक्षता प्रदर्शित करेंगी। आपको पदोन्नति मिल सकती है। हालाँकि, शत्रु आपसे ईर्ष्या करेंगे और आपके लिए परेशानियां पैदा करने की कोशिश करेंगे।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (26:07:1975 से 20:10:1975)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपना अधिकतर समय धार्मिक कार्यों में लगायेंगे। आप सरकारी अधिकारियों की मदद से अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करेंगे। आपको कृषि उत्पादों से लाभ हो सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (20:10:1975 से 15:11:1975)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप सरकार की मदद से धन अर्जित करेंगे। यदि सूर्य पर मंगल की दृष्टि है, तो आपको भूमि, भोजन और वस्त्र प्राप्त होंगे।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (15:11:1975 से 28:12:1975)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि चंद्रमा केन्द्र या त्रिकोण या अपने भाव या उच्चस्थ भाव में स्थित है, तो आप एक राजा की तरह अति उत्तम परिणामों का आनन्द प्राप्त करेंगे। यदि चंद्रमा पर बृहस्पति की दृष्टि है, तो आपका विवाह हो सकता है, आपको एक पुत्र और नये वस्त्रों तथा आभूषणों की प्राप्ति हो सकती है। आप अपने घर का निर्माण कर सकते हैं। आप शास्त्रों का अध्ययन करेंगे और अपने देश के दक्षिणी स्थानों की यात्रा करेंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (28:12:1975 से 28:01:1976)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको एक पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। आपको मवेशियों और कृषि योग्य भूमि की प्राप्ति होगी। आपको अपनी खोई हुई स्थिति पुनः प्राप्त होगी। संबंधी आपसे स्नेह करेंगे और आपको धन का लाभ होगा।

राहु प्रत्यंतर्दशा (28:01:1976 से 14:04:1976)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको धन का लाभ होगा। आप धार्मिक स्थानों की यात्रा और धार्मिक कार्यों का निर्वहन करेंगे, आपको सरकार से समर्थन प्राप्त होगा। आपको इस दशा के आरम्भ में कुछ समस्यायें हो सकती हैं, जो बाद में समाप्त हो जायेंगी और आपको लाभ प्राप्त होंगे।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (14:04:1976 से 23:06:1976)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आपकी अधिकतर कामनायें पूरी होंगी। आप धन संग्रह करेंगे, भूमि खरीदेंगे और घर पर शुभ समारोहों का आयोजन करेंगे। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको पदोन्नति मिलेगी और यदि आप व्यापार कर रहे हैं, तो आपको व्यापार में लाभ मिलेगा। अपने वर्तमान व्यापार का विस्तार करने के लिए यह एक अति उत्तम दशा है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (23:06:1976 से 13:09:1976)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशा में प्राप्त लाभों से आप इस दशा के दौरान और फायदा उठायेंगे। आपकी सारी गतिविधियों का आगे और विस्तार होगा और आपके धन कोष में बढ़ोत्तरी होगी। इस समय आप अपनी आर्थिक स्थिति को और सुदृढ़ बना सकते हैं। आय में वृद्धि को देखकर आपमें अधिक से अधिक आनन्द प्राप्त करने की प्रवृत्ति आयेगी। लेकिन आपने जो इस और पिछली दशा के दौरान अर्जित किया है, उसे आपको बचाकर रखना चाहिए– जैसाकि आगे आपको अति अशुभ दशा का सामना करना पड़ सकता है।

केतु अन्तर्दशा (13:09:1976 से 14:04:1977)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। आप मानसिक तनाव से गुजर सकते हैं। आपके प्रियजनों को निराशा का सामना करना पड़ सकता है। आपको धन हानिहो सकती है। प्रतिकूल परिस्थितियों और वातावरण के साथ आपमें दूसरों को धोखा देने की प्रवृत्ति हो सकती है। पानी और जलीय चीजों से आपको खतरा हो सकता है। अतः आपको पानी से संबंधित गतिविधियों जैसे तैराकी, नदी, सागर या तालाब में स्नान आदि से दूर रहना चाहिए। द्रव रसायनों से संबंधित किसी व्यापार में आपको संलग्न नहीं होना चाहिए। हालांकि, आपको इसमें लाभ हो सकता है, लेकिन विस्फोट होने या जहर फैलने का इसमें खतरा हो सकता है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (13:09:1976 से 25:09:1976)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको जीवनसाथी और संतान से खुशियां प्राप्त होंगी। आप भूमि खरीदेंगे। आप अपना समय धार्मिक कार्यों में लगायेंगे। आपकी मंत्र जाप और भगवान शिव की आराधना में रूचि होगी। आप अपने निवास स्थान से दक्षिण की दिशा में यात्रा करेंगे। आपके नाना को खतरा हो सकता है। आप बुखार, नेत्र विकार, लिवर की शिकायतों, खांसी, सर्दी और आंतों में दर्द से पीड़ित हो सकते हैं। आपका विवाह हो सकता है। आपको दवाओं और ज्योतिषशास्त्र से आय प्राप्त होगी।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (25:09:1976 से 31:10:1976)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपका भाग्य उत्तम होगा। आपको खोई हुई सम्पत्ति प्राप्त होगी। आपको वाहन सुख प्राप्त होगा और आप पवित्र स्थानों की यात्रा करेंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (31:10:1976 से 10:11:1976)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपमें भगवान शिव के प्रति आस्था विकसित होगी। राजनीति में आपको सफलता मिलेगी। सरकार से आपको समर्थन प्राप्त होगा। आप तीर्थयात्रा पर जायेंगे। पिता के साथ आपका झगड़ा हो सकता है। आपको जलीय उत्पादों से आय प्राप्त होगी। आप उदर और आंत के रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। आपको एक पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। आपकी माता को लकवा हो सकता है। आप ईर्ष्यालु लोगों की संगति कर सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (10:11:1976 से 28:11:1976)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप बेहतर पारिवारिक जीवन का आनन्द प्राप्त करेंगे। आप जलीय उत्पादों से आय प्राप्त करेंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (28:11:1976 से 11:12:1976)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप परिवहन से आय प्राप्त करेंगे। आपकी माता और जीवनसाथी को विभिन्न रोगहो सकते हैं। आपकी रूचि रोजगार या व्यापार में परिवर्तन करने में हो सकती है। आपको मानसिक हताशा हो सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (11:12:1976 से 12:01:1977)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। भवन निर्माण, सीमेंट, संगमरमर और अन्य पत्थर की चीजों के व्यापार के लिए यहअति उत्तम दशा है। यदि आप पहले से इस क्षेत्र में व्यापार कर रहे हैं, तो आपको भारी लाभ होगा।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (12:01:1977 से 09:02:1977)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपने गुरु को अप्रसन्न कर सकते हैं, जिससे आपको उनके शाप का भाजन बनना पड़ सकता है। अध्यापन के द्वारा आप अतिरिक्त आय प्राप्त करेंगे। आपको सर्दी, खांसी, दमा, हार्निया की शिकायत हो सकती है। आपके दार्शनिक और धार्मिक ज्ञान में बढ़ोत्तरी होगी। यद्यपि आपकी संतान का स्वास्थ्य खराब हो सकता है, लेकिन उनके शैक्षिणिक कामों में विशिष्टता आपको खुशी प्रदान करेगी।

शनि प्रत्यंतर्दशा (09:02:1977 से 15:03:1977)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक विरोधपूर्ण दशा होगी। नौकर आपके लिए एक समस्या बन सकते हैं। आपके घर में चोरी हो सकती है। संबंधी समस्यायें पैदा करने की कोशिश कर सकते हैं। मित्र शत्रु बन सकते हैं। आपको व्यवसाय से अवसरीय लाभ मिलेंगे। आप सिरदर्द, जोड़ों में दर्द, पेचिश और भारी हताशाका सामना कर सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (15:03:1977 से 14:04:1977)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पूर्ण रूप से संशयग्रस्त और विभ्रमित दिमाग के कारण आप अशांत हो सकते हैं। आपको एक दास की तरह जीवन यापन करना पड़ सकता है। आप मिर्गी और पागलपन का शिकार हो सकते हैं। आप जुए में रत रह सकते हैं और धन गवाँ सकते हैं। आपको अपनी भूमि और अन्य सम्पत्ति बेचने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। आपके प्रायः सभी से विवाद और बहस हो सकती है। आपको ग्रहों के क्रोध को शांत करने के लिए भगवान शिव और देवी पार्वती की आराधना करनी चाहिए।

शुक्र अन्तर्दशा (14:04:1977 से 13:12:1978)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा चल रही है। आप नावों या जहाजों से यात्रायें करेंगे और सोना, पानी, रत्नों, महिलाओं और कृषि से संबंधित सामानों के व्यापार में संलग्न रहेंगे। आप महिलाओं के साथ घनिष्ठ संबंध बनाने में गहरी रूचि लेंगे। संतान, मित्र और मवेशी प्राप्त करने के लिए यह अनुकूल दशा है। यदि आपकी कुण्डली में शुक्र बहुत बली नहीं है, तो भी विषम परिणाम नहीं मिलेंगे।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (14:04:1977 से 24:07:1977)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की

प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको प्रचुर धन प्राप्त होगा, लेकिन वह खर्च हो जायेगा और आप कर्जदार हो सकते हैं। आपके विवाहेत्तर संबंध हो सकते हैं और उसमें आप धन बर्बाद कर सकते हैं। आपमें ईश्वर के प्रति तीव्र आस्था होगी। आपको पीलिया और नाखूनों में समस्यायें हो सकती है। आपको किसी जानवर केकाटने का भय है। यदि आप दवा के व्यापारी या एक कलाकार हैं, तो आपको लाभ प्राप्त होंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (24:07:1977 से 24:08:1977)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के पहले अर्धभाग में आपको अति उत्तम परिणाम प्राप्त होंगे। आपको धन,भूमि और सम्पत्ति का अप्रत्याशित लाभ प्राप्त होगा। दशा के दूसरे अर्धभाग में आप उदर विकार, गले, नाक, आँख के रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। शत्रु आपको हानि पहुंचाने का प्रयास कर सकते हैं। धोखा धड़ी के द्वारा आपको धन हानि हो सकती है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (24:08:1977 से 13:10:1977)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आपकी आय व्यय से अधिक होगी। आपको महिलाओं से मदद मिलेगी। आपका विवाह तय हो जायेगा। वैवाहिक समारोहों में कुछ समस्यायें आ सकतीहैं। अतः आपको विवाह स्थगित कर देना चाहिए। यदि आप विवाहित हैं, तो आपको एक पुत्री प्राप्त हो सकती है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (13:10:1977 से 18:11:1977)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप दवाओं, सोने, तांबे और आभूषणों का व्यापार करेंगे। हालाँकि, बेहतर परिणाम के लिए आपको अगली प्रत्यंतर्दशा तक प्रतीक्षा करनी होगी। आपको भूमि प्राप्त हो सकती है या आप उसको बेच कर उत्तम मात्रा में लाभ कमा सकते हैं। जिन स्त्रियों के साथ आपको अतिरिक्त लगाव होगा, उनके साथ आपको कुछ गलतफहमी हो सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (18:11:1977 से 17:02:1978)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अपनी खोई हुई सम्पत्ति वापस पाने का अवसर मिलेगा। आपकी संतानों की पढ़ाई में सफलता आपको प्रसन्नता प्रदान करेगी। अब तक अनसुलझे सम्पत्ति विवाद इस दशा के दौरान सुलझ जायेंगे। आपके शरीर में चोट लग सकती है, आग से आपको भय हो सकता है। चोर भी आपको नुकसान पहुंचा सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (17:02:1978 से 09:05:1978)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आपका विवाह हो सकता है या आपको पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। आपको भूमि और संपत्ति की प्राप्ति होगी। आप अन्य भौतिक सम्पत्तियों में निवेश करेंगे। सरकार से आपको सम्मान मिलेगा। आप विभिन्न प्रकार के धार्मिक कार्य करेंगे। आप तीर्थयात्रा पर जा सकते हैं और सन्तों का आशीर्वाद प्राप्त करेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (09:05:1978 से 14:08:1978)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप समाज के महत्वपूर्ण व्यक्तियों के सम्पर्क में रहेंगे। उनकी मदद से आप बहुतअधिक धन कमाने में सक्षम होंगे। हालाँकि, आप धन की प्राप्ति के लिए सभी दूसरे दर्जे के तरीके अपनायेंगे, जैसे घूस देना आदि। दशा के मध्य में आप अपने सभी कामों में सफल होंगे। दशा के अन्त में आपको भारी नुकसान और विभिन्न रोग हो सके हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (14:08:1978 से 08:11:1978)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपकी अधिकतर कामनायें पूरी होंगी। आप सौन्दर्य प्रसाधनों, पेड़ों, फलों, जानवरों और परिवहन से आय प्राप्त कर सकते हैं। आपके शत्रु परास्त होंगे। भूमि के विक्रय से आपको धन प्राप्त होगा।

केतु प्रत्यंतर्दशा (08:11:1978 से 13:12:1978)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक सामान्य दशा होगी। आपकी दैनिक गतिविधियों में प्रायः बदलाव होंगे। सुबह में आपको लगेगा कि समय आपके अनुकूल हो रहा है, और आप कई योजनायें बनायेंगे, लेकिन शामहोने तक आपके सारे सपने और योजनायें ध्वस्त हो सकती हैं। रोग आपसे आँख मिचौली खेल सकते हैं।

सूर्य अन्तर्दशा (13:12:1978 से 14:06:1979)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। आप सरकारी अधिकारियों से समर्थन प्राप्त करने की आशा कर सकते हैं। आप अत्यधिक साहस और वीरता का प्रदर्शन करेंगे। समाज में आपको सम्मान मिलेगा। रोगों से मुक्ति मिलेगी। हालांकि, कभी–कभी आपको पित्त रस और वायु विकार हो सकते हैं। आपको दुर्घटना के कारण चोट लग सकती है। एक तरफ आपको उत्तम मात्रा में धन मिलेगा, लेकिन आप चोरी आदि के कारण उसको खो भी सकते हैं। आपकी कुण्डली में सूर्य अनुकूल नहीं है, आपको उष्ण रोग हो सकते हैं, शत्रुओं से परेशानी हो सकती है और आपको भारी दुख का सामना करना पड़ सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (13:12:1978 से 22:12:1978)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अधिकार और शक्ति प्राप्त लोगों से लाभ मिलेगा। हालाँकि, आपको भूमि की हानि हो सकती है और आपके खर्चे बहुत बढ़ सकते हैं। आपका सहोदरों के साथ सम्पत्ति मामलों में विवाद हो सकते हैं। आप निराशा के कारण घर छोड़ सकते हैं। आप बुखार से पीड़ित हो सकते हैं। दशाके अन्त में आपको कुछ हद तक उत्तम परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (22:12:1978 से 07:01:1979)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपका विवाह हो सकता है। आपके धन में बढ़ोत्तरी होगी, आप भूमि और भवन खरीदेंगे, ससुराल से आपको विरासत में भूमि मिल सकती है और आपकी पैतृक सम्पत्ति नष्ट हो सकती है।आप नेत्र या जलीय रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। आपके सम्मान में बढ़ोत्तरी होगी। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको पदोन्नति मिलेगी और यदि व्यापार कर रहे हैं, तो आपको उसमें भारी लाभ होगा।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (07:01:1979 से 17:01:1979)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। धन और संपत्ति के मामले में यह एक उत्तम दशा होगी। आपके सगे भाई–बहन आपका सहयोग करेंगे। आपको अपने जीवनसाथी और संतान से आराम एवं खुशियां प्राप्त होंगी। आपके पिता के साथ आपके संबंध आत्मीय नहीं हो सकते हैं। आपको एक पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। आप तीर्थयात्राओं पर जायेंगे।

राहु प्रत्यंतर्दशा (17:01:1979 से 14:02:1979)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशाओं में आपको जो लाभ प्राप्त हुए थे, वे इस दशा में लुप्त हो सकते हैं।आप अनैतिक कार्यों से धन कमा सकते हैं। आपका सरकारी अधिकारियों से विवाद हो सकता है। आपके कई शत्रु पैदा हो सकते हैं, जो आपको किसी भी समय फंसा सकते हैं। आपका विवाह हो सकता

है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (14:02:1979 से 10:03:1979)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके सम्मान में बढ़ोत्तरी होगी, संतान की प्राप्ति होगी, सरकार और संतानों से आपको धन मिलेगा। आपको कान और फेफड़ों के रोग हो सकते हैं। आप अपने पद को खो सकते हैं। आप ईश्वर की आराधना और धार्मिक कार्य करेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (10:03:1979 से 08:04:1979)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक बहुत उत्तम दशा होगी। आप विभिन्न सौदों में भारी लाभ की आशा कर सकते हैं। आप भूमि और संपत्ति खरीद सकते हैं और विभिन्न तरीकों से आनन्द प्राप्त कर सकते हैं। आप बाहर घूमने जा सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (08:04:1979 से 04:05:1979)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा अति शुभ और अति अशुभ परिणामों का मिश्रण होगी। यदि प्रथम अर्द्धावस्था बहुत शुभ है, तो बाद की दूसरी अवस्था अशुभ हो सकती है या इसका उलटा हो सकता है। यदि अन्य अनुकूल युतियां भी विद्यमान हैं, तो आप एक राजा या उसके समान बन सकते हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (04:05:1979 से 14:05:1979)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक उत्तम दशा नहीं हो सकती है। विभिन्न कारणों से आपको भारी दुखों कासामना करना पड़ सकता है। आपको अपने पद और धन की हानि हो सकती है। आपमें आत्महत्या करने की प्रवृत्ति आ सकती है। आप विदेश यात्रा पर जा सकते हैं, जहाँ आपको दुखों का सामना करना पड़ सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (14:05:1979 से 14:06:1979)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। दशा के प्रथम 10 दिनों के दौरान आप वाहन खरीद सकते हैं या वाहनों की मुफ्तमें सवारी करेंगे। अगले 10 दिनों के दौरान आप अपने परिवार के साथ आनन्द प्राप्त करेंगे, आपके पास अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त धन होगा। आखिरी 10 दिनों के दौरान आपको दुर्भाग्य का सामना करना पड़ सकता है। आप परिश्रम से अर्जित किया हुआ धन, नाम और सम्मान गवाँ सकते हैं। आपको गले के रोग, लकवा और शरीर में दर्द की शिकायत हो सकती है।

मंगल दशा (14:06:1979 से 14:06:1986)

वर्तमान समय में आपकी मंगल की महादशा चल रही है और मंगल आपकी कुण्डली में आठवें भाव में स्थित है। मंगल की दशा के दौरान, अनिश्चिततायें बनी रह सकती हैं। असंतोष और सम्पूर्ण तंत्र के नष्ट होने की भावना आपमें आ सकती है। आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। एक उत्तम बृहस्पति या शुक्र भी आपको मंगल के बुरे प्रभाव से उसकी दशा के दौरान राहत नहीं दिला सकता है। आपके आन्तरिक शत्रुओं की संख्या में वृद्धि हो सकती है। आपके घनिष्ठ मित्र भी आपके शत्रु बन सकते हैं। आपके साथ जन्में लोग भी आपके खिलाफ हो सकते हैं। आपको व्यापार में हानि हो सकती है। आपको रतिजन्य और दूसरे दीर्घकालिक रोग हो सकते हैं, जिनका उपचार मुश्किल हो सकता है।

वर्तमान समय में आपकी मंगल की महादशा चल रही है और मंगल आपकी कुण्डली में मेष राशि में स्थित है। मंगल की अपनी दशा के दौरान, मेष राशि में स्थित होने पर, जो कि उसकी अपनी राशि है, आपके घरपर कई मांगलिक समारोह आयोजित होंगे और आप दूसरों के द्वारा आयोजित ऐसे समारोहों में शामिल

होंगे। आपको संतानों का सुख मिलेगा। आप बहुत आक्रामक होंगे। शत्रु आप पर हमला करने की ताक मेंरह सकते हैं। आग और बिजली से आपको सावधान रहना चाहिए। आपके गम्भीर रूप से दुर्घटनाग्रस्त होने की संभावना हो सकती है, जिससे आपके सिर में चोट लग सकती है। आप अपने प्रयासों और कठिनपरिश्रम से व्यापार या पेशे में सफलता प्राप्त करेंगे और जिम्मेदारी व अधिकार का एक पद प्राप्त करेंगे।

मंगल अर्न्तदशा (14:06:1979 से 10:11:1979)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपकी कुण्डली में मंगल बली नहीं है, आप विभिन्न रोगों और रक्त की अशुद्धि से ग्रस्त हो सकते हैं। आपको किसी हथियार से चोट लग सकती है। बहुधा आपका अपने सगे भाई–बहनों और संबंधियों के साथ विवाद हो सकता है। आप पराई स्त्रियों में रूचि ले सकते हैं। इस दशा के दौरान, आपका अपने भाइयों से अलगाव हो सकता है। आपका शत्रुओं के साथ झगड़ा हो सकता है। आप आपराधिक गतिविधियों में पड़ सकते हैं और भूमि एवं सम्पत्ति की हानि हो सकती है। आप प्रायः चोरों औरसरकारी अधिकारियों के कारण मुश्किलों का सामना कर सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (14:06:1979 से 22:06:1979)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि मंगल किसी शुभ ग्रह के साथ उत्तम स्थिति में है, तो आपको सरकार में एकऊँचा प्रशासनिक या राजनीतिक पद प्राप्त होगा। आपको भूमि और विदेशी स्रोतों से धन का लाभ, सरकार से पहचान आदि की प्राप्ति होगी। इस दशा के अन्त के कुछ दिन खराब हो सकते हैं।

राहु प्रत्यंतर्दशा (22:06:1979 से 15:07:1979)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपका धर्म की तरफ अधिक झुकाव होगा। आपको विदेशी स्रोतों से धन प्राप्त हो सकता है। आपको संतानों, संभवतः एक पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। आपको धन का लाभ होगा।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (15:07:1979 से 04:08:1979)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। आपके धन में वृद्धि होगी और सभी सौदों से लाभ होगा। आपको सम्पत्ति की प्राप्ति, सरकार से उत्तम सम्मान और समर्थन तथा जीवनसाथी और संतान से खुशियां प्राप्त होंगी।

शनि प्रत्यंतर्दशा (04:08:1979 से 27:08:1979)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको सम्मान, धन, संतान की प्राप्ति और सरकार का समर्थन मिलेगा। यदि आपनौकरी कर रहे हैं, तो आपको पदोन्नति प्राप्त होगी।

बुध प्रत्यंतर्दशा (27:08:1979 से 17:09:1979)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक औसत दशा होगी। आप भूमि खरीदेंगे, भवनों का निर्माण करेंगे और औद्योगिक प्रतिष्ठानों की स्थापना करेंगे। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो अचानक आप भारी आय वाले किसी अति उत्तम क्षेत्र के एक ऊँचे पद को प्राप्त करेंगे। दूसरे मामलों में आप एक सामान्य और शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत करेंगे। आपको वाहनों से यात्रा करते समय सावधान रहना चाहिए।

केतु प्रत्यंतर्दशा (17:09:1979 से 26:09:1979)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपने पिछली दशा में जो कुछ भी अर्जित किया था, इस दशा में वह व्यय हो

सकता है। आप गले के रोगों, बुखार, वृषणों में सूजन से ग्रसित हो सकते हैं। आपके अपने जीवनसाथी और संतान के साथ प्रायः झगड़े हो सकते हैं। इतनी कलह पर भी संतुष्ट ना होकर आप अपने माता–पिताऔर मित्रों से भी झगड़ा कर सकते हैं और उन्हें अपना शत्रु बना सकते हैं। अतः आपको इस प्रत्यंतर्दशा के दौरान ऐसी गतिविधियों और कामों से दूर रहना चाहिए, जिनसे आपका गुस्सा बढ़ता हो या आपको क्रोध आता होगा।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (26:09:1979 से 21:10:1979)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। धन संबंधी मामलों के लिए यह दशा उत्तम होगी। अपने जीवनसाथी के साथ आपके संबंध आत्मीय नहीं हो सकते हैं। संतान से आपको खुशी प्राप्त होगी। चूंकि, आप किसी प्रकार की सामाजिक सेवा में या किसी ऐसे शौक में संलग्न होंगे, जो सामान्यतः आपके जीवनसाथी से संबंधित नहीं हो सकते हैं, अतः आपके जीवनसाथी के साथ आपका झगड़ा हो सकता है। आप रतिजन्य और जलीय रोगों से ग्रसित हो सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (21:10:1979 से 28:10:1979)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। शत्रु आपको हानि पहुंचाने की कोशिश कर सकते हैं। यदि आप राजनीति से जुड़े हैं और चुनाव लड़ना चाहते हैं, तो समय उत्तम ना होने के कारण आपके लिए ऐसा ना करना बेहतर होगा– यदि चुनाव इस दशा के दौरान होते हैं। यदि केवल औपचारिकता निभानी है, तो आप ऐसा कर सकते हैं। इसके पीछे कारण यह है कि मंगल और सूर्य दोनों सरकार का प्रतिनिधित्व करते हैं और दोनों नैसर्गिक अशुभ ग्रह हैं। यदि आप जीत भी जाते हैं, तो हो सकता है कि आपको वांछित पद ना मिले। आप मिर्गी, पीलिया और तेज बुखार से पीड़ित हो सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (28:10:1979 से 10:11:1979)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आपको सभी आर्थिक निवेश के मामलों को अपनाना चाहिए। यदि आप लोहे और तांबे से बनी वस्तुओं का व्यापार करेंगे, तो उसमें बहुत सफल होंगे। आपको जलीय पदार्थों का व्यापार नहीं करना चाहिए। आपका अपने जीवनसाथी के साथ प्रायः झगड़ा हो सकता है और मंगल–मंगल–बृहस्पति की दशा शुरू होने तक किसी प्रकार का समझौता नहीं हो सकता है।

राहु अन्तर्दशा (10:11:1979 से 28:11:1980)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में राहु की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा केदौरान, आपको हथियारों, शत्रुओं, चोरों और सरकारी अधिकारियों से खतरा हो सकता है। आपका अपने शत्रुओं के साथ अप्रत्याशित झगड़ा हो सकता है, जो आपको जीवन के हर क्षेत्र में नुकसान पहुँचाने की कोशिश कर सकते हैं। वे आपको विभिन्न आपराधिक गतिविधियों में फँसा सकते हैं। साथ ही पेट, नेत्र औरसिर के रोग भी हो सकते हैं। इस अन्तर्दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य बहुत अधिक खराब हो सकता है। यदि जन्मकुण्डली में राहु अनुकूल भी है, तो भी दशा के दौरान बहुत शुभ परिणाम नहीं मिल सकते हैं।आर्थिक क्षेत्र में सुधार होगा, लेकिन आपको अन्य विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपके सगे भाई–बहन आपके कट्टर शत्रु बन सकते हैं।

राहु प्रत्यंतर्दशा (10:11:1979 से 06:01:1980)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस प्रत्यंतर्दशा की ये विशेषता है, कि यदि आपको इस प्रत्यंतर्दशा के आरम्भ में अनुकूल परिणाम प्राप्त होते हैं, तो आपके लिए अनुमान लगाना आसान हो जायेगा कि सुनहरा समय शुरू हो चुका है और आप अपनी गतिविधियों के क्षेत्र को स्थिर करने के लिए सारे भरसक प्रयास कर सकते हैं। हालाँकि, अन्तिम कुछ दिनों में आपको बहुत खराब परिणाम जैसे धन हानि, अपमान आदि मिल सकते

हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (06:01:1980 से 27:02:1980)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा मिली–जुली होगी। आपके नुकसान की भरपाई होगी, हालाँकि यह बहुतसार्थक नहीं होगी। आपको एक ऊँचा पद और अचानक गुप्त धन प्राप्त होगा। लेकिन आपको गतिविधियों की परवाह किये बिना विभिन्न क्षेत्रों का आनन्द प्राप्त होगा।

शनि प्रत्यंतर्दशा (27:02:1980 से 27:04:1980)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा आपके लिए बहुत खराब हो सकती है। आपने जो भी कमाया होगा, उसेआप जुए, सम्पत्ति के सौदों और मनोरंजन में व्यय कर सकते हैं। आपको धन का भारी अभाव हो सकता है और आप हर व्यक्ति से कुछ ऋण मांग सकते हैं, लेकिन आपको खाली हाथ लौटना पड़ सकताहै। अतः इस दशा के दौरान खर्च करते समय आपको बहुत सावधानी बरतनी चाहिए। आपके घर परचोरी भी हो सकती है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (27:04:1980 से 21:06:1980)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। मंगल और राहु अशुभ परिणाम नहीं दे सकते हैं, जैसाकि बुध उनकी देखभाल के लिए है। हालाँकि, आप पर अभियोग लग सकता है। आपमें आत्महत्या की प्रवृत्ति पैदा हो सकती है, आपको पद की हानि हो सकती है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (21:06:1980 से 13:07:1980)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अवनति से उपर उठने में असक्षम हो सकते हैं और एकांत में जीवन बिता सकते हैं। आप आध्यात्म की तरफ झुक सकते हैं। मित्र आपसे घृणा कर सकते हैं। संबंधी आपका अपमानकर सकते हैं। आपके जीवनसाथी और संतान भी आपको आपकी अन्यायपूर्ण गतिविधियों के कारण कोस सकते हैं। हालाँकि, इस दशा के अन्त में आपको कुछ अनुकूल परिणाम मिल सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (13:07:1980 से 15:09:1980)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप महिलाओं के साथ बहुत मौज मस्ती करेंगे। आपके विवाह की संभावना है। आपको एक पुत्र प्राप्त हो सकता है। यदि शुक्र कमजोर है, तो आपका अपने जीवनसाथी से वियोग हो सकता है। आपके शत्रु आपको परेशान कर सकते हैं। आपको धन की हानि हो सकती है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (15:09:1980 से 04:10:1980)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको टायफाइड, आंतों में अल्सर और नेत्र विकार होने की संभावना है। इन रोगों पर आपका भारी धन व्यय हो सकता है। आपको अधिकार प्राप्त लोग धमका सकते हैं। आपको हथियारों से चोट लग सकती है। आपका विवाह हो सकता है। आपको सूर्य नमस्कार और सूर्य मंत्र का जाप करना चाहिए।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (04:10:1980 से 06:11:1980)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी गतिविधियों में प्रायः बदलाव हो सकते हैं। आपको सुख और दुख का अनुभव एक के बाद एक हो सकता है। माता का स्वास्थ्य आपको चिन्तित कर सकता है। आपको मवेशियोंऔर कृषि की हानि हो सकती है। सरकारी अधिकारियों और चोरों के कारण आपको मानसिक

तनाव हो सकता है। हथियारों और आग से आपको चोट लग सकती है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (06:11:1980 से 28:11:1980)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक बहुत खराब दशा हो सकती है। यदि मंगल शुभ स्थिति में है, तो आप मंत्री बन सकते हैं या उसके समान ही कोई पद प्राप्त कर सकते हैं। हालाँकि आपके शत्रु पैदा हो सकते हैं और आपको हानि पहुंचाने की कोशिश कर सकते हैं। इस दशा के दौरान आपको खुली गाड़ी में यात्रा करने या घोड़े अथवा ऊँट की सवारी करने से बचना चाहिए।

गुरू अन्तर्दशा (28:11:1980 से 04:11:1981)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यत: यह अन्तर्दशा मंगल की महादशा में सबसे उत्तम होगी। आपमें स्वयं बलिष्ठ होने का अहसास होगा। आपका दिमाग शांत होगा। सभी प्रक्रियाएं सहज होंगी, कहीं किसी तरह की कोई बाधा या परेशानी नहीं होगी। आप हमेशा व्यस्त रहेंगे। आपको ज्ञानी और साधुजनों के साथ जुड़ने के अवसर मिलेंगे। आप तीर्थयात्रायें करेंगे और उत्तम कार्यों को करेंगे। विभिन्न स्रोतों से आपको आय प्राप्त होगी। सरकारी अधिकारियों के साथ आपके उत्तम संबंध बनेंगे और आप उनसे लाभ प्राप्त करेंगे। आपको जीवनसाथी, संतानों और मित्रों की संगति का आनन्द प्राप्त होगा। आपको कान और कफ की समस्यायें हो सकती हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (28:11:1980 से 12:01:1981)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि आपकी कुण्डली में बृहस्पति नीचस्थ या किसी अशुभ भाव में नहीं है, तो यह दशा बहुत उत्तम होगी। आपको भूमि और भवन या कुछ सारभूत सम्पत्ति प्राप्त होंगी। आपको अपनी आँखोंका उचित ध्यान रखना चाहिए। आपको तीव्र सिर दर्द और सारे शरीर में खुजली की शिकायत हो सकती है। आपका रूझान आध्यात्मिक ज्ञान की तरफ होगा।

शनि प्रत्यंतर्दशा (12:01:1981 से 07:03:1981)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके जीवनसाथी और संतान आपको नापसन्द कर सकते हैं। आप जुए में धन व्यय कर सकते हैं। आप कई गलत काम करने के लिए प्रेरित हो सकते हैं, चाहे आप भले ही ऐसा ना करना चाहें। यदि बृहस्पति और शनि आपकी कुण्डली में प्रतिकूल रूप से स्थित हैं, तो आपको मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है। यदि आप लोहे और भूमि का व्यापार कर रहें हैं, तो आपको उचित लाभ प्राप्त हो सकता है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (07:03:1981 से 25:04:1981)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी आय काफी अधिक हो सकती है, जिसे आप भिक्षा वितरित करने में व्यय कर देंगे। आप गरीबों की देखभाल करेंगे। आपको विदेशियों या वहाँ रहने वाले मित्रों से उपहार प्राप्त होंगे। लम्बी यात्रायें आपके लिए लाभकारी होंगी।

केतु प्रत्यंतर्दशा (25:04:1981 से 15:05:1981)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा का अधिकतर समय आप धार्मिक कार्यों को करने और तीर्थस्थानों की यात्रायें करने में व्यतीत करेंगे। घर पर शांति प्राप्त ना हो पाने के कारण आप उसकी तलाश में सुदूर स्थानों की यात्रा कर सकते हैं। आपके परिवार के लोगों को सबसे अधिक कष्ट हो सकता है। इस दशा के अन्तिम दिनों में आपको धन का लाभ हो सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (15:05:1981 से 10:07:1981)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आपको पूर्ण आनन्द मिलेगा। अधिकतर मामलों मेंइस दशा को अन्य दशाओं से बहुत बेहतर पाया गया है, चाहे व्यक्ति का जन्म भले ही एक साधारण परिवार में हुआ हो। आपको अप्रत्याशित स्रोतों से धन प्राप्त होगा। हालाँकि, वह धन पूरी तरह से आपका नहीं हो सकता है, फिर भी आप उसका उपयाग अपने उद्देश्यों के लिए फिलहाल करने में सक्षम होंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (10:07:1981 से 27:07:1981)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि आप राजनीति से जुड़े हैं, तो यह दशा आपके लिए सबसे उत्तम है। यदि इसदशा के दौरान कोई चुनाव होता है, तो आपको अवश्य ही सफलता मिलेगी, आपको छिपे और अदृश्य स्रोतों से धन प्राप्त होने की संभावना है। हालाँकि, आपका स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है। आप बुखार, सिर दर्द और उदर विकार से ग्रस्त हो सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (27:07:1981 से 25:08:1981)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अपने मित्रों और संबंधियों से ही नहीं, बल्कि शत्रुओं से भी धन की प्राप्ति होगी। आप भूमि और भवन या कुछ अन्य कीमती सम्पत्तियों को प्राप्त करेंगे। आपका वैवाहिक जीवन सुखद नहीं हो सकता है और आप प्रायः दूसरी औरतों की संगति कर सकते हैं। आपको अपने स्वास्थ्य काउचित ध्यान रखना चाहिए। आपको सिरदर्द, गुदा के आस–पास खुजली आदि की समस्या हो सकती है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (25:08:1981 से 14:09:1981)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपके जीवन में प्रायः बदलाव हो सकते हैं। एक समय आपको चरम आनन्द प्राप्त होगा, लेकिन दूसरे समय आप दुख और संशय से ग्रस्त हो सकते हैं। यह कुछइस तरह की दशा होगी, जैसे आप किसी ऊँचे पहाड़ के शिखर पर पहुंच कर वापस वहाँ से नीचे गिरपड़े हों, लेकिन नीचे बिछे जाल पर गिरने के कारण बच गयें हों। यदि आप सोने या तांबें के बर्तनों याआभूषणों का व्यापार करेंगे तो आपको उत्तम लाभ होगा।

राहु प्रत्यंतर्दशा (14:09:1981 से 04:11:1981)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा उत्तम नहीं हो सकती है। दो नैसर्गिक अशुभ ग्रह आपके भाग्य की देखभाल कर रहे हैं, जबकि बृहस्पति उनको नियंत्रित करने के लिए है। आपका झुकाव जुए और मदिरापानकी तरफ हो सकता है और आप अपना सारा धन इसमें खर्च कर सकते हैं। आपका दिमाग अशांत हो सकता है।

शनि अन्तर्दशा (04:11:1981 से 13:12:1982)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपकी जीवनसाथी और संतानें आपको पसन्द नहीं कर सकती हैं। आपका अपने मित्रों और संबंधियों के साथ झगड़ा हो सकता है। आपकी जीवनसाथी और संतानें पीड़ित हो सकती हैं। आप जुए में धन बर्बाद कर सकते हैं, जिससे आप दुख और निर्धनता की कगार पर पहुँच सकते हैं। आप कई गलत काम करने के लिए प्रेरित हो सकते हैं, यदि आप ऐसा नहीं करना चाहेंगे, तो भी। आपको भयंकर रोग हो सकते हैं। अपने वर्तमान निवास स्थान को छोड़ने के लिए आपको बाध्य होना पड़ सकता है। यदि जन्मकुण्डली में शनि बली भी है, तो भी इस दशा के दौरान बहुत शुभ परिणाम नहीं मिल सकते हैं।

शनि प्रत्यंतर्दशा (04:11:1981 से 07:01:1982)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की

प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी विदेश यात्रा पर जाने में रूचि होगी, जहाँ पर आपको विभिन्न बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। उस संबंध में आप जो धन खर्च करेंगे, उसकी भरपाई नहीं हो सकती है। अतः आपको विदेश में तैनाती या रोजगार या व्यापार का कोई प्रस्ताव स्वीकार नहीं करना चाहिए। आपको बुखार, हार्निया और नेत्र विकार हो सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (07:01:1982 से 05:03:1982)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। शनि इस दशा के दौरान प्रथम श्रेणी का लाभकारी ग्रह है। यदि शनि उत्तम स्थितिमें है, तो आप सारी बाधाओं पर विजय प्राप्त करते हुए अपने क्षेत्र में शिखर पर पहुंचेंगे। आप भारी मात्रा में धन संग्रह करेंगे। आप अपनी आय का एक हिस्सा गरीबों और जरूरतमंदों को तथा धार्मिक स्थानोंपर दान करेंगे। आप अपने जीवनसाथी और संतान को खुश करने की कोशिश करेंगे, लेकिन आप उसमें असफल हो सकते हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (05:03:1982 से 29:03:1982)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपने पिछली दशा के दौरान जो सुख प्राप्त किये थे, वे इस दशा में छिन सकते हैं। समय आपके लिए इतना खराब हो सकता है कि आप मुस्कुराना भूल सकते हैं। आपके मित्र आपके शत्रु बन सकते हैं। आपके संबंधी आपके लिए परेशानी पैदा करने की भूरपूर कोशिश कर सकते हैं। आप सम्पत्ति विवाद में फंस सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (29:03:1982 से 04:06:1982)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक उत्तम दशा होगी। आप कृत्रिम आभूषणों और फैशन के परिधानों से आय प्राप्त कर सकते हैं। भूमि और संपत्ति में निवेश करने के लिए यह उत्तम दशा है। आपको रतिजन्य रोग होसकते हैं। चूंकि आप पराई स्त्रियों के साथ मौज–मस्ती और आनन्द प्राप्त कर सकते हैं, अतः आपका जीवनसाथी आपसे घृणा कर सकता है। संतानें भी आपके खिलाफ हो सकती हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (04:06:1982 से 24:06:1982)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि मंगल बहुत बली नहीं है, तो आपको बहुत खराब दशा का सामना करना पड़ सकता है। आपके पिता आपके खिलाफ हो सकते हैं और आप अपने पिता के खिलाफ काम कर सकते हैं।एक नजदीकी संबंधी आपके और आपके पिता के बीच में दूरी पैदा करने की कोशिश कर सकता है। आपकी घरेलू वस्तुयें चोरी हो सकती हैं। यदि आपके पास वाहन है, तो दुर्घटना या आगजनी के कारण उसको भारी क्षति पहुंच सकती है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (24:06:1982 से 28:07:1982)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप तनाव ग्रस्त हो सकते हैं। आप दुखों से छुटकारा पाने की कोशिश करेंगे, लेकिन भाग्य आपका साथ नहीं दे सकता है। दुख सहन कर पाने में असक्षम होने पर आप नशे के आदी हो सकते हैं। दुर्घटना में आपको चोट लग सकती है। आपको कोई भी खुला वाहन नहीं चलाना चाहिए और यदि संभव हो तो बन्द वाहन भी नहीं चलाना चाहिए।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (28:07:1982 से 21:08:1982)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। चूंकि मंगल में शनि को इस दशा के दौरान पछाड़ने की क्षमता है, अतः आप पर्याप्त धन कमायेंगे और अपने पुराने ऋणों का भुगतान करेंगे। हालाँकि, इस दशा के दौरान मंगल वक्री होने पर शनि कुछ समस्यायें पैदा करने की कोशिश करेगा। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपको

पदोन्नति मिलेगी और यदि आप व्यापारी हैं, तो आपको व्यापार में लाभ होगा। आपको एक पुत्र की प्राप्ति हो सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (21:08:1982 से 20:10:1982)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह प्रत्यंतर्दशा एक मास 29 दिन 20 घंटे और 24 मिनट की होती है। पिछले कुछदिनों से आप जो थोड़ी राहत महसूस कर रहे थे, वह समाप्त हो सकती है, आप फिर परेशानियों में घिर सकते हैं। आप ल्यूकोडर्मा, सोरायसिस और विषाक्तता से ग्रसित हो सकते हैं। आपके दिमाग में द्वन्द हो सकता है। आपके काम ठीक तरीके से पूर्ण नहीं हो सकते हैं। आपको धन की हानि हो सकती है, आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (20:10:1982 से 13:12:1982)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। एक लम्बे अन्तराल के बाद आपको थोड़ी राहत महसूस होगी। आप विभिन्न अप्रत्याशित स्रोतों से धन प्राप्त कर सकते हैं और कई धार्मिक कार्य करेंगे। आपको दूसरों के साथ किये गये अपने गलत कार्यों का पछतावा होगा और आप उनसे क्षमा मांगने की कोशिश करेंगे। इस दशा के दौरान आपका विवाह संभव है या आपको एक पुत्र की प्राप्ति हो सकती है।

बुध अन्तर्दशा (13:12:1982 से 10:12:1983)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा केदौरान, आप शत्रुओं के कारण मुश्किलों का सामना कर सकते हैं। परिस्थितियां आपको अपने अधीनस्थों के साथ झगड़ा करने को बाध्य कर सकती है। गलत बातें बोलने के कारण आपको अशुभ घटनाओं का सामना करना पड़ सकता है। आपको चोट लग सकती है या आप आग से जल सकते हैं। आपको अपने जीवनसाथी और संतानों से अलग होना पड़ सकता है। आप खुशियों से वंचित हो सकते हैं। आपको मवेशियों और धन की हानि हो सकती है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (13:12:1982 से 03:02:1983)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह दशा कुछ हद तक उत्तम हो सकती है। ज्योतिषियों, लेखाकारों और व्यापारियोंके लिए यह समय उत्तम होगा। यदि आपका संबंध इनमें से किसी से है, तो आप जो भी कार्य करेंगे, उसमें सफलता मिलेगी। हालाँकि आप ईश्वर को भूल सकते हैं– जैसाकि आप कुछ हद तक अपने पैरों पर खड़े होने में सक्षम होंगे। आपकी किसी एक बहन का विवाह होगा और एक पुत्र का जन्म हो सकता है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (03:02:1983 से 24:02:1983)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको एक वेदनापूर्ण और दुखी जीवन जीना पड़ सकता है। आपके प्रेम प्रसंग और शादी में कुछ बाधायें आ सकती हैं। आपके किसी एक सगे भाई या बहन को मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है। आप दुष्ट प्रकृति और गैर मैत्रीपूर्ण लोगों से घिरे हो सकते हैं। आप जुए में संलग्न हो सकते हैं,जिससे आपको धन हानि हो सकती है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (24:02:1983 से 25:04:1983)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। मित्र और संबंधी आपकी सहायता करेंगे। आपको स्वादिष्ट भोजन का आनन्द प्राप्तहोगा और आप आभूषण प्राप्त करेंगे। आप दैवीय मार्ग और एक वास्तविक उपदेशक की खोज करेंगे। यदि ये तीनों ग्रह बली नहीं हैं, या कमजोर हैं, तो भी इस प्रत्यंतर दशा के दौरान आपको अधिक विषम परिणाम प्राप्त नहीं हो सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (25:04:1983 से 13:05:1983)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप ज्ञान और धन प्राप्त करेंगे। ज्ञानी लोगों के साथ आपका मेल–मिलाप होगा। शांति की खोज में आप विभिन्न तीर्थस्थानों की यात्रा करेंगे। आपको सोना, उत्तम घर, स्वादिष्ट भोजन औरसरकार से आर्थिक लाभ प्राप्त होंगे।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (13:05:1983 से 12:06:1983)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक उत्तम दशा होगी। आप लेखन, प्रकाशन, और बौद्धिक व्याख्यान देकर आय प्राप्त करेंगे। आपकी आय में थोड़ी वृद्धि होगी। आप दूसरों के मनोरंजन में अधिक व्यय करेंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (12:06:1983 से 03:07:1983)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। बौद्धिक कार्यों में आपको गंभीर आघात लग सकता है। चूंकि दशा अनुकूल नहीं हैं,अतः जनता आपके बौद्धिक तर्कों और लेखों की वैधता को चुनौती दे सकती है। आपको अपने बिना किसी दोष के ही कलंकित और पदावनत होना पड़ सकता है। आग और बिजली से काम करते समय आपको सावधान रहना चाहिए।

राहु प्रत्यंतर्दशा (03:07:1983 से 27:08:1983)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपको अपने संचित धन की हानि हो सकती है। आपका पद और सम्मान दांव पर लग सकता है। जहर और गैस के कारण आपको रोग हो सकते हैं। आप सिर दर्द, गुर्दे या मूत्र संबंधी रोगों से ग्रसित हो सकते हैं। आपको विस्तृत भूमि और भवन प्राप्त होंगे। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपको पदोन्नति प्राप्त होगी।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (27:08:1983 से 14:10:1983)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि आप गंभीर रोगों से ग्रस्त हैं, तो उनसे राहत की आशा कर सकते हैं। आपको अपने उत्तम कार्य के लिए अपने व्यवसाय और समाज दोनों में प्रशंसा मिलेगी। आप शांतिपूर्ण घरेलूजीवन का आनन्द प्राप्त करेंगे। आपके रोजगार और व्यापार में प्रगति होगी।

शनि प्रत्यंतर्दशा (14:10:1983 से 10:12:1983)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको धन हानि हो सकती है और आपमें उचित बोध क्षमता का अभाव हो सकताहै। आपको अपनी हर योजना में असफलता, भारी कष्ट, निराशा का सामना करना पड़ सकता है, आप दिखने में दुर्बल लग सकते हैं और लकवा के शिकार हो सकते हैं। शत्रु आपको खुली चुनौती दे सकते हैं और आपको कष्ट पहुंचा सकते हैं।

केतु अर्न्तदशा (10:12:1983 से 08:05:1984)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपको विद्युत या अग्नि या हथियारों से कटने का खतरा हो सकता है। आप नौकरी में स्थानान्तरण या व्यापारिक यात्रा या तलाक या जीवनसाथी की मृत्यु के कारण जीवनसाथी से अलग हो सकते हैं। आपको अपने जीवनसाथी को इस दशा के दौरान उसके माता–पिता के घर या किसी लम्बी यात्रा पर भेजने की सलाह दी जाती है। इसके पीछे तर्क यह है कि जीवनसाथी से अलग होना आपकी नियति में है और आप उपर दी गई सलाह मानकर प्रभाव को मंद कर सकते हैं, अन्यथा तलाक या मृत्यु के रूप में यह गंभीर परिणाम के रूप में सामने आ सकता है। आपकी आय में बाधा आ सकती है और धनकी हानि हो सकती है। आपको अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। यदि केतु बली है, तो

समय–समय पर आपको कुछ शुभ परिणाम मिल सकते हैं, लेकिन इस अन्तर्दशा के पूर्ण होने से पहले जो भी आपने प्राप्त किया है, वह सब समाप्त हो जायेगा।

केतु प्रत्यंतर्दशा (10:12:1983 से 19:12:1983)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी आय में वृद्धि होगी। लेकिन साथ ही व्यय आपके नियंत्रण से बाहर हो सकते हैं। आपको अपने वर्तमान निवास स्थान से दूर रहना पड़ सकता है। शत्रु आपको नीचा दिखाने के लिए अवसरों की तलाश कर सकते हैं। आपके हाथ–पैरों में जलन हो सकती है, आप बुखार और दर्द से पीड़ित हो सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (19:12:1983 से 13:01:1984)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आर्थिक रूप से यह दशा उत्तम होगी। आपको धन का अभाव महसूस नहीं होगा।लेकिन यह आवश्यक नहीं है, कि जो धन आप खर्च कर रहे हैं, वह आपका हो, इस बात की परवाहकिये बिना कि धन किसी और का है, आप विलासितपूर्ण ढंग से खर्च कर सकते हैं। इस दशा के कुछ अन्तिम दिनों में आप बेचैनीपूर्ण स्थिति से घिर सकते हैं। आप शारीरिक सुखों की तरफ अधिक झुक सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (13:01:1984 से 20:01:1984)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको खुशियां और सुख प्राप्त होंगे। आप जुए, सट्टे और हेरा–फेरी से इस दशा के आरम्भ में धन प्राप्त करेंगे। दशा के मध्य में हानि, दुख और व्यय में वृद्धि हो सकती है। दशा के अन्त में आप गाल, दांत, कान और आँख के रोगों या मूत्र संबंधित परेशानियों से ग्रस्त हो सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (20:01:1984 से 02:02:1984)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके प्रियजन निराश हो सकते हैं। आपको धन की हानि हो सकती है। आपको जल और जलीय पदार्थों से खतरा हो सकता है। अतः आपको पानी से जुड़ी सारी गतिविधियों जैसे तैराकी,नदी, सागर या तालाब में स्नान आदि से दूर रहना चाहिए। आप अपने वर्तमान निवास स्थान से दक्षिण की तरफ यात्रा कर सकते हैं। आपके नाना को खतरा हो सकता है। आप बुखार, कफ और सर्दी से ग्रसित हो सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (02:02:1984 से 10:02:1984)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के परिणाम मंगल की स्थिति पर निर्भर करेंगे। एक उत्तम मंगल अति उत्तम परिणाम देगा। केतु परिणाम देने में विवश हो सकता है। हालाँकि, मंगल के प्रतिनिधित्व वाली वस्तुओंऔर संबंधियों की हानि हो सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (10:02:1984 से 04:03:1984)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक बहुत खराब दशा हो सकती है। आपको एक के बाद एक विपदाओं का सामना करना पड़ सकता है। आपकी हर बात और काम से उथल–पुथल हो सकती है। अतः आपको अपनेवर्तमान निवास स्थान से दूर जाकर किसी एकांत जगह पर रहना चाहिए।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (04:03:1984 से 24:03:1984)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की

प्रत्यंतर्दशा चल रही है। एक लम्बे अन्तराल के बाद आपको भारी राहत मिलेगी। आपको ऐसा अहसास होगा कि आप भारी तुफान से गुजर कर नाव से एक कष्टकारी यात्रा करके समुद्र के किनारे पर पहुंच गयेहैं। आप अपने ऋणों को उतारने में सक्षम होंगे। आपको धन की प्राप्ति बिल्कुल अप्रत्यशित तरीके से होगी। रोग से आपको मुक्ति मिलेगी। आनन्ददायक मिलन समारोह होंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (24:03:1984 से 16:04:1984)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके अर्जित धन की हानि हो सकती है। आपको अपनी सम्पत्तियों को एक के बाद एक बेचना पड़ सकता है। आपको बुरे सपने सता सकते हैं। आपको नींद में चलने की बीमारी हो सकती है। रक्त विकार से उत्पन्न रोगों और गठिया से आप ग्रस्त हो सकते हैं। आपको जुए और नशे कीलत लग सकती है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (16:04:1984 से 08:05:1984)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। बुध एक बिचौलिये की तरह काम करेगा। अतः मंगल और केतु के द्वारा उत्पन्न कीगई परेशानियों को बुध हल करने में मदद करेगा। मंगल धन प्रदान करेगा, और केतु उसका नाश करनेकी कोशिश कर सकता है। बुध हस्तक्षेत करके धन का बंटवारा कर देगा और अपना कमीशन ले लेगा। दूसरे शब्दों में, आपको बुखार, बवासीर और सीने तथा पैरों में दर्द की शिकायत हो सकती है।

शुक्र अन्तर्दशा (08:05:1984 से 08:07:1985)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपके दिमाग में बिना विचारे काम करने का एक प्रकार का डर घर कर सकता है। आप विदेशयात्रा पर जा सकते हैं। यह दशा आपके परिवार के लिए उत्तम नहीं हो सकती है। हालांकि, यदि कोई मुकदमा चल रहा है, तो उसका निर्णय अन्तर्दशा के दौरान होने पर आपको उसमें सफलता मिलेगी। आपको अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए– विशेषकर बांयी आँख का। आपको धन और सम्पत्ति की चोरी का खतरा हो सकता है। हालांकि, आपको जीवनसाथी से पूर्ण सुख मिलेगा, धन का लाभ होगा और पदोन्नति होगी।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (08:05:1984 से 18:07:1984)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक आनन्ददायक दशा होगी। आपको सुन्दर लड़कियों का साथ प्राप्त होगा। आप नाम, यश और दवाओं तथा सौन्दर्य प्रसाधन की वस्तुओं से धन अर्जित करेंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (18:07:1984 से 08:08:1984)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके वर्तमान व्यापार का विस्तार हो सकता है या आप रोजगार में बदलाव कर सकते हैं। आपके परिवार में वैवाहिक समारोह होंगे। आप आनन्द भ्रमण पर जायेंगे। सट्टों से आपको लाभहोगा। विशिष्ट और सरकारी अधिकारियों से आपका विवाद हो सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (08:08:1984 से 13:09:1984)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक उत्तम दशा होगी। पिछली दशा में आपको प्राप्त सफलता आपको अपने पद या स्थिति को स्थायित्व देने में मदद करेगी। यद्यपि आपकी आय अधिक होगी, आपका व्यय भी बढ़ सकता है। आप पेचिश, पीलिया या मूत्र संबंधी समस्या से ग्रस्त हो सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (13:09:1984 से 08:10:1984)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की

प्रत्यंतर्दशा चल रही है। औरतों के साथ आपका जोरदार विवाद हो सकता है और उनसे अपमानित होना पड़ सकता है। जीवनसाथी आप पर विशिष्टता कायम कर सकती हैं और आपको दबा सकती हैं। आपकी अपने वरिष्ठों के साथ शत्रुता हो सकती है। आपको धन का लाभ होगा और आप भूमि खरीदेंगे तथा भवनोंका निर्माण करेंगे। आपका विवाह हो सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (08:10:1984 से 11:12:1984)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप किसी लम्बी यात्रा पर जाकर वापस आ सकते हैं। साझे के व्यापार में आपकोअसफलता मिल सकती है। आपको धन हानि हो सकती है। ऐंद्रिय सुखों की प्राप्ति में आप भारी धनव्यय कर सकते हैं। आपको ल्यूकोडर्मा या कोई अन्य चर्म रोग हो सकता है। पहली जीवनसाथी के जीवित रहते हुए भी आपका दूसरा विवाह हो सकता है या किसी दूसरी स्त्री के साथ आपके संबंध हो सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (11:12:1984 से 05:02:1985)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अपने पद और अधिकार के कारण विभिन्न प्रकार के आनन्द प्राप्त होंगे। आपको विवाह हो सकता है और आपको संतान की प्राप्ति हो सकती है। आप परोपकारी काम करेंगे और धार्मिक कृत्यों को निभायेंगे। आप भूमि खरीदेंगे या भवनों का निर्माण करेंगे। आपको अपने जीवनसाथी, संतान और माता–पिता का पूरा सहयोग मिलेगा।

शनि प्रत्यंतर्दशा (05:02:1985 से 14:04:1985)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। समाज और सरकार में ऊँचे स्थानों पर बैठे लोगों से आपको समर्थन प्राप्त होगा। आप उत्तम और ज्ञानी बड़ी औरतों के सम्पर्क में रहेंगे। विभिन्न स्रोतों से आपको आय प्राप्त होगी। निवेश के लिए यह एक उत्तम समय है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (14:04:1985 से 13:06:1985)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको पेड़ों, फलों और मवेशियों से लाभ होगा। शेयर और भूमि में निवेश करके आप उत्तम लाभ प्राप्त करेंगे। आपको अपने जीवनसाथी, संतान और संबंधियों का आनन्ददायक साथ प्राप्त होगा। वायु और पित्त के कारण आपको रोग हो सकते हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (13:06:1985 से 08:07:1985)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको भारी दुखों और कष्टों का सामना करना पड़ सकता है। आपके वातावरण में अचानक बदलाव आ सकता है। आप अपना निवास स्थान बदल सकते हैं। आपको परित्यक्त और वर्जितस्त्री के साथ आनन्द प्राप्त करने पर बाध्य होना पड़ सकता है। शत्रु आपको हानि पहुंचाने का प्रयासकर सकते हैं।

सूर्य अन्तर्दशा (08:07:1985 से 13:11:1985)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। राजनीति से संबंध रखने वाले लोगों के लिए यह अन्तर्दशा सबसे उत्तम है। यदि आप इस अन्तर्दशा के दौरान चुनाव लड़ते हैं, तो आपको सफलता अवश्य मिलेगी। हालांकि, विरोधियों के साथ झगड़ा होने के कारण आपको चोट लगने की संभावना है। आप दूसरे की जमीन और सम्पत्ति हड़प सकते हैं। आपको आनन्द प्राप्त करनेके बहुत सारे अवसर मिलेंगे। आपको शक्ति और अधिकार प्राप्त होंगे। वाहनों का सुख भी आपको प्राप्त होगा। बाद में आपको एक के बाद एक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपको किलों, जंगलों और पर्वतीय क्षेत्रों में घूमने का शौक होगा। पिता और अन्य संबंधियों के साथ आपके संबंध

आत्मीय नहीं हो सकते हैं। आपकी कुण्डली में सूर्य कमजोर है, आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है।आपको ऐसा प्रतीत हो सकता है कि हर चीज आपके खिलाफ है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (08:07:1985 से 14:07:1985)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के परिणाम मंगल की स्थिति पर निर्भर करेंगे। सूर्य निश्चित रूप से शुभपरिणाम देगा। आपको भूमि, घर, सगे भाई बहनों से सुख और आराम तथा उनको सम्पन्नता प्राप्त होगी। नौकरी में आपको पदोन्नति मिलेगी। आपके सगे भाई–बहन आपके लिए परेशानी पैदा करने की कोशिश कर सकते हैं। आपकी संपत्ति का बंटवारा हो सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (14:07:1985 से 25:07:1985)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको विभिन्न परिणाम प्राप्त होंगे। सूर्य आपके पद को ऊँचाई प्रदान करेगा– विशेषकर यदि आप राजनीति में हैं। चंद्रमा आपके विचारों में स्पष्टता लायेगा और आपको धर्म की तरफ मोड़ेगा। मंगल आपको प्रचूर धन और ऐंद्रिय सुख प्रदान करेगा।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (25:07:1985 से 02:08:1985)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी सारी कामनायें पूर्ण होंगी। आपको राजनीतिक उपलब्धि मिलेगी और व्यापारिक गतिविधियों का विस्तार होगा।

राहु प्रत्यंतर्दशा (02:08:1985 से 21:08:1985)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पहले 6 दिनों में आपको भारी धन हानि, अनावश्यक डर, रक्त की खराबी के कारण रोग हो सकते हैं, आपको बुरे सपने आ सकते हैं। अगले 6 दिनों में आपके जीवनसाथी और संतान को गंभीर रोग हो सकते हैं और उपचार में आपका भारी धन व्यय हो सकता है। अन्तिम 6 दिनों में आपको विभिन्न स्रोतों से आय और रोगों से मुक्ति मिलेगी।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (21:08:1985 से 07:09:1985)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको विभिन्न स्रोतों से आय और रोगों से राहत प्राप्त होगी। यह आनन्द प्राप्ति और याद करने वाली दशा होगी। आपको अप्रत्याशित स्रोतों से आय प्राप्त होगी। आप धार्मिक कार्यों में भाग लेंगे। आप संबंधियों के यहां और आनन्द भ्रमण पर जायेंगे तथा तीर्थस्थानों की यात्रा करेंगे। निवेशों से आपको उत्तम लाभ मिलेंगे। आपका विवाह हो सकता है और आप अपना निवास स्थान बदल सकते हैं।

शनि प्रत्यंतर्दशा (07:09:1985 से 27:09:1985)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। अचानक परिस्थितियां पलट सकती हैं। आप ऊँचाई से नीचे गिर सकते हैं। सरकार से आपको कष्ट हो सकता है। आग या चोरी के कारण हानि हो सकती है। एक के बाद एक आपविभिन्न रोगों से परेशान हो सकते हैं। आपके खिलाफ कपट पूर्ण योजना बन सकती है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (27:09:1985 से 15:10:1985)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह दशा बहुत खराब हो सकती है। आप लेखन और प्रकाशन से आय प्राप्त करेंगे। आपके नाम और यश में वृद्धि होगी। आपके नये रास्ते बनेंगे। आपके रोजगार में बदलाव हो सकता है या आपको पदोन्नति मिल सकती है। आपको व्यापार में स्थायित्व प्राप्त होगा। निवेश करने के

लिए यह एक उत्तम समय है। पराई स्त्रियों से दूर रहें।

केतु प्रत्यंतर्दशा (15:10:1985 से 23:10:1985)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह दशा बहुत खराब हो सकती है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (23:10:1985 से 13:11:1985)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक उत्तम दशा है। आपको खोई हुई भूमि और सम्पत्ति प्राप्त होगी। रोगों से राहत मिलेगी। आपके दूसरी औरतों के साथ घनिष्ठ संबंध हो सकते हैं। आप नया वाहन खरीदेंगे। सोने और तांबें से बने आभूषणों या पात्रों से आपको आय प्राप्त होगी। आप उत्तरी–पूर्वी दिशा में यात्रा कर सकते हैं।

चन्द्रमा अन्तर्दशा (13:11:1985 से 14:06:1986)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपको घरेलू वस्तुओं और आभूषणों की प्राप्ति होगी। आप मित्रों और संबंधियों से उत्तम सहयोगप्राप्त करेंगे तथा ऊँचे पदों पर आसीन होंगे। यह अन्दशा मध्यम रूप से उत्तम होगी।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (13:11:1985 से 01:12:1985)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपका विवाह हो सकता है और आपको एक पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। आपकेसहोदरों का भी विवाह हो सकता है। आपके घर पर कई शुभ समारोह आयोजित होंगे। आपको नये परिधान मिलेंगे। आपको संस्कारी और ज्ञानी लोगों से मिलने के अवसर प्राप्त होंगे। आपको जीवनसाथी और संतान से पूरा आराम मिलेगा। माता से आपको लाभ प्राप्त होगा।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (01:12:1985 से 13:12:1985)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान पैतृक सम्पत्ति और धन की हानि हो सकती है। आप रक्त कीअशुद्धता के कारण होने वाले रोगों, कफ एवं चिंता से ग्रस्त हो सकते हैं। आपको विद्युत और अन्य गर्म चीजों से खतरा हो सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (13:12:1985 से 14:01:1986)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको अपने वित्तीय मामलों में बहुत अधिक सावधानी बरतनी चाहिए। ऐसा प्रतीत होता है कि आपको बेहतर आर्थिक लाभ प्राप्त होने का समय आ रहा है। लेकिन यादरहे यह आपको आपके संचित धन से वंचित कर सकता है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (14:01:1986 से 11:02:1986)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा बहुत उत्तम होगी। आपको उपदेशकों और सरकारी अधिकारियों से लाभ होगा। आर्थिक समस्याओं को हल करने में आपके मित्र और संबंधी मदद करेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (11:02:1986 से 17:03:1986)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अपने हर कार्य में सफलता मिलेगी। आप भवनों का निर्माण करेंगे या उन्हेंखरीदेंगे। आप रक्त की अशुद्धता के कारण होने वाले रोगों, कफ, चिंता से ग्रस्त हो सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (17:03:1986 से 16:04:1986)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह दशा उत्तम होगी। आपको भूमि और भवन प्राप्त होंगे। आप अपना अधिकतर समय अपने परिवार के साथ बितायेंगे। आप आनन्द भ्रमण पर जायेंगे। यदि आप नौकरी कर रहेहैं, तो आपको पदोन्नति मिलेगी और यदि आप व्यापारी हैं, तो आपको व्यापार में लाभ होगा।

केतु प्रत्यंतर्दशा (16:04:1986 से 29:04:1986)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। परिवार की महिलाओं के कारण आपको धन की हानि हो सकती है। श्राद्ध के द्वारापूर्वजों को संतुष्ट ना कर पाने के कारण उनका शाप अपना प्रभाव दिखा सकता है। आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है। आप विभिन्न पवित्र स्थानों की यात्रा कर सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (29:04:1986 से 03:06:1986)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक उत्तम दशा है। आपको अप्रत्याशित स्रोतों से धन का लाभ मिलेगा। आपको विरासत में ननिहाल की सम्पत्ति प्राप्त होगी। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपको पदोन्नति मिलेगी और यदि आप व्यापारी हैं, तो आपको व्यापार में लाभ होगा। शेयर और अन्य सुरक्षा जमा योजनाओं में निवेश करने का यह अति उत्तम समय है। आप सुन्दर युवतियों के साथ आनन्दमय समय व्यतीत करेंगे। हालाँकि, आपके जीवनसाथी से आपके संबंध आत्मीय नहीं हो सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (03:06:1986 से 14:06:1986)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको राजनीतिक उपलब्धि प्राप्त होगी। आप अपने पारिवारिक पृष्ठ भूमि के आधार पर किसी संगठन के नेता चुने जा सकते हैं। अपने भविष्य की योजना बनाकर वास्तविक व्यावहारिक काम को करने का यह उचित समय है।

राहु दशा (14:06:1986 से 13:06:2004)

वर्तमान समय में आपकी राहु की महादशा चल रही है और राहु आपकी कुण्डली में चौथे भाव में स्थित है।राहु की दशा इस भाव में बहुत उत्तम होगी। चूंकि चौथा भाव माता का है, अतः उनका स्वास्थ्य आपके लिए चिन्ता का कारण हो सकता है। आपको विदेशों में रहने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। सभी से आपका झगड़ा हो सकता है। आपका संचित धन समाप्त हो सकता है और आप ऋण ले सकते हैं। धोखाधड़ी की भी संभावना हो सकती है।

वर्तमान समय में आपकी राहु की महादशा चल रही है और राहु आपकी कुण्डली में धनु राशि में स्थित है।राहु की अपनी दशा के दौरान, आपको बिना किसी प्रयास के आकस्मिक और अप्रत्याशित धन का लाभ होगा, आपको अपने सभी प्रयासों में भारी सफलता मिलेगी। वर्तमान समय में आपकी राहु की महादशा चलरही है और राहु आपकी कुण्डली में धनु राशि में स्थित है। राहु की अपनी दशा के दौरान, आपको बिना किसी प्रयास के आकस्मिक और अप्रत्याशित धन का लाभ होगा, आपको अपने सभी प्रयासों में भारी सफलता मिलेगी। आपमें जनता के मामलों में अति उत्साह दिखाने की प्रवृत्ति हो सकती है, जिसको यदि रोका नहीं गया तो आपको धन की ही नहीं, प्रतिष्ठा की भी भारी क्षति हो सकती है। आपका रूझान आध्यात्मिक एवं गूढ़ विषयों में हो सकता है। चूंकि आप शीघ्र धन कमाना चाहेंगे, अतः आप किसी आर्थिक संकट में फंस सकते हैं और धोखाधड़ी के कारण आपको भारी हानि हो सकती है। आर्थिक मामलों में आपको अधीर और आवेगी नहीं होना चाहिए। आपको अनूकूल समय की प्रतीक्षा करनी चाहिए।

राहु अन्तर्दशा (14:06:1986 से 24:02:1989)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा चल रही है। आपको भोजन विषाक्तता और जल जनित रोग हो सकते हैं। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आपके भाई या पिता या किसी नजदीकी संबंधी का स्वास्थ्य बहुत खराब हो सकता है। लम्बी बीमारी

के कारण आपको धन हानि हो सकती है। आपको अपने जन्म स्थान को छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। आप इधर–उधर भटक सकते हैं। दूसरी महिलाओं के साथ आपके संबंध बन सकते हैं। आपकोदूसरों के साथ व्यवहार में बहुत सावधान रहना चाहिए– जैसाकि वे लोग आपको धोखा दे सकते हैं।दुष्ट लोग आपको गंभीर रूप से मानसिक पीड़ा पहुँचा सकते हैं। आपके शरीर में चोट लग सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (14:06:1986 से 09:11:1986)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक खराब दशा हो सकती है। ऐसा देखने में आया है कि जन्मकुण्डली में राहु के उत्तमस्थिति में होने के बावजूद इस प्रत्यंतर्दशा में हमेशा विषम परिणाम प्राप्त होते हैं। सामान्य मामलों में आपके शरीर के कुछ भागों में अप्रत्याशित रूप से चोट लग सकती है या कट सकते हैं। आपके परिवार की मानसिक शांति भंग हो सकती है। आपकी इस प्रत्यंतर्दशा का प्रभाव आपके परिवार के लगभग हर सदस्य पर पड़ सकता है। पिछले कई सालों के नजदीकी और मजबूत संबंध भी टूट सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (09:11:1986 से 20:03:1987)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली प्रत्यंतर्दशा के दौरान आपकी जो मानसिक शांति खो गयी थी, वह आपको वापस मिल जायेगी। आपको वाहन की प्राप्ति और धन का लाभ होगा। संबंधियों की संगति प्राप्त होगी, घरपर शुभ समारोह आयोजित होंगे, आपके टूटे हुए संबंध फिर से जुड़ेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (20:03:1987 से 23:08:1987)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। पिछली प्रत्यंतर्दशा के दौरान आपके द्वारा प्राप्त किया गया लाभकारी परिणामों का सुख तुफान के पहले की केवल खामोशी थी। यह दशा आपके धीरज की बहुत बड़ी परीक्षा होगी। हर जगह पर आपके शत्रु फिर से सिर उठा सकते हैं। ऋणदाता आपको और आपके परिवार को परेशान कर सकते हैं। आपको गठिया और नेत्र विकार हो सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (23:08:1987 से 10:01:1988)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको मिले–जुले परिणाम प्राप्त होंगे। आपके शत्रु थोड़े समय के लिए दूर जा सकते हैं। आपको अपने जीवनसाथी से आर्थिक सहायता मिलेगी।

केतु प्रत्यंतर्दशा (10:01:1988 से 07:03:1988)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आप जो कुछ करेंगे, उसमें हानि हो सकती है। आपका निवास स्थान बदल सकता है और आप सुदूर स्थानों की यात्रा कर सकते हैं। पड़ोसियों और मित्रों से प्रायः आपका झगड़ा हो सकता है। शत्रु स्थिति का लाभ लेने की कोशिश कर सकते हैं। हालाँकि, समय–समय पर आपको आनन्द प्राप्त हो सकते हैं और आपका मनोरंजन होगा। यह एक सामान्य दशा होगी।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (07:03:1988 से 19:08:1988)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपका विवाह हो सकता है। परलौकिक चीजों और सरकार से आपको खतरा हो सकता है। आपका वाहन खो सकता है और जीवनसाथी को मृत्युतुल्य कष्ट या उनसे अलगाव हो सकता है। पूरा परिवार किसी ना किसी समस्या से ग्रसित हो सकता है। आपको अति विषम परिणामों जैसे व्यापारऔर वर्तमान स्थिति की हानि आदि का सामना करना पड़ सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (19:08:1988 से 07:10:1988)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की

प्रत्यंतर्दशा चल रही है। तेज तथा धारदार हथियारों या पत्थर से आपको चोट लग सकती है। आपको सीनेऔर यकृत में परेशानियां हो सकती हैं। आपको धन हानि और वरिष्ठों से कष्ट हो सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (07:10:1988 से 29:12:1988)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको मिले–जुले परिणाम मिलेंगे। आपको अप्रत्याशित स्रोतों से आय प्राप्त होगी, लेकिन साथ ही आपको धन हानि और अवांछित चिन्तायें हो सकती हैं। आपकी प्रतिष्ठा खो सकती है और मित्रों तथा परिवार के लोगों से झगड़ा हो सकता है। आप गठिया के दर्द से ग्रसित हो सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (29:12:1988 से 24:02:1989)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप चर्म रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं, लेकिन गुदा में फोड़ा या खुजली हो सकती है। आप रोगों के उपचार में भारी मात्रा में धन खर्च कर सकते हैं, लेकिन आपको राहत नहीं मिल सकती है। रक्त की खराबी के कारण कई रोग हो सकते हैं। सगे भाई–बहनों के कारण धन हानि हो सकती है।आपकी माता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आपको मानसिक हताशा हो सकती है।

गुरू अन्तर्दशा (24:02:1989 से 20:07:1991)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम होगी। आपको भरपूर खुशियां मिलेंगी। धार्मिक कार्यों को करने और विद्वान तथा साधुजनों से मिलने के आपको अवसर प्राप्त होंगे। सूर्य से संबंध होने पर आप शास्त्रों और अन्य प्राचीन तरीकों के अध्ययन में गहन रूचि लेंगे। आपको सुन्दर स्त्रियों के साथ घूमने का भी शौक होगा। आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। यदि आपकी कुण्डली में बृहस्पति बली नहीं है, तो भी आपको बहुत विषम परिणाम नहीं मिलेंगे।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (24:02:1989 से 21:06:1989)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा बहुत उत्तम होगी। आपके सगे भाई–बहन समृद्धशाली होंगे। आपको समाज में एक उचित स्थान मिलेगा। आपको व्यापार में लाभ होगा और धन की प्राप्ति होगी।

शनि प्रत्यंतर्दशा (21:06:1989 से 07:11:1989)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। राहु आपको सत्य के मार्ग का अनुसरण कर सम्पन्नता प्राप्त करने की इजाजत नहीं देगा, यह आपको धन और अन्य भौतिक सुख केवल पाप के दलदल में फंसाने के लिए प्रदान करेगा।अतः आपको पापकर्मों की तरफ मुड़ने से अपने आप को रोकना चाहिए। यदि आपने ऐसा किया तो आपको धीमी गति और स्थायी तरीके से सम्पन्नता प्राप्त होगी।

बुध प्रत्यंतर्दशा (07:11:1989 से 11:03:1990)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। आप अपना खोया हुआ धन और सम्मान प्राप्त करेंगे। आपके घर पर वैवाहिक समारोह आयोजित होंगे। इस दशा के दौरान किया गया कोई निवेश लाभकारी साबित होगा। शैक्षिणिक क्षेत्र में आपको सफलता मिलेगी, आपको नये परिधान और उत्तम मित्रों की संगति प्राप्त होगी।

केतु प्रत्यंतर्दशा (11:03:1990 से 01:05:1990)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। शत्रु विभिन्न तरीके से परेशानियां पैदा करने की कोशिश कर सकते हैं। आप दुष्ट

लोगों से घिरे रह सकते हैं। लेकिन आपको हानि पहुंचाने के उनके सभी प्रयास व्यर्थ हो जायेंगे। हालांकि,आपको हमेशा एक भय बना रह सकता है, कि कुछ घटित होने वाला है। आपको चर्म रोग या गलेमें अकड़न हो सकती है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (01:05:1990 से 24:09:1990)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि बृहस्पति उच्चस्थ नहीं है, तो यह दशा बहुत उत्तम होगी। शुक्र प्रथम स्तर का शुभ ग्रह होगा और आपको जीवन के सारे सुख प्रदान करेगा। लेकिन आपको महिलाओं से सावधान रहना होगा– जैसाकि वे आपकी मित्र होने का दिखावा कर सकती हैं और जब वे आपसे सब कुछ प्राप्त कर लेंगी, तो वे आपको छोड़ देंगी। इस दशा के दौरान आपका विवाह हो सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (24:09:1990 से 07:11:1990)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी आय में वृद्धि होगी, लेकिन आपके लिए उसका कोई अर्थ नहीं होगा– जैसाकि आपके खर्चे बढ़ सकते हैं और इस दशा के अन्त में आपके पास कुछ भी शेष नहीं बच सकता है।यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपकी पदोन्नति या प्रगति के अवसरों को आपके गुप्त शत्रु बाधित करसकते हैं। आप जिस क्षेत्र में व्यापार कर रहे हैं, उसी क्षेत्र के व्यापारी आपका प्रतिरोध कर सकते हैं। आपको गठिया का दर्द और सिर में पीड़ा हो सकती है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (07:11:1990 से 19:01:1991)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यद्यपि मानसिक शांति का अभाव होगा, लेकिन आर्थिक मामलों में सुधार होगा। आप पिछली देनदारियों को एक हद तक निपटाने में सक्षम होंगे। आप जिन महिलाओं को विश्वसनीय औरजिम्मेदार समझतें हैं उनसे आपको किसी प्रकार का खतरा या कष्ट हो सकता है। आपको गुदा में खुजली या बवासीर की समस्या हो सकती है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (19:01:1991 से 11:03:1991)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक ऐसी दशा होगी, जिसके बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता है। इसके परिणाम बहुत भिन्न होंगे। गरीब परिवार में जन्म लेने वाला व्यक्ति भी प्रगति के शिखर पर जा सकता है। आपको कोई अप्रत्याशित सौगात मिलेगी।

राहु प्रत्यंतर्दशा (11:03:1991 से 20:07:1991)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आर्थिक मामलों के लिए यह एक उत्तम दशा होगी। आपके जीवनसाथी आपकी कोई मदद नहीं कर सकते हैं, आप स्वयं ही हर कार्य करेंगे। आपको अपनी योजनाओं को पूरा करने में बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। हालाँकि, आप इस प्रकार की बाधाओं को पार कर सफलता प्राप्तकरेंगे। आपको कुछ खतरनाक चर्म रोग हो सकते हैं।

शनि अन्तर्दशा (20:07:1991 से 26:05:1994)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। आपका अपने जीवनसाथी, संतानों और सहोदरों के साथ झगड़ा हो सकता है। आपके भाई आपके शत्रु बन सकते हैं। रक्त विकार, वायु और पित्त रस के कारण आपको रोग हो सकते हैं। आपके शरीर में चोट लग सकती है।यदि घर में नौकर हैं, तो आवश्यकता के समय वे आपको छोड़ कर जा सकते हैं। यदि आप किसी ऊँचेपद पर हैं, या व्यापार कर रहे हैं, जहां मजदूरों की आवश्यकता है, तो उनकी उचित संख्या में कमी होसकती है। आपकी अवनति हो सकती है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (20:07:1991 से 01:01:1992)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको जीवन में हर संभव विपदाओं का सामना करना पड़ सकता है। आपको कारावास हो सकती है। आपको किसी प्रकार के मनोरंजन में कोई रूचि नहीं हो सकती है। आपमें खिन्नता की भावना जन्म ले सकती है। आप कोई महत्वपूर्ण निर्णय नहीं ले सकते हैं। शत्रु भी आपके लिएसमस्यायें पैद कर सकते हैं। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपको सावधान रहना चाहिए। आपके शरीर में चोट लग सकती है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (01:01:1992 से 28:05:1992)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आर्थिक मामलों में आपको सफलता मिलेगी। आप नयी सम्पत्तियां प्राप्त कर सकते हैं। हालाँकि, सम्पत्ति के मामलों में विवाद हो सकते हैं। कर्मचारी या अधीनस्थ आपको धोखा दे सकते हैं। निरन्तर धनागमन के बावजूद जरूरत के समय नगद धन की उपलब्धता में संशय हो सकता है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (28:05:1992 से 28:07:1992)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपके हर काम में बाधा आ सकती है। शत्रु जारी कामों में व्यवधान डालने की कोशिश करेंगे। सामान्य मामलों में परिवार के लोगों में मतभेद हो सकते हैं, जिससे झगड़े और लड़ाई हो सकती है। आपके सगे भाई बहन अपने कामों को भली भांति नहीं कर सकते हैं। कोट के मामलों में अनावश्यक व्यय हो सकता है। आप गठिया के दर्द से ग्रसित हो सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (28:07:1992 से 17:01:1993)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। शनि और शुक्र आपको प्रचुर धन प्रदान करेंगे, लेकिन राहु उसको उड़ा ले जा सकता है। आप नशे और विभिन्न औरतों के साथ यौन सुखों को प्राप्त करने में रत रहेंगे। आप जो कुछ भी कमायेंगे, उसे औरतों और अन्य सुखों को प्राप्त करने में खर्च कर देंगे। आप बहुत सारे अशुभ स्वप्न देख सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (17:01:1993 से 10:03:1993)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। सूर्य से संबंधित वस्तुओं और व्यक्तियों की आपको हानि हो सकती है। यदि आप राहु से संबंधित वस्तुओं का व्यापार कर रहे हैं, तो आपको उसमें लाभ हो सकता है– जैसाकि शनि और सूर्य परस्पर विवाद में उलझे हैं, जहाँ राहु के सहयोग के कारण शनि सूर्य पर भारी है। राजनीतिज्ञों और नौकरशाहों के लिए यह दशा उत्तम नहीं हो सकती है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (10:03:1993 से 05:06:1993)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। जैसाकि राहु और शनि दिमाग के प्रमुख नियंत्रणकर्ता को पीड़ित कर रहे हैं, अतः आपकी वैचारिक प्रक्रिया को आघात लग सकता है। आपके द्वारा इस दशा के दौरान लिया गया कोई भी निर्णय गलत हो सकता है। आपकी माता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (05:06:1993 से 05:08:1993)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति खराब दशा हो सकती है। आगजनी या चोरी के कारण धन हानि हो सकती है। आपकी संतान को कष्ट हो सकता है। पित्त और वायु के कारण रोग हो सकते हैं। आपको गंभीर मानसिक अवसाद हो सकता है। आप गैरकानूनी कार्यों से आय प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन साथ ही इन कार्यों के कारण कानूनि जटिलतायें भी पैदा हो सकती हैं।

राहु प्रत्यंतर्दशा (05:08:1993 से 08:01:1994)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। आपको दूरस्थ स्थानों पर जाना पड़ सकता है। हालाँकि, आपकी आय उत्तम होगी, लेकिन आप उसे ऐंद्रिय सुखों की प्राप्ति में खर्च कर सकते हैं। आपको जीवनसाथी से कोई सुख नहीं मिल सकता है। आपकी कुण्डली में राहु या शनि सातवें भाव में है, इस दशा के दौरान आपके जीवनसाथी को मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है या आपका उनसे तलाक हो सकता है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (08:01:1994 से 26:05:1994)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक उत्तम दशा होगी। आप अपने ज्ञान की तृष्णा को शांत करने के लिए निकल पड़ेंगे। लेखन या प्रकाशन के माध्यम से आप आय अर्जित करेंगे। आप अपने नजदीकी संबंधियों सेमिले–जुलेंगे और विभिन्न तरीकों से मौज–मस्ती करेंगे। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपको पदोन्नति मिलेगी और यदि आप व्यापार कर रहे हैं, तो आपको उसमें उचित लाभ प्राप्त होगा।

बुध अन्तर्दशा (26:05:1994 से 13:12:1996)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। आपको संतानों सेसुख और खुशियों प्राप्त होंगी। संबंधियों से आपके उत्तम संबंध बनेंगे। संतान की प्राप्ति हो सकती है। मित्रों के साथ आपके संबंध आनन्दायक और फलदायी होंगे। हालांकि, आपमें हीनता की भावना आ सकतीहै। आपके विचारों में स्पष्टता होगी।

बुध प्रत्यंतर्दशा (26:05:1994 से 05:10:1994)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको संचित धन की हानि हो सकती है। आपको जहर और वायु के कारण रोग, सिरदर्द, नेत्र विकार और उदर में परेशानी हो सकती है। आपको मानसिक वेदना और अपनी सभी योजनाओं में असफलता का सामना करना पड़ सकता है। नजदीकी संबंधियों को कष्ट हो सकता है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (05:10:1994 से 29:11:1994)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि बुध बली भी है, तो भी राहु और केतु आपके जीवन में समस्यायें पैदा कर सकते हैं। आप उस मछली की तरह हो सकते हैं, जिसे पानी से निकालकर किनारे पर रख दिया गया है। आपको दमा और मानसिक अवसाद की शिकायत हो सकती है। विभिन्न तरीकों से आपको हानियां हो सकती हैं। आपको अपने हर काम में विवादों और बहस का सामना करना पड़ सकता है। पूर्ण रूप से मानसिक विभ्रमऔर संशय के कारण आपके दिमाग में हलचल पैदा हो सकती है। आप जुए में रत हो सकते हैं औरआपको धन हानि हो सकती है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (29:11:1994 से 03:05:1995)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप स्वादिष्ट भोजन और आभूषणों का आनन्द प्राप्त करेंगे। मित्र और संबंधी आपकी मदद को आगे आयेंगे। आप दैवीय मार्ग को पाने के लिए ईश्वर की उपासना में रत रहेंगे। आपकी आय का एकप्रमुख भाग इस उद्देश्य के लिए खर्च होगा। यदि राहु या बुध या शुक्र कमजोर भी हैं, तो भी आपको बहुत विषम परिणाम प्राप्त नहीं होंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (03:05:1995 से 18:06:1995)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको आर्थिक लाभ प्राप्त होगा। आपका नाम और यश बढ़ेगा। राजनेता एक शुभ समय कीआशा कर सकते हैं। आपके घर के सभी लोगों के लिए यह एक उत्तम समय होगा। आप भूमि या भवनखरीदेंगे। कई छोटी यात्रायें करेंगे। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो एक लम्बे संघर्ष के बाद आपको

नौकरी में पदोन्नति मिलेगी।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (18:06:1995 से 04:09:1995)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपका बौद्धिक विकास होगा। निवेश करने के लिए यह उत्तम दशा होगी– जैसाकि आपका मस्तिष्क सही दिशा में काम करेगा। हालाँकि, आपका अपने मित्रों और संबंधियों के साथ अप्रत्याशित रूप से झगड़ा और विवाद हो सकता है, जिससे आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (04:09:1995 से 28:10:1995)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपकी अपनी व्यावसायिक स्थिति में ही नहीं, अपितु सामाजिक स्थिति में भी कुछ परेशानियां हो सकती हैं। आपको शत्रुओं के कारण कष्ट हो सकता है। आपको रक्त की खराबी के कारणरोग और बुखार हो सकता है। सामान्यतः इस दशा के दौरान आपको मानसिक वेदना और अपनी सभी योजनओं में असफलता का सामना करना पड़ सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (28:10:1995 से 16:03:1996)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप जिन लोगों पर निर्भर हैं या विपत्ति में जिन्होंने आपकी मदद की है, उनको खातरा हो सकता है। आपको विभिन्न तरीकों से धन हानि हो सकती है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (16:03:1996 से 18:07:1996)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक बहुत उत्तम दशा होगी। आप रोग मुक्त रहेंगे और पूर्ण शान्ति का अनुभवकरेंगे। आपको स्वयं द्वारा किये गये कार्यों के लिए व्यवसाय में ही नहीं, अपितु समाज में भी प्रशंसा मिलेगी। आप दैवीय मार्ग का अनुसरण करेंगे। यदि अन्य ग्रहीय युतियां अनुकूल हैं, तो आप धर्म के मार्ग में दूसरों को प्रशिक्षण देंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (18:07:1996 से 13:12:1996)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह एक मिली–जुली दशा होगी। आपको विभिन्न स्रोतों से आय प्राप्त होगी, लेकिनआपका व्यय भी बढ़ सकता है। चिकित्सकीय उपचार में आपका खर्च अधिक हो सकता है। सम्पत्ति के मामलों में परिवार के सदस्यों के बीच भिन्न मत होंगे। आपके अपने पिता से संबंध मधुर नहीं हो सकते हैं। आपको अपने वर्तमान निवास स्थान को छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है।

केतु अन्तर्दशा (13:12:1996 से 31:12:1997)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आप सिरदर्द, बुखार और शरीर में कंपकपी से ग्रस्त हो सकते हैं। आग और हथियारों से आपको खतरा हो सकता है। आपके शरीर में जहरीले फोड़े हो सकते हैं। आप और आपका परिवार दुखी हो सकता है। घर और व्यावसायिक क्षेत्र में आपको झगड़ों का सामना करना पड़ सकता है। आपकी कुण्डली में केतु पीड़ित है, आपको मृत्युतुल्य कष्ट हो सकते हैं। यदि आपकीकुण्डली में केतु शुभ है, तो भी इस अन्तर्दशा के दौरान आपको शुभ परिणाम नहीं मिल सकते हैं। हालांकि, ऐसा देखने में आया है, कि यदि राहु की अन्तर्दशा अपनी महादशा में उत्तम नहीं है, तो केतु की अन्तर्दशा उत्तम फल देगी। आपको महामृत्युंजय मंत्र का जाप करना चाहिए।

केतु प्रत्यंतर्दशा (13:12:1996 से 05:01:1997)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपके जीवनसाथी और संतान हताश हो सकते हैं। आपके शरीर में पीड़ा हो

सकती है। आपको अपने वांछित उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं हो सकती है। आपको हृदय रोग, कलंक, चित्त की अस्थिरता और धन हानि का सामना करना पड़ सकता है। अपने संबंधियों से आपको भारी निराशा मिलसकती है और आपका उनसे अलगाव हो सकता है। आपके लिए महामृत्युंजय मंत्र का जाप लाभकारी होगा।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (05:01:1997 से 09:03:1997)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह एक उत्तम दशा होगी। आपको महिलाओं की संगति और वाहनों का सुख प्राप्तहोगा। आप पवित्र स्थानों की यात्रा करेंगे। आप भूमि खरीदेंगे या आपको विरासत में भूमि प्राप्त होगी।हालाँकि, बिना किसी कारण के झगड़े हो सकते हैं। आपको शारीरिक कष्ट और मानसिक वेदना का सामना करना पड़ सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (09:03:1997 से 29:03:1997)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आप दूसरों की भलाई करने की कोशिश करेंगे, लेकिन आपको मिलने वाला उसका प्रतिफल पूर्ण निराशाजनक हो सकता है। अधीनस्थ आपको नुकसान पहुंचाने की कोशिश कर सकते हैं। संतान भी आपकी हानि का कारण हो सकती हैं। संबंधी और मित्र आपके शत्रु हो सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (29:03:1997 से 30:04:1997)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। परिवार की महिलाओं के लिए यह एक बहुत खराब दशा हो सकती है। वैवाहिक संबंध टूट सकते हैं। महिलाओं को मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है। आपका खर्चों पर कोई नियंत्रण नहीं हो सकता है। अपने काम में आपकी कोई रूचि नहीं हो सकती है। परिवार के कुछ बड़े लोगों का आपको वियोग सहना पड़ सकता है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (30:04:1997 से 22:05:1997)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि यह दशा 35 वर्ष की आयु के पहले पड़ती है, तो आपने पूर्व जन्म में जो पाप किये हैं, उनका फल आपको इस जन्म में मिलने वाला है। यदि दशा 35 वर्ष की आयु के बाद पड़ती है, तोआपने 35 वर्ष की आयु से पहले जो पाप कर्म किये हैं, वे प्रमुख भूमिका निभायेंगे। आप विभिन्न रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। आपको धन हानि और परिवार में कोई अशुभ घटनाओं का सामना करना पड़ सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (22:05:1997 से 18:07:1997)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस दशा के परिणाम मुख्यतः राहु की स्थिति पर निर्भर करेंगे। आपके परिवार में कई शुभ समारोह आयोजित हो सकते हैं। व्यापार में आपको अप्रत्याशित लाभ होगा और चहुंमुखी सम्पन्नता प्राप्त होगी।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (18:07:1997 से 08:09:1997)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके ज्ञान में वृद्धि होगी। आप विभिन्न धार्मिक स्थानों की यात्रा करेंगे। आप पूजा–पाठ और अन्य धार्मिक कार्यों को करेंगे। सरकार से आपको लाभ मिलेगा। आपका विवाह हो सकता है। आपको संतान की प्राप्ति हो सकती है और खोई हुई सम्पत्ति प्राप्त होगी।

शनि प्रत्यंतर्दशा (08:09:1997 से 07:11:1997)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की

प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको निर्वासन का सामना करना पड़ सकता है। आप जो भीकाम करेंगे, उसका अन्त संकटपूर्ण होगा। आपके नजदीकी मित्र और संबंधी भी आपके कट्टर शत्रु बन सकते हैं। आपके पास नगद धन की कमी हो सकती है, जिससे आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है।संक्षेप में, आपको सभी संभावित विपदाओं का एक के बाद एक सामना करना पड़ सकता है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (07:11:1997 से 31:12:1997)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। प्रचंड तूफान के बाद यह एक शांतिपूर्ण दशा होगी। धीरे–धीरे आपके आस–पास की परिस्थितियां और जीवन सामान्य होना शुरू हो जायेगा। हालाँकि, आपको सौदे की वैधता को जांचे बिना किसी सम्पत्ति में निवेश नहीं करना चाहिए। आपकी जीवनसाथी कई मामलों में आपको राहत प्रदान करेंगी।

शुक्र अन्तर्दशा (31:12:1997 से 31:12:2000)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशाके दौरान आपके विवाह की संभावना है। स्त्रियों के द्वारा आपको बहुत आनन्द प्राप्त होगा। आपकोघरेलू सामान और आभूषणों की प्राप्ति होगी। आपको संगीत और नृत्य में रूचि उत्पन्न होगी। आप धन लाभ और जीवनसाथी से आनन्द प्राप्त करेंगे, लेकिन किसी प्रियजन के खोन की संभावना हो सकती है। आपको देवी दुर्गा और लक्ष्मी की आराधना करनी चाहिए।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (31:12:1997 से 02:07:1998)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। यदि कोई सम्पत्ति विवाद अब तक अनसुलझेहैं, तो इस दशा के अन्त तक वे सुलझ जायेंगे। आपको अप्रत्याशित क्षेत्रों से धन लाभ होगा। आपके शरीर में चोट लग सकती है या आपको आग से भय हो सकता है। आपको चोरों से कष्ट हो सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (02:07:1998 से 26:08:1998)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपको गले, नाक या सीने और पेट के रोग हो सकते हैं। आपकी आँखों में संक्रमण हो सकता है। यदि आप व्यापार कर रहे हैं, तो आपको कड़ी स्पर्द्धा का सामना करना पड़ सकता है और शत्रु आपको नुकसान पहुंचाने का प्रयास कर सकते हैं। संबंधियों के कारण आपको धन हानि हो सकती है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (26:08:1998 से 25:11:1998)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक उत्तम दशा होगी। आपको प्रचूर धन प्राप्त होगा, लेकिन यदि खर्च पर बहुत अधिक नियंत्रण नहीं किया गया तो व्यय आय से अधिक हो सकता है। आपको दूसरी महिलाओं के साथ आनन्दमय समय व्यतीत करने के प्रायः अवसर मिल सकते हैं। आपके लिए ऐसी औरतों से दूर रहनाबेहतर होगा– जैसाकि आपको उनसे धोखा मिल सकता है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (25:11:1998 से 28:01:1999)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको भूमि प्राप्त हो सकती है या आप उसे बेचकर लाभ कमा सकते हैं। आपकोजनता से सम्मान मिलेगा। महिला समुदाय से आपको घृणा हो सकती है– मुख्यतः उन महिलाओं की संदेहास्पद प्रकृति के कारण, जिनके साथ आपके नजदीकी संबंध हैं।

राहु प्रत्यंतर्दशा (28:01:1999 से 11:07:1999)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह दशा मिली–जुली होगी। आपको विभिन्न स्रोतों से आय प्राप्त होगी, लेकिन ऐसीसारी आय विलास और अवांछित कार्यों में व्यय हो सकती है। आपके जीवनसाथी और माता–पिता से संबंध मधुर नहीं हो सकते हैं। राहु–शुक्र–चंद्रमा की दशा के दौरान शारीरिक और अन्य ऐंद्रिय सुखों की प्राप्ति में अति लिप्ता इस दशा के दौरान खतरनाक साबित हो सकती है, अर्थात ऐसे कामों का फल आपको इस दशा में मिलेगा।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (11:07:1999 से 04:12:1999)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपका विवाह हो सकता है और आपको संतानों की प्राप्ति हो सकती है। आप भूमि या भवन या दोनों खरीदेंगे। आपके पास प्रचुर मात्रा में भोजन उपलब्ध रहेगा। आपको सभी सुखों का आनन्द प्राप्त होगा। आपको अपने पद और अधिकार के कारण विभिन्न प्रकार के आनन्द प्राप्त होंगे। संबंधीआपकी हर संभव मदद करेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (04:12:1999 से 26:05:2000)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यदि व्यय में सावधानी बरती गयी, तो आय व्यय से अधिक होगी। आप धन, बर्तन, आभूषण का संग्रह करेंगे और इस पूरी प्रत्यंतर्दशा में आनन्द प्राप्त करेंगे। आप अपने नजदीकी संबंधियों कोहर संभव सहायता प्रदान करेंगे। हालाँकि, आपके घरेलू मामलों में बाहरी दखल हो सकता है, जिससे आपकी नींद उड़ सकती है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (26:05:2000 से 28:10:2000)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक उत्तम दशा होगी। सभी कार्य सहज रूप से संपन्न होंगे। आपका विवाह हो सकता है और आपको पदोन्नति मिल सकती है। आपका व्यापार समृद्ध होगा। विदेशी स्रोतों से आपको आय प्राप्तहोगी। आपको आँख और नाक के रोग हो सकते हैं। आप रोजगार या व्यापार में बदलाव कर सकते हैं। आप भूमि और भवन खरीदेंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (28:10:2000 से 31:12:2000)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपको भूमि और संपत्ति, अधिकार और शक्ति प्राप्त हो सकती है। आप अपनी रूचिके बहुआयामी कामों में रत रहेंगे। आपको उपहारों या पदकों के साथ सम्मान मिलेगा। आपका विवाह हो सकता है और/या आपको संतान की प्राप्ति हो सकती है।

सूर्य अर्न्तदशा (31:12:2000 से 25:11:2001)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। आपको अधिकारियों से धमकी मिल सकती है। शत्रु आपके लिए बहुत परेशानी पैदा कर सकते हैं। आप नेत्र रोग से पीड़ित हो सकते हैं। आपको जहरीले प्रभाव, हथियारों से चोट और उपचार में भारी खर्चों का सामना करना पड़ सकता है। आपके जीवनसाथी और संतान विभिन्न रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। आपको सूर्य मंत्रका जाप और सूर्य नमस्कार (उगते और डूबते सूर्य के सामने साष्टांग दण्डवत) तथा अपने सामर्थ्य के अनुसार वस्तुओं का दान करना चाहिए।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (31:12:2000 से 17:01:2001)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपको कफ की शिकायत हो सकती है। स्वास्थ्य की बेहतरी के लिए आपको तेल के सेवन में नियंत्रण रखना चाहिए। सुबह खाली पेट कुछ तुलसी की पत्तियों का सेवन करना चाहिए। आपको तुलसी के पौधे को पानी देना चाहिए।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (17:01:2001 से 13:02:2001)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपका विवाह हो सकता है। आपके धन में बढ़ोत्तरी होगी। आप भूमि और भवन खरीदेंगे या आपको विरासत में मिलेंगे। आपको वाहन का सुख प्राप्त होगा। विभिन्न स्रोतों से आय होगी और आपको संतान की प्राप्ति हो सकती है। आपके सुशील लोगों से संबंध होंगे। आप एक स्वस्थ जीवन व्यतीत करेंगे या आपको रोगों से राहत मिलेगी।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (13:02:2001 से 04:03:2001)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के परिणाम मुख्यतः मंगल की स्थिति पर निर्भर करेंगे। यदि मंगल उत्तमस्थिति में है, तो आपको भूमि और घर का लाभ, सहोदरों से आराम और खुशी तथा उनको संपन्नता और व्यवसाय या नौकरी आदि से लाभ प्राप्त होगा।

राहु प्रत्यंतर्दशा (04:03:2001 से 23:04:2001)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस दशा में प्रथमार्द्ध में आपको धन की भारी हानि हो सकती है। आपको अनावश्यक डर और रक्त विकार हो सकता है, आपको बहुत सारे बुरे सपने आ सकते हैं। दूसरे भाग में विषम परिस्थिति में पूर्ण परिवर्तन हो जायेगा और आप उत्तम दशा का आनन्द प्राप्त करेंगे। अप्रत्याशित क्षेत्रों से आपको धन लाभ होगा और मित्रों तथा संबंधियों से मदद मिलेगी।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (23:04:2001 से 06:06:2001)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको बेहतर परिणाम प्राप्त होंगे। आपका सम्मान बढ़ेगा, खाद्यान्न में बढ़ोत्तरी होगी, संतान का जन्म होगा, आपकी कामनायें पूरी होंगी और आपको उत्तम वस्त्रों और आभूषणों का लाभ मिलेगा। आप मंत्रणाओं में उत्तम स्थिति का आनन्द प्राप्त करेंगे, साधुजनों, बड़ों और संबंधियों की संगति का सुख प्राप्त करेंगे। आपको कान और फेफड़ों के रोग हो सकते हैं।

शनि प्रत्यंतर्दशा (06:06:2001 से 28:07:2001)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपके शत्रु परास्त होंगे। आप शुभ समारोहों में भाग लेंगे। हालाँकि, आपकी आय बहुत सीमित होगी। आपको धन हानि और विभिन्न प्रकार के रोग हो सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (28:07:2001 से 12:09:2001)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको भूमि और संपत्ति, अधिकार और शक्ति प्राप्त हो सकती है। आप अपनी रूचि के बहुआयामी कामों में रत रहेंगे। आपको उपहारों या पदकों के साथ सम्मान मिलेगा। आपका विवाह हो सकता है और/या आपको संतान की प्राप्ति हो सकती है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (12:09:2001 से 01:10:2001)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। पिछली कुछ दशाओं में आपने अब तक जिन कुछ हद अनुकूल परिणामों का आनन्दप्राप्त किया है, वे इस दशा में समाप्त हो सकते हैं। आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है। ऋणदाता आपको परेशान कर सकते हैं। आय से व्यय अधिक होने के कारण आपको धन उधार लेना पड़ सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (01:10:2001 से 25:11:2001)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की

प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको भूमि और सम्पत्ति, अधिकार और शक्ति प्राप्त हो सकती है। आप अपनी रूचि के बहुआयामी कामों में रत रहेंगे। आपको उपहारों या पदकों के साथ सम्मान मिलेगा। आपका विवाहहो सकता है और या आपको संतान की प्राप्ति हो सकती है।

चन्द्रमा अन्तर्दशा (25:11:2001 से 26:05:2003)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा मिश्रित परिणामों को दर्शायेगी। एक तरफ आपको अपने जीवनसाथी से कुछ निश्चित समय पर सुख मिलेगा और दूसरी तरफ आप अपने जीवनसाथी के साथ बेतुके मामलों में प्रायः झगड़ा करने को बाध्यहो सकते हैं। प्रेम और नफरत का साथ–साथ अनुभव होगा। आय की प्राप्ति होगी, लेकिन खर्च भी बढ़ सकते हैं। आपको मानसिक शांति का अभाव हो सकता है। अपने लोगों के साथ झगड़े के कारण आपको बहुत दुख का अनुभव हो सकता है। माता का स्वास्थ्य आपको परेशान कर सकता है। आपको मवेशियों और कृषि भूमि की हानि हो सकती है। आपको पानी से बहुत सावधान रहना चाहिए। आपको देवीदुर्गा को सफेद पुष्प अर्पित करने चाहिए।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (25:11:2001 से 10:01:2002)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके घर पर शुभ समारोह आयोजित होंगे। आपके सहोदरों का विवाह हो सकताहै। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपको पदोन्नति प्राप्त होगी। हालाँकि, यदि आप व्यापारी हैं, और यदि आपके व्यापार का संबंध चंद्रमा या राहु की वस्तुओं से नहीं है, तो आपको लाभ प्राप्त नहीं हो सकता है। आप फेफड़े के रोगों और तपेदिक से ग्रसित हो सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (10:01:2002 से 11:02:2002)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप रक्त की खराबी के कारण होने वाले विकारों, चिंता, कफ से ग्रसित हो सकतेहैं। आग, विद्युत और अन्य गर्म चीजों से आपको खतरा हो सकता है। आपको चोरों और शत्रुओं के कारण धन हानि हो सकती है। अपने कार्य क्षेत्र में भी आप असफल हो सकते हैं। दंड या आपके द्वारा किये गये गबन के अपराध के कारण आपका स्थानान्तरण या पदावनति हो सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (11:02:2002 से 04:05:2002)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके राहु के कारक संबंधियों को कष्ट हो सकता है और आपको उनके उपचार में धन व्यय करने को बाध्य होना पड़ सकता है। जलीय उत्पादों से आपको भोजन विषाक्तता की संभावनाहै। आप अनजाने में कई बुरे और गलत काम कर सकते हैं और बाद में उनके लिए प्रायश्चित करसकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (04:05:2002 से 16:07:2002)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप धार्मिक सिद्धान्तों का पालन करेंगे और भिक्षा बांटेंगे। आपकी उत्तम वस्त्रों और आभूषणों को पाने में अधिक रूचि होगी। आपको विभिन्न स्रोतों से धन प्राप्त होगा और संतान सम्पन्न होंगी। संतान आपको खुशियों प्रदान करेंगी। आपका रूझान वाहन प्राप्त करने में हो सकता है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (16:07:2002 से 10:10:2002)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको संबंधियों के कारण दुखों और खतरों का सामना करना पड़ सकता है। आप, आपके जीवनसाथी, संतान और आपके माता–पिता एक साथ विभिन्न रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। उपचार में भारी धन व्यय हो सकता है। आप विभिन्न उपचारीय तरीके अपना सकते हैं और धन बर्बाद करसकते हैं। ऐसा करने पर भी राहत न प्राप्त कर पाने के कारण आप पूरी तरह से निराश हो सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (10:10:2002 से 27:12:2002)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशा में आपने जिन दुखों और परेशानियों का सामना किया है, उनसे आपको थोड़ी राहत मिलेगी। आपको निरन्तर धन प्राप्त होगा और आप उत्तम परिधान, आभूषण और नये मवेशी प्राप्त करेंगे। कृषि उत्पादों से आपको उत्तम आय प्राप्त होगी। आपके नाम और यश में वृद्धि होगी। नये प्राप्त ज्ञान और शिक्षा के द्वारा आप संपन्न होंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (27:12:2002 से 28:01:2003)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके प्रियजनों को निराशा का सामना करना पड़ सकता है। आपको धन हानि हो सकती है। आप विभिन्न धार्मिक कार्यों में रत रहेंगे और भारी मात्रा में धन व्यय करेंगे। आपको जल याजलीय उत्पादों से खतरा हो सकता है। आपको ऐसे व्यापार से दूर रहना चाहिए, जहाँ द्रव रसायन का प्रयोग होता हो।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (28:01:2003 से 29:04:2003)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। इस दशा में आप निवेशों और अपने मौजूदा व्यवसाय या गतिविधियों के विस्तार के बारे में सोच सकते हैं। तीनों ग्रहों या उनमें से किसी एक की दुर्बलता की कोटि चाहे जो कुछ भी हो, आपको कोई अति अशुभ परिणाम नहीं मिलेंगे। दूसरी तरफ आप बहुत आराम महसूस करेंगे और अनुकूल परिणामों का आनन्द प्राप्त करेंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (29:04:2003 से 26:05:2003)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक विवादपूर्ण दशा हो सकती है। इस दशा के परिणामों का आंकलन करना बहुत कठिन है– जैसाकि परिणाम इन तीनों ग्रहों के कार्यों पर निर्भर करेंगे। ये तीनों ग्रह भिन्न परिणाम प्रदर्शित करेंगे, अर्थात यदि एक ग्रह बली है, तो वह शुभ परिणाम देगा, यदि कोई कमजोर है, तो यह अतिअशुभ परिणाम प्रदान करेगा। दूसरे शब्दों में आप अति शुभ और अति अशुभ परिणामों का आनन्द एक साथ प्राप्त करेंगे।

मंगल अर्न्तदशा (26:05:2003 से 13:06:2004)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है। शत्रुओं, आग, हथियारों आदि के कारण आपको खतरा हो सकता है। सरकारी अधिकारी और चोर आपको मानसिक तनाव दे सकते हैं। आप विभिन्न रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (26:05:2003 से 18:06:2003)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अशुभ दशा हो सकती है। आपका दिमाग विरोधाभासी और शंकालु विचारों से पूर्ण हो सकता है। किसी भी मामले में आप किसी निर्णय पर नहीं पहुंच सकते हैं। सभी मामले अनिर्णीत और अधूरे रह सकते हैं। आपको दुर्घटनाओं में चोट लग सकती है और चर्म रोग हो सकते हैं।

राहु प्रत्यंतर्दशा (18:06:2003 से 14:08:2003)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। चूंकि राहु परिणाम प्रदान करने का काम करेगा, अतः आपको बहुत आवश्यक धन का लाभ होगा, लेकिन अनैतिक गतिविधियों के द्वारा। मंगल ऐसे अनैतिक कामों में दखल देने की कोशिश करेगा और आपकी प्रगति को बाधित कर सकता है अर्थात आपके जीवनसाथी या माता–पिता ऐसे कार्यों का विरोध कर सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (14:08:2003 से 04:10:2003)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी आय निरन्तर बनी रहेगी और आपको हर काम में सफलता मिलेगी। अजनबी लोग भी आपको धन और अन्य वस्तुयें प्रदान करेंगे। पिछली दशा की तुलना में आपको अधिक संतोष प्राप्त होगा। हालाँकि, बेतुकी बातों पर आपकी बहस करने की प्रवृत्ति आपको मुश्किल में डाल सकतीहै।

शनि प्रत्यंतर्दशा (04:10:2003 से 04:12:2003)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा उत्तम नहीं हो सकती है। आपका रूझान विदेश यात्रा पर जाने का हो सकता है, जहां आपको विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपको बुखार, हार्निया और आँखों के रोगों की शिकायत हो सकती है। आपको हर समय ऐसा महसूस हो सकता है, कि आपकी किसी भी समय मृत्यु हो सकती है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (04:12:2003 से 27:01:2004)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशाचल रही है, जिसकी अवधि 1 मास, 23 दिन, 13 घंटे और 12 मिनट होगी। आपके रोजगार या व्यापार में धीरे–धीरे प्रगति शुरू हो जायेगी। काफी अप्रत्याशित रूप से कई मिलने वाले लोग आयेंगे। आपऔर आपका परिवार उनकी संगति में एक सुखद समय व्यतीत करेंगे। आपको अप्रत्याशित रूप से कोईउपहार मिल सकता है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (27:01:2004 से 19:02:2004)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा अनिश्चितताओं से पूर्ण हो सकती है। आपको मिले–जुले (अति शुभ औरअति अशुभ) परिणाम प्राप्त होंगे। संबंधी और मित्र आपके घरेलू मामलों में दखल देने की कोशिश कर सकते हैं। आपकी आय से व्यय अधिक हो सकते हैं। आपके सगे भाई बहन सम्पत्ति के मामले में समस्यायेंपैदा करने की कोशिश कर सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (19:02:2004 से 23:04:2004)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक बहुत आनन्ददायक दशा होगी। जुए और अन्य सट्टों में आपको सफलतामिलेगी। हालाँकि, ऐंद्रिय सुखों की प्राप्ति में आपकी रूचि अधिक होगी और आप ऐसे सुखों पर भारी धन व्यय करेंगे। आप इस प्रत्यंतर्दशा के आरम्भ में जो कुछ प्राप्त करेंगे, वह इस दशा के अन्त में समाप्त हो सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (23:04:2004 से 12:05:2004)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। राजनीति से जुड़े लोगों, मंत्रियों और अन्य नौकरशाहों के लिए यह एक बहुत उत्तम दशा होगी। आपको निवेश के मामले में तत्काल निर्णय करना चाहिए। यदि आप ऐसा करेंगे, तो आपको बहुत अधिक लाभ होगा। विद्यार्थियों के लिए भी यह एक बहुत उत्तम दशा होगी।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (12:05:2004 से 13:06:2004)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। चंद्रमा आपको मानसिक शांति प्रदान करेगा, लेकिन राहु उसमें व्यवधान डालने की कोशिश कर सकता है। मित्र और संबंधी एकत्र होंगे और आपकी हर संभव सहायता करेंगे। आपके सगे भाई–बहन भी आपसे सहानुभूति रखेंगे और आपकी मदद करेंगे।

गुरू दशा (13:06:2004 से 13:06:2020)

वर्तमान समय में आपकी बृहस्पति की महादशा चल रही है और बृहस्पति आपकी कुण्डली में पांचवें भाव में स्थित है। बृहस्पति की दशा के दौरान, आपको संतान का सुख मिलेगा। आपके प्रेम प्रसंग फलित होंगे। आप संतानों और प्रेमिका के द्वारा धन प्राप्त करेंगे। एक डॉक्टर, रसायनज्ञ, कम्पाउन्डर के रूप में आप उत्तम आय प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप सरकारी सेवा में हैं, तो आपकी पदोन्नति हो सकती है। पुत्र कीपरीक्षाओं और अन्य क्रियाकलापों में सफलता आपको प्रसन्नता प्रदान करेगी। आपकी कुण्डली में पांचवां भाव मकर या कुम्भ का है और बृहस्पति के वहां पर स्थित होने पर आपको संतान की प्राप्ति नहीं हो सकती है।

वर्तमान समय में आपकी बृहस्पति की महादशा चल रही है और बृहस्पति आपकी कुण्डली में मकर राशि मेंस्थित है। बृहस्पति की अपनी दशा के दौरान, आप दूसरों के लिए काम करेंगे, आपका अपने नजदीकी और प्रियजनों से अलगाव हो सकता है, आप गुप्त रोगों से ग्रसित हो सकते हैं, आपको धन की भारी हानिहो सकती है। कम उम्र में बाल सफेद हो जाने से आप काफी उम्रदराज दिख सकते हैं।

गुरू अन्तर्दशा (13:06:2004 से 01:08:2006)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए बहुत उत्तम साबित होगी। आपको उचित कोटि का उत्तम भाग्य, भारीसम्मान और विकसित उत्कृष्ट गुण प्राप्त होंगे। आपको एक पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। आपको सरकार की तरफ से पहचान मिल सकती है। विद्वान, उपदेशकों और दूसरे धर्मपरायण लोगों से आपको मिलने के अवसर प्राप्त होंगे। आपके उत्साह और शारीरिक जीवनशक्ति में निरन्तर बढ़ोत्तरी होगी। आपके शरीर और दिमाग दोनों में एक विशिष्ट प्रकार की शांति और सौम्यता विद्यमान होगी। आपके परिवार में कई वैवाहिक समारोह आयोजित होंगे। आपको पत्नी सुख और संतानों– विशेषकर पुत्रों– से खुशियां मिलेंगी। आपके सभी कार्य बहुत सहजता के साथ पूर्ण होंगे। आपकी आय में बढ़ोत्तरी होगी और कोष धनसे पूर्ण रहेंगे। यदि बृहस्पति कमजोर भी है, तो भी आप इस अन्तर्दशा के दौरान कुछ लाभकारी परिणामों का आनन्द अवश्य ही उठायेंगे।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (13:06:2004 से 25:09:2004)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस प्रत्यंतर्दशा के परिणाम बृहस्पति की स्थिति पर निर्भर करेंगे। इसके दौरान आपको सुखद परिणाम प्राप्त होंगे। आपके घर में कोई शुभ समारोह आयोजित होगा। आपका विवाह भी होसकता है। यदि आप नौकरी कर रहे हैं। तो आप पदोन्नति की आशा कर सकते हैं और यदि व्यापार कर रहे हैं, तो आपको लाभ प्राप्त होगा।

शनि प्रत्यंतर्दशा (25:09:2004 से 27:01:2005)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस प्रत्यंतर्दशा के दौरान आपकी आय व्यय से कम हो सकती है। आपमें असुरक्षाकी भावना जन्म ले सकती है। आप नशे के आदी हो सकते हैं। परिवार के सदस्यों के साथ प्रायः आपका झगड़ा हो सकता है। अपने परिवार में बुरी छवि होने के बावजूद भी आपको समाज में नाम और यश मिलेगा। संतान का स्वास्थ्य आपकी चिन्ता का कारण हो सकता है। आपको अपने घर के बाहर अधिक खुशी मिलेगी।

बुध प्रत्यंतर्दशा (27:01:2005 से 17:05:2005)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली प्रत्यंर्दशा में किये गये उत्तम कार्यों का परिणाम आपको इस प्रत्यंर्दशा में मिलेगा। आपको अपने उद्देश्यों में आसानी से सफलता मिलेगी। आपको ईश्वर की भरपूर कृपा प्राप्त होगी। आप प्रायः विदेशों की यात्रायें कर सकते हैं और उनसे धन अर्जित कर सकते हैं। आपको पानी से सावधान रहना चाहिए।

केतु प्रत्यंतर्दशा (17:05:2005 से 02:07:2005)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस प्रत्यंतर्दशा के दौरान आपके जीवनसाथी और संतान को कष्ट हो सकता है। आपको बहुधा रोगों और अपने सभी कामों में असफलता का सामना करना पड़ सकता है। आपको हथियारोंया वाहन दुर्घटना के कारण कोई चोट लग सकती है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (02:07:2005 से 08:11:2005)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह प्रत्यंतर्दशा बहुत उत्तम होगी, आपको दशा के शुरू में धन, नाम, सम्मान मिलेगा, लेकिन अचानक सब प्राप्तियां लुप्त हो सकती हैं। आप धार्मिक आराधना में अधिक रूचि लेंगे और इस कारण आप विभिन्न तीर्थों की यात्रायें करेंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (08:11:2005 से 17:12:2005)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। राजनीतिज्ञों और नौकरी करने वाले लोगों के लिए यह प्रत्यंतर्दशा अति उत्तम है। यदि आप राजनीति में हैं, तो एक महत्वपूर्ण पद प्राप्त करेंगे और यदि नौकरी कर रहें हैं, तो आपकी पदोन्नति होगी। आपकी शक्ति और अधिकार में वृद्धि होगी। आपको सरकारी समर्थन मिलेगा तथा विभिन्न समारोहों और आयोजनों में शामिल होने का आप निमंत्रण पायेंगे।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (17:12:2005 से 20:02:2006)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह प्रत्यंतर्दशा आपके लिए शांतिपूर्ण और आनन्ददायक होगी। आप युवा लड़कियों से सम्पर्क बनायेंगे और उनसे आनन्द प्राप्त करेंगे या घनिष्ठता बढ़ायेंगे, किन्तु आपको इससेपरेशानियां हो सकती हैं। आपके शत्रु पीछे हट सकते हैं या आपके मित्र बन सकते हैं। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपको अधिक महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां मिलेंगी।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (20:02:2006 से 07:04:2006)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अपने मित्रों और संबंधियों के साथ–साथ अपने शत्रुओं से भी धन प्राप्त होगा। आपको भूमि और भवन की प्राप्ति होगी। आपको अपनी आँखों की उचित देखभाल करनी चाहिए। आप तीव्र सिरदर्द, बवासीर और गुदा के आस–पास खुजली से ग्रस्त हो सकते हैं। निवेश के लिए यह सबसे उत्तम समय है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (07:04:2006 से 01:08:2006)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस प्रत्यंतर्दशा में परिणामों की प्रकृति में बहुत बदलाव आ सकते हैं। आपके संबंधीआपकी व्यापारिक प्रगति में बाधायें खड़ी कर सकते हैं। आप अपना निवासस्थान बदल सकते हैं। आपको त्वचा रोग हो सकता है। शत्रु आपको परेशान करने की कोशिश कर सकते हैं। घरेलू मामलों या व्यापार में उनका दखल सहने योग्य नहीं होगा।

शनि अर्न्तदशा (01:08:2006 से 12:02:2009)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। मलिन/चरित्रहीन औरतों के साथ संबंध रखने के कारण आपको विभिन्न प्रकार के यौन रोग हो सकते हैं।आपको नशे की लत लग सकती है। आपके परिवार के सदस्यों के बीच संबंध मधुर नहीं हो सकते हैं। हालांकि, उत्तम कार्यों के कारण आपको नाम और यश प्राप्त होगा। आपकी आय व्यय से कम होगी। आपके दिमाग में किसी प्रकार का भय व्याप्त हो सकता है। आप संतानों की असुरक्षा की भावना से ग्रस्त हो सकते हैं। आपकी कुण्डली में शनि की अनुकूल या प्रतिकूल चाहे जो भी प्रकृति हो, वह केवल अपने

अन्तर्निहित गुण को ही प्रदर्शित करेगा। हालांकि, उसके किसी भी अशुभ प्रभाव को दशा का स्वामी बृहस्पति नियंत्रित करेगा।

शनि प्रत्यंतर्दशा (01:08:2006 से 26:12:2006)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको महिला समुदाय से कष्ट हो सकता है। आपका अपने से उम्र में बड़ी महिला के साथ घनिष्ठ संबंध हो सकते हैं। आप बुखार, वायु या कफ विकार, लकवा, आतों में दर्द आदि से पीड़ित हो सकते हैं। संबंधियों से भी आपको कष्ट हो सकता है। आप भारी मानसिक व्यथा से ग्रस्त होसकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (26:12:2006 से 06:05:2007)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह अति उत्तम दशा है और लगभग 90प्रतिशत लोग इस दशा के प्रभाव में हैं। अपने खोये हुए धन और संपत्ति को प्राप्त करने का यह वास्तविक समय है। निवेश करने और भूमि व भवनखरीदने के लिए यह सबसे उत्तम समय है। यदि आपने इस दशा के दौरान कुछ प्राप्त नहीं किया, तोजीवन भर आप कुछ नहीं प्राप्त कर सकते हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (06:05:2007 से 29:06:2007)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि आपने अपनी मौज–मस्ती और खर्चों पर नियंत्रण नहीं रखा तो पिछली दशा में प्राप्त हर चीज इस दशा के दौरान बर्बाद हो सकती है। आप कई रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (29:06:2007 से 30:11:2007)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह अपने दोषों और कमजोरियों को अहसास करने का समय है। आप उपद्रवी परिस्थितियों से धीरे–धीरे उपर उठेंगे। इस दशा के अन्त में आप अपने नुकसान की भरपाई करेंगे। शनि और शुक्र से संबंधित व्यापार इस दशा के दौरान लाभकारी होगा। आपको औरतों से सावधान रहना चाहिए। वे अपने लाभ के लिए केवल आपकी मित्र बनेंगी।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (30:11:2007 से 15:01:2008)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशा में की गयी गलती का प्रभाव आपको विषम परिणामों के रूप में इस दशा में देखने को मिल सकता है। आपकी अवनति का कारण एक महिला हो सकती है, जिसके साथ आपके घनिष्ठ संबंध रहे हैं। यदि आप राजनीति से जुड़े हैं, तो आपको आशावान होना होगा। आपको कोईनया गठजोड़ बनाना चाहिए या अपने सहकर्मियों का विरोध करना चाहिए।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (15:01:2008 से 01:04:2008)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके जीवनसाथी, संतान और माता–पिता को खतरा हो सकता है। आपको मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है। ऐसा प्रतीत होता है कि आपकी सारी योजनायें सफल होंगी। लेकिन अचानक सम्पूर्ण तंत्र और विचार असफल हो सकते हैं और आपको धन का भारी नुकसान हो सकता है। ऐसे में केवल ईश्वर आपकी रक्षा कर सकता है। अतः आपको पूरी तरह से अपने को भगवान की उपासना में समर्पित कर देना चाहिए।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (01:04:2008 से 25:05:2008)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी आर्थिक दशा बहुत उत्तम होगी, लेकिन आपको परिवार में एक के बाद

एक कई आघातों का सामना करना पड़ सकता है। संबंधी आपको बहुत नुकसान पहुंचाने की कोशिश कर सकते हैं। आप लम्बी यात्रायें करेंगे और धन प्राप्त करेंगे।

राहु प्रत्यंतर्दशा (25:05:2008 से 12:10:2008)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा कुछ हद तक थकाने वाली हो सकती है। कर्जदार आपको परेशान कर सकते हैं। आपके कई लालसापूर्ण विचार हो सकते हैं। आपका सबसे सभी स्तर पर मतभेद हो सकता है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (12:10:2008 से 12:02:2009)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक लाभप्रद दशा होगी। पहले शुरू की गयी किसी योजना में आपको सफलता मिलेगी। हालाँकि, आपको जीवनसाथी का सुख नहीं मिल सकता है। वह आपकी प्रगति में बाधा बन सकती हैं। आपको अपने दिमाग से निर्णय लेना चाहिए।

बुध अर्न्तदशा (12:02:2009 से 20:05:2011)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। आपको ईश्वरीय कृपा प्राप्त होगी। आप अपने उपक्रमों में आसानी से सफलता प्राप्त करेंगे। प्रतियोगिताओं में अगर भाग ले रहे हैं, तो आप उनमें अपनी सफलता का परचम लहरायेंगे। समग्र रूप से यह अन्तर्दशा आपके जीवनसाथी और संतान के लिए उत्तम होगी। मित्र आपकी मदद के लिए आगे आयेंगे। यदि आप हिन्दु हैं, तो आपको अपने कुटुम्ब के भगवान और अग्नि देवता की पूजा करनी चाहिए। आप उत्तम कार्यों को करने में रूचि लेंगे। आप सम्पन्न होंगे तथा आपको वाहनों का लाभ प्राप्त होगा। आप निरन्तर विदेशों की यात्रा करेंगे। आपको पानी से सावधान रहना चाहिए। आप सिर से संबंधित किसी रोग से पीड़ित हो सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (12:02:2009 से 09:06:2009)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आप अपने पेशे या व्यापार में बदलाव कर सकते हैं। आपको जुए की लत लग सकती है और आप अपना धन गवाँ सकते हैं। हालाँकि विभिन्न स्रोतों से आप धन अर्जितकरेंगे और मौज-मस्ती के लिए उसको खर्च कर सकते हैं। अपने जीवनसाथी और संतान के कारण आप चिन्तित हो सकते हैं। आपको गले में विकार, कफ और सर्दी की शिकायत हो सकती है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (09:06:2009 से 28:07:2009)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह अनिश्चितताओं से भरी दशा है। आप गैरमैत्रीवत और दुष्ट प्रकृति के लोगों सेघिर सकते हैं। आपको जुए की लत लग सकती है और आप अपना धन गवाँ सकते हैं। आपको एक पीड़ादायक और दुखी जीवन व्यतीत करना पड़ सकता है। आप मिर्गी या उन्माद से ग्रस्त हो सकते हैं। जीवनसाथी और संतान आपकी देखभाल करने से विमुख हो सकते हैं। आपको असीमित पाप कर्म करने परबाध्य होना पड़ सकता है। कोई दुष्ट शक्ति इसके लिए जिम्मेदार हो सकती है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (28:07:2009 से 12:12:2009)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप पाप से युक्त गतिविधियों से बाहर निकलने की कोशिश कर सकते हैं, आप ईश्वर के मदद की कामना कर सकते हैं और उसकी अराधना में लगे रहेंगे। अन्ततः आप ऊँचे स्तर का ज्ञान प्राप्त करेंगे और अपने पापों से मुक्त होंगे। आप अपने परिवार के साथ स्वादिष्ट भोजन का आनन्द प्राप्त करेंगे। जीवनसाथी और संतान आपका समर्थन करेंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (12:12:2009 से 23:01:2010)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की

प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह दशा सबसे उत्तम मानी जाती है। आपकी सभी महात्वाकांक्षायें पूरी होंगी। आपको बिना अधिक प्रयास के प्रत्येक चीज मिलेगी। आपको रोगों से मुक्ति मिलेगी। आपके जीवनसाथी, संतान, संबंधी और मित्र आपके उत्तम कार्यों की प्रशंसा करेंगे और आपको खुला सहयोग देंगे।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (23:01:2010 से 02:04:2010)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक उत्तम दशा होगी। ये तीनों ग्रह बृहस्पति, बुध और चंद्रमा किसी व्यक्ति केद्वारा सफलता प्राप्त करने के लिए तीन मूल जरूरतों, क्रमशः ज्ञान, बुद्धिमता और दिमाग की शुद्धता को व्यक्त करते हैं। जब दशा इनसे संबंधित होती है, तो कोई भी दुष्ट शक्ति आपको सफलता प्राप्त करने से नहीं रोक सकती है– जैसाकि आप इसकी जानकारी पाकर पहले से तैयारी कर सकेंगे। आप कोई भी काम करने के लिए स्वतंत्र होंगे। आपकी सफलता निश्चित है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (02:04:2010 से 20:05:2010)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको काफी संघर्षों और विवादों का सामना करना पड़ सकता है। लेकिन आप इस जीवन संघर्ष पर विजय प्राप्त कर लेंगे। आपके शत्रु परास्त होंगे। आप निडर होकर काम करेंगे और सफलता को प्राप्त करेंगे। हालाँकि, आपको अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए–जैसाकि विभिन्न कामों में बहुत अधिक व्यस्तता आपके स्वास्थ्य पर अंततः बुरा प्रभाव डाल सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (20:05:2010 से 21:09:2010)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी आय उत्तम होगी और आप अपने खोये हुए पद और धन को पुनः प्राप्त करेंगे। आपको समाज के लिए किये गये अपने उत्तम कार्य के लिए प्रशंसा मिलेगी, आप पर ईश्वर की प्रचुर कृपा रहेगी।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (21:09:2010 से 09:01:2011)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको लगभग अपने हर मामले में सफलता मिलेगी। यदि आपको कोई रोग है, तो आपको उससे पूरी राहत मिलेगी। आपको अपने उत्तम काम के लिए समाज में प्रशंसा प्राप्त होगी। ईश्वर की आप पर भरपूर कृपा होगी।

शनि प्रत्यंतर्दशा (09:01:2011 से 20:05:2011)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको मिश्रित फल प्राप्त होंगे। यद्यपि आपको विभिन्न स्रोतों से आय प्राप्त होगी, फिर भी नशे की लत और अन्य सुखों की प्राप्ति में रत रहने के कारण आपके खर्चे बढ़ सकते हैं। आप लेखन या प्रकाशन का काम कर सकते हैं। आपको विभिन्न रोगों से राहत मिलेगी।

केतु अर्न्तदशा (20:05:2011 से 25:04:2012)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। आपको हथियारों से खतरा हो सकता है। आप शरीर में फोड़ों की समस्या से ग्रसित हो सकते हैं। आपको नौकरोंके साथ गलतफहमी का शिकार होने और मानसिक रूप से व्यथित होने की संभावना है। आपके जीवनसाथी और संतानों को किसी तरह का कष्ट हो सकता है। कुण्डली में मौजूद अन्य प्रभाव के अनुसारआपका स्वास्थ्य खराब या बड़ों व मित्रों से अलगाव हो सकता है। आप दूरस्थ स्थानों की यात्रायें कर सकते हैं और आपको भारी तथा अपरिहार्य खर्चों का सामना करना पड़ सकता है। आपको केतु के अशुभ प्रभाव से बचने के लिए महामृत्युंजय मंत्र का जाप करना चाहिए।

केतु प्रत्यंतर्दशा (20:05:2011 से 09:06:2011)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको भवन और भूमि की प्राप्ति होगी। भूमि और अप्रत्याशित स्रोत से आप धन प्राप्त करेंगे। यदि आप संतानोत्पत्ति में सक्षम हैं, तो आपको भाग्यशाली पुत्र प्राप्त होंगे। आपका रूझान धार्मिक कार्यों में होगा।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (09:06:2011 से 05:08:2011)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको उत्तम जीवनसाथी का सुख नहीं प्राप्त हो सकता है। आप और आपके जीवनसाथी के बीच प्रायः विवाद हो सकते हैं। हालाँकि आपका वैवाहिक संबंध बना रहेगा। आप आर्थिक रूप से एक उत्तम दशा की आशा कर सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (05:08:2011 से 22:08:2011)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको सरकारी अधिकारियों के कारण परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आपको अपने परिवार के लोग नापसन्द कर सकते हैं और आप नीच लोगों की संगति में पड़ सकते हैं, जोआपको पथभ्रष्ट कर सकते हैं और आपका जीवन बर्बाद कर सकते हैं। आपके परिवार में किसी को मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है, जिससे आपके परिवार का वातावरण पूरी तरह से बदल सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (22:08:2011 से 19:09:2011)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। आपको अपनी प्रगति में कई सारी समस्याओं और बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। संतान के कारण आप चिन्तित हो सकते हैं। यदि आप अविवाहित हैं, तो इस दशा के दौरान आपके विवाह की संभावना है। यदि आपकी माता इस दशामें किसी संतान को जन्म देती हैं, तो आपकी माता को बहुत कष्ट हो सकता है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (19:09:2011 से 09:10:2011)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी आध्यात्मिक प्रगति होगी। आपकी आय काफी हद तक संतोषप्रद होगी, लेकिन व्यय का तरीका बहुत निकृष्ट हो सकता है। अतः यदि आपने सावधानी नहीं बरती तो आप सारा अर्जित धन खो सकते हैं। इस प्रत्यंतर्दशा के दौरान आपको गुदा रोग या बवासीर या पीलिया होने की संभावना है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (09:10:2011 से 29:11:2011)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के परिणाम मुख्यतः राहु की स्थिति पर निर्भर करेंगे। यदि राहु बली है, तो आपकी सभी महत्वाकांक्षायें पूरी होंगी। आपका व्यापार बहुत तेजी से फले–फूलेगा। आपको भूमि, भवन, वाहन और खुशहाल जीवन के लिए सभी आवश्यक चीजें प्राप्त होंगी। यदि राहु कमजोर है, तो परिणाम प्रतिकूल हो सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (29:11:2011 से 14:01:2012)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह प्रत्यंतर्दशा उत्तम होगी। आपके घर पर शुभ समारोह आयोजित होंगे। यदि आप अविवाहित हैं, तो आपका विवाह हो सकता है। आपको संतान की प्राप्ति होगी। आप परिक्षाओं में सफल होंगे। व्यापार में आपको लाभ मिलेगा। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको पदोन्नति प्राप्त होगी। आपको रोगों से छुटकारा मिलेगा।

शनि प्रत्यंतर्दशा (14:01:2012 से 08:03:2012)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपने अपने अधिकार से अधिक सुखों को प्राप्त कर लिया है। अतः आपको अत्यधिक सुखों का आनन्द प्राप्त करने की कीमत चुकानी पड़ सकती है। परिस्थितियां कुछ ऐसी बन सकती हैं, कि आप उनके आगे कुछ ना कर पाने को विवश हो सकते हैं। हर तरफ आपको हानि का सामना करना पड़ सकता है। आपके घर पर हर समय किसी को रोग बना रह सकता है। शत्रु आपको और आपके परिवार को लगातार परेशान कर सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (08:03:2012 से 25:04:2012)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आखिरकार आपको दैवीय मदद प्राप्त होगी। आपको ऋण और कर्जे से राहत मिलेगी। यह पूर्ण रूप से एक हानिरहित दशा होगी। यदि आपने अपने दिमाग का उचित प्रयोग किया तो आपके कार्य के हर क्षेत्र में प्रगति होगी। जीवनसाथी और संतान का आपको पूरा सहयोग मिलेगा। आपके विवाह और पदोन्नति की संभावना है।

शुक्र अन्तर्दशा (25:04:2012 से 25:12:2014)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशाके दौरान, आप धन संग्रह करेंगे तथा जीवनसाथी, संतान, संबंधियों और मित्रों से सुख एवं खुशियोंप्राप्त करेंगे। आपके मवेशियों की संख्या, अनाज के भंडार और सामान्य संपन्नता में वृद्धि होगी। आप धार्मिक मामलों में गहरी रूचि लेंगे। आप ईश्वर के संबंध में जानने के उत्सुक होंगे तथा इसके लिए धर्मपरायण एवं साधुजनों पर निर्भर रहेंगे। कुछ हद तक आप अपने उद्देश्य में सफल होंगे, अर्थात आप कुछ वास्तविक उपदेशकों के सम्पर्क में आयेंगे, जिनसे आप और अधिक ज्ञान प्राप्त करने में सफल होंगे। हालांकि, दैवीय उपदेशक के छद्म वेश में छिपे हुए लोगों से आपको धोखा भी हो सकता है। आपके शत्रुओं की संख्या बढ़ सकती है और बिना किसी कारण के प्रायः झगड़े हो सकते हैं। आपको महिलाओं केकारण अपमान का सामना करना पड़ सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (25:04:2012 से 05:10:2012)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। विभिन्न स्रोतों से आपको धन प्राप्त होगा। लेकिन इस आय का एक बड़ा भाग आपमौज–मस्ती और मनोरंजन में व्यय कर सकते हैं। आपको वाहन की प्राप्ति होगी। आप सभी नुकसानों की भरपाई करने और एक आनन्दपूर्ण जीवन जीने में सक्षम होंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (05:10:2012 से 23:11:2012)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक उत्तम दशा होगी। आप ऊँचे राजनीतिक पदों पर आसीन लोगों से लाभ प्राप्त करेंगे और उन लाभों की मदद से आप कोई लाभकारी व्यापार करने में सक्षम होंगे। हालाँकि, आपकोमहिलाओं से बहुत सावधान रहना चाहिए।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (23:11:2012 से 12:02:2013)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी आय से व्यय अधिक होगा। आप स्त्रियों के सम्पर्क में आ सकते हैं, जिन्हेंव्यापारिक या आर्थिक सलाह आदि के रूप में आपकी मदद की आवश्यकता हो सकती है। इस मदद के दौरान आपके साथ–साथ उनको भी लाभ होगा। इस दौरान आपके उनसे संबंध बन सकते हैं, जिससे आपके और आपके जीवनसाथी के बीच कलह उत्पन्न हो सकती है। आपको सिर, दांत, नाखून और उदर के रोग हो सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (12:02:2013 से 10:04:2013)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की

प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा गतिविधियों से पूर्ण होगी। आप व्यापार या व्यवसाय या नौकरी जो भी कर रहे होंगे, उसमें बहुत व्यस्त होंगे। इस कारण से आप अपने जीवनसाथी और संतान को समय नहीं दे पायेंगे। हालाँकि, आप उनको खुश करने के लिए प्रत्येक काम करेंगे, लेकिन वह सब बेकार जायेगा। वे आपकी समस्या को नहीं समझेंगे और आपसे अनावश्यक झगड़ा कर सकते हैं। आपको सम्मान मिलेगा। आपको रक्तचाप, बवासीर या पीलिया की शिकायत हो सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (10:04:2013 से 03:09:2013)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अज्ञात स्रोतों से अप्रत्याशित धन का लाभ होगा। आप खोई हुई सम्पत्ति प्राप्त कर सकते हैं। अब तक के अनसुलझे संपत्ति विवाद इस दशा के दौरान सुलझ जायेंगे और आप एक आरामदायक और खुशहाल जीवन व्यतीत करेंगे।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (03:09:2013 से 11:01:2014)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। भूमि और संपत्ति प्राप्त करने के लिए यह उत्तम समय है। आप अपनी गतिविधियों के क्षेत्र में आसानी से सफलता प्राप्त करेंगे। आपको कोई भी नयी योजना इस दशा के दौरान शुरू नहीं करनी चाहिए। आप केवल अपने मौजूदा व्यापार को विस्तृत या विकसित कर सकते हैं। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपके रोजगार में बदलाव हो सकता है और आपका वेतन बढ़ सकता है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (11:01:2014 से 14:06:2014)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके जीवन में प्रायः बदलाव होंगे। आपको अधिकतम शुभ परिणामों का आनन्द प्राप्त होगा।

बुध प्रत्यंतर्दशा (14:06:2014 से 30:10:2014)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा में आपको अति उत्तम परिणाम मिलेंगे। आपका या आपके भाई/बहन का विवाह हो सकता है। आपके घर में शुभ समारोह सम्पन्न होंगे। आपके संबंधी आपके हर प्रयास में मदद करेंगे। आप शत्रुओं को परास्त करेंगे। आप लेखन, प्रकाशन या ट्यूशन से आय प्राप्त कर सकते हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (30:10:2014 से 25:12:2014)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा आध्यात्मिक पहलू पर अधिक जोर देती है। इस दशा में नास्तिक भी आस्तिक हो जाता है। आप तीर्थस्थानों की यात्रा करेंगे। आप भविष्यवक्ताओं और तांत्रिकों से परामर्श करनेमें धन की बर्बादी कर सकते हैं। आपको अपने मित्रों से सावधान रहना चाहिए– जैसाकि वे आपके कामों का अनुमोदन करके आपको परेशानी में डाल सकते हैं।

सूर्य अन्तर्दशा (25:12:2014 से 13:10:2015)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशाके दौरान शत्रु पीछे हटेंगे। वे या तो अपनी गलती मानकर क्षमा मांग सकते हैं या हार कर भाग जायेंगे। आपकी शक्ति और अधिकार में बढ़ोत्तरी होगी और आपको सरकारी सम्मान प्राप्त होगा। आपको शाही समारोहों का आमंत्रण प्राप्त होगा। आपमें आत्मविश्वास की भावना का विकास होगा तथा आप साहसिक कार्यों को करके सफलता प्राप्त करेंगे। आप निरन्तर छोटी यात्रायें करेंगे एवं ज्ञान के कई नये क्षेत्रों को देखने और समझने के आपको अवसर मिलेंगे। आप अपने पहनावे में विशेष रूचि लेंगे, ताकि आप अधिक आकर्षक दिख सकें और अपने आस–पास के लोगों को आकर्षित कर सकें। हालांकि, आप अचानकअवनति का सामना कर सकते हैं और सरकारी अधिकारियों के द्वारा दंडित किये जा सकते हैं।

यह भी हो सकता है कि आप कस्बे में जाकर बस जायें और सुख तथा विलास का आनन्द प्राप्त करें। आपकी कुण्डली में सूर्य कमजोर है, आपको सरकार और शत्रुओं के कारण परेशानियां उठानी पड़ सकती है और आप अक्खड़ व असभ्य व्यवहार के कारण भारी धन हानि का सामना कर सकते हैं। अतः आपको सूर्य मंत्र का जाप और सूर्य नमस्कार (उगते और डूबते सूर्य के सामने साष्टांग दण्डवत) करना चाहिए।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (25:12:2014 से 09:01:2015)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा है। आपको सामान्य संपन्नता अवश्य प्राप्त होगी। आप भूमि, भोजन और वाहन प्राप्त करेंगे। परीक्षाओं में बैठने वाले विद्यार्थियों के लिए यह एक उत्तम दशा है। यदि आप बेराजगार हैं, तो आपको रोजगार मिलेगा। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपकी पदोन्नतिहोगी और यदि आप व्यापारी हैं, तो आप लाभ कमायेंगे। आप शत्रुओं को परास्त करेंगे।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (09:01:2015 से 02:02:2015)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपमें ज्ञान, अधिकार और बुद्धि का विकास होगा। यदि आप विवाहित हैं, तो ये आपके लिए उत्तम नहीं हो सकते हैं– जैसाकि आप और आपके जीवनसाथी के बीच ये गुण व्यक्तित्व मतभेद को जन्म दे सकते हैं। बाहरी लोग आपके विचारों और कार्यक्रमों का खुला समर्थन करेंगे, जबकि आपकी जीवनसाथी उनका विरोध कर सकती हैं और आपके व्यावसायिक भविष्य तथा अन्य मामलों में दखल दे सकती हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (02:02:2015 से 19:02:2015)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा आडम्बर और दिखावे की हो सकती है। आपको शक्ति और अधिकार अवश्य प्राप्त होंगे। लेकिन आप उनका गलत प्रयोग करके परेशानी में पड़ सकते हैं। आपको अपने प्रतिद्वन्दियों से बहुत अधिक सावधान रहना चाहिए। अन्यथा अगली दशा के दौरान आपको अपूर्णिय नुकसान हो सकते हैं। इन सबके बावजूद आप सफलता के साथ आगे बढ़ेंगे।

राहु प्रत्यंतर्दशा (19:02:2015 से 04:04:2015)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि आप लोगों पर नजर और उनसे दूरी बनाकर नहीं रखेंगे, तो आपके बहुत नजदीकी लोग आपको धोखा दे सकते हैं। आपको भारी धन हानि हो सकती है। रक्त की अशुद्धता के कारण आपको रोग हो सकते हैं। आपको अपने जीवनसाथी और संतान के कारण दुख हो सकता है। इस दुख के दो कारण हो सकते हैं– पहला उनकी बीमारी और दूसरा आपके साथ सामंजस्य रखने में उनका हठी रवैया।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (04:04:2015 से 13:05:2015)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के परिणाम बृहस्पति की स्थिति पर निर्भर करेंगे। यदि बृहस्पति शुभ है, तो आपको उसके सभी उत्तम परिणाम प्राप्त होंगे। दूसरे शब्दों में, आपके सम्मान में वृद्धि होगी, पुत्र की प्राप्ति होगी और आपको उत्तम वस्त्रों एवं धन का लाभ होगा।

शनि प्रत्यंतर्दशा (13:05:2015 से 28:06:2015)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको विरोधों का सामना करना पड़ सकता है। विचार, कार्यक्रम और अधिकारों का एक दूसरे के साथ टकराव हो सकता है। आपको किसी नयी योजना को स्थगित कर देना चाहिए– जैसाकि आपका अस्थिर दिमाग उसे बेकार कर सकता है। शत्रु आपको अधिकतम कष्ट पहुंचाने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन बहस्पति की कृपा के कारण आप उनको परास्त

करेंगे और सफलतापूर्वक परेशानियों से बाहर निकल आयेंगे।

बुध प्रत्यंतर्दशा (28:06:2015 से 09:08:2015)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके लाभ में वृद्धि होगी। आपको पदकों का सम्मान मिलेगा। आप भूमि, नया वाहन और अन्य सम्पत्तियां खरीदेंगे। आपका विवाह हो सकता है या आपको संतान की प्राप्ति हो सकती है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (09:08:2015 से 26:08:2015)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह दशा उत्तम नहीं हो सकती है। आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकताहै। आपके जीवन को खतरा हो सकता है। आपके आस–पास के लोग आपको धोखा दे सकते हैं और आपकी धन हानि के लिए जिम्मेदार हो सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (26:08:2015 से 13:10:2015)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके जीवन की गति धीमी और स्थिर हो सकती है। आपको ना तो कोई तनाव होगा और ना ही कोई खुशी। आपको कभी–कभी धन का लाभ होगा और आप महिलाओं पर एवं मनोरंजनमें धन व्यय कर सकते हैं। आपका विवाह हो सकता है। आप ईश्वर की पूजा में अपना समय व्यतीत कर सकते हैं।

चन्द्रमा अन्तर्दशा (13:10:2015 से 12:02:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा चल रही है। यह मुख्यतःआपके लिए आनन्द का समय है। आपको विभिन्न महिलाओं के साथ यौन सुख की प्राप्ति होगी या यदि आप शर्मीली प्रकृति के हैं, तो हो सकता है कि आप शारीरिक सुख ना प्राप्त कर सकें, लेकिन आपकारूझान ऐसे कार्यों की तरफ हो सकता है। कुछ मामलों में ऐसा देखने में आया है कि अत्यधिक शर्मीले प्रकृति के लोग, जो स्वयं पहल नहीं कर सकते हैं, विपरीत लिंग के लोग जानबूझकर यौन सुख काआनन्द लेने वाली परिस्थितियां तैयार कर देते हैं।

शत्रु फिलहाल पीछे हट सकते हैं या आपके मित्र बन सकते हैं। यदि आप सरकारी नौकरी कर रहे हैं, तो आपको पदोन्नति के साथ कोई महत्वपूर्ण पद या विभाग मिल सकता है। आपके ज्ञान में वृद्धि होगी। विपरीत लिंग के लोगों के प्रति आपके झुकाव के बावजूद आप अपने जीवनसाथी तथा संतान से प्रेम करेंगे एवं उनका ख्याल रखेंगे। आप सदा उनके साथ रहना चाहेंगे। यदि चंद्रमा आपकी कुण्डली में कमजोर भी है, तो भी आप इस अन्तर्दशा के दौरान कुछ लाभकारी परिणामों का आनन्द उठायेंगे।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (13:10:2015 से 23:11:2015)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह दशा आपके लिए शुभ और अति उत्तम होगी। आप धार्मिक परम्पराओं का अनुसरण करेंगे और भिक्षा बाटेंगे। आपकी सोच परिपक्व होगी और गलत सही में अन्तर करने का आपमें गुण विकसित होगा। आपको सरकार से समर्थन मिलेगा। विभिन्न स्रोतों से आपको धन कालाभ होगा और संतान संपन्न होंगी। संतान से सुख मिलेगा।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (23:11:2015 से 21:12:2015)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अशुद्ध रक्त, कफ, मानसिक वेदना, आग, विद्युत और अन्य गर्म वस्तुओं के कारण होने वाले विकारों से ग्रस्त हो सकते हैं। चोरों और शत्रुओं के कारण आपको धन की हानि हो सकती है। आपका स्थानान्तरण हो सकता है या आपको प्राप्त पद से आपकी अवनति हो सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (21:12:2015 से 04:03:2016)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। राहु आपसे कई बुरे काम करवाने की कोशिश करेगा, लेकिन बृहस्पति और चंद्रमा उन कामों पर नियंत्रण रखकर आपको बचायेंगे। हालाँकि, राहु आप पर हावी हो सकता है और सभी संभवविपदायें पैदा करने की कोशिश कर सकता है। आपको चर्म विकार और बवासीर होने की संभावना होसकती है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (04:03:2016 से 08:05:2016)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह आपके लिए अति उत्तम दशा होगी। आप गतिविधियों के प्रत्येक क्षेत्र में सही दिशा में काम करेंगे और किसी प्रकार की कोई बाधा नहीं आयेगी। लेखकों और प्रकाशकों के लिए यह सुनहरा अवसर साबित होगा। इस प्रत्यंतर्दशा के दौरान विद्यार्थियों को विभिन्न परीक्षाओं में सफलता अवश्यमिलेगी। साधुजनों से संबंध आपके विश्वास को बढ़ायेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (08:05:2016 से 24:07:2016)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। बृहस्पति और चंद्रमा आपको धन की प्राप्ति करायेंगे, जबकि शनि उसकी हानि करासकता है। आप और आपके माता–पिता के बीच गलतफहमी पैदा हो सकती है। सफलता के कारण आप लालचवश निवेश करेंगे, जिससे आपको हानियां हो सकती हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (24:07:2016 से 01:10:2016)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके बौद्धिक काम में बढ़ोत्तरी होगी। आपकी आर्थिक दशा में सुधार होगा। आपनया व्यापार शुरू करेंगे या मौजूदा गतिविधियों में विस्तार होगा। हालाँकि, ईर्ष्या के कारण बाहरी दखल हो सकता है। आपको कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ सकता है। शत्रु हर संभव परेशानी पैदाकरने की कोशिश कर सकते हैं। लेकिन अन्ततः आप सभी पर विजय प्राप्त करेंगे और सफल होंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (01:10:2016 से 29:10:2016)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशा में शत्रुओं और प्रतिस्पर्धियों के द्वारा निभाई गई भूमिका के नकारात्मकपरिणाम अब सामने आ सकते हैं। आपको तीव्र मानसिक तनाव हो सकता है। प्रियजनों को निराशा का सामना करना पड़ सकता है। आपको धन हानि हो सकती है। आपको पानी या जलीय पदार्थों से खतरा हो सकता है। अतः पानी से संबंधित कार्यों जैसे तैराकी, नदी या सागर में स्नान आदि से आपकोबचना चाहिए।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (29:10:2016 से 19:01:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप प्रायः लम्बी यात्रायें कर सकते हैं। आपको विदेश में रोजगार मिल सकता है या विदेशों से आयात–निर्यात का व्यापार कर सकते हैं। आप सोना, रत्नों या जलीय पदार्थों का भी व्यापारकर सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (19:01:2017 से 12:02:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको रोगों से मुक्ति मिलेगी। हालाँकि पित्तरस और वायु के कारण आपको कभी–कभी विकार हो सकते हैं। आप दुर्घटना के कारण चोटिल हो सकते हैं। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। सरकारी अधिकारियों से आपको सहयोग मिलेगा।

मंगल अन्तर्दशा (12:02:2017 से 19:01:2018)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए बहुत उत्तम साबित होगी। आप ना केवल मित्रों और संबंधियों से धन प्राप्त करेंगे,बल्कि शत्रुओं से भी धन प्राप्त करने में सक्षम होंगे। यदि आप सैन्य सेवा में हैं, तो कुछ मिशनों को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए पदोन्नति प्राप्त करेंगे। यदि किसी और क्षेत्र में नौकरी कर रहे हैं, तो भी आपको पदोन्नति, अधिकार और शक्ति प्राप्त हो सकती है। आप भूमि और भवन या कुछ भौतिक सम्पत्तियांप्राप्त करेंगे। विपरीत लिंग के लोगों के साथ मौज–मस्ती करने के तमाम अवसर आपको मिल सकते हैं। आपको धन लाभ होगा। आपको अपनी आँखों की उचित देखभाल करनी चाहिए– जैसाकि आपकी आँखों में चोट लगने की संभावना है। आपको तीव्र सिरदर्द, बवासीर या गुदा के आस–पास खुजलीआदि की भी शिकायत होने की संभावना है। यह अन्तर्दशा आपके परिवार के बड़ों के लिए कुछ उत्तम नहीं हो सकती है। यदि मंगल पीड़ित है, तो उसके अशुभ प्रभाव को मंद करने के लिए और यदि शुभ है तो लाभकारी परिणामों में वृद्धि करने के लिए आपको भगवान कार्तिकेय की प्रशंसा में मंत्रों का जापकरना चाहिए।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (12:02:2017 से 04:03:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको दूसरों पर अधिकार प्राप्त होगा। आप अपने या अपने परिवार के मामलों की देखरेख करने की बजाय दूसरों के मामलों की देखभाल करेंगे, जिससे आप अपने परिवार से दूर हो सकते हैं। यद्यपि आपको धन प्राप्त होता रहेगा, फिर भी आपको उसकी कमी बनी रह सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (04:03:2017 से 24:04:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह दशा अति उत्तम होगी। आपको बहुत ऊँचा पद प्राप्त होगा और आप बहुत सारा धन अर्जित करेंगे। यदि दूसरी ग्रहीय स्थिति भी अनुकूल हैं, तो आप दयालु हो सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (24:04:2017 से 08:06:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पूर्व दशा में जो सुधार हुआ था, इस दशा में उसमें और अनुकूलता आयेगी और आपको शुभ तथा लाभकारी परिणाम प्राप्त होंगे। आपको धन, भूमि और भवन प्राप्त होंगे। आपकी सेवा के लिए कई सारे नौकर होंगे। आपका रोजगार पूरे जोरों पर होगा।

शनि प्रत्यंतर्दशा (08:06:2017 से 01:08:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा में आपको बहुत अधिक सावधानी बरतनी चाहिए। आपको विषम परिणाम मिलेंगे। आपने जो भी नाम, यश और धन पिछली कुछ दशाओं में कमाया था, उस पर प्रभाव पड़ सकता हैऔर आपको अपने शत्रुओं के प्रतिरोध का सामना करना पड़ सकता है। हालाँकि, आप इस परेशानी से बाहर निकल आयेंगे और एक सामान्य जीवन व्यतीत करेंगे।

बुध प्रत्यंतर्दशा (01:08:2017 से 19:09:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको विभिन्न प्रकार के परिणाम प्राप्त होंगे। आपको कोई भीनया उपक्रम शुरू नहीं करना चाहिए– जैसाकि इसमें हानि होने की संभावना है। आपको गले या गर्दन, दिमाग से संबंधित गंभीर रोग हो सकते हैं। आपके दिमाग में कैंसर जैसा विकार पैदा हो सकता है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (19:09:2017 से 09:10:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान रोग गंभीर हो सकते हैं और आपके चिकित्सकीय व्यय बढ़ सकते हैं। हालाँकि, ईश्वर की कृपा से आपको समय पर सहायता प्राप्त होगी और सभी संभव

चिकित्सकीय आवश्यकतायें पूरी होंगी। बाकी अन्य कारकों पर निर्भर होगा। व्यापार और अन्य क्रियाकलापोंमें गिरावट एवं कमी आ सकती है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (09:10:2017 से 04:12:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा में गरीब परिवार में जन्मा व्यक्ति भी अपने स्तर के अनुसार अचानक भाग्यशाली होने की आशा कर सकता है। जुआरियों को उत्तम लाभ प्राप्त हो सकता है। आपके लिए शेयरऔर दूसरे सट्टों में निवेश करने के लिए यह उचित समय है। आपको सामान्य रोगों से राहत मिलेगी।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (04:12:2017 से 21:12:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आनन्द प्राप्त करने के साथ–साथ इस दशा में आपको संचित धन की हानि हो सकती है। आपने पिछली कुछ दशाओं में जो धन कमाया है, वह इस दशा के दौरान मौज–मस्ती में खर्च हो सकता है। आपको ऊँचे सरकारी अधिकारियों से लाभ प्राप्त होगा। चिकित्सा व्यवसाय में प्रगति होगी।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (21:12:2017 से 19:01:2018)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके पिता का स्वास्थ्य आपकी चिन्ता का कारण हो सकता है। आपके पिता या माता को मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है। आप विभिन्न प्रकार की समस्याओं से घिर सकते हैं। आपके ससुराल के लोग आपकी मदद को आगे आ सकते हैं। आपके सगे भाई–बहन आपके लिए परेशानियां पैदाकरने की कोशिश कर सकते हैं और परिवार से अलग हो सकते हैं।

राहु अन्तर्दशा (19:01:2018 से 13:06:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में राहु की अन्तर्दशा चल रही है। यह दशा आपके लिए मिश्रित परिणाम देने वाली होगी। जहां एक तरफ आपको अपने संबंधियों के कारण गंभीर मानसिक तनाव का सामना करना पड़ सकता है, वहीं दूसरी तरफ आपके रोजगार, व्यावसायिक भविष्य या व्यापार में भी सुधार होगा। आपको अचानक उतार–चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है। अतः इस अन्तर्दशा को सबसे घुमावदार कहा जा सकता है। आपकी बहनों और परिवार के अन्य महिला सदस्यों को निराशा का सामना करना पड़ सकता है।

आप अपना निवास स्थान बदल सकते हैं। आपके जीवनसाथी और संतान के लिए यह दशा उत्तम नहीं है।शत्रु आपसे बदला लेने के लिए अवसर की तलाश में हो सकते हैं। आपकी वस्तुएं चोरी हो सकती हैं। आपके प्रियजन आपसे दूरी बना सकते हैं। संभावित रोग जैसे चर्म रोग और पेट दर्द की शुरूआत हो सकती है या वह गंभीर रूप ले सकती है। यदि राहु बली भी है, तो भी आपको केवल मिश्रित फल प्राप्त होंगे।

राहु प्रत्यंतर्दशा (19:01:2018 से 30:05:2018)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको वाहन और धन की प्राप्ति होगी। आप मित्रों और संबंधियों की संगति में आनन्द प्राप्त करेंगे। आपके घर पर कई शुभ समारोह आयोजित होंगे। आपको संपत्ति की हानि का भय है। आपकी संतान का स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (30:05:2018 से 24:09:2018)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि राहु शभ राशि में स्थित है, तो आपको निरन्तर हर जगह संपन्नता प्राप्त होगी। आपको केवल अपने जीवनसाथी के साथ विवादों के कारण परेशानी हो सकती है। आपको उनका

सहयोग प्राप्त नहीं हो सकता है, अपितु वो आपके साथ हमेशा लड़ाई करने के लिए तैयार रहेंगी।

शनि प्रत्यंतर्दशा (24:09:2018 से 10:02:2019)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको कई सारे बुरे सपने आ सकते हैं। आप कैंसर या तपेदिक से ग्रसित हो सकते हैं। आपका स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन क्षीण हो सकता है। डाक्टर आपके रोग का ठीक तरह से पता लगा पाने में असमर्थ हो सकते हैं। इस दशा के दौरान आपको मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (10:02:2019 से 14:06:2019)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। भारी संघर्ष के बाद आपको बेहतर स्थिति प्राप्त होगी। आपको ऐसा प्रतीत होगा कितूफान गुजर चुका है और अब आप सहारे के साथ तैर सकते हैं। रोजगार से जुड़े लोगों को कठिन समय से गुजरना पड़ सकता है। कर्मचारी और अधीनस्थ लोग परेशानी पैदा करने की कोशिश कर सकते हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (14:06:2019 से 04:08:2019)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशा से यह थोड़ी बेहतर दशा होगी। आपको विदेशों से कुछ शुभ समाचारमिल सकते हैं या आपको वहाँ पर काम करने के लिए प्रस्ताव मिल सकता है। आप ऐसा प्रस्ताव स्वीकार नहीं कर सकते हैं, क्योंकि इसको स्वीकार करने से कोई समस्या हो सकती है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (04:08:2019 से 28:12:2019)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली प्रत्यंतर्दशा में प्राप्त उन्नति जारी रहेगी। आपका या आपकी बहन का विवाह हो सकता है। आपके भाई परिवार में कुछ समस्यायें पैदा करने की कोशिश कर सकते हैं। आपकी माता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। दूसरे शब्दों में आपको सुख और दुख का एक के बाद एक अनुभव हो सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (28:12:2019 से 10:02:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा अनिश्चितताओं से पूर्ण हो सकती है। आपके आस–पास का वातावरण कुछ ऐसा बन सकता है, मानो वह आपको निगल जायेगा। आपके जीवनसाथी और संतान मानसिक एवं शारीरिक रूप से परेशान हो सकते हैं। आप उनकी उचित देखभाल कर पाने में असमर्थ हो सकते हैं। संबंधी आपके लिए परेशानियां पैदा कर सकते हैं। आपको सम्पत्ति विवाद का सामना करना पड़ सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (10:02:2020 से 23:04:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी स्थिति में सुधार होगा। आपको एक नया रोजगार और बेहतर जीवन शैलीके लिए एक नया वातावरण मिलेगा। आपका अपने माता–पिता से अलगाव हो सकता है। आपके खर्चेबढ़ सकते हैं। अप्रत्याशित क्षेत्रों से आपको समय–समय पर अचानक लाभ प्राप्त हो सकते हैं। आप बुखार, चर्म रोग या रक्त के कैंसर से पीड़ित हो सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (23:04:2020 से 13:06:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इन तीनों ग्रहों की राशियों और भावों में स्थिति के अनुसार इस दशा के परिणाम होंगे। साथ में साढ़े साती को भी ध्यान में रखना होगा। यदि साढ़े साती नहीं चल रही है, तो आपको

बेहतर परिणाम मिलेंगे।

शनि दशा (13:06:2020 से 14:06:2039)

वर्तमान समय में आपकी शनि की महादशा चल रही है और शनि आपकी कुण्डली में दसवें भाव में स्थित है। यह दशा बहुत उत्तम सिद्ध हो सकती है। आप धन, दैवीय ज्ञान, नाम और यश प्राप्त करेंगे। आप कईसम्माननीय पदों को प्राप्त करेंगे एवं एक बहुत ऊँचे पद तक जायेंगे। हालाँकि, आपकी समृद्धि स्थायी नहीं हो सकती है। आपको अपने माता–पिता की परवाह नहीं हो सकती है तथा आप उनसे दूर रह सकतेहैं।

वर्तमान समय में आपकी शनि की महादशा चल रही है और शनि आपकी कुण्डली में मिथुन राशि में स्थितहै। शनि की अपनी दशा के दौरान, आप अपने जीवन में अलग तरीकों से आनन्द प्राप्त करेंगे। आप चोरी और महिलाओं के द्वारा धन प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप सेना में हैं, तो युद्ध में उल्लेखनीय साहस का प्रदर्शन करेंगे। आप सभी के प्रति उदार होंगे एवं परोपकारी काम करेंगे।

शनि अर्न्तदशा (13:06:2020 से 17:06:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा केदौरान आप मानसिक वेदना, परिवार को कष्ट, विभिन्न रोगों, आपके द्वारा पोषित चौपाया जानवरों को जहरीले प्रभाव का खतरों का सामना करना पड़ सकता है, जिससे आपको धन की हानि हो सकती है। आपको महिला समुदाय से कष्ट हो सकता है और आप अपने आपको ऐसी स्थिति में पा सकते हैं, जहां परआप कोई निर्णय करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं। आपको वात या कफ, आतों में दर्द, लकवा आदि रोगों का सामना करना पड़ सकता है। संबंधी भी आपके लिए परेशानी पैदा कर सकते हैं। आपको अनावश्यक रूप से यात्रायें करनी पड़ सकती हैं। परिस्थितियां कुछ ऐसी बन सकती हैं, कि आपको निचले स्तर के लोगों के बिना अधिकार के और अप्रत्याशित दुर्वचनों का सामना करना पड़ सकता है और ऐसे लोग आपको चोट भी पहुँचा सकते हैं। हालांकि आपको महिलाओं से सावधान रहना चाहिए, जैसाकि आपकी उनके साथ संबंध बनाने की लालसा आपको अपमान और ब्लैकमेल का शिकार बना सकती है। मवेशियों की संख्या और कृषि से आपकी आय में वृद्धि होगी। आप कई लोगों को रोजगार देंगे और उनसेआय प्राप्त करेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (13:06:2020 से 05:12:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी जन्मकुण्डली में शनि का बल चाहे जिस कोटि का हो, आपको कुछ अवसरीय आर्थिक लाभों के अलावा अन्य कोई शुभ परिणाम प्राप्त नहीं हो सकते हैं। इस दशा के दौरान आपको अधिक मानसिक वेदना और परिवार को कष्ट हो सकते हैं। विपरीत लिंग के लोगों से आपको कष्टहो सकता है। आपको बुखार, वायु विकार या कफ और आंतों में दर्द की शिकायत हो सकती है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (05:12:2020 से 09:05:2021)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपको रोगों से राहत मिल सकती है। आपकी स्थिति और वातावरण में धीरे–धीरे सुधार होगा। अपने मित्रों से आपको लाभ होगा। जीवनसाथी और संतानों से आपको पूर्ण सुख मिलेगा। आपकी कुछ अतिरिक्त आय होगी। आपकी संतान को पढ़ाई में अनुकूल परिणाम प्राप्त होंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (09:05:2021 से 12:07:2021)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अपने मित्रों और संबंधियों से ही नहीं, अपितु साहुकारों से भी धन उधार लेने पर बाध्य होना पड़ सकता है। कर्ज चुका पाने में सक्षम नहीं हो सकने के कारण आपको किसी अन्य अन्तर्दशा के दौरान उचित समय पर कर्जदाता न्यायालय में घसीट सकते हैं। यदि साढ़े साती या कंटक शनि की दशा चल रही है, तो आपको अपनी रोजमर्रा की आजीविका के लिए भिक्षा मांगनी पड़ सकती

है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (12:07:2021 से 11:01:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। शनि और शुक्र की प्रकृति चाहे जो कुछ भी हो, आपको पिछली कुछ दशाओं से बेहतर परिणाम प्राप्त होंगे। आप कुछ नयी व्यापारिक गतिविधियां शुरू कर सकते हैं, जिसमें आपको उचितलाभ मिलेगा। आप विदेश सहित दूरस्थ स्थानों की प्रायः यात्रायें कर सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (11:01:2022 से 07:03:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक खतरनाक दशा हो सकती है। आपके आस–पास के लोग आपके लिए गंभीर समस्यायें पैदा कर सकते हैं। आपके पिता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। संतान को भी कष्ट हो सकता है। चिकित्सकीय खर्च बढ़ सकते हैं। आप कर्जदार हो सकते हैं। आपको शिव स्त्रोत का नित्य जाप करना चाहिए, ताकि आपको कष्टों से थोड़ी राहत मिल सके।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (07:03:2022 से 07:06:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आप बहुत अनुकूल परिणामों की आशा नहीं कर सकते हैं। मित्र आप से ऐसे विमुख हो सकते हैं– जैसे वे आपकी परेशानियों के बारे में जानते ही नहीं हैं। जीवन कीवेदना को सहन करने में असक्षम होने के कारण आप आत्महत्या के बारे में सोच सकते हैं। यह एक पूर्ण मानसिक अवसाद की दशा हो सकती है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (07:06:2022 से 10:08:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको आग और वाहनों से सावधान रहना चाहिए– जैसाकि आपके जलने या दुर्घटना में चोट लगने की संभावना है। शत्रु आपकी संपत्ति को हड़पने की कोशिश कर सकते हैं। सम्पत्ति विवाद हो सकते हैं और फिलहाल आपको उनमें हार का सामना करना पड़ सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (10:08:2022 से 21:01:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। अवसाद की दशा जारी रह सकती है। आपको कष्टों से कोई राहत नहीं मिल सकती है। कर्जदाता अपने कर्ज की प्राप्ति के लिए न्यायालय में जा सकते हैं। कोई आपकी मदद करने को आगे नहीं आ सकता है। आप रक्त की खराबी के कारण होने वाले रोगों और त्वचा विकार से ग्रसित हो सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (21:01:2023 से 17:06:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको थोड़ी राहत मिल सकती है। आप धीरे–धीरे आत्मनिर्भरहोंगे। अप्रत्याशित क्षेत्रों से आपको धन का लाभ होगा। आपके द्वारा लिये गये ऋण का कुछ हिस्सा चुका देने के कारण कर्जदाता शांत रह सकते हैं।

बुध अन्तर्दशा (17:06:2023 से 24:02:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम होगी। आपको अपने सभी कार्यों में सफलता मिलेगी। यदि आप व्यापारी हैं, तोपिछली अन्तर्दशा अर्थात शनि–शनि के दौरान आपको गंभीर आघात का सामना करना पड़ा होगा। लेकिन अब समय आपको वह सब वापस करेगा, जो आपने खो दिया था। आप बिना किसी संशय के निवेश करके व्यापार को बढ़ा सकते हैं। आपको पूर्ण खुशी और आनन्द प्राप्त होगा। आप या तो नयी भूमि

प्राप्त करेंगे या पैतृक सम्पत्ति और भूमि प्राप्त करेंगे। आपका दिमाग स्थिर रहेगा। मित्रों से आपको लाभ होगा। आपको जीवनसाथी और संतान का पूर्ण सुख मिलेगा। आपको विभिन्न समारोहों में शामिल होने के आमंत्रण मिलेंगे तथा सरकार का सहयोग एवं धन का लाभ मिलेगा। आप अपना खाली समय ज्ञानी लोगों की संगति में व्यतीत करेंगे। आपको विष्णु सहस्त्रनाम (भगवान विष्णु के 1000 नाम) का जप करना चाहिए।

बुध प्रत्यंतर्दशा (17:06:2023 से 03:11:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। आपको अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार करने के लिए कई अवसर प्राप्त होंगे। आपको रोजगार या व्यापार के प्रस्ताव एक के बाद एक स्वतः मिल सकते हैं। इस समय का आपको पूरा लाभ उठाना चाहिए।

केतु प्रत्यंतर्दशा (03:11:2023 से 30:12:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपकी आर्थिक स्थिति में लगातार सुधार होगा, लेकिन आपके साथ–साथ आपके माता–पिता, जीवनसाथी और संतान को गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपकाव्यय बढ़ सकता है। यदि आपने व्यय में सावधानी नहीं बरती, तो अपनी बढ़ी हुई आय के बावजूद आपको अपनी सभी जरूरतों को पूरा करने में परेशानी हो सकती है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (30:12:2023 से 11:06:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। विवाहित लोगों के लिए यह दशा उत्तम नहीं हो सकती है– जैसाकि प्रायः आपका अपने जीवनसाथी से झगड़ा हो सकता है। हालाँकि आय में वृद्धि होगी, लेकिन मानसिक शांति में कमी आयेगी। आप ऐसा सोच सकते हैं, कि विवाह ना करना आपके लिए बेहतर होता। आपके माता–पिता और जीवनसाथी आपके जीवन में बहुत अधिक दखल दे सकते हैं और स्थिति को और खराब कर सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (11:06:2024 से 31:07:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आप अपनी स्वयं की पहचान बनायेंगे और अधिकार एवं शक्ति का प्रयोग करेंगे। यदि आप बेरोजगार हैं, तो इस दशा के दौरान एक रोजगार प्राप्त करने की आशा कर सकते हैं। आपका व्यापार भी समृद्ध होगा। राजनीति से जुड़े लोगों को जनता के साथ तालमेल में सुधार होगा, लेकिन आपको किसी दुर्घटना और उससे चोट लगने का भय है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (31:07:2024 से 21:10:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक स्थिर दशा होगी। चंद्रमा और बुध आपके अधूरे कामों को मैत्रीपूर्ण ढंग सेपूरा करने और नयी योजनाओं एवं कार्यक्रमों का मूल्यांकन करने में मदद करेंगे, जो आपके लिए लाभदायक साबित होगा। शनि भी योजनाओं के चुनाव और एकत्रीकरण में मदद करेगा। यदि आप किसी स्टील या रसायन के संयत्र में रोजगार करेंगे या इन वस्तुओं का व्यापार करेंगे, तो आपके लिए बेहतर होगा।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (21:10:2024 से 17:12:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आर्थिक मामलों के लिए यह दशा खराब नहीं हो सकती है। यदि आप नौकरी कररहे हैं, तो आपका वरिष्ठों के साथ विवाद हो सकता है और यदि आप व्यापार कर रहे हैं, तो उसे कार्यान्वित करने में आपको बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। मंगल से संबंधित व्यापार या रोजगारआपके लिए लाभदायक होगा।

राहु प्रत्यंतर्दशा (17:12:2024 से 14:05:2025)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह एक बहुत उत्तम दशा होगी। आपको ऐसा प्रतीत होगा, कि जीवन बहुत सहज रूप से चल रहा है। हालाँकि, बीच–बीच में स्वास्थ्य संबंधी समस्यायें आ सकती हैं। यदि आप छात्र हैं, तोविभिन्न प्रतियोगी परिक्षाओं में बैठने के लिए शुभ समय है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (14:05:2025 से 22:09:2025)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। जहाँ तक सम्पूर्ण शनि दशा की बात है, तो यह एक पूरी तरह से बदली हुई दशा होगी। आपको एक नयी ऊँचाई प्राप्त होगी। आपके सभी कामों में आपको सफलता मिलेगी। आप जिनसे मदद मांगेंगे, लगभग वे सभी लोग आपकी मदद करेंगे। इस दशा के दौरान आप एक स्थिर जीवन की एकसुदृढ़ नींव रखेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (22:09:2025 से 24:02:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह एक छली दशा हो सकती है। आपने अब तक जो कुछ भी कमाया है, उसे सांसारिक सुखों की प्राप्ति में बर्बाद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान एक करोड़पति भी भिखारी बन सकता है। मित्र और संबंधी आपको धोखा दे सकते हैं। आपको अपने उद्देश्यों की कोई पूर्व जानकारी नहीं हो सकती है। जब तक आप उन्हें जानेंगे, तब तक बहुत देर हो चुकी होगी, आप हानि उठाने के अलावा कुछ नहीं कर सकते हैं।

केतु अन्तर्दशा (24:02:2026 से 05:04:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आपको अर्जित धन की हानि हो सकती है। आपको अपनीसम्पत्ति को एक के बाद एक बेचना पड़ सकता है। रात में बहुत सारे सपने देखने के कारण आपकी नींद खराब हो सकती है और आपको नींद में चलने की आदत हो सकती है। वायु या आग के कारण आपकी सम्पत्ति नष्ट हो सकती है। रक्तविकार के कारण आपको रोग हो सकते हैं और आप गठिया से ग्रसित हो सकते हैं। आपको भगवान श्रीकृष्ण की अराधना करने की सलाह दी जाती है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (24:02:2026 से 20:03:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपको इस दशा के दौरान मिले–जुले परिणाम प्राप्त होंगे। आपकी आर्थिक स्थिति औसत होगी। कोई असामान्य घटना नहीं होगी। आपकी अधिकतर गतिविधियों सामयिक होंगी। आप पूरी तरह से तनाव रहित होंगे। आप कार्य के प्रति ना तो सुस्त होंगे और ना ही बहुत उत्साही होंगे।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (20:03:2026 से 26:05:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आप अपने दैनिक कार्यों में सक्रिय होंगे। अपनी पुरानी गतिविधियां समेकित करने के लिए यह अनुकूल समय है। विदेश सहित किसी दूरस्थ स्थान से आपको शुभ समाचार मिल सकता है।आपको विदेश यात्रा पर जाने या वहाँ पर रोजगार का अवसर मिल सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (26:05:2026 से 15:06:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपको विदेशी मूल के लोगों के द्वारा पैदा की गयी विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपका रोजगार समाप्त हो सकता है या उसके खोने का आपको भय होसकता है। राजनीति में आपको असफलता का सामना करना पड़ सकता है। आपके गुप्त शत्रु आपको तबाह करने की कोशिश कर सकते हैं। आपको तीव्र सिरदर्द और बुखार हो सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (15:06:2026 से 19:07:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। अशुभ प्रभावों से आपको थोड़ी राहत मिलेगी। हालाँकि, किसी ना किसी कारण से आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है। वरिष्ठों और अधीनस्थों के साथ आपका विवाद हो सकता है। सुदूर स्थानों की आप यात्रा करेंगे– विशेषकर दक्षिण दिशा में।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (19:07:2026 से 12:08:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस अशुभ दशा को आप कभी भूल नहीं सकते हैं। आप जीवन के अकथित दुखों का सामना कर सकते हैं। यदि आप विवाह के योग्य हैं, तो इस दशा के दौरान विवाह करना आपके लिए बेहतर होगा। भाइयों और संतानों को हानि हो सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (12:08:2026 से 11:10:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह एक बहुत खराब दशा हो सकती है। पिछली दशा में जो परेशानी सामने आने से रह गयी थीं, वे अब आपके सामने आ सकती हैं। मित्रों और संबंधियों के साथ अप्रत्याशित रूप से विवाद हो सकते हैं। आपको कुछ असाध्य रोग हो सकते हैं। यदि आप विवाहित हैं, तो जीवनसाथी से अलगाव हो सकता है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (11:10:2026 से 04:12:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। अस्थायी रूप से यह एक उत्तम दशा होगी। आप पिछली दशा में जो कुछ करने में असक्षम रहे हैं, उसे इस दशा में पूरा करने की कोशिश करनी चाहिए– जैसाकि इस दशा में कुछ सफलता निश्चित है। यदि आप परीक्षा में बैठ रहे हैं, तो आप अनुकूल परिणामों की आशा कर सकते हैं। मित्र और संबंधी तन, मन और धन तीनों से मदद करेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (04:12:2026 से 06:02:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस दशा के दौरान आपको मिले–जुले परिणाम मिलेंगे। यदि शनि बली है, तो आपको शुभ परिणाम जैसे सभी कामों में सफलता, सरकार से समर्थन, मुकदमों में सफलता और रोगों से राहत आदि मिलेंगी। यदि केतु बली है, तो आपका अपने जीवनसाथी और संतान से झगड़ा हो सकता है और आपको एकाकी जीवन व्यतीत करना पड़ सकता है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (06:02:2027 से 05:04:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह दशा पुर्नप्राप्ति और पुनर्स्थापना की होगी। आपको इस दशा का लाभ अवश्य उठाना चाहिए। आप लम्बी अवधि की पूंजियों में निवेश करने के लिए सोच सकते हैं। निवेशों से भी आपकोउचित लाभ मिल सकता है। हालाँकि, इस दशा के दौरान आपके और नजदीकी संबंधियों के बीच सम्पत्ति के मामलों में विवाद हो सकते हैं।

शुक्र अन्तर्दशा (05:04:2027 से 05:06:2030)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्य रूप से यह एक शुभ दशा होगी। आपको विभिन्न तरीकों से लाभ मिलेगा। आपको नये अवसरों का लाभ उठाना होगा। आपको अपने जीवनसाथी से आर्थिक सहायता मिलेगी। आप नये घर का निर्माण करेंगे। शुभ परिणामों में सुधार के लिए और अशुभ परिणामों को समाप्त करने के लिए, यदि कोई हो, तो देवी दुर्गा का स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (05:04:2027 से 14:10:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। अपेक्षाकृत यह एक लाभकारी दशा होगी। इस दशा के दौरान आप अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार करेंगे। आपको महिलाओं से लाभ मिलेगा और साथ ही उनमें से कुछ आपकी मानसिक शांति को बाधित कर सकती हैं। यदि आप ऐसी स्थिति से निपटने के लिए स्वयं को तैयार रखेंगे, तो आप बिना परेशानियों के उससे बाहर निकल आयेंगे। आपको शारीरिक सुख प्राप्त होंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (14:10:2027 से 11:12:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। धन प्राप्ति के स्रोत बढ़ेंगे। अधिकतर मामलों में आय व्यय से अधिक होगी। हालाँकि, आपकी खर्चीली जीवनशैली के कारण बचत नहीं हो सकती है। आपको सरकारी अधिकारियों से समर्थन मिलेगा या उनके उपर आपका नियंत्रण होगा।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (11:12:2027 से 17:03:2028)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी बहन को मृत्युतुल्य शारीरिक कष्ट हो सकता है। आपकी माता का स्वास्थ्यभी उत्तम नहीं हो सकता है। चिकित्सकीय खर्चे बढ़ सकते हैं। रोगों से किसी प्रकार की राहत न पा सकने के कारण आप और आपका परिवार आध्यात्म का अनुसरण कर सकता है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (17:03:2028 से 23:05:2028)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी माता और बहन का स्वास्थ्य क्षीण हो सकता है। आपको बुखार और शरीरमें दर्द हो सकता है। आपके जीवनसाथी के साथ आपका बेतुकी बातों पर झगड़ा हो सकता है। आपका तलाक या कुछ समय के लिए शारीरिक अलगाव हो सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (23:05:2028 से 13:11:2028)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपकी आय में वृद्धि होगी, लेकिन आपकी आय चिकित्सकीय उपचार और शारीरिक सुखों की प्राप्ति में व्यय हो सकती है। शुक्र और राहु से संबंधित वस्तुओं में आपको लाभ होगा। आपकी माता या बहन के स्वास्थ्य में इस प्रत्यंतर्दशा के अन्त में सुधार होगा।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (13:11:2028 से 16:04:2029)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। कोई अशुभ घटना नहीं होगी। यह दशा समृद्धि, उद्देश्यों की प्राप्ति और सभी प्रकार के सुख प्रदान करेगी।

शनि प्रत्यंतर्दशा (16:04:2029 से 16:10:2029)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशा के दौरान जो आर्थिक सुधार शुरू हुए थे, वे इस दशा के दौरान स्थिरहो जायेंगे। आपको विदेश यात्रा या वहाँ पर रोजगार के अवसर मिल सकते हैं। सभी रोगों से आपकोबहुत राहत मिलेगी। शनि से संबंधित चीजों के व्यापार में आपको उत्तम लाभ प्राप्त होगा।

बुध प्रत्यंतर्दशा (16:10:2029 से 29:03:2030)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा, लेकिन आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है। महिलाओं के मामले में अधिक संलग्नता आपको अपूर्णिय क्षति करवा सकती है। विपरीत लिंग के लोगों के साथ व्यवहार करते समय आपको सावधान रहना चाहिये– जैसाकि आपको उनसे धोखा मिल सकता है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (29:03:2030 से 05:06:2030)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशा के दौरान आपने जो कुछ संचित किया था, इस दशा के दौरान वह सब छिन सकता है या खर्च हो सकता है। आपको व्यापार में हानि हो सकती है। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो वरिष्ठ और अधीनस्थ आपको परेशान कर सकते हैं। शत्रु आपकी सफलता के मार्ग में रोड़ा बन सकते हैं।

सूर्य अन्तर्दशा (05:06:2030 से 17:05:2031)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आपके जीवनसाथी और संतान को कष्ट हो सकता है। आपको पेट और आंतों से संबंधित रोग हो सकते हैं। आपकी व्यावसायिक और व्यापारिक प्रगति में विभिन्न प्रकार की बाधायें आ सकती हैं। आपको धन की हानि हो सकती है और अपने अस्तित्वहीन होने का अहसास हो सकता है। आपके शत्रुओं की संख्या बढ़ सकती है। प्रायः यात्रायें कर सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (05:06:2030 से 22:06:2030)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपके पिता या परिवार के बड़े पुरुषों का स्वास्थ्य गंभीर हो सकता है। आपको इससमय पैतृक सम्पत्ति विरासत में मिल सकती है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (22:06:2030 से 21:07:2030)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको पैतृक या ननिहाल की सम्पत्ति विरासत में मिल सकती है। सम्पत्ति के मामलों में आपके नजदीकी संबंधियों के साथ प्रायः विवाद हो सकते हैं। रक्त की खराबी के कारण आपकोरोग हो सकते हैं। साथ ही आपके दांतों में समस्या हो सकती है। आपके माता के स्वास्थ्य को अधिक देखभाल की आवश्यकता हो सकती है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (21:07:2030 से 10:08:2030)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक पूर्ण निराशाजनक दशा होगी। आपके सभी विचार और योजनायें आपस में टकरा सकती हैं और आप अपनी दैनिक गतिविधियों को भी कर पाने में असक्षम हो सकते हैं। आपके हर कार्य में बाधा आ सकती है। आपके अपने पिता और सह–जन्मों के साथ विवाद हो सकते हैं और वे ऐसी स्थिति में पहुंच सकते हैं, कि आगे कोई समझौता नहीं होने की संभावना हो सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (10:08:2030 से 01:10:2030)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस दशा के परिणाम आपकी जन्मकुण्डली में राहु की स्थिति पर निर्भर करेंगे। आपकी आर्थिक और शारीरिक स्थिति का ह्रास हो सकता है। आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य भी गंभीर रूप से प्रभावित हो सकता है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (01:10:2030 से 16:11:2030)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी अतिरिक्त आय हो सकती है। अप्रत्याशित स्रोतों से आपको धन प्राप्त होगा। यदि साढ़े साती नहीं चल रही है, तो आपको उत्तम परिणाम मिलेंगे। आप प्राचीन ग्रन्थों के अध्ययनमें गहरी रूचि लेंगे और अन्य ग्रहीय स्थिति के आधार पर आध्यात्मिक क्षेत्र में नाम और यश प्राप्त करेंगे। आपके स्वास्थ्य को अधिक देखभाल की आवश्यकता होगी।

शनि प्रत्यंतर्दशा (16:11:2030 से 10:01:2031)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की

प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि सूर्य बली नहीं है, तो यह एक बेहतर दशा होगी। यदि सूर्य बली है, तो परिवार के सदस्यों के बीच विवाद हो सकते हैं। अपके परिवार के सदस्यों का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। व्यय अधिक हो सकते हैं। पड़ोसी आपके शत्रु बन सकते हैं और परेशानियां पैदा कर सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (10:01:2031 से 28:02:2031)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपको तुफान के बीच से गुजरना पड़ सकता है। इस दशा के प्रारम्भिक कुछ दिनोंमें आपको अपने सभी कार्यों में कई बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। उसके बाद आपको लगेगा कि बाधायें एक के बाद एक दूर हो रही हैं और चीजें सहज होना शुरू हो गयीं हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (28:02:2031 से 21:03:2031)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह एक पूर्ण निराशाजनक दशा होगी। आपने पिछली दशा के दौरान जो कुछ प्राप्तकिया है, वह सब ठहर जायेगा। संतुलन कायम करने के लिए आपको कठिन संघर्ष करना पड़ सकताहै। शत्रु आपकी अवनति के लिए प्रयास कर सकते हैं। कर्जदार आपको परेशान कर सकते हैं। अपनेकामों में असफलता से निराश होकर आप ईश्वर की शरण में जा सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (21:03:2031 से 17:05:2031)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अपनी खोयी हुई स्थिति और मानसिक शांति वापस प्राप्त होगी। महिलाओंसे आपको मदद मिलेगी। हालाँकि, आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आपको महिलाओं से धोखा मिल सकता है।

चन्द्रमा अर्न्तदशा (17:05:2031 से 16:12:2032)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा चल रही है। यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आपको मृत्युतुल्य कष्ट, धन हानि, वायु विकार तथा आपके जीवनसाथी एवं माता–पिता को खतरा हो सकता है। कार्य या कामना पूर्ण होने को हो सकती है, मगर अचानक बाधायें आकर अवसरों को नष्ट कर सकती हैं। आपको किसी नये व्यापार का प्रारम्भ नहीं करना चाहिए या अपने वर्तमान व्यवसाय को बदलने का प्रयास नहीं करना चाहिए। आपको इस अन्तर्दशा के दौरान देवी दुर्गा के मंत्रों का जाप करना चाहिए।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (17:05:2031 से 05:07:2031)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके घर पर शुभ समारोह आयोजित होंगे। आपके सहोदरों का विवाह हो सकताहै। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपको पदोन्नति प्राप्त होगी। हालाँकि यदि आप व्यापारी हैं और यदि आपके व्यापार का संबंध चंद्रमा या राहु की वस्तुओं से नहीं है, तो आपको लाभ प्राप्त नहीं हो सकता है। आप फेफड़े के रोगों और तपेदिक से ग्रस्त हो सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (05:07:2031 से 07:08:2031)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप रक्त की खराबी के कारण होने वाले विकारों, चिन्ता, कफ से ग्रसित हो सकते हैं। आग विद्युत और अन्य गर्म चीजों से आपको खतरा हो सकता है। आपको चोरों और शत्रुओं के कारण धन हानि हो सकती है। अपने कार्य क्षेत्र में भी आप असफल हो सकते हैं। दंड या आपके द्वारा किये गये गबन के अपराध के कारण आपका स्थानान्तरण या पदावनति हो सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (07:08:2031 से 02:11:2031)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की

प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके राहु के कारक संबंधियों को कष्ट हो सकता है और आपको उनके उपचार में धन व्यय करने को बाध्य होना पड़ सकता है। जलीय उत्पादों से भोजन विषाक्तता की संभावना है। आप अनजाने में कई बुरे और गलत काम कर सकते हैं और बाद में उनके लिए प्रायश्चित कर सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (02:11:2031 से 18:01:2032)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप धार्मिक सिद्धान्तों का पालन करेंगे और भिक्षा बाटेंगे। आपको उत्तम वस्त्रों और आभूषणों को पाने में अधिक रूचि होगी। आपको विभिन्न स्रोतों से धन प्राप्त होगा और संतानें सम्पन्न होंगी। संतान आपको खुशियां प्रदान करेंगी। आपका रूझान वाहन प्राप्त करने में हो सकता है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (18:01:2032 से 19:04:2032)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको संबंधियों के कारण दुखों और खतरों का सामना करना पड़ सकता है। आप, आपके जीवनसाथी, संतान और आपके माता–पिता एक साथ विभिन्न रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। उपचार में भारी धन व्यय हो सकता है। आप विभिन्न उपचारीय तरीके अपना सकते हैं और धन बर्बाद करसकते हैं। ऐसा करने पर भी राहत न प्राप्त कर पाने के कारण आप पूरी तरह से निराश हो सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (19:04:2032 से 10:07:2032)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशा में आपने जिन दुखों और परेशानियों का सामना किया है, उनसे आपको थोड़ी राहत मिलेगी। आपको निरन्तर धन प्राप्त होगा और आप उत्तम परिधान, आभूषण और नये मवेशी प्राप्त करेंगे। कृषि उत्पादों से आपको उत्तम आय प्राप्त होगी। आपके नाम और यश में वृद्धि होगी। नये प्राप्त ज्ञान और शिक्षा के द्वारा संपन्न होंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (10:07:2032 से 13:08:2032)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके प्रियजनों को निराशा का सामना करना पड़ सकता है। आपको धन हानि हो सकती है। आप विभिन्न धार्मिक कार्यों में रत रहेंगे और भारी मात्रा में धन व्यय करेंगे। आपको जल याजलीय उत्पादों से खतरा हो सकता है। आपको ऐसे व्यापार से दूर रहना चाहिए, जहाँ द्रव रसायन का प्रयोग होता हो।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (13:08:2032 से 17:11:2032)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। इस दशा में आप निवेशों और अपने मौजूदा व्यवसाय या गतिविधियों के विस्तार के बारे में सोच सकते हैं। तीनों ग्रहों या उनमें से किसी एक की दुर्बलता की कोटि चाहे जो कुछ भी हो, आपको कोई अति अशुभ परिणाम नहीं मिलेंगे। दूसरी तरफ आप बहुत आराम महसूस करेंगे और अनुकूल परिणामों का आनन्द प्राप्त करेंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (17:11:2032 से 16:12:2032)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक विवादपूर्ण दशा हो सकती है। इस दशा के परिणामों का आंकलन करना बहुत कठिन है– जैसाकि परिणाम इन तीनों ग्रहों के कार्यों पर निर्भर करेंगे। ये तीनों ग्रह भिन्न परिणाम प्रदर्शित करेंगे, अर्थात यदि एक ग्रह बली है, तो वह शुभ परिणाम देगा, यदि कोई कमजोर है, तो यह अतिअशुभ परिणाम प्रदान करेगा। दूसरे शब्दों में आप अति शुभ और अति अशुभ परिणामों का आनन्द एक साथ प्राप्त करेंगे।

मंगल अर्न्तदशा (16:12:2032 से 25:01:2034)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आपको विदेश यात्रा पर जाने का शौक हो सकता है, जहांपर आप विभिन्न समस्याओं का सामना कर सकते हैं। अतः आपको विदेश में स्थानांतरण या रोजगार या किसी व्यापारिक दौरे को स्वीकार नहीं करना चाहिए। आपको बुखार, हार्निया और आँखों के रोग हो सकते हैं। आपको हर समय मृत्यु का भय बना रह सकता है। आग और धातु के साथ काम करते समय आपको सावधान रहना चाहिए। आपको कुछ शारीरिक चोट या अक्षमता हो सकती है। आप भारी धन हानिका सामना भी कर सकते हैं। आपके जीवनसाथी और घर की महिलाओं को कष्ट हो सकता है। आपको अपमान का भी सामना करना पड़ सकता है। आप अपने पद और स्थिति को खो सकते हैं। भगवान श्रीकृष्ण के मंत्रों का जाप आपके लिए लाभकारी साबित होगा।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (16:12:2032 से 09:01:2033)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस प्रत्यंतर्दशा के दौरान आपको किसी ना किसी पेरशानी का सामना करना पड़ सकता है। आपको कुछ शुभ परिणाम प्राप्त होंगे, लेकिन केवल देने से अधिक लेने के लिए। आप परिवार से अलग हो सकते हैं। आपको अलाभकारी लम्बी यात्राओं पर जाने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (09:01:2033 से 11:03:2033)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आप अति शुभ और अशुभ परिणाम प्राप्त करेंगे। एक समय आपको लगेगा कि सफलता आपके दरवाजे पर दस्तक दे रही है, लेकिन आपकी आँखों के सामने कोई अन्य व्यक्ति आकर आपकी सफलता उड़ा ले जा सकता है। आपके और परिवार के उपचार में आपका भारी धन व्यय हो सकता है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (11:03:2033 से 03:05:2033)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अति उत्तम परिणाम मिलेंगे। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपको रोजगार के अप्रत्याशित प्रस्ताव मिलेंगे। यदि आप व्यापार कर रहे हैं, तो आपको व्यावसायिक प्रस्ताव मिलेंगे। आपको अपने जीवनसाथी और संतानों का सहयोग मिलेगा। यदि आवश्यक हुआ तो मित्र और संबंधी भी आपकी मदद करेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (03:05:2033 से 07:07:2033)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। चूंकि, दोनों ग्रह नैसर्गिक रूप से अशुभ हैं, अतः वे परस्पर लड़ाई करेंगे। एक लाभपहुंचाने की कोशिश करेगा, दूसरा उनको छीनने की कोशिश करेगा। अतः कुछ अनुकूल घटनाओं के होने के दौरान आपको बहुत सावधान रहना चाहिए।

बुध प्रत्यंतर्दशा (07:07:2033 से 02:09:2033)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक उदासीन दशा होगी। जीवन केवल सामान्य तरीके से चलेगा। आप कई चीजें करना चाह सकते हैं, लेकिन ऐसा करने में आप सक्षम नहीं हो सकते हैं। आप अपना अधिकतर समय जीवनसाथी और संतान के साथ गुजारेंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (02:09:2033 से 25:09:2033)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको कई छोटी यात्राओं पर जाने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है, जिसमें आपका अतिरिक्त धन व्यय हो सकता है। आप अपने परिवार के साथ अधिक समय गुजार पाने में असक्षमहो सकते हैं। संतानों की शिक्षा में व्यवधान हो सकता है। आपके माता–पिता का स्वास्थ्य खराब

हो सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (25:09:2033 से 02:12:2033)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपका झुकाव शारीरिक सुखों की प्राप्ति की तरफ अधिक हो सकता है। अपने कार्यक्षेत्र में आपको कोई रूचि नहीं हो सकती है। आपका केवल एक उद्देश्य होगा– भरपूर आनन्द। आपको मदिरा और महिलाओं का नशा हो सकता है। आपको अपने जीवनसाथी में रूचि नहीं हो सकती है,जिससे प्रायः उनके साथ झगड़ा हो सकता है। आपको रतिजन्य रोग हो सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (02:12:2033 से 22:12:2033)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपका स्वास्थ्य बहुत खराब हो सकता है, अतः आपका समय डॉक्टरों के चक्कर लगाने में बीतेगा। आपको अपने दैनिक जीवन में रूचि नहीं हो सकती है। आपकी आय व्यय से बहुत कमहो सकती है। शत्रु स्थिति का लाभ लेने की कोशिश कर सकते हैं और आपकी सम्पत्ति को हड़प सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (22:12:2033 से 25:01:2034)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आर्थिक मामलों को संचालित करने के लिए यह एक अनुकूल दशा होगी। आपको धन और अन्य सम्पत्तियों की प्राप्ति होगी। आप जीवन का अति आनन्द प्राप्त करेंगे। हालाँकि, आपकी माताके स्वास्थ्य की अधिक देखभाल की आवश्यकता होगी।

राहु अन्तर्दशा (25:01:2034 से 01:12:2036)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में राहु की अन्तर्दशा चल रही है। यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आपको ऊँचाई से गिरने या किसी कुएं अथवा सुरंग में गिरने के कारण चोट लग सकती है। आप बुखार, फोड़ों, सुजाक, प्लीहा के आकार में भारी वृद्धि, चर्म रोगों से ग्रसित हो सकते हैं। आपको भारी धन हानि हो सकती है। आपका सभी के साथ झगड़ा हो सकता है औरआप शत्रुता को आमंत्रण दे सकते हैं। आप किसी की भी सलाह को नहीं मान सकते हैं, जिससे आप हमेशा गंभीर समस्याओं में फँस सकते हैं। आपका व्यवहार बहुत असहिष्णु हो सकता है। आपको इस पूरी अन्तर्दशा के दौरान महामृत्युंजय मंत्र का जाप करना चाहिए।

राहु प्रत्यंतर्दशा (25:01:2034 से 30:06:2034)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह दशा अति उत्तम साबित होगी। ऐसी स्थिति में आप भूमि, भवन, व्यापार और आर्थिक मामलों से संबंधित सभी महत्वपूर्ण निर्णय ले सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (30:06:2034 से 16:11:2034)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। तुलनात्मक रूप से यह एक बेहतर दशा होगी। इस समय आप कुछ सार्थक काम करने की सोच सकते हैं। आप भूमि, भवन और वाहन खरीदेंगे। आपको उत्तम मित्रों का साथ मिलेगा। आपको विरासत मे पैतृक सम्पत्ति प्राप्त हो सकती है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (16:11:2034 से 29:04:2035)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको विभिन्न परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आपका व्यय इस सीमा तक बढ़ सकता है, कि आपको विभिन्न लोगों से धन उधार मांगना पड़ सकता है। आप ऐसे उधार लिये गये धन का उपयोग जुए या लॉटरी या अन्य कामुक उद्देश्यों के लिए कर सकते

हैं। अन्ततः आप आत्महत्या करने की स्थिति में पहुंच सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (29:04:2035 से 24:09:2035)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आप अपनी पुरानी आदतों से चिपके रह सकते हैं और आगे परेशानियों में फंस सकते हैं। ऋणदाता आपको लगातार परेशान कर सकते हैं और आप किसी स्थान पर छुप सकते हैं। यदिबुध बली है, तो आपने जो कुछ भी खोया है, उसे इस प्रत्यंतर्दशा के अन्त में पुनः प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (24:09:2035 से 23:11:2035)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आप अपने पैरों पर खड़े होने में सक्षम होंगे। आपको कुछ अन्य समस्याओं जैसे जीवनसाथी और संतानों की बीमारी या किसी दुर्घटना का सामना करना पड़ सकता है, जिससे आपका भारी व्यय हो सकता है। दूसरे शब्दों में, आपको मुश्किलों के बीच मे कुछ लाभ होगा। आपको अधिक व्ययया शारीरिक संबंधों पर नियंत्रण रखना चाहिए।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (23:11:2035 से 15:05:2036)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। अन्ततः आपको आर्थिक संकट से कुछ राहत मिलेगी। कुछ धन प्राप्त करने के आपको अवसर मिलेंगे। आपने जो ऋण ले रखा है, उसे चुकता करने की कोशिश करेंगे। हालाँकि, शारीरिक सुखों को प्राप्त करने की आपकी प्रवृत्ति पूरी तरह से समाप्त नहीं हो सकती है। आपके जीवनसाथी के स्वास्थ्य की अधिक देखभाल की आवश्यकता हो सकती है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (15:05:2036 से 06:07:2036)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस दशा के दौरान आपका अपने नजदीकियों से विवाद हो सकता है। आपको बिनाकिसी कारण के अपमान का सामना करना पड़ सकता है। यद्यपि आप किसी को आघात नहीं पहुंचानाचाहेंगे, फिर भी परिस्थितियों के कारण आपको सबसे लड़ाई करनी पड़ सकती है और उनके क्रोध का सामना करना पड़ सकता है। आपको बुखार, पीलिया और चर्म रोग हो सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (06:07:2036 से 01:10:2036)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप जिन रोगों से ग्रस्त थे, उनसे आपको थोड़ी राहत मिलेगी। हालाँकि, आपके दिमाग की शांति किसी ना किसी कारण से भंग हो सकती है। कानूनी मामलों में आपका व्यय बढ़ सकता है। आपकी सम्पत्ति को दूसरे लोग हड़प सकते हैं या आप उसे अपनी मूर्खता से गवाँ सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (01:10:2036 से 01:12:2036)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको सावधान रहना होगा। आप दुर्घटनाओं और शरीर कटने या चोट का सामना कर सकते हैं या आपको आग से भय हो सकता है। आप भूमि खरीद सकते हैं या नया व्यापार शुरू कर सकते हैं।

गुरू अन्तर्दशा (01:12:2036 से 14:06:2039)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। यह अन्तर्दशाआपके लिए बहुत उत्तम होगी, जिसका आप एक लम्बे बुरे दौर के बाद अनुभव करेंगे। आपका विश्वास पुनः लौटेगा। आपमें जीने की चाह बढ़ेगी और आपको जीवन का अर्थ पूरी तरह समझ में आयेगा।आप अपने जीवनसाथी, संतान और मित्रों की संगति का पूर्ण आनन्द प्राप्त करेंगे। आपको अपने

हर काम में सफलता मिलेगी और आप विभिन्न शुभ कार्यों को पूरा करेंगे। ईश्वर के अस्तित्व का आपको पूर्ण अहसास होगा और आप उसकी अराधना करेंगे। आपको भूमि लाभ होगा। विभिन्न कलाओं में आप गहरी रूचि लेंगे। इस अन्तर्दशा के दौरान आपका व्यवहार सौम्य होगा।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (01:12:2036 से 03:04:2037)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। एक लम्बे संघर्ष के बाद आपको अधिक अनुकूल परिणामों का आनन्द प्राप्त होगा। विदेशों से मिलने वाले समाचार आपको प्रफुल्लित करेंगे। आपको विदेशी वस्तुओं का आनन्द प्राप्त करने कासौभाग्य प्राप्त होगा या आपको विदेश में रोजगार प्राप्त हो सकता है। मित्र और संबंधी आपकी सहायताकरेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (03:04:2037 से 28:08:2037)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा कुछ हद तक उत्तम होगी। आप धन का संग्रह करेंगे, भूमि और भवन खरीदेंगे, नया रोजगार प्राप्त करेंगे या नया व्यापार शुरू करेंगे। हालाँकि, इस दशा के अन्त में आपको स्वयंया दुष्ट लोगों के कारण बदनामी का सामना करना पड़ सकता है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (28:08:2037 से 06:01:2038)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक बेहतर दशा होगी। निवेश और व्यापार करने के लिए यह शुभ समय है। आपको अवश्य लाभ मिलेगा। हालाँकि, यदि आप व्यापार करने की स्थिति में नहीं हैं, तो आप किसी रोजगार में जायेंगे और नाम तथा यश प्राप्त करेंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (06:01:2038 से 01:03:2038)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक शान्तिपूर्ण दशा होगी। अधिक हलचल नहीं होगी। जीवन साधारण तरीकेसे गुजरेगा।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (01:03:2038 से 02:08:2038)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको वास्तविक आनन्द प्राप्त होगा। आपको विभिन्न स्रोतों सेआय प्राप्त होगी। आप एक समय पर कई कार्य करेंगे और नाम, यश और धन प्राप्त करेंगे। आपके माता–पिता से भी आपको सुख मिलेगा। अपने जीवनसाथी और संतान से आपको पूरा आराम मिलेगा।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (02:08:2038 से 17:09:2038)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। राजनीति से जुड़े लोगों के लिए यह एक अति उत्तम दशा होगी। धन के लिए वे आसानी से दूसरों को धोखा दे सकते हैं। यदि आप राजनीति से जुड़े हैं, तो आप चुनौतीपूर्ण कार्य की आशा कर सकते हैं। आपको विभिन्न स्रोतों से आय प्राप्त होगी।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (17:09:2038 से 03:12:2038)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि आपने अपने दिमाग को ठंडा रखा, तो इस प्रत्यंतर्दशा के दौरान पूर्ण आनन्द प्राप्त करेंगे। चूंकि चंद्रमा दिमाग का नियंत्रणकर्ता है, विचलित दिमाग के लोगों को भी बहुत राहत मिलेगी– जैसाकि बृहस्पति उनकी देखभाल करेगा। आप तीर्थयात्रा पर जा सकते हैं और अपने जीवनसाथीतथा संतान का सुख प्राप्त करेंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (03:12:2038 से 26:01:2039)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। बृहस्पति और मंगल की युति इसमें प्रमुख भूमिका निभायेगी। अतः आप एक बहुत उत्तम स्थिति में होंगे और जीवन के सारो सुखों का आनन्द प्राप्त करेंगे। आपका विवाह हो सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (26:01:2039 से 14:06:2039)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आप ईश्वर की उपासना की तरफ पूरी तरह से मुड़ जायेंगे और वेद मंत्रों का जाप करेंगे। आप लेखन या प्रकाशन आदि से कमायेंगे।

बुध दशा (14:06:2039 से 13:06:2056)

वर्तमान समय में आपकी बुध की महादशा चल रही है और बुध आपकी कुण्डली में तीसरे भाव में स्थित है।बुध की इस भाव में स्थिति व्यापार के लिए उत्तम है। किशोरावस्था या मध्यायु में बुध की दशा में आप व्यापार में निपुणता प्राप्त करेंगे और उससे भारी धन कमायेंगे। आपका दिमाग धन में लगा रहेगा। आप हरचीज को पैसों से तौलेंगे। हालाँकि, अंततः आप इस भौतिक संसार का परित्याग कर सकते हैं। बुध की दशा सहोदरों के लिए बहुत उत्तम होगी। आपका निर्णय असंगत, असत्य और उतावलापूर्ण हो सकता है। आपको अनुबंध के कामों से परेशानी हो सकती है। आपकी भारी धन की तृष्णा आपको पागलपन की हद तक ले जा सकती है। एक शक्तिशाली बुध 24वें वर्ष में उत्तम भाग्य प्रदान करता है, मध्यम बुध 30वें वर्ष मेंउत्तम भाग्य प्रदान करेगा तथा अशुभ बुध 36वें वर्ष में उत्तम भाग्य प्रदान करेगा, यदि तब नहीं तो 39वें वर्षमें उत्तम भाग्य प्रदान करेगा।

वर्तमान समय में आपकी बुध की महादशा चल रही है और बुध आपकी कुण्डली में वृश्चिक राशि में स्थित है। बुध की अपनी दशा के दौरान, आप उत्तम कार्यों में रत रहेंगे। आपके खर्चे कम और खुशियां सीमित होंगी। आपको अपने प्रियजनों और करीबीयों से दूर रहने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। संबंधी आपको विभिन्न मामलों में प्रायः परेशान कर सकते हैं।

बुध अर्न्तदशा (14:06:2039 से 10:11:2041)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम होगी। आपके विभिन्न विद्वान लोगों से संबंध बनेंगे और आप ऐसे संबंधों से धनप्राप्त करेंगे। आप अपने ज्ञान और विद्वता के द्वारा बहुत यश प्राप्त करेंगे। आप उत्तम और शुभ सद्कृत्यों को करने में संलग्न रहेंगे तथा आपका दिमाग तीक्ष्ण और पक्षपात रहित होगा। आपको परिवार केबड़े लोगों से मदद मिलेगी। यदि आपकी कुण्डली में बुध कमजोर है, तो आपको किसी क्षेत्र में काम करने में रूचि और उत्साह नहीं हो सकता है और आप एकाकी जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (14:06:2039 से 16:10:2039)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप प्रायः व्यापार या रोजगार में बदलाव कर सकते हैं। आप प्रयोगिक धारणा को अपना सकते हैं। आपको अपने जीवनसाथी और संतान के कारण चिन्ता हो सकती है। आपको प्रत्येक चीज के बारे में एक प्रकार का भय व्याप्त हो सकता है। आपको गले का रोग और बुद्धि का ह्रास हो सकता है। आपको समय–समय पर धन का लाभ हो सकता है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (16:10:2039 से 07:12:2039)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा बहुत उत्तम नहीं हो सकती है। कर्जदार आपको परेशान कर सकते हैं। आपको मुकदमों का सामना करना पड़ सकता है। आपकी घरेलू वस्तुओं की चोरी हो सकती है। केतु से शासित संबंधी आपको प्रायः परेशान कर सकते हैं। आपको अपने वर्तमान निवास स्थान से दूर जाना पड़ सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (07:12:2039 से 01:05:2040)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। अपेक्षाकृत यह एक बेहतर दशा होगी। आपको महिलाओं से लाभ होगा। आप किसी विदेश या दूरस्थ स्थान की यात्रा कर सकते हैं। आपका विवाह हो सकता है और आपको संतान की प्राप्ति हो सकती है। अपने जीवनसाथी और संतान से आपको पूर्ण सुख मिलेगा। माता–पिता आपका सहयोग करेंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (01:05:2040 से 14:06:2040)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक स्थिर दशा होगी। आपके अधिकार और ताकत में बढ़ोत्तरी होगी। यदि आप व्यापार कर रहे हैं, तो आपको लाभ मिलेगा। हालाँकि, आपको अपने आस–पास के लोगों से सावधान रहना चाहिए– जैसाकि वे आपको जहर देने या आपके व्यापार अथवा रोजगार को बर्बाद करने की कोशिश कर सकते हैं। आपके पिता के स्वास्थ्य का अधिक ध्यान रखने की आवश्यकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (14:06:2040 से 27:08:2040)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस दशा के दौरान आपकी बौद्धिक क्षमता में वृद्धि होगी। आप विभिन्न दैवीय शास्त्रों का अध्ययन करेंगे और उनमें निपुणता प्राप्त करने की कोशिश करेंगे। यदि जन्मकुण्डली में बुध और चंद्रमा दोनों बली हैं, तो आपको इस क्षेत्र में अवश्य ही सफलता मिलेगी। अन्यथा, यह दशा धीमी गतिसे आगे बढ़ेगी। अधिक शोरगुल नहीं होगा।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (27:08:2040 से 17:10:2040)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह दशा मुख्यतः चल और अचल संपत्तियों से संबंधित है। आप ऐसी संपत्तियों को खरीद सकते हैं। आप घरों और दूसरे भवनों का निर्माण कर सकते हैं। भवन निर्माता इस दशा के दौरान उत्तम लाभ की आशा कर सकते हैं। भूमि और भवन या स्टील और तांबे के प्रयोग वाले व्यापार में निवेश के लिए यह सबसे उत्तम समय है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (17:10:2040 से 26:02:2041)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक धोखाधड़ी से पूर्ण दशा होगी। लोग आपसे कई वादें करेंगे, लेकिन कोई वादा पूरा नहीं होगा। किसी अनुबंध का उल्लंघन होने के कारण आपको धन की हानि हो सकती है। अतः आपके लिए किसी सौदे या अनुबंधन से दूर रहना बेहतर होगा।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (26:02:2041 से 24:06:2041)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह वास्तव में भाग्यशाली समय है। भाग्य आपके साथ रहेगा। यदि आप मिट्टी छुयेंगे, तो वह भी सोना बन जायेगी। आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ कर सकते हैं या एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप विद्यार्थी हैं तो आपको परिक्षाओं में बहुत ही अनुकूल परिणाम प्राप्त होंगे। आपका विवाह हो सकता है। आप अपने जीवनसाथी और संतान की संगति का पूर्ण आनन्द प्राप्त करेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (24:06:2041 से 10:11:2041)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यद्यपि आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा, लेकिन आपके दैनिक जीवन में विभिन्न समस्यायें हो सकती हैं। सुबह आप काफी खुश होंगे, लेकिन दोपहर के समय आप बहुत निराश हो सकते हैं। इसका कारण यह होगा, कि आप इस दशा के दौरान स्पष्ट रूप से सोचने में असक्षम हो सकते हैं और जल्दबाजी में निर्णय कर सकते हैं।

केतु अन्तर्दशा (10:11:2041 से 07:11:2042)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, अनिश्चितता बनी रहेगी। आपको एक कष्टकारी और दुखी जीवन का सामना करना पड़ सकता है।आप अपने हर काम में विवादों और झगड़ों में फँस सकते हैं। आपका पूरी तरह से भ्रमित और शंकाग्रस्तदिमाग काफी हद तक उथल–पुथल मचा सकता है। आप गैरमैत्रीपूर्ण और बुरे दिमाग वाले लोगों से घिरे रह सकते हैं। आप जुए की लत में पड़कर धन गवाँ सकते हैं, जिससे आपको उन लोगों, जिनसे आपने धन उधार लिया है, के चंगुल से अपने को बचाने के लिए अपनी भूमि, सम्पत्ति और अन्य सामान बेचना पड़ सकता है, फिर भी आप ऋणमुक्त नहीं हो सकते हैं। आप एक गुलाम की तरह जीवन जीने परमजबूर हो सकते हैं। अन्ततः आप मिर्गी या पागलपन का शिकार हो सकते हैं। इस अन्तर्दशा के दौरान किसी अनुकूल परिणाम की आप आशा नहीं कर सकते हैं। केतु के अशुभ प्रभाव से बचने के लिए आपको भगवान शिव और देवी पार्वती की अराधना करनी चाहिए।

केतु प्रत्यंतर्दशा (10:11:2041 से 01:12:2041)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान केतु मुख्य नियंत्रणकर्ता होगा। आपको अति उत्तम परिणाम प्राप्त होंगे। आपका व्यापार फले फूलेगा। आपके घर पर शुभ समारोह आयोजित होंगे। साधुजनों से आपका सम्पर्क अधिक होगा।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (01:12:2041 से 30:01:2042)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। पिछले कुछ दशाओं की तुलना में यह एक अधिक सुखकारी और परिणामदायक दशा होगी। आपके चेहरे पर मुस्कराहट वापस आयेगी। आपको अप्रत्याशित क्षेत्रों से मदद मिलेगी। आपकाविवाह हो सकता है, आपको एक पुत्री की प्राप्ति हो सकती है। आप चर्म या रतिजन्य रोगों से ग्रस्तहो सकते हैं। आप विदेशों से आय प्राप्त कर सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (30:01:2042 से 17:02:2042)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक बहुत मुश्किल से भरी दशा है। आपको एक के बाद एक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। शत्रु आपके जीवन में अशांति पैदा करने की कोशिश कर सकते हैं। आपका एक सबसे विश्वासपात्र व्यक्ति आपको धोखा दे सकता है। व्यय आपके नियंत्रण से बाहर हो सकता है। आप बुखार और सिर दर्द से ग्रस्त हो सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (17:02:2042 से 19:03:2042)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी आर्थिक स्थिति संतोषजनक होगी, लेकिन स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आपको प्रायः डॉक्टरों और अस्पताल के चक्कर लगाने पड़ सकते हैं, जिससे आपके उपचार में भारी खर्च हो सकता है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (19:03:2042 से 10:04:2042)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अपने सहोदरों, परिवार के अन्य बड़े लोगों से लाभ होगा। आपके सगे भाईबहन आपके लिए परेशानी पैदा कर सकते हैं और आपका धन एवं अन्य सम्पत्ति हड़प सकते हैं। आपको रक्त संबंधी खराबी से होने वाले रोग और बुखार हो सकता है। अपनी जीवनसाथी और परिवार कीअन्य महिलाओं के साथ प्रायः झगड़े होने के कारण आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (10:04:2042 से 03:06:2042)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा

चल रही है। आप दुष्ट और अनैतिक लोगों से घिरे रह सकते हैं। आप अपने कुछ नजदीकी लोगों पर अंधविश्वास करेंगे, लेकिन वे आपको धोखा दे सकते हैं। आप अपना अधिकतर समय पूजा–पाठ में बितायेंगे।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (03:06:2042 से 21:07:2042)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आप अपने लक्ष्य को वास्तव में प्राप्त कर सकते हैं। आप आध्यात्म, शास्त्रों और अन्य पुराने ग्रन्थों को सीखने में पूरी तरह संलग्न रहेंगे। आप आध्यात्म और अन्य प्राचीन विज्ञानों पर आधारित विषयों के लेखन या प्रकाशन से आय प्राप्त करेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (21:07:2042 से 16:09:2042)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपके परिवार के बड़े लोगों को कष्ट हो सकता है। आपको उनके उपचार में धन व्यय करने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (16:09:2042 से 07:11:2042)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी आर्थिक स्थिति में बहुत सुधार होगा। आपको धन की कमी महसूस नहीं हो सकती है। आपके परिवार में हर्षोल्लास और आनन्द रहेगा। आप पवित्र स्थानों की यात्रा करेंगे। आपका व्यापार सफल होगा। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो यह दशा आपके लिए अनुकूल है।

शुक्र अन्तर्दशा (07:11:2042 से 07:09:2045)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आप आध्यात्मिक मार्ग का अनुसरण करेंगे और अधिकतर समय भगवान की आराधना में रत रहेंगे। आप ऐसे उपदेशकों से सम्पर्क बनाने की कोशिश करेंगे जो आपको ईश्वरीय मार्ग के बारे में अधिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए आपका मार्गदर्शन कर सके। आपकी आय का एक बड़ा भाग इस कार्य में खर्च हो सकता है। इस दशा के दौरान नास्तिक भी आस्तिक बन जाता है, यद्यपि वह दावा कर सकता है, कि उसेभगवान के अस्तित्व में विश्वास नहीं है। ऐसे नास्तिक लोग छिपकर भगवान की पूजा करते हैं। आप स्वादिष्ट भोजन, उत्तम कपड़ों और आभूषणों का आनन्द प्राप्त करेंगे। मित्र और संबंधी आपकी मदद को आगे आयेंगे। आप किसी धर्मपरायण स्त्री के साथ अतिरिक्त वैवाहिक संबंध बना सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में शुक्र बली नहीं है, तो भी इस अन्तर्दशा के दौरान आपको बहुत विषम परिणाम प्राप्त नहीं होंगे।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (07:11:2042 से 28:04:2043)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस दशा के दौरान आपकी अधिकतर अभिलाषायें पूरी होंगी। आपको पेड़ों, फलों, दवाओं और मवेशियों से लाभ होगा। आप धन, नाम और यश प्राप्त करेंगे। अपने प्रियजनों से आपको स्नेहऔर अधिक सम्मान मिलेगा। आपके शत्रु परास्त होंगे। विपरीत लिंग के लोगों के साथ आप आनन्द प्राप्त करेंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (28:04:2043 से 19:06:2043)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आप जिनको अपना सबसे नजदीकी मानते हैं, उनसे सावधान रहना होगा। वे आपकी संपत्ति को हड़पने की कोशिश करेंगे। आपको गले, नाक या छाती के रोग हो सकते हैं। आपको नेत्र विकार भी हो सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (19:06:2043 से 13:09:2043)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की

प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी आशा से अधिक आय होगी। लेकिन व्यय भी उसी प्रकार से होगा। एक तरफ विपरीत लिंग के लोग आपकी हर संभव सहायता करेंगे, लेकिन दूसरी तरफ आप से हर चीज ले भी सकते हैं। आपके नाखूनों में किसी प्रकार की विकृति हो सकती है। आपको पीलिया की शिकायत हो सकती है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (13:09:2043 से 12:11:2043)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा में आपको शारीरिक सामर्थ्य प्राप्त नहीं हो सकता है। आपको अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए अत्यधिक मेहनत करनी पड़ेगी। आपको विभिन्न तरीकों से भारी धन हानि हो सकतीहै। इस दशा के दौरान केवल दवाओं या द्रव पदार्थों के व्यापार में आप सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

राहु प्रत्यंतर्दशा (12:11:2043 से 16:04:2044)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपका रूझान आध्यात्मिक प्रगति और शारीरिक सुखों की प्राप्ति की तरफ अधिक होगा। आपको सुन्दर लडकियों की संगति में रहने के अवसर मिलेंगे और आप उन अवसरों का उपयोग शारीरिक सुखों की प्राप्ति के लिए करेंगे। हालाँकि आपको सावधान रहना चाहिए– जैसाकि ऐसी कुछ महिलायें आपको धोखा दे सकती हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (16:04:2044 से 01:09:2044)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आप एक पूर्ण परिपक्व व्यक्ति की तरह काम करेंगे। आप गलत और सही का भेद करने मे सक्षम होंगे। आप अपनी गलतियों को सुधारने की कोशिश करेंगे और एक साफ सुथरा जीवन व्यतीत करेंगे। आपकी कुछ महिला साथी आपको ब्लैकमेल कर सकती हैं।

शनि प्रत्यंतर्दशा (01:09:2044 से 12:02:2045)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपको सरकार और अन्य स्रोतों से आवश्यक सहयोग मिलेगा। इस दशा के दौरानआप अपने भविष्य की सही दिशा का निर्णय कर सकते हैं। इस दशा के दौरान लिया गया कोई भी निर्णय आपके जीवन पर स्थायी प्रभाव डालेगा।

बुध प्रत्यंतर्दशा (12:02:2045 से 09:07:2045)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। बुध के सभी उत्तम परिणाम आपको इस दशा के दौरान मिलसकते हैं। आपको एक स्थिर भविष्य बनाने का अथक प्रयास करना चाहिए। यदि आपने उचित प्रकार से योजना बनाई, तो आपका भविष्य उत्तम होगा। मित्र और संबंधी आपको खुला सहयोग देने के लिए हाथबढ़ायेंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (09:07:2045 से 07:09:2045)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपके शत्रु आपकी प्रगति के आरम्भ में कुछ बाधायें पैदा कर सकते हैं। हालाँकि, आप अपने शत्रुओं का नाश करने और बाधाओं से पार पाने में सक्षम होंगे। आपको किसी विदेशी जगह से कोई शुभ समाचार मिल सकता है। आपके बाबा या किसी बुजुर्ग व्यक्ति का स्वास्थ्य आपकी योजनाओं औरउपक्रमों में देरी करा सकता है।

सूर्य अन्तर्दशा (07:09:2045 से 14:07:2046)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के

दौरान, आपके घर पर संपन्नता में निरन्तर वृद्धि होगी। आपको सोना, मूंगा, वाहन और उत्तम घर प्राप्त होगा। आप स्वादिष्ट भोजन और पेय पदार्थों का आनन्द प्राप्त करेंगे। सरकार से आपको समर्थन मिलेगा तथा आपकी क्षमताओं को पहचान मिलेगी। यदि आपकी कुण्डली में सूर्य कमजोर है, तो शुभ परिणामों में कमी हो सकती है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (07:09:2045 से 22:09:2045)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप एक उत्तम दशा का आनन्द प्राप्त करेंगे। दिमाग और शरीर एक दूसरे की मदद करेंगे, अर्थात आपके निर्णय सही दिशा में होंगे। आप जीवन में सामान्य प्रगति करेंगे। आपका विवाह हो सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (22:09:2045 से 18:10:2045)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। दिमाग, शरीर और आत्मा एक दूसरे का सहयोग करेंगे और आपका जीवन संपन्न होगा। आपको विभिन्न स्रोतों से आय प्राप्त होगी। घर पर आप विभिन्न शुभ समारोहों में व्यस्त होंगे। आपके सहोदरों का विवाह हो सकता है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (18:10:2045 से 05:11:2045)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी प्रगति में कुछ बाधा आ सकती है। यह एक मंदी दशा होगी। आप अपनी योजना के अनुसार कोई काम नहीं कर सकते हैं। बाहरी लोगों का दखल आपकी अस्थिरता का प्रमुख कारण होगा। आपको अपने मामलों में उनके दखल को नजरअंदाज करने की कोशिश करनी चाहिए।

राहु प्रत्यंतर्दशा (05:11:2045 से 22:12:2045)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणाम प्राप्त होंगे। आपको व्यावसायिक उपलब्धि मिलेगीऔर व्यापार में सुधार होगा। संबंधी और मित्रों को आपकी प्रगति से ईर्ष्या हो सकती है और वे आपके लिए समस्यायें खड़ी कर सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (22:12:2045 से 01:02:2046)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अपने सभी कामों में सफलता मिलेगी। राजनीति से जुड़े होने पर यह आपके लिए उत्तम दशा हो सकती है। आपको गलत तरीकों से धन प्राप्त हो सकता है। आपको नाम, अधिकार और शक्ति प्राप्त होगी। चुनाव लड़ने के लिए यह एक उत्तम समय होगा। हालाँकि, आपको अपनेस्वास्थ्य का ख्याल रखना चाहिए। आपको रक्त चाप या हृदय की कोई छोटी समस्या हो सकती है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (01:02:2046 से 22:03:2046)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह दशा विरोधों से भरी हो सकती है। जितना आप समस्याओं से दूर भागेंगे, उतना ही और फंसते जायेंगे। कई लोग जो आपके शुभचिन्तक होने का नाटक करेंगे, वहीं आपको अस्थिरकरने की कोशिश करेंगे। आप सिर दर्द और बुखार से पीड़ित हो सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (22:03:2046 से 05:05:2046)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक प्रगति होगी। आपको विभिन्न स्रोतों से आय प्राप्त होगी। यह एक व्यस्त दशा होगी। आपको विभिन्न सामाजिक समारोहों और आयोजनों में भाग लेने का आमंत्रण मिलेगा। अपने जीवनसाथी के साथ आपके मधुर संबंध नहीं हो सकते हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (05:05:2046 से 23:05:2046)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक कष्टकारी दशा हो सकती है। आपके अपने संबंधी आपको परेशान कर सकते हैं। वेआपके खिलाफ हो सकते हैं और आपकी मानसिक शांति भंग कर सकते हैं। आपको व्यापार में भारी नुकसान हो सकता है। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपको अपने विशिष्टों के क्रोध का सामना करना पड़ सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (23:05:2046 से 14:07:2046)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह एक पुनर्प्राप्ति की दशा होगी। विदेशों से आपको शुभ समाचार मिलेंगे। आप व्यापार या रोजगार के संबंध में दूरस्थ स्थानों की यात्रा करेंगे। आपको इन यात्राओं से आय होगी। विपरीत लिंग के लोगों के साथ मौज–मस्ती करना आपको परेशानियों में डाल सकता है।

चन्द्रमा अन्तर्दशा (14:07:2046 से 13:12:2047)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा मेंआपको शारीरिक व्याधियां हो सकती हैं। आप सिरदर्द, आँखों में फोड़े, कुष्ठ रोग, दाद, गर्दन में दर्द आदिसे ग्रस्त हो सकते हैं। आपकी गर्दन या सिर में चोट लग सकती है। आपकी माता का स्वास्थ्य खराबहो सकता है। आपके सगे भाई–बहन आपके शत्रु हो सकते हैं। आपको अपने सहोदरों की जिम्मेदारीउठानी पड़ सकती है– विशेषकर यदि आपकी बहनें हैं, तो उनकी। इस अन्तर्दशा के दौरान आपकी या आपके भाई/बहन की शादी हो सकती है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (14:07:2046 से 26:08:2046)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको आभूषणों, कपड़ों और मवेशियों के व्यापार से लाभ होगा। समाज में आपकेविद्यमान स्थान के अनुसार आपका नाम और यश बढ़ेगा। आपके माता–पिता तीर्थयात्रा पर जा सकतेहैं। आपको ननिहाल की संपत्ति विरासत में मिल सकती है। अन्यथा ऐसी सम्पत्ति पर विवाद हो सकतेहैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (26:08:2046 से 25:09:2046)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके सामने कई सारे जटिल मामले आ सकते हैं। आपको पैतृक सम्पत्ति और धन की हानि हो सकती है। आप रक्त की खराबी, चिन्ता और निराशा से होने वाले रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं।

राहु प्रत्यंतर्दशा (25:09:2046 से 12:12:2046)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अकथित दुखों का सामना करना पड़ सकता है। आपका स्वास्थ्य इतना खराब हो सकता है, कि आपको दिन प्रतिदिन के काम करने में परेशानी हो सकती है। आपके जीवनसाथी और संतान का स्वास्थ्य भी खराब हो सकता है। उपचार में आपका व्यय बढ़ सकता है और आपको मित्रों तथा संबंधियों से कर्ज लेने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (12:12:2046 से 19:02:2047)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक पूर्ण रूप से आरामदायक दशा होगी। आप अधिकतर जटिल मामलों से राहत महसूस कर सकते हैं। आपके परिवार के लोगों के स्वास्थ्य में सुधार होगा। हालाँकि, आपको स्वास्थ्यसंबंधी कुछ छोटी–मोटी समस्यायें हो सकती हैं। आपको काफी अप्रत्याशित तरीके से धन प्राप्त होगा।

शनि प्रत्यंतर्दशा (19:02:2047 से 12:05:2047)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के परिणाम मुख्यतः आपकी जन्मकुण्डली में शनि की स्थिति और गोचर पर निर्भर करेंगे। जन्मकुण्डली में शनि की उत्तम स्थिति आपको अति उत्तम परिणाम देगी। यदि इस दौरानसाढ़े साती, अष्टम् शनि या कंटक शनि भी लागू हैं, तो आपको केवल मिश्रित परिणाम प्राप्त होंगे।

बुध प्रत्यंतर्दशा (12:05:2047 से 24:07:2047)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस दशा के दौरान प्राप्त होने वाले परिणामों का पता लगाने के लिए चंद्रमा और बुध की स्थिति का उचित अवलोकन करना होगा। यदि दोनों उत्तम स्थिति में हैं, तो आपको अति उत्तम परिणाम प्राप्त होंगे। अन्यथा आपको सभी संभावित विपदाओं का सामना करना पड़ सकता है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (24:07:2047 से 23:08:2047)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी आय में बढ़ोत्तरी होगी, लेकिन आप मानसिक निराशा से ग्रस्त हो सकते हैं। आप उस निराशा के कारण का पता लगा पाने की स्थिति में नहीं हो सकते हैं, क्योंकि दिमाग का नियंत्रणकर्ता चंद्रमा पूरी तरह से केतु के नियंत्रण में होगा। आपके परिवार के लोगों को कोई परेशानी नहींहो सकती है, जबकि आपके परिवार के सदस्य आपके कारण परेशान हो सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (23:08:2047 से 17:11:2047)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप जिस मानसिक हताशा से गुजर रहे थे, उससे आपको राहत मिलेगी। इस समय आप निवेश, अपने व्यापार को बढ़ाने के लिए भूमि और भवन की खरीददारी या किसी ऊँचे पद की प्राप्ति की कामना कर सकते हैं। आपको अपने जीवनसाथी से पूर्ण सहयोग मिलेगा।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (17:11:2047 से 13:12:2047)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह शक्ति और अधिकार की दशा है। आपको समाज में नाम और यश प्राप्त होगा। आप अपनी समय सूची के अनुसार अपनी योजनाओं को पूरा करने की स्थिति में होंगे। माता–पिता आपके विचारों का समर्थन करेंगे। हालाँकि, आपको बुखार और सिरदर्द की शिकायत हो सकती है।

मंगल अर्न्तदशा (13:12:2047 से 10:12:2048)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आपको व्यवसाय और समाज में कई प्रकार की समस्यायें हो सकती हैं। शत्रुओं से भी आपको कष्ट हो सकता है। आपको आग या बिजली से काम करते समय सावधानी बरतनी चाहिए– जैसाकि आपके जलने की संभावना है। आपको नेत्र और वायु विकार भी हो सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (13:12:2047 से 03:01:2048)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको औसत दर्जे के उत्तम परिणाम मिल सकते हैं। आपके जीवनसाथी के स्वास्थ्य की ओर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है। आपका अपने जीवनसाथी से अलगाव हो सकता है। संतान भी अधिक परेशानियां पैदा कर सकते हैं।

राहु प्रत्यंतर्दशा (03:01:2048 से 27:02:2048)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। समग्र रूप से यह एक संशय से पूर्ण दशा होगी। आप किसी मामले में कोई ठोस निर्णय नहीं कर पायेंगे। यदि आपने कोई निर्णय लिया, तो अन्त में आपको उसमें परेशानी का सामना

करना पड़ सकता है। आपको अपने प्रियजनों के बारे में कोई समाचार मिल सकता है। आपके अपने जीवनसाथी के साथ संबंध आत्मीय नहीं हो सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (27:02:2048 से 15:04:2048)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछले कुछ दशाओं के दौरान आपने जिन दुखों का सामना किया है, उनसे आपको राहत मिलेगी। आप अपने अधूरे पड़े कामों को पूरा करेंगे। आपका या आपकी बहन का विवाह हो सकता है। हालाँकि, ऋणदाता आपको निरन्तर परेशान कर सकते हैं।

शनि प्रत्यंतर्दशा (15:04:2048 से 12:06:2048)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशा के दौरन आपको प्राप्त होने वाले कुछ उत्तम परिणाम ब्याज सहित वापस हो सकते हैं। शत्रु आप और आपके परिवार को अस्थिर करने में प्रमुख भूमिका निभा सकते हैं। आपरोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। इन समस्याओं से राहत पाने का केवल एक ही रास्ता है, कि आप ईश्वर में भरोसा रखें और रोज उसकी आराधना करें।

बुध प्रत्यंतर्दशा (12:06:2048 से 02:08:2048)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। ईश्वर की कृपा से आप धीरे–धीरे उन समस्याओं से बाहर निकल आयेंगे, जिनसे आप अब तक जूझ रहे थे। आप केवल भूमि और भवन या भवन निर्माण के व्यापार अथवा एक ज्योतिषी यापुस्तक विक्रेता के रूप में सफल हो सकते हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (02:08:2048 से 23:08:2048)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको व्यापार में हानि और रोजगार में बदनामी या विपरीत स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य आपको चिन्तित कर सकता है। संतान आपकी बातें अनसुनी कर सकते हैं। शत्रु भी आपको परेशान कर सकते हैं। आपका अपने सहोदरों या अन्य नजदीकी संबंधियों के साथ सम्पत्ति के मामलों पर विवाद हो सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (23:08:2048 से 23:10:2048)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको सभी कानूनी मामलों में सफलता मिलेगी। शत्रु परास्त होंगे। आपके जीवनसाथी के स्वास्थ्य में सुधार होगा। संतान सबक सीखेंगी और आपकी आज्ञा का पालन करेंगी। आपको विरासत में ननिहाल की संपत्ति मिल सकती है। फिलहाल सहोदर लोग शांत रहेंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (23:10:2048 से 10:11:2048)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा भी संघर्षों और समस्याओं से पूर्ण होगी। इन लगातार बढ़ने वाली समस्याओं को हल कर पाने में असक्षम होने के कारण आप नशे या दूसरे प्रकार के ऐंद्रिय सुखों का सहाराले सकते हैं। आपको धन उधार लेने पर मजबूर होना पड़ सकता है। आप अपने परिवार को नजरअन्दाज कर सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (10:11:2048 से 10:12:2048)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। अपेक्षाकृत यह एक बेहतर दशा होगी। महिलाओं से आपको मदद मिलेगी। बेतुके मामलों में पिता से आपका विरोध आपको उनसे मिलने वाले लाभ से वंचित कर सकता है। आपके सगे भाईबहन आपके खिलाफ हो सकते हैं और आपको हानि पहुंचाने का प्रयास कर सकते हैं।

राहु अन्तर्दशा (10:12:2048 से 29:06:2051)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में राहु की अन्तर्दशा चल रही है। आपको उन लोगोंसे खतरा हो सकता है, जिन पर आप आश्रित होंगे या जिसने आपकी बुरे दौर में मदद की हो। आपको संचित धन की हानि हो सकती है। आपका पद और सम्मान दाँव पर लग सकता है। आप जहर और गैस, सिरदर्द, नेत्रों में फोड़ा या पेट में कष्ट से ग्रसित हो सकते हैं। सामान्यतः आप इस अन्तर्दशा केदौरान मानसिक वेदना के शिकार हो सकते हैं और आपको सभी योजनाओं में असफलता मिल सकती है। यदि राहु आपकी कुण्डली में शुभ भी है, तो भी वह शुभ परिणाम देने में शिथिलता बरतेगा।

राहु प्रत्यंतर्दशा (10:12:2048 से 29:04:2049)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। पिछली दशा की तुलना में आपको विभिन्न स्रोतों से आय प्राप्त होगी। लेकिन ऐसी आय लापरवाही के कारण खर्च हो सकती है। अतः इस प्रत्यंतर्दशा के अन्त में आप कर्जदार हो सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (29:04:2049 से 31:08:2049)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके ज्ञान में बढ़ोत्तरी होगी। आप शास्त्रों के अध्ययन और धार्मिक उपासना में रूचि लेंगे। आप साधुजनों की संगति में रहेंगे। आपके घर पर शुभ समारोह आयोजित होंगे, जहाँ पर आपके संबंधी एकत्र होंगे और आपका सहयोग करेंगे। आपकी संतान का विवाह हो सकता है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (31:08:2049 से 25:01:2050)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह एक खराब और अशुभ दशा हो सकती है। अप्रत्याशित घटनायें आपको पागल कर सकती हैं। आपको समझ में नहीं आयेगा कि आप कहां जायें, जिससे आप घर से दूर जा सकते हैं या किसी स्थान पर छुप सकते हैं। आपकी विवाहित पुत्रियों को कष्ट हो सकता है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (25:01:2050 से 06:06:2050)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको भिन्न परिणाम प्राप्त होंगे। पहले कुछ दिनों में आपको मृत्युतुल्य कष्ट हो सकते हैं। दशा के मध्य में आपको उत्तम परिणाम मिलेंगे। दशा के अन्त में आप और आपके जीवनसाथी तथा संतान को सभी संभव विपदाओं, रोगों और उसके फलस्वरूप कष्टों का सामना करना पड़ सकता है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (06:06:2050 से 30:07:2050)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा बहुत खराब नहीं हो सकती है। आपको समय–समय पर धन लाभ होगा और घर पर शुभ समारोह आयोजित होंगे। आपकी माता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आप पीलिया, चर्म रोगों या बुखार से ग्रस्त हो सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (30:07:2050 से 02:01:2051)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। इन तीनों में से एक ग्रह आपके हर काम में आपको उत्तम सहयोग देगा। विदेश से आपको कुछ शुभ समाचार मिलेंगे। महिलाओं से आपको मदद मिलेगी। आपको विभिन्न महिलाओं से आनन्द प्राप्ति के अवसर मिलेंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (02:01:2051 से 17:02:2051)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अनिश्चितता पूर्ण दशा हो सकती है। आपको अपने अस्तित्व के लिए कठिन संघर्ष करना पड़ सकता है। धन की कमी प्रमुख समस्या हो सकती है। मोहक निवेशों में भी आपको पूर्ण हानि

हो सकती है। आप एक के बाद एक रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (17:02:2051 से 06:05:2051)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी आर्थिक स्थिति में थोड़ा सुधार होगा। आप तनावग्रस्त हो सकते हैं। ऋणदाता आपको परेशान कर सकते हैं। आपके जीवनसाथी का व्यवहार स्थिति को और खराब कर सकताहै। आपके माता–पिता आपकी उपेक्षा कर सकते हैं। संतान और अधिक सुविधाओं की मांग कर सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (06:05:2051 से 29:06:2051)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। वाहन से यात्रा करते समय आपको सावधान रहना चाहिए। आप दुर्घटनाओं का सामना कर सकते हैं, जिससे आपको शारीरिक चोट लग सकती है। यदि आप राहु से संबंधित वस्तुओं काव्यापार करेंगे, तो आपको व्यापार में सफलता मिलेगी।

गुरू अन्तर्दशा (29:06:2051 से 04:10:2053)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आप रोग मुक्त रहेंगे और आपको पूर्ण मानसिक और शारीरिक शांति मिलेगी। आपको अपने व्यवसाय के साथ–साथ समाज में उत्तम कार्य करने के लिए प्रशंसा प्राप्त होगी। आप निडर होंगे। हालांकि, आप अपने हर काम में दुविधाग्रस्त रह सकते हैं। चूंकि, इस दशा में आपको दैवीय कृपा प्राप्त होगी, अतः आप संशयग्रस्त हो सकते हैं, कि कहीं अनजाने में आपने पाप तो नहीं कर दिया। अतः आपकोरोज पूजा करनी चाहिए, ताकि आपका दिमाग स्थिर हो सके। आपके सन्यासी होने की संभावना हो सकती है। आपको शांतिपूर्ण घरेलू जीवन का आनन्द प्राप्त होगा, रोजगार में प्रगति होगी और व्यापार समृद्ध होगा। भूमि और सम्पत्ति में निवेश के लिए यह दशा बहुत उत्तम होगी।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (29:06:2051 से 17:10:2051)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आपके पिता के स्वास्थ्य में सुधार होगा। यदि आप अविवाहित हैं, तो आप विवाह की आशा कर सकते हैं। आपको संतान की प्राप्ति भी हो सकती है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (17:10:2051 से 25:02:2052)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी और आपके जीवनसाथी तथा संतान की कुछ स्वास्थ्य समस्याओं को छोड़कर यह एक बहुत उत्तम दशा होगी। यदि आपके पिता बीमार हैं, तो उनके स्वास्थ्य में सुधार होगा। यदि आप अविवाहित हैं, तो इस दशा के दौरान आप विवाह की आशा कर सकते हैं। आपको संतान की भीप्राप्ति हो सकती है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (25:02:2052 से 22:06:2052)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। यदि आप व्यापारी हैं या अध्यापन, लेखा और प्रकाशन के रोजगार से जुड़े हैं, तो आपके लिए यह विशेष लाभदायक दशा है। आपको शीघ्र सफलता मिलजायेगी। यदि बुध सभी मामलों में अशुभ है, तो ही आपको विषम परिणाम मिल सकते हैं। आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। यदि आपने कोई ऋण लिया है, तो आप उसे वापस करने मेंसक्षम होंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (22:06:2052 से 09:08:2052)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की

प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक उत्तम दशा होगी। आप भूमि खरीद सकते हैं और नये निवेश करेंगे। मुकदमों में आपको सफलता मिलेगी। आपके ज्ञान में वृद्धि होगी। अतिरिक्त आय के रास्ते खुलेंगे।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (09:08:2052 से 26:12:2052)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक स्वर्णिम दशा होगी। आपको बिना अधिक प्रयास के प्रत्येक चीज मिल जायेगी। आपको सुन्दर स्त्रियों की संगति में आनन्द प्राप्त करने के अवसर मिलेंगे। हालाँकि, अपने बड़ों याउपदेशकों की पत्नियों के साथ गलत काम करने के कारण आपको उनके शाप का सामना करना पड़ सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (26:12:2052 से 05:02:2053)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि आप राजनीति से जुड़े हैं, तो यह दशा उत्तम होगी। आप इस दशा में चुनावलड़ सकते हैं और राजनीतिक दायरों में ऊँचा पद प्राप्त कर सकते हैं। आपको अनैतिक तरीकों से भारी धन प्राप्त होगा। लेकिन ध्यान रहे, निर्दोष और गरीब लोगों को कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए, अन्यथा शनि की प्रत्यंतर्दशा के दौरान उनके शाप के कारण आपको अपने कर्मों का फल भुगतना पड़ेगा।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (05:02:2053 से 15:04:2053)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली कुछ दशाओं में प्राप्त सफलता को आप और मजबूती तथा ऊँचाई प्रदान करेंगे। यह आपके लिए आनन्द का समय है। आप अपने कर्तव्यों की अनदेखी करके ऐंद्रिय सुखों की प्राप्ति में रत रहेंगे। आपके लिए उन सुखों से दूर रहना बेहतर होगा। आपके जीवनसाथी और संतान के साथ प्रायः आपके झगड़े हो सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (15:04:2053 से 02:06:2053)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक कठिन दशा होगी। अधिक से अधिक धन कमाने का लालच आपको हताशा की तरफ ले जा सकता है। मित्र आपको धोखा दे सकते हैं। आपके सगे भाई बहनों के उपचार में भारी व्यय होने के कारण आपको दूसरों से धन मांगना पड़ सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (02:06:2053 से 04:10:2053)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक कष्टकारी दशा हो सकती है। आपके उदासीन रवैये के कारण जीवनसाथी भी आपके लिए चिंता का कारण बन सकती है। तलाक की संभावना से भी इंकार नहीं किया जा सकता है। हालाँकि, संतान की तरफ से आपको सकारात्मक सहयोग और सुख मिल सकता है।

शनि अर्न्तदशा (04:10:2053 से 13:06:2056)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपको सभी योजनाओं में असफलता और भारी परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आप निराशा, कफ और लकवा के शिकार हो सकते हैं। आपको धन हानि हो सकती है। आपमें उचित सोच काअभाव हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में शनि शुभ भी है, तो भी आपको शुभ परिणाम नहीं मिल सकते हैं। इस अशुभ प्रभाव से बचने के लिए आपको भगवान शिव और देवी पार्वती की अराधना करनी चाहिए।

शनि प्रत्यंतर्दशा (04:10:2053 से 09:03:2054)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। पिछली दशा से यह थोड़ी बेहतर दशा होगी। आप शनि की वस्तुओं से अतिरिक्त

आय की आशा कर सकते हैं। आप लोहे और स्टील के व्यापार में प्रगति कर सकते हैं। यदि आपका संबंधप्रकाशन या लेखन से है, तो यह दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (09:03:2054 से 26:07:2054)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशा में आपने जो कुछ खोया था, उसे इस दशा में प्राप्त करेंगे। अप्रत्याशित मदद सेआपको सफलता मिलेगी। संबंधी आपके कट्टर शत्रु बन सकते हैं। सम्पत्ति के मामलों में आप और आपके नजदीकी संबंधियों के बीच विवाद हो सकता है। संतान पढ़ाई में उत्तम परिणाम नहीं ला सकते हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (26:07:2054 से 21:09:2054)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। एक के बाद एक कई अप्रत्याशित घटनाओं के कारण आपके व्यय में बढ़ोत्तरी होगी।उदाहरण के लिए कई वैवाहिक समारोहों या जन्मोत्सवों के कारण आपको अपनी आय से अधिक व्यय करना पड़ेगा। आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (21:09:2054 से 04:03:2055)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आप कुछ हद तक आर्थिक संकट से बाहर निकलने में सक्षम होंगे। आप अपने घर का निर्माण कर सकते हैं। आपको विदेश यात्रा या वहाँ पर रोजगार मिलने के भी अवसर पैदा हो सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (04:03:2055 से 22:04:2055)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस दशा को आप कभी भूल नहीं सकते हैं। हर तरफ आप केवल समस्याओं से घिरे हो सकते हैं। बढ़े हुए खर्चों और विभिन्न रोगों से आपको कोई राहत नहीं मिल सकती है। आपका किसी काम को करने में मन नहीं लग सकता है। जीवन आपको बोझ लग सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (22:04:2055 से 13:07:2055)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है। अपने खराब स्वास्थ्य के कारण आप प्रायः डॉक्टरों के चक्कर लगा सकते हैं। आपकी आय में गिरावट आ सकती है। आर्थिक संकट के दौरान आपके माता–पिता आपका सहयोग नहीं कर सकते हैं। आप पूर्णतः अपने मित्रों पर निर्भर रहेंगे, जो समय आने पर आपको धोखा दे सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (13:07:2055 से 08:09:2055)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। चोरी या मुकदमे के कारण आपको सम्पत्ति की हानि हो सकती है। अनुमान लगानेकी प्रवृत्ति के कारण आपको धन हानि हो सकती है। आपको नशे और अन्य ऐंद्रिय सुखों की लत लग सकती है। ऋणदाता आपको परेशान कर सकते हैं। आगजनी के कारण सम्पत्ति के नष्ट होने की संभावना है। संतान भी आपकी अधिक चिन्ता का कारण बन सकती हैं।

राहु प्रत्यंतर्दशा (08:09:2055 से 03:02:2056)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आप विभिन्न रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। आपको अकथित दुखों का सामना करना पड़ सकता है। आपके नजदीकी मित्र भी आपकी मदद करने से इन्कार कर सकते हैं। श्री रूद्रम् मंत्र का जाप आपको भारी राहत पहुंचायेगा।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (03:02:2056 से 13:06:2056)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। अन्ततः ईश्वर आपको क्षमा कर देगा। पिछले नुकसानों की आप धीरे–धीरे भरपाई करेंगे। अधिक धन कमाने के एक के बाद एक अवसर आपको काफी अप्रत्याशित रूप से प्राप्त होंगे। आप भूमि और भवन में निवेश करेंगे।

केतु दशा (13:06:2056 से 14:06:2063)

वर्तमान समय में आपकी केतु की महादशा चल रही है और केतु आपकी कुण्डली में दसवें भाव में स्थित है। सामान्यतः केतु की दशा तब तक उत्तम नहीं हो सकती है, जब तक यह अपने उच्चस्थ भाव में ना हो,जहां पर परिणाम बहुत लाभकारी होंगे। आपके पिता के लिए यह अशुभ हो सकती है। आप त्वचा, कफऔर गुदा की बीमारियों से पीड़ित हो सकते हैं। सवारी के दौरान जानवर की पीठ से गिरने या वाहन चलाते समय दुर्घटनाग्रस्त होने से आप चोटिल हो सकते हैं। आपको अनुमानित निवेशों से सर्वथा दूर रहनाचाहिए। आप योजनाओं में असफलता के परिणामस्वरूप हताश हो सकते हैं। भगवान शंकर और नारायण की साथ–साथ पूजा आपको जीवन में संभावित विपदाओं से राहत दिलाएगी।

वर्तमान समय में आपकी केतु की महादशा चल रही है और केतु आपकी कुण्डली में मिथुन राशि में स्थित है। केतु की दशा सामान्यतः उत्तम होगी। इस दशा के दौरान आपके महान कार्य होंगे। आपको जीवनसाथी और संतान का सुख मिलेगा। सार्वजनिक कार्यों में आपकी गहरी रूचि होगी और आपको नाम तथा यश मिलेगा। हालाँकि भावनाओं और उदारता के साथ आपकी भौतिक प्रगति में बहुत अधिक रूचि होगी। आप जो भी धन कमायेंगे, उसका एक हिस्सा जरूरतमंदों और दुर्भाग्यशाली लोगों में बांट देंगे। आपएक महत्वपूर्ण पद को प्राप्त करेंगे। आप पवित्र संस्थानों की स्थापना करेंगे। हालाँकि आपको सावधान रहना चाहिए, क्योंकि अब तक अर्जित प्रतिष्ठा केतु की दशा समाप्त होने पर ईर्ष्या और कलंक के कारण खत्म हो सकती है।

केतु अन्तर्दशा (13:06:2056 से 10:11:2056)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपको अपनी योजनाओं में असफलता और भारी परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आप निराश हो सकते हैं तथा कफ एवं लकवा के शिकार हो सकते हैं। आपको धन हानि हो सकती है। आप उचित सोच से वंचित हो सकते हैं। यदि आपकी जन्मकुण्डली में शनि शुभ है, तो आपको शुभ परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। इस अशुभ दशा पर विजय पाने के लिए आपको भगवान शिव और देवी पार्वती की अराधना करनी चाहिए।

केतु प्रत्यंतर्दशा (13:06:2056 से 22:06:2056)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह दशा अति उत्तम होगी। आप धार्मिक मामलों में गहरी रूचि लेंगे। आपके घरेलू मामलों में प्रायः संबंधियों का दखल हो सकता है। आपको दूरस्थ स्थानों और विदेशों से भी शुभ समाचार मिल सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (22:06:2056 से 17:07:2056)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस दशा के दौरान आपका रूझान शारीरिक सुखों की प्राप्ति की तरफ अधिक हो सकता है। ऐसे अवसर पैदा हो सकते हैं कि आपके संबंध महिलाओं के साथ बन सकते हैं और आप नशे के आदी हो सकते हैं। आपके अपने जीवनसाथी से अत्मीय संबंध नहीं हो सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (17:07:2056 से 24:07:2056)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस दशा के दौरान, आप दुष्ट प्रकृति के लोगों से घिरे रह सकते हैं। अधीनस्थ औरवरिष्ठ लोग आपके लिए अधिक समस्यायें पैदा कर सकते हैं। आपका वर्तमान पद से स्थानान्तरण हो

सकता है। आपको गले, आँख और पेट के रोग हो सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (24:07:2056 से 06:08:2056)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके परिवार की महिलायें परेशानी का सामना कर सकती हैं। आपका चिकित्सा खर्च बढ़ सकता है। दंडस्वरूप आपका स्थानान्तरण हो सकता है। आपकी किसी एक बहन के पति को मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता या बहन का तलाक हो सकता है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (06:08:2056 से 14:08:2056)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा आपके लिए कष्टपूर्ण हो सकती है। आप परिस्थितियों के साथ सामंजस्यस्थापित करने की भरपूर कोशिश कर सकते हैं, लेकिन हो सकता है कि भाग्य आपका साथ ना दे। आप भारी मानसिक वेदना से गुजर सकते हैं। शत्रु आपको कष्ट पहुंचा सकते हैं। आपको वाहन नहीं चलाना चाहिए– जैसाकि आपको चोट लगने की संभावना है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (14:08:2056 से 06:09:2056)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह दशा उत्तम नहीं हो सकती है। आप अपने जीवन में अपने कठिन परिश्रम से प्रगति करने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन आपको उसका उचित फल नहीं मिल सकता है। अन्ततः आप निराश हो सकते हैं और गैरकानूनी तथा असामाजिक कामों में संलग्न हो सकते हैं। आपको अभियोगका सामना करना पड़ सकता है। आप बवासीर या भगन्दर रोग से पीड़ित हो सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (06:09:2056 से 26:09:2056)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। अस्थिर और प्रतिकूल दशाओं के कई महीनों के अन्तराल के बाद आप एक बेहतर दशा का सुख प्राप्त करेंगे। अप्रत्याशित क्षेत्रों से आपको आय हो सकती है। आपका विवाह हो सकता है या आपको संतान की प्राप्ति हो सकती है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (26:09:2056 से 19:10:2056)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस दशा के दौरान आपको एक के बाद एक कई अशुभ घटनाओं का सामना करनापड़ सकता है। आपके आस–पास के लोग आपके लिए अधिकतम परेशानियां पैदा कर सकते हैं। आपको अपमान और कलंक का सामना करना पड़ सकता है। इस मानसिक वेदना को सहन कर पाने में असक्षम होने के कारण आप मादक पदार्थों का सेवन कर सकते हैं। आपको गुदा, चर्म रोग और बुखार कीसमस्या हो सकती है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (19:10:2056 से 10:11:2056)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप इस दशा में त्रासदी पूर्ण समय से छुटकारा पा जायेंगे और एक बार पुनः जीवन का आनन्द प्राप्त करेंगे। मित्र और संबंधी आपकी मदद करेंगे। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपको पदोन्नति मिल सकती है। जीवनसाथी और अन्य महिलाओं से आपको लाभ होगा।

शुक्र अन्तर्दशा (10:11:2056 से 10:01:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा केदौरान, परिस्थितियां ऐसी बन सकती हैं, कि आपको अपने मोहल्ले में रहने वाले किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति की अप्रसन्नता का सामना करना पड़ सकता है और आप साधुजनों एवं उपदेशकों के शाप से प्रभावित हो सकते हैं। जीवनसाथी की बेतुकी बातों पर झगड़ा करने के कारण आप जीवनसाथी के सुख से वंचित हो

सकते हैं। हालांकि, आंतरिक यौन संबंधों के बनने के कारण वैवाहिक संबंध नहीं टूटेगा और वे आपको बार–बार आपस में बांधने में मदद करेंगी। संबंधी भी आपसे अलग नहीं होंगे। वे आपके घरेलू मामलों में दखल दे सकते हैं और आपके जीवन को कष्टमय तथा वेदनापूर्ण बना सकते हैं। आपको पुत्री की प्राप्ति होसकती है। अन्तर्दशा के मध्य में कुछ शुभ परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। यदि शुक्र बली है, तो अशुभ प्रभावों से थोड़ी राहत मिल सकती है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (10:11:2056 से 20:01:2057)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस दशा के दौरान आपका विवाह हो सकता है। आपको पुत्रियों की प्राप्ति हो सकती है। आप अतिरिक्त सांसारिक सुखों में संलग्न हो सकते हैं। आपको रतिजन्य रोग हो सकते हैं। आप दक्षिण दिशा की तरफ यात्रा पर जा सकते हैं, जहाँ आपको कष्ट हो सकते हैं। आपके जीवन में कोईअज्ञात व्यक्ति समस्या पैदा कर सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (20:01:2057 से 10:02:2057)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपमें भूख का अभाव हो सकता है। आप बुखार, पेट में दर्द, आँखों में परेशानी से ग्रस्त हो सकते हैं। परिवार की महिला सदस्यों से आपको कष्ट हो सकता है। आपके घर पर रिश्तेदारों केआने से परिवार में समस्यायें पैदा हो सकती हैं। आपके खिलाफ कुछ न्यायालिक मामले हो सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (10:02:2057 से 18:03:2057)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको आनन्द प्राप्त होगा। आपके घर पर कई शुभ समारोह आयोजित होंगे। आप कई छोटी यात्राओं पर जायेंगे। आपको महिलाओं से लाभ मिलेगा। आपकी माता कास्वास्थ्य नाजुक हो सकता है। कर्मचारियों से आपको समर्थन मिलेगा।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (18:03:2057 से 11:04:2057)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अशुद्ध रक्त से संबंधित रोग हो सकते हैं। आपका किसी अन्य स्त्री, जिसके साथ आपके घनिष्ठ संबंध हैं, के साथ आपका दूसरा विवाह हो सकता है। उस स्त्री से आपके लिएछुटकारा पाना बहुत मुश्किल होगा। यह संबंध कुछ समय तक जारी रह सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (11:04:2057 से 14:06:2057)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपके द्वारा पिछली दशा में किये गये अनैतिक कार्यों का परिणाम इस दशा में सामने आयेगा। आपकी मानसिक शान्ति पूर्ण रूप से भंग हो सकती है। आपके दिमाग में आत्महत्या का विचार भी आ सकता है। आपको चर्म रोग हो सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (14:06:2057 से 10:08:2057)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। बृहस्पति के आशीर्वाद से आप परेशानियों से छुटकारा पाने में सक्षम होंगे। आपको धीरे–धीरे मानसिक शान्ति मिलेगी और आप आराम महसूस करेंगे। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपकी पदोन्नति हो सकती है। यदि आप व्यापार कर रहे हैं, तो आप एक उत्तम व्यापार की आशा कर सकते हैं।

शनि प्रत्यंतर्दशा (10:08:2057 से 16:10:2057)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी आय में वृद्धि होगी, लेकिन आपको समस्याओं का सामना करना पड़

सकता है। शत्रु आपको नुकसान पहुंचाने की पूरी कोशिश करेंगे। आपको अपने ससुराल वालों के कारण कष्ट हो सकता है। आप न्यायालयिक मामलों में फंस सकते हैं। आप मामले को आगामी दशा तक टालने की कोशिश करें।

बुध प्रत्यंतर्दशा (16:10:2057 से 16:12:2057)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। पिछली दशा के दौरान जिन कष्टों का आपने सामना किया था, आप उनसे राहत पासकते हैं। आप कुछ सदाचारी लोगों के सम्पर्क में आयेंगे, जो आपको सही मार्ग दिखायेंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (16:12:2057 से 10:01:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस दशा के दौरान आपमें धार्मिक भावनायें जागृत होंगी। आप स्वयं को ईश्वर की उपासना में पूर्ण रूप से समर्पित कर देंगे। ज्ञान के नये क्षेत्रों का उद्‌भव होगा। आपकी बहन का विवाह होसकता है।

सूर्य अन्तर्दशा (10:01:2058 से 17:05:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपमें अपने परिवार और संबंधियों के लिए अरूचि उत्पन्न हो सकती है। आपका उपदेशकों के साथबहुधा विवाद हो सकता है। सरकारी अधिकारियों से आपको परेशानी हो सकती है। आप बुखार, जलनेया कफ की समस्या से ग्रसित हो सकते हैं। आपके परिवार में किसी का स्वास्थ्य बहुत खराब हो सकता है। यह आपका कोई भाई/बहन या उपदेशक या पिता हो सकता है। हालांकि, विभिन्न स्रोतों से आपको आय हो सकती है। विदेश यात्रा से भी आपको लाभ होने के संकेत हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (10:01:2058 से 16:01:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस दशा के दौरान आपका झुकाव पैतृक मामलों की तरफ हो सकता है। आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है। आपके और आपके पिता के भाई बहनों के साथ आपका संपत्तिविवाद हो सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (16:01:2058 से 27:01:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि आप अविवाहित हैं, तो आपका विवाह हो सकता है। आपके धन में वृद्धि, भूमिऔर भवन का क्रय/विरासत में प्राप्ति, वाहन की प्राप्ति और उनसे सुख, विभिन्न स्रोतों से आय और संतान का जन्म हो सकता है। आपका संबंध उत्तम लोगों से बना रहेगा। आप एक स्वस्थ्य जीवन व्यतीत करेंगे अथवा रोगों से मुक्ति मिल सकती है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (27:01:2058 से 03:02:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके काम से वरिष्ठ लोग प्रसन्न नहीं हो सकते हैं। आपको दण्ड के रूप में स्थानान्तरण का सामना करना पड़ सकता है या आप पर कोई छोटा जुर्माना लगाया जा सकता है। यदि आप व्यापारी हैं, तो आप अपने व्यापार क्षेत्र में अपनी पकड़ खो सकते हैं। आपको छोटी दुर्घटनाओं का सामना करना पड़ सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (03:02:2058 से 22:02:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। शत्रु आपको विचलित करने की कोशिश कर सकते हैं। आप उदर, कान या नेत्र रोग से ग्रस्त हो सकते हैं। आपके पिता से आपके संबंध उत्तम नंही हो सकते हैं। आपकी पैतृक संपत्ति

खो सकती हैं। आपके परिवार के सदस्यों का स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (22:02:2058 से 11:03:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आप उन सब चीजों को पुनः प्राप्त करेंगे, जिन्हें आपने पिछली कुछ दशाओं में खो दिया था। निवेश करने के लिए यह आपके लिए काफी अनुकूल समय है। आप भूमि या भवन और वाहन खरीद सकते हैं। हालाँकि, आपको अपनी संतान के स्वास्थ्य की अधिक देखभाल करनी पड़ सकती है। यदि आपकी कुण्डली में बृहस्पति अशुभ है, तो संतान हानि की संभावना हो सकती है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (11:03:2058 से 01:04:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह एक कष्टकारी दशा हो सकती है। आपके परिवार में प्रायः कलह हो सकते हैं।आपको ऐसा महसूस हो सकता है कि परिवार की मदद के लिए किये गये सारे प्रयास व्यर्थ हैं। दूसरे आपके विचारों को नहीं समझ सकते हैं, अपितु वे आपको ही घर में होने वाली परेशानियों के लिए जिम्मेदारठहरा सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (01:04:2058 से 19:04:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपका अधिक रूझान ज्ञान प्राप्ति की तरफ हो सकता है। आपको शास्त्रों के अध्ययन में रूचि हो सकती है। आप लेखन या प्रकाशन के द्वारा आय प्राप्त कर सकते हैं। आपज्योतिष विद्या के द्वारा भी धन कमा सकते हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (19:04:2058 से 26:04:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह एक उत्तम दशा होगी। आपके शत्रु परास्त होंगे। सरकार से आपको लाभ मिलेगा। आप अपने वर्तमान निवास स्थान से दक्षिण की तरफ तीर्थयात्रा पर जा सकते हैं। आप घर पर कई धार्मिक समारोहों का आयोजन करेंगे। आपको सावधान रहना चाहिए– जैसाकि आपके घर पर चोरी की संभावना हो सकती है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (26:04:2058 से 17:05:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यदि आप चिकित्सा से जुड़े हैं, तो यह दशा आपके लिए उत्तम होगी। आपका व्यापार समृद्धशाली होगा। विभिन्न परिक्षाओं में आप अनुकूल परिणामों की प्राप्ति की आशा कर सकते हैं। आपका अपने जीवनसाथी से वियोग हो सकता है।

चन्द्रमा अन्तर्दशा (17:05:2058 से 16:12:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपको धन आसानी से प्राप्त होगा, लेकिन यह जिस प्रकार से आयेगा, उसी प्रकार से खर्च हो सकता है। संतानों के कारण आप चिन्तित रह सकते हैं। नवजात पुत्र के कारण आपको अधिक परेशानी हो सकती है। आपके जीवनसाथी और नौकर को आपसे कुछ सहानुभूति होगी। यदि आप अविवाहित हैं, तोआपका विवाह हो सकता है। यदि आपकी माता इस दशा के दौरान किसी संतान को जन्म देती हैं, तो प्रसव समय आपकी माता को बहुत कष्ट हो सकता है। संक्षेप में, आप सुख और दुख समान अनुपात में अनुभव करेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति औसत स्तर की हो सकती है। यदि चंद्रमा बली है, तो आपको अधिक लाभकारी परिणाम प्राप्त होंगे।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (17:05:2058 से 04:06:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपकी माता को सबसे अधिक कष्ट हो सकता है। आपको उनके उपचार में अधिक धन व्यय करने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। यदि आप विवाहित हैं, तो आपकी माता और जीवनसाथी के बीच प्रायः झगड़े हो सकते हैं। ऐसी हालात में आप इस बात का निर्णय कर पाने में असक्षम हो सकते हैं, कि दोनों मे से किसका समर्थन करें। इस अशांत वातावरण के कारण आप अपने परिवार से दूर जाने की कोशिश कर सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (04:06:2058 से 17:06:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के परिणाम आपकी जन्मकुण्डली में मंगल की स्थिति पर निर्भर करेंगे। आपको भूमि, भवन और दूसरे प्रकार की सम्पत्तियों का लाभ होगा।

राहु प्रत्यंतर्दशा (17:06:2058 से 18:07:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह सम्पूर्ण दशा संशय और विवादों से भरी हो सकती है। आप किसी भी मामले में कोई निर्णय कर पाने में सक्षम नहीं हो सकते हैं। आपके आस–पास की हर चीज आपको आपके खिलाफ महसूस हो सकती है। आपमें आत्महत्या करने की प्रवृत्ति विकसित हो सकती है। आपकी बहन का स्वास्थ्य खराब हो सकता है या यदि वह विवाहित है, तो वापस घर आकर आपके साथ रह सकती है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (18:07:2058 से 16:08:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। केतु की सम्पूर्ण महादशा में यह सबसे उत्तम दशा होगी। आपको ऐसा प्रतीत होगाकि आपके चारों तरफ मौजूद हर चीज आपको आपके अनुकूल होते महसूस होगी। बिल्कुल अप्रत्याशित रूप से और अधिक धन कमाने के कई अवसर आपको मिलेंगे। आपको पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। आपको अपने बड़े भाइयों और परिवार के बड़े लोगों से आपके बिना कहे ही समर्थन प्राप्त होगा।

शनि प्रत्यंतर्दशा (16:08:2058 से 19:09:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। चूंकि आपने पिछली दशा के दौरान बहुत अधिक आनन्द प्राप्त किया है, अतः शनि इस दशा में आपके और सुखों पर रोक लगा सकता है। पिछली दशा के दौरान लाभकारी परिणामों का आनन्द प्राप्त करते समय हो सकता है, कि आपने कुछ पाप किये हों। अतः शनि बिल्कुल अप्रत्याशित रूप से आर्थिक और घरेलू दोनों मामलों में परिस्थितियों को उलट कर आपको दंड प्रदान कर सकता है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (19:09:2058 से 19:10:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। बुध इस दशा में आपकी मदद को आगे आयेगा। शनि के द्वारा आपको दिये गये दण्ड को बुध क्षमा कर देगा। आपको मुकदमों और अन्य न्यायालीय मामलों में सफलता मिलेगी। ननिहाल से आपको सम्पत्ति प्राप्त हो सकती है। यदि आपकी माता किसी रोग से ग्रस्त हैं, तो उनके स्वास्थ्य में सुधार होगा।

केतु प्रत्यंतर्दशा (19:10:2058 से 31:10:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के परिणाम आपकी कुण्डली में केतु की स्थिति पर निर्भर करेंगे। यदि केतु शुभ है, तो आप बहुत उत्तम परिणामों का आनन्द प्राप्त करेंगे। आपके घर पर वैवाहिक समारोह हो सकते हैं। आप धार्मिक परम्पराओं का निरन्तर पालन करेंगे।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (31:10:2058 से 06:12:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा ऐंद्रिय सुखों से पूर्ण हो सकती है। आप अपना धन नशा करने और अन्यवैषयिक सुखों को प्राप्त करने में बर्बाद कर सकते हैं। महिलायें आपकी प्रगति में बहुत बाधायें पैदा करसकती हैं। आपका अपने जीवनसाथी से अलगाव हो सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (06:12:2058 से 16:12:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको जंगली जानवरों से खतरा हो सकता है। आपके वरिष्ठ अधिकारी आपके काम से अप्रसन्न हो सकते हैं। अधीनस्थ भी समस्यायें पैदा करने की कोशिश कर सकते हैं। आपको कुछ असाध्य रोग जैसे कैंसर या एड्स होने का खतरा हो सकता है।

मंगल अन्तर्दशा (16:12:2058 से 14:05:2059)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपके परिवार के किसी सदस्य का स्वास्थ्य बहुत खराब हो सकता है। साँप काटने या आग सेजलन आदि की भी संभावना है। शत्रु आपको नुकसान पहुँचाने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन वे सफल नहीं होंगे। हालांकि, आप तनावग्रस्त रह सकते हैं। आपकी बहुमूल्य वस्तुओं की चोरी हो सकती है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (16:12:2058 से 25:12:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। आप भूमि और भवन या स्टील से आय प्राप्त कर सकते हैं। आपको व्यापार या व्यवसाय या रोजगार के संबंध में लम्बी यात्रायें करनी पड़ सकती हैं। आपको वाहनों में यात्रा करते समय सावधान रहना चाहिए।

राहु प्रत्यंतर्दशा (25:12:2058 से 16:01:2059)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा शंकाओं और अशांति से भरी हो सकती है। आपकी सभी योजनायें बहुतत्रासदिक ढंग से समाप्त हो सकती हैं। आपको अपनी दैनिक जरूरतों को पूरा करने के लिए भी धन का अभाव हो सकता है। सट्टों और नशे की लत के कारण आपकी आर्थिक स्थिति और भी दयनीय हो सकती है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (16:01:2059 से 05:02:2059)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको थोड़ा बेहतर दशा का सुख प्राप्त होगा। अपने वरिष्ठों के साथ पूर्व में पैदा हुए मतभेद मैत्रीपूर्ण ढंग से सुलझ जायेंगे। अधीनस्थ भी आपके साथ उचित तरीके से व्यवहार करेंगे और आपकी आज्ञा मानेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (05:02:2059 से 01:03:2059)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा आपकी अब तक की सबसे खराब दशा हो सकती है। आपके नये शत्रु बन सकते हैं और नयी समस्यायें पैदा हो सकती हैं। जितना आप परेशानियों को सलुझाने का प्रयत्न करेंगे,उतना ही वे बढ़ती जायेंगी। आपको मुंह और पेट के रोग हो सकते हैं। चिकित्सकीय उपचार में खर्चोंको आप पूरा कर पाने में असफल हो सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (01:03:2059 से 22:03:2059)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की

प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको रोगों से थोड़ी राहत मिलेगी। आपकी अतिरिक्त आय भी हो सकती है। सट्टों से आपको मध्यम लाभ होगा। सम्पत्ति के मामले में आपके अपने सगे भाई/बहनों के साथ प्रायः विवाद हो सकते हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (22:03:2059 से 31:03:2059)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान परिवार में झगड़े हो सकते हैं। आपके परिवार के सदस्यों के बीच परस्पर समझ का अभाव हो सकता है। हर एक सदस्य एक दूसरे को नीचा दिखाने और उसका शोषण करने की कोशिश कर सकता है। आपकी संतान का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आपके जीवनसाथी को खतरा हो सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (31:03:2059 से 24:04:2059)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आपको बुखार, सिरदर्द और रतिजन्य रोग हो सकते हैं। उपचार के लिए धन प्राप्त नहीं हो सकता है। सट्टों और नशे की लत के कारण आपकी आर्थिक स्थिति और भी दयनीय हो सकती है। कर्जदाता प्रायः आपसे अपने धन की वापसी की मांग कर सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (24:04:2059 से 02:05:2059)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा में एक के बाद एक समस्यायें आ सकती हैं। आपको अपने घर से दूर जाना पड़ सकता है। आप शीघ्रता से धन कमाने के उद्देश्य से आपके पास जितनी भी जमा पूंजी है, उसेकुछ सम्पत्तियों को खरीदने में लगा सकते हैं। लेकिन आपको उसमें हानि हो सकती है और आप इधर–उधर भटक सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (02:05:2059 से 14:05:2059)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है। आपके जीवनसाथी और ससुराल वालों के साथ प्रायः होने वाले आपके विवादों के कारण आपको कुछ मुकदमों का सामना करना पड़ सकता है। आप फिलहाल या तो अपने जीवनसाथी से अलग हो सकते हैं या उन्हें तलाक दे सकते हैं। आपकी संतानको कष्ट हो सकता है। आपके प्रेम प्रसंग असफल हो सकते हैं।

राहु अन्तर्दशा (14:05:2059 से 01:06:2060)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपको कोई ऐसा काम करना पड़ सकता है, जिसे आप करना पसन्द नहीं करेंगे। आपको किसी मामले में प्रायः सरकार की तरफ से चेतावनी या धमकी मिल सकती है। आपकी शत्रुओं और धूर्त लोगों से अनावश्यक बहस हो सकती है और आप न सिर्फ स्वयं के लिए, अपितु अपने परिवार के सदस्यों के लिए परेशानियों को निमंत्रण दे सकते हैं। आपके शरीर के किसी भाग को चोरों या शत्रुओं के कारण चोट पहुँचसकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (14:05:2059 से 11:07:2059)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपको किसी एकांत जगह पर रहने को विवश होना पड़ सकता है। आपने किसी नये स्थान पर बसने के समय जिन चीजों को इस्तेमाल करने के उद्देश्य से अपने पास एकत्र करके रखा था, उन्हें आपको औने–पौने दामों पर बेचना पड़ सकता है। लेकिन आपको नये स्थान पर भी अकथित दुखों का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप छात्र हैं, तो आपको आशा के अनुरूप परिणाम प्राप्त नहींहो सकते हैं। आपकी शिक्षा बाधित हो सकती है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (11:07:2059 से 31:08:2059)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप पूर्ण रूप से कुछ विशिष्ट देवी–देवताओं की उपासना में संलग्न रहेंगे। आप स्वयं के द्वारा किये गये गलत कार्यों का प्रायश्चित करेंगे। आपको साधुजनों से मिलने के कई अवसर मिलेंगे और आप उनसे मार्गदर्शन प्राप्त करेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (31:08:2059 से 31:10:2059)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। शत्रु आपके लिए समस्यायें पैदा कर सकते हैं। आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आपको गंभीर आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। ऋणदाता प्रायः आपसे अपने धन की वापसी की मांग कर सकते हैं। आप विनिमयों में संलग्न रह सकते हैं और परेशानियों में फंस सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (31:10:2059 से 24:12:2059)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप गलत और कपटपूर्ण कार्यों से धन प्राप्त कर सकते हैं। आप अपना धन नशा करने और अन्य शारीरिक सुखों को प्राप्त करने में बर्बाद कर सकते हैं। आप प्रायः अपने मित्रों से कर्ज ले सकते हैं और उसको वापस करने में असक्षम हो सकते हैं, फलस्वरूप आप इधर–उधर छुप सकते हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (24:12:2059 से 15:01:2060)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस दशा के दौरान आपका अपने परिवार के सदस्यों के साथ विवाद हो सकता है।आपके परिवार के सभी सदस्य आपके खिलाफ हो सकते हैं। हालाँकि, आप ऐसे विरोधों से सफलतापूर्वकबाहर निकल आयेंगे। संतान आपके लिए अधिक परेशानियां पैदा कर सकते हैं। आपको अपने माता–पिता का भी सहयोग नहीं मिल सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (15:01:2060 से 19:03:2060)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। एक लम्बे अन्तराल के बाद आपको समस्याओं से राहत मिलेगी। आप अपने परिवार की कुछ महिला सदस्यों की मदद से अपने पैरों पर खड़े हो पाने में सक्षम होंगे। आपको नौकरी में पदोन्नति मिल सकती है। मुकदमों में आपको सफलता मिलेगी।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (19:03:2060 से 08:04:2060)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यदि आप व्यापार या राजनीति से जुड़े हैं, तो यह दशा बहुत खराब हो सकती है। प्रतिस्पर्द्धा और ईर्ष्या आपके जीवन को बहुत दुखदायी बना सकती हैं। आपको सरकार से दंड मिल सकताहै।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (08:04:2060 से 10:05:2060)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके ससुराल के लोग आपके लिए समस्यायें पैदा कर सकते हैं। आपका अपनी माता के साथ उत्तम संबंध नहीं हो सकते हैं। आपकी माता का स्वास्थ्य भी खराब हो सकता है। इस दशाके दौरान आर्थिक मामलों में लिये गये आपके सभी निर्णय गलत हो सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (10:05:2060 से 01:06:2060)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको कोई भी शुभ परिणाम प्राप्त होने की संभावना ना के

बराबर है। आपको नया रोग और मानसिक कुंठा हो सकती है, जीवनसाथी और संतान से परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

गुरू अर्न्तदशा (01:06:2060 से 08:05:2061)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशाके दौरान, आपकी संतानों की पढ़ाई और व्यवसाय में सफलता आपको संतुष्ट बनायेगी। आपका धार्मिक कार्यों के प्रति रूझान होगा। धर्मपरायण तथा साधुजनों के सम्पर्क में आने के लिए आपको बहुत सारे अवसर प्राप्त होंगे तथा आप उनसे लाभ प्राप्त करेंगे। आप सरकार से समर्थन की आशा कर सकते हैं। आपको भूमि और भवन का सुख प्राप्त होगा। भूमि और सट्टों जैसे लॉटरी, शेयर आदि से आपको आय प्राप्त होगी। यदि आप संतानोत्पत्ति में सक्षम हैं तथा संतान की आशा कर रहे हैं, तो आपको भाग्यशाली पुत्र की प्राप्ति होगी।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (01:06:2060 से 17:07:2060)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप शास्त्रों और अन्य प्राचीन विज्ञानों को सीखने में रूचि लेंगे। आप ईश्वर की उपासना में रत रहेंगे। आपको ऐसा विश्वास होगा कि केवल वही आपको जीवन के कष्टों से बचा सकता है। आप भिक्षा बांटेंगे और साधुजनों का सत्कार करेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (17:07:2060 से 09:09:2060)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक संतोष की दशा होगी। अपने कठिन परिश्रम और भगवान में आस्था के साथ आप अधिक धन कमाने के नये रास्तों और उपायों को खोजेंगे। अपनी आय का बचा हुआ भाग आप गरीबों को देंगे। ऐसे लोगों से भी आपको आशीर्वाद मिलेगा।

बुध प्रत्यंतर्दशा (09:09:2060 से 27:10:2060)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अत्यंत उत्तम दशा है। आपको चहुंमुखी संपन्नता प्राप्त होगी। आपके सभीउमक्रम सफल होंगे। रोगों से आपको मुक्ति मिलेगी। आप अपने परिवार के साथ आनन्द भ्रमण और तीर्थयात्राओं पर जायेंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (27:10:2060 से 16:11:2060)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दौरान आपका धार्मिक कार्यों की तरफ अधिक झुकाव होगा। आप अपना अधिकतर समय भगवान की आराधना में बितायेंगे। आप अपने मोहल्ले में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति होंगे। हालाँकि, शत्रु आपके लिए परेशानियां पैदा करने की कोशिश कर सकते हैं। महिलायें भी आपके लिए समस्यायें खड़ी कर सकती हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (16:11:2060 से 12:01:2061)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपना अधिकतर समय शारीरिक सुखों की प्राप्ति में लगा सकते हैं। यद्यपि आपकी आय में वृद्धि होगी, फिर भी मुख्यतः अपनी उच्च जीवनशैली के कारण आपको हमेशा धन की कमीमहसूस हो सकती है। यदि आप अपनी जीवनशैली पर नियंत्रण नहीं रखेंगे, तो आपको आर्थिक संकट का सामना करना पड़ सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (12:01:2061 से 29:01:2061)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के परिणाम आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य की स्थिति पर निर्भर करेंगे।

आपकी आय में वृद्धि होगी और आपको सरकार से समर्थन मिलेगा। आपके पिता के स्वास्थ्य को अधिक देखभाल की आवश्यकता हो सकती है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (29:01:2061 से 26:02:2061)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। प्रायः आपके अपने माता–पिता और जीवनसाथी के साथ होने वाले झगड़े आपको घरेलू जीवन से दूर ले जा सकते हैं। आपको अपने सभी निवेशों में भारी नुकसान हो सकता है। आपको रक्त की अशुद्धता के कारण रोग हो सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (26:02:2061 से 18:03:2061)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणाम प्राप्त होंगे। आपको सरकार से समर्थनमिलेगा और आप एक ऊँचा पद प्राप्त करेंगे। आपके जीवनसाथी को खतरा हो सकता है या आपमें अलगाव हो सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (18:03:2061 से 08:05:2061)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक थोड़ी बेहतर दशा होगी। आप साधुजनों की संगति करेंगे और ईश्वर की आराधना में अपना समय व्यतीत करेंगे। आपको विरासत में पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होगी। आपकी संतान पढ़ाईमें उत्तम होगी और आपको खुशियां प्रदान करेंगी।

शनि अन्तर्दशा (08:05:2061 से 17:06:2062)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा केदौरान, आपको अप्रत्याशित दुखों का सामना करना पड़ सकता है। आपका विरोधियों के साथ अनावश्यकविवाद हो सकता है और आपके शरीर पर चोट लग सकती है। शत्रुओं से संघर्ष के कारण उत्पन्न क्रोध के कारण बाद में उससे होने वाली दुर्घटना से भी आपको चोट लग सकती है। नौकर भी आपके लिए समस्यायें पैदा कर सकते हैं। उनकी सेवाओं की घोर आवश्यकताओं के समय में वे आपको और आपके परिवार को छोड़कर जा सकते हैं। आपकी आय बाधित हो सकती है। विदेशियों से व्यवहार करते समय भी आपको गंभीर परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आपके स्तर और स्थिति में उतार–चढ़ाव हो सकता है। आपको कफ और शरीर के अंगों में कमजोरी, जैसे लकवा आदि की समस्या हो सकती है। पूरे शरीर में तीव्र पीड़ा हो सकती है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (08:05:2061 से 11:07:2061)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक कष्टकारी दशा हो सकती है। किसी दूरस्थ स्थान की यात्रा करते समय आपकी वस्तुएं चोरी हो सकती हैं या खो सकती हैं। शत्रु आपसे प्रतिशोध लेने की ताक में रह सकते हैं। आपको समाज में अपमान का सामना करना पड़ सकता है। केतु की वस्तुओं का नाश हो सकता है। आपकी योजनायें असफल हो सकती हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (11:07:2061 से 07:09:2061)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपको उत्तम परिणाम प्राप्त होंगे। आपकी आय में वृद्धि होगी। आपको खोई हुई स्थिति पुनः प्राप्त हो सकती है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (07:09:2061 से 30:09:2061)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह दशा तनाव, विरोधों और झगड़ों से पूर्ण हो सकती है। आपको ऐसे किसी

अपराध के लिए दोषी करार दिया जा सकता है, जो आपने किया ही नही है। आप किसी सामाजिक कार्य की शुरूआत कर सकते हैं, लेकिन आपको उसमें बदनामी मिल सकती है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (30:09:2061 से 07:12:2061)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक बेहतर दशा होगी। आप शारीरिक सुखों की प्राप्ति में तल्लीन हो सकते हैंतथा आपको रतिजन्य रोग या ब्लैडर में सूजन हो सकती है। महिलायें आपका शोषण कर सकती हैं औरआपसे धन की वसूली कर सकती हैं। आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। चिकित्सकीय इलाज में आपका व्यय बढ़ सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (07:12:2061 से 27:12:2061)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह एक कठिनाईयों से पूर्ण दशा हो सकती है। आपको दुर्घटना या किसी ऊँचे स्थान से गिरने के कारण शारीरिक चोट लगने का भय है। आपको मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (27:12:2061 से 30:01:2062)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी सारी योजनायें असफल हो सकती हैं। आपके नजदीकी मित्र आपको धोखा दे सकते हैं। यदि कोई योजना पूरी होने वाली होगी तो वह भी अदृश्य परिस्थितियों जैसे साझीदार की मृत्यु या प्राकृतिक आपदाओं आदि के कारण ध्वस्त हो सकती है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (30:01:2062 से 22:02:2062)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक कष्टकारी दशा हो सकती है। आपको आलौकिक आत्माओं के कारण विभिन्न खतरनाक रोग हो सकते हैं। उनका उपचार नवीन दवाइयों से संभव नहीं हो सकता है। आपका जीवनसाथी आपको छोड़ सकता है। आप अपनी संतान को कष्ट दे सकते हैं।

राहु प्रत्यंतर्दशा (22:02:2062 से 24:04:2062)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह एक कष्टकारी दशा हो सकती है। आपको अपने रोगों का इलाज कराने के लिए डॉक्टरों के चक्कर काटने पड़ सकते हैं, लेकिन आपको राहत प्राप्त होने की संभावना बहुत कम है। आप कई तांत्रिकों के पास उपचार के लिए जा सकते हैं। आपको इसके लिए धन उधार लेना पड़ सकता है। ऋणदाता आपको परेशान कर सकते हैं। आपको कुछ असाध्य चर्म रोग हो सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (24:04:2062 से 17:06:2062)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा में आपको अपनी सभी परेशानियों से राहत मिलेगी। अप्रत्याशित स्रोतों सेआपको अतिरिक्त आय प्राप्त होगी। आपको अपने जीवनसाथी और संतान का सहयोग मिलेगा। आप उच्च स्तर के ज्ञान को पाने का प्रयास करेंगे।

बुध अन्तर्दशा (17:06:2062 से 14:06:2063)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम होगी। आपको योग्य संतानों की प्राप्ति हो सकती है। आपको उनसे सुख और खुशियां मिलेंगी। आपको भूमि और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा उत्तम मित्रों की संगति का आनन्द प्राप्त होगा। आपकी आय भी बढ़ेगी। आपका दिमाग स्थिर होगा और विभिन्न प्रकार से आप आनन्द प्राप्त करेंगे। हालांकि, आपको मवेशियों और कृषि के नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। अतः आपको कोई भी मवेशी जानवर या कृषि भूमि नहीं रखनी चाहिए। इस अन्तर्दशा के समाप्त होने तक आपको उससे दूर

रहना चाहिए। आप भवन रख सकते हैं और उनको किराये पर देकर बिना किसी परेशानी के उनसे उत्तम आय प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपके वरिष्ठ अधिकारी आपके उत्तम काम की प्रशंसा करेंगे और आपको समय से पहले पदोन्नति मिल सकती है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (17:06:2062 से 07:08:2062)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको पूरी तरह से बदली हुई अनुकूल परिस्थितियां मिलेंगी। आप अपनेकठिन परिश्रम से धन कमायेंगे। आपको सट्टे से कुछ लाभ या भवन संपत्ति से आय प्राप्त होगी। मित्र और संबंधी आपका सहयोग करेंगे। आप कोई नया उपक्रम शुरू कर सकते हैं, जिसमें आपको लाभ होगा।

केतु प्रत्यंतर्दशा (07:08:2062 से 28:08:2062)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके उमक्रमों में आपको अपने विश्वसनीय लोगों के द्वारा अपनाये गये कपटपूर्ण तरीकों के कारण कोई आघात लग सकता है। किसी समय आपको गंभीर आर्थिक संकट का सामना करना पड़ सकता है। हालाँकि, आपको समय पर अपने माता–पिता या ससुराल वालों का सहयोग प्राप्त होगा।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (28:08:2062 से 27:10:2062)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। अपने उपक्रमों में स्थायित्व की आशा करने का यह वास्तविक समय है। आपका व्यापार या रोजगार फले–फूलेगा। आपके घर पर कई शुभ समारोह होंगे। आपका विवाह भी हो सकता है।इस दशा में शुरू की गयी आपकी कोई योजना अगली महादशा, जो कि शुक्र की होगी, में पूर्ण रूप से फलित होगी।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (27:10:2062 से 15:11:2062)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा सहजतापूर्ण होगी। आप अपनी स्थिति में सुधार करेंगे। आपको आर्थिक और स्वास्थ्य संबंधी अधिक समस्यायें नहीं हो सकती हैं। आपको सरकारी अधिकारियों से सहयोग मिल सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (15:11:2062 से 15:12:2062)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप पूर्व में किये गये उपक्रमों के सफलतापूर्वक पूरा होने की आशा कर सकते हैं।यदि आप छात्र हैं, तो परिक्षाओं में अनुकूल परिणामों की आशा कर सकते हैं। यह दशा वास्तविक आनन्द की होगी। इस दशा के अधिकतर समय के दौरान आपको शांति प्राप्त होगी। आपको ननिहाल की संपत्ति भी प्राप्त हो सकती है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (15:12:2062 से 05:01:2063)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के परिणाम आपकी जन्मकुण्डली में मंगल की स्थिति पर निर्भर करेंगे। यदि मंगल शुभ है, तो आप विदेश यात्रा पर जायेंगे और धन, नाम तथा यश कमायेंगे। अन्यथा, आपको भिन्न तरीकों से परेशानी उठानी पड़ सकती है। यात्रा के दौरान आपको सावधान रहना चाहिए।

राहु प्रत्यंतर्दशा (05:01:2063 से 28:02:2063)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको बहुत सारा धन प्राप्त होगा और आप विभिन्न तरीकों से आनन्द प्राप्त करेंगे। हालांकि,आपको गुदा में खुजली जैसे रोग हो सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (28:02:2063 से 17:04:2063)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह बहुत उत्तम दशा होगी– विशेषकर यदि आप व्यापारी हैं। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो पदोन्नति की आशा कर सकते हैं। आप विभिन्न प्रतियोगी परिक्षाओं में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। हालाँकि, आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है। आपकी कुण्डली में बृहस्पति नीचस्थ है, आपके पिता को मृत्युतुल्य कष्ट भी हो सकता है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (17:04:2063 से 14:06:2063)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस दशा के दौरान आपको मिले जुले परिणाम प्राप्त होंगे। आपके दैनिक जीवन में प्रायः उतार–चढ़ाव हो सकते हैं। शत्रुओं से बहुत विवाद आपकी मानसिक शांति को भंग कर सकता है। संबंधी आपके घर पर आकर समस्यायें पैदा कर सकते हैं।

शुक्र दशा (14:06:2063 से 14:06:2083)

वर्तमान समय में आपकी शुक्र की महादशा चल रही है और शुक्र आपकी कुण्डली में पांचवें भाव में स्थित है। आपको भारी धन का स्वामित्व प्राप्त होगा। आप कई लोगों की परवरिश करेंगे।

वर्तमान समय में आपकी शुक्र की महादशा चल रही है और शुक्र आपकी कुण्डली में मकर राशि में स्थित है। शुक्र की अपनी दशा के दौरान, आप शत्रुओं का विनाश करेंगे। आपकी सहनशीलता बढ़ेगी। शारीरिक दुर्बलता तथा कफ के कारण आपको रोग हो सकते हैं। इस पूरी दशा के दौरान आप पारिवारिक मामलों केकारण चिंतित हो सकते हैं।

शुक्र अन्तर्दशा (14:06:2063 से 13:10:2066)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा केदौरान, आपको अपने जीवनसाथी से भूरपूर सहयोग और खुशियों के साथ–साथ दूसरी स्त्रियों से भी सुखऔर आनन्द मिलेगा। पिछली अन्तर्दशा की तुलना में आप साफ कपड़े पहनने में विशेष रूचि लेंगे। आपको विभिन्न लोगों से भी वस्त्र और आभूषण उपहार के रूप में मिल सकते हैं। आप विभिन्न लोगों के सहयोग से धन अर्जित कर सकते हैं। दवाओं से आप आय प्राप्त करेंगे। सामान्यत: आपको विभिन्न स्रोतों से धन प्राप्त होगा। लेकिन आय का एक बड़ा हिस्सा मौज मस्ती और मनोरंजन में खर्च हो सकता है। आप वाहन भी प्राप्त कर सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (14:06:2063 से 03:01:2064)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। अधिकतर लोग इस दशा की प्रतीक्षा करते हैं। आपको बहुत शुभ परिणाम मिलेंगे। यदि शुक्र नीचस्थ है, तो भी आपको अति उत्तम परिणामों का आनन्द प्राप्त होगा। आपको एक पुत्री की प्राप्ति हो सकती है या आपका विवाह हो सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (03:01:2064 से 04:03:2064)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपको शक्ति और अधिकार प्राप्त होगा। अधीनस्थ पूरी तरह से आपके नियंत्रण में होंगे। आपको विरासत में पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होगी। आपका स्थानान्तरण या पदोन्नति हो सकती है या आपके रोजगार में बदलाव हो सकता है। आपको रक्त की खराबी के कारण रोग हो सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (04:03:2064 से 13:06:2064)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आप अपना अधिकतर समय ऐंद्रिय सुखों की प्राप्ति में बितायेंगे। यद्यपि आपकी आयविभिन्न स्रोतों से बढ़ेगी, लेकिन आप उसे ऐंद्रिय सुखों की प्राप्ति में खर्च कर सकते हैं। आपकी शारीरिक सुखों की प्राप्ति की लालसा आपको महिलाओं से संबंध बनाने के लिए उत्साहित करेगी और

आप ऐसी महिलाओं पर धन व्यय करेंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (13:06:2064 से 23:08:2064)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपके वर्तमान व्यापार या रोजगार में बदलाव हो सकता है। आपके कठिन परिश्रम और कार्य के प्रति गंभीरता के कारण आपका मालिक आपकी योग्यता को पहचान कर आपको रोजगार में वांछित पदोन्नति प्रदान करेगा। आपकी शक्ति और आपके अधिकार में वृद्धि होगी। विपरीत लिंग के लोगों के साथ संबंध होने के कारण आपको बदनामी का सामना करना पड़ सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (23:08:2064 से 22:02:2065)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपको सरकार और अपने मालिक से कष्ट हो सकता है। अधीनस्थ अधिक परेशानियां पैदा करने की कोशिश कर सकते हैं। आपका अपने जीवनसाथी के साथ प्रायः झगड़ा हो सकताहै, जिससे आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है। आप अपने परिवार पर धन व्यय करने के बजाय उसे ऐंद्रिय सुखों की प्राप्ति में खर्च कर सकते हैं, जो झगड़े का मूल कारण हो सकता है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (22:02:2065 से 03:08:2065)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आप विभिन्न स्रोतों से आय प्राप्त करेंगे। आपका व्यवहार अधिक परिपक्वतापूर्ण होगा। यद्यपि आप अपने दोषों से परिचित होंगे, फिर भी उन्हें पूरी तरह से दूर करने में असमर्थ हो सकते हैं। आपका अधिक प्रतिष्ठित पद पर स्थानान्तरण हो सकता है या आपको पदोन्नति मिल सकती है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (03:08:2065 से 12:02:2066)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आर्थिक मामलों के संबंध में यह एक अति उत्तम दशा होगी। आपको अपने सभी कामों में सहज ही सफलता प्राप्त होगी। आप किसी महिला मित्र के सहयोग से नया उपक्रम शुरू करेंगे और उससे उत्तम आय प्राप्त करेंगे। आप अपने जीवनसाथी के अलावा किसी अन्य महिला के साथ शारीरिक संबंध स्थापित कर सकते हैं या आप किसी अन्य स्त्री से पहले जीवनसाथी के रहते हुए विवाह कर सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (12:02:2066 से 03:08:2066)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपने जिन उपक्रमों को पहले से शुरू कर रखा है, उनमें सुधार होगा। मित्र और संबंधी आपकी मदद करेंगे। इस पूरी दशा के दौरान आप व्यस्त रहेंगे। आपका विवाह हो सकता है या आपको संतान की प्राप्ति हो सकती है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (03:08:2066 से 13:10:2066)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह कुछ कष्टकारी दशा हो सकती है। आपको व्यापार और सट्टों में हानि हो सकती है। आप अपने नुकसान की भरपाई करने के लिए पुनः सट्टेबाजी में रत हो सकते हैं, जिससे आपको फिर से हानि हो सकती है। आप आत्महत्या करने का विचार कर सकते हैं।

सूर्य अन्तर्दशा (13:10:2066 से 13:10:2067)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा केदौरान, संबंधियों के कारण आपको भारी धन हानि हो सकती है। संबंधियों पर अंधविश्वास आपकी परेशानी का कारण हो सकता है। आपको उनके कपट का ज्ञान तब होगा, जब आप लगभग हर चीज खो

चुके होंगे। अतः आपको इस पूरी अन्तर्दशा के दौरान उन पर भरोसा करते समय बहुत अधिक सावधान रहना चाहिए। वे आपकी हर वस्तु को, जो उनको मिलेगी, हड़प सकते हैं। आप गले, नाक या सीने और उदर के रोगों से ग्रसित हो सकते हैं। आपकी आँखों में संक्रमण हो सकता है। बड़े और विशिष्ट लोग आपकी कार्य शैली को नापसन्द कर सकते हैं। सहकर्मी आपसे ईर्ष्या कर सकते हैं। आपके नये शत्रु बन सकते हैं। यदि आप व्यापार कर रहे हैं, तो आपको विभिन्न क्षेत्रों में कड़ी स्पर्धा का सामना करना पड़ सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (13:10:2066 से 01:11:2066)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपको अधिक शक्ति और अधिकार प्राप्त होंगे। क्लबों, मनोरंजन के स्थानों या समितियों में कुछ प्रतिष्ठित पद पर आसीन होकर आप सम्मान प्राप्त करेंगे। आप इन संस्थाओं के द्वारा जनसमुदाय पर नियंत्रण स्थापित करेंगे। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपको पुरस्कार मिल सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (01:11:2066 से 01:12:2066)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। दूरस्थ स्थानों से आपको शुभ समाचार मिलेंगे। आपका अधिक प्रतिष्ठित पद पर स्थानान्तरण हो सकता है या आपको पदोन्नति मिल सकती है। आपके पिता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। जिन महिलाओं के साथ आपके विवाहेत्तर संबंध थे, उनसे आपका अनावश्यक झगड़ा हो सकता है, जिससे आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (01:12:2066 से 22:12:2066)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। बाहरी लोगों के साथ सौदा करते समय आपको सावधान रहना चाहिए– जैसाकि वेआपको झूठे मामलों में फंसा सकते हैं। आप जहाँ पर नौकरी कर रहे हैं, वहाँ पर भी आपको सोच समझकर बोलना चाहिए। आपको स्वयं कोई वाहन नहीं चलाना चाहिए।

राहु प्रत्यंतर्दशा (22:12:2066 से 15:02:2067)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। शत्रु आपके दैनिक कार्यों में बाधा उत्पन्न करने की कोशिश करेंगे। कोई आपको नहीं समझेगा। आपने जिस काम को किया ही नहीं है, उसके लिए आपको दोषी ठहराया जा सकता है। आपके जीवनसाथी के साथ आपके संबंध मधुर नहीं हो सकते हैं। विपरीत लिंग के लोगों के साथ व्यवहार करते समय आपको सावधान रहना चाहिए।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (15:02:2067 से 05:04:2067)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। अन्ततः आप अधिकतर समस्याओं से राहत पायेंगे। आपको आय अर्जित करने के कई अवसर मिलेंगे। आप एक उचित मात्रा में अपना बैंक कोष कायम करने में सक्षम होंगे। रोगों से भी आपको राहत मिलेगी। आपका विवाह हो सकता है या आपको संतान की प्राप्ति हो सकती है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (05:04:2067 से 02:06:2067)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है। यदि आप उनसे दूर रह रहे हैं,तो आपको अपने पिता के पास जाकर रहने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। इस दशा के दौरान आपके पिता को मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है। खर्चों को नियंत्रित करना कठिन हो सकता है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (02:06:2067 से 23:07:2067)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। राजनीति से जुड़े लोग और व्यापारी अधिक अनुकूल परिणामों की आशा कर सकते हैं। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपको पदोन्नति मिल सकती है। आपको महिलाओं से आर्थिक मदद और सहयोग मिलेगा। आप साझेदारी में कोई व्यापार कर सकते हैंऔर उसमें आपको हानि हो सकती है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (23:07:2067 से 14:08:2067)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यद्यपि रोजमर्रा के खर्चों को निपटाने के लिए आपको गंभीर आर्थिक समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा, फिर भी कर्जदाता पिछली दशाओं के दौरान आपको अपना उधार दिया हुआ धनवापस लेने के लिए लगातार परेशान कर सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (14:08:2067 से 13:10:2067)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपकी अधिकतर कामनायें पूरी होंगी। आपके अधिकतर कार्य सफल होंगे। आपकोसरकार से आर्थिक मदद और सहयोग मिलेगा। आपकी बहन या पुत्री का विवाह हो सकता है। आपके शत्रु परास्त होंगे।

चन्द्रमा अन्तर्दशा (13:10:2067 से 14:06:2069)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आप सिर, दाँत, नाखून, उदर या लिवर के रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। नाखूनों में किसी प्रकार की विकृति हो सकती है। कीटाणुओं के संक्रमण या किसी दुर्घटना के कारण आपके नाखूनों को हानि पहुँच सकती है या उनके संक्रमण के कारण पेट में कीड़े पड़ सकते हैं। आपको पीलिया भी हो सकता है।आपको कुत्ता, बन्दर या कोई जंगली जानवर जैसे बाघ, बिल्ली आदि के काटने का भय हो सकता है। आपके व्यय आय से अधिक हो सकते हैं। आपको प्रचूर धन प्राप्त होगा, लेकिन व्यय हो जायेगा और आपऋणी हो सकते हैं। वाहनों और महिलाओं के द्वारा आपको धन प्राप्त हो सकता है। आप स्त्रियों के सम्पर्क में आ सकते हैं, जिन्हें व्यापारिक या आर्थिक सलाह आदि के रूप में आपकी मदद की आवश्यकता हो सकती है। इस मदद के दौरान आपके साथ–साथ उनको भी लाभ होगा। इस दौरान आपके उनसे संबंध भी बन सकते हैं। परिणामस्वरूप आप और आपके जीवनसाथी या परिवार के सदस्यों के बीच में कलह हो सकती है। आपमें ईश्वर के प्रति गहरी भक्ति भावना विकसित होगी और आप भगवान की आराधना करेंगे। आप कई धार्मिक कार्यों जैसे हवन, यज्ञ और अन्य सात्विक कार्य करेंगे। यदि आप युद्ध मेंसंलग्न हैं, तो आपको सफलता मिलेगी और शत्रु को परास्त कर आप लाभ प्राप्त करेंगे।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (13:10:2067 से 03:12:2067)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक आनन्ददायक दशा होगी। आपके अपने जीवनसाथी और माता–पिता से संबंध मधुर होंगे। आप तीर्थयात्रायें करेंगे और साधुजनों का आशीष प्राप्त करेंगे। आपके घर पर कई शुभ समारोह आयोजित होंगे। आप भूमि और आभूषण खरीदेंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (03:12:2067 से 08:01:2068)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। अप्रत्याशित स्रोतों से आपको अतिरिक्त आय प्राप्त होगी। आय बढ़ने के साथ आपके व्यय भी बढ़ सकते हैं। आपके अपने जीवनसाथी के साथ संबंध मधुर नहीं हो सकते हैं। संतान आपके हठी रवैये के कारण परेशान हो सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (08:01:2068 से 08:04:2068)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की

प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप भागीदारी में एक नये व्यापार को शुरू कर सकते हैं। आपका साझीदार आपको धोखा दे सकता है या ब्लैकमेल कर सकता है। अन्ततः आप भारी मात्रा में धन गवाँ सकते हैं। दूसरी तरफ आप अपने रोजगार या शौक के क्षेत्र में नाम व यश प्राप्त करेंगे।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (08:04:2068 से 28:06:2068)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। विभिन्न स्रोतों से आपको भारी मात्रा में धन प्राप्त होगा। यह प्रत्यक्ष रूप से आपका या किसी और के अधिकार में हो सकता है। आप फिलहाल उस धन काउपयोग करने में सक्षम होंगे। आपका विवाह हो सकता है या आपको संतान की प्राप्ति हो सकती है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (28:06:2068 से 03:10:2068)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। संतान के लिए यह दशा उत्तम नहीं हो सकती है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (03:10:2068 से 28:12:2068)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप नया व्यापार शुरू कर सकते हैं। आप लेखन, प्रकाशन या पुस्तकें बेचकर आय प्राप्त कर सकते हैं। आप ईश्वर की पूजा में गहन रूप से रत रहेंगे। यह आपके ज्ञान और बुद्धि को बढ़ायेगा। संबंधी आपके घर पर आयेंगे और व्यवधान पैदा कर सकते हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (28:12:2068 से 02:02:2069)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक कष्टकारी दशा हो सकती है। संबंधी आपके शत्रुओं से हाथ मिला सकते हैं और आपको अधिकतम हानि पहुंचाने का प्रयास कर सकते हैं। आप आर्थिक संकटों में घिर सकते हैं। आप अपने मित्रों से धन उधार ले सकते हैं और उसे वापस करने में असक्षम हो सकते हैं। ऐसे मित्र आपकेशत्रु बन सकते हैं। आपको उदर, सीने और पैरों के रोग हो सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (02:02:2069 से 14:05:2069)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अति उत्तम दशा होगी। आप सुन्दर लड़कियों की संगति का सुख प्राप्त करेंगे। महिला मित्रों से आपको धन प्राप्त होगा और भूमि एवं भवन खरीदेंगे या शेयर व्यापार करके उचित लाभ प्राप्त करेंगे। रोगों से आपको राहत मिलेगी।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (14:05:2069 से 14:06:2069)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि आप राजनीति से जुड़े हैं, तो यह एक कठिन समय हो सकता है। आपके शत्रु आपका भारी नुकसान कर सकते हैं। आपकी संपत्ति का नाश हो सकता है।

मंगल अन्तर्दशा (14:06:2069 से 14:08:2070)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आप सोने और उससे बने आभूषण तथा तांबे की वस्तुओं में गहरी रूचि ले सकते हैं। आप स्वर्ण,ताम्र या लौह भस्म से बनी औषधियों का सेवन कर सकते हैं या उनका वितरण कर सकते हैं या आपधातुओं से संबंधित कोई शोध कार्य कर सकते हैं। लेकिन आपको सफलता अगली आने वाली राहु की अन्तर्दशा में मिलेगी। आप भूमि और सम्पत्तियां प्राप्त कर सकते हैं या उनको बेच कर लाभ अर्जित कर सकते हैं। चंद्रमा के अन्तर्दशा के दौरान आपको उन स्त्रियों से कोई गलतफहमी हो सकती है, जिनके साथ आपको अतिरिक्त लगाव है। आपको स्त्री समुदाय से एक प्रकार की नफरत हो सकती है– विशेषकरऐसी महिलाओं के प्रति संशय के अहसास के कारण। आपको सम्मान प्राप्त होगा तथा विभिन्न

स्रोतों से आप आनन्द प्राप्त करेंगे। आप दूसरों की गलतियां ढूंढ सकते हैं, जिसके कारण प्रायः आपका उनसे तनाव हो सकता है। आप गतिविधियों के प्रत्येक क्षेत्र में दक्षता हासिल करना चाहेंगे और निराश हो सकते हैं। आप रक्त चाप, बवासीर या कफ और दिमाग से संबंधित रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। रक्त की अशुद्धता के कारण भी समस्यायें हो सकती हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (14:06:2069 से 09:07:2069)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। वरिष्ठ अधिकारी आपका व्यावसायिक भविष्य बर्बाद करने को तत्पर रह सकते हैं। सहकर्मी आपको नीचा दिखाने का हर संभव प्रयास कर सकते हैं। आपको किसी व्यक्ति की मदद नहीं मिलेगी। हालाँकि, ईश्वर की कृपा से आप बिना किसी नुकसान के इन सबसे बाहर निकलने में सक्षम होंगे।

राहु प्रत्यंतर्दशा (09:07:2069 से 10:09:2069)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आप एक के बाद एक विभिन्न रोगों, जैसे बुखार, पेचिश, चर्म रोगों आदि से ग्रस्त हो सकते हैं। हालाँकि, आप दैनिक और चिकित्कीय खर्चों को पूरा करने के लिए आवश्यक धन संग्रह करने में सक्षम होंगे।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (10:09:2069 से 06:11:2069)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको रोगों और कर्जों से राहत मिलेगी। आपको अतिरिक्त धन कमाने के अवसरप्राप्त होंगे। आपको बिना धन की लालसा के धन प्राप्त होगा। लेखन, प्रकाशन या ज्योतिषीय परामर्शआदि के द्वारा आपको आय प्राप्त होगी। आपको पूर्ण मानसिक शांति मिलेगी।

शनि प्रत्यंतर्दशा (06:11:2069 से 13:01:2070)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपकी परिस्थितियों में पूर्ण बदलाव आयेगा। आप इस अचानक विषम बदलाव का कारण स्वयं भी नहीं जान सकते हैं। यदि आप महत्वपूर्ण और अधिकार प्राप्त पद पर आसीन हैं, तो आप उसे भी खो सकते हैं। आप ईर्ष्यालु सहकर्मियों और वरिष्ठों के कारण शिखर से रसातल पर आ सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (13:01:2070 से 14:03:2070)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। शत्रु अपने कदम पीछे खींचने पर बाध्य हो जायेंगे। आपको अस्थिर करने में जिन शत्रुओं ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी, उनसे आप बदला लेने में सक्षम होंगे। आप भारी शक्ति के साथ अधिकार और शक्ति की पुनर्स्थापना करेंगे। आपका व्यापार समृद्ध होगा।

केतु प्रत्यंतर्दशा (14:03:2070 से 08:04:2070)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक मंद दशा होगी। आपको अधिकतर समस्यायें नहीं हो सकती हैं। लेकिन जीवन साधारण होगा। आप नयी भूमि और भवन खरीदेंगे।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (08:04:2070 से 18:06:2070)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आप शारीरिक सुखों की प्राप्ति में रत रहेंगे। आपके जीवनसाथी आपको छोड़ सकती हैं। कुछ मामलों में ऐसा देखने में आया है, कि आप और आपके जीवनसाथी साथ होते हुए भी अन्य लोगों के साथ मौज–मस्ती कर सकते हैं। दोनों एक दूसरे के काम में

दखल नहीं देंगे। दूसरे शब्दों में आप दोनों अपनी स्वतंत्रता का आनन्द प्राप्त करेंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (18:06:2070 से 09:07:2070)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके शरीर में चोट लग सकती है या शरीर का कोई भाग जल सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (09:07:2070 से 14:08:2070)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको रोगों और कष्टों से राहत मिलेगी। आप दवाओं और द्रवों से लाभ प्राप्त करेंगे। डॉक्टरों के लिए यह अति उत्तम दशा है। पानी देकर भी वे अपने मरीजों का उपचार करने में सक्षम होंगे। आप जीवन का पूर्ण आनन्द प्राप्त करेंगे। जीवनसाथी और संतान भी आपका पूरा सहयोग करेंगे।

राहु अन्तर्दशा (14:08:2070 से 14:08:2073)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में राहु की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपको अप्रत्याशित धन का लाभ हो सकता है। आपको अपनी खोई हुई सम्पत्ति वापस प्राप्त करने के अवसर मिलेंगे। संतान की अध्ययन और रोजगार में सफलता आपको प्रसन्नता प्रदान करेगी। आपको सबसे सम्मान मिलेगा। शत्रुओं को आप परास्त करेंगे। यदि अब तक कोई अनिर्णित सम्पत्ति विवाद है, तो इस अन्तर्दशा के अन्त तक वह सुलझ जायेगा। हालांकि, आपको उस सम्पत्ति का सुख अगली अन्तर्दशा जो कि बृहस्पति की होगी, उसके दौरान मिलेगा। आपको चोट लगने का तथा आग से खतरा हो सकता है। चोर आपके लिए परेशानी का कारण बन सकते हैं। यह खतरा आपको आर्थिक सौदों में हो सकता है।आपको किसी प्रकार की असुरक्षा और दंड का भय हो सकता है। हालांकि, परिणाम बहुत विषम नहीं होंगे। आपको राहु मंत्र का जाप और गरीबों को खाना खिलान चाहिए। साथ ही, आपको सांपों को अण्डा और दूध अर्पित करना चाहिए।

राहु प्रत्यंतर्दशा (14:08:2070 से 25:01:2071)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपका दूसरा विवाह हो सकता है, चाहे आपकी प्रथम जीवनसाथी जीवित हो या नहीं या आपके विधवा स्त्रियों के साथ शारीरिक संबंध हो सकते हैं। आपको धन हानि हो सकती है। ऐंद्रिय सुखों की प्राप्ति में आप भारी धन व्यय कर सकते हैं। आपको कानून से दंडित होने का भय हो सकता है। आपकी माता या आपके पिता को मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है। आप लम्बी यात्रायें कर सकते हैं। आपके भोजन का समय अनियमित हो सकता है। आपको चर्म रोग, ल्यूकोडर्मा, रतिजन्य रोग हो सकतेहैं। साझीदारी के व्यापार में आप असफल हो सकते हैं। जीवनसाथी और संतानों के साथ प्रायः आपका झगड़ा हो सकता है। आपको सट्टे में हानियां हो सकती हैं। आध्यात्मिक क्षेत्र में आपको उपलब्धि प्राप्त होगी।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (25:01:2071 से 20:06:2071)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप किसी संस्था के मुखिया बनेंगे। अपने अर्जित ज्ञान या लेखन या प्रकारशन केद्वारा आप धन का लाभ प्राप्त करेंगे। आपके शत्रु परास्त होंगे। आपको सुन्दर लड़कियों की संगति का अवसर प्राप्त होगा। आपको नशीले पदार्थों के सेवन के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। महिलाओं के सहयोग से आपको आय होगी।

शनि प्रत्यंतर्दशा (20:06:2071 से 10:12:2071)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आध्यात्मिक क्षेत्र में आपको उपलब्धि प्राप्त होगी। आप दवा या किसी अन्य प्राचीन विधा द्वारा नाम, यश और धन प्राप्त करेंगे। आप अपने प्रशंसनीय कार्य के लिए कोई पुरस्कार भी प्राप्त

कर सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (10:12:2071 से 14:05:2072)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी आय में वृद्धि होगी, लेकिन आप दूसरों पर उसे व्यय कर सकते हैं। आप सामाजिक होंगे। लोग आपकी प्रशंसा करेंगे और नियमित रूप से आपसे मिलने आयेंगे। आपकी आध्यात्मिक प्रगति होगी। लेखन या प्रकाशन या दवाओं के द्वारा आप आय अर्जित करेंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (14:05:2072 से 17:07:2072)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है। साझे के व्यापार में असफलता मिल सकती है। महिला साथी भी आपको धोखा दे सकती हैं। आपने जिन लोगों की पहले मदद की थी, वे भी आपके खिलाफ हो सकते हैं और आपको मानसिक रूप से बहुत व्यथित कर सकते हैं। आप अपनी आध्यात्मिक शक्ति का उपयोग अपने शत्रुओं का विनाश करने में करेंगे और उसमें सफल होंगे।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (17:07:2072 से 16:01:2073)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यद्यपि आपके जीवनसाथी और अन्य महिला साथियों के बीच प्रायः विवाद हो सकतेहैं, फिर भी आप शारीरिक सुखों का अधिकतम आनन्द प्राप्त करेंगे। इस दशा के दौरान आपको अधिक कष्ट नही होंगे। हालाँकि आपको अपने जीवन में किसी चीज की कमी महसूस हो सकती है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (16:01:2073 से 11:03:2073)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। शत्रु अपनी भूमिका निभा सकते हैं। वे आपकी अवनति के लिए अपनी भरपूर कोशिशकर सकते हैं। वे आपको हराने के लिए अपनी योजना बना सकते हैं। हालाँकि, ईश्वर की कृपा से आप बिना किसी नुकसान के उन योजनाओं से बच कर निकल आयेंगे। आर्थिक मामलों के लिए यह एक बेहतर दशा होगी।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (11:03:2073 से 11:06:2073)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको जनता से सम्मान मिलेगा, लेकिन आपके गुप्त शत्रु आपके खिलाफ षडयंत्रकर सकते हैं। आप जरूरतमंदों की मदद करेंगे और उनका आशीर्वाद प्राप्त करेंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (11:06:2073 से 14:08:2073)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यद्यपि इस दशा के दौरान आपको बहुत विषम परिणाम प्राप्त नहीं होंगे, फिर भी आपकी किसी काम में रूचि नहीं हो सकती है। आपको प्रतीत होगा कि अपने अधीनस्थों और समाज में अधिकतम योगदान देने के लिए आपके द्वारा किये गये सारे गंभीर प्रयास व्यर्थ हैं। आप बाहरी दुनिया से अपने को पृथक महसूस कर सकते हैं।

गुरू अर्न्तदशा (14:08:2073 से 13:04:2076)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। आपको भिक्षादेने और धार्मिक कार्यों को करने के कई सारे अवसर मिलेंगे। आप स्वयं या पुजारियों से पूजा और हवन करेंगे या करवायेंगे। भोजन की प्रचूरता होगी। आपको भूमि, सम्पत्ति और आभूषण तथा संतान की प्राप्ति होगी। आप खुशियों और सुखों के सागर में गोते लगायेंगे। अपने पद और अधिकर से आप विभिन्न प्रकार के आनन्द प्राप्त करेंगे।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (14:08:2073 से 21:12:2073)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आपको नाम, यश और धन प्राप्त होगा। संसार आपके उत्तम कार्यों को पहचानेगा और आपको उसका उचित पारितोषिक मिलेगा। शक्ति, पद और धन के मामले में आप एक राजा के समान हो सकते हैं।

शनि प्रत्यंतर्दशा (21:12:2073 से 24:05:2074)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपनी वर्तमान गतिविधियों का विस्तार करेंगे, नये घर का निर्माण करेंगे और भूमि, आभूषण तथा वस्त्र खरीदेंगे। आपके जीवनसाथी और संतान अपना भरपूर आनन्द प्राप्त करेंगे। आपकाविवाहेत्तर संबंध हो सकता है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (24:05:2074 से 09:10:2074)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपनी स्थिति से और लाभ उठायेंगे। यदि आप व्यापारी हैं, तो आप भारी लाभप्राप्त करने की आशा कर सकते हैं। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपको समय से पहले पदोन्नतिमिल सकती है। आपका विवाह हो सकता है। संतान से आपको शुभ समाचार मिल सकते हैं। आपके अपने जीवनसाथी से पूर्ण घनिष्ठ संबंध होंगे। आप महिला मित्रों से घिरे रहेंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (09:10:2074 से 05:12:2074)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा में आपका अधिक झुकाव आध्यात्म की तरफ होगा। आप इसमें निपुणता प्राप्त करना चाहेंगे। आपके घर में कई धार्मिक कार्य होंगे। आपको शारीरिक और अन्य ऐंद्रिय सुखों से विरक्ति हो जायेगी। ईश्वर भक्ति में आपको शान्ति प्राप्त होगी।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (05:12:2074 से 16:05:2075)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आपको आसानी से अपने सभी कार्यों में सफलतामिलेगी। सरकार से आपको पूरा सहयोग मिलेगा। आवश्यकता पड़ने पर आपको आर्थिक मदद प्राप्त होगी। आप कोई नया व्यापार शुरू करेंगे या कोई पार्ट टाइम रोजगार कर सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (16:05:2075 से 04:07:2075)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप विदेशों की यात्रायें करेंगे और नाम, यश तथा धन प्राप्त करेंगे। आपको पुत्र की प्राप्ति हो सकती है या संतानों से आपको शुभ समाचार प्राप्त होंगे। आप एक बड़े भागीदारी व्यापार कोशुरू करेंगे और उचित लाभ प्राप्त करेंगे। शत्रुओं को आप सबक सीखायेंगे।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (04:07:2075 से 23:09:2075)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक आनन्ददायक दशा होगी। महिला मित्र आपको खुशी और हर संभव मददप्रदान करेंगी। हालाँकि, आपको जीवनसाथी और संतान से परेशानियां हो सकती हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (23:09:2075 से 19:11:2075)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी योजनायें सफल होंगी। किसी भी नये उपक्रम को शुरू करने, वाहन या भूमि खरीदने के लिए यह एक अति उत्तम समय है। आप एक विशाल घर का निर्माण कर सकते हैं। हालाँकि, इस दशा के दौरान निर्मित घर में आप नहीं रह सकते हैं।

राहु प्रत्यंतर्दशा (19:11:2075 से 13:04:2076)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपने परिवार के साथ कई पवित्र स्थानों की यात्रायें करेंगे और साधुजनों का आशीष प्राप्त करेंगे। आपको आय अर्जित करने और धन प्राप्त करने में कोई समस्या नहीं हो सकती है। आपका व्यापार फले–फूलेगा। आप जरूरतमंदों को भिक्षा देंगे।

शनि अर्न्तदशा (13:04:2076 से 14:06:2079)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा केदौरान, आपको समाज और सरकार में ऊँचे पदों वाले लोगों का सहयोग मिलेगा। आप विख्यात होंगे। आप समाज के नेतृत्वकर्ता या किसी ऊँचे राजनीतिक पद पर आसीन हो सकते हैं। आपको कुलीन बड़ी महिलाओं के साथ सम्पर्क बनाने के अवसर मिलेंगे। आपकी आय व्यय से अधिक होगी, लेकिन आपको खर्च में सावधानी बरतनी चाहिए। आप धन, वस्तुओं और आभूषणों का संग्रह करेंगे तथा इस पूरी अन्तर्दशा के दौरान आनन्द प्राप्त करेंगे। आपके संबंधी भी संपन्न होंगे। गांवों, कस्बों और शहर पर आपका अधिकार होगा।

शनि प्रत्यंतर्दशा (13:04:2076 से 14:10:2076)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको शुभ परिणाम प्राप्त होंगे। आप अपने समाज में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति होंगे।लोग आपको सम्मान देंगे और आपके शब्दों को कानून की तरह मानेंगे।

बुध प्रत्यंतर्दशा (14:10:2076 से 27:03:2077)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यदि दवायें या रसायन या तरल उत्पादों के निर्माण का व्यापार कर रहें हैं, तो आपका व्यापार बहुत समृद्ध होगा। विदेशियों से भी आपकी व्यापारिक संधि हो सकती है। आप विदेशों की प्रायः यात्रायें करेंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (27:03:2077 से 02:06:2077)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको व्यापार में हानि हो सकती है। मित्र और वे लोग जिन पर आप सबसे अधिक भरोसा करते हैं, वे आपको धोखा दे सकते हैं। आपके लिए धन का उत्तम प्रकार से उपयोग करने में तब तक बहुत देर हो चुकी होगी– जैसाकि वे लोग पहले ही आपका धन हड़प कर चुके होंगे।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (02:06:2077 से 12:12:2077)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपने मित्रों के समूह से दुष्ट लोगों को बाहर निकाल फेकेंगे और संवेदनशीललोगों का एक नया पूर्ण भिन्न समूह बनायेंगे। आपको इसमें सफलता मिलेगी। आप भारी मात्रा में धन संग्रह करेंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (12:12:2077 से 08:02:2078)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक विवादों और मानसिक चिंता से पूर्ण दशा हो सकती है। आपके जीवनसाथी को गंभीर रोग हो सकता है, जिससे आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है और आप अपने समृद्धि की ओर बढ़ते व्यापार पर ध्यान दे पाने में असमर्थ हो सकते हैं। आपको धोखाधड़ी के कारण कोई हानि हो सकती है। संतान से आपका अलगाव हो सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (08:02:2078 से 15:05:2078)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके जीवनसाथी को रोगों से राहत मिलेगी। लेकिन आपकी माता को कोई

असाध्य रोग हो सकता है और उनका उपचार में भारी धन व्यय हो सकता है। आपकी दैनिक कार्यों को करने में भी कोई रूचि और उत्साह नहीं हो सकता है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (15:05:2078 से 21:07:2078)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आग या प्राकृतिक आपदा के कारण आपको कोई हानि हो सकती है। आपको व्यापार में भी भारी हानि हो सकती है। आपके लिए इस समय किसी अन्य योजना में निवेश नहीं करना बेहतर होगा। आपके जीवनसाथी को मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है या आपका उनसे अलगाव हो सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (21:07:2078 से 11:01:2079)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपके जीवनसाथी को मृत्युतुल्य कष्ट या रोग हो सकता है। आपकी माता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। परिवार के लोग बाधायें उत्पन्न करने की कोशिश कर सकते हैं। आपको अपनी कुछ सम्पत्ति बेचने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। शत्रु आपका भारी नुकसान कर सकते हैं। अन्ततः आपको खतरनाक रोग हो सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (11:01:2079 से 14:06:2079)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली कुछ दशाओं से आप जिन दुखों का सामना कर रहे थे, उनसे आपको पूर्णराहत मिलेगी। व्यापार में आपको अचानक लाभ होगा। आप व्यापार में अपना अधिक समय लगायेंगे और खोये हुए अवसरों को प्राप्त करने की कोशिश करेंगे। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपको उत्तम पदोन्नति मिल सकती है या किसी अधिक प्रतिष्ठित पद पर आपका स्थानान्तरण हो सकता है।

बुध अन्तर्दशा (14:06:2079 से 14:04:2082)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आप नाम, यश और धन प्राप्त करेंगे। आप अपने प्रियजनों और संतानों से स्नेह एवं सम्मान प्राप्त करेंगे। आपके शत्रु परास्त होंगे। पेड़ों, फलों और मवेशियों से आप लाभ प्राप्त कर सकते हैं। सरकार या भूमि से धन प्राप्त होगा। इस अन्तर्दशा के दौरान आपकी अधिकतर कामनायें पूरी होंगी। आपको जहरीले जानवरों को काटने से कोई रोग हो सकता है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (14:06:2079 से 07:11:2079)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। जीवन के हर क्षेत्र में चहुंमुखी संपन्नता होगी। मित्र और संबंधी आपके घर पर एकत्र होंगे और आप उनकी संगति में सुन्दर समय व्यतीत करेंगे। विदेशों से भी लोग आपसे मिलने को आयेंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (07:11:2079 से 07:01:2080)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यद्यपि आपको व्यापार या रोजगार या व्यवसाय में लाभ प्राप्त होगा, फिर भी आपकोअपने पास ईर्ष्यालु लोगों के कारण प्रायः बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। आपको अपने जीवनसाथी और ससुराल वालों से भरपूर सहयोग प्राप्त होगा।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (07:01:2080 से 27:06:2080)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह एक अति आनन्ददायक दशा होगी। आप सुन्दर लड़कियों की संगति का सुख प्राप्त करेंगे। होटल, फैशनदार कपड़ों या पुस्तकों या ज्योतिष से संबंधित व्यापार में आपको संपन्नता प्राप्त

होगी। अध्ययन या रोजगार में अपने विशिष्ट कामों से संतान आपको प्रसन्नता प्रदान करेंगी।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (27:06:2080 से 18:08:2080)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह दशा उत्तम होगी। आपकी आय निरन्तर बनी रहेगी। आपको पूर्ण आनन्द प्राप्त होगा।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (18:08:2080 से 13:11:2080)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा में शुक्र महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा। बुध और चंद्रमा कोई परिणाम नहीं देंगे। अतः शुक्र की स्थिति एक निर्णायक कारक होगी।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (13:11:2080 से 12:01:2081)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप भूमि और भवन से आय प्राप्त करेंगे। डाक्टरों और दवा तथा रसायन विक्रेताओं के लिए यह उत्तम दशा है। आपको सुशील जीवनसाथी की संगति का सुख प्राप्त होगा। हालाँकि, उनके स्वास्थ्य की अधिक देखभाल की आवश्यकता होगी। संतान से आपको वांछित परिणाम प्राप्तनहीं हो सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (12:01:2081 से 16:06:2081)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप रतिजन्य या चर्म रोगों से ग्रसित हो सकते हैं। आप लम्बे समय तक अस्पताल में भर्ती हो सकते हैं। आपका भारी व्यय हो सकता है। वातावरण में पूरी तरह बदलाव हो सकता है। आप और आपकी संतान या परिवार के अन्य सदस्यों के बीच में प्रायः विवाद हो सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (16:06:2081 से 01:11:2081)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अधिक बेहतर परिणाम मिलेंगे। आप सभी प्रकार की अवस्थाओं को हल करने में सक्षम होंगे। शत्रु परास्त होंगे। आपके परिवार के लोग आपको अस्थिर करने में सक्षम नहीं होंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (01:11:2081 से 14:04:2082)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह एक संघर्षपूर्ण दशा हो सकती है। आपको विषमताओं के खिलाफ खुलकर संघर्षकरना पड़ सकता है। आपके सगे भाई–बहन परेशानियां पैदा कर सकते हैं। आपकी सम्पत्ति का बंटवारा हो सकता है। मुकदमों की संभावना से भी इन्कार नहीं किया जा सकता है। आपको सिरदर्द या बुखार हो सकता है।

केतु अन्तर्दशा (14:04:2082 से 14:06:2083)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आपको कई दुखों का सामना करना पड़ सकता है। आपके जीवनसाथी और संतान भी पीड़ित हो सकते हैं। ईश्वर भी आपसे मुख मोड़ सकते हैं। आपको परित्यक्त और वर्जित स्त्रियों के साथ आनन्द प्राप्त करने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। संबंधियों और शत्रुओं सेआपके बहुधा झगड़े हो सकते हैं। हालांकि, शत्रु आपको किसी तरह की हानि नहीं पहुँचा पायेंगे। आपकेशरीर के किसी अवयव को हानि नहीं पहुँच सकती है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (14:04:2082 से 09:05:2082)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आप अपने जीवन में अति उत्तम समय का पहले ही आनन्द ले चुके हैं। यदि यह

दशा मध्यायु के समय आती है, तो यह समय ऐसे आनन्द से बाहर निकलने और अपनी स्थिति को सुदृढ़ करने का है। यदि यह दशा बुढ़ापे के समय आती है, तो आप धीरे–धीरे सन्यास ले सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (09:05:2082 से 19:07:2082)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आप ईश्वर भक्ति में अपना समय व्यतीत करेंगे। आपका जीवन संतोषपूर्ण होगा। आप एकाकी जीवन व्यतीत कर सकते हैं। जीवन के बोझ को सहन कर पाने में असक्षम होने के कारण आप अपने घर से भाग सकते हैं और किसी सुदूर स्थान पर रह सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (19:07:2082 से 09:08:2082)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। शत्रुओं से आपको कष्ट हो सकता है। आपने जो काम नहीं किया है, उसके लिए भी आपके आचरण पर संदेह किया जा सकता है और आपका अपमान हो सकता है। हालाँकि, आप इससे शांति से बाहर निकल आयेंगे।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (09:08:2082 से 13:09:2082)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी माता और जीवनसाथी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आपका अधिकतरसमय उन लोगों की देखभाल में व्यतीत हो सकता है। संतान आपकी कोई मदद नहीं कर सकतीहै। अपितु वे आपकी सम्पत्ति हड़प सकते हैं और आपसे दूर रह सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (13:09:2082 से 08:10:2082)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप भूमि और भवनों से लाभ प्राप्त करेंगे। आप एक नये घर का निर्माण करेंगे। आपको कृषि में लाभ होगा। आपको वाहन नहीं चलाना चाहिए। यदि आप घर से बाहर ना निकले तो आपके लिए यह बेहतर होगा– जैसाकि आपको दुर्घटना के कारण चोट लगने की संभावना है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (08:10:2082 से 11:12:2082)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस दशा के दौरान आपको बहुत अधिक सावधान रहना चाहिए। आपको भारी नुकसान हो सकते हैं। आपके साझेदार आपको धोखा दे सकते हैं। आप पर कानूनी अभियोग लग सकता है। कानूनी मामलों में निर्णय आपके खिलाफ हो सकता है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (11:12:2082 से 06:02:2083)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। अपेक्षाकृत यह एक बेहतर दशा होगी। आपको आर्थिक संकट और रोगों से थोड़ी राहत मिलेगी। आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य भी बेहतर होगा। संतान से आपको सहयोग मिलेगा।

शनि प्रत्यंतर्दशा (06:02:2083 से 14:04:2083)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। हर तरफ से आपको परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। विभिन्न तरीकों से आपको भारी हानि हो सकती है। आपकी वस्तुयें चोरी हो सकती हैं या सरकार उनको जब्त कर सकतीहै। आपका अपने जीवनसाथी से वियोग हो सकता है। आपको किसी व्यक्ति से मदद मिलने की कोई आशा नहीं हो सकती है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (14:04:2083 से 14:06:2083)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आप एक शांत जीवन व्यतीत करेंगे। आपको ऐंद्रिय सुखों में कोई रूचि नहीं होगी।

आप ईश्वर आराधना में अपना समय व्यतीत करेंगे। आप अपनी क्षमता के अनुसार समाज को अपनी मदद देने की कोशिश करेंगे और उस सबसे आपको संतुष्टि प्राप्त होगी। आय के नये स्रोत खुलेंगे।

सूर्य दशा (14:06:2083 से 14:06:2089)

वर्तमान समय में आपकी सूर्य की महादशा चल रही है और सूर्य आपकी कुण्डली में चौथे भाव में स्थित है।चौथे भाव में सूर्य की दशा के दौरान, आपको शक्ति और अधिकार प्राप्त होंगे। आपका सम्पत्ति के मामलों में अपने संबंधियों से झगड़ा हो सकता है। आपको विदेश में रहना पड़ सकता है। आपको शत्रुओं के कारण अपमानित होना पड़ सकता है, जिससे आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है। आप अपने पिता के संचित धन को खर्च कर सकते हैं। हृदय की समस्यायें हो सकती हैं। विपरीत लिंगी व्यक्तियों में आपकी रूचि हो सकती है। किसी प्रकार के शारीरिक चोट या अपंगता हो सकती है। यदि 22वें वर्ष की आयु में सूर्य की दशा भी चल रही है, तो आपकी अधिकतर अभिलाषायें इस उम्र में पूरी होंगी। आपको एकउत्तम नौकरी प्राप्त होगी या व्यापार में आप भारी सफलता प्राप्त करेंगे। अपने भविष्य के बारे में सही निर्णय लेने का यह उचित समय है।

वर्तमान समय में आपकी सूर्य की महादशा चल रही है और सूर्य आपकी कुण्डली में धनु राशि में स्थित है।सूर्य की अपनी दशा के दौरान, आपको जीवनसाथी और संतानों से सुख, सरकार से समर्थन और धार्मिकव सन्तजनों से आशीष मिलेगा। आपको प्राचीन ग्रंथों के अध्ययन में गहरी रूचि होगी। आपको सभीसे सम्मान मिलेगा। आपका हठी होना, आपकी सबसे बड़ी कमी होगी, फिर भी आप युक्तिपूर्ण तरीके सेकाम करेंगे। यह दशा चंहुमुखी समृद्धि प्रदान करेगी। यदि आप व्यापार शुरू करना चाहते हैं, तो इस दशा के दौरान कर सकते हैं।

सूर्य अर्न्तदशा (14:06:2083 से 01:10:2083)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। आपको सरकार से सम्मान प्राप्त होगा और आप अपनी विशेषज्ञता के क्षेत्र में नाम और यश प्राप्त करेंगे। आपको किसी सुदूर और अलग स्थान पर रहने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। आप उत्तम मात्रा में धन अर्जित करेंगे। आप सरकार या शासित वर्ग से समर्थन/आय प्राप्त कर सकते हैं। आपकी कुण्डली में सूर्य कमजोर है, आप सिरदर्द और उदर पीड़ा, कान में दर्द, गुर्दे की समस्या, बुखार और कफ से पीड़ित हो सकते हैं। अपने पिता से आपके संबंध आत्मीय नहीं हो सकते हैं। आपके संबंधी आपको बहुत परेशान कर सकते हैं। आपकी आय कम और व्यय अधिक हो सकता है। आप राजसी दिखावा करने में भारी व्यय करसकते हैं और जिसके परिणामस्वरूप आप कर्जदार हो सकते हैं। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य उच्चस्थ या केन्द्र या त्रिकोण या ग्यारहवें भाव में स्थित है, सूर्य की इस अन्तर्दशा में आप जो भी काम करेंगे, उसमेंभारी लाभ प्राप्त होगा, सरकार से आपको समर्थन मिलेगा, आपकी अधिकतर कामनायें पूरी होंगी और आपका विवाह भी हो सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (14:06:2083 से 19:06:2083)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। सूर्य की प्रत्यंतर्दशा के दौरान आपको शत्रुओं और अपने आस-पास की घटनाओं का अनावश्यक भय हो सकता है। आप उन लोगों के साथ परिणाम रहित चर्चाओं में रत हो सकते हैं, जिन्हें चर्चित विषय का कोई ज्ञान नहीं होगा और इससे आप किसी प्रकार के भय को आमंत्रण दे सकते हैंया अपने भविष्य के बारे में किसी ज्योतिषी से परामर्श ले सकते हैं या अपने भविष्य के बारे में कुछ भविष्यवाणियों का अध्ययन कर सकते हैं, जिससे आप चिन्तित हो सकते हैं और आगे हो सकने वाली घटनाओं के बारे में डरना शुरू कर सकते हैं। उसके बाद इस दशा के समाप्त हो जाने के बाद आपको प्रतीत होगा कि ऐसा कुछ था ही नहीं, जिसके लिए आप डर रहे थे। इस दशा के दौरान आपको भगवान शिव के मंत्रों का जाप करना चाहिए। आर्थिक चिंतायें भी आपकी मानसिक शांति को भंग कर सकती हैं। पहले तीन दिनों के दौरान आपके मित्र भी आपकी मदद करने से इन्कार कर सकते हैं। इसके बाद आपकोअनजाने और बिना ध्यान दिये ही आर्थिक मदद प्राप्त होगी। जीवनसाथी का स्वास्थ्य या उनसे

झगड़ा आपको मानसिक कष्ट दे सकता है। अन्ततः आपको तीव्र सिरदर्द हो सकता है, जिसमें दवाइयां बेअसर साबित हो सकती हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (19:06:2083 से 28:06:2083)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान अपनी योजनाओं की असफलता के कारण आप भारी मानसिकपीड़ा का सामना कर सकते हैं और आपकी सम्पत्ति की चोरी हो सकती है। आपको स्वर्ण आभूषणबेचने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है या आपकी अथवा आपके जीवनसाथी की गलती के कारण वे चोरी हो सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (28:06:2083 से 05:07:2083)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि मंगल कमजोर है, तो आपको हथियारों से भय हो सकता है, आपको किसी समय सिर के भाग में चोट लग सकती है। शत्रुओं से आपको परेशानियां हो सकती हैं, और सभी प्रकार की विपत्तियों का आप सामना कर सकते हैं। आपको शांतिपूर्वक किसी अज्ञात स्थान पर चले जाना चाहिए– विशेषतया किसी तीर्थ स्थान पर, ताकि आपके कष्ट कुछ कम हो सकें। आपको आग का प्रयोग करते समय सावधान रहना चाहिए। यदि आप वाहन चला रहे हैं, तो आपको बहुत खुला वाहन नहीं चलानाचाहिए।

राहु प्रत्यंतर्दशा (05:07:2083 से 21:07:2083)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस दशा के दौरान आपके सीना और जिगर गंभीर रूप से प्रभावित हो सकते हैं। आपको कफ की शिकायत हो सकती है। आपको पीलिया हो सकती है। बेहतर स्वास्थ्य के लिए आपको तेल का सेवन नहीं करना चाहिए, सुबह खाली पेट कुछ तुलसी के पत्ते चबाने चाहिए। आपको तुलसी के पौधे को भी पानी देना चाहिए। आपको तेजधार के हथियार या पत्थर से कोई चोट लग सकती है। विभिन्नतरीकों से आपको धन हानि हो सकती है और सरकार से आपको कष्ट हो सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (21:07:2083 से 05:08:2083)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। शत्रु परास्त होंगे। आपको सामान्य समृद्धि अवश्य प्राप्त होगी। आपको भोजन, वस्त्रों और वाहन का लाभ मिलेगा। यदि आप विद्यार्थी हैं और किसी परीक्षा में बैठ रहे हैं, तो आपको सफलता मिलेगी। यदि आप बेरोजगार हैं, तो आपको कोई रोजगार प्राप्त करने के लिए कोशिश करना चाहिए– जैसाकि आप उसे पाने में सफल होंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (05:08:2083 से 22:08:2083)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपको धन, मवेशियों, वाहनों आदि का लाभ होगा। शत्रुओं का नाश होगा। रोगों सेराहत मिलेगी।

बुध प्रत्यंतर्दशा (22:08:2083 से 07:09:2083)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान मुख्यतः आप और ज्ञान प्राप्त करने में संलग्न रहेंगे। आप पुस्तक खरीदेंगे,पुस्तकालयों में जायेंगे और विभिन्न स्रोतों से अध्ययन सामग्री एकत्र करेंगे। संबंधी आपसे मिलने आयेंगे। आपको धन का लाभ होगा, लेकिन उसका एक बड़ा भाग पुस्तकों और अध्ययन सामग्री के क्रय तथा संबंधियों के मनोरंजन में व्यय होगा। आप गरीबों से सहानुभूति रखेंगे और उन्हें भिक्षा देंगे। आप धार्मिक स्थानों की यात्रा करेंगे। जन्मकुण्डली के सम्पूर्ण बल के अनुसार आपको सरकार से सम्मान प्राप्त हो सकता है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (07:09:2083 से 13:09:2083)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। सामान्यतः यह दशा उत्तम नहीं हो सकती है। आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। आपको मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है। दुष्ट लोग आपको धन हानि करा सकते हैं। चूंकि, आप दूसरों की परवाह अधिक करेंगे, अतः आप उनके सुखों के लिए धन व्यय करेंगे और अन्ततः आपकी आर्थिक स्थिति में गिरावट आ सकती है। अपने लोगों से प्रायः आपका झगड़ा और शत्रुओं से आपका विवाद हो सकता है, जिससे आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (13:09:2083 से 01:10:2083)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह एक सामान्य दशा होगी। जीवन की गति धीमी मगर स्थिर होगी। आपको ना तो तनाव होगा और ना ही खुशी होगी। आपको धन का अवसरीय लाभ होगा और महिलाओं तथा मनोंरंजन पर आप धन व्यय करेंगे। आपका विवाह हो सकता है।

चन्द्रमा अन्तर्दशा (01:10:2083 से 01:04:2084)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा चल रही है। आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा लग्न से केन्द्रीय अथवा त्रिकोण भाव में है, चंद्रमा की यह अन्तर्दशा अति उत्तम होगी। आपका विवाह हो सकता है, धन की वृद्धि होगी, आप क्रय या विरासत के माध्यम से भूमि और भवन प्राप्त करेंगे, आपको विभिन्न स्रोतों से आय तथा वाहन और सुख प्राप्त होंगे। आपको संतान की प्राप्तिहोगी। आपका सदाचारी लोगों से सम्पर्क बढ़ेगा, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, या यदि पहले से आप किसी रोग से पीड़ित हैं, तो आपको उससे मुक्ति मिलेगी। आपका अपने शत्रुओं और विरोधियों से समझौता होगा और अनुकूल समय आने पर आप उन्हें परास्त करेंगे। आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा सूर्य से चौथे, सातवें, नौवें, दसवें या ग्यारहवें भाव में है, इस अन्तर्दशा के दौरान आपको शुभ परिणाम मिलेंगे। शुभ परिणामों की कोटि अवरोही क्रम में होगी– अर्थात यदि सूर्य से चंद्रमा ग्यारहवें भाव में है, तो आपको अधिकतम शुभ परिणाम मिलेंगे और नौवें भाव में होने पर शुभ परिणाम कम हो जायेंगे। सामान्यतः सभी प्रकार के सुखों काआनन्द प्राप्त करेंगे। इस अन्तर्दशा के दौरान आपका विवाह हो सकता है या संतान की प्राप्ति होगी। आपको भूमि, स्थायी पद, उत्तम वस्त्रों, वाहनों की प्राप्ति होगी।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (01:10:2083 से 16:10:2083)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि चंद्रमा बली है, तो आपका अपनी पसन्द की लड़की से विवाह हो सकता है। आपको संतान की प्राप्ति होगी, विभिन्न स्रोतों से आय प्राप्त होगी। आपको माता की सम्पत्ति विरासत में मिल सकती है। यदि वह आपको पहले ही मिल चुकी है, तो आप उससे अति उत्तम लाभ कमायेंगे। बहनोंके लिए दशा उत्तम नहीं हो सकती है। आपके घर पर शुभ समारोह आयोजित होंगे और घरेलू वातावरण मैत्रीपूर्ण रहेगा। मिलने जुलने वाले लोग अप्रत्याशित खर्चे करवा सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (16:10:2083 से 27:10:2083)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक मिली–जुली दशा हो सकती है। बेतुके मामलों में जीवनसाथी के साथ आपका विवाद हो सकता है। कभी–कभी उसके लिए साड़ी या आभूषण खरीदने के मामले में, जिसे आप मना कर सकते हैं और तब घर लड़ाई का मैदान बन सकता है। अप्रत्याशित स्रोतों से आपको धन प्राप्त होसकता है। आपको बुखार, बवासीर और उष्ण रोग हो सकते हैं। वरिष्ठों से कष्ट हो सकता है। अधीनस्थों के साथ झगड़ा हो सकता है। सट्टे से आपकी आय हो सकती है। आपकी माता और जीवनसाथी के बीच झगड़ा हो सकता है और आप भ्रम की स्थिति में हो सकते हैं कि किसका पक्ष लें औरकिसका ना लें।

राहु प्रत्यंतर्दशा (27:10:2083 से 23:11:2083)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक बहुत खराब दशा हो सकती है। शत्रु हमेशा सांप की तरह आपको डंसनेको तैयार रहेंगे। व्यवसाय में आपको किसी ऐसे काम के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है, जिसे आपने किया ही नहीं है और आपको अपमान का सामना करना पड़ सकता है। सबसे अधिक सत्यनिष्ठ और सम्मानित होने के बावजूद आपको बदनामी का सामना करना पड़ सकता है। इसके लिए कुछ महिलायें जिम्मेदार हो सकती हैं। वे बिना किसी प्रमाण के अफवाह फैला सकती हैं। आपके परिवार के लोगों का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अधिकार और शक्ति प्राप्त लोगों के साथ आपका प्रायः विवाद हो सकता है। नगद धन का अभाव आपकी मानसिक शांति को भंग कर सकता है। मित्र भी आपकी मदद नहींकर सकते हैं। आपको अपनी कुछ घरेलू वस्तुयें बेचनी पड़ सकती हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (23:11:2083 से 18:12:2083)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा उत्तम होगी। आपके व्यवसाय में प्रगति होगी और व्यापार में लाभ बढ़ेगा। आपका ग्रंथों के अध्ययन की तरफ झुकाव होगा। आप लेखन और प्रकाशन से अतिरिक्त आय प्राप्तकरेंगे। आपका घरेलू वातावरण पूरी तरह से सौहार्दपूर्ण होगा। आपके माता–पिता के स्वास्थ्य में सुधारहोगा। यदि शनि और मंगल की दृष्टि सूर्य या चंद्रमा पर है, तो आप दुर्घटनाओं के शिकार हो सकतेहैं या आपको बुखार, सर्दी और पेट की समस्यायें हो सकती हैं। इन तीनों ग्रहों में से किसी ग्रह पर शुक्र की दृष्टि होने पर आप शारीरिक सुखों को प्राप्त करने में रत रहेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (18:12:2083 से 16:01:2084)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके माता–पिता के बीच विवाद हो सकता है। यदि आप इस दशा के समय बहुत युवा हैं, तो ऐसा विवाद आपकी पढ़ाई को बाधित कर सकता है और घर की परिस्थितियों के कारण आप अपनी पढ़ाई छोड़ सकते हैं। यदि साथ में साढ़े साती भी चल रही है, तो आपको हर क्षेत्र में कष्ट कासामना करना पड़ सकता है। आप शांति के लिए नशे का सहारा ले सकते हैं। आपके सगे भाई–बहनों को खतरा हो सकता है। आपका अपने पिता से झगड़ा हो सकता है और आप घर से भाग सकते हैं। परिस्थितियां ऐसी बन सकती हैं कि आप दूसरों के लिए हर चीज का त्याग कर सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (16:01:2084 से 11:02:2084)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। आप ईश्वर की पूजा में अधिक समय बितायेंगे। लोगों की नजर में आप एक उत्तम गुणों वाले व्यक्ति होंगे और वे आपकी सलाह को एक उपदेशक की तरह स्वीकार करेंगे। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपको पदोन्नति मिल सकती है। आपभूमि और भवन खरीदेंगे एवं कृषि, मवेशियों तथा वाहनों से लाभ प्राप्त करेंगे। यदि आप बेरोजगार हैं, तो इस दशा के दौरान आपको एक उचित रोजगार मिलेगा। साझेदारी में व्यापार करने के लिए आपको अवसर प्राप्त होंगे, जिन्हें आपको मना कर देना चाहिए, अन्यथा आप धोखे के कारण धन गवाँ सकते हैं। संतान की पढ़ाई में सुधार होगा।

केतु प्रत्यंतर्दशा (11:02:2084 से 21:02:2084)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको समय–समय पर धन लाभ होगा। इस धन को आप धार्मिक कामों में खर्च करेंगे। जो भी आपके दरवाजे पर आयेगा, उसे कुछ ना कुछ भिक्षा देंगे। आपका रूझान आध्यात्मवाद और गूढ़वाद तथा दार्शनिक उपदेशों की तरफ होगा। आपको नेत्र रोग हो सकते हैं। महिलाओं से आपको कष्ट हो सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (21:02:2084 से 23:03:2084)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की

प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह दशा उत्तम नहीं हो सकती है। आपके पेट में तीव्र दर्द या पेट में विकार के कारण रोग हो सकते हैं। शत्रुओं और चोरों के कारण हानि हो सकती है। आपको समय पर भोजन नहीं प्राप्त हो सकता है। आपकी पुत्रियों का स्वास्थ्य बहुत खराब हो सकता है और उपचार में भारीधन व्यय हो सकता है। उनकी शिक्षा में रूकावट आ सकती है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (23:03:2084 से 01:04:2084)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। आपको अपने हर काम में सफलता मिलेगी।अतः आपको निवेश के बारे में निर्णय लेकर इस दशा का अवश्य लाभ उठाना चाहिए। भवन निर्माणऔर व्यापार का विस्तार या नये व्यापार की शुरूआत जैसी कोई नयी योजना इस दशा के दौरान सफल होगी। आपको सुशील जीवनसाथी, नये वस्त्रों और उत्तम भोजन का सुख मिलेगा।

मंगल अन्तर्दशा (01:04:2084 से 07:08:2084)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है। आपकी कुण्डलीमें मंगल उच्चस्थ या अपने भाव या लग्न से ग्यारहवें भाव या केन्द्रीय भाव में है, इस दौरान कई शुभ परिणामों को प्राप्त करेंगे– अर्थात आपको भूमि और भवनों का लाभ, अपने सहोदरों से सुख और खुशियां, रत्नों और स्वर्ण से लाभ या प्राप्ति, व्यवसाय या नौकरी में लाभ, झगड़ों में विजय आदि प्राप्त होंगे।कुछ विद्वान ज्योतिषियों के अनुसार, यदि आपकी जन्मकुण्डली में मंगल उत्तम स्थिति में है या उस पर मित्र या शुभ ग्रह की दृष्टि है, तो भी सूर्य की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के दौरान आपको शुभ परिणाम मिलने की संभावना कम हो सकती है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (01:04:2084 से 08:04:2084)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। शत्रुओं और सरकारी अधिकारियों से आपको कष्ट हो सकते हैं। आपको खून की उल्टियां हो सकती हैं। विभिन्न तरीकों से आपको धन हानि हो सकती है। जीवनसाथी को कष्ट हो सकताहै। आप मलेरिया या दिमाग में झिल्लियों में सूजन से ग्रस्त हो सकते हैं।

राहु प्रत्यंतर्दशा (08:04:2084 से 28:04:2084)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको सम्पत्ति और धन की हानि हो सकती है। अपने भाइयों के साथ सम्पत्ति मामलों में विवाद हो सकता है। आपके सगे भाई–बहन आपको हानि पहुंचाने का प्रयास कर सकते हैं। आप पुलिस के मामलों में फंस सकते हैं और आपको कारावास हो सकता है। संबंधी और मित्र आपके शत्रुबन सकते हैं। आपको विभिन्न रोग विशेषकर चर्म रोग और बुखार हो सकते हैं। आप असमय भोजन कर सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (28:04:2084 से 15:05:2084)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप दूरस्थ स्थानों का भ्रमण कर सकते हैं। अति बुद्धिमान और स्थिर होने के बावजूद आपकी बौद्धिक क्षमता का ह्रास हो सकता है और आप एक मूर्ख व्यक्ति की तरह व्यवहार कर सकते हैं।

शनि प्रत्यंतर्दशा (15:05:2084 से 04:06:2084)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। खराब रक्त के कारण रोग हो सकते हैं। आपको कैंसर गर्दन के उपरी भागों में ट्यूमर और तपेदिक की शिकायत हो सकती है। आपकी वस्तुएं चोरी हो सकती हैं। हालाँकि, कुछ दिनों केबाद वे वापस मिल जायेंगी। आपको धन हानि हो सकती है। आपके जीवनसाथी की मूर्खता और हठ आपको बहुत व्यथित कर सकते हैं और अन्त में आप गंभीर मानसिक अवसाद से ग्रस्त हो सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (04:06:2084 से 22:06:2084)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको बुखार हो सकता है। संबंधियों तथा मित्रों के साथ बेतुकी बातों पर विवाद हो सकते हैं। व्यय आय से अधिक हो सकते हैं। फिर भी आप अप्रत्याशित स्रोतों से धन और सम्पन्नता कीआशा कर सकते हैं। आपको लेखन और सरकार से आय प्राप्त होगी।

केतु प्रत्यंतर्दशा (22:06:2084 से 30:06:2084)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको तीव्र सिरदर्द और विभिन्न रोगों, मृत्यु और शासकों का भय हो सकता है। आप बहुत थकान महसूस कर सकते हैं। आपकी एक–एक पाई चिकित्सकीय उपचार में व्यय हो सकती है। यदि आपको रोगों से मुक्ति मिलती है, तो कर्जदाता आपके पास अपना धन मांगने आ सकते हैं। आर्थिक संकट से बाहर निकलने के लिए आप और धन उधार लेकर सट्टों और जुए में रत हो सकते हैं। अन्ततः भाग्य से हार कर आप या तो अपना घर छोड़ कर जा सकते हैं या अपनी सारी सम्पत्ति को बेच सकती हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (30:06:2084 से 21:07:2084)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको शत्रुओं और सरकार के कारण कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। आपको उल्टी, पीलियां, अपचन की शिकायत हो सकती है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (21:07:2084 से 27:07:2084)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। चूंकि महादशा का स्वामी प्रत्यंतर्दशा का स्वामी भी है, अतः मंगल शुभ या अशुभ परिणाम देने में अप्रभावी होगा और सूर्य इस प्रत्यंतर्दशा में सबसे शक्तिशाली ग्रह होगा। चाहे सूर्य और मंगल किसी अशुभ राशि या अशुभ भाव में स्थित हो या नहीं हों, आपको भूमि प्राप्त होगी, आप आभूषण और उत्तम वस्त्र खरीदेंगे। आपको स्वादिष्ट भोजन का आनन्द प्राप्त होगा।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (27:07:2084 से 07:08:2084)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। आपको सम्मान और प्रचुर मात्रा में स्वादिष्टभोजन मिलेगा। आपको तीन विभिन्न स्रोतों से धन प्राप्त होगा। आपको अपने जीवनसाथी और संतान की संगति का आनन्द प्राप्त होगा। यदि आप अविवाहित हैं, तो आपका विवाह हो सकता है।

राहु अन्तर्दशा (07:08:2084 से 02:07:2085)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में राहु की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के पहले दो मास में आपको भारी धन हानि, अनावश्यक भय, रक्त की अशुद्धता, सर्पदंश या सांपो से भय या सर्पों का स्वप्न, शरीर में फोड़े, जीवनसाथी और संतान के कारण दुख (जीवनसाथी और संतान की बीमारी या उनका आपके प्रति नकारात्मक रवैया या जीवनसाथी से अलगाव/तलाक या उसके द्वारा अनैतिक जीवनशैली अपनाये जाने के कारण) का सामना करना पड़ सकता है। उसके बाद आप उत्तम परिणामों काआनन्द प्राप्त करेंगे। अतः आपके लिए बेहतर यही होगा कि आप इस अवधि के दौरान कोई ऐसा काम ना करें, जिससे आपको बाद में पछताना पड़े। आप दूरस्थ स्थानों की यात्रा पर जा सकते हैं, ताकि ऐसी स्थिति से आप बच सकें। आपको भगवान शंकर के मंत्रों का जाप और उनकी आराधना करनी चाहिए। कुछ ज्योतिषियों के अनुसार, यदि आपकी जन्मकुण्डली में राहु किसी उत्तम भाव में स्थित है, तो भी सूर्य की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के दौरान यह कोई शुभ परिणाम नहीं दे सकता है। (हालांकि, इस तथ्य पर सहमत नहीं हुआ जा सकता है, क्योंकि कई लोगों को अति उत्तम परिणाम प्राप्त होते देखा गया है।) आपको तीव्र सिर दर्द और आँखों में फोड़ा हो सकता है। आपका धन चोरी हो सकता है या आपको धन

की हानि हो सकती है। आपको जहर से खतरा हो सकता है। आपमें शारीरिक सुख प्राप्त करने की कामना विकसित हो सकती है और आपके नये शत्रु बन सकते हैं।

राहु प्रत्यंतर्दशा (07:08:2084 से 25:09:2084)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपको अपने जन्मस्थान को छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। आप उद्देश्यहीन होकर भटक सकते हैं। आपको भारी दुखों का सामना करना पड़ सकता है और आप खतरनाक रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। आपको देश के कानून के हाथों सजा मिल सकती है। दुर्घटनाओं केकारण आपको चोट लग सकती है। आपके सारे शरीर में खुजली हो सकती है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (25:09:2084 से 08:11:2084)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी भगवान में आस्था समाप्त हो सकती है। आपकी सीखने में कोई रूचि नहींहो सकती है। आप पाप कर्मों में रत हो सकते हैं। हर किसी से आपका झगड़ा हो सकता है। आपका एक पुत्र दुर्घटनाग्रस्त हो सकता है। आप बहुत दुखी हो सकते हैं।

शनि प्रत्यंतर्दशा (08:11:2084 से 31:12:2084)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आप धार्मिक आधार पर उपवास रख सकते हैं। आग या हवा के कारण आपका घरनष्ट हो सकता है। आपके हाथों और पैरों में तीव्र पीड़ा हो सकती है। आपके मेरूदण्ड में विकृति आ सकती है। आप घोड़े या किसी अन्य जानवर पर सवारी करते समय गिर सकते हैं या आप वाहन दुर्घटनाके शिकार हो सकते हैं। आपके आँख में रोग हो सकता है, जिसे डॉक्टर को तत्काल दिखाने की आवश्यकता हो सकती है। आपको कारावास हो सकता है या आपका बोझिल जीवन कारावास जैसा हो सकता है। (यहां पर कारावास का मतलब व्यक्ति की गतिविधियों पर पाबन्दी से है।) इसका कारण आपकीबीमारी हो सकती है, जहाँ बड़े लोग और डॉक्टर आपको घर से बाहर जाने के लिए मना कर सकतेहैं। आप अस्पताल में भर्ती हो सकते हैं, जहाँ पर आपके चलने फिरने की आजादी पर रोक लग सकती है। बहुत अधिक दुर्लभ मामले में ही आपको कानून कारावास की सजा दे सकता है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (31:12:2084 से 15:02:2085)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको धन की हानि हो सकती है और आग या चूहों के कारण कपड़े बर्बाद हो सकते हैं। आपके चारों तरफ होने वाली घटनाओं के कारण आपकी बौद्धिक क्षमता का ह्रास हो सकता है। आप अपनेबड़ों और उपदेशकों को नाराज कर सकते हैं, जिससे आपको उनके शाप का सामना करना पड़ सकता है। इस शाम का विषम प्रभाव राहु की महादशा में राहु–बुध–सूर्य की प्रत्यंतर्दशा के आरम्भ से दिखना शुरू हो सकता है। यदि आप ऐसे शाप से बचना चाहते हैं, तो आपको श्राद्ध का आयोजन करना चाहिए।

केतु प्रत्यंतर्दशा (15:02:2085 से 06:03:2085)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आप विदेश में रह सकते हैं। आपका धन चालाक और धूर्त लोग हड़प सकते हैं। आपको खाली पेट सोना पड़ सकता है। आपको सरकार के द्वारा पकड़े जाने का भय हो सकता है। चोर भी आपको परेशान कर सकते हैं। आपको मृत्यु का भय हो सकता है। ठगों से आपका झगड़ा हो सकता है। आपको बहुत कष्ट हो सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (06:03:2085 से 30:04:2085)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह दशा मिली–जुली होगी। आपकी माता और जीवनसाथी का स्वास्थ्य आपकी

चिन्ता का कारण हो सकता है। उनके उपचार में भारी धन व्यय हो सकता है। आप स्वयं महिला आत्माओं, जिन्हें योगिनी, डाकिनी या शाकिनी कहते हैं, के शिकार हो सकते हैं। आपके जीवनसाथी या नजदीकी संबंधियों को मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है। आप सादा भोजन कर सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (30:04:2085 से 16:05:2085)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपके मित्र और संतानें आपको कष्ट पहुंचा सकती हैं। आप बुखार और वायु विकार से ग्रस्त हो सकते हैं। आपको बीमार हालत में भी काम करने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। आपके पिता का स्वास्थ्य क्षीण हो सकता है। यदि आप राजनीति में हैं, तो आपको अपने कार्य क्षेत्र के राजनीतिक विरोधियों का भारी प्रतिरोध झेलना पड़ सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (16:05:2085 से 13:06:2085)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक निराशाजनक दशा हो सकती है। आप कई गलत और अप्रशंसनीय काम कर सकते हैं और शीघ्र ही आपको उसकी सजा भुगतनी पड़ सकती है। आपको केवल अपने वरिष्ठों और अधीनस्थों से ही नहीं बल्कि जनता के द्वारा भी अपमान का सामना करना पड़ सकता है। आपको विभिन्न प्रकार के खतरों का सामना करना पड़ सकता है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (13:06:2085 से 02:07:2085)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके जीवन की एक अति कटु दशा हो सकती है। आपको मृत्युतुल्य कष्ट हो सकते हैं। दुर्घटना के कारण आपके हाथ पैरों में चोट लग सकती है। रक्त की अशुद्धि के कारण आपको रोग हो सकते हैं। आपको गुर्दे की परेशानी हो सकती है। आप गलत काम कर सकते हैं। समय पर आपको भोजन प्राप्त नहीं हो सकता है। आपको किसी प्रकार के झगड़े से पूर्णतया दूर रहना चाहिए– जैसाकि आपको चोट लगने की संभावना है। आपका आत्म–सम्मान खो सकता है।

गुरू अर्न्तदशा (02:07:2085 से 20:04:2086)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। बृहस्पति आपकी कुण्डली में केन्द्र या त्रिकोण भाव में या उच्चस्थ या मित्र भाव में है, आप उत्तम बृहस्पति के सभी शुभ परिणामों का आनन्द प्राप्त करेंगे, जैसे सम्मान में बढ़ोत्तरी, अन्न के भंडार में वृद्धि, संतान का जन्म, कामनाओं की पूर्ति, उत्तम कपड़ों और आभूषणों की प्राप्ति, सरकार से भारी धन की प्राप्ति आदि। मंत्रणाओं में आपको उत्तम पद प्राप्त होगा। आप संतानों से भी धन प्राप्त करेंगे। आप सद्कृत्यों और उत्तम परम्परागत अनुपालनों को पूरा करेंगे। आपकी कुण्डली में बृहस्पति सूर्य से छठे या आठवें भाव में है या नीचस्थ है, आप सूर्य की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के दौरान सरकार के कारण परेशानियों, संतानके कारण दुखों, विभिन्न रोगों जैसे फोड़े और मधुमेह आदि का सामना कर सकते हैं। आपको धन कीहानि हो सकती है और व्यय बढ़ सकता है, योजनायें असफल हो सकती हैं, मानसिक पीड़ा हो सकती है तथा आप अपने पद को खो सकते हैं। इससे बचने का सबसे उत्तम उपाय भगवान नारायण (भगवान विष्णु–हिन्दु धर्म के त्रिमूर्ति में से एक) की उपासना है। बृहस्पति सूर्य की महादशा में अपनी अन्तर्दशा के दौरान बहुत अशुभ परिणाम नहीं देगा। विभिन्न स्रोतों से धनागमन, ईश्वर की आराधना, साधुजनों, बड़े संबंधियों से आनन्द, कान और फेफड़ों के विकार, शत्रुओं का नाश होगा।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (02:07:2085 से 10:08:2085)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यत: यह एक अति उत्तम दशा होगी। आपको अपनी खोई हुई स्थिति और सम्मान मिलेगा। पिछले कुछ सालों की तुलना में एक औसत श्रेष्ठता का समय होगा, मानो पूर्व में कुछ प्रतिकूल घटा ही ना हो। अत: आपको अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार करने के लिए सभी प्रयास करने चाहिए। इस दशा के दौरान किया गया कोई भी प्रयास फलदायी होगा। शिक्षा के प्रारम्भ, परिक्षायें देने

और नया व्यापार शुरू करने या वर्तमान व्यापार का विस्तार करने के लिए यह अति उत्तम समय है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (10:08:2085 से 25:09:2085)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको चौपाया जानवरों का लाभ होगा और आप वाहन खरीदेंगे। आपको अपने जीवनसाथी और संतान से सुख मिलेगा। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपको पदोन्नति मिल सकती है। सट्टों से आपको लाभ मिलेगा। आपको उत्तम भोजन और वरिष्ठों का समर्थन मिलेगा। बेहतरी के लिएआपकी वर्तमान स्थिति में बदलाव होगा।

बुध प्रत्यंतर्दशा (25:09:2085 से 06:11:2085)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप प्राचीन शास्त्रों को सीखने में अधिक रूचि लेंगे और इसमे निपुणता प्राप्त करेंगे। आपको हथियारों और रत्नों का लाभ होगा। आप स्वादिष्ट भोजन का आनन्द प्राप्त करेंगे। आपको पदोन्नति मिल सकती है। यदि आप व्यापार कर रहे हैं, तो आपको उसमें उचित मात्रा में लाभ मिलेगा। आपको इस दशा के दौरान भूमि नहीं खरीदनी चाहिए।

केतु प्रत्यंतर्दशा (06:11:2085 से 23:11:2085)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपका अपने संबंधियों से झगड़ा और विवाद हो सकता है और चोरों तथा शत्रु सेआपको कष्ट हो सकते हैं। आप हर किसी से सहायता मांगेंगे, लेकिन सब व्यर्थ हो सकता है। आपको हथियारों से चोट लग सकती है। आपको ऐसा प्रतीत हो सकता है, कि आपकी किसी भी समय मृत्यु हो सकती है या आपको अपने आस–पास की हर चीज से डर लग सकता है। आपको भोजन में कोई रूचि नहीं हो सकती है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (23:11:2085 से 10:01:2086)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको धन, आभूषणों और वस्त्रों का लाभ होगा। आपकी समृद्धि में वृद्धि होगी। यदि आप अविवाहित हैं, तो आपका विवाह हो सकता है। आप सुन्दर लड़कियों की संगति का आनन्द प्राप्तकरेंगे। यदि इन तीनों में से कोई ग्रह किसी अशुभ भाव में स्थित है या नीचस्थ है, तो आपको उन महिलाओं के कारण कष्ट हो सकता है, जिनसे आपके शारीरिक संबंध थे। आपकी सारी वस्तुओं को वे हड़प सकती हैं। आप ढेर सारे मीठे भोजन का आनन्द प्राप्त करेंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (10:01:2086 से 25:01:2086)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको विरासत में भूमि और भवन मिलने की संभावना है। सरकार से आपको सम्मान मिलेगा। हालाँकि, आप दशा का आनन्द नहीं प्राप्त कर सकते हैं– जैसाकि आपके दिमाग में किसीना किसी कारण से तनाव हो सकता है। आपके छोटे भाई आपके खिलाफ हो सकते हैं या आपकी चिंता का कारण हो सकते हैं। आपकी उपलब्धि के कारण ईर्ष्यालु सहकर्मी आपके लिए समस्यायें पैदा करने की कोशिश कर सकते हैं। आपको किसी नयी सम्पत्ति को क्रय करने में कोई धन निवेश नहीं करनाचाहिए।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (25:01:2086 से 18:02:2086)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको सोना, आभूषणों और रत्नों का लाभ मिलेगा। आप दूध से बनी कई वस्तुओंका आनन्द प्राप्त करेंगे। आप उदर विकार और पैरों तथा पिण्डलियों के रोगों से ग्रसित हो सकते हैं। मिर्गी होने की संभावना हो सकती है। ऐसे में आपको रोशनी करके रात में सोना चाहिए। आपको बासीभोजन नहीं खाना चाहिए।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (18:02:2086 से 07:03:2086)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको कई रोग जैसे उदर विकार, पेचिश, मिर्गी, मलेरिया, गर्दन में दर्द और अपचन आदि हो सकते हैं। आपको आग और आग के उपकरणों का प्रयोग करते समय बहुत सावधान रहना चाहिए। इस दशा के दौरान लगने वाली किसी भी चोट का उपचार कठिन हो सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (07:03:2086 से 20:04:2086)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको मिले–जुले परिणाम प्राप्त होंगे। एक तरफ आपका रूझान आध्यात्म की तरफ होगा और कई लोग आपको एक गुरु की तरह सम्मान देंगे, दूसरी तरफ कुछ निहित स्वार्थी लोग आपके नाम और यश का नाश करने की कोशिश कर सकते हैं। आपके लिए उनके साथ किसी भी प्रकार के विवाद को नजरअंदाज करना बेहतर होगा।

शनि अर्न्तदशा (20:04:2086 से 02:04:2087)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। आपकी जन्मकुण्डली में शनि केन्द्र अथवा त्रिकोण भाव में स्थित है, शनि की इस अन्तर्दशा में आप अपने शत्रुओं का नाश करेंगे और शुभ समारोहों में भाग लेंगे। हालांकि, आपकी आय सीमित होगी और सुख कम हो सकते हैं। दूसरे शब्दों में, सूर्य और शनि के परस्पर शत्रु होने के कारण अन्तर्दशा के बहुत अशुभ होने की धारणा के बिल्कुल विपरीत, केन्द्र अथवा त्रिकोण भाव में स्थित शनि की अन्तर्दशा बहुत महत्वपूर्ण नहीं हो सकती है अर्थात जीवन सामान्य तरीके से चलेगा। आपकी जन्मकुण्डली में शनि सूर्य से दूसरे या सातवें भाव में स्थित है, आपको मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है। इन अशुभ प्रभावों से बचने के लिए आपको एक काली गाय या भैंस या बकरी दान करनी चाहिए और महामृत्युंजय मंत्र का जाप करना चाहिए। आपको आय में बाधाओं, संतान से अलगाव, जीवनसाथी के खराब स्वास्थ्य, अनावश्यक खर्चों, परिवार से अलग रहने की बाध्यता, परिवार के किसी बड़े सदस्य का वियोग, भूमि की हानि जैसे अशुभ परिणामों का सामना करना पड़ सकता है। शनि की अन्तर्दशा के आरम्भ में आपको, आपके मित्रों और संबंधियों को अशुभताओं का सामना करना पड़ सकता है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (20:04:2086 से 14:06:2086)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप विदेशी स्थान पर रह सकते हैं– विशेषकर जो जंगलों से घिरे हों। यदि कंटक शनि की दशा भी इसी दशा के दौरान चल रही है, तो आपको अपने सामान को बहुत ही कम दामोंपर बेचना पड़ सकता है और बेहतरी या रोजगार के लिए किसी सुदूर स्थान पर जाना पड़ सकता है, जहाँ आपको कई पेरशानियों का सामना करना पड़ सकता है। वहाँ से भी अपनी वहाँ पर खरीदी गयीं वस्तुओं को बहुत कम दामों पर बेच कर वापस आने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है, जिससे आपको धनकी पूर्णतया हानि हो सकती है। यदि आपने ध्यान दिया तो आप इस स्थिति से बच निकलने में सक्षम होंगे। आपको जलीय जीवों से खतरा हो सकता है। आपको अस्वस्थकर भोजन करने पर बाध्य होना पड़ सकता है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (14:06:2086 से 02:08:2086)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपको धन की कमी का सामना करना पड़ सकता है। आपको अजनबी लोगों से धन उधार लेने पर बाध्य होना पड़ सकता है। आप सट्टों और जुए में रत हो सकते हैं और जिससे आपको धन की हानि हो सकती है। हानि को सहन कर पाने में असक्षम होने के कारण आप अपनी अचलसम्पत्ति को भी बेच सकते हैं। आपकी व्यावसायिक स्थिति पलट सकती है। आप बुरे लोगों की संगतिमें पड़ सकते हैं। आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है। अति गरीबी की स्थिति आ सकती है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (02:08:2086 से 22:08:2086)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपकी अपनी गलती के कारण धन हानि हो सकती है। आप अपने नजदीकी मित्रोंऔर संबंधियों को अपना शत्रु बनाने के जिम्मेदार स्वयं हो सकते हैं। वे आपसे बदला लेने के लिए अवसर की प्रतीक्ष कर सकते हैं। शनि–केतु–सूर्य की दशा लागू होने के दौरान ऐसे प्रतिशोध को अंजाम दिया जा सकता है। आपको गरीबी की स्थिति से गुजरना पड़ सकता है। यदि आपको भोजन प्राप्त भी होता है, तो आप उसे पचा पाने में सक्षम नहीं हो सकते हैं– जैसाकि लोग उसे आपको प्रेम और सहानुभूतिके बिना दे सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (22:08:2086 से 19:10:2086)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप सट्टों और जुए में रत हो सकते हैं और धन संग्रह करेंगे, जिसे आप शारीरिक सुखों की प्राप्ति के लिए सुन्दर महिलाओं पर व्यय कर सकते हैं। आप कृषि से भी आय प्राप्त कर सकते हैं। आपको एक पुत्री की प्राप्ति हो सकती है। आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है। यदि यह दशा संतान के जन्म के समय पड़ती है, तो आपके जीवनसाथी को खतरा हो सकता है। उनकी शल्य चिकित्सा हो सकती है और उनका शरीर कमजोर हो सकता है। उनके जीवन को कोई खतरा नहीं होगा।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (19:10:2086 से 05:11:2086)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपको सरकार से अधिकार, शक्ति और पहचान मिलेगी। हालाँकि, आपके जीवनसाथी से आपके संबंध मधुर नहीं हो सकते हैं। आपकी वस्तुयें चोरी हो सकती हैं। आपको बुखार या मलेरिया हो सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (05:11:2086 से 04:12:2086)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। अपनी पिछली दशाओं की तुलना में आप अपनी बुद्धिमता का प्रयोग अधिक बेहतर तरीके से करने में सक्षम होंगे। आपको धन का लाभ होगा और सुन्दर लड़कियों के साथ आप मौज–मस्ती करेंगे। आपको प्रचुर मात्रा में स्वादिष्ट भोजन प्राप्त होगा। इस दशा में आप कुछ महिनों के अन्तराल के बाद चैन की सांस लेने में सक्षम होंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (04:12:2086 से 24:12:2086)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको हथियारों से खतरा, आग और जलने से भय, शत्रुओं से कष्ट हो सकता है। आपको रक्त की खराबी के कारण रोग हो सकते हैं, जिन्हें चिकित्सकीय उपचार की अति आवश्यकताहो सकती है और आपका अप्रत्याशित व्यय बढ़ सकता है। आपको इस और अगली दशाओं से पार पाने के लिए कुछ तरीकों को अपनाना पड़ेगा।

राहु प्रत्यंतर्दशा (24:12:2086 से 14:02:2087)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपको भूमि, धन और मवेशियों की हानि हो सकती है। आपको वाहनों से दुर्घटना हो सकती है और आपके पैर में चोट लग सकती है। आपको बिना किसी उद्देश्य के लम्बी यात्राओं पर जाना पड़ सकता है। आप चर्म रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। सामान्यतः इस समय आपको सोरयसिस हो सकता है। यदि शीघ्र ही उसका पता लगाकर उपचार किया गया, तो उपचार संभव है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (14:02:2087 से 02:04:2087)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की

प्रत्यंतर्दशा चल रही है। महिलाओं के द्वारा हानि हो सकती है। मुख्यतः आपकी जीवनसाथी ऐसी हानियों के लिए जिम्मेदार होंगी। किसी एक नजदीकी संबंधी के लिए यह दशा बहुत खराब हो सकती है। आपको किसी काम में रूचि नहीं हो सकती है। आप अवसाद से ग्रसित हो सकते हैं। हालाँकि, आपको अवसरीय आराम और धन प्राप्त होंगे।

बुध अन्तर्दशा (02:04:2087 से 06:02:2088)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। सूर्य की महादशा में बुध की अन्तर्दशा और उसमें बुध की ही प्रत्यंतर दशा के दौरान आपको मानसिक स्थिरता प्राप्त होगी और आपकी बौद्धिक क्षमता में वृद्धि होगी। आपमें गलत और सही का फर्क करने की क्षमता होगी, अतः आपके द्वारा लिये गये आर्थिक निर्णय सही होंगे। मौजूदा व्यापार या रोजगार में लाभ होगा। इस दशा के दौरान व्यापार का विस्तार और रोजगार या किसी अन्य क्षेत्र में सुधार सभी कुछ संभव होगा। आप सोना, रत्न और आभूषण खरीदेंगे। आपका जीवन बहुत सहज होगा।

बुध प्रत्यंतर्दशा (02:04:2087 से 16:05:2087)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपका दिमाग शांत होगा और आपकी बौद्धिक क्षमता बढ़ेगी। आपमें गलत और सही में भेद करने की क्षमता होगी, जिससे आर्थिक निवेश के मामले में भी आपका निर्णय सही होगा। आपको अपने वर्तमान व्यापार या व्यवसाय में लाभ होगा, आप व्यापार का विस्तार करेंगे और व्यवसाय या जिस क्षेत्र में आप लाभ प्राप्त करना चाहते हैं, उसमें सुधार होगा। आप रत्न और आभूषण खरीदेंगे। आपका जीवन बहुतसहज होगा।

केतु प्रत्यंतर्दशा (16:05:2087 से 03:06:2087)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। शत्रु परेशानियां पैदा करने की कोशिश करेंगे। वरिष्ठ और अधीनस्थ आपके जीवन को कष्टकारी बना सकते हैं। आप रक्त की खराबी के कारण होने वाले रोगों, उदर विकार और सिर दर्द आदिसे ग्रसित हो सकते हैं। विभिन्न तरीकों से आपको धन हानि हो सकती है। आपको हथियारों की हानिहो सकती है। आपको अपमान और कलंक का सामना करना पड़ सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (03:06:2087 से 24:07:2087)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपको दक्षिण दिशा से लाभ मिल सकता है। अतः यदि आप व्यापार कर रहे हैं, तोआपको अपने वर्तमान व्यापार के स्थान से दक्षिण की दिशा में व्यापार करने की तरफ ध्यान लगाना चाहिए। यदि आप ऐसा करेंगे तो आपको भारी लाभ होगा और महिला मित्रों से सुख मिलेंगे। यद्यपि आपको अपने जीवनसाथी से पूर्ण सुख मिलेगा, फिर भी उसके स्वास्थ्य की तरफ बहुत ध्यान देने की आवश्यकता हो सकती है– जैसाकि उनके गर्भाशय में खराबी हो सकती है। कोई संक्रमण और उसके कारण रक्त स्राव की संभावना हो सकती है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (24:07:2087 से 09:08:2087)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यद्यपि आप कोई खतरा या रोग नहीं हो सकता है, फिर भी आपको ऐसा प्रतीत हो सकता हैकि आप ठीक नहीं हैं। सभी मामलों में आपका रवैया आलस्यपूर्ण हो सकता है। आपका शरीर कमजोर हो सकता है। आपको तीव्र सिर दर्द, नेत्र रोग और उल्टी की शिकायत हो सकती है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (09:08:2087 से 04:09:2087)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। आपको अप्रत्याशित क्षेत्रों से पर्याप्त धन मिलेगा। आपका विवाह हो सकता है या आपको एक पुत्री की प्राप्ति हो सकती है। बुजुर्ग लोग संतान

और पौत्र–पौत्रियों की संगति में अपना समय गुजारेंगे। आपको वस्त्रों और उत्तम भोजन का सुख प्राप्त होगा।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (04:09:2087 से 22:09:2087)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। एक तरफ प्रचुर धन कमायेंगे और नया ज्ञान प्राप्त करने में रूचि लेंगे, दूसरी तरफआपको अपचन और गंभीर कब्ज की शिकायत हो सकती है और आपको अपनी कई योजनाओं को स्थगित करने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है, जिससे आप झुंझला सकते हैं। आपको चोरों से खतरा होसकता है। आपके सिर या पैर में अचानक चोट लग सकती है। आपको आग के साथ काम करते समयसावधान रहना चाहिए।

राहु प्रत्यंतर्दशा (22:09:2087 से 07:11:2087)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको सरकार और शत्रुओं के कारण कष्ट हो सकता है। आपकी किसी काम में रूचि नहीं हो सकती है। आप पूर्ण निराशाजनक जीवन गुजार सकते हैं। आपमें आत्महत्या करने की प्रवृत्ति आ सकती है। आपका भोजन अस्वस्थकर और असमय हो सकता है। भविष्य के बारे में अनावश्यक चिंताओं केकारण आप मानसिक अवसाद से ग्रस्त हो सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (07:11:2087 से 19:12:2087)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी, जिसका आपको लाभ उठाना चाहिए। आप कठिनपरिश्रम करेंगे और परिणाम प्राप्त करेंगे। आप जो भी करेंगे, उसमें आपको भारी सफलता मिलेगी। अन्य ग्रहीय युतियों के आधार पर आप सबसे ऊँचे पद पर पहुंचेंगे, ऊँचा ज्ञान प्राप्त करेंगे और आपकी बुद्धि का विकास होगा। मित्र और संबंधी आपकी मदद करेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (19:12:2087 से 06:02:2088)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। इस दशा के दौरान आप रोगों और चोटों का सामना कर सकते हैं। आपके सिर और हाथ में प्रायः चोट लग सकती है। आपको लकवा, शारीरिक कमजोरी और बुखार हो सकता है। आपको अपने आस–पास की हर चीज से डर लग सकता है। आपको धन हानि हो सकती है।

केतु अर्न्तदशा (06:02:2088 से 13:06:2088)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आप विभिन्न कारणों से भारी दुखों का सामना कर सकते हैं, आपको विभिन्न रोग और धन की हानि हो सकती हैं। सरकारी अधिकारी और संबंधी आपके कष्ट के कारण हो सकते हैं। आपकी कुण्डली में लग्न से केतु तीसरे, छठे, दसवें या ग्यारहवें भाव में है, आपको संतानों से खुशियों और आराम कामनाओं की पूर्ति, धन लाभ, उत्तम परिधान और गहने प्राप्त होंगे, आपके नाम और यश में वृद्धि होगी। आपकी कुण्डली में लग्न या सूर्य से केतु दूसरे या सातवें भाव में है या इन भावों का स्वामी है, आपको गंभीर रोग और सभी प्रकार की मानसिक पीड़ायें हो सकती हैं। आप आत्महत्याकरने की सोच सकते हैं। आपको केतु मंत्र का जाप करना चाहिए और एक बकरी दान में देनी चाहिए।

केतु प्रत्यंतर्दशा (06:02:2088 से 14:02:2088)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। संबंधियों तथा मित्रों के कारण आपको धन हानि हो सकती है। आपके शरीर में चोटलग सकती है। आप विदेशों में निवास कर सकते हैं। आपकी योजनायें असफल हो सकती हैं। परिवारके सदस्यों की बीमारियां आपकी मानसिक शांति को पूरी तरह भंग कर सकती हैं। आप डॉक्टरों के

चक्कर काट सकते हैं। आप जानवरों पर से गिर सकते हैं या आप वाहन दुर्घटनाओं का शिकार हो सकतेहैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (14:02:2088 से 06:03:2088)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपकी आय स्थिर हो सकती है। आपको मवेशियों का लाभ हो सकता है या आप उनसे लाभ प्राप्त कर सकते हैं। हालाँकि, चिकित्सकीय उपचार में व्यय अधिक हो सकता है। आप नेत्र रोग, शारीरिक विकार और कफ की शिकायतों से ग्रस्त हो सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (06:03:2088 से 12:03:2088)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। संबंधी तथा मित्र आपके जीवन को कष्टकारी बना सकते हैं। जितना आप उनसे दूरजाने की कोशिश करेंगे, उतना ही वे आपके पास आयेंगे। आपमें ऐसी भावना जन्म ले सकती है, कि आपकी मृत्यु किसी समय हो सकती है। आपकी योजनायें असफल हो सकती हैं। यदि यह दशा शिक्षा ग्रहण करने के दौरान आती है, तो आप अपनी पढ़ाई में ध्यान लगा पाने सक्षम नहीं हो सकते हैं और आपअसफल भी हो सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (12:03:2088 से 23:03:2088)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपने कठिन परिश्रम से उचित मात्रा में धन अर्जित करेंगे और जीवन का आनन्द प्राप्त करेंगे। आपको एक पुत्री की प्राप्ति हो सकती है। यदि आप पहले से दादा बन चुके हैं, तो आपको एक और पौत्री प्राप्त हो सकती है। आपकी कुण्डली में केतु कमजोर है, आपको जीवन में कई विपदाओं का सामना करना पड़ सकता है। आपके भाग्य में उत्तम भोजन नहीं हो सकता है। माता, जीवनसाथी और संतान की बीमारी के कारण आपको धन हानि हो सकती है। आपका एक अलाभकारी स्थानान्तरण हो सकता है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (23:03:2088 से 30:03:2088)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको केवल अपने विरोधियों से ही नहीं, अपितु आग से औरवाहनों की सवारी करते समय भी बहुत अधिक सावधान रहना चाहिए। आपको लकवा हो सकता है। आपको नशे की लत लग सकती है और आप मांसाहारी हो सकते हैं।

राहु प्रत्यंतर्दशा (30:03:2088 से 19:04:2088)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। आपके शत्रु आपको परेशान कर सकते हैं और महिलायें आपका शोषण कर सकती हैं। अन्य लोग आपको लगभग एक दास की तरह बांध कर सकते हैं। यदि आप उनके चंगुल से मुक्त होने की भी कोशिश करेंगे, तो भी किसी ना किसी कारण से आपको ऐसे दुष्ट लोगों के साथ रहने के लिएमजबूर होन पड़ सकता है। आपको भोजन का अभाव हो सकता है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (19:04:2088 से 06:05:2088)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। विशिष्टों और अधीनस्थों, संबंधियों तथा मित्रों के साथ आपके अनावश्यक विवाद याझगड़े हो सकते हैं। आपको धन की भारी हानि हो सकती है। वस्त्र और सम्पत्ति का नाश हो सकता है। आपकी बौद्धिक क्षमता का ह्रास हो सकता है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (06:05:2088 से 26:05:2088)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की

प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक निराशाजनक दशा हो सकती है। आप उन लोगों से किसी मदद की आशा कर सकते हैं, जिन्होंने आवश्यकता के समय आपकी मदद की थी। लेकिन वे आपसे क्षमा मांग कर आपसे मुंह फेर सकते हैं, जिससे आप अपने जीवनयापन और संबंधों को स्थापित करने के बारे में भविष्य की योजनाओं के बारे में निर्णय लेंगे।

बुध प्रत्यंतर्दशा (26:05:2088 से 13:06:2088)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा तनावपूर्ण हो सकती है। स्वास्थ्य और शिक्षा की तरफ मुख्य जोर होगा। यदि महत्वपूर्ण परिक्षाओं के देने के समय यह दशा आती है, तो परिणाम काफी असंतोषजनक हो सकते हैं। आपको प्रायः बुखार और तीव्र शारीरिक पीड़ा हो सकती है।

शुक्र अर्न्तदशा (13:06:2088 से 14:06:2089)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा चल रही है। आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र अपने या उच्चस्थ या केन्द्र या त्रिकोण या अपने मित्र के भाव में स्थित है, शुक्र की इस अन्तर्दशा में आप अपनी प्रियतम स्त्रियों के साथ आनन्द प्राप्त करेंगे, आपको धन का लाभ, विदेश यात्राके अवसर, कुछ क्षेत्रों में सिद्धि प्राप्त होगी। आपका दृष्टिकोण आध्यात्मिक हो सकता है, आपकी वीरताऔर जीवनशक्ति में वृद्धि होगी, आप किसी काम को शुरू करने के उत्साहित रहेंगे, आपको बड़े समारोहों में शामिल होने के निमंत्रण प्राप्त होंगे। आप उत्तम परिधान और आभूषण प्राप्त करेंगे। दूसरे शब्दोंमें यह दशा आपके लिए अति उत्तम होगी। अन्तर्दशा के तीन भागों में से पहले भाग में आपको वाहनोंकी प्राप्ति होगी, दूसरे भाग में आप सभी प्रकार की खुशियां और सुख प्राप्त करेंगे तथा तीसरे भाग मेंआप अपने परिश्रम से अर्जित नाम और यश खो सकते हैं, मित्रों और संबंधियों के साथ आपका विवाद होसकता है, आप गले की बीमारी, लकवा, शारीरिक पीड़ा का शिकार हो सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (13:06:2088 से 13:08:2088)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। सूर्य की पूरी दशा में यह एक स्वर्णिम दशा होगी। आपको अपने सभी कामों में सफलता मिलेगी। आप भवनों का निर्माण और सुन्दर लड़कियों की संगति का आनन्द प्राप्त करेंगे। आप नये कपड़े, आभूषण तथा फर्नीचर खरीदेंगे। यदि आप अविवाहित हैं, तो आपका विवाह हो सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (13:08:2088 से 31:08:2088)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। परिस्थितियों में अचानक बदलाव आ सकता है। पिछली दशा के दौरान आपको मिलने वाली सारी खुशियां समाप्त हो सकती हैं। जीवन सुख और दुख का मिश्रण है। कभी सुख के बाद दुख आता है, और कभी दुख के बाद सुख। इस दशा के दौरान सुख के बाद दुख आ सकता है। आपको सरकारी अधिकारियों, शत्रुओं और अधीनस्थों से भय हो सकता है। आप पैर और सिर के रोगों, बुखार, रतिजन्य रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (31:08:2088 से 01:10:2088)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक बहुत उत्तम दशा होगी। आप एक विस्तृत भूमि और सम्पत्ति के स्वामी होंगे। आप नये वस्त्रों और आभूषण खरीदेंगे। अपने जीवनसाथी और संतान की संगति का आनन्द प्राप्त करेंगे। आप विभिन्न तीर्थों की यात्रा करेंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (01:10:2088 से 22:10:2088)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अपने सभी कामों में असफलता का सामना करना पड़ सकता है। मित्रों और संबंधियों तथा बाहरी लोगों के साथ झगड़े और लड़ाई के कारण आपको चोट लग सकती है।

आपका मानसिक संतुलन बिगड़ सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (22:10:2088 से 16:12:2088)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। पिछली दशा में किये गये गलत कामों का दंड आपको इस दशा में मिलेगा। आपकोमुकदमों का सामना करना पड़ सकता है और वकीलों की फीस तथा किराये भाड़े में आपका बहुत धन व्यय हो सकता है। शत्रुओं के जीवनसाथी से झगड़े के कारण आपके सम्मान को भी खतरा हो सकताहै।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (16:12:2088 से 03:02:2089)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। भारी तूफान के बाद यह एक शांतिपूर्ण दशा होगी। आपको एक सीख प्राप्त होगी।आप पुनः किसी प्रकार के अधिक शोरगुल और अस्थिरता के एक आरामदायक जीवन गुजारने की तरफ अग्रसर होंगे। पिछली दशा में आपने जो कुछ भी खोया है, उसे पुनः प्राप्त करेंगे। आपको चौपाया जानवरों और वाहनों की प्राप्ति होगी। पुनः शांति की स्थापना होगी।

शनि प्रत्यंतर्दशा (03:02:2089 से 02:04:2089)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक औसत दशा होगी। जीवन सामान्य होगा। आपको अवसरीय लाभ और हानि होगी। आपका स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा। आपको या आपकी बहन को एक पुत्री की प्राप्ति हो सकती है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (02:04:2089 से 23:05:2089)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आप नये क्षेत्रों में ज्ञान प्राप्त करने में रूचि लेंगे। सभी मामलों में आप सामान्य रूप से संपन्न होंगे। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको पदोन्नति मिलेगी औरयदि आप व्यापार कर रहे हैं, तो आपको उचित लाभ होगा।

केतु प्रत्यंतर्दशा (23:05:2089 से 14:06:2089)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशाचल रही है। यह एक भटकावा की दशा हो सकती है। आपको कई पथभ्रष्ट करने वाले लोग मिल सकते हैं और आप उनके चंगुल में केवल धन गंवांने के लिए फंस सकते हैं। आप विभिन्न रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। आपको कृषि और अन्न लाभ होगा।

उपयुक्त रत्न का सुझाव

लग्नाधिपति के लिए रत्न

लग्नाधिपति (लग्न का स्वामी) – बुध

आपका लग्नेश बुध है। चूंकि यह ना तो नीचस्थ है और ना ही त्रिक भाव या मारक भाव में स्थित है। इसलिए आप बुध के लिए रत्न धारण कर सकते हैं।

बुध के लिए रत्न

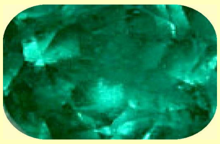

पन्ना की भौतिक संरचना

पन्ना एक काफी आकर्षक रत्न है। पन्ना काफी कठोर होता है, लेकिन इसे आसानी से काटा जा सकता है। यह गहरा एवं चमकदार हरा रंग में पाया जाता है। यह सामंजस्य, प्रकृति के प्रति प्रेम, खुशहाली एवं आनन्द का सूचक है। हरा जेड, पेरिडोट, हरा तुरमली, सवोराइट, हरा डायोप्साइड इत्यादि पन्ना के ऊपरत्न हैं।

पन्ना धारण करने के फायदे

पन्ना धारण करने से सफलता, सौभाग्य एवं खुशहाली प्राप्त होती है। इससे बुद्धि तीव्र होती है तथा सीखनेकी योग्यता, दूरदर्शिता, स्मरण शक्ति, विश्वास, अन्तर्दृष्टि एवं सूक्ष्म–दृष्टि का विकास होता है। पन्ना धारण करना स्वास्थ्य– विशेषकर तंत्रिका एवं आंखों के लिए लाभदायक होता है। इससे विषयवस्तु के पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति में मदद मिलती है। यह विषैले जीवों एवं ईर्ष्यालू व्यक्तियों के भय से बचाता है। पन्ना

जहर का नाश एवं पाचन में मदद करता है। पन्ना धारक को प्रेत साया से दूर रखता है एवं पापों से मुक्तिदिलाता है। पन्ना धारण करने से अन्न, धन, सम्पत्ति एवं वंश में वृद्धि होती है।

रोगों पर पन्ना का प्रभाव

पन्ना धारण करने या पन्ना की भस्म का सेवन करने से निम्नलिखित रोग दूर होते हैं– पथरी, गुदा की गांठ, बहुमूत्र, खून गिरना, बवासीर, पित्त ज्वर, ज्वर, खांसी, गुर्दे का विकार, रक्त–विकार, आधासीसी इत्यादि।

पन्ना धारण करने के नियम

बढ़िया चमक, साफ रंग वाला एवं धब्बारहित पन्ना ही धारण करना चाहिए, इससे भाग्य में बढ़ोत्तरी होगी। पन्ना सोने से बनी अंगूठी या लॉकेट में पहनना चाहिए। पन्ना इस तरह धारण करना चाहिए कि यह निरंतर त्वचा के संपर्क में रहे। इसलिए अंगूठी में धारण करना ज्यादा लाभदायक होगा। पन्ना का वजन 3–7 कैरेट (3–7 रत्ती) होना चाहिए। पुरुषों को दायें हाथ में धारण करना चाहिए। यदि बुध मिथुन या कन्या राशि में हो या अश्लेषा, ज्येष्ठा एवं रेवती नक्षत्र में हो तथा बुध अथवा सूर्य के नवमांश में बुध स्थित हो तो बुधवार के दिन सूर्योदय से लेकर दो घंटे बाद सोने की अंगूठी में पन्ना जड़वाकर धारण करना चाहिए।

बुधवार के दिन सूर्योदय से दो घंटे के बाद नित्य क्रिया से निवृत्त होकर स्नान कर साफ वस्त्र धारण करें।इसके पश्चात पूर्वाभिमुख होकर भगवान गणेश की मूर्ति के सामने पूजा पर बैठें। सबसे पहले घी का दीपक एवं अगरबत्तियां जलायें एवं देवता के आगे फूल, फल एवं मिठाईया चढ़ायें। फिर रत्न जड़ित अंगूठी या लॉकेट को पंचामृत (दूध, दही, घी, चीनी एवं शहद) से धोयें। इसके पश्चात् अंगूठी या लॉकेट को गंगाजल या शुद्ध जल से धोकर देवता के चरणों में अर्पित करें।

अब सबसे पहले बुध देवता के बीज मंत्र का 9 बार जाप करें। फिर ध्यान मंत्र एवं ऋगवेद मंत्र का एक–एक बार जाप करें। तदुपरान्त बुध अष्टोत्तर शतनामावली (बुध ग्रह के 108 नाम) का जाप करें। इसकेउपरांत बुध देवता का ध्यान करते हुए दण्डवत प्रणाम करें एवं आस्थापूर्वक अंगूठी को कनिष्ठिका अंगुली में धारण करें या लॉकेट को गले में धारण करें।

पन्ना दान की विधि

पन्ना यंत्र

9	4	11
10	8	6
5	12	7

चांदी के पत्र पर यंत्र खुदवाकर उसके मध्य में पन्ना जड़वाकर उसकी प्राण–प्रतिष्ठा करें। फिर बुध मंत्र सेपन्ने को बुधवार के दिन अभिमंत्रित करें। 64 दिन तक लगातार उपरोक्त मंत्र का जप करते हुए यंत्र की विधिवत् पूजा करते रहें। तत्पश्चात्, सोना, मूंगा, कांस्य, घी, शक्कर, कपूर, हरा वस्त्र, हाथी दांत, एवं दक्षिणासहित यंत्र ब्राह्मण को दान कर दें। बुधवार के दिन 10 बजे तक इस दान को करने से श्रेष्ठ फल प्राप्त होता है।

पन्ना के प्रभाव की अवधि

अंगुठी में जड़वाने के दिन से शुरू कर 3 वर्ष तक पन्ना प्रभावशाली रहता है एवं उसके बाद पन्ना का प्रभाव नष्ट हो जाता है। अतः उपरोक्त अवधि के बाद पन्ना बदल देना चाहिए।

नवमेश के लिए रत्न

नवमेश– शुक्र

चूंकि आपका नवमेश आपकी कुण्डली में किसी मारक भाव का स्वामी है, इसलिए नवमेश के लिए कोई रत्नधारण करना आपके लिए उपयुक्त नहीं होगा।

योग–कारक ग्रह के लिए रत्न

आपकी जन्मकुण्डली में कोई प्राकृतिक योग––कारक ग्रह नहीं है।

तात्कालिक योग–कारक ग्रह के लिए रत्न

तात्कालिक योग–कारक ग्रह – शनि

शनि ग्रह आपकी जन्मकुण्डली में तात्कालिक योग––कारक ग्रह है।चूंकि तात्कालिक योग–कारक ग्रह ना तो उच्चस्थ है, ना ही नीचस्थ है और ना ही अपने भाव में उपस्थित है। अतः आप शनि ग्रह के लिए रत्न धारण कर सकते हैं।

शनि के लिए रत्न

नीलम की भौतिक संरचना

नीलम एक काफी आकर्षक रत्न है। यह अपने सौन्दर्य, आकर्षक रंग, पारदर्शिता, प्रतिरोधक शक्ति एवं स्थायित्व के लिए जाना जाता है। यह नीले रंग में पाया जाता है। यह सामंजस्य, सहानुभूति, मित्रता, भरोसा एवं वफादारी का सूचक है। तंजेनाइट, नीला स्पाइनल, जम्बुमणि इत्यादि नीलम के ऊपरत्न हैं।

नीलम धारण करने के फायदे

नीलम धारण करने से सफलता, सौभाग्य, खुशहाली प्राप्त होती है। यह जीवन में स्थायीत्व प्रदान करता है।नीलम दूसरों की ईर्ष्या एवं कुदृष्टि से बचाता है। यात्रा के दौरान आने वाले खतरों को दूर करता है। स्वास्थ्य लाभ एवं मानसिक अशांति या मानसिक बीमारियों को दूर करने में नीलम काफी सहायक होता है।नीलम रचनात्मक कार्यों, अन्तर्दृष्टि एवं ध्यान को प्रेरित करता है। नीलम जुकाम एवं पित्तदोष में लाभदायक होता है तथा शनि के प्रकोप से बचाता है। नीलम धारण करने से धारक दीर्घायु होता है एवं सम्मान, यश, ज्ञान एवं धन–सम्पत्ति प्राप्त करता है। नीलम सत्तापक्ष से सम्मान दिलवाता है, दुश्मनों से रक्षाकरता है एवं मोह–माया को दूर करता है।

रोगों पर नीलम का प्रभाव

नीलम धारण करने या औषधि के रूप में सेवन करने से निम्नलिखित रोग दूर होते हैं– नेत्र रोग, मुंह से खून आना, दिमाग की गर्मी, हिचकी, पागलपन, खांसी, ज्वर, उपदंश, अजीर्ण, विषमज्वर इत्यादि।

नीलम धारण करने के नियम

बढ़िया चमक, साफ रंग वाला एवं धब्बारहित नीलम ही धारण करना चाहिए, इससे भाग्य में बढ़ोत्तरी होगी।नीलम सोना, चांदी या लोहे से बनी अंगूठी या लॉकेट में पहनना चाहिए। नीलम इस तरह धारण करना चाहिए कि यह निरंतर त्वचा के संपर्क में रहे। इसलिए अंगूठी में धारण करना ज्यादा लाभदायक होगा। नीलम का वजन 3–7 कैरेट (कम से कम 4 रत्ती) होना चाहिए। पुरुषों को दायें हाथ में धारण करना चाहिए। जब शनि मकर अथवा कुम्भ राशि में हो या तुला राशि में उच्चस्थ हो या शनिवार को उत्तराषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, चित्रा, स्वाति अथवा विशाखा नक्षत्र हो, उस दिन नीलम सोना, चांदी या लोहे में जड़वाकर धारण करें।

शनिवार के दिन सूर्योदय से दो घंटे चालीस मिनट पहले नित्य क्रिया से निवृत्त होकर स्नान कर साफ वस्त्र धारण करें। इसके पश्चात पूर्वाभिमुख होकर भगवान गणेश की मूर्ति के सामने पूजा पर बैठें। सबसे पहले घी का दीपक एवं अगरबत्तियां जलायें एवं देवता के आगे फूल, फल एवं मिठाईया चढ़ायें। फिर रत्न जड़ित अंगूठी या लॉकेट को पंचामृत (दूध, दही, घी, चीनी एवं शहद) से धोयें। इसके पश्चात् अंगूठी या लॉकेट को गंगाजल या शुद्ध जल से धोकर देवता के चरणों में अर्पित करें।

अब सबसे पहले शनि देवता के बीज मंत्र का 23 बार जाप करें। फिर ध्यान मंत्र एवं ऋगवेद मंत्र का

एक–एक बार जाप करें। तदुपरान्त शनि अष्टोत्तर शतनामावली (शनि ग्रह के 108 नाम) का जाप करें। इसके उपरांत शनि देवता का ध्यान करते हुए दण्डवत प्रणाम करें एवं आस्थापूर्वक अंगूठी को मध्यमा अंगुली में धारण करें या लॉकेट को गले में धारण करें।

नीलम दान की विधि

नीलम यंत्र

12	7	14
13	11	9
8	15	10

रांगा, सीसा या लोहे के पत्र पर शनि यंत्र खुदवाकर उसके मध्य में नीलम जड़वाकर उसकी प्राण प्रतिष्ठा करें। फिर शनि मंत्र से नीलम को शनिवार के दिन अभिमंत्रित करें। मध्याह्न काल में दीप बलि दें। त्तपश्चात् लोहा, उड़द, सरसों का तेल, भैंस, उपानह, काला वस्त्र एवं दक्षिणा सहित यंत्र ब्राह्मण को दान कर दें। इस प्रकार दान करने से शनि से संबंधित अरिष्ट दूर होते हैं एवं मनोकामना पूर्ण होती है।

नीलम के प्रभाव की अवधि

अंगुठी में जड़वाने के दिन से शुरू कर 5 वर्ष तक नीलम प्रभावशाली रहता है एवं उसके बाद नीलम का प्रभाव नष्ट हो जाता है। अतः 5 वर्ष के बाद नीलम बदल देना चाहिए।

जन्म राशि के आधार पर रूद्राक्ष का सुझाव

आपकी जन्म राशि कन्या है। आपके लिए चतुर्मखी रूद्राक्ष उपयुक्त है।

इस रूद्राक्ष के इष्टदेव ब्रह्मा हैं। यह परिवार उत्पन्न कर उसे आगे बढ़ाने की क्षमता प्रदान करता है और आयुष्मान होने का वर देता है।

चारमुखी रूद्राक्ष को बृहस्पतिवार के दिन लाल धागे में पिरोकर सूर्योदय के बाद केले के पौधे से छुआकर ऊँ ब्रह्मा देवाय नमः मंत्र से अभिमंत्रित कर गले में धारण करें।

आपकी जन्म राशि कन्या है। आपके लिए षट्मुखी रूद्राक्ष उपयुक्त है।

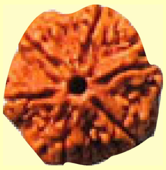

इस रूद्राक्ष के इष्टदेव कार्तिकेय हैं। यह सामर्थ्य तथा शासन संबंधी कलाएं प्रदान करता है और विज्ञान, तकनीकी शिक्षा एवं शल्य चिकित्सा आदि क्षेत्रों में सफलता निश्चित करता है।

छःमुखी रूद्राक्ष के तीन मनकों को लाल धागे में पिरोकर सोमवार को शिवलिंग से छुआकर ऊँ नमः शिवाय कार्तिकेय नमः मंत्र का जप करते हुए गले में धारण करें।

रूद्राक्ष धारण करने का उपयुक्त समय

सामान्यतया सोमवार को रूद्राक्ष धारण करना शुभ माना गया है, लेकिन शिवरात्रि को धारण करना उत्तम होता है। इसके अतिरिक्त, रूद्राक्ष धारण करने के लिए निम्नलिखित शुभ समय हैं–

शुभ महीना/माह

आश्विन एवं कार्तिक माह– उत्तम
मार्गशीर्ष एवं फाल्गुन माह– मध्यम
आषाढ़ एवं श्रावण माह– अधम
भाद्रपद, पौष एवं अधिक मास (मलमास)– अशुभ।

शुभ दिन (वार)

जिस दिन ग्रह एवं नक्षत्र धारक के नाम–राशि के अनुकूल हों, उस दिन रूद्राक्ष धारण करना चाहिए। रविवार, सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार एवं शुक्रवार को रूद्राक्ष धारण करना उत्तम होता है, जबकि मंगलवार एवं शनिवार को अशुभ माना जाता है।

शुभ पक्ष

भौतिक सुख के लिए शुक्ल पक्ष में रूद्राक्ष धारण करना चाहिए, जबकि आध्यात्मिक सुख के लिए कृष्ण पक्ष में रूद्राक्ष धारण करना चाहिए।

शुभ तिथि

द्वितीया, पंचमी, दशमी, त्रयोदशी एवं पूर्णामसी को रूद्राक्ष धारण करना उत्तम होता है।

शुभ लग्न

रूद्राक्ष धारण करने के लिए मेष, कर्क, तुला, वृश्चिक, मकर एवं कुम्भ लग्न शुभ होता है।

शुभ नक्षत्र

स्वाति, विशाखा, राहिणी, ज्येष्ठा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, हस्त, अश्विनी, धनिष्ठा, शतभिषा एवं श्रवण नक्षत्र में रूद्राक्ष धारण करने से उत्तम फल की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त, किसी भी ग्रहण, तुला, मकर संक्रांति, अयन, शिव चौदस, बसंत पंचमी, एवं अमावस्या को भी रूद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

रूद्राक्ष धारण करने की शास्त्रोक्त विधि

प्रातः काल शौच क्रिया से निवृत्त होकर मुख शद्धि करें। अशुद्ध मुंह से जप करने से उचित फल प्राप्त नहींहो सकता है।

मुखशुद्धि विहीनस्य न मंत्रः फलदायकः।
दंतजिव्हा विशुद्धिं च ततः कुर्यात् प्रयत्नतः ।।

इसके बाद स्नान के लिए यथा संभव शुद्ध जल लें। स्नान के बाद अपने चित्त को शांत कर पूजा पर बैठें।

पूजा प्रारम्भ करने से पहले भूमि शुद्धि अवश्य करें। भूमि शुद्धि मंत्र–

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वाः।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ।।

पूजा पर बैठने के लिए कुश के आसन का प्रयोग करें एवं पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें। पूजा में शुद्धजल से भरा पात्र रखें। पात्र पर नारियल रखकर प्राण–प्रतिष्ठा करें। फिर अपने कुलदेवता सहित सारे देवी–देवताओं का आह्वान कर रूद्राक्ष की पूजा करें।

सबसे पहले गोबर, गोमूत्र, दूध, दही, घी आदि पंचगव्य से रूद्राक्ष को स्नान करायें, फिर गंगाजल या शुद्ध जल से पुनः स्नान करायें। अब कांसे की थाली में पीपल के नौ पत्ते लेकर आठ पत्तों से अष्टदल कमल काआकार बनायें और एक पत्ता बीच में रखें। बीच वाले पत्ते पर रूद्राक्ष रखें। फिर ऊँ नमः शिवाय मंत्र का तीन बार जाप करें। अब स्वयं पर एवं पूजा के उपयोग की सभी वस्तुओं पर जल छिड़कते हुए निम्न मंत्र का तीन बार जप करें–

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वाः ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ।।
ॐ गुरुभ्यो नमः। ॐ गणेशाय नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः।

अब अपने दायें हाथ में आचमनी से गंगाजल लेकर प्रत्येक निम्न मंत्र का जाप करते हुए पीयें–

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः।

अब निम्न मंत्र का जप करते हुए हाथ धोकर जल जमीन पर छोड़ दें–

ॐ गोविन्दाय नमः।

अब दायें हाथ में गंगाजल लेकर प्राणायाम के विनियोग का निम्न मंत्र पढ़कर जल जमीन पर छोड़ दें–

ॐ प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः परमात्मा देवता देवी गायत्री छंदः प्राणायामे विनियोगः।

फिर निम्न मंत्र से तीन प्राणायाम करें –

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम।
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योतिः रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।

अब रूद्राक्ष पर कुश या आचमनी से जल छिड़कते हुए निम्न मंत्र का जाप करें–

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय नमो नमः ।
भवेभवेनाति भवेभावस्वमान भवोद्भवाय नमः ।।

फिर फूल में चंदन एवं सुगंधित तेल लगाकर उससे रूद्राक्ष को स्पर्श करते हुए निम्न मंत्र का जाप करें–

ॐ वामदेवाय नमः, ॐ ज्येष्ठाय नमः, ॐ श्रेष्ठाय नमः, ॐ रुद्राय नमः, ॐ कलविकरणाय नमः, ॐ बलविकरणाय नमः, ॐ बलाय नमः, ॐ बलप्रमथनाय नमः, ॐ सर्वभूतदमनाय नमः, ॐ मनोन्मनाय नमः।

फिर रूद्राक्ष को धूप दिखाते हुए निम्न मंत्र का जप करें –

ॐ अघोरेभ्यो अघघोरेभ्यो : घोर घोरतरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो नमस्तेस्तु रूद्ररूपेभ्यः ।।

फिर रूद्र गायत्री मंत्र जपते हुए फूल से चंदन एवं सुगंधित तेल का लेप करें –

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोद्यात्।

चंदन का लेप करने पश्चात रूद्राक्ष के दाने पर ध्यान लगाकर ईशान मंत्र का जाप करें –

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां।
ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिः ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदा शिवोम् ।।

चतुर्मखी रूद्राक्ष धारण करने के विशेष नियम

विनियोग –

दायें हाथ में आचमनी में गंगाजल लेकर निम्न विनियोग मंत्र का जाप करें एवं जल को जमीन पर छोड़ दें।

ॐ अस्य श्री ब्रह्म मंत्रस्य भार्गव ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, ब्रह्मा देवता, वां बीजं, क्रां शक्तिः, सिद्धयर्थे रुद्राक्ष धारणार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास –

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए दायें हाथ से अपने शरीर के अंगों क्रमशः शिरसि, मुख, हृदय, गुह्य एवंपैरों को स्पर्श करें।

ॐ भार्गव ऋषिः नमः शिरसि, अनुष्टुप छन्दसे नमः मुखे, ब्रह्मदेवतायै नमः हृदि, वां बीजाय नमः गुह्ये, क्रां शक्तये नमः पादयो, विनियोगाय नमः सर्वांगे।

करन्यास –

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए अपनी हथेली के क्रमश अंगूठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका अंगुली एवं करतल–करपृष्ठ का स्पर्श करें।

ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ वां तर्जनीभ्यां नमः, ॐ क्रां मध्यमाभ्यां नमः, ॐ तां अनामिकाभ्यां नमः, ॐ हां कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ ईं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्ययास –

निम्नलिखित मंत्र को पढ़ते हुए क्रमशः हृदय, सिर दोनों भुजाओं एवं आंखों को स्पर्श करें एवं अंतिम मंत्र सेदायें हाथ को सिर के उपर से पीछे की तरफ घुमाते हुए सामने लायें एवं तर्जनी व मध्यमा से बायें हाथ पर ताली बजायें।

ॐ ॐ हृदयाय नमः, ॐ वां शिरसे स्वाहा, ॐ क्रां शिखायै वषट्, ॐ हां कवचाय हुम्। ॐ तां नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ईं अस्त्राय फट्।

ध्यान मंत्र –

सबसे पहले रूद्राक्ष के इष्ट देव ब्रह्मा का ध्यान करें।

प्रणम्य शिरसा शाश्वदष्टनेत्रं चतुर्मुखम्।
गायत्रीसहितं देवं नमामि विधिमीश्वरम्।।

नीचे दिए गए किसी एक मंत्र के ग्यारह माला का जाप करें। माला जप करने के बाद किसी तांबे के बर्तन में रूद्राक्ष रखें। प्राणायाम करने के बाद जल से भरा पात्र बायें हाथ में लेकर दायां हाथ पात्र के नीचे छुआकर हटा लें। फिर रूद्राक्ष पर जल छींटें एवं रूद्राक्ष धारण करें।

१-ॐ वां क्रां तां हां इं (मूल मंत्र)
२-ॐ ह्रीं हूं नमः
३-ॐ ह्रीं
४-ॐ ह्रीं नमः (पंचाक्षरी मंत्र)
५-ॐ नमः शिवाय
६-ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिंपुष्टिवर्धनम्, उर्वारुकमिवबंधनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।

षट्मुखी रूद्राक्ष धारण करने के विशेष नियम

विनियोग –

दायें हाथ में आचमनी में गंगाजल लेकर निम्न विनियोग मंत्र का जाप करें एवं जल को जमीन पर छोड़ दें।

ॐ अस्य मंत्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, पंक्ति छन्दः, श्री षष्ठमुखौ देवता, ऐं बीजं, सौं शक्तिः, क्लीं कीलकं, रुद्राक्ष धारणार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास –

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए दायें हाथ से अपने शरीर के अंगों क्रमशः शिरसि, मुख, हृदय, गुह्य एवंपैरों को स्पर्श करें।

ॐ दक्षिणामूर्ति ऋषये नमः शिरसि, पंक्ति छन्दसे नमो मुखे, कार्तिकेय देवतायै नमो हृदि, ऐं बीजाय

नमो गुह्ये, सौं शक्तये नमः पादयो, क्लीं कीलकायै नमः नाभौ, विनियोगाय नमः सर्वांगे।

करन्यास –

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए अपनी हथेली के क्रमश अंगूठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका अंगुली एवं करतल–करपृष्ठ का स्पर्श करें।

ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ श्रीं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ क्लीं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ सौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ ऐं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्ययास –

निम्नलिखित मंत्र को पढ़ते हुए क्रमशः हृदय, सिर दोनों भुजाओं एवं आंखों को स्पर्श करें एवं अंतिम मंत्र सेदायें हाथ को सिर के उपर से पीछे की तरफ घुमाते हुए सामने लायें एवं तर्जनी व मध्यमा से बायें हाथ पर ताली बजायें।

ॐ ॐ हृदयाय नमः, ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ श्रीं शिखायै वषट्, ॐ क्लीं कवचाय हुम्। ॐ सौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ऐं अस्त्राय फट्।

ध्यान मंत्र –

सबसे पहले रूद्राक्ष के इष्ट देव भगवान कार्तिकेय का ध्यान करें।

क्रौञ्चपर्वतविदारणलोलो दानवेन्द्रवनिताकृतलण्डः।
चूतपल्लवशिरोमणिचोदी भोष्वडानन जगत्परिपाहि।।

नीचे दिए गए किसी एक मंत्र के ग्यारह माला का जाप करें। माला जप करने के बाद किसी तांबे के बर्तन में रूद्राक्ष रखें। प्राणायाम करने के बाद जल से भरा पात्र बायें हाथ में लेकर दायां हाथ पात्र के नीचे छुआकर हटा लें। फिर रूद्राक्ष पर जल छींटें एवं रूद्राक्ष धारण करें।

१–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सौं ऐं (मूल मंत्र)
२–ॐ ह्रीं नमः
३–ॐ ह्रूम्
४–ॐ हूं नमः
५–ॐ ह्रीं हुं नमः (पंचाक्षरी मंत्र)
६–ॐ नमः शिवाय
७–ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिंपुष्टिवर्धनम्, उर्वारुकमिवबंधनान्मृत्योर्मृक्षीय माऽमृतात्।

रूद्राक्ष धारण करने के साधारण नियम

किसी भी सोमवार या शुभ दिन को सबसे पहले रूद्राक्ष को गंगाजल से स्नान करायें। फिर रूद्राक्ष पर चंदन का लेप लगायें। तत्पश्चात, रूद्राक्ष पर धूप, दीप आदि दिखाकर सफेद फूल अर्पित करें। उसके बाद शिवलिंग से रूद्राक्ष को स्पर्श कराते हुए कम से कम ग्यारह बार ॐ नमः शिवाय मंत्र का जाप करें। भगवान शिव का ध्यान करते हुए रूद्राक्ष धारण करें या पूजा स्थल पर रख सकते हैं।

रूद्राक्ष धारण करने के पश्चात निम्न नियमों का पालन करना चाहिए –

मद्यं मांसं च लासुनं पलांडुं शिग्रुं एव च ।
श्लेषं अंतकं विड्वाराहं भक्षयं वर्जये नरः ।।

रूद्राक्ष धारण करने के पश्चात् मांस, मदिरा, कोई नशीला पदार्थ, लहसुन, प्याज या अन्य कोई तामसिक पदार्थ का सेवन नहीं करना चाहिए। हमेशा सात्विक आहार लें।

रूद्राक्ष को दिखावे की चीज ना बनायें।

रात में रूद्राक्ष उतार कर पूजा के स्थान पर रख दें एवं सबुह सारे क्रिया–कर्म से निवृत्त होकर ऊँ नमः शिवाय का पांच बार जप कर धारण करें। जब भी माला उतारें तो उतार कर पूजा स्थल पर ही रखें।

अभिमान ना करें।

परोपकार करें।

रूद्राक्ष का अपमान या दुरूपयोग ना करें।

क्रोध ना करें।

अपना आचरण एवं विचार पवित्र रखें।

किसी को अपशब्द ना कहें।

ब्रह्मचर्य का पालन करें।

रूद्राक्ष का गंगाजल से अभिषेक करें।

नहाते समय साबुन आदि ना लगायें।

रूद्राक्ष धारण करते समय या पूजा करते समय स्थान शुद्धि अवश्य करें।

रूद्राक्ष की पवित्रता बनाये रखें।

हमेशा नित्यकर्म से निवृत होकर एवं पवित्र होकर ही रूद्राक्ष धारण करें।

किसी व्यक्ति या धर्म आदि की निन्दा ना करें।

गंदगी से दूर रहें।

रूद्राक्ष के प्रति निष्ठा

रखें।

रूद्राक्ष माला को कभी भी खूंटी पर ना लटकायें।

रूद्राक्ष माला रजस्वला स्त्री से दूर रखें।

शवयात्रा में माला पहनकर ना जायें।

विशेष नोट–

असली रूद्राक्ष गर्म होता है। इसलिए यदि आप वृद्ध या शारीरिक रूप से कमजोर व्यक्ति हैं, तो रूद्राक्ष कीजगह आपको भद्राक्ष पहनना चाहिए।

भद्राक्ष भी रूद्राक्ष जैसा ही होता है, लेकिन यह मृदुल रंग और कम ताप देने वाला होता है। ये गौरी शंकरका आशीर्वाद प्रदान करते हैं। यह उत्तम स्वास्थ्य के लिए एवं परिवार व दोस्तों के साथ आरामदायक जीवन बिताने में लाभदायक है।

भद्राक्ष के लिए मंत्र

ओऽम् गौरी शंकराय नमः।

भद्राक्ष के लिए शुभ मंत्र

सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वथा साधिके
श्रणये त्रयम्बके गौरी नारायणी नमस्तुते ।

रूद्राक्ष की सत्यता प्रमाणित करने के लिए जांच

जांच संख्या 1 –

पानी की उपरी सतह पर रूद्राक्ष रखने से यदि यह डूब जाता है, तो रूद्राक्ष असली है, लेकिन यदि यह तैरता रहता है, तो रूद्राक्ष नकली है।

जांच संख्या 2 –

असली रूद्राक्ष बहुत उष्म होता है और यह विद्युत चुम्बकीय गुण के कारण तांबे को अपनी ओर आकर्षित करता है। यदि रूद्राक्ष के मोतियों को धागे में लटकाकर तांबे के चादर के छोटे से टुकड़े के उपर लटका दिया जाय तो ये मोती लगातार गोल–गोल घूमने लगेगें। यदि इनके घूमने की दिशा घड़ी की सूईयों की घूमने की दिशा के समान है, तो ये असली हैं।

जांच संख्या 3 –

एक कप दूध के अन्दर रूद्राक्ष के मोती को डाल दें और इसे पूरे दिन तक रखें। यदि दूध खराब नहीं होताहै, तो मोती असली है और यदि दूध खराब हो जाता है तो यह झूठा है।

लाल-किताब से सूर्य की विस्तृत जानकारी

जिस जातक के कुंडली में सूर्य प्रबल होता हैं, उसका कोई भी अंग कच्चा नहीं होता है। वह गोरा (गेंहू के रंग जैसा), लंबे कद वाला और छरहरा होता है। उसकी आंखे शेर की तरह होती हैं, उसमें कष्ट सहन करने की की शक्ति होती है, और वह चलते समय शरीर का दांया भाग पहले करके चलता है। उसका चाल-चलन श्रेष्ठ होता है, और वह शराब इत्यादि नशे से दूर रहने वाला होता है। उसमें नेतृत्व करने की क्षमता होती है, और वह हर कार्य में आगे-आगे रहता है। ऐसा जातक परिश्रमी, विचारों का पक्का और थोड़ा जिद्दी किस्म का होता है।

पक्का घर-	१
श्रेष्ठ घर-	१,५,८,९,११,१२
मंदे घर-	६,७,10
रंग-	तांबे जैसा चमकीला, नारंगी, केसरिया, भूरा
शत्रु ग्रह-	शुक्र, राहु (पूरा सूर्य ग्रहण), शनि
मित्र ग्रह-	बृहस्पति, मंगल, चंद्रमा
सम स्वभाव वाले ग्रह-	बुध
कार्य-	सरकारी हिसाब-किताब, क्षत्रिय
उच के भाव-	पहले भाव में
नीच के भाव -	सातवें भाव में
बिमारियां-	बुखार, नेत्र विकार, सिरदर्द
मसनूई ग्रह-	बुध + शुक्र
देवता-	विष्णु
पेशा (व्यवसाय)-	क्षत्रिय, राजपूत
विशेषता-	बहादुर, शरीर पर ध्यान देने वाला
गुण-	आग, गुस्सा, बुद्धि, विद्या
शक्ति-	गर्मी का खजाना
धातु-	माणिक, तांबा, शिलाजीत
शरीर के अंगो पर प्रभाव -	संपूर्ण शरीर
चेहरे पर प्रभाव-	दांया हिस्सा, दायी आंख, हड्डियां
पोशाक-	सेहरा, कलगी
संबंधित जानवर-	बंदर- बंदरिया, पहाड़ी गाय, काली गाय
संबंधित वृक्ष -	तेजफल, लौंग, जायफल, इलाइची का पौधा, जड़ी-बूटी, दुध वाले पेड़
संबंधित अनाज-	बाजरा, गुड़
संबंधित निवास-	संपूर्ण शरीर
प्रकार-	पुरूष ग्रह
प्रतीक-	रोशनी
दिन-	रविवार (द्वितीय भाग)
प्रभावशाली समय-	सुबह ८ बजे से सुबह 10 बजे तक का समय

भावस्थ सूर्य की संक्षिप्त परिभाषा

भाव न.	परिभाषा
1	सतयुगी राजा, हुक्मरान अर्थात् हुकूमत करने वाला
2	सखी दाता अपने बाजुओं का मालिक
3	दौलत का राजा, खुद कमाकर खाने वाला
4	दूसरों के लिए जोड़-जोड़ कर मरने वाला
5	परिवार की उन्नति का मालिक, किन्तु ईर्ष्या भरा अर्थात् इर्ष्या करने वाला
6	आग जला, दौलत से बेफिक्र, अपनी किस्मत से संतुष्ट
7	कम कबीला, कुटुम्ब के लोग कम होंगे, डरता-डरता मरे
8	तपस्वी राजा, सांच को आंच यानी सच बोलने वाला
9	लंबी उम्र, भारी कबीला, खानदानी परवरिश का कारक
10	इज़्ज़त, सेहत, दौलत का मालिक मगर वहमी
11	पूर्णधर्मी मगर अपनी ही ऐश पसंद करने वाला
12	घर में सुख की नींद सोने वाला, मगर पराई आग में जलकर मरने वाला

लाल-किताब हस्तरेखा

पहले भाव

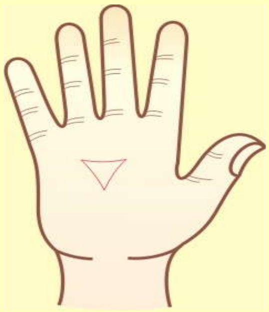

दूसरे भाव

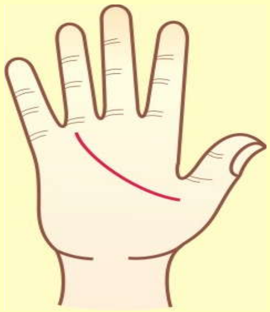

तीसरे भाव

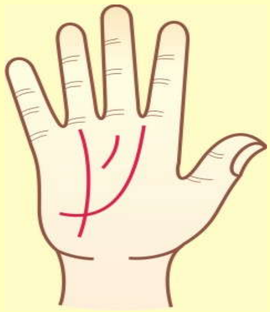

चौथे भाव

पांचवें भाव

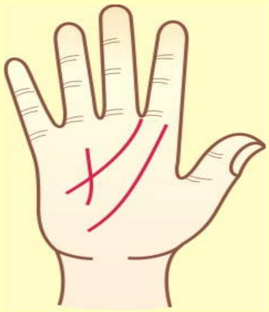

छठवें भाव

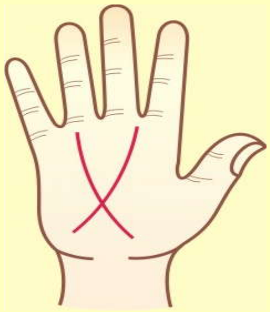

सातवें भाव

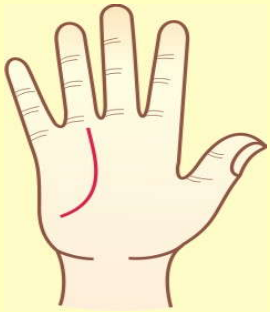

आठवें भाव

नौवें भाव

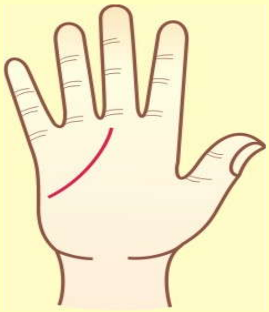

दसवें भाव

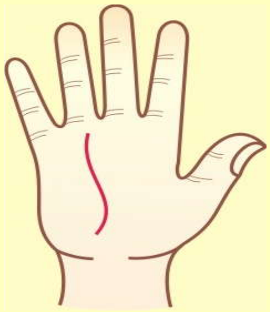

ग्यारहवें भाव

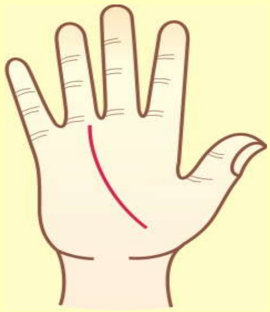

बारहवें भाव

VBVCB CVBVCB VCBVCBCV CVBVCB

भावस्थ सूर्य के कारोबार

भाव न.	कारोबार
1	राजदरबार संबंधी सरकारी कार्य
2	गेंहू, बाजरा खाद्य वस्तुओं संबंधी कारोबार
3	भतीजों के साथ मिलकर किये काम
4	पानी, रेशम के काम, बुआ के लड़के के साथ मिल कर किये काम
5	बानरो से संबंधित काम
6	दोहते के साथ मिलकर किये काम
7	चान्दी, दूध के काम
8	रथगाड़ी संबंधी कार्य
9	पशु संबंधी काम
10	मकान, भैसों का व्यपार, भैस से संबंधित काम
11	ताम्बे के काम
12	आटा पीसने की चक्की का काम

भावस्थ सूर्य के संबंधी

भाव न.	संबंधी
1	अपना आप
2	धर्मात्मा, पेशवा, कानूनी ढ़ंग पर
3	डण्डे की चोट पर अपना मित्र बनाने वाला
4	अपने मुंह से निकाल कर अपनी संतान को पालने वाला पिता
5	अपने घर का बुद्धिमान बुजुर्ग, निर्धन
6	अधिक क्रोधी, बिना लड़े रोटी हजम न करे
7	ईर्ष्यालु, गृहस्थी
8	जिसकी आशा कभी शांत न हो चाहे उसे सारा ब्राह्मण्ड मिल जाये
9	बिगड़ी को बनाने वाला सहायक मित्र
10	विश्वस्त हमारे समान कोई दूसरा नहीं ऐसा मानने वाला
11	न्याय प्रिय, जालिम
12	संतान को छोड़कर मरने वाला

भावस्थ सूर्य की वस्तुयें

भाव न.	वस्तुयें
1	दिन का समय, दायां भाग, आंखे, सफेद नमक
2	गेंहू, बाजरा
3	भतीजे, दिन की संतान
4	दाई आंख का डेला, बुआ का लड़का (भाई)
5	इकलौता पुत्र, लाल मुंह का बन्दर
6	गेंहू जैसा रंग, पांव में बेवाईयां
7	आध्यात्मिक हानि, लाल गाय
8	रथ गाड़ी, आग, स्वयं उत्पन्न हुआ जातक
9	भूरा रीक्ष, ग्रहण के बाद का सूर्य
10	चूहा, नेवला, भूरी भैंस, शिलाजीत
11	लाल तांबा
12	भीतर की खशबियां, भूरी चींटी

मंदे सूर्य की पहचान

१-अगर लाल रंग की गाय या भुरे रंग की भैंष मर जाय या गुम हो जाये।
२-शरीर के अंगो में हरकत करने या कराने की ताकत खत्म हो जाये।
३-मुंह में हरदम थुक आये।
४-आपके घर में अग्निकांड होते रहें।
५-बचपन में पिता की मृत्यु हो जाये।
६-दिमाग कमजोर हां।
७-हर कार्य में बुजदिली आड़े आये।
८-आर्थिक संकट उत्पन्न हो जायें।
९-मुक्दमों आदि पर ज़्यादा पैसा खर्च हो।

लाल-किताब से चन्द्रमा की विस्तृत जानकारी

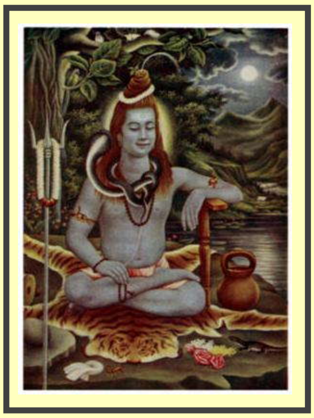

जिस जातक के कुंडली में चंद्रमा प्रबल होता है, वह गोरा (दुध की तरह), शांत स्वभाव वाला होता है। वह दूसरों की हां में हां मिलाकर अपनी तरफ मिला लेता है। ऐसे जातक को सफेद वस्त्र पहनना ठीक लगता है। शरीर का निचला भाग (नाभि से नीचे) भारी और बेडौल होता है। पशुपालन में रूचि होती है, और उससे उसे लाभ भी प्राप्त होता है।

पक्का घर-	४
श्रेष्ठ घर-	१,२,३,४,५,७,९
मंदे घर-	६,८,१०,११,१२
रंग-	दूध जैसा सफेद
शत्रु ग्रह-	केतु (पूरा चंद्र ग्रहण), राहु (आंशिक चंद्र ग्रहण)
मित्र ग्रह-	सूर्य, बुध
सम स्वभाव वाले ग्रह-	शुक्र, शनि, मंगल, बृहस्पति
कार्य-	नौसेना, शिक्षा, या कोषागार से संबंधित
उच के भाव-	दूसरे भाव में
नीच के भाव -	आठवें भाव में
बिमारियां-	कफ और पेट संबंधित
मसनूई ग्रह-	सूर्य + बृहस्पति
देवता-	शिवजी
पेशा (व्यवसाय)-	धीमर, कुम्हार, जैन, धर्मी, पानी से संबंधित कार्य
विशेषता-	दयालु, हमदर्द
गुण-	माता, जायदाद, पानी, दिल की शान्ति, मौसी, दादी, नानी
शक्ति-	सुख-शान्ति का स्वामी, मां का दुलार, पूर्वजो की सेवा
धातु-	चांदी, मोती
शरीर के अंगो पर प्रभाव -	हृदय
चेहरे पर प्रभाव-	बायीं आंख
पोशाक-	धोती, परना
संबंधित जानवर-	घोड़ा- घोड़ी
संबंधित वृक्ष -	सफेद पेड़
संबंधित अनाज-	चावल, दुध
संबंधित निवास-	जलाशय
प्रकार-	स्त्री ग्रह (माता)
प्रतीक-	धरती
दिन-	सोमवार (चांदनी रात)
प्रभावशाली समय-	सुबह १० बजे से ११ बजे तक

भावस्थ चन्द्रमा की संक्षिप्त परिभाषा

भाव न.	परिभाषा
1	माता जिंदा होने तक धन-दौलत, खालिस दूध
2	खुद पैदा की हुई माया की देवी
3	चोरी और मौत का रक्षक, उम्र का मालिक फरिश्ता, जिससे मौत भी डरे
4	खर्च होने पर और बढ़ने वाला आमदनी का दरिया
5	संतान के दूध की माता, रुहानी नहर
6	धोखेकी माता कड़वा पानी
7	संतान की माता खुद लक्ष्मी का अवतार
8	मुर्दा माता, जला दूध
9	घड़े बराबर मोती, दुखियों का रक्षक, समुद्र
10	आक यानी जहरीला पौधा, आक का दूध जहरीला पानी
11	ना के बराबर निरपक्ष, शून्य
12	रात के वक्त तुफान से बस्तियां उजाड़ने वाला दरिया

लाल-किताब हस्तरेखा

पहले भाव

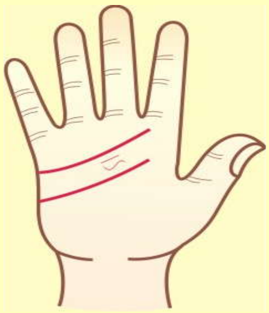
दूसरे भाव

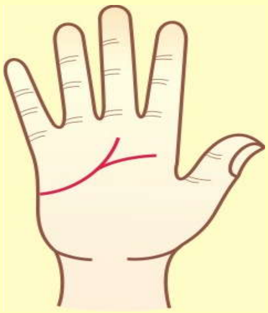
तीसरे भाव

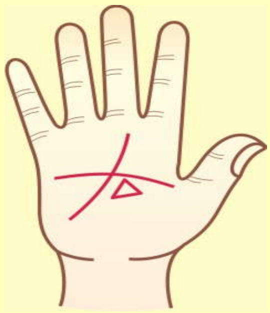
चौथे भाव

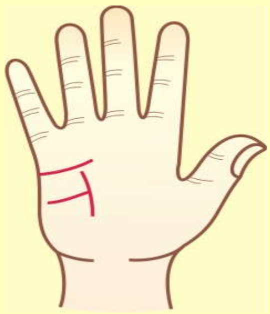
पांचवें भाव

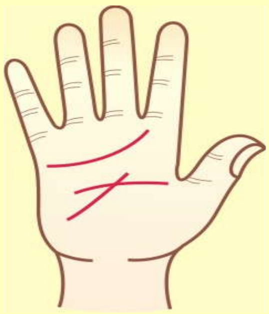
छठवें भाव

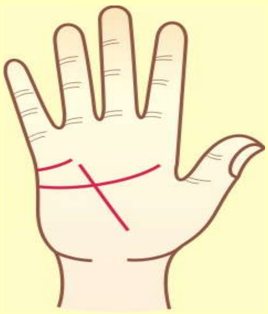
सातवें भाव

आठवें भाव

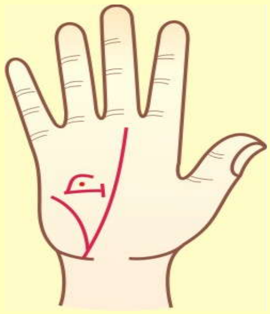
नौवें भाव

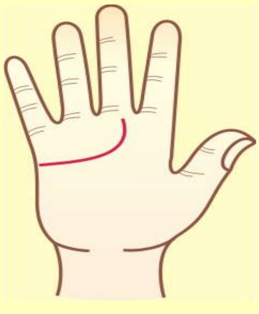
दसवें भाव

ग्यारहवें भाव

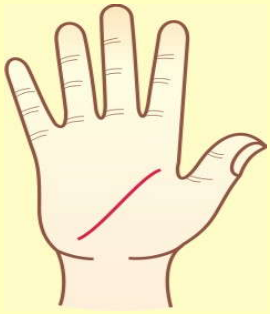
बारहवें भाव

VBVCB CVBVCB VCBVCBCV CVBVCB

भावस्थ चन्द्रमा के कारोबार

भाव न.	कारोबार
1	बाग-बगीचों के काम
2	चावल और घोड़ो के काम
3	चिरायता, रक्त शोधक दवाईयों के काम
4	कपड़ा बजाजी के काम, तालाब कुआं खुदवाने के काम
5	लड़का/लड़कियों कि शिक्षा के काम
6	यात्रा संबंधित सामान के कारोबार
7	धर्म का काम, खेती के काम आने वाली वस्तुओं के काम
8	समुंद्र संबंधित काम
9	जायदाद जद्दी पर किये काम
10	धुली हुई नशीली दवा का काम(हानिकारक) गोली के समय दवाईयों के काम लाभ देंग
11	मोतियों/ दूध का रंग की चीजों के काम
12	पालतु जानवरों के कारोबार

भावस्थ चन्द्रमा के संबंधी

भाव न.	संबंधी
1	राजा की रानी
2	धर्म माता, कोई भी बुढ़िया जो धर्म माता के समान
3	पड़ोसन, माई
4	मौसी या माता
5	किसी के उकसाने-भड़काने पर बिना लड़े रोटी हजम न हो जैसी माता
6	नानी
7	गृहस्थी, व्यपार को सम्भाले, कोई भी दयालु लक्ष्मी
8	ताई
9	वंश में सबसे बड़ी आयु की स्त्री रिश्तेदारी की शर्त नहीं
10	चाची
11	पेशाब से परिवार को तौलने वाली बुढ़िया
12	सास

भावस्थ चन्द्रमा की वस्तुयें

भाव न.	वस्तुयें
1	बायां भाग, बाई आंख की पुतली (डेला)
2	माता, दुध, चावल, आध्यात्मिक शक्ति, सफेद घोड़ा
3	घोड़ा, शिवजी -भोलेनाथ, चिरायता
4	तालाब, कुआं, स्रोत जल का, मन की शांति
5	चकोर, आक का दूध
6	खरगोश, यात्रा
7	खेती की जमीन जद्दी या आप खरीदी जो आबादी से बाहर न हो
8	समुद्र, नंबर दो की आमदनी, मिर्गी, मुर्दा दिली
9	जायदाद जद्दी
10	रात का समय, भरा पानी, कड़वा पानी, अफीम
11	चांदी, मोती, दूध रंग की वस्तुएं, खूनी कुआं, उड़ते बादल
12	खुशामद, सफेद बिल्ली, वर्षा का पानी, मुश्क काफूर

मंदे चन्द्रमा की पहचान

१-घर मे दुध देनेवाले जानवर मर जायें।
२-घोड़े की मौत हो जाये।
३-कुंआ सुख जाये।
४-शादी या औलाद से परेशानी हो।
५-काम धंधा चौपट हो जाये।
६-ननिहाल की स्थिति डांवाडोल हो जाये।
७-महसुस करने की ताकत खत्म हो जाये।
८-मुत्र से संबंघित बिमारियां घेर लें।
९-ऐसी घटना घटने लगे जिनके बारे में सोचा भी न गया हो।

लाल-किताब से मंगल की विस्तृत जानकारी

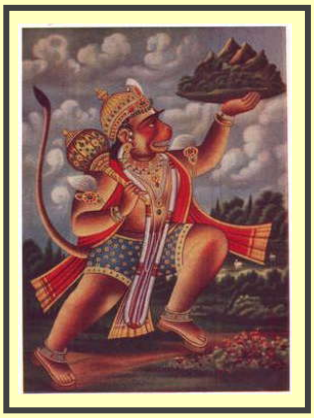

जिस जातक की कुंडली में मंगल प्रबल होता है, वह गोरा (गेंहू के जैसा), केवल अपना पक्ष रखने वाला और हठी होता है। उसकी आंखे लाल होती है इसका हाथ चौरस होता है। ऐसा जातक अपने विचारों का पक्का होता है, दूसरों को आज्ञा देना उसका स्वभाव होता है।

पक्का घर-	३
श्रेष्ठ घर-	१,२,३,५,६,७,६,१0,११,१२
मंदे घर-	४,८
रंग-	खून जैसा लाल, सिंदूरी
शत्रु ग्रह-	बुध, केतु
मित्र ग्रह-	सूर्य, चंद्रमा, बृहस्पति
सम स्वभाव वाले ग्रह-	शुक्र, शनि
कार्य-	पुलिस या सेना
उच के भाव-	दसवें भाव में
नीच के भाव -	चौथे भाव में
बिमारियां-	रक्त विकार
मसनूई ग्रह-	सूर्य + बुध (मंगल शुभ)
देवता-	हनुमान जी
पेशा (व्यवसाय)-	लड़ाकू, सिपाही, सैनिक
विशेषता-	सोच समझकर बात करने वाला
गुण-	खाना-पिना , लड़ना
शक्ति-	रक्तपात करना / कराना
धातु-	लाल चमकीला पत्थर
शरीर के अंगो पर प्रभाव -	जिगर
चेहरे पर प्रभाव-	होंठ
पोशाक-	जैकेट
संबंधित जानवर-	शेर -शेरनी, हिरन
संबंधित वृक्ष -	नीम
संबंधित अनाज-	मसूर की दाल, गुड़, लाल मिर्च, सिंदूर
संबंधित निवास-	युद्ध क्षेत्र, अग्नि
प्रकार-	पुरूष ग्रह, शहद की तरह
प्रतीक-	दुमदार तारा
दिन-	मंगलवार (दोपहर)
प्रभावशाली समय-	सुबह ११ बजे से दोपहर १ बजे तक

भावस्थ मंगल की संक्षिप्त परिभाषा

भाव न.	परिभाषा
1	इन्साफ की तलवार या पुछल तारा
2	भाईयों की पालना और यदि भाईयों की पालना न करें, तो मंगल अशुभ
3	दूसरे लोगों के लिए फल का दरख्त, अपने लिए चिड़ियाघर का कैदी शेर
4	जलती आग, बदी का सरदार
5	रईसों का बाप-दादा, लेकिन घर से बाहर रहे तो लावल्दी
6	तरसेमें कि औलाद
7	मीठा हलवा । यदि मंगल बद हो तो मनहूस और बदकिस्मत
8	मौत का फंदा, जायेफासी, यानी दुनिया से चले जाने का रास्ता
9	बुजुर्गों से चलता तख्तशाही यदि मंगल बद हो तो बदनामी
10	चींटी के घर भगवान राजा
11	तीन कुत्ते रखना मुबारक फल देंगे (धेवता, साला या कुत्ता)
12	मंगल शुभ

लाल-किताब हस्तरेखा

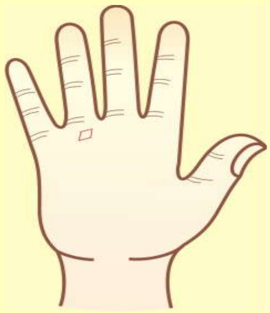
पहले भाव

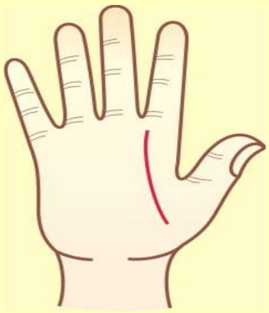
दूसरे भाव

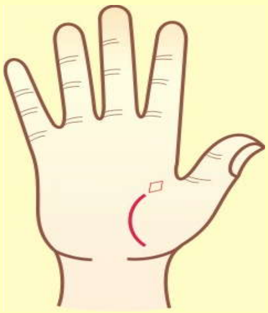
तीसरे भाव

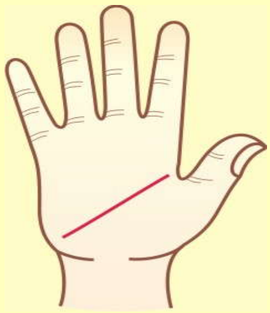
चौथे भाव

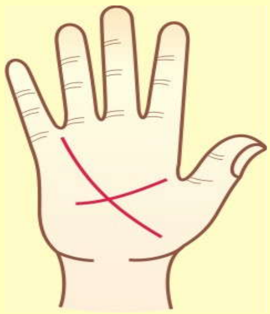
पांचवें भाव

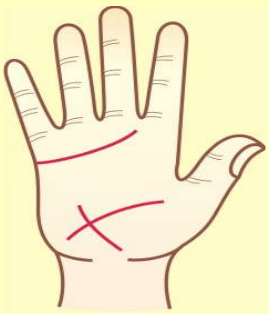
छठवें भाव

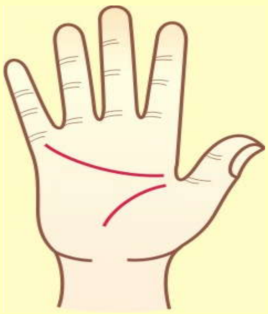
सातवें भाव

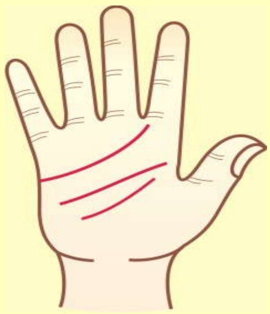
आठवें भाव

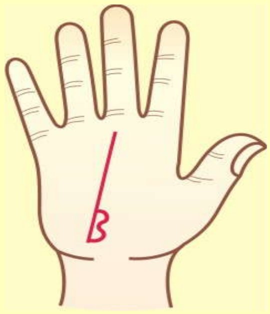
नौवें भाव

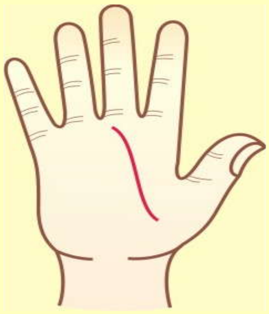
दसवें भाव

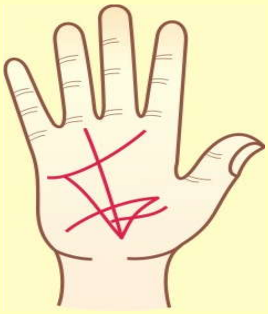
ग्यारहवें भाव

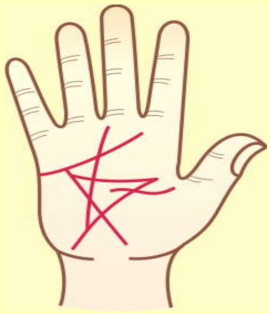
बारहवें भाव

VBVCB CVBVCB VCBVCBCV CVBVCB

भावस्थ मंगल के कारोबार

भाव न.	कारोबार
1	सौंफ के काम
2	पंक्षियों से संबधींत काम
3	हाथी -दांत की वस्तुओं के काम
4	नीम/कड़वे वृक्ष, किलें, कड़ी, तलवार, छुरियां, चाकू, मृगछाला के काम
5	डाक्टरी के काम
6	पेट की बिमारियों के दवा के काम
7	दाल मसुर, फलीदार पौधे, अजवाईन बेचने के काम
8	मकान, भवन निर्माण के काम जिनमें मशीन का प्रयोग न हो
9	सूखे मेवे का काम, सभी फलीदार पौधे के काम, लाल रंग की चीजों का काम
10	शहद, मिठे भोजन, मिठाई का काम
11	सिंदूर, लाल धातु(तांबे)का काम
12	गीले आदि कड़वी दवाईयों के काम

भावस्थ मंगल के संबंधी

भाव न.	संबंधी
1	तलवार का धनी, भाग्यवान, भाई
2	बड़ा भाई
3	ताया
4	माता का बड़ा भाई (मामा)
5	औलाद के मित्र
6	बहनोई
7	अपना भाई या साला
8	छोटा भाई के लिए कसाई भाई
9	बाबा का भाई
10	पिता का धर्म
11	पिता का बनावटी भाई
12	बड़े भाई के खून का प्यासा भाई

भावस्थ मंगल की वस्तुयें

भाव न.	वस्तुयें
1	दांत ३/३२, सफेद अनाज की रोटी
2	चिता, हिरण
3	पेट, होंठ, छाती
4	तलवार, डेक का वृक्ष
5	भाई, नीम का वृक्ष
6	नाभि, छछुन्दर
7	बेले-लताएं, फलदार पौधे, वृक्ष
8	बिना बाहों का शरीर
9	लाल रंग, रक्त की तरह का
10	शहद, मीठा भोजन, खाण्ड देसी
11	सिंदूर, लाल रंग का
12	उंची ध्वनी

मंदे मंगल की पहचान

१-आंख में परेशानी हो या एक आंख खराब हो जाये।
२-मैथुन की ताकत होते हुए भी औलाद न पैदा हो।
३-सतांन पैदा होते ही मर जाये।
४-परिवार में बर्बादी हो।
५-भाई-भतीजे या बेटे की अचानक मौत हो जाये।
६-किसी तरह का लांछन लग जाये।
७-ननिहाल और ससुराल में अचानक परेशानियां खड़ी होने लगे।
८-एकाएक गरीबी आ जाये।
९-दौलत का नुकसान हो जाये।
१०-अचानक सर दर्द होने लगे।
११-चोरी या डकैती के मुकदमे मे फंस जायें और सजा हो जाये।

लाल-किताब से बुध की विस्तृत जानकारी

जिस जातक की कुंडली में बुध प्रबल होता है, वह थोड़ा डरपोक किस्म का होता है, उसकी आंखे कबूतर की तरह होती है, उसकी चाल बिल्ली की तरह होती है। ऐसे जातक बहुत ही आकर्षक एवं महीन आवाज वाले (लड़कीयो की तरह) और दूसरो की नकल उतारने मे माहिर होते हैं। वह दूसरों को अपनी बातों से प्रभावित करके अपनी तरफ मिला लेता है। वह किसी भी घटना के जड़ में जाकर पता लगाता है।

पक्का घर-	७
श्रेष्ठ घर-	१,२,४,५,६,७
मंदे घर-	३,८,६,१२
रंग-	हरा
शत्रु ग्रह-	चंद्रमा
मित्र ग्रह-	सूर्य, शुक्र, राहु
सम स्वभाव वाले ग्रह-	शनि, केतु, मंगल, बृहस्पति
कार्य-	खजाने, नौसेना (नेवी), शिक्षा से संबंधित, जुआ इत्यादि
उच के भाव-	छठे भाव में
नीच के भाव -	बारहवें भाव में
बिमारियां-	दांत के रोग, नाड़ियो संबंधित रोग
मसनूई ग्रह-	बृहस्पति + राहु
देवता-	माँ दुर्गा
पेशा (व्यवसाय)-	दलाल, व्यापारी, लेखक, पत्रकार
विशेषता-	खुशामदी
गुण-	वाणी, दोस्ती, दिमाग, जुबान, नसीहत
शक्ति-	लोगों में विश्वास जगाना
धातु-	हीरा, पन्ना, सोना
शरीर के अंगो पर प्रभाव -	जीभ, दांत, दिमाग
चेहरे पर प्रभाव-	कान या नाक का सिरा
पोशाक-	टोपी, नाड़ा, बेल्ट
संबंधित जानवर-	चमगादड़, बकरा, बकरी, भेड़, हाथी
संबंधित वृक्ष -	बड़ के अलावा चौड़े पत्ते वाले पेड़
संबंधित अनाज-	साबुत मूंग, छिलके वाली मूंग की दाल
संबंधित निवास-	हरियाली जगह, हरे खेत
प्रकार-	नपुंसक ग्रह
प्रतीक-	विस्तार
दिन-	बुधवार (दोपहर बाद चार बजे के आस-पास)
प्रभावशाली समय-	शाम ४ बजे से शाम ६ बजे तक

भावस्थ बुध की संक्षिप्त परिभाषा

भाव न.	परिभाषा
1	राजा या हाकिम, मगर खुदगर्ज बदनाम
2	योगी राजा, ब्रह्मज्ञानी किंतु मतलबपरस्त
3	थूकने वाला कोढ़ी
4	राजयोग या हुनरमंद
5	खुशहाली का कारक और उसके मुंह से निकला वाक्य उत्तम फल दे
6	गुमनाम योगी, दूसरों के लिए राजा
7	दूसरों को तारे
8	कोढ़ी, माली नुकसान यानी आर्थिक नुकसान करने वाला
9	कोढ़ी राजा
10	खुशगुजरान यानी आर्थिक हालत शुभ, जी हजुरीया
11	जन्म से दौलतमंद मगर उल्लू का पट्ठा
12	स्वभाव का अछा, किन्तु रात को दुखिया

लाल-किताब हस्तरेखा

पहले भाव

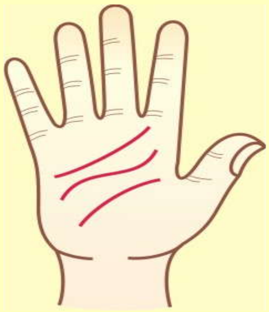
दूसरे भाव

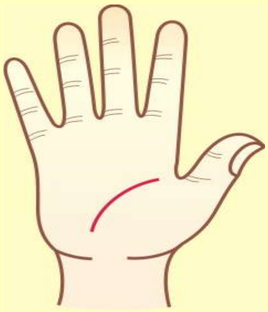
तीसरे भाव

चौथे भाव

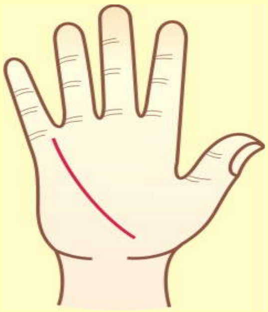
पांचवें भाव

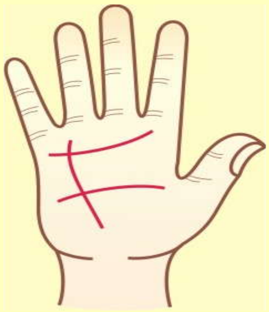
छठवें भाव

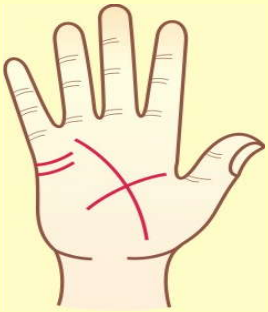
सातवें भाव

आठवें भाव

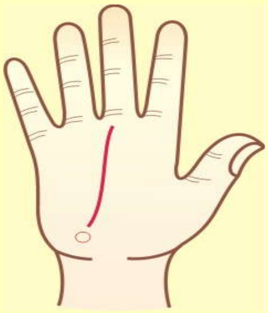
नौवें भाव

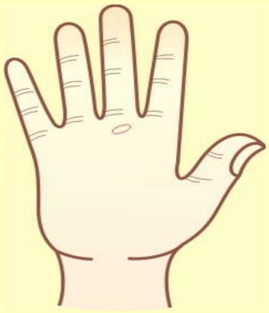
दसवें भाव

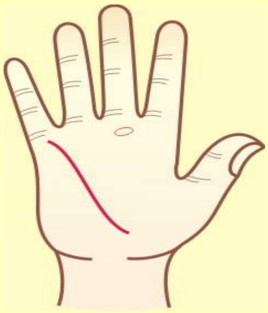
ग्यारहवें भाव

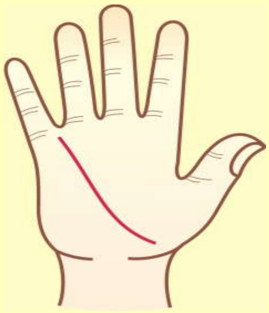
बारहवें भाव

VBVCB CVBVCB VCBVCBCV CVBVCB

भावस्थ बुध के कारोबार

भाव न.	कारोबार
1	जुबान, सर के ढ़ाचे के काम
2	मूंग साबूत, अण्डे के काम, राग विद्या में काम आने वाली वस्तुओं के काम
3	दमा की डाक्टरी का काम, भतीजे के सहायता करने से व्यपार में बृद्धि
4	तोता, कली, बिना पकाएं घड़े के काम
5	बांस के कारोबार, पोती की सहायता से हर समय बृद्धि
6	फूल के काम, मशीनरी की दुकान
7	हरी घास, ढांचा बनाने के काम
8	खाण्ड, खाद्‌य वस्तुओ के कारोबार
9	धार्मिक पुस्तको की बिक्री के काम
10	शराब, दांतो के काम, ढ़ोल, ड्रम आदि के काम
11	सीप, हीरे, फिटकरीऔर न्यायालय से संबंधित काम
12	खिलौने के बेचने का काम, सट्टे के काम बर्बादी का कारण बनेंगे

भावस्थ बुध के संबंधी

भाव न.	संबंधी
1	बड़ी लड़की
2	साली - बिना ब्याही
3	बड़ी बहन
4	अपनी मौसी की लड़की
5	अविवाहित स्त्री संपर्क में आवे तारने पर आवे तो पार उतार दे नहीं तो वंश को नष्ट कर दे
6	अपनी लड़की
7	गृहस्थी संबंध में पुत्री जो सबको तार दे
8	बिना बतलाए सर काटने वाली लड़की जो शमशान के पास रहें
9	अपने बाबा की लड़की , अपनी बुआ
10	दिखावे की बहन, जब उसका दिल चाहे तो स्त्री बन बैठे, धोखेबाज बहन
11	सगी बहन, मूर्ख
12	स्त्री के साथ बेहया लड़की

भावस्थ बुध की वस्तुयें

भाव न.	वस्तुयें
1	जुबान, सर का ढ़ांचा
2	खड़ा अण्डा, लड़को जैसी लड़की, मूंग साबुत, साली, बाजा-राग का समान
3	भतीजी, चमगादड़, चौड़े पत्तो का वृक्ष, पान, दीमक, भूत-शक्ति, छतर, मोहर, बुरा समय
4	तोता, क्ली, खड़ा अण्डा, बुआ, मौसी, बिना पकाया हुआ घड़ा
5	बांस, साधु का अशिर्वाद, दुध देने वाली बकरी, पोती
6	फूल, कन्या, दोहती, मोहर
7	हरी घास, भूंडी गाय, मैना, ढ़प्पा या ढ़ाचा
8	मुरझाया फुल, बहिन
9	भूत प्रेत, चमगादड़, रंग हरा, तुतलाना
10	दान्त, सूआ घास, शराब, मांस, सीढ़ियां, मकान, ढोल, सींग, राग, विद्या का सामान
11	उलटा घड़ा, कण्ठी वाला तोता, सफेद फिटकरी
12	गन्दा अण्डा, बिनौले

मंदे बुध की पहचान

१-सुघंने की शक्ति खत्म हो जाये।
२-सामने के दांत झड़ जायें।
३-माता और घर के आदमियों पर अचानक तक्लीफ आने लगे।
४-नजर कमजोर हो जाये।
५-कोई अपना धोखा दे दे।
६-शादी विवाह में परेशानी हो।
७-आमदनी आधी हो जाये।
८-बहन, बुआ, मौसी, साली या खुद की लड़की की हालत ठीक न हो।
९-मकान की सीढ़ी से गिरकर हाथ-पांव तुड़ा बैठें।
१0-अचानक कोई बिमारी गले पड़ जाये।
११-ज़बान का स्वाद खराब हो जाये।
१२-सट्टे लाटरी अथवा शेयर से संबंघित कारोबार में घाटा लग जाये।
१३-दौलत होते हुए भी दु:ख उठायें।
१४-ससुराल में परेशानियां खड़ी हो जायें।
१५-अपनी औलाद से परेशानी होने लगे।

लाल-किताब से गुरू की विस्तृत जानकारी

जिस जातक की कुंडली में बृहस्पति प्रबल होता है, उसका माथा चौड़ा, नाक उंची एवं उसके बैठने-उठने का ढ़ंग शानदार होता है, उसे सांस की बिमारी नहीं होती, उसके हाथ की पहली अंगुली (तर्जनी)बड़ी होती है। ऐसे जातक को किसी के प्रति विशेष आकर्षण नहीं होता है, ऐसा भी नहीं है कि उसका स्वभाव रूखा हो । ऐसे व्यक्ति बहुत ही धार्मिक होता है। ऐसे व्यक्ति के स्वभाव में थोड़ी लापरवाही झलकती है, जिससे उसकी आर्थिक स्थिति मध्यम ही रहती है। ऐसे जातक से किसी को कोई लाभ नहीं होता हैं।

पक्का घर-	९
श्रेष्ठ घर-	२,५,८,९,१२
मंदे घर-	६,७,१०
रंग-	पीला
शत्रु ग्रह-	शुक्र, बुध
मित्र ग्रह-	सूर्य, मंगल, चंद्रमा
सम स्वभाव वाले ग्रह-	राहु, केतु, शनि
कार्य-	वायु, उपदेश, शिक्षा संबंधित
उच के भाव-	चौथे भाव में
नीच के भाव -	दसवें भाव में
बिमारियां-	सांस से संबंधित
मसनूई ग्रह-	सूर्य + शुक्र
देवता-	ब्रह्मा
पेशा (व्यवसाय)-	ब्राह्मण, पूजा -पाठ , स्वर्णकार
विशेषता-	आध्यात्मिक, ज्ञाता
गुण-	हवा, आत्मा, सांस, पिता, सुख, गुरू
शक्ति-	शासक, सांस लेने या दिलाने वाली शक्ति का मालिक
धातु-	सोना, पुखराज
शरीर के अंगो पर प्रभाव -	गर्दन
चेहरे पर प्रभाव-	नाक, ललाट
पोशाक-	पगड़ी
संबंधित जानवर-	बब्बर शेर, भूरा भालू, चींटी
संबंधित वृक्ष -	पीपल
संबंधित अनाज-	चने की दाल, हल्दी, केसर, कस्तूरी
संबंधित निवास-	मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरूद्वारा
प्रकार-	पुरूष ग्रह
प्रतीक-	हवा
दिन-	बृहस्पतिवार (प्रथम भाग)
प्रभावशाली समय-	सूर्योदय से ८ बजे तक का समय

VBVCB CVBVCB VCBVCBCV CVBVCB

भावस्थ गुरू की संक्षिप्त परिभाषा

भाव न.	परिभाषा
1	राजगुरू
2	जगत का धर्मगुरू विद्या का मालिक
3	गरजता शेर खानदानी गुरू
4	राजधानी का मुल्की गुरू अर्थात चंद्र के देश की राजधानी का गुरू और बाग-बगीचा
5	इंसानी सिफतों का मालिक इज्जत-आबरू का मालिक, ब्रह्मज्ञानी मगर आग का बांस
6	मुफ्तखोर, मगर साधु स्वभाव, किस्मत के चक्कर में घूमता गृहस्थी
7	गृहस्थ में फंसा साधु, औलाद से दु:खी
8	मुसीबत के समय खुदाई अर्थात गैबी मदद वाला बुजुर्ग, कब्रिस्तान का साधु
9	सुनहरी खानदान, खुद माया का त्यागी,योगी
10	पहाड़ी इलाके का गृहस्थ, हर चीज के लिए कल्पता हुआ दरवेश
11	खजूर के दरख्त-सा अकेला मंदा फल
12	उत्तम ज्ञानी, वैरागी, बुरे का भी भला करने वाला

लाल-किताब हस्तरेखा

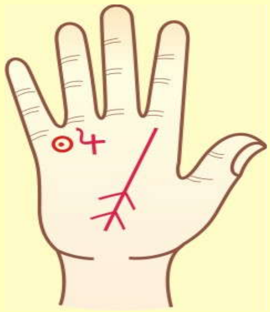
पहले भाव

दूसरे भाव

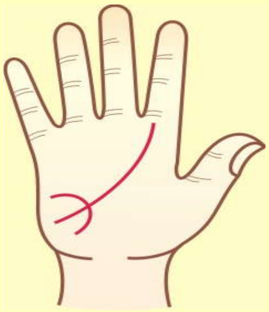
तीसरे भाव

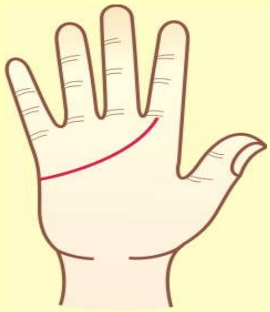
चौथे भाव

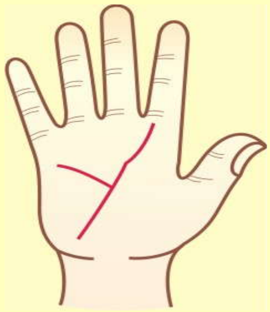
पांचवें भाव

छठवें भाव

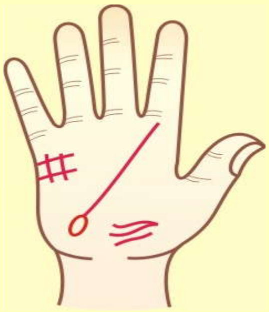
सातवें भाव

आठवें भाव

नौवें भाव

दसवें भाव

ग्यारहवें भाव

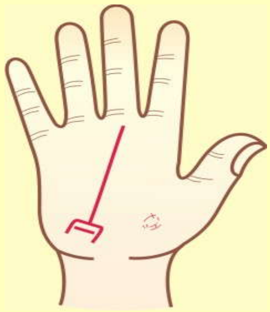
बारहवें भाव

VBVCB CVBVCB VCBVCBCV CVBVCB

भावस्थ गुरू के कारोबार

भाव न.	कारोबार
1	सुनार, पीले रंगे की चीजों के कारोबार
2	मिट्टी के कारोबार
3	शिक्षा संबंधी कारोबार
4	सोना, सिंचाई संबंधीत कारोबार
5	सुंघने की वस्तुओं इत्र आदि का कारोबार
6	बहुमुल्य पक्षियों का कारोबार
7	दुध-दही के कारोबार, पुस्तकों की दुकान
8	पहाड़ी क्षेत्र के कारोबार
9	धर्मस्थान के पूजा के समान के कारोबार, गैस का काम
10	लोहे के कारोबार
11	रोल्ड-गोल्ड आभूषणों के कारोबर
12	पीतल का कारोबार

भावस्थ गुरू के संबंधी

भाव न.	संबंधी
1	गद्दी पर बैठा साधू, पिता, बाबा , बृहस्पति और सूर्य- पिता और पुत्र
2	जगत गुरू, पुजारी, स्त्री की कुंडली में उसका ससुराल
3	वंश परिवार का मुखिया
4	राजा महराजा ब्रह्म
5	विद्यालय का अध्यापक
6	बृद्धी, अतिथि
7	निर्धन परन्तु ज्ञानी, दिल से बूढ़ा
8	दादा की आयु का कोई भी पड़ोसी
9	वंश में सबसे बड़ा, रिश्तेदारी की शर्त नहीं
10	उधारा पिता केवल जन्म देने वाला
11	बिन बुलाए पिता के समान सहायक
12	निश्चिंत पिता जिसे अपने परिवार की कोई चिन्ता न हो, शुभ हालत

भावस्थ गुरू की वस्तुयें

भाव न.	वस्तुयें
1	सुनार, चलता फिरता साधू, शेर, पीला रंग
2	अतिथ्य, ग्राम स्थान, पूजा स्थान(मंदिर), दाल चना, हल्दी
3	दुर्गा पुजा
4	सोना, वर्षा
5	नाग केसर
6	मुर्गा, गरूड़, सेब, कस्तूरी
7	पुस्तके, मैडक, आवारा साधू
8	अफवाहे, गुलर, फकीर को यज्ञ दान
9	जद्दी मकान, धर्म स्थान, गैस
10	सुखा पीपल, गन्धक, धन, शिक्षा समाप्त
11	जिल्ट
12	पीपल का हरा पौधा, पीतल, सांस, हवा

मंदे गुरू की पहचान

१-सोना खो जाये, या चोरी हो जाये।
२-पढ़ाई बन्द हो जाये।
३-चोटी के स्थान पर सिर के बाल उड़ जायें।
४-लोग आपके बारे में गलत अफवाह उड़ाने लगें।
५-गले में माला पहनने का मन करे।
६-दिमागी कार्यों में मन नहीं लगे।

लाल-किताब से शुक्र की विस्तृत जानकारी

जिस जातक की कुंडली में शुक्र प्रबल होता है, उसका रंग सफेद (दही जैसा) होता है। उसके होंठ गोल, आंखे सुन्दर और चाल मस्ताना होती है। ऐसा जातक हमेशा ही नये-नये फैशन के कपड़े, सौन्दर्य प्रसाधन का इस्तेमाल करता है। ऐसा जातक अपने आपको लड़कीयों की तरह सजा कर रखता है। किसी भी खुशी या गम का उस पर कोई असर नहीं होता है।

पक्का घर-	७
श्रेष्ठ घर-	२,३,४,७,१२
मंदे घर-	१,६,८
रंग-	दही जैसा सफेद
शत्रु ग्रह-	सूर्य, चंद्रमा, राहु
मित्र ग्रह-	शनि, बुध, केतू
सम स्वभाव वाले ग्रह-	मंगल, बृहस्पति
कार्य-	कृषि कार्य, जानवरों से संबंधित कार्य, घरेलु सामानों से संबंधित कार्य
उच के भाव-	बारहवें भाव में
नीच के भाव -	छठवें भाव में
बिमारियां-	वीर्य संबंधित
मसनूई ग्रह-	राहु + केतु
देवता-	लक्ष्मी
पेशा (व्यवसाय)-	कुम्हार, वैश्य, काश्तकार, इत्र का व्यापार , श्रृंगार की वस्तुओं का व्यापार
विशेषता-	आशिकमिज़ाज
गुण-	उत्साह, हौसला, भाई, खाना-पीना
शक्ति-	लगन, दिल का प्यार, दिल की रानी , मोहब्बत, ऐशपसंद
धातु-	हीरा, मोती, चांदी, अभ्रक
शरीर के अंगो पर प्रभाव -	गाल
चेहरे पर प्रभाव-	गाल का चमड़ी
पोशाक-	कमीज
संबंधित जानवर-	बैल, सफेद गाय
संबंधित वृक्ष -	कपास का पौधा
संबंधित अनाज-	आलू, बाजरा
संबंधित निवास-	नाट्य गृह, श्रंगार गृह, शय्या गृह
प्रकार-	स्त्री ग्रह
प्रतीक-	पाताल
दिन-	शुक्रवार (अंधेरी रात)
प्रभावशाली समय-	दोपहर १ बजे से शाम को ४ बजे तक

भावस्थ शुक्र की संक्षिप्त परिभाषा

भाव न.	परिभाषा
1	रंग-बिरंगी माया
2	मोहमाया का उम्दा गृहस्थ, सिर्फ मालिक से मांगना ही तेरी कमी पूरी करेगा
3	औरत की इज़्ज़त करने से फायदा
4	खुश्की का सफर, ऐश का बुरा फल
5	संतान से भरा घर-परिवार
6	काल्पनिक इश्क, धर्महीना और 'लल्लू करे कब्बाल्लिया, रब सिद्धियां पावें'
7	जैसा ये वैसी वो, अकेला नेक
8	जली हुई मिट्टी की चंडाल औरत
9	मिट्टी की काली आंधी
10	ख्वाब पूरा, यानी परियों के सपने देखने वाला, काल्पनिक संसार में रहने वाला
11	हसीन मर्द या औरत, माया के लिए घूमता हुआ लट्टू
12	मजस्सम देवी यानी पूर्ण रूप से देवी, भवसागर से पार करने वाली गाय

लाल-किताब हस्तरेखा

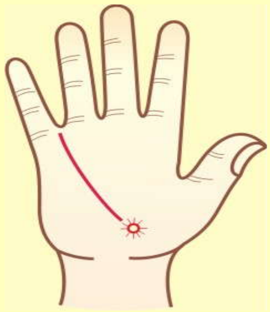

पहले भाव

दूसरे भाव

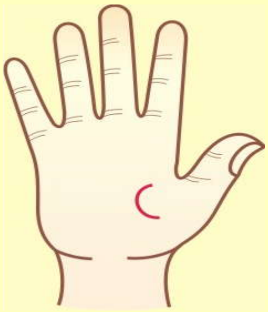

तीसरे भाव

चौथे भाव

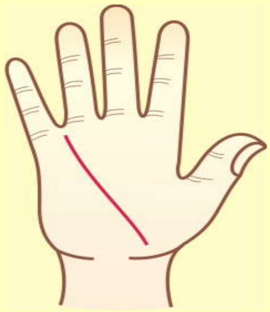

पांचवें भाव

छठवें भाव

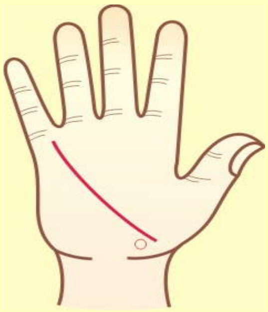

सातवें भाव

आठवें भाव

नौवें भाव

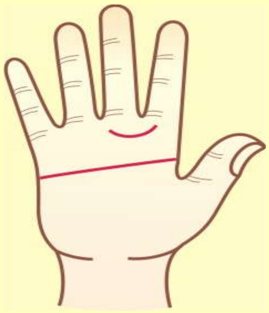

दसवें भाव

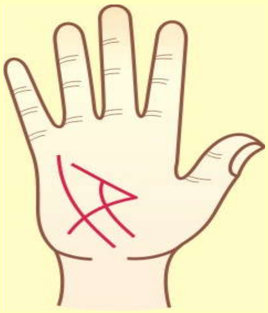

ग्यारहवें भाव

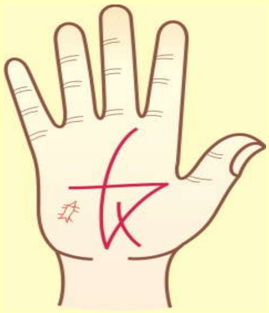

बारहवें भाव

VBVCB CVBVCB VCBVCBCV CVBVCB

भावस्थ शुक्र के कारोबार

भाव न.	कारोबार
1	देश में प्रयोग होने वाली वस्तुओं के कारोबार
2	आलू, घी, अभरक, सफेदा के वृक्ष के कारोबार
3	गृहस्थी, स्त्रियों के काम आने वाली वस्तुओं के काम
4	चौपाया, पशुओ के काम, दही के काम
5	ईंट के भठ्ठे का काम
6	गुड़, गैस का काम
7	फल की खेती के काम, कांसे के पात्र बेचने के काम, गाने के काम आने वाली वस्तुओं के काम
8	जिमिकन्द, गाजर, आलू, मूली जमीन में पलने वाली सब्जियों के काम
9	मिठाई की दुकान, फलदार चीजों के काम
10	रुपये, मोती (दही रंग का सफेद वस्तुओं) के काम
11	मिट्टी और कपास के काम
12	स्त्रियों के रात में आराम के काम आने वाली चीजों के काम, पशुओं के काम

भावस्थ शुक्र के संबंधी

भाव न.	संबंधी
1	ऐसा जोड़ा दम्पति केवल धन की कमी पर टूट जायें
2	विवाहिता साली
3	भाई की स्त्री, भाभी
4	अपने बिचारो वाला साथी, संतान की शर्त नहीं
5	ऐसे पुरूष स्त्री की जोड़ी जिसकी संतान उसे माता -पिता नहीं कहेंगे
6	ऐसे स्त्री पुरूष जो संतान को जन्म देने में असमर्थ था और उन्हें पालने से घृणा करने वाले
7	अंत तक साथ निभाने वाले पुरूष स्त्री
8	कटुभाषी स्त्री जो किसी भी रिश्तेदारी को न माने
9	दिखावे को अधिक पसन्द करने वाली स्त्री, धुली धुलाई दुल्हन, शर्म के कारण बीमार
10	पति पर भारी
11	पुरूष के शुक्राणुओं में कमी
12	कामधेनु गाय

भावस्थ शुक्र की वस्तुयें

भाव न.	वस्तुयें
1	पराई स्त्री का प्यार
2	आलू, गाय का घी, अभ्रक, सफेद कपूर, भूंडी गाय (बिना सींगों के)
3	विवाह, पतिव्रता स्त्री
4	दही, चौपाया पशु, स्त्री
5	कुम्हार का अवा, जली हुई मिट्टी, भठ्ठा, कासें का बर्तन
6	चिड़िया, सफेद गाय का स्थान (नीच फल देगा), नपुंसक, सुथरा
7	चरी, बाजरा, सफेद गाय, प्यार
8	जिमीकन्द, गाजर, भुंडीं गाय, सफेद दही
9	सफेद गाय अशुभ, दही रंग की गाय शुभ
10	मिट्टी, कपास
11	रूई, मोती(चांदी में) दही रंग का सफेद
12	कामधेनु गाय, लक्ष्मी अवतार, गृहस्थी, स्त्री सुख

मंदे शुक्र की पहचान

१-शरीर का चमड़ा खराब होने लगे या चर्म रोग घेर ले।
२-बिना बिमारी के अंगुठा सुन्न हो जाये।
३-पराई स्त्री से संबंध बन जायें।
४-खांसते वक्त मुंह से खुन आये या टी बी हो जाये।
५-जीवनसाथी का स्वास्थ्य खराब हो जाये या उसे कोई दिमागी बिमारी लग जाये।
६-सास-बहु में लगातार झगड़ा होता रहे।
७-ठीक-ठाक आमदनी के बाद भी कर्ज बना रहे।

लाल-किताब से शनि की विस्तृत जानकारी

जिस जातक की कुंडली में शनि प्रबल होता है, वह सावले रंग और सांप जैसी आंखो वाला होता है। उसकी भौंहे सीधी होती है। ऐसे जातक से बात करते समय कभी नहीं लगता कि वह चाहता क्या है। वह किसी की तरफ नहीं होता है, जहां उसका फायदा दिखता है ऐसा जातक वहीं होता है, वह अपने जीवन में मित्रता-शत्रुता बहुत ही ठीक तरह से निभाता है। वह कानों की अपेक्षा आंखो से अधिक काम कर लेता हैं। वह हमेशा सबसे अलग-थलग बैठता है।

पक्का घर-	१०
श्रेष्ठ घर-	१,३,७,१२
मंदे घर-	१,४,५,६
रंग-	काला
शत्रु ग्रह-	सूर्य, चंद्रमा, मंगल
मित्र ग्रह-	बुध, शुक्र, राहु
सम स्वभाव वाले ग्रह-	केतु, बृहस्पति
कार्य-	डाक्टरी, तेल व लोहे से संबंधित कार्य
उच के भाव-	सातवें भाव में
नीच के भाव -	पहले भाव में
बिमारियां-	खांसी, नजर, पेट संबंधित
मसनूई ग्रह-	शुक्र + बृहस्पति(केतु जैसा स्वभाव)
देवता-	भैरव
पेशा (व्यवसाय)-	चमार, लुहार, मैकेनिक, बढ़ई
विशेषता-	मूर्ख, अक्खड़
गुण-	चालाकी, देखना-भालना, मौन, बीमारी
शक्ति-	जादू- टेना देखने दिखाने की शक्ति
धातु-	लोहा, फौलाद, कोयला, नीलम
शरीर के अंगो पर प्रभाव -	दृष्टि
चेहरे पर प्रभाव-	बाल, भौंह, कनपटी
पोशाक-	जूता- मोजा
संबंधित जानवर-	भैंस-भैंसा
संबंधित वृक्ष -	कीकर, आक, खजूर का पेड़
संबंधित अनाज-	काला नमक, उड़द की दाल
संबंधित निवास-	श्मशान, वीराना, मयखाना
प्रकार-	दुष्ट ग्रह
प्रतीक-	अंधकार
दिन-	शनिवार (काली रात या अंधेरा दिन)
प्रभावशाली समय-	सूर्यास्त(तारे दिखाई देने के बाद)

VBVCB CVBVCB VCBVCBCV CVBVCB

भावस्थ शनि की संक्षिप्त परिभाषा

भाव न.	परिभाषा
1	मंदा तो तीन गुणा, उम्दा तो तीन गुणा
2	गुरू शरण
3	मंदा तो दो गुणा मंदा
4	पानी का सांप जिसमें जहर नहीं होता
5	संतान खाने वाला सांप
6	लेख की स्याही, एक गुना मंदा
7	कलम विधाता, रिजक यानी रोजगार
8	हेडक्वाटर अर्थात् शुभ भी असर दे सकता है, बुरा भी
9	कलम विधाता, मकानों तथा मर्दों के लिए शुभ फल देने का कारक
10	लेख का खाली कोरा कागज
11	लिखे विधाता, खुद विधाता
12	कलम विधाता, आराम

लाल-किताब हस्तरेखा

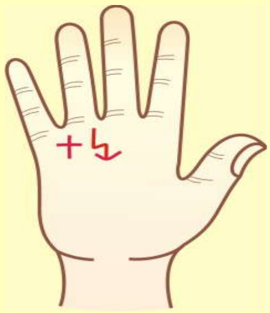

पहले भाव

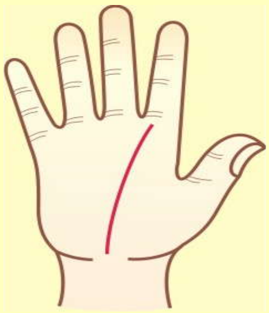

दूसरे भाव

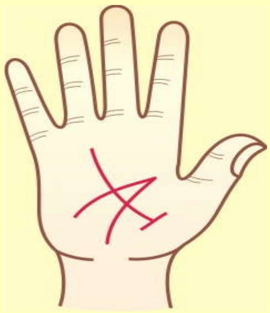

तीसरे भाव

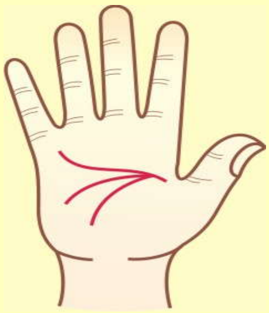

चौथे भाव

पांचवें भाव

छठवें भाव

सातवें भाव

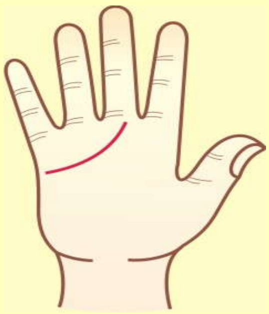

आठवें भाव

नौवें भाव

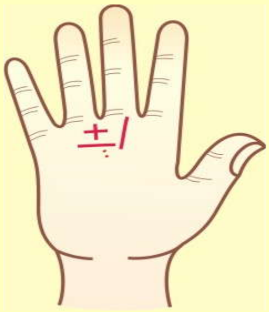

दसवें भाव

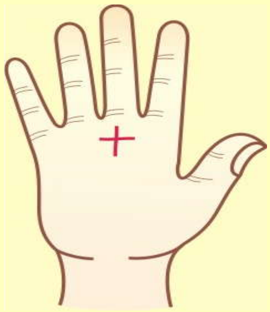

ग्यारहवें भाव

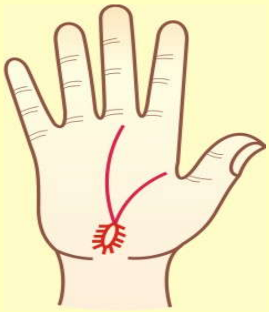

बारहवें भाव

VBVCB CVBVCB VCBVCBCV CVBVCB

भावस्थ शनि के कारोबार

भाव न.	कारोबार
1	कीकर के वृक्ष के काम, गले के लिए काम
2	मांह(साबूत), उड़द बेचने का काम
3	आखें का डाक्टर, खजूर वृक्ष के काम
4	हर प्रकार के तेल का काम, रंग रोगन, मार्बल, मकान के काम
5	काला सुरमा का काम
6	बिनौला, पत्थर का कोयला का काम, इंनजीइयरी के काम
7	दृष्टि संबंधित काम, सफेद सुरमा का काम
8	विषैली दवाईयों के काम
9	पुरानी लकड़ी, शीशम आदि या फलाही की लकड़ी का काम
10	दरियाई जावनरों के काम
11	रेलेवे के मकान बनाने अथवा लोहे के काम
12	बदामों, तख्त चोखट, बड़े टेबुल(मेज), बैड, दीवान

भावस्थ शनि के संबंधी

भाव न.	संबंधी
1	रक्त के स्वभाव वाला कठोर प्रशासक यदि कृपालु तो तारेगा नहीं तो सब कुछ नीलाम करवाये
2	ससुर का भाई
3	खानदानी मजदूर पीढ़ी दर पीढ़ी संबंध
4	मासड
5	बेवफा नौकर
6	कृतघ्न संबंधी, रिश्तेदार लड़के / लड़कीयों का रिश्तेदार
7	अंधो को आंख देने वाला सहायक भण्डारी, ससुराल और अपना
8	श्मशान के संबंध का रिश्तेदार जो न किसी के बुरे में और न किसी के भले में
9	उजड़े को बसाने वाला अपना बुजुर्ग
10	चाचा- मान सलाम का स्वामी
11	पूरा धर्मात्मा (गैरतमन्द) चौकीदार
12	नियति का भेजा हुआ रखवाला, सहायक मित्र

भावस्थ शनि की वस्तुयें

भाव न.	वस्तुयें
1	हल्क (गले का भाग), गंदा कीड़ा, मंदी आग, काला नमक, कीकर की दातुन, कीकर का वृक्ष
2	उड़द(माह), काली मिर्च, चने, चन्दन की लकड़ी
3	खजूर का वृक्ष, नीम की लकड़ी, सागवान, आबनूस
4	काले कीड़े, मकान, तेल, मार्बल(सफेद), दयार, चीड़ कैल की लकड़ी
5	सुरमा(काला), बुद्धु लड़का
6	बोआ, चीड़, बनौल, बेरी का वृक्ष, पत्थर का कोयला
7	दरिन्दा, काली गाय, सुरमा (सफेद), आंखो की रोशनी, हर प्रकार का मसाला
8	कनपटी, छत के बिना खड़ी दीवारें
9	पुरानी लकड़ी, शीशम, आक का पौधा
10	घड़ियाल सांप, तेल -साबुन, कपड़े धोने का लाण्डरी, आटे की दुकान
11	लोहा, फौलाद, टीन
12	मछली, बदाम, सर की चोटी

मंदे शनि की पहचान

१-शराब पीना, जुआ खेलना, पराई स्त्रीयों के मुहब्बत में पड़ना या जरुरत से ज़्यादा झुठ बोलना मंदे शनि के लक्षण हैं।
२-शरीर पर बहुत बाल हों।
३-एकाएक मकान ढह जाये।
४-अचानक दुध देने वाला पशु मर जाये।
५-घर में अग्निकांड होने लगें।
६-जुता खो जाये।
७-खांसी होने लगे।
८-आंख-कान की बिमारियां लग जाये।
९-मांस-मछली खाने की तीव्र लालसा होने लगे।
१0-यदि जातक साधु फकीर या दरवेश बन जाये।
११-आलस्य, गरीबी और बिमारी पीछा न छोड़े।
१२-पुश्तैनी जायदाद का खत्मा हो जाये।
१३-छोटा भाई दुश्मन बन जाये।
१४-नौकरी/कारोबार में बाधायें आने लगे।
१५-२८ साल से पहले विवाह हो जाये।
१६-सन्तान के लिए चमड़े की जुते या अपने लिए लोहे का कोई वस्तु खरीदें।
१७-परिवार में किसी का सिर कटने से मौत हो जाये।
१८-औरत और बेटे के दोस्त आपके लिए परेशानियां खड़ी करने लगें।
१९-बिमारी पीछा न छोड़े।
२0-बिना वजह से मर्दाना ताकत खत्म हो जाये।
२१-जमीन जायदाद का नुकसान होने लगे।
२२-शादी शुदा जिन्दगी में परेशानी पैदा हो।
२३-नशा करने की लत पड़ जाये।
२४-बुढ़ापा गरीबी में कटे।
२५-दौलत होते हुए भी दु:ख लगा रहे।
२६-माथे और पांव पर जरूरत से ज़्यादा बाल हों।
२७-जीवनसाथी गर्भवती हो और मकान बनाना शुरू कर दें।
२८-मकान के छत पर बांस या चौकठ रखा हो।

लाल-किताब से राहु की विस्तृत जानकारी

जिस जातक की कुंडली में राहु प्रबल होता है, उसका रंग काला (यदि राहु तुंगस्थ नहीं है तो), आंखो से काना, नि:संतान होता है। उसकी आंखे हाथी की तरह होती है। वह अपने शत्रुओं का समुल नष्ट करता है। ऐसा जातक शरारती किस्म का होता है, और उसकी खुराक भी अधिक होती है।

पक्का घर-	१२
श्रेष्ठ घर-	३,४,६
मंदे घर-	१,२,५,७,१२
रंग-	नीला
शत्रु ग्रह-	सूर्य, शुक्र, मंगल
मित्र ग्रह-	शनि, बुध, केतू
सम स्वभाव वाले ग्रह-	बृहस्पति, चंद्रमा
कार्य-	बिजली से और पुलिस से संबंधित कार्य
उच के भाव-	तीसरे या छठे भाव में
नीच के भाव -	नौवें या बारहवें भाव में
बिमारियां-	बुखार
मसनूई ग्रह-	मंगल + शनि (तुंगस्थ) सूर्य + शनि (नीच)
देवता-	सरस्वती
पेशा (व्यवसाय)-	मेहतर, भंगी, शुद्र
विशेषता-	मक्कार, नीच, चालबाज, जालिम
गुण-	सोचना, विचारों की तेजी, डर
शक्ति-	कल्पना शक्ति का स्वामी, मार्गदर्शक
धातु-	सिक्का, गोमेद
शरीर के अंगो पर प्रभाव -	सिर
चेहरे पर प्रभाव-	ठोडी
पोशाक-	पजामा, पतलून
संबंधित जानवर-	हाथी, कांटेदार जंगली चूहां, कुत्ता
संबंधित वृक्ष -	नारियल का पेड़
संबंधित अनाज-	जौ
संबंधित निवास-	सन्नाटा, वीराना, पाताल
प्रकार-	दुष्ट ग्रह
प्रतीक-	मित्र, आकाश
दिन-	मंगलवार (शाम का समय)
प्रभावशाली समय-	सूर्यास्त (तारे दिखाई देने के पहले)

VBVCB CVBVCB VCBVCBCV CVBVCB

भावस्थ राहु की संक्षिप्त परिभाषा

भाव न.	परिभाषा
1	दौलतमंदी की निशानी, सीढ़ियां चढ़ने वाला हाथी
2	राजा गुरु के अधीन, बरसाती बादल
3	उम्र और दौलत का मालिक, बंदूक लिए खड़ा पहरेदार
4	धर्मी मगर धन-दौलत के आम फिक्र
5	शरारती, औलाद गर्क करने वाला
6	फांसी काटने वाला मददगार हाथी
7	चण्डाल, लक्ष्मी का धुआं निकाल दे
8	कड़वा धुआं, मौत का पैगाम
9	पागलों का सरताज हकीम मगर बेईमान
10	सांप की फन या सांप की मणि
11	पिता को गोली मारे, मुंह न देखें
12	शेखचिल्ली

लाल-किताब हस्तरेखा

पहले भाव

दूसरे भाव

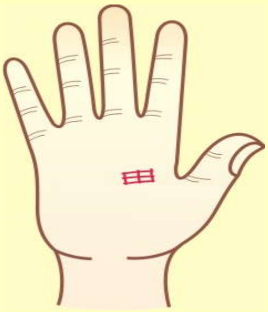
तीसरे भाव

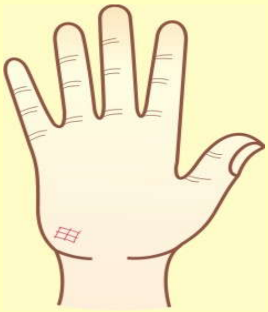
चौथे भाव

पांचवें भाव

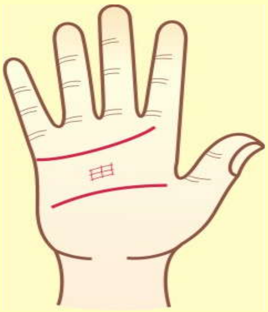
छठवें भाव

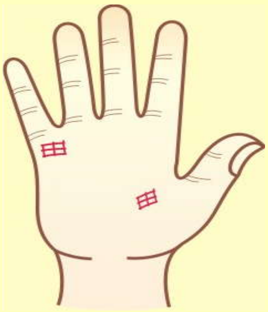
सातवें भाव

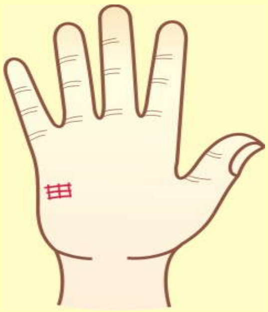
आठवें भाव

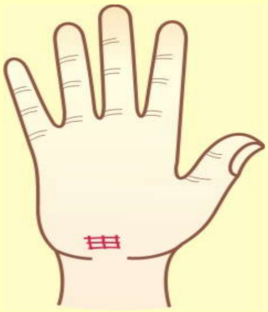
नौवें भाव

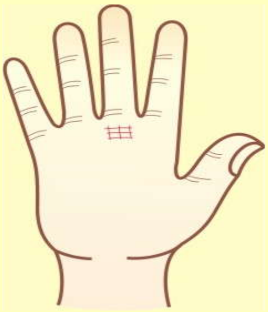
दसवें भाव

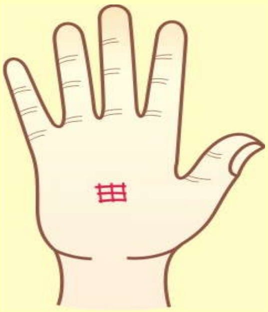
ग्यारहवें भाव

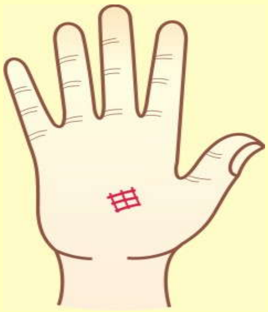
बारहवें भाव

VBVCB CVBVCB VCBVCBCV CVBVCB

भावस्थ राहु के कारोबार

भाव न.	कारोबार
1	धुएं का काम, नानी के साथ मिलकर काम
2	सरसों के कारोबार
3	कोयले के काम
4	भाषण, कथा वर्ता के काम जो देश से संबंधित हो
5	बिजली के बड़े काम जो देश से संबंधित हो
6	पालतु कुत्तों काम
7	चांदी के काम
8	शरीर के कम्पन, दिमागी खराबियां को ठीक करने वाली दवाईयों के काम
9	गले के अन्दर की बीमारियों के इलाज के काम
10	स्वास्थ को ठीक रखने वाली वस्तुओं के काम
11	सोना के काम, अल्मुनियम, जस्ता का काम अशुभ
12	हाथी के काम आने वाला सामान के कारोबार, कोयले काम अशुभ

भावस्थ राहु के संबंधी

भाव न.	संबंधी
1	वणिक स्वभाव वाला
2	ससुर, पुरूष की कुंडली में स्त्री का ससुर
3	अन्त समय तक मित्रता निभाने वाला रक्षक
4	धर्मात्मा माता का छोटा भाई
5	संतान को बेचने वाले
6	लड़कियों के ससुर
7	ससुराल के घर का माल खाने वाला, अधिक बोलने वाला, पागल
8	हथियार को शरीर पर ही तेज करने वाला कसाई
9	नास्तिक, धर्म कर्म से हीन
10	लोक लाज के अनुसार चलने वाला अपना बुजुर्ग
11	जालिम, जल्लाद, पुश्तो से खून में बुराई वाला
12	नींद उड़ाने वाला दुखदायी, स्वयं में बहुत शरीफ

भावस्थ राहु की वस्तुयें

भाव न.	वस्तुयें
1	ढ़ोडी, नाना, नानी
2	हाथी के पांव की मिट्टी, सरसों का कच्चा धुआं
3	तेंदुआ, जौ, काला रंग, संबंधी, हाथी दन्त
4	स्वप्न का समय, सोया दिमाग, धनिया, मसाला
5	छत
6	भूरा काला कुत्ता
7	नारियल
8	झूला की बीमारी, दीवार की अंगीठी का धुआ
9	दलहीज, नीला रंग, कण्ठ से उपर की बीमारियां
10	गन्दी नाली, गर्की (जमीन के अन्दर), भड़भूजे की भठ्ठी
11	नीलम, नीला थोथा, सिक्का, अलमोनियम, जस्ता
12	हाथी, समुद्र का तेन्दुआ, कोयला

मंदे राहु की पहचान

१-मकान का दरवाजा दक्षिण दिशा में हो।
२-अचानक ही परिवार में बड़ों में लड़ाई झगड़ा होने लगे।
३-मकान की छत बदलवाने लगें।
४-औलाद का स्वास्थ्य ठीक न हो।
५-मकान के नीचे से गंदे पानी का निकास हो।
६-काला कुत्ता खो जाये।
७-बेवजह बिल्ली रोने लगे।
८-काले रंग का रिश्तेदार मर जाये।
९-एकाएक नाखुन झड़ जायें।
१0-जातक धर्म विरूद्ध चलने लगे।
११-भाई-बन्धुओं पर दु:ख का पहाड़ टुट जाय।
१२-बिना वजह खर्च बढ़ने लगे।
१३-जीवनसाथी से बेवजह झगड़ा होने लगे।
१४-पेट का रोगी हो जाये।
१५-कोयले की बोरियां इकठ्ठी करने लगे।
१६-जीवनसाथी को गर्भपात हो जाये।
१७-दौलत नष्ट होने लगे, और वजह का भी पता न लगे।
१८-तलाक की नौबत आ जाये।
१९-ठीक घर का होते भी दर-दर भटकने लगे।
२0-घर के मुख्य दिवार से अन्दर कमरों का फर्श नीचा हो।
२१-ठीक-ठाक चलता कारोबार अचानक ठप पड़ जाये।
२२-दिल की बिमारी लग जाय।
२३-अचानक ही सिर में दर्द रहने लगे।
२४-उचाधिकारियों से संबंध बिगड़ जाये।
२५-बुरी आदतों पर पैसा खर्च होने लगे।
२६-रात को नींद न आये।
२७-हर वक्त कल्पनायें करते रहें।

VBVCB CVBVCB VCBVCBCV CVBVCB

लाल-किताब से केतु की विस्तृत जानकारी

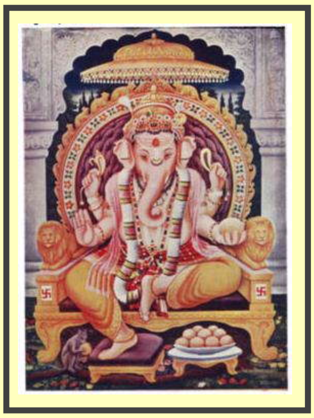

जिस जातक के कुडंली में केतु प्रबल होता है, उसका शरीर बलिष्ठ, कान बड़े और भौँहो का मध्य भाग उभरा हुआ होता है। ऐसा जातक साधु जैसे स्वभाव वाला होता है।

पक्का घर-	६
श्रेष्ठ घर-	३,६,९,१0,१२
मंदे घर-	७,८,११
रंग-	चितकबरा (काला और सफेद)
शत्रु ग्रह-	चंद्रमा, मंगल
मित्र ग्रह-	शुक्र, राहु
सम स्वभाव वाले ग्रह-	बृहस्पति, शनि, बुध, सूर्य
कार्य-	यात्रा और परामर्श देने से संबंधित कार्य
उच के भाव-	नौवें या बारहवें भाव में
नीच के भाव -	तीसरे या छठे भाव में
बिमारियां-	जोड़ो में दर्द, टांगो और मूत्र संबंधित
मसनूई ग्रह-	शुक्र + शनि (तुंगस्थ) चन्द्र + शनि (नीच)
देवता-	गणेश जी
पेशा (व्यवसाय)-	भारवाहक, कुली, मजदूर
विशेषता-	धर्म और संस्कृति के बंधनों से मुक्त
गुण-	सुनना, पांव की हलचल
शक्ति-	चलना- फिरना, गैरों में मिलने की शक्ति
धातु-	दोरंगा पत्थर, लहसुनिया
शरीर के अंगो पर प्रभाव -	सिर को छोड़कर पूरा शरीर
चेहरे पर प्रभाव-	कान की हड्डी, दांत
पोशाक-	दुपट्टा, कंबल, ओढ़नी
संबंधित जानवर-	छिपकली, कुत्ता, गधा, सुअर
संबंधित वृक्ष -	इमली, केला, नींबू का पेड़
संबंधित अनाज-	तिल, जौ
संबंधित निवास-	पलंग, स्वर्ग
प्रकार-	दुष्ट ग्रह
प्रतीक-	पाताल
दिन-	रविवार (सुबह का समय)
प्रभावशाली समय-	सूर्योदय से दो घंटे पहले का समय

भावस्थ केतु की संक्षिप्त परिभाषा

भाव न.	परिभाषा
1	बड़े परिवार की ख्वाहिश रखने वाला
2	बढिया हुक्मरान, मुसाफिर
3	कुनकुन करने वाला कुत्ता, मगर नेक दरवेश
4	संतान को डराने वाला कुत्ता यानी संतान के स्वास्थ्य के लिए बुरा
5	अपने मालिक की रक्षा करने वाला
6	शेरकद खूंखार कुत्ता, दोरंगी दुनिया
7	शेर का मुकाबला करने वाला कुत्ता
8	संतान की मुहब्बत में रोने वाला, यम को देख लेने वाला
9	आज्ञाकारी बेटा, इंसान की जुबान समझने वाला
10	अशुभ
11	गीदड़ स्वभाव का कुत्ता
12	ऐश अर्थात् आराम उसका जद्दी या खानदानी भाग्य होगा

लाल-किताब हस्तरेखा

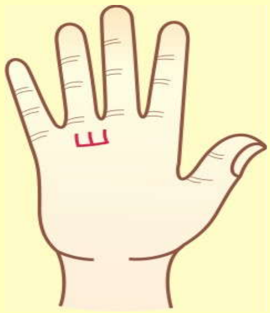

पहले भाव

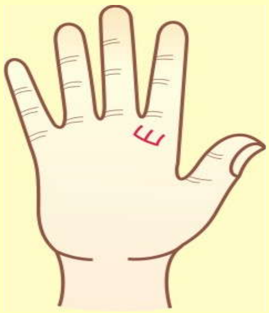

दूसरे भाव

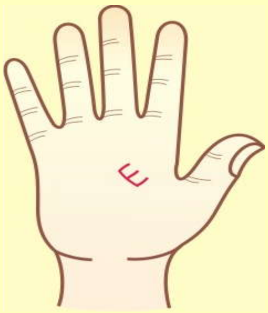

तीसरे भाव

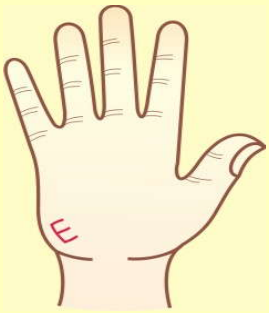

चौथे भाव

पांचवें भाव

छठवें भाव

सातवें भाव

आठवें भाव

नौवें भाव

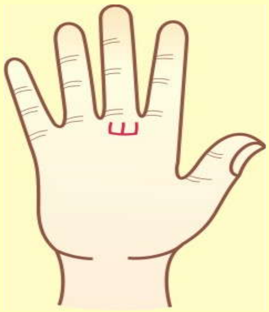

दसवें भाव

ग्यारहवें भाव

बारहवें भाव

VBVCB CVBVCB VCBVCBCV CVBVCB

भावस्थ केतु के कारोबार

भाव न.	कारोबार
1	नाभि के नीचे की बीमारी को ठीक करने के काम
2	ईमली, तिल के काम
3	केले के फलों या फोड़े फुंसी की दवाइयां के काम
4	बहरेपन का इलाज
5	पेशाब गृह, मुत्रालय से संबंधित कारोबार
6	प्याज लहसन के काम, पूजा स्थान में काम आने वाली वस्तुओं के काम
7	सुअर, गधों का व्यापार
8	केतु संबंधी काम, कारोबार अशुभ फल देंगे
9	कुत्तों का व्यापार
10	दो रंग वाले कीमती पत्थरों के काम
11	खेल, खिलौने या ऐशों आराम का सामान बेचने के काम
12	मकान की बुनियादों के काम आने वाली वस्तुओं के काम

भावस्थ केतु के संबंधी

भाव न.	संबंधी
1	इकलौता पुत्र
2	साला
3	भतीजा
4	मौसी का पुत्र
5	पोता, मामा
6	दोहता, भानजा
7	अपना दूसरा लड़का
8	मातम का ठेकेदार
9	वंश का पूरा सहायक पुत्र
10	चाचा का पुत्र
11	अनाथालय की संतान हर प्रकार से होनहार
12	हर दुख को सुख में बदल देना वाला

भावस्थ केतु की वस्तुयें

भाव न.	वस्तुयें
1	टांग, नानकों का घर, नाभि की बीमारियां
2	इमली, तिल
3	रीढ़ की हड्डी, फोड़े-फून्सी
4	सुनना, कान
5	पेशाब, गाय
6	चिड़, खरगोश(नर), पूजा स्थान मिट्टी का चबूतरा, चारपाई, प्याज
7	दूसरा लड़का, सुअर, गधा
8	कान, सुनने की शक्ति, धोखा छलावा
9	दो रंग का कुत्ता, कुतिया परन्तु लाल रंग की नहीं
10	चूहा
11	दो रंग का काला मूल्यवान पत्थर, कीमती पत्थर
12	छिपकली, दत्तक पुत्र, चारपाई, केला

मंदे केतु की पहचान

१-बेटे या पोते को सुखे की बिमारी लग जाय।
२-रीढ़ की हड्डी में दर्द हो।
३-अचानक ही फोड़े-फुंसी से परेशान होने लगें।
४-मुत्र से संबंधित बिमारी लग जाये।
५-जोड़ों में दर्द होने लगे।
६-औलाद की पैदाईश में रूकावट आने लगे।
७-जीवनसाथी की तबीयत ठीक न रहे।
८-पिता या गुरदे की पथरी के वजह से तकलीफ हो।
९-भाईयों की तरफ से परेशानी होने लगे।
१०-दिवानी मुकदमों में पैसा खर्च हो।
११-शुगर की बिमारी लग जाये।
१२-औलाद को सांस से संबंधित बिमारी हो जाये।
१३-कुत्तों से डर लगे।
१४-छत पर बैठकर कुत्ते रोयें।
१५-मकान की छत गिर जाये।
१६-काम-वासना की तीव्र इछा होने लगे।

लाल किताब से पहले भाव की जानकारी

भावेश -	मंगल
कारक ग्रह -	सूर्य
तुगंस्थ (उच) के ग्रह -	सूर्य
नीच के ग्रह -	शनि
मदद पहुचाने वाले भाव -	पांचवा भाव
मदद कर सकने वाले भाव	नौवां भाव
संबंधित शरीर के अंग -	मुंह, दांत, जीभ, ललाट

लाल किताब से इस भाव की विशेष जानकारी

१-व्यक्ति की हैसियत
२-व्यक्ति का रिहायशी मकान
३-मकान की चारदिवारी
४-व्यक्ति का मुख और स्वभाव
५-दूसरों पर किये जाने वाले परोपकार का चौथाई भाग
६-पुरानी रिती-रिवाजों को मानना न मानना
७-बचपन का समय (१ से २५ वर्ष तक का समय)
८-पिछले जीवन में किये हुए कर्म
९-भाग्य का अधिकार या असर
१०-वाहन
११-धन की स्थिति (जो अपनी मेहनत से कमाया गया हो)
१२-वर्तमान की जानकारी
१३-जवानी का समय
१४-कार्य क्षेत्र
१५-धन-दौलत कमाने के साधन
१६-मकान की बैठक (ड्राइंग रूम)
१७-जीवन में कितनी ऊंचाई पर जायेंगे उसकी जानकारी
१८-नौकरी या कारोबार में कितना ऊंचा जायेंगे, इसकी जानकरी
१९-शरीर के अंग
२०-जड़ी-बुटी आदि की जानकारी
२१-पुराना और नया मकान
२२-व्यक्ति का चेहरा या माथा
२३-अभिमान और विनम्रता की मात्रा
२४-अध्यात्मिकता
२५-आत्मा का विकास(अध्यात्मिक विकास)

लाल किताब से दूसरे भाव की जानकारी

भावेश -	शुक्र
कारक ग्रह -	बृहस्पति
तुगंस्थ (उच) के ग्रह -	चंद्रमा
नीच के ग्रह -	
मदद पहुचाने वाले भाव -	छठा भाव
मदद कर सकने वाले भाव	दसवां भाव
संबंधित शरीर के अंग -	दाहिनी आंख

लाल किताब से इस भाव की विशेष जानकारी

१-व्यक्ति की इज्जत और धन जो सही तरीके से कमाया गया हो
२-मकान बड़ा होगा या छोटा
३-ऐशो-आराम
४-ज्ञान
५-दूसरों से काम निकालने का रवैया
६-अपनी किस्मत
७-खेती आदि की जमीन
८-पेट्रोल, गैस इत्यादि
९-कमाई से की हुई बचत
१०-स्त्री से मिला हुआ धन
११-पिछले या अगले जन्म का संबंध
१२-ससुराल वालों के साथ व्यवहार
१३-ससुराल की स्थिति
१४-पालतु जानवर
१५-ऐसे पौधे जिन्हें काटकर या दबा कर उगाया गया हो। जैसे- मनी प्लांट
१६-गर्दन तथा माथा (जहां तिलक लगाया जाता है)
१७-रिश्तेदारों से होने वाली प्राप्ति
१८-जवानी का समय
१९-आदर तथा सम्मान
२०-आराम के साधन

लाल किताब से तीसरे भाव की जानकारी

भावेश -	बुध
कारक ग्रह -	मंगल
तुगंस्थ (उच) के ग्रह -	राहु, बुध
नीच के ग्रह -	केतु
मदद पहुचाने वाले भाव -	सातवां भाव
मदद कर सकने वाले भाव	ग्यारहवां भाव
संबंधित शरीर के अंग -	पेडू और कंधा

लाल किताब से इस भाव की विशेष जानकारी

१-अपने फर्ज़ को निभाने की मात्रा
२-शौर्य तथा बहादुरी
३-घर के अन्दर रखे हुए आराम के सामान और साधन
४-उत्साह और स्फुर्ती
५-आंखों की शक्ति
६-चोरी और बिमारी
७-दूसरों के साथ शत्रुता
८-भाग्य का उतार-चढ़ाव
९-घर में रखे हुए हथियार
१०-रिश्तेदारों और मित्रों की हैसियत
११-पैसों का नुकसान
१२-भाई-बहन की स्थिति
१३-साले और बहनोई की स्थिति
१४-लेन-देन
१५-जीवन में होने वाले लड़ाई-झगड़े
१६-मौत से ठीक पहले की स्थिति
१७-फलदार पौधे या वृक्ष
१८-बाजुओं की ताकत
१९-आंखों की पलकें
२०-ज़िगर
२१-शरीर में खुन की मात्रा
२२-खुन के दोष

लाल किताब से चौथे भाव की जानकारी

भावेश -	चंद्रमा
कारक ग्रह -	चंद्रमा
तुगंस्थ (उच) के ग्रह -	बृहस्पति
नीच के ग्रह -	मंगल
मदद पहुचाने वाले भाव -	आठवां भाव
मदद कर सकने वाले भाव	बारहवां भाव
संबंधित शरीर के अंग -	कान, गर्दन, हाथ

लाल किताब से इस भाव की विशेष जानकारी

१-पिता की ओर से प्राप्ति
२-पिता की स्थिति और उनका चरित्र
३-पिता के साथ व्यक्ति का संबंध
४-पानी रखने की जगह
५-नल तथा कुआं इत्यादि
६-शरीर की तासीर (सर्दी-गर्मी)
७-मन की अंदरूनी शक्ति
८-२५ से ५0 साल तक की उम्र
९-पूर्व जन्म में किये हुए कर्मों का प्रारब्ध
१0-किस्मत किस हद तक साथ देगी
११-कपड़े का कार्य
१२-पानी और दुध
१३-आमदनी के साधन
१४-गर्भावस्था
१५-माता
१६-माता के मन की शान्ति
१७-माता का स्वास्थ्य
१८-नाना का घर
१९-मामा, मौसी तथा नाना-नानी की स्थिति
२0-पानी में रहने वाले जीव-जन्तु
२१-दुध देने वाले जानवर
२२-घोड़ा
२३-धन रखने का स्थान
२४-किस मात्रा में धन कमायेंगे
२५-रस भरे फलों का वृक्ष
२६-छाती और दिल
२७-स्त्री की कुण्डली में नाभि या पेट का अंदरूनी भाग
२८-गर्भावस्था के दौरान स्त्री का स्वास्थ्य
२९-पिछले जन्म के कर्मों का फल
३0-रात्रि का समय

लाल किताब से पांचवे भाव की जानकारी

भावेश -	सूर्य
कारक ग्रह -	बृहस्पति
तुगंस्थ (उच) के ग्रह -	
नीच के ग्रह -	
मदद पहुचाने वाले भाव -	नौवां भाव
मदद कर सकने वाले भाव	पहला भाव
संबंधित शरीर के अंग -	कमर का उपरी भाग

लाल किताब से इस भाव की विशेष जानकारी

१-संतान
२-बेटे-बेटियों से प्राप्ति
३-घर के अन्दर रोशनी वाली जगह
४-ईमानदारी
५-मानसिक चैतन्यता
६-रूतबा
७-दूसरों से मिलने वाला सम्मान
८-आर्थिक क्षेत्र में प्रगति
९-भाग्य की चमक
१०-घर की पूर्वी दिवार
११-विद्या
१२-विद्या से कमाया हुआ धन
१३-आने वाला समय
१४-अगला जन्म
१५-घर का पुस्तकालय
१६-पौध लगाने वाले पौधे
१७-औलाद का मकान
१८-पेट
१९-अध्यात्मिक प्रगति
२०-औलाद की पैदाईश

लाल किताब से छठे भाव की जानकारी

भावेश -	बुध
कारक ग्रह -	केतु
तुगंस्थ (उच) के ग्रह -	बुध राहु
नीच के ग्रह -	शुक्र, केतु
मदद पहुचाने वाले भाव -	दसवां भाव
मदद कर सकने वाले भाव	दूसरा भाव
संबंधित शरीर के अंग -	बायां पैर और गुप्तांग

लाल किताब से इस भाव की विशेष जानकारी

१-घर का तहखाना
२-साहुकारी के कार्य
३-पाचन शक्ति
४-शरीर की खुश्की
५-अंदरूनी अक्ल
६-किस्मत की गिरावट
७-व्यापार
८-रिश्तेदारों की आर्थिक स्थिति
९-रिश्तेदारों से होने वाले आय-व्यय
१०-गृहस्थ आश्रम में रहते हुए अध्यात्मिक प्रगति
११-दूसरों के साथ किया जाने वाला मधुर व्यवहार
१२-परिवार के सदस्यों की स्थिति
१३-औलाद के रिश्तेदारों की स्थिति
१४-साग-सब्जी तथा फल-फूल
१५-नाना का घर
१६-कमर और पुट्ठे
१७-नाड़ीयां
१८-मृत्यु के बाद रिश्तेदारों और परिवार वालों की स्थिति
१९-परिवार के सदस्यों की गिनती और बिमारी
२०-बुढ़ापा शुरू होने का समय
२१-दैवीय सहायता

लाल किताब से सातवें भाव की जानकारी

भावेश -	शुक्र
कारक ग्रह -	शुक्र और बुध
तुगंस्थ (उच) के ग्रह -	शनि
नीच के ग्रह -	
मदद पहुचाने वाले भाव -	ग्यारहवां भाव
मदद कर सकने वाले भाव	तीसरा भाव
संबंधित शरीर के अंग -	नाभि, पेट का बीच वाला हिस्सा

लाल किताब से इस भाव की विशेष जानकारी

१-अपनी मेहनत से पैदा की गई जायदाद
२-जीवनसाथी
३-लड़की, पौत्री और बहन
४-जानवर जिनकी सींग उपर की ओर उठी हुई नहीं हो
५-जगह, शहर, गांव जहां व्यक्ति का जन्म हुआ हो
६-बचत किया हुआ धन
७-बुजुर्गो से मिला हुआ धन
८-गुदा वाले फल और वृक्ष
९-लड़कियों के रिश्तेदारों के मकान की स्थिति
१०-जीवनसाथी के मायके का घर
११-शरीर की चमड़ी
१२-पांव
१३-स्त्री के स्तन
१४-विवाह की संख्या
१५-पिछले जन्मों से लाये हुए भाग्य का अंश
१६-किन क्षेत्रों में सफलता मिलेगी
१७-संसारिक सम्मान
१८-५० से ७५ वर्ष की आयु
१९-कृषि ऊपज से संबंधित व्यापार
२०-पराई दौलत

लाल किताब से आठवें भाव की जानकारी

भावेश -	मंगल
कारक ग्रह -	शनि, मंगल और चंद्रमा
तुगंस्थ (उच) के ग्रह -	
नीच के ग्रह -	चंद्रमा
मदद पहुचाने वाले भाव -	बारहवां भाव
मदद कर सकने वाले भाव	चौथा भाव
संबंधित शरीर के अंग -	दाहिना पैर और गुप्तांग

लाल किताब से इस भाव की विशेष जानकारी

१-जीवन में आने वाली अशुभ स्थितियां और मुसीबतें
२-मकान की छत
३-रसोई घर
४-भोजन पचाने और न पचाने की शक्ति
५-जीवनसाथी के साथ संबंध
६-अध्यात्मिकता जाग्रत होने का समय
७-किस्मत के हाथों मिलने वाले धोखे
८-घर में दवाईयों के रखने का जगह
९-धन का नुकसान
१०-मौत का प्रकार
११-दूसरों से शत्रुता
१२-बीमारी
१३-जहरीले जानवर(सांप-बिछू इत्यादि)
१४-ऊँट
१५-कर्मक्षेत्र की शक्ति
१६-उम्र
१७-बिना फल-फूल वाले वृक्ष
१८-मकान में रौनक और खुशियों का मात्रा
१९-पीठ और पीठ से संबंधित रोग
२०-बिमारी का कारण
२१-पिछले जन्म से लाये हुए दु:ख की मात्रा

लाल किताब से नौवें भाव की जानकारी

भावेश -	बृहस्पति
कारक ग्रह -	बृहस्पति
तुगंस्थ (उच) के ग्रह -	केतु
नीच के ग्रह -	राहु
मदद पहुचाने वाले भाव -	पहला भाव
मदद कर सकने वाले भाव	पांचवा भाव
संबंधित शरीर के अंग -	कमर के उपर का हिस्सा

लाल किताब से इस भाव की विशेष जानकारी

१-व्यस्तता और जीवन का संघर्ष
२-बुजुर्गों के घर की हालत
३-मकान का आकार
४-रूहानी ताकत
५-दूसरों पर किये जाने वाले उपकार (तीन चौथाई)
६-गृहस्थ जीवन
७-बुढ़ापे का समय
८-किस्मत की बुनियाद
९-संपूर्ण भाग्य
१०-घर के अन्दर धर्म के कार्य करने वाले स्थान
११-हकीम या डाक्टरों के बैठने का स्थान
१२-पुरखों से धन प्राप्ति
१३-भुतकाल
१४-बचपन का समय
१५-अपने से आयु में बड़े लोगों से संबंध
१६-लाभ की मात्रा
१७-पानी और जमीन दोनों पर चलने वाले जानवर
१८-बुजुर्गों की हालत
१९-नाक की नथुनी
२०-वीर्य की शक्ति
२१-दूसरों से होने वाले लाभ
२२-पिछले जन्म के कार्य
२३-माता-पिता की आर्थिक स्थिति

लाल किताब से दसवें भाव की जानकारी

भावेश -	शनि
कारक ग्रह -	शनि
तुगंस्थ (उच) के ग्रह -	मंगल
नीच के ग्रह -	बृहस्पति
मदद पहुचाने वाले भाव -	दूसरा भाव
मदद कर सकने वाले भाव	छठा भाव
संबंधित शरीर के अंग -	पेट और कंधा

लाल किताब से इस भाव की विशेष जानकारी

१-दुनियादारी
२-रोजगार, व्यापार एवं नौकरी
३-घर में रखा हुआ मलबा
४-काली खांसी
५-चालाकी, होशियारी और दूसरों को धोखा देने की सीमा
६-बेइज्जती
७-उम्र का आखिरी हिस्सा
८-भाग्य का बोझ जो व्यक्ति को भोगना है
९-व्यावसायिक जीवन में सफलता
१०-पश्चिम दिशा
११-घर में रखी हुई मशीनें
१२-पिता का धन और जायदाद
१३-काल्पनिक शक्ति (कार्य क्षेत्र से संबंधित समस्यओं के बारे में)
१४-पिता को प्राप्त होने वाले सुख और दु:ख
१५-मगरमछ और सांप या पूंछ वाले जानवर
१६-कार्य क्षेत्र में उन्नति करने के लिए दूसरों को दिया जाने वाला धोखा
१७-भाग्य की सीमा
१८-कांटें वाले वृक्ष
१९-तीन साल से ज्यादा समय से बना हुआ मकान
२०-घुटना और शरीर के अस्थि पंजर
२१-जादू मंत्र में लगाव

लाल किताब से ग्यारहवें भाव की जानकारी

भावेश -	शनि
कारक ग्रह -	शनि
तुगंस्थ (उच) के ग्रह -	
नीच के ग्रह -	
मदद पहुचाने वाले भाव -	तीसरा भाव
मदद कर सकने वाले भाव	सातवां भाव
संबंधित शरीर के अंग -	बायां पैर, कान और गर्दन

लाल किताब से इस भाव की विशेष जानकारी

१-लालच
२-मकान की बाहरी शोभा
३-आलस्य
४-जिस्म की ताकत
५-शुभ अवसरों को भुनाने की ताकत
६-चेतना जिसका प्रयोग व्यक्ति दूसरों की भलाई के लिए करते हैं
७-मन में भलाई की मात्रा
८-उम्र का आखिरी पड़ाव
९-किस्मत की ऊंचाई
१०-मकान की पश्चिमी दिवार
११-घर के अन्दर रखें हुए सामान जिसको व्यक्ति दूसरों के भलाई के लिए प्रयोग करता है
१२-अपनी मेहनत से कमाए हुए धन की मात्रा
१३-जन्म समय के हालात
१४-रोजी कमाने के क्षेत्र
१५-धर्म की तरफ झुकाव
१६-धार्मिक होने से होने वाले लाभ या हानि
१७-बिना कांटे के छायेदार वृक्ष
१८-बना बनाया खरीदा हुआ मकान
१९-माथा और गुदा से उपर का स्थान
२०-जीवन में पहली बार प्राप्त होने वाली वस्तुऐं, व्यक्तियों की स्थिति और उनसे व्यक्ति का संबंध
२१-पिछले जन्म के कर्मों का व्यक्ति पर तथा मां-बाप पर पड़ने वाले प्रभाव
२२-दूसरों से होने वाली प्राप्ति

लाल किताब से बारहवें भाव की जानकारी

भावेश -	बृहस्पति
कारक ग्रह -	बृहस्पति
तुगंस्थ (उच) के ग्रह -	शुक्र, केतु
नीच के ग्रह -	बुध, राहु
मदद पहुचाने वाले भाव -	चौथा भाव
मदद कर सकने वाले भाव	आठवां भाव
संबंधित शरीर के अंग -	बायी आंख, पैर का तलवा

लाल किताब से इस भाव की विशेष जानकारी

१-मस्तिष्क में अचानक पैदा होने वाले विचार
२-आशिर्वाद और श्राप देने की शक्ति
३-मकान के अन्दर की रौनक
४-सोच-समझकर या बिना विचारे किये जोने वाले खर्च
५-दूसरों की चापलूसी या खुशामद करने की मात्रा
६-दूसरों की नजरों में व्यक्ति के प्रति सम्मान
७-५० से ७५ साल तक की उम्र (वानप्रस्थ)
८-किस्मत के हिसाब से भोगने वाले सुख या दु:ख की मात्रा
९-दक्षिण पूर्व की दिशा
१०-स्त्री या जीवनसाथी से मिलने वाले सुख की मात्रा
११-स्त्री या जीवनसाथी से संबंध
१२-मृत्यु के बाद के जीवन की रूप रेखा
१३-सोने या आराम करने का स्थान
१४-पड़ोसियों से हमारे संबंध
१५-बिल्ली, चमगादड़ तथा मछली
१६-साधुपन की मात्रा
१७-रात में मिलने वाले आराम की मात्रा
१८-छिलके वाले वृक्ष
१९-पड़ोसी का घर
२०-शरीर की हड्डी तथा सिर

दिन : DD MM YYYY

दिसम्बर

18

1973

मंगलवार

Source- Red Astro 8.0 Professional

विक्रम संवत्	2030
शक संवत्	1895
संवत्सर	प्रमादी
संवत्सर अधिपति	इन्द्राग्नि
ऋतु	हेमन्त
अयन	दक्षिणायन
गोल	दक्षिण
मास	पौष
पक्ष	कृष्ण
सूर्योदय	06:36:32 घण्टे
सूर्यास्त	17:03:05 घण्टे
दिनमान	10:26:33 घण्टे
	26: 06: 58 घटी
रात्रिमान	13:34:00 घण्टे
	33:55:47 घटी

कालहोरा चक्र

1	मंगल	007:36:33	13	शनि	019:36:50
2	सूर्य	008:36:35	14	गुरू	020:36:51
3	शुक्र	009:36:36	15	मंगल	021:36:53
4	बुध	010:36:38	16	सूर्य	022:36:54
5	चन्द्रमा	011:36:39	17	शुक्र	023:36:55
6	शनि	012:36:40	18	बुध	024:36:57
7	गुरू	013:36:42	19	चन्द्रमा	025:36:58
8	मंगल	014:36:43	20	शनि	026:37:00
9	सूर्य	015:36:44	21	गुरू	027:37:01
10	शुक्र	016:36:46	22	मंगल	028:37:02
11	बुध	017:36:47	23	सूर्य	029:37:04
12	चन्द्रमा	018:36:48	24	शुक्र	030:37:05

सूर्योदय कालिन तिथि	नवमी
तिथि वार जनित योग	रत्नांकुर योग
तिथि समाप्ति काल	10:17:32 घण्टे
तिथि–विषघटी	17:12:1973::01:11:42PM -- 17:12:1973::02:47:15PM

(तिथि श्रेणी – रिक्ता, तिथि अधिपति (ग्रह) – सूर्य, तिथि अधिपति – दुर्गा, पक्ष छिद्रा तिथि, गलग्रह तिथि)

आज की दूसरी तिथि

तिथि वार जनित योग

तिथि समाप्ति काल

तिथि–विषघटी

सूर्योदय कालिन नक्षत्र	हस्ता
नक्षत्र समाप्ति काल	15:20:32 घण्टे
आनन्दादि योग	सुधाकर(सौम्य)
वार/नक्षत्र योग	
नक्षत्र–विषघटी	17:12:1973::11:21:08PM -- 18:12:1973::00:59:32AM

(नक्षत्र स्वरूप – हाथ, नक्षत्र अधिपति – चन्द्रमा, पार्श्वमुख नक्षत्र, मन्दाक्ष नक्षत्र, सम नक्षत्र, चतुष्पाद नक्षत्र, मास–शून्य नक्षत्र)

आज का दूसरा नक्षत्र

नक्षत्र समाप्ति काल

आनन्दादि योग

वार/नक्षत्र योग

नक्षत्र–विषघटी

सूर्योदय कालिन योग	सौभाग्य
योग समाप्ति काल	10:26:32 घण्टे
आज का दूसरा योग	
योग समाप्ति काल	
सूर्योदय कालिन करण	गरिज
करण समाप्ति काल	10:17:32 घण्टे
	वनिज
	22:29:32 घण्टे

सावनात्मक वार	मंगलवार (भौम, उग्र)
वार समाप्ति काल	06:37:05 (19/12/1973)
वार–विषघटी	11:24:38AM-13:00:40PM
वारवेला	07:54:51AM-09:13:10AM
कालवेला	13:08:08 – 14:26:27
कालरात्रि	18:44:50 – 20:26:35
राहुकाल	14:26:27–15:44:46
गुलिक काल	11:49:49–13:08:08
यमघंटक काल	09:13:10–10:31:29
पूर्वाह्न	06:36:32–10:05:23
मध्याह्न	10:05:23–10:26:33
अपराह्न	10:26:33–17:03:05
अरूणोदयकाल	05:01:05–06:37:05
प्रातःकाल	06:37:05–08:42:24
संगवकाल	08:42:24–10:47:42
मध्याह्नकाल	10:47:42–12:53:01
अपराह्णकाल	12:53:01–14:58:19
सायाह्नकाल	14:58:19–17:03:38
प्रदोषकाल	17:03:05–19:45:53
निशीथकाल	22:28:41–25:11:29

दिवा–मुहूर्त			रात्रि–मुहूर्त		
1	शिव (अरिद्रा)	007:18:18	1	शिव (अरिद्रा)	017:57:21
2	सर्प (अश्लेषा)	008:00:04	2	अजपाद (पूर्वाभाद्र)	018:51:37
3	मित्र (अनुराधा)	008:41:51	3	अहिर्बुध्न्य (उत्तरभाद्र)	019:45:53
4	पित्तर (मघा)	009:23:37	4	पूषा (रेवती)	020:40:09
5	वसु (धनिष्ठा)	010:05:23	5	अश्विनीकुमार (अश्विनी)	021:34:25
6	जल (पूर्वाषाढ़)	010:47:09	6	यम (भरणी)	022:28:41
7	विश्वेदेवा (उत्तराषाढ़)	011:28:55	7	अग्नि (कृतिका)	023:22:57
8	ब्रह्मा (अभिजित्)	012:10:42	8	ब्रह्मा (रोहिणी)	024:17:13
9	ब्रह्मा (रोहिणी)	012:52:28	9	चन्द्र (मृगशिर)	025:11:29
10	इन्द (ज्येष्ठा)	013:34:14	10	अदिति (पुनर्वसु)	026:05:45
11	इन्द्राग्नि (विशाखा)	014:16:00	11	बृहस्पति (पुष्य)	027:00:01
12	राक्षस (मुला)	014:57:46	12	विष्णु (श्रवण)	027:54:17
13	वरूण (शतभिषा)	015:39:33	13	सूर्य (हस्ता)	028:48:33
14	अर्यमा (उत्तरफाल्गुनी)	016:21:19	14	विश्वकर्मा (चित्रा)	029:42:49
15	भग (पुर्वफाल्गुनी)	017:03:05	15	पवन (स्वाति)	030:37:05

चौघड़िया दिन की	
रोग	007:54:51
उद्वेग	009:13:10
चंचल	010:31:29
लाभ	011:49:49
अमृत	013:08:08
काल	014:26:27
शुभ	015:44:46
रोग	017:03:05
चौघड़िया रात की	
काल	018:44:50
लाभ	020:26:35
उद्वेग	022:08:20
शुभ	023:50:05
अमृत	025:31:50
चंचल	027:13:35
रोग	028:55:20
काल	030:37:05